परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

जीवनसाधना आवश्यक है यहीं, अनिवार्य भी

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

उपासना की महत्ता अपरंपार है। भगवान् के नजदीक आप बैठें, उपासना करें, तो देखेंगे कि उनके सारे गुण आप में आते चले जाते हैं। बिजली को जो छूता है, तो उसके अंदर करेंट आ जाता है। भगवान् को जो छुएगा, भगवान् से उसमें करेंट आ जाएगा। दो तालाबों को आपस में जोड़ दें, तो नीचे वाले तालाब का लेवल बढ़ता हुआ चला जाता है और दोनों का तल एक हो जाता है। भगवान् और भक्त एक हो जाते हैं। सच तो यह है कि भक्त भगवान् से भी बड़े हो जाते हैं, क्योंकि भगवान् भक्त का उत्साह बढ़ाना चाहते हैं और दूसरे कामों में उपयोग करना चाहते हैं। शबरी के जूठे बेर भगवान् ने खाए थे न ! गोपियों के यहाँ भगवान् छाछ माँगने गए थे न ! बलि के दरवाजे पर बावन अंगुल के बन करके भगवान् गए थे न ! कर्ण के दरवाजे पर सोना माँगने के लिए साधु और भिखारी का रूप बनाकर गए थे न ! ये बड़प्पन है! भक्त का बड़प्पन!! भृगु ने भगवान् के सीने में लात मारी थी, कहाँ कैसे भगवान् हैं! जो अपने कर्त्तव्य का ध्यान नहीं रखते और भगवान् ने महर्षि भृगु की लात के निशान को अपनी छाती पर अभी तक सुरक्षित रखा हुआ है। विष्णु की मूर्त्तियों में महर्षि भृगु की लात का निशान बना रहता है। महर्षि भृगु बड़े थे, भगवान् से। भक्त बड़ा होता है भगवान् से; पर सही भक्त होना चाहिए। सही भक्त की हम आपको पहचान बता चुके हैं और ये बता चुके हैं कि भक्त को भगवान् के अनुशासन पर निर्भर रहना चाहिए; भगवान् को अपनी मरजी पर चलाने की बात नहीं सोचनी चाहिए, अपनी मनोकामना की बाबत ध्यान नहीं रखना चाहिए कि हमारी मनोकामना खत्म कर दी गई। भक्त अपनी मनोकामना खत्म कर देते हैं और भगवान् की मनोकामना को अपने ऊपर बनाए रहते हैं।

नारद एक बार मनोकामना माँगने के लिए भगवान् के पास गए और कहने लगे— एक युवती का स्वयंवर होने वाला है । मुझे आप राजकुमार बना दीजिए, सुंदर बना दीजिए, ताकि मेरी अच्छी लड़की से शादी भी हो जाए और मैं संपन्न भी हो जाऊँ। दहेज जो मिलेगा, उससे मालदार भी हो जाऊँगा। मालदार बनने की और संपन्न बनने की दो ही तो मनोकामनाएँ हैं और क्या मनोकामना है? एक लोभ की मनोकामना है, एक मोह की मनोकामना है। दोनों के अलावा और कोई तीसरी मनोकामना दुनिया में है ही नहीं। इन दोनों मनोकामनाओं को लेकर जब नारद भगवान् के यहाँ गए, तो भगवान् के अचंभे का ठिकाना नहीं रहा। भक्त कैसा? जिसकी मनोकामना हो। मनोकामना होगी तो भक्त नहीं होगा- भक्त होगा तो मनोकामना नहीं होगी। दोनों का निर्वाह एक साथ नहीं हो सकता। जहाँ अँधेरा होगा, वहाँ उजाला नहीं रहेगा; जहाँ उजाला रहेगा, वहाँ अँधेरा नहीं होगा। दोनों का एक साथ जोड़ कैसे होगा? इसलिए भगवान् सिर पर हाथ रख करके जा बैठे। अरे! तुम क्या कहते हो नारद ! लेकिन नारद ने अपना आग्रह जारी रखा— नहीं, मेरी मनोकामना पूरी कीजिए, मुझे मालदार बनाइए, मेरी विषयवासना पूरी कीजिए। भगवान् चुप हो गए। नारद ने सोचा— भगवान् ने चुप्पी साध ली है, शायद मेरी बात को मान लिया होगा। भगवान् को माननी चाहिए भक्त की बात, ऐसा ख्याल था। बस वो चले गए स्वयंवर में। स्वयंवर में जाकर बैठे। राजकुमारी ने देखा— कौन बैठा है? नारद जी का और भी बुरा रूप बना दिया— बंदर जैसा। राजकुमारी देखकर मजाक करने लगी, हँसने लगी। यह बंदर जैसा कौन आ करके बैठा है? बस, उसको माला तो नहीं पहनाई और दूसरे राजकुमार को माला पहना दी। नारद जी दुःखी हुए, फिर विष्णु भगवान् के पास गए, गालियाँ बकने लगे। विष्णु ने कहा— अरे नारद ! एक बात तो सुन। हमने किसी भक्त की मनोकामना पूरी की है क्या आज तक ! इतिहास तो ला भक्तों का उठा करके। जब से सृष्टि बनी है और जब से भक्ति का विधान बना है, तब से भगवान् ने एक भी भक्त की मनोकामना पूरी नहीं की है। हर भक्त को मनोकामना का त्याग करना पड़ा है और भगवान् की मनोकामना को अपनी मनोकामना बनाना पड़ा है। बस, कल हम यह बता रहे थे कि आप अगर उपासना कर सकते हों, तो भगवान् भी आपके बराबर हो सकते हैं। उनसे बड़े भी हो सकते हैं। भगवान् के गुण और आपके गुण एक बन सकते हैं; आप महापुरुष हो सकते हैं, महामानव हो सकते हैं, ऋषि हो सकते हैं, देवात्मा हो सकते हैं और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अवतार हो सकते हैं, अगर आप उपासना का ठीक तरीके से अवलंबन लें तो। कल का यह विषय था।

आज दूसरी बात बताते हैं आपको। अपनी पात्रता का विकास करना पड़ेगा, पात्र इसके लिए बनना पड़ेगा। पात्र अगर न होंगे तब? शादी कोई लड़की करना चाहे किसी अच्छे लड़के से और वह बुड्ढी हो तब? गूँगी, बहरी, अंधी हो तब? तो कौन शादी करेगा? इसीलिए पात्रता बहुत जरूरी है। कल हमने कहा था न— उस दिन आपसे कहा था, गड्ढा होना जरूरी है, बादलों की कृपा प्राप्त करने के लिए। बादल तो बरसते ही रहते हैं। उनकी कृपा तो सबके ऊपर है। गड्ढा जहाँ होगा, वहीं तो पानी जमा होगा न। गड्ढा न होगा तब? सूरज की कृपा तो हरेक के ऊपर है; लेकिन जिसकी आँखें खराब हो गई हों, उसके लिए क्या कर सकता है सूरज! दुनिया में एक-से-एक सुहावने दृश्य दिखाई पड़ते हैं; पर एक-से-एक सुहावने दृश्य को देख कौन सकेगा? जिसकी आँखों का तिल साबुत होगा, वही तो देखेगा? जिसकी आँखों का तिल साबुत नहीं है, तो कैसे देखेगा! जरा आप ही बताइए। जिसके कानों की झिल्ली खराब हो गई है, दुनिया में एक-से-एक बढ़िया संगीत और आवाज निकलती है, पर कानों की झिल्ली खराब हो जाए, तब दुनिया के संगीत सुनने के लिए आदमी की कोई सहायता-सेवा नहीं कर सकता। आदमी का दिमाग खराब हो जाए तब? तब एक-से-एक बढ़िया परामर्श देने वाले, एक-से-एक सहायता देने वाले क्या कर सकते हैं? कोई सहायता नहीं कर सकता। किसकी? जिसका दिमाग खराब हो गया है। क्या करेंगे? अपना दिमाग तो सही हो, अपनी झिल्ली तो सही हो, अपनी आँखों का तिल तो सही हो। ये सही होंगे, तो फिर सूरज भी सहायता करेगा, वायु भी सहायता करेगी। पाँच तत्त्व दुनिया में हैं, जिसमें से हवा भी है, रोशनी भी है, सूरज भी है— ये सब आदमी की सहायता करते हैं। इन्हीं की सहायता से तो आदमी जिंदा है, लेकिन आदमी जिंदा तो होना चाहिए। मर गया होगा तब, साँस क्या करेगी? बहुत अच्छी प्रातःकाल की हवा है; हवा फेफड़ों को मिलनी चाहिए, पर लेगा तो तभी, जब वह जिंदा हो। जिंदा नहीं हो, तो क्या करेगी हवा? एक-से-एक बढ़िया आहार हैं और भोजन हैं, लेकिन आहार और भोजन के होते हुए अगर किसी आदमी का पेट खराब हो जाए तब? आप क्या खिला करके करेंगे? और उलटा पेट में दरद हो जाएगा। आप पौष्टिक पदार्थ दीजिए, मलाई-मिठाई दीजिए। अगर पेट खराब है, पचता नहीं है, तो मलाई-मिठाई क्या करेगी? और जहर पैदा कर देगी। मेरा मतलब पात्रता से है।

आप ध्यान दीजिए और गौर कीजिए। पात्रता का विकास किए बिना न संसार में रास्ता है और न पात्रता का विकास किए बिना आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई रास्ता है। आपको अफसर बनना है? पब्लिक सर्विस कमीशन के सामने जाइए और अपनी पात्रता साबित कीजिए। अच्छा डिवीजन लाइए और अच्छे नंबर लीजिए। आपको अच्छा स्थान मिल सकता है। नहीं साहब! हम तो परीक्षा से दूर रहेंगे, हम तो भगवान् जी की आरती गाएँगे, हम तो पब्लिक सर्विस कमीशन की आरती गाएँगे, हमको अफसर बना दीजिए। नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। पात्रता विकसित करना बहुत जरूरी है। पात्रता का इससे क्या मतलब है? पात्रता का अर्थ होता है— जीवन को परिष्कृत करना। जीवन को परिष्कृत करने के लिए साधना करनी पड़ती है। भगवान् को प्राप्त करने के लिए उपासना और अपने आपको पात्र बनाने के लिए साधना। साधना किसकी? अपनी। अपनी से क्या मतलब? अपनी से मतलब यह है कि जो हमारे भीतर जन्म-जन्मांतरों के कुसंस्कार जमे पड़े हैं, उनका परिशोधन करना पड़ेगा, बचकानापन दूर करना पड़ेगा। बच्चों को तो कोई कह नहीं सकता। बच्चा कहीं भी पेशाब कर देता है, कहीं भी खड़ा हो जाता है, कुछ भी करने लगता है, कोई भी चीज फैला देता है, लेकिन बड़ा आदमी तो न केवल स्वयं सँभल के रहता है, वरन् दूसरों की चीजों को भी सँभालकर रखता है। ये बड़प्पन की निशानियाँ हैं। पात्रता से मेरा मतलब इसी से है। चिंतन की दृष्टि से सुसंस्कृत और व्यवहार की दृष्टि से सज्जन और सभ्य— इन दो विशेषताओं को अपने भीतर पैदा करे आदमी, तो ये माना जाएगा कि उसने पात्रता का विकास कर लिया। पात्रता का विकास अगर कर लिया है, तो संसार में भी इज्जत और भगवान् के यहाँ भी इज्जत। पात्रता का अगर आपने विकास नहीं किया, तो संसार में भी उपहास और तिरस्कार और भगवान् के यहाँ भी नाराजगी। आप कहीं भी, कुछ भी नहीं पा सकते। पात्रता की ओर ध्यान एकाग्र कीजिए। पात्रता आपके हाथ की बात है। उपासना भगवान् का अनुग्रह, भगवान् के हाथ की बात है; पर साधना तो आपके हाथ की बात है। अपने आपको सुसंस्कारी बनाने के लिए जो भी मुमकिन हो, आप पूरी शक्ति से और पूरी ईमानदारी से मेहनत कीजिए। आपको अनगढ़ और सुगढ़ बनाना है। हमारा जीवन अनगढ़ है; चौरासी लाख योनियाँ घूमने के बाद में न जाने कितने कुसंस्कार हमारे पास जमा हैं और वे कुसंस्कार अगर इसी तरीके से जमा रहे, तो दीवार के तरीके से खड़े रहेंगे और फिर हमको आगे नहीं बढ़ने देंगे और ये हथकड़ियों और बेड़ियों के तरीके से रास्ता रोक लेंगे, न हमको ऊँचा उठने देंगे, न आगे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बढ़ने देंगे। इसलिए कुसंस्कारों के विरुद्ध जद्दोजहद करना— यह हमारा काम है। साधना इसी का नाम है। साधना करने से आपने देखा है न, कितनी घटिया-घटिया चीजें, मामूली चीजें, क्या-से-क्या बन जाती हैं। आदमी पेड़ों को काटता है, छाँटता है, कलम लगाता है। जंगली पेड़ और माली के बगीचे के लगाए हुए पेड़, उनको आपने देखा नहीं है क्या? कैसे बढ़िया-बढ़िया गुलाब के फूल आते हैं। रंग-बिरंगे फूल आते हैं। ये माली के हाथ की करामात है। क्यों? उन्हीं गुलाबों को जो जंगल में रहते हैं, खुशबू भी नहीं आती, बहुत छोटे-छोटे फूल होते हैं, उन्हीं गुलाबों को ऐसा बना देता है। इसका नाम क्या है? इसका नाम कलम लगाना कहिए, सुसंस्कारिता कहिए अथवा माली की साधना पौधे के साथ और आपकी— जीवात्मा की साधना अपने जीवन के साथ। जीवन को अगर परिष्कृत बना लें, व्यक्तित्व को अगर ऊँचा आप उठा लें, फिर मजा आ जाएगा। फिर देखिए आपकी हैसियत कितनी बड़ी हो जाती है और आपकी जितनी हैसियत है, उसी हिसाब से आपको कीमत मिलनी शुरू हो जाएगी। आप एम० ए० तक पढ़े हैं, तो ज्यादा पैसा मिलेगा— मैट्रिक तक पढ़े हैं, तो कम पैसा मिलेगा और बिना पढ़े आदमी हैं, तो उससे भी कम पैसा मिलेगा। पात्रता बढ़ाइए न, कीमत बढ़ाइए न अपनी। और जो चाहते हैं पाइए। कीमत आप बढ़ाना नहीं चाहते, माँग करके लेना चाहते हैं। प्रार्थना करेंगे— माँगेंगे! माँगेंगे!! माँगेंगे!!! अरे बाबा! माँगने से तो पाँच पैसे भी नहीं मिलते; उसमें भी पात्रता की जरूरत होती है। अंधा, कोढ़ी होगा, तो शाम तक उसकी भीख में दो रुपये आ जाएँगे, हट्टा-कट्टा होगा, तो कोई देगा नहीं, गालियाँ और सुनाएगा— तुझे शरम नहीं आती बेशरम! भीख माँगने चला आया। काम, मेहनत, मजदूरी क्यों नहीं करता? पात्रता तो भिखारी को भी चाहिए, फिर सामान्य लोगों का तो पात्रता के बिना दुनिया में कुछ नहीं चलता। इसलिए पात्रता के लिए अपने गुण, अपने कर्म, अपने स्वभाव इन तीनों चीजों को परिष्कृत करना हर आदमी के लिए बेहद जरूरी है।

आध्यात्मिकता के रास्ते पर, जहाँ भगवान् का पल्ला पकड़ना पड़ता है, वहाँ दूसरा वाला कदम यह उठाना पड़ता है कि हमारी जीवन की साधना क्रमबद्ध है कि नहीं हमने अपने को साध लिया है कि नहीं। साध लेने से आदमी का मूल्य बढ़ जाता है। आप जानते हैं न! साँप को मदारी लोग पाल लेते हैं और सिखा लेते हैं। वह साँप जो आमतौर से हर आदमी को काट खाता है, वही साँप मदारी के बाल-बच्चों के गुजारे का माध्यम बन जाता है। बंदर के बारे में आप जानते हैं न। बंदर कितना वाहियात! किसी के कपड़े उठा के भाग जाता है, किसी को काट खाता है, किसी को क्या करता है, लेकिन वही बंदर पाल लिया जाता है, सिखा लिया जाता है, साध लिया जाता है, तो मदारी के बाल-बच्चों का गुजारा करने के लिए वही सबसे बड़ा स्रोत हो जाता है। रीछ जानते हैं, कैसा खौफनाक होता है। लेकिन रीछ जब पाल लिए जाते हैं, साध लिए जाते हैं, तब रीछ ही अपने पालने वाले का गुजारा कर देता है। सर्कस के बारे में आप जानते हैं न। शेर कितना भयंकर और दूसरे जानवर कितने भयंकर! लेकिन रिंगमास्टर के द्वारा जब साध लिए जाते हैं, तो सर्कस के मालिक को एक-एक दिन में हजारों रुपये कमा करके देते हैं। शेर, जो किसी को भी मार डाल सकते हैं, मालिक को दो-दो हजार रुपया रोज कमा करके देते हैं। ये कैसे हो सका? साधना के द्वारा। साधना जैसे जंगली जानवरों की, की जा सकती है, उसी के तरीके से जीवन की भी की जा सकती है। साधना अगर न की जाए तब? आदमी प्राकृतिक रूप से बड़ा वाहियात है, वनमानुष है। डारविन ने कहा था कि इनसान बंदर की औलाद है, बंदर नहीं है, वह बंदर का भाई-बंधु है। वनमानुष होते हैं, जंगलों में रहते हैं, देखे हैं न आपने? न इनको कपड़ा पहनना आता है, न इनकी कोई सभ्यता है, न इनकी कोई बातचीत है। ऐसे किसी तरीके से जैसे बंदर पाल लिए जाते हैं, ऐसे एक वनमानुष के तरीके से वे लोग भी गुजारा कर लेते हैं, जिनको लोग जंगली कहते हैं। जंगली लोगों को नर-पशुओं में गिना जाता है।

रामू के बारे में सुना है न आपने! रामू नाम का एक लड़का था। आगरा जिले के भेड़ियों की माँद में पाया गया, इनसान का बच्चा था। भेड़िए उठा के ले गए, पर खाया नहीं, पाल लिया उन्होंने। शिकारियों ने भेड़ियों को मार करके उस मनुष्य के बच्चे रामू को पकड़ लिया। फिर क्या हुआ? वह जंगली जानवरों के तरीके से रहता था। बोलता भी वैसे ही था, चलता भी वैसे ही था। कच्चा मांस खाता था। उसको कुछ भी नहीं आया। उसको लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में भरती कर दिया गया। चौदह वर्ष की उम्र तक जिया, लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी उसे कुछ नहीं आया, कुछ बन नहीं सका। क्यों? क्योंकि छोटी उम्र में संस्कार नहीं डाले गए थे। संस्कार डालना आदमी के लिए बेहद जरूरी है। संस्कार के बिना आदमी स्वभाव का कैसा हो सकता है? फूहड़ है, अनगढ़ है, बेहूदा है। इसलिए आपको, अपने आपको संस्कारवान् स्वयं बनाना चाहिए। कौन बनाएगा? दूसरा कहाँ तक बनाएगा? बचपन में तो होता भी है। गुरुकुलों में ऋषि लोग छोटे बच्चों को महापुरुष बनाने की शिक्षा देते थे। आरण्यकों में वानप्रस्थों की भरती करने के बाद में शिक्षण देने की बात भी चलती है, पर सामान्य जीवन कैसे चले?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बताइए आप। सामान्य जीवन में कौन पीछे लगेगा आपके? एक-एक गलती, एक-एक विचारधारा, एक-एक भूल के बारे में कौन सुधार करेगा? इसलिए ये काम आपको स्वयं ही करना पड़ेगा। आप ही अपने गुरु हैं, आप ही अपने शिक्षक हैं और आप ही अपने साधक हैं, आप ही अपने मार्गदर्शक हैं। अगर आप यह समझ लें, तो आपके जिम्मे एक ही काम रह जाता है कि आप अपने आपको सुधारिए, आप अपने आप को सँभालिए, आप अपने आप को ठीक कीजिए और अपने भगवान् के नजदीक जाइए।

भगवान् क्या है? बताइए आप। एक भगवान् तो वह है, जो सारे विश्व में छाया हुआ है, सारे नियमों की व्यवस्था बनाता है। वे एक तरह के नियम हैं, कायदा और कानून हैं, जिसको हम परब्रह्म कहते हैं। एक और भी ब्रह्म है, जिसको आपको अपने ढंग से बनाना है; वह कौन-सा परब्रह्म है? अँगरेजी में इसको सुपरकांशस (सुपर चेतन) कहते हैं। वेदांत की भाषा में इसको 'स्व' कहा गया है, आत्मा कहा गया है। आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्य: मंतव्य: निदिध्यासितव्य:। अरे लोगो ! अपने आप को जानो, अपने आपको समझो, अपने आपको सुधारो, अपने आपको ठीक करो। यह कैसे हो सकता है? अपने आप। अपने आपसे क्या मतलब? अपने आपसे मतलब है- सुपर चेतन से, जो हमारे भीतर है, जिसके बारे में शुरू में बताया गया है। भीतर के अंत:करण में व्यक्तित्व है, जिसमें कि गुण, कर्म और स्वभाव भरे पड़े हैं, जिसमें विश्वास और मान्यताएँ भरी पड़ी हैं, जिसमें आदतें भरी पड़ी हैं। आदतों को आपको ठीक करना है। अपनी मान्यताओं में, जिसमें घिनौनेपन घुसे बैठे हैं, उनमें आपको सुधार करना है, शुरू से लेकर अंत तक देखभाल करनी है, उनको ठीक करना है। आपको आत्मदेव की उपासना करनी है। उपासना के बारे में जो हम कल कह रहे थे, वास्तव में वह आपका आत्मदेव है। अपने आपकी उपासना किया कीजिए। अपने आपकी उपासना जो कर लेते हैं, वह अपने आप ही, अपनी साधना से ही, अपने ही दबाव से भगवान् बना लेते हैं। मीरा ने अपने ही दबाव से पत्थर को गिरिधर गोपाल बना लिया और एकलव्य ने अपने दबाव से ही मिट्टी के पुतले को द्रोणाचार्य बना दिया था और रामकृष्ण परमहंस ने अपने ही व्यक्तित्व के दबाव से पत्थर को काली बना दिया था। अपने आपके व्यक्तित्व का उजागर होना और स्वच्छ, निर्मल होना— यह बहुत बड़ी बात है। इसके लिए आपको क्या करना चाहिए? चौबीसों घंटे आपको ध्यान रखना चाहिए। क्या ध्यान रखना चाहिए? यह कि हमारा जीवन किस तरीके से ठीक बन सकता है? आपको अपने कर्त्तव्यों पर ध्यान देना चाहिए। आपको अपने ज्ञान को परिष्कृत करना चाहिए और अपनी भक्ति-भावना का विकास करना चाहिए। तीन योग हैं न ! एक योग का नाम है— ज्ञानयोग। इसका अर्थ है— आप वास्तविकता को समझें। आपने बाहर को समझा है, बीजों को समझा है, खेती-बाड़ी को समझा है, पैसे को समझा है, दुकान को समझा है, मुहल्ले वालों को समझा है, संतान को समझा है, फिर अपने आपको क्यों नहीं समझा? अगर आप जीवन को और अपने आपको समझ सकते हों, तो इसका नाम 'ज्ञान योग' होगा। अगर आपने अपने फर्ज और कर्त्तव्यों को समझ रखा हो तब? फर्ज का ज्ञान नहीं, कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं, कोल्हू के बैल के तरीके से सारे दिन मरते रहते हैं, दूसरों की देखा-देखी वासनाओं के दबाव में। मेहनत कम नहीं करते। बहुत मेहनत करते हैं, पर कर्त्तव्यपालन? कर्त्तव्यपालन अलग चीज है। हमारे फर्ज और हमारी ड्यूटियाँ कहाँ हैं? ड्यूटियाँ और हमारे फर्ज जहाँ कहीं भी हमको बुलाते हैं, वहाँ हमको जाना चाहिए। इसका नाम कर्मयोग है और भक्ति-भावना? भक्ति-भावना मुहब्बत को कहते हैं, प्यार भगवान् को किया जाता है।

> गायत्री परिवार उत्कृष्टता में रुचि लेने वाले, विवेकवान्, दूरदर्शिता को प्रश्रय देने वाले और आदर्शों के लिए सक्रियता अपनाने वाले ऐसे सृजनशिल्पियों का समुदाय है जिनकी प्रकृति को दैवी संपदा का पक्षधर कहा जा सकता है।
>
> वाङ्मय-२८ पृ० ७.२४

उपासना भगवान् की, की जाती है। प्रेम भगवान् को किया जाता है; पर भगवान् तक सीमित नहीं रखा जाता। अखाड़े में कसरत करते तो हैं, पर अखाड़े तक, उस कसरत की जो शक्ति-संचय है, उसको खरच थोड़े ही कर देते हैं। वह तो बाजार में करना पड़ता है, कहीं और करना पड़ता है। भगवान् की भक्ति का अभ्यास करते हैं, भगवान् से हम प्रेम करते हैं, उपासना करते हैं। अगर उपासना के बाद में हमारी भक्ति का विकास हुआ हो, तब प्राणियों में इसका उपयोग करना पड़ेगा, मनुष्यों में उपयोग करना पड़ेगा, सबमें उपयोग करना पड़ेगा। प्यार से अपने आप को, हरेक को सराबोर कर देना पड़ेगा। प्यार अपने शरीर से कीजिए, ताकि इसको अच्छे तरीके से सुरक्षित रख सकें। प्यार अपनी अंतरात्मा से कीजिए, ताकि इसका कल्याण करने में आप समर्थ हो सकें। प्यार अपने मस्तिष्क के चिंतन की मशीन से कीजिए, ताकि प्यार द्वारा सही विचार करें और अपने आप को तहस-नहस न होने दें। प्यार अपनी बीबी को कीजिए, ताकि उसका व्यक्तित्व आप निखार सकें। प्यार आप बच्चों से कीजिए,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ताकि उनको संस्कारवान् बना सकें। प्यार अपने मुल्क को कीजिए, देश को कीजिए, धर्म और संस्कृति को कीजिए, ताकि उनको इस लायक बना सकें कि वह सम्मानास्पद हों, उनका मजाक नहीं उड़ाया जाए। हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति के बारे में लोग तरह-तरह के लांछन न लगा सकें, ऐसा कीजिए न ! भक्ति का अर्थ प्यार होता है। प्यार का अर्थ सेवा होता है। सेवा कीजिए, सेवा। अगर भक्ति को समझ सकते हों, तब फिर यह क्या हो जाएगा? फिर यह भक्तियोग हो जाएगा। अपने जीवन की वास्तविकता को समझ सकें, तो ये ज्ञानयोग हो जाएगा। जब अपने फर्ज और ड्यूटी को सब कुछ मान लें, इस बात पर ध्यान नहीं दें कि दूसरा आदमी क्या कहता है और क्या सलाह देता है, तब इसको कर्मयोग कहेंगे। इन तीनों बातों का ध्यान रखेंगे, तब आपका व्यक्तित्व निखरता हुआ चला जाएगा। जीवन की साधना के लिए इन बातों पर ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

हमारा जीवन पारस है, हमारा जीवन कल्पवृक्ष है, हमारा जीवन अमृत है, हमारा जीवन कामधेनु है। आप जो भी चाहें, इस जीवन को बना सकते हैं, लेकिन बनाना तो आपको ही पड़ेगा। आप ही बनाएँगे, तभी बनेगा। अपनी साधना आप कीजिए। अपने आपके विरुद्ध बगावत खड़ी कर दीजिए। अपने जन्म-जन्मांतरों को तोड़-मरोड़कर फेंक दीजिए और जो अच्छाई आपके भीतर नहीं हैं, जो विशेषताएँ अभी तक पैदा नहीं कर सके हैं, उन गुण, कर्म और स्वभाव के बारे में आप अभी तक अभावग्रस्त हैं, कृपा करके वे ठीक कीजिए, उनको सुधारिए। यह पुरुषार्थ कीजिए। बुराइयों को छोड़ने का पुरुषार्थ, अच्छाइयों को बढ़ाने का पुरुषार्थ। पराक्रम अगर आप करेंगे, तो किस तरीके से? आगे बढ़ने के लिए दो कदम बढ़ाने पड़ते हैं। एक कदम के बाद दूसरा, दूसरे के बाद फिर पहला। ऐसे ही आपको अपनी कमजोरियों और बुराइयों को दूर करने की जद्दोजहद करनी पड़ेगी और अपनी अच्छाइयों को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा। यह दो काम करते हुए चले जाएँगे, तो आपकी जीवन-साधना पूर्ण हो जाएगी। जीवन-साधना जिस हिसाब से आपकी पूर्ण होगी, आप देखेंगे सारा समाज आपका सहयोग करता है, अंतरात्मा आपका सहयोग करता है, भगवान् आपका सहयोग करते हैं, पात्रता जैसे ही विकसित होती चलेगी। इसलिए मैंने कल कहा था-- आपके भीतर फूल जैसे ही खिलना शुरू हो जाएगा, वैसे ही आपके ऊपर भौंरे आने शुरू हो जाएँगे, तितलियाँ आनी शुरू हो जाएँगी, बच्चे आपको ललचाई आँखों से देखने लगेंगे। भगवान् अपेक्षा करेंगे कि ये फूल हमारे गले में हैं, सिर पर होते तो कैसा अच्छा होता? कृपा करके कीजिए, साधना कीजिए। साधना के चमत्कार देखिए। साधना से सिद्धि मिलती है-- इस सिद्धांत को आपको जीवन में प्रयोग करके दिखाना है, तभी फायदा उठा सकेंगे, जिसके लिए कल्पसाधना में आप आए हैं। हमारी बात समाप्त।

ॐ शांति। ✱

परिजन सतर्कता बरतें

महापूर्णाहुति आयोजन की तैयारियाँ इन दिनों जोर-शोर से चल रही हैं। आयोजन की विराटता एवं भव्यता का अनुचित लाभ उठाने के लिए कतिपय स्वार्थीतत्त्व भी इन दिनों सक्रिय हो उठे हैं। इन तत्त्वों द्वारा परमपूज्य गुरुदेव, गायत्री परिवार, गायत्री धाम तथा तपोवन जैसे शब्दों का प्रयोग कर लेटरपैड, रसीद बुक तथा पत्रक आदि छपवाकर परिजनों को वितरित किए जा रहे हैं। इन पत्रकों में नया शांतिकुंज बनाने जैसी लुभावनी बातों के साथ दान देने की अपील की जा रही है।

कई स्थानों से यह शिकायतें भी प्राप्त हुई हैं कि एकाध जगह लोगों ने अखण्ड ज्योति आदि पत्रिकाओं की भी जाली रसीदें छपवा ली हैं। इन सबसे दाता को आर्थिक चोट के साथ भावनात्मक चोट भी लगती है। जिम्मेदार परिजन अपने क्षेत्रों या जनसामान्य में यह जागरूकता पैदा करें कि मिशन या पूज्य गुरुदेव के नाम पर, नया शांतिकुंज बनाने के नाम पर अनुदान या चंदे के रूप में धन न दें। सीधे शांतिकुंज हरिद्वार, गायत्री तपोभूमि मथुरा के पते से ही चंदे एवं श्रद्धा अनुदान-अंशदान की राशि भेजना सबसे निरापद है। अखण्ड ज्योति का सदस्यता शुल्क अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा के पते से भेजें।

व्यवस्था तंत्र
शांतिकुंज, हरिद्वार

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

तपकर कुंदन बनने की प्रक्रिया

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

भगवान् बुद्ध से उनके शिष्यों ने पूछा—मनुष्य इतना सशक्त और समर्थ होते हुए भी आखिर गिर क्यों पड़ता है ? अधःपतित क्यों हो जाता है ? भगवान् बुद्ध ने एक तो घटना दिखाई और एक उदाहरण दिया। उन्होंने घटना यह दिखाई कि अपने कमंडलु को पानी में फेंक दिया। कमंडलु तैरने लगा। शिष्यों से पूछा—यह कमंडलु डूबेगा कि नहीं ? उन्होंन कहा—यह क्यों डूबेगा ? यह डूबता थोड़े ही है। कमंडलु डूबने वाला नहीं है। यह तो तैरता रहेगा। भगवान् बुद्ध ने दुबारा उसको उठाकर उसमें एक सुराख कर दिया पैंदे में, फिर उसको पानी में फेंक दिया। धीरे-धीरे पानी उस कमंडलु में भीतर भरने लगा और वह डूब गया। शिष्यों से पूछा—भाई ! अभी तुम कह रहे थे कि कमंडलु डूबता नहीं है, यह तो डूब गया। शिष्य कहने लगे—महाराज जी ! आपने सुराख कर दिया इसके भीतर। सुराख कर देंगे, तो डूबेगा ही। ठीक बात है—भगवान् बुद्ध ने जवाब देते हुए शिष्यों से कहा—इनसान के भीतर सुराख हो जाए, उसमें पानी भरने लगेगा और वह डूब जाएगा और सुराख न हो, तब ? तब न पानी भरेगा और न वह डूबेगा। एक ये उदाहरण भगवान् बुद्ध ने अपने शिष्यों को दिया। एक और भी दिया उन्होंने। उन्होंने कहा—अगर तुम्हारे पास गाय हो और गाय बहुत दूध देने वाली हो, बहुत दूध देने वाली गाय का दूध आप दुहें, लेकिन जिस बरतन में आप दुहें, उसमें सुराख हों और छेद हों तब ? तब फिर क्या होगा बताओ ? शिष्यों ने कहा—महाराज जी ! फिर वह दूध चलनी में रुकेगा थोड़े ही। चलनी में जो सुराख हैं, उससे तो नीचे जमीन पर टपक जाएगा, कपड़े भी मैले हो जाएँगे और ग्वाले के हाथ कुछ भी नहीं लगेगा, सिवाय थकान के। उँगलियों को बेचारा दबोचता रहा, थनों को दबाता रहा, गाय भी परेशान ! ये भी परेशान ! लेकिन दूध पीने का वक्त जब आया, तब यह मालूम पड़ा इसमें कुछ भी नहीं है। नीचे से बरतन का दूध टपक गया।

यह उदाहरण बताता है कि आदमी के जीवन में अगर बहुत सारे सुराख हों, तो उसकी संपदाएँ, उसकी विभूतियाँ और उसकी विशेषताएँ—सब खत्म हो जाएँगी। फिर कुछ बचेगा ही नहीं। इसलिए उन्नति की बात करना तो ठीक है, आदमी को वैभव उपार्जित करना तो ठीक है, लेकिन उसके साथ-साथ में ये भुला मत दीजिए। क्या न भुलाएँ ? यह मत भुलाइए कि आपको सुराखों को बंद करना है, अपने छिद्रों की रोकथाम करनी है, अपनी मलीनताओं और अपनी असंयमितताओं के ऊपर हावी होना है, तो क्या करें ? मैंने बताया न आपको। चार बात करनी पड़ेंगी आपको। तप, जिसका कल जिक्र किया गया था, चार प्रकार के होते हैं। एक तप इंद्रिय तप कहलाता था, दूसरा जो है, ब्रह्मचर्य को भी तप कहते हैं। तीसरा समय के संयम को तप कहा जाता है। चौथा धन के संयम को तप कहा जाता है और विचारों के संयम को तप कहा जाता है। विचारों का संयम—एक। पैसों का संयम—दो। समय का संयम—तीन और इंद्रियों का संयम—चार। तपश्चर्या की चार धाराएँ हैं। आपको इन चार धाराओं में से सबसे पहली धारा का यहाँ बुला करके अभ्यास कराया गया और जिह्वा इंद्रिय का अभ्यास कराया गया। आपकी जिह्वा को तपस्वी बनाया जा रहा है। स्वाद के लिए भटकने वाली जिह्वा, इसने आपके स्वास्थ्य को खराब कर दिया, आपके मन को खराब कर दिया। आप काबू में रख सकें और लगाम को लगा सकें.....अगर आप घोड़े को लगाम नहीं लगाएँ तब ? ऊँट को नकेल नहीं लगाएँ तब ? आप बैल के नाक में रस्सी नहीं डालें तब ? हाथी के ऊपर अंकुश नहीं लगाएँ तब ? तब फिर आप समझ लेना, ये जानवर आपके लिए बड़े खौफनाक साबित होंगे और आपको तहस नहस करेंगे। इसलिए इनको नियंत्रण में करने के लिए ये सब जरूरी हैं। इंद्रियाँ हमारी हैं तो बहुत अच्छी, इनसे ही सब काम चलता है, लेकिन इनको उच्छृंखल बनने दें, रोकथाम न करें, तपस्वी न बनाएँ, संयमी न बनाएँ तो इंद्रियाँ आपके लिए मुसीबत खड़ी कर देंगा। जैसे आप खानपान के बारे में असंयम बरतते रहे हैं, उसका परिणाम ये हुआ है कि पेट खराब हो गया। पेट खराब होने का परिणाम यह हुआ कि स्वास्थ्य खराब हो गया स्वास्थ्य खराब होने का दोष किसी को मत दीजिए। इस सृष्टि में जितने जानवर हैं, इनमें से कोई बीमार नहीं पड़ता। मरते तो सब हैं, पर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बीमार कहाँ पड़ते हैं ? कबूतर बीमार पड़ते हैं ? लोमड़ी, खरगोश जो जंगल में उछलते हैं, कभी बीमार पड़ते देखे हैं आपने ? कोई नहीं पड़ता। एक ही बेवकूफ जानवर है, जिसका नाम है—मनुष्य। यही बीमार पड़ता है ? क्यों पड़ता है ? सिर्फ एक वजह है उसके बीमार पड़ने की, वह अपनी जीभ को इतना छुट्टल बना देता है कि वह अभक्ष्य खाती रहती है, जरूरत से ज्यादा खाती रहती है, जो चीजें नहीं खानी चाहिए, वह खाती रहती है। पेट काम नहीं करता, पेट हजम नहीं करता, मशीन खराब हो जाती है और शरीर कमजोर और बीमार पड़ जाता है। अगर आप जीभ पर काबू कर लें तब! तो आप विश्वास रखिए, आपका खोया हुआ स्वास्थ्य मिल जाएगा। अगर आप जीभ पर काबू कर लें, तो आप दिन-दिन कमजोर होते गए हैं, या होते जाएँगे, उससे आप निजात पा सकते हैं।

इसी प्रकार से ये जो अपना मन है, मन भी इसी का है। अन्न से विकसित होते हुए, अन्न से मांस बनता है, रक्त बनता है, हड्डियाँ बनती हैं, पर अंततः अन्न से मन बनता है। अंतिम चरण जो अन्न का है, वह मन है। ''जैसा खाएँ अन्न, वैसा बने मन''—ये सौ फीसदी सही है। आप अभक्ष्य खाते रहिए, तमोगुणी चीजें खाते रहिए, मांस खाते रहिए, दूसरी घिनौनी चीजें खाते रहिए, फिर आप देखिए आपका मन कैसा चंचल हो जाता है ? आप नशेबाज होइए, फिर आप देखिए आपका मन कैसा चंचल हो जाता है ? आपको मन स्थिर करना कैसा कठिन पड़ जाएगा। मन अपने आपे में नहीं है। ईंधन नीचे डालते हैं, तब भगोने के पानी में उबाल आता है। मन तो ऊपर भगोने में पानी जैसा है। नीचे आप जैसी लकड़ी डालेंगे, वैसा ही तो उबाल आएगा। अगर आपने बराबर अभक्ष्य खाने का क्रम जारी रखा है, तो आपका मन बराबर चंचल बना रहेगा। आपको कभी ऐसा मौका नहीं देगा कि आप मन की स्थिरता को रख पाएँ। इसलिए जीभ पर काबू पाइए, स्वादेंद्रिय पर काबू पाइए। स्वाद पर आपने काबू पा लिया, तो मन को सँभालने और शरीर की बीमारियों से मुकाबला करने में आप सफल हो जाएँगे। जीभ की बात चल पड़ी, तो जीभ का एक और हिस्सा है। जीभ को दो इंद्रियों में बाँटा गया है—एक इसको स्वादेंद्रिय भी कहते हैं और एक इसको वाक्इंद्रिय भी कहते हैं। वाणी पर संयम, वाणी पर अगर आपका संयम नहीं है, चाहे जिससे, चाहे जैसे शब्द बोलते हैं, कडुए बोलते हैं—इसका परिणाम क्या हुआ ? इसका परिणाम कभी अच्छा नहीं हो सकता। ''वशीकरण इक मंत्र है, तज दे वचन कठोर।'' कौआ अपने कड़ुवे वचन से सबको नाखुश करता रहता है और कोयल अपने मीठे वचनों से सबकी प्यारी बनती रहती है। जीभ से हमको दूसरों को सम्मान देना चाहिए, दूसरों की इज्जत और अपनी नम्रता का ध्यान रखना चाहिए। क्रोध और आवेश में कई आदमी ऐसे शब्द बोलते रहते हैं, जो मुनासिब नहीं होते। उसका परिणाम यह होता है, कितने आदमी वैरी-विरोधी हो जाते हैं। आपको मालूम है न! द्रोपदी ने व्यंग्य और उपहास में ऐसे शब्द कह दिए थे कि कौरवों को बहुत बुरा लगा। उसका अंतिम परिणाम महाभारत के रूप में आया। जीभ कटारी के तरीके से है। जीभ में बिच्छू का डंक बताया गया है। जीभ में साँप का जहर बताया गया है। जब आप कड़ुवा बोलते हैं तब! नहीं बोलते हैं तब! मीठा बोलते हैं तब! यह जीभ न जाने आपके लिए कितने काम की हो सकती है। इससे मोहब्बत कीजिए, दूसरों की इज्जत कीजिए, अच्छे परामर्श दीजिए, लोगों का उत्साह बढ़ाइए। लोगों की हिम्मत को तोड़िए मत। लोगों की हिम्मत बढ़ाने वाली बात कहिए। अगर आप ऐसा कर लेते हैं, फिर मैं आपको तपस्वी कहूँगा।

ये वाणी का तप हुआ, जिह्वा का तप हुआ। अब चलिए, इसमें एक और आती है। इंद्रियों में एक और बात आ जाती है। इंद्रियों के तप में ब्रह्मचर्य का तप भी आता है। वैसे तो इंद्रियाँ दस हैं; पर आप झंझट में मत पड़िए, दो को ही मान लीजिए। एक जीभ मुख्य है और दूसरी वाली कामेंद्रिय मुख्य है। कामेंद्रिय का मतलब केवल यौनकर्म ही नहीं होता, यौनकर्म के अलावा है। ये इंद्रियाँ सब मस्तिष्क से संबंध रखती हैं। कामवासना के बारे में आपको विचार आते रहते हैं। उनको देख करके आपके दिमाग खराब होते रहते हैं। अमुक अंग को और अमुक अंग की खूबसूरती और बदसूरती को ढूँढ़ते रहते हैं। इसका परिणाम क्या होता है कि ये मानसिक दुराचार हैं। किसी भी औरत के बारे में आपके मन में कोई संस्कार या विचार आते हैं, तो इसका मतलब है कि प्रकारांतर से पवित्रता का नुकसान हो गया है। आँख से भी ब्रह्मचर्य का क्षय होता है। आप कुदृष्टि से देखते रहिए, स्त्रियों को देखते रहिए, बहिन, बेटी और माँ की इज्जत मत कीजिए, अपनी धर्मपत्नी को भी रमणी और कामिनी की दृष्टि से देखिए, तो देखिए प्रत्येक औरत आपके लिए डाकिन और नागिन का काम करती है या नहीं और इन्हीं को आप बेटी मान पाएँ तब ? बहिन मान पाएँ तब ? माता मान पाएँ तब ? सहधर्मिणी मान पाएँ तब ? तब! यही महिलाएँ आपके लिए देवी की तरह से सहायक होंगी। आप चाहें स्त्रियों को देवी बना लीजिए, चाहे डाकिन बना लीजिए—

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आपकी मरजी की बात है। स्त्रियाँ भी आपके तरीके से साधारण मनुष्य हैं। आप अपना दृष्टिकोण अगर पवित्र नहीं रखेंगे, तो कुदृष्टि का परिणाम यह हुआ कि स्त्रियाँ आपके लिए कितनी हानिकारक हो गई हैं और आपके ब्रह्मचर्य को खंडित करती हैं और आपको पतनोन्मुख बनाती हैं और आपकी मन:स्थिति को नष्ट-भ्रष्ट करती हैं। अगर आप ये अपने मन के ऊपर देख पाएँ, फिर आप कैसे अच्छे-अच्छे हो सकते हैं। आपने गांधारी का नाम सुना है न! आँख पर पट्टी बाँध ली थी और इंद्रियों का संयम करना शुरू कर दिया था और अपने बेटे को लोहे का बना दिया था। आपने दमयंती का नाम सुना है? राजा नल की पत्नी का नाम दमयंती था। जंगल में अकेली रह रही थी और बहेलिया उससे छेड़खानी करने लगा। बस, छेड़खानी के समय दमयंती ने आँख उठाकर देखा, तो बहेलिया जलने लगा और खत्म हो गया। आपको गाँधी जी के बाबत मालूम है? बत्तीस वर्ष की उम्र में उन्होंने ब्रह्मचर्य लिया था और अपनी धर्मपत्नी को माता कहने लगे थे। ये ब्रह्मचर्य का प्रताप था कि दुबले-पतले और कमजोर होते हुए भी मन:शक्ति के हिसाब से ऐसे थे, जैसे कि कोई बड़ा पहलवान भी नहीं हो सकता था। आपको भीष्म पितामह की बाबत मालूम है? भीष्म पितामह शय्या पर पड़े रहे, छह महीने बाद तक पड़े रहे और कहा मुझे फुरसत नहीं है। कितने तीरों से घायल थे! ये कैसे हो पाया? वे ब्रह्मचारी थे। ये इंद्रियनिग्रह की बात है। स्वामी दयानंद के विषय में सुना है आपने? एक बार दो साँड लड़ रहे थे। स्वामी जी ने उन खूनी साँड़ों को दोनों के सींग पकड़कर इस तरीके से दबोचा और फेंका कि एक इधर गिरा और एक उधर गिरा। ये सामर्थ्य किसकी होती है? ब्रह्मचर्य की। हनुमान को आप नहीं जानते? हनुमान जी का ब्रह्मचर्य था, जिससे कि वे सामान्य बंदर से हनुमान बन सके। शंकराचार्य के बारे में यही कहा जाता है। शंकराचार्य ब्रह्मचारी न होते तब? शादी-विवाह करके बहुत सारे बच्चे पैदा करते तब? काम-वासनाओं में अपने आपको उलझाए रहते तब? भगवान् शंकर का अवतार बनने का मौका नहीं मिलता तब? लक्ष्मण जी ने मेघनाद को मारा था। मेघनाद को यह वरदान मिला था कि उसे वही आदमी मार सकता है, जिसने चौदह वर्ष का ब्रह्मचर्य पालन किया हो। लक्ष्मण जी ने चौदह वर्ष का ब्रह्मचर्य पालन किया था। अपनी पत्नी से भी दूर रहे और सीता जी को माता के समान मानते रहे। उनके आभूषण जमीन पर पड़े हुए मिले। रामचंद्रजी ने पूछा कि इन जेवरों में से सीताजी का कौन-सा है? उन्होंने बिछुए को तो पहचान लिया, ये सीताजी का बिछुआ है, लेकिन गले के हार को नहीं पहचान सके, कानों के कुंडलों को नहीं पहचान सके। उन्होंने कहा कि हमने कान तो कभी देखे नहीं हैं उनके, यद्यपि घूँघट नहीं मारती थीं। ये लक्ष्मण जी के ब्रह्मचारी होने का सबूत है, जिसकी वजह से वे इतना बड़ा काम करने में समर्थ हो सके। ये संयम है, कौन-सा वाला? ये इंद्रिय संयम की बात मैं कह रहा था।

अभी मुझे आपसे और कहना है। समय का संयम—समय आपकी संपत्ति है। जीवन जो बँधा है, ये समय से गुँथा हुआ है। समय का अर्थ होता है—जीवन। जीवन का अर्थ होता है—समय। आप समय के एक-एक लमहे को, एक-एक मिनट को इस तरह से खरच कीजिए, जिसमें आपका एक भी लमहा व्यर्थ और बेकार खरच न होने पाए। ये कैसे संभव है? ये इसी तरह संभव है। कैसे? जैसे कि संसार के प्रत्येक महापुरुष ने अपने-अपने समय का ठीक से नियमन किया है। विनोबा २३ भाषाओं के विद्वान् थे, कैसे? कैसे उन्होंने भूदान की यात्राएँ कर लीं—कन्याकुमारी से लेकर रामेश्वरम् तक। ये कैसे हुआ ? वे बराबर समय का विभाजन करते रहे, अन्य भाषाओं को सीखते-पढ़ते रहे। अब्राहम लिंकन जब सड़क से निकलते थे, तब लोग अपनी घड़ियों को सही करते थे। उनके उठने और टहलने का जो समय था, उसे उनकी लंबी टाँगों की आवाज से लोग समझ लेते थे कि लिंकन जा रहे हैं। बिलकुल समय पर जाते थे, क्या मजाल समय का एक लमहा भी खराब करते। ये क्या है? श्रम की शक्ति को, समय की शक्ति को आप समझते हों, मूल्य समझते हों, तो न जाने आप क्या-से-क्या कर सकते हैं? मनोयोग वगैरह आप लगाएँ तब? मनोयोग लगाएँ, तो आपने देखा है न! मन लगाकर परिश्रम करें तब? मन लगाकर परिश्रम करने और बिना मन के परिश्रम करने वाले का हर काम खराब, हर काम बेकार, हर काम घटिया और मन लगाकर काम करने वाले का काम कैसा होता है, आप देख सकते हैं।

बया पक्षी होता है, एक-एक तिनके को ढूँढ़कर लाता है, उसकी लंबाई-चौड़ाई नापकर के लाता है, हिसाब से लाता है, मोटाई को देखकर के लाता है और जहाँ लगाता है घोंसले में, बड़ी सावधानी से और मनोयोग से लगाता है। दूसरी ओर घोंसला बनाने वाला है—कबूतर। उलटी-पुलटी, टेढ़ी-तिरछी लकड़ी ले आता है, जहाँ-तहाँ रख लेता है और अपना घोंसला बना लेता है। हवा चलते ही आमतौर से घोंसले उसके, किसके? कबूतर के, जमीन पर गिरते हैं और बच्चे सब तबाह हो जाते हैं। इसलिए अक्सर देखा गया है, कबूतर किसी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पुराने मकान में या खंडहर में या कूएँ में घोंसला बनाते हैं, ताकि हवा का झोंका उनके घोंसले को बरबाद न कर सके, लेकिन बया को ये परेशानी नहीं है। बया के बच्चे अपने घोंसले में बैठे रहते हैं और बड़ा मजा उड़ाते रहते हैं। क्या मजाल कि एक बूँद पानी भी चला जाए। क्यों? उसने मन लगा करके घोंसला बनाया है। यही बात आप हर किसी के बारे में देख सकते हैं। मन लगाकर काम करना—ये आदमी के सम्मान का प्रश्न होना चाहिए। ये प्रतिष्ठा का प्रश्न है। आदमी के बारे में उसे कोई कामचोर कहे, हरामखोर कहे, तो समाझए ये बहुत बड़ी बेइज्जती है। वह विश्राम भले ही करे, इसमें हर्ज नहीं है, लेकिन विश्राम टाइम पर होना चाहिए। आलसियों के तरीके से काम को इधर छोड़ दिया, उधर छोड़ दिया, आधा छोड़ दिया, अधूरा छोड़ दिया—आप ऐसा मत कीजिए। समय का संयम पालिए।

तीसरा हमारा संयम है—धन का संयम। पैसा भगवान् ने आपको दिया है। इसलिए आपको नहीं दिया है कि आप बेसिलसिले से खरच करें। आप कमाएँ तो चाहे जितना, कमाने के ऊपर रोक नहीं है; लेकिन ईमानदारी से कमाएँ और शराफत के तरीके से खरच करें। बेसिलसिले का खरच मत कीजिए। 'सादा जीवन उच्च विचार' का सिद्धांत आपने सुना है न! जो सादा जीवन जिएगा, उच्च विचार उसी के हिस्से में आएँगे। उसका विलासी जीवन, खरचीला जीवन, ठाठ-बाट का जीवन, दिखावे का जीवन जितना ज्यादा होगा, उसका खरच, पैसे का खरच और समय के खरचे इतने ज्यादा हो जाएँगे कि उससे ही बेचारे के पास न कुछ समय बच सकता है, न पैसा बच सकता है। खरचीली जिंदगी, विलासी जिंदगी, ऐश की जिंदगी, अकर्मण्यता से भरी हुई जिंदगी, ठाठ-बाट से भरी हुई जिंदगी, ना ये नहीं। आप अपने पैसे को इसमें मत खरच कीजिए। समय को भी खरच मत कीजिए। आप किफायतशारी का जीवन जिएँ। संत जीवन वह है, जिसमें औसत भारतीय स्तर को अंगीकार किया है। औसत भारतीयों का जो स्तर है, आप अपने खरचे का स्तर उसी हिसाब से रखिए। आप भी इसी मुल्क के निवासी हैं न! जो बाकी तीन-चौथाई आदमी जिस ढंग से गुजारा करते हैं, आप क्यों नहीं कर सकते? ईश्वरचंद्र विद्यासागर यही करते थे। उनकी पाँच सौ रुपये की आमदनी थी। पचास रुपये में अपना गुजारा चलाते थे और साढ़े चार सौ रुपये बच्चों के लिए, विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति और दूसरे कामों के लिए खरच कर देते थे। आप क्यों नहीं कर सकेंगे? किफायत से रहिए, कम खरच में रहिए। ये मत कहिए, जो आदमी खरचीली जिंदगी जीते हैं, वह शक्तिशाली हो जाते हैं, बुद्धिमान हो जाते हैं, मजबूत हो जाते हैं। आप बेकार की बात मत कहिए। सही बात ये है, जो आदमी जितना खरचीला होता है, उतना ही दुर्व्यसनों में उसका धन खरच होता है। दुर्व्यसनों की कीमत पर क्या-क्या खरीदा जाता है? ईर्ष्या खरीदी जाती हैं, बीमारियाँ खरीदी जाती हैं, बेअक्ली खरीदी जाती है, आक्रोश खरीदा जाता है, सब चीजें तो खरीदी जाती हैं। आपके पास पैसा फालतू है? खरच करेंगे, तो नशे जैसी चीजों पर खरच करेंगे? नशे जैसी चीजों पर खरच करेंगे, तब सेहत गँवा देंगे, तब अपनी अक्ल गँवा देंगे, तब अपनी औलाद गँवा देंगे, तब अपनी इज्जत गँवा देंगे, तब आप सब कुछ गँवा देंगे। ये कैसे हो सकता है? ये फिजूलखरची की बात है। पैसा फिजूल में खरच होगा, तो यह सब आफत क्यों न आएँगी, बताइए। इसलिए पैसे के बारे में आप हमेशा किफायत से काम लीजिए। आदमी होशियार है, समझदार है कि बेअक्ल है—इसकी पहचान सिर्फ एक है कि वह खरच कैसे करता है? कमाने को तो आप कुछ भी कमा लेते हैं, सट्टा मिल जाए तब, लाटरी खुल जाए तब, जमीन में गड़ा हुआ धन मिल जाए तब, कोई बाप बहुत ज्यादा धन देकर मर जाए तब, तो बेवकूफ आदमी भी धनवान बन सकता है, लेकिन समझदारी की परख एक है उसने खरच कैसे किया? खरच करना बहुत समझदारी का काम है। आप फिजूलखरची करेंगे, तो अपने घर और औलाद के लिए ऐसी परंपरा छोड़ जाएँगे, जिससे कि वह तबाह हो जाए। इसलिए आप खरचीली जिंदगी न जिएँ। ईमानदार आदमी मितव्ययी हो सकता है। जो फिजूलखरच हो, उसको बेईमानी करनी पड़ेगी, फालतू पैसा लाएगा कहाँ से? रिश्वत लेनी पड़ेगी, चोरी करनी पड़ेगी, अमुक काम करना पड़ेगा, लेकिन जो आदमी किफायतशार है, वह आसानी से ईमानदारी की जिंदगी जी पाएगा। ये तीसरा वाला तप था।

चौथा वाला एक और भी तप है, उसको अगर आप करने लगें, तो आपका हमारे यहाँ साधनासत्र में आ करके उपासना करना सार्थक हो जाएगा। यह तप विचार-संयम है। विचारों को भटकने मत दें। विचारों की शक्ति आप समझते नहीं हैं! पैसे की शक्ति समझते हैं, विचारों को क्यों नहीं समझते? विचार असल में सबसे बड़ी शक्ति है। विचारों का अपव्यय मत होने दीजिए। विचारों को आवारा कुत्ते के तरीके से मत घूमने दीजिए। विचारों को एक दिशा में लगाइए। विचारों को ऐसे लगाइए, जैसे बंदूक की नली में कारतूस लगा करके एक दिशा में छोड़ते हैं, तो किसी निशाने पर लगता है। बारूद को फैला दें तब? तब कैसा अस्तव्यस्त हो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाएगा। अर्जुन के बारे में आपने सुना नहीं? अर्जुन एक तरीके से मछली का कोई हिस्सा देखता था, इसलिए उसका निशाना लगाना संभव हो सका। जो दूसरे राजकुमार थे, जो मछली का संपूर्ण सिर-पैर देखते थे, उनका कोई निशाना नहीं लगा। आपको अपने विचारों को अर्जुन के तरीके से एकाग्र रखना चाहिए। एकाग्रता का मतलब केवल यह नहीं है कि आप इनको रोक लें। एकाग्रता का मतलब यह है कि एक दिशा में, अच्छी दिशा में, वैज्ञानिकों के तरीके से इन्हें नियोजित कर देना। वैज्ञानिक विचार करते रहते हैं, पर एक दिशा में विचार करते हैं, फालतू विचार ही नहीं हैं। साहित्यिक हैं, ज्ञानी हैं, तपस्वी हैं और विचारशील लोग हैं—सब एक दिशा में अपने विचारों को लगाए रखते हैं और एक दिशा में विचार रखने का परिणाम ये होता है कि इसके कई अच्छे नतीजे निकलते हैं। सूरज की किरणें चारों ओर फैलती रहती हैं। आतिशी शीशे के ऊपर इकट्ठा करके उनको एक जगह पर केंद्रित कर दें, तब आप देखते हैं न । आग जल जाती है। इसी तरीके से आदमी के फैले हुए विचार, आवारागरदी के विचार, अनावश्यक विचार, बेसिलसिले के विचार; आदमी की मनःशक्ति कितनी मूल्यवान् है, सबको बरबाद कर देते हैं। आप ऐसा मत होने दीजिए। विचारों को जहाँ-तहाँ मत घूमने दीजिए। आप अभ्यास डालिए। आप सिद्धांतों पर विचार करें। सृजनात्मक विचार करें। आप ऐसे विचार करें, जिससे कि आपका भविष्य बनता हो अथवा कोई योजना बनती हो। आप ऐसे क्रमबद्ध विचारों का अभ्यास डालिए। बिना क्रम के विचारों को, जो भी आएँ, उनको हटा दीजिए। विचारों से विचारों की लड़ाई कराइए। कुविचार जब आपके मन में आते हों, तो सदाचार के विचारों की सेना बनाकर रखिए और उन्हें गुत्थम-गुत्था करा दीजिए। दुराचार के विचार जब आएँ, तो आप सदाचार और संयम के विचारों को आगे बढ़ा दीजिए, गुत्थम-गुत्था करा दीजिए, तो वे विचार भाग जाएँगे। विचारों से विचारों को काटिए, विचारों को विचारों से सँभालिए। विचारों को संपत्ति समझिए। विचारों का संयम कीजिए। विचारों को ऊपर उठने दीजिए। विचारों को उथल-पुथल में गिरने से रोक दीजिए। अगर आप ऐसा करेंगे, तो मैं समझूँगा कि आप विचारों के क्षेत्र में तपस्वी हैं।

आपको चारों तप करने चाहिए। इंद्रियनिग्रह का तप—एक, समय-संयम का तप—दो, धन का संयम और धन का बजट बनाकर खरच करने का तप—तीन। अपने विचारों को एक विषय विशेष में रोके रहने का उपक्रम करना चाहिए—यह चौथा तप है। इसका नाम विचारसंयम है, विचार तप है। आप तपस्वी जीवन जिएँ। जरूरी नहीं है कि आप धूप में खड़े हों, खाना खाना बंद कर दें और अमुक काम करें। ये जरूरी है कि अपने जीवन के जो सुराख हैं, जो आपकी गलतियाँ और कमजोरियाँ हैं, उनको रोकें और जो अच्छाइयाँ आपके भीतर नहीं हैं, उनको बढ़ाने की कोशिश करें। अगर आप ऐसे काम में लगातार लगे रहेंगे, तब मैं आपको तपस्वी कहूँगा। यहाँ साधना शिविरों में बुलाने का उद्देश्य था, आपको तपस्वी बनाना। आप यहाँ से जाएँ, तो तपस्वी होकर जाएँ। यहाँ हैं, तो तपस्वी होने का अभ्यास करें। तपश्चर्या में कितनी शक्ति भरी पड़ी है? इसका वर्णन मैंने अभी आपसे किया। आप चाहें, तो इसका अनुभव करके स्वयं भी देख सकते हैं कि तपस्वी कितने समर्थ होते हैं, कितने शानदार होते हैं? आपको वैसा ही बनना चाहिए। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति। ❋

(पृष्ठ ४१ का शेषांश)

इस तपश्चर्या से कष्ट सहन करने में प्रसन्नता अनुभव करने की मनःस्थिति का निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त अपने शरीर की सेवा आप करने, स्वयं हजामत बनाने, स्वयं कपड़े धोने जैसे काम तो सहजता से पूरे किए जा सकते हैं। इसी प्रकार चमड़े की वस्तुएँ न प्रयोग कर, नौ दिन रबड़ की-प्लास्टिक की चप्पल पहनकर काम चलाया जा सकता है। यह कोई कठिन बात नहीं है, किंतु इसके पीछे जो तथ्य छिपा हुआ है, वह यह है कि चमड़े के उपयोग से न केवल नवरात्रि में वरन् अन्य समय में भी कमी करने या बचने की आवश्यकता है। क्योंकि इसके पीछे अहिंसा वृत्ति के विकास का तत्त्वज्ञान एवं प्राणिमात्र के प्रति करुणा बरतने-'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का सिद्धांत व्यवहार में उतारने की प्रेरणा छिपी हुई है।

इस प्रकार के अनुशासनों को नियमितता और निष्ठापूर्वक पालन करने से अनुष्ठान का उद्देश्य पूरा होता है। उक्त तत्त्वदर्शन को जीवनक्रम में समाविष्ट कर जो साधक साधना करते हैं, उनके लिए नवरात्रि साधना की चमत्कारी परिणति का लाभ ले सकना तनिक भी कठिन नहीं है। ✧

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(कल्पसाधना सत्र)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! ज्ञानयोग, कर्मयोग के संदर्भ में मैं आप से पिछले दिनों चर्चा कर रहा था कि आपको दूरदर्शी तथा विवेकवान् होना चाहिए। आपको अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग होना चाहिए, जैसे कि महापुरुष अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहते हैं। ज्ञानयोग और कर्मयोग के बाद एक मुख्य योग रह जाता है, जिसका नाम—भक्तियोग है। हम उस योग की बात कर रहे हैं, जो आदमी को भगवान् से जोड़ देता है। आत्मज्ञान इनसान को भगवान् से जोड़ देता है। आज हम इसी **भक्तियोग** के बारे में ही आप से चर्चा करना चाहते हैं।

आज भक्ति के संदर्भ में लोगों के विचार विकृत हो चुके हैं। आज भावसंवेदना को, रोने को लोगों ने भक्तिभाव समझ रखा है। देवी के सामने नाक रगड़ना, उनके सामने रोना—यह भक्ति नहीं कहलाती है। उलटा बैठ जाना, सीधा बैठ जाना, आँसू बहाना—यह भक्ति नहीं है। यह भावुकता है, भक्ति नहीं। जहाँ तक आध्यात्मिक प्रगति एवं भक्ति के स्वरूप का संबंध है, यह सही नहीं है।

भक्ति किसे कहते हैं? इसका सीधा-सादा मतलब है प्यार-मोहब्बत। जिसके अंदर यह होता है, वह भावना से लबालब भरा होता है। प्यार से बड़ी कोई चीज नहीं है। इसी की तलाश में जीवात्मा रहता है। आनंद प्राप्त करने के लिए मनुष्य इंद्रियों का भोग करता है, सिनेमा देखता है, कामवासना के फेर में रहता है। परंतु आप तीन घंटे से ज्यादा सिनेमा देखेंगे तो आँखें खराब होने लगेंगी। इसी तरह कामवासना का भी आनंद थोड़े समय-चंद मिनटों का होता है। जीवात्मा को जो स्थिर एवं चिरस्थायी आनंद परमात्मा को प्राप्त करने पर मिलता है, उसे भक्ति कहते हैं। आपने अगर इसको अनुभव करके देखा होता तो मजा आ जाता।

आपको अपने आप से, अपनों से प्यार होता है। अपनी मोटर से, साइकिल से प्यार होता है। आप इसी तरह हर व्यक्ति को अपना मानिए। अगर पड़ोसी के बच्चे को भी अपना मानेंगे तो आपको आनंद होगा। अगर कोई अपना आदमी घर में आ जाता है, तो आपको मजा आ जाता है। वास्तव में आनंद अपनेपन से होता है। अपना एवं पराये का जो फरक है, वह बहुत बड़ा है। जहाँ टार्च का प्रकाश पड़ता है, वहाँ की चीजें दिखाई पड़ती हैं। जहाँ प्रकाश नहीं पड़ता है, वहाँ अंधकार छाया रहता है। मित्रो! आप प्यार का टार्च जहाँ कहीं भी डालेंगे, जिस चीज पर भी डालेंगे, वह चीज आपको प्यारी एवं बढ़िया-आनंददायक मालूम पड़ेगी। लैला-मजनूँ कोई खास सुंदर नहीं थे, परंतु दोनों को एक-दूसरे से प्यार था, इसलिए दोनों एक-दूसरे पर मरने-खपने के लिए तैयार रहते थे।

मित्रो! भगवान् एक रस का नाम है, जिसे शास्त्रकारों ने 'रसो वै सः' बतलाया है। रस किसे कहते हैं? आनंद को कहते हैं। यह आनंद कहाँ है? भगवान् में है। अगर आप भगवान् के साथ आत्मीयता जोड़ लें तो आपको भगवान् की भक्ति का आनंद मिल जाएगा। हम भगवान् के हैं तथा भगवान् हमारे हैं, यदि ऐसी भावना मनुष्य के भीतर आ जाए तो मजा आ जाता है। मीरा ने भगवान् को अपना पति मान रखा था। इस कारण से उस प्यार के लिए भगवान् और मीरा दोनों भूखे थे। यही भक्ति है।

मित्रो! जरासंध एवं कंस ने कृष्ण भगवान को पराया माना था, इस कारण उसे उनसे राग-द्वेष था। अपने होते हुए भी वे पराए लगते थे, फिर आनंद एवं प्यार कहाँ से उभरता? आनंद एवं प्यार एक ही चीज का नाम है। अगर आपको आनंद पाना है, तो प्यार का माद्दा बढ़ाना पड़ेगा। यह दिखाना नहीं पड़ता, वरन् अंदर से उपजता है और बिना प्रतिदान की इच्छा के अपना सब कुछ औरों पर उँड़ेल देता है। उदाहरण के लिए, अगर आपने अपने शरीर से जरा भी प्यार किया है, तो जब उसमें जरा-सी भी गड़बड़ी हो जाती है, तो आप उसको ठीक करते हैं, दवा खाते हैं, सँवारते हैं, बाल बनाते हैं। इसका कारण यह है कि हम अपने शरीर को अपना मानते हैं। अपनेपन का माद्दा जहाँ कहीं भी होता है, वहाँ आनंद एवं प्यार बरसता रहता है। गेंद जब दीवार पर फेंकी जाती है, तो वह लौटकर आपके पास आ जाती है। गुंबज में जो आवाज

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लगाई जाती है, वैसी ही आवाज लौटकर प्रतिध्वनि के रूप में हमें पुनः सुनाई देती है। अर्थात् वह वापस आ जाती है।

मित्रो! ठीक उसी प्रकार जब हम किसी को प्यार करते हैं, मोहब्बत करते हैं, तो वह भी उसी आवाज की तरह हमारे पास वापस आ जाती है। कहने का मतलब यह है कि हम जिसे प्यार करते हैं, वह भी हमें प्यार करता है। इस संसार में अगर आप लोगों को राग-द्वेष के रूप में देखेंगे, तो सारे संसार में आपको राग-द्वेष ही मिलेगा। अगर आप लोगों की उपेक्षा करना आरंभ कर देंगे, तो आपको चारों तरफ उदासी, सूनापन तथा उपेक्षा ही मिलेगी। सब माया तथा मिथ्या दिखलाई पड़ेगा। परंतु अगर आपकी भावनाएँ ठीक होंगी तो आपको हर जगह राम एवं सीता दिखलाई पड़ेंगे। जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है—

सीयराम मय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥

साथियो! अभी तक आपने अपना दायरा अपने शरीर तथा अपने कुटुंब तक सीमित रखा है। उस दायरे को बढ़ा दीजिए। अपने आपको सारे संसार के रूप में बढ़ा दीजिए। स्वामी रामतीर्थ अपने आपको रामबादशाह कहा करते थे। किसका बादशाह हूँ? बादलों का, आकाश का बादशाह हूँ, यह कहा करते थे। आप गंगाजी का पानी निहारना चाहें, सड़क पर चलना चाहें, बादलों को निहारना चाहें तो आपको कौन रोक सकता है? आप किसी के काम आएँ, किसी से मीठे वचन बोलें, चिड़ियों को दाना डाल दें, तो आपको कौन रोक सकता है? यह सत्य है कि अगर किसी के घर में घुसें या किसी का सामान आदि चुरा लें तो आपको कोई रोक भी सकता है, कानून के हवाले कर सकता है, परंतु आप अगर अच्छा काम करेंगे तो आपको कौन रोक सकता है? आप जिससे भी मोहब्बत करेंगे, उसके लिए हमेशा सेवा के लिए तैयार रहेंगे।

मित्रो! प्यार का वास्तविक स्वरूप सेवा में ही दिखलाई पड़ता है। इसके द्वारा ही प्यार में निखार आता है। प्यार करने की पहचान ही यह है कि आप उसकी सेवा करना चाहते हैं या नहीं? प्यार करने वाला अपना अनुदान दूसरों को देता है। प्यार करने वाला स्वयं कष्ट उठाता है तथा दूसरों को सुखी बनाता है। प्यार सेवा सिखलाता है, प्यार अनुदान देना सिखाता है। देशभक्ति, विश्वभक्ति, भगवान् की भक्ति इसी का तो नाम है। अगर आपको हैरानी होती है तो हो जाए, परंतु आप अपने बच्चे, देश, सारे संसार को सुखी बनाने का प्रयास करते हैं, तो वही भक्ति कहलाती है। इस दुनिया की सर्वश्रेष्ठ चीज यही है।

इस प्रकार भक्तियोग न केवल मानसिक तथा भावनात्मक संपदा है, वरन् उसके आधार पर परमार्थ तथा पुण्य का मौका भी मिलता है। आप भक्ति कीजिए तथा सेवा कीजिए, यह दोहरा लाभ प्राप्त होता है। प्यार का वास्तविक अर्थ यही है। मनुष्य का मोह एवं बंधन उसके साथ ही होता है, जिसके साथ उसका प्यार तथा मोहब्बत होता है। शंकर भगवान् की हम उपासना करते हैं तो हमें शंकर की भक्ति के साथ भूत-पलीत लोगों की अर्थात् गए-गुजरे लोगों की, गरीब एवं पिछड़े लोगों की भी हमें सेवा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जिनकी समझदारी कम है, उनको ऊँचा उठाना चाहिए। उनकी सेवा करनी चाहिए। शास्त्र में कहा गया है—'भज सेवायाम्' अर्थात् हमें भजन के साथ सेवा भी करनी चाहिए। दोनों एक ही चीज हैं। अगर हम भक्ति करते हैं तथा समाज की, पिछड़े लोगों की सेवा नहीं करते हैं तो हमारा भजन सार्थक नहीं हो सकता है।

> पारदर्शी वस्तुओं में होकर ही सूर्य की किरणें प्रवेश करती और पार जाती हैं। भगवान् का प्रकाश और प्रेम उन्हें ही मिलता है, जिनका हृदय निर्मल है।

सेवा हम किसकी कर सकते हैं? मित्रो! इस दुनिया में व्यक्ति उसकी ही सेवा कर सकता है, जिससे वास्तव में उसकी मोहब्बत है। अतः आप अपने मोहब्बत का दायरा बढ़ाइए। जैसे-जैसे आपका यह दायरा बढ़ेगा, आप सेवाभावी बनते चले जाएँगे एवं जैसे-जैसे आप सेवाभावी बनते चले जाएँगे, आपकी भक्ति भी बढ़ती चली जाएगी।

भक्ति का अभ्यास हम भगवान् से करते हैं। यह व्यायामशाला है। जिस प्रकार पहलवान व्यायामशाला में जाकर कसरत करता है, मसक्कत करता है तथा अपने स्वास्थ्य को ठीक कर लेता है। उसी प्रकार मनुष्य भगवान् के साथ भक्ति यानी मोहब्बत करके समाज के बीच में भी जाकर प्यार एवं मोहब्बत करता है, कर सकता है।

भगवान् आदर्शों के—सिद्धांतों के समुच्चय को कहते हैं। भगवान् की कोठरी में बैठकर हम वे चीजें सीखते हैं जिनका व्यावहारिक स्वरूप जाकर हम समाज के बीच प्रस्तुत करते हैं। भगवान् कोई व्यक्ति नहीं है। वह तो एक नियामक सत्ता है, एक कायदा है, एक कानून है। 'भगवान् तो सेवा का नाम है। आप उसे मिठाई क्या खिलाएँगे?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मुकुट क्या पहनाएँगे ? यह आपकी भूल है। इसे सुधारना आवश्यक है।

पूजा-उपासना के समय, भक्ति के समय आपने कोई मूर्ति या चित्र रखा है, तो इसमें कोई हर्ज की बात नहीं है, परंतु आप भगवान् को आदर्श एवं सिद्धांतों का समुच्चय मानिए। आपने अगर भगवान् शंकर को व्यक्ति विशेष माना है, तो आप भ्रम-जंजाल में पड़ जाएँगे। अगर शंकर भगवान् को आपने ऐसा माना है कि वह एक व्यक्ति है, जो बैल पर बैठकर इधर-उधर घूमता रहता है। बेल का पत्ता, आक का पत्ता, धतूरे का फूल खाता रहता है। उसके माथे पर चंद्रमा है, सिर से गंगा निकल रही है तथा भूत-प्रेत उसके साथ रहते हैं। यदि आप ऐसा मानने लगेंगे, तो आप भ्रम एवं जंजाल में पड़ जाएँगे।

मित्रो! आपको शंकर भगवान् को आदर्श एवं सिद्धांतों का एक समुच्चय मानना चाहिए, साथ ही आपको यह समझना चाहिए कि शंकर भगवान् के सिर से गंगा निकलने का अर्थ—ज्ञान का प्रवाह, गले में मुंडमाला का अर्थ—हमेशा मौत को गले लगाना, बैल की सवारी के माने-परिश्रमी बनना, चंद्रमा का मतलब—मानसिक संतुलन, भूत-प्रेत का मतलब—गए-गुजरे एवं पिछड़े लोगों को गले लगाना तथा उनके विकास के बारे में सोचना, श्मशान में निवास का मतलब—वीरान में रहकर भी समाज के विकास के बारे में सोचना है। यही है शंकर भगवान् की विशेषता, जिसे हर भक्त को सोचना चाहिए।

इसी प्रकार हर भगवान् के बारे में यही बात है। हर भगवान् इसी तरह आदर्शों एवं सिद्धांतों का एक समुच्चय है, चाहे वह गणेश जी हों, हनुमान जी हों, रामचंद्र जी हों या भगवान् श्रीकृष्ण जी हों। इसी प्रकार हर देवी एवं देवता तथा अवतारों को आपको मानना चाहिए। आप जिस भी देवता की भक्ति करते हैं, उसका मतलब समझते हैं, उस देवता के सिद्धांतों एवं आदर्शों को मानते हैं, उस रास्ते पर चलते हैं। वास्तव में यही सच्ची भक्ति कहलाती है। अगर उन सिद्धांतों के प्रति, आदर्शों के प्रति आपकी श्रद्धा, आस्था का विकास होता चला जाएगा, तो आपकी भक्ति भी बढ़ती हुई चली जाएगी। अगर आप वास्तव में ऐसी भक्ति करेंगे तो आपको फायदा होगा। आप सच्चे अर्थों में भगवान् के भक्त कहलाएँगे। मरने के बाद आप स्वर्ग-मुक्ति में जाएँगे या नहीं, कह नहीं सकता, परंतु आपको इसी जीवन में चारों ओर ऐसा नजारा नजर आएगा कि चारों तरफ स्वर्ग है। आपको चारों ओर दिव्य वातावरण दिखाई पड़ेगा। आप निहाल हो जाएँगे।

मित्रो! आप किसी के प्रति नफरत न करें। आप व्यक्ति से नहीं, उसकी बुराइयों से नफरत कीजिए तथा उसमें सुधार लाने का प्रयास कीजिए। आप प्यार के आधार पर भी लोगों को बदल सकते हैं। आप किसी से राग-द्वेष न करें। आप ऐसा काम करें कि उसके व्यक्तित्व की रक्षा भी हो जाए तथा उसकी बुराई भी दूर हो जाए। गाँधी जी ने इसी प्रकार अँगरेजों से प्यार की लड़ाई लड़ी, प्यार का अनुदान दिया। उसके बाद क्या हुआ? मित्रो! अँगरेज भारत छोड़कर चले गए। प्यार बहुत बड़ा संबल होता है, यह आप न भूलें। प्यार से मनुष्य के अंदर शांति आती है, उसके व्यक्तित्व का विकास होता है।

मित्रो! हमने गायत्री माता से प्यार किया है और सारे समाज की सेवा की है। आप भी चाहें तो इसी प्रकार आनंद की अनुभूति कर सकते हैं तथा सब ओर से प्यार तथा आनंद प्राप्त कर सकते हैं। अगर आप अपने दृष्टिकोण तथा विचार बदल दें तथा सभी लोगों से प्यार करें तो आप अमृतपान कर सकते हैं। यह अमृत चारों ओर बिखरा पड़ा है। आप चाहें तो उस अमृत को पी सकते हैं तथा दूसरों को भी पिला सकते हैं। यह है भक्तियोग, यह है प्यार-मोहब्बत। आप चाहें तो इसे अपनाकर अपने जीवन को महान् बना सकते हैं, आत्मविकास कर सकते हैं। आज की बात समाप्त।

।ॐ शांतिः। ✻

हमारा जीवनलक्ष्य

अध्यात्म दर्शन का सार-निष्कर्ष इतना भर है कि अपने को जानो—'आत्मानं विद्धि'। अपने को विकसित करो और ऐसी राह पर चलो, जो कहीं ऊँचे लक्ष्य तक पहुँचाती हो। यह शिक्षा अपने आप के लिए है। इसे स्वीकार-अंगीकार करने के उपरांत ही वह प्रयोजन सधता है, जिसमें दूसरों से कुछ समर्थन, सहायता, अनुदान पाने की आशा की जाए। देवता भी तपस्वियों को ही वरदान देते हैं, बाकी तो फूल-प्रसाद के दोने लिए, देवस्थानों के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहते हैं। भिखारी कितना कुछ कमा पाते हैं, इसे सभी जानते हैं। उन्हें जीवन भर अभावों की, उपेक्षा की शिकायत ही बनी रहती है। (वाङ्मय २८, पृ. २.१६)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

आत्मिक प्रगति का ककहरा

शांतिकुंज हरिद्वार में अक्टूबर १९८० में दिया उद्‌बोधन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! कई बार ऐसा होता है कि बाप-दादों की बहुत-सी दौलत हमारे हाथ लग जाती है। बच्चे चाहे कमाएँ या न कमाएँ, माता-पिता बहुत-सा धन बच्चे के लिए छोड़कर चले जाते हैं। जो लड़के समझदार होते हैं, वे पैतृक धन के रहते हुए भी अपनी आमदनी का कोई-न-कोई जरिया निकाल ही लेते हैं, जिससे पैतृक धन में कमी न आने पाए। लेकिन कुछ ऐसे भी लड़के होते हैं, जो माता-पिता के धन को जुआ खेलने में, शराब पीने में गँवा देते हैं। इस तरह बुरे व्यसनों से उनका समस्त धन नष्ट हो जाता है और वे विनाश के कगार पर पहुँच जाते हैं। बुराइयों के गर्त में गिर जाते हैं।

भगवान् ने अपनी औलाद के लिए अपने अलग नियम व तरीके बनाए हैं और उसका नाम रखा है, 'मनुष्य'। मनुष्य क्या है? मनुष्य भगवान् की नकल है। हम इसी से अंदाज लगा सकते हैं कि भगवान् बड़े रूप में कैसा होगा? जैसे इनसान है, भगवान् भी वैसा ही होगा। ऐसे ही हम अनुमान लगा सकते हैं कि समुद्र कैसा होगा? जैसा कि तालाब है, हम वैसा ही कुछ अंदाज लगा सकते हैं। कुछ ऐसी शक्तियाँ भी सृष्टि में हैं, जो छोटे तालाब को बड़े समुद्र में बदल सकती हैं।

श्रेष्ठतम कृति है मानव—

मित्रो! भगवान् ने अपनी सर्वश्रेष्ठ प्रतिमा इनसान के रूप में ही बनाई है। शेर जब बच्चा पैदा करेगा, तो अपने समान ही पैदा करेगा, बिल्ली पैदा नहीं करेगा। इसी प्रकार सभी जीव अपने समान ही संतानोत्पत्ति करते हैं। इसी प्रकार भगवान् ने अपने प्रतिरूप में इनसान को बनाया है। इनसान को उसने इसलिए बनाया है कि वह संसार को सुंदर एवं महत्त्वपूर्ण बनाने में अपना योगदान दे। फिर हमारी आपकी मिट्‌टी पलीद कैसे हो गई? हर आदमी दुःखी क्यों पाया जाता है? पूरे संसार में अनाचार और भ्रष्टाचार क्यों फैला हुआ है? पूरा संसार अज्ञानता के अंधकार में क्यों डूब रहा है? इसका क्या कारण है? भगवान् चुप क्यों है। भगवान् को 'सत्यम्-शिवम्-सुंदरम्' कहा जाता है, फिर उसके राजकुमार इनसान में इस बात की कमी कैसे हो गई? क्या बात हुई कि इनसान ने भगवान् के दिए हुए गुणों को एकदम भुला दिया!

स्रष्टा ने सृष्टि का जो प्रत्येक घटक बनाया है, उसकी छोटी-से-छोटी कलाकृति का नाम 'एटम' है। क्या आपने 'एटम' को कभी देखा है? एटम में बहुत ताकत होती है। समूचे सौरमंडल में सूर्य केंद्र में रहता है, परंतु एटम के अंदर ऐसा भूचाल रहता है कि वह सूर्य को भी अपनी ताकत से ढक लेता है। जिस तरह से अंतरिक्ष में नवग्रह चक्कर काटते रहते हैं, उसी तरह से एटम भी अपने आप में पूर्ण शक्तिशाली है व सूर्य के चारों ओर चक्कर काटता रहता है। एटम न्यूट्रानों, प्रोटानों व इलेक्ट्रानों के रूप में बराबर चक्कर काटता रहता है।

भगवान् बड़ा है, यह भी मैं मानता हूँ। एटम और इनसान दोनों बहुत ही सूक्ष्म हैं, किंतु मनुष्य की प्रकृति भगवान् ने ऐसी बना दी है कि उसमें ताकतों और चमत्कारों का समावेश कर दिया है। भगवान् और इनसान का तरीका एक ही है, सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् का। जैसे आदमी बड़ा होता है और बच्चा छोटा होता है, पर भूख दोनों की एक ही होती है। ऐसे ही भगवान् और इनसान की प्रकृति एक ही होती है।

अंतर पड़ा शक्तिक्षय के कारण—

फिर यह फर्क कैसे पड़ा? मैं बताता हूँ आपको। जैसे बड़े लोग, संपन्न लोग अपव्यय के कारण गरीब हो जाते हैं, उनकी जागीरें नीलाम हो जाती हैं। ये सब कैसे हुआ? ये सब लड़कों के अपव्यय के कारण हुआ। लड़कों ने किसी अच्छे कार्य में उस धन को नहीं लगाया, जिससे उनका जीवन आज खानावदोशों की तरह से हो गया। आदमी के पास कमाई के बहुत सारे साधन हैं। उसकी उन्नति के लिए, लक्ष्यप्राप्ति के लिए और उसके अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बहुत धन एकत्र हो सकता है। परंतु उसने ईश्वरप्रदत्त धन का अपव्यय किया।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मित्रो! आज हमारे सामने उपयोग की समस्या है। उत्पादन की समस्या नहीं है, कमाने की समस्या नहीं है, वरन् समस्या यह है कि धन को किस तरह से खरच किया जाए। हमें कमाने से ज्यादा उसकी चिंता करनी चाहिए, जो हमारे पास है। हमें उसकी रखवाली करनी चाहिए। एक कहावत है, 'अंधी पीसे कुत्ता खाए।' यह कहावत हम और आप जैसे लोगों के लिए ही किसी ने बना दी है, क्योंकि हमें अंधी की तरह दिखाई नहीं देता। जिस तरह से उसके आटे को कुत्ता खा गया था और वह बैठी अनाज पीसती रही, उसी प्रकार हमारे ईश्वरप्रदत्त धन को कोई और ही निरर्थक खा जाता है और हम कमाते रहते हैं। इसी से मिलती हुई एक और कहावत है-'अंधा रस्सी बँटता जाए! बछड़ा उसे खाता जाए।' आपके और हमारे सामने भी ऐसी ही समस्या है।

आत्मिक प्रगति के चार मार्ग—

साथियो! मैं आपको अध्यात्म के चार रास्ते बताने जा रहा हूँ। उसमें से एक साधना के बारे में है। अभी जो बछड़ा और कुत्ता का उदाहरण दिया है, वो भवसागर है। पारस को छूकर लोहे के सोना बनने की बात आपको बता चुका हूँ। पर अब मैं यह कहता हूँ कि भगवान् को छूकर आदमी भगवान् बन जाता है। रामचंद्र जी, कृष्ण जी माँ के गर्भ से पैदा हुए और जलसमाधि में या श्मशान घाट में जलाए गए। इसलिए इनसान कहलाए। जो पैदा होता है, वह मर सकता है, क्या वह आदमी भगवान् नहीं हो सकता, इनसान ही रहता है?

भगवान् आपसे यह कहता है कि यदि आपकी उपासना सही हो तो आप साधारण मनुष्य से भगवान् बन सकते हैं। आप नर से नारायण बन सकते हैं। मुक्ति का रास्ता आपके लिए भी खुला हुआ है। आप आग हैं, लकड़ी हैं या और भी कोई त्याज्य चीज हैं। जो भी हैं आप, घबराइए मत। आग से रिश्ता बनाइए और आग की भाँति ही दोषरहित जीवन बनाइए। जिस प्रकार से बच्चे गुड्डे-गुड़ियों से खेलते हैं, उसी प्रकार आप भी पूजा-पाठ के द्वारा भगवान् से खेलते हैं। आपने कभी उपासना का महत्त्व ही नहीं समझा। यदि समझा होता तो भगवान् के नजदीक बैठने वाले जैसे उनके बराबरी के हिस्सेदार हो जाते हैं, आप भी उसी प्रकार उनके बराबर हो जाते।

सही उपासना कैसी—

मित्रो! यदि आप भगवान् की उपासना सही तरीके से करें, तो आप टिड्डे की तरह से हो जाएँगे। बरसात में जब चारों ओर हरियाली छाई रहती है तो उस हरियाली को देखकर टिड्डा हरे रंग का हो जाता है। गरमियों में घास सूखकर पीले रंग की हो जाती है, तो टिड्डा पीली घास को देखकर पीले रंग का हो जाता है। इसी तरह से जब आपको चारों तरफ से शैतान दिखाई पड़ता है, तब आप शैतान हैं। जब आपको हैवान दिखाई पड़ता है, तो आप हैवान हैं। जब आपको इनसान दिखाई पड़ता है, तो आप इनसान हैं। यदि आप टिड्डे की तरह से देखेंगे, तो आपको भगवान् दिखाई पड़ेगा। बताइए आपने कब की थी भगवान् की उपासना? गुरुजी! हमने तो कल ही की थी। भगवान् हमारी चौकी पर रखे हुए हैं। बेटे! भगवान् को चौकी पर नहीं, अपने हृदय में रखा जाता है। जिससे हमारे खून के साथ भगवान् घुल-मिल जाए। उपासना जीवन में समाहित की जाती है, साँसों में घोली, समाई जाती है। उपासना जीवन का साइंस है, जो हमारे जीवन के प्रत्येक आचरण में छाई रहती है। गोमुखी में हाथ डालकर माला घुमाने से उपासना नहीं होती।

नारी जो राष्ट्र की जननी और निर्मात्री है, वह अविकसित स्थिति में, अँधेरे में भटक रही है। यदि समाज की प्रगति हमें अभीष्ट है, तो नारी को परावलंबन के गर्त से निकालकर उसे स्वावलंबी-सुसंस्कारी बनाना होगा।

मित्रो! हम उपासना को आपके चिंतन में देखना चाहते हैं, आपके विचारों में देखना चाहते हैं। जैसे सूरदास के जीवन में भगवान् आ गया था, मीरा के जीवन में भगवान् आ गया था, वैसे आपके जीवन में क्यों नहीं आया? क्योंकि भगवान् के चिंतन को आपने नहीं समझा। उसके स्वरूप को नहीं समझा। हिंदुस्तान के करोड़ से अधिक इनसान नकली उपासना करते हैं। नकली उपासना से कभी भी आप भगवान् में समाविष्ट नहीं हो सकते। प्राचीन समय के सात ऋषियों को हम उपासना करने वाला मानते थे। उन्हें हम सप्तर्षि कहते थे। परंतु आज हिंदुस्तान में न जाने कितने बाबाजी रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर उपासना करते हैं और जगह-जगह लोगों से अपमानित होते हुए डोलते हैं। क्यों? क्योंकि उनके पास नकली उपासना है। जिस तरह से नकली दवाइयाँ होती हैं, नकली सोना होता है, उसी तरह से जो उपासना आप करते हैं, वह नकली है। आपको माला व पूजा-पाठ के जरिए बहकाया जा रहा है। इस पूजा-पाठ से आप असली कर्मकांडों की तह तक नहीं पहुँच पाएँगे और ईश्वर के ज्ञानरूपी चमत्कार से आप वंचित रह जाएँगे। अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाएँगे।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उपासना जीवन में उतरे—

जिस प्रकार अकेले कलम से हम परीक्षा पास नहीं कर सकते, इसके साथ ही हमें अपने विषय का संपूर्ण ज्ञान आवश्यक है, उसी प्रकार माला फेरने से हम भगवान् को प्राप्त नहीं कर सकते। अच्छी तस्वीर तब तक नहीं बन सकती जब तक कलात्मकता कलाकार की आत्मा में प्रवेश न कर जाए। केवल रंगों व कागज के प्रयोग से ही अच्छी तस्वीर नहीं बन सकती। आप उपकरणों से ही काम चलाना चाहते हैं, कर्मकांड की तह तक नहीं जाना चाहते?

मित्रो! मैंने कहा था कि आत्मा की प्राप्ति के लिए चार तरीके हैं। उनमें से एक न कम हो सकता है और न ज्यादा। आप भगवान् को अपना गुलाम मत बनाइए। भगवान् के चरणों में अपना मस्तक झुकाइए और यह कहिए कि हम आपकी आज्ञानुसार चलेंगे। हम आपके सेवक हैं। आप इस लायक नहीं है कि अपनी हुकूमत भगवान् पर चला सकें। भगवान् को जो कुछ आपको देना था, दे दिया। अब आपका काम है कि आप भगवान् का ब्याज चुकाएँ। भगवान् पर अपने कर्मों का रौब मत दिखाइए। पहले तो आप भगवान् से जो मनुष्य का जीवन लेकर आए हैं, उसका ब्याज चुका दीजिए। नहीं, हमने तो पहले भी बैंक का ब्याज नहीं चुकाया था। बेटे! यह बैंक का ब्याज नहीं है, यह ईश्वर का दिया हुआ मानव-जीवन है। गुरुजी! हमने तो ऐसे ही सुना था कि राम नाम होने से ही सारे काम हो जाते हैं। फिर क्या जरूरत है भगवान् का कर्ज चुकाने की!

मित्रो! एक समय की बात है। एक वकील और उनका एक मुवक्किल था। मुवक्किल किसी केस में फँस गया था। उसने ने कहा, वकील साहब! आप मुझे छुड़ा दें तो मैं जन्मभर आपका एहसान मानूँगा। वकील ने कहा, जन्म भर एहसान मत मान, बस तू मुझे पाँच हजार रुपये दे दे, मैं तेरा केस लड़ दूँगा। तू पागल बन जाना। मैं डॉक्टरों से मिलकर तेरे पागलपन का सर्टीफिकेट बनवा दूँगा। जब तू अदालत में जाए, तो बस एक ही शब्द याद करके जाना। जब जज तुझ से कोई सवाल पूछें तो तू कह दिया करना—'में'। हमारे कानून में पागलों के लिए कोई कानून नहीं है।

न्यायाधीश ने पूछा, क्या नाम है तेरा? उसने कहा, 'में'। क्या तूने गलत काम किया है?'में'। न्यायाधीश कोई भी बात पूछते तो वह कहता, 'में'। वकील ने कहा कि साहब यह तो पागल है। यह बात उसने गवाहों व सबूतों के माध्यम से सिद्ध कर दी। जजसाहब ने कहा कि इसे बरी किया जाए।

छूटने के बाद वह आदमी वकील साहब की कोठी पर गया। वकील साहब ने कहा, लाइए हमारे फीस के पाँच हजार रुपये। उस व्यक्ति ने कहा, 'में'। इस तरह वकील साहब अपना माथा ठोंकते रह गए।

भाइयो! आप और हम सब पागल ही तो हैं। आप सब राम-राम की 'में' लगाए रहते हैं। आप वास्तविकता का मुकाबला कीजिए, नहीं तो जंजालों में भटक जाएँगे। आप जमीन पर चलिए।

चमत्कार नहीं मर्म है भाव—

राबिया एक संत थीं। एक बार हसन राबिया के यहाँ आए और उन पर अपना रौब गालिब करना चाहा। उन्होंने राबिया से कहा, आओ हम दोनों नमाज पढ़ेंगे। जमीन गंदी है, इसलिए हम पानी पर बैठकर नमाज पढ़ेंगे। हसन ने अपना 'मुसल्ला' पानी पर फेंक दिया। मुसल्ला पानी के ऊपर तैरने लगा। 'मुसल्ला' नमाज पढ़ने के आसन को कहते हैं। हसन के कहने पर राबिया ने सोचा, अच्छा तो ये पानी वाली बात कहकर मेरे ऊपर अपनी करामात दिखाना चाहते हैं। राबिया ने कहा, पानी पर ही क्यों? पानी को तो मछली, मेढ़क गंदे करते रहते हैं। राबिया ने अपना मुसल्ला उठाया और हवा में फेंक दिया। मुसल्ला हवा में तैरने लगा। राबिया ने कहा, आइए हसन, हवा में बैठकर नमाज पढ़ेंगे। हसन यह सब देखकर दंग रह गए, क्योंकि वे राबिया पर अपने चमत्कार, सिद्धि दिखाने आए थे और अपना रौब जमाने आए थे।

राबिया ने कहा—हसन! जो काम आप करने आए थे, वह तो एक मछली भी कर सकती है और जो हवा में तैरने का काम मैं करने वाली थी, उसे तो एक मक्खी भी कर सकती थी। इसलिए न हमें पानी में तैरने की जरूरत है और न हवा में उड़ने की। हमें जमीन पर ही रहने की आवश्यकता है। हमें सचाई का मुकाबला करने की जरूरत है, क्योंकि हम जमीन पर ही पैदा हुए हैं।

मित्रो! हमें भी रामनाम के चमत्कार देखने की आदत छोड़ देनी चाहिए। इनसान का हृदय तीन हजार रुपये का होता है। रामनाम सवा रुपये का होता है। तीन हजार रुपये की जमीन पर आप सवा रुपये का बीज बोइए। फसल पैदा हो जाएगी। यह जमीन की कीमत है। बीज की कीमत बहुत कम है। खाली जमीन में घास पैदा हो सकती है। आप उसमें अपनी बकरी चरा सकते हैं, परंतु बिना जमीन के आप बीज किसमें बोएँगे? भजन से अनेक काम पूरे हो सकते हैं, परंतु भजन को दृढ़ बनाने के लिए आदमी का दृढ़ चरित्र रहना, उदार रहना अति आवश्यक है। संतों

Disclaimer / Warning / Terms and Conditions: Material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को चमत्कार आते हैं, हर एक को नहीं आते। हमारा चरित्र हमेशा ऊँचा होना चाहिए। साधना का यही तरीका है, जिसे मैं आज तक आपको समझाता चला आया हूँ।

स्वाध्याय की महत्ता—

कल मैंने आपसे यह निवेदन किया था कि स्वाध्याय को भी भजन का एक हिस्सा माना जाना चाहिए। हमें किसी साहित्य विशेष में कोई दिलचस्पी नहीं है। हम तो उन्हीं विचारों को अपनाना चाहते हैं, जो नेकी के रास्ते पर चलने में मदद करें, चाहे वे विचार इनसान के मुँह से निकले हों, चाहे वे किताब में छपे हों। स्वाध्याय के लिए ऐसे ही प्रेरणाप्रद विचारों व कथनों की आवश्यकता है। आप अपने अंदर से कुविचारों को निकाल फेंकिए, दृढ़ता से उनका मुकाबला कीजिए। अपने अंदर सुविचारों को पनपने दीजिए। छेनी से छेनी काटी जाती है, यदि आपके बुरे विचार आप पर हावी होते हैं तो आपके पास ब्रह्मचर्य का हथियार है, उसका उपयोग कीजिए। यदि दोनों की कुश्ती करवाई जाए, तो बुरे विचारों को अच्छे विचार एक ही टक्कर में चित्त कर देंगे। आपको अपनी दिनचर्या में स्वाध्याय के लिए महत्त्वपूर्ण समय रखना ही चाहिए, नहीं तो कामुकता के अश्लील विचार दिमाग में छाए रहेंगे और आप किसी भी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएँगे।

संयम : एक सस्ती ओषधि—

साथियो! हम आपसे यही निवेदन करना चाहते हैं कि आप अपनी बरबादी को बंद कीजिए, संयमशील बनिए। असंयम कहते हैं बरबादी को। जो गुण हमें पूर्वजों द्वारा विरासत में मिले हुए हैं, उनको हम अपव्यय करने में लगे हुए हैं। मथुरा में एक कोतवाल साहब थे। वे बहुत ही रिश्वत लेते थे। नोटों से उन्होंने थैले और पेटियाँ भरकर रखी हुई थीं। उनके लड़के नोटों को पतंग में बाँधकर छत से उड़ाया करते थे। बच्चों से कहते कि जो हमारी पतंग को काटेगा, हम उसे दस का नोट देंगे। कभी-कभी उनके लड़के दस के नोट की सिगरेट बनाकर पी लेते थे। नोट में तंबाकू रखी और सिगरेट बनाकर पी गए। पाँच-दस वर्ष में उन्होंने बाप की सारी कमाई को नष्ट कर दिया और गरीबी का जीवन जीने लगे। वह कोतवाल और उसके बेटे बरबाद हो गए। यही हालत आपकी है और आप हैं कि कहते हैं कि कोतवाल के लड़के बड़े उद्दंड थे। हम और आप भी तो धन की बरबादी करने पर आमादा हैं।

प्रकृति का प्रत्येक जानवर लंबे समय तक जीता है। मौत तो सबको आती है, परंतु कोई भी जानवर कभी बीमार नहीं पड़ता। लेकिन आदमी बीमार पड़ता है। उसके साथ रहने वाले जानवर भी जरूर बीमार पड़ते हैं। इसकी वजह क्या है? भगवान् ने जानवरों का शरीर इस तरह से बनाया है कि वह कभी बीमार नहीं पड़ते। यदि यह मान लिया जाए कि वायरस या कीटाणु आपको बीमार करते हैं, तो अस्पताल में टी० बी० के मरीजों के कपड़े धोने वाले धोबियों को तो यह बीमारी होती ही नहीं। तब वायरस कहाँ चले जाते हैं?

मित्रो! ये सारे कीटाणु असंयम से आते हैं, जिसकी वजह से आपने अपनी सेहत खराब कर ली है। मनुष्य अपनी जीभ की नोंक से अपनी कब्र तैयार करता है। हमने जो बीमारियाँ अपने लिए पैदा की हैं, वे सब जीभ की नोंक द्वारा पैदा की हुई हैं, क्योंकि हमने जीभ की नोंक को संयम में नहीं रखा। इससे क्या हो जाता है? आपका दिमाग कमजोर होता चला जाता है। जिस तरह पहले आप परीक्षा में प्रथम आते थे, अब फेल होते चले जा रहे हैं। नजर कमजोर हो गई है, उस पर चश्मा चढ़ गया है। हमारे पड़ोस में एक किरायेदार थे। मकान में दो नल लगे हुए थे। जब कभी ऊपर वालों को परेशान करना होता तो नीचे का नल खोल देते थे। तब ऊपर वाले को पानी लेने के लिए नीचे के कई चक्कर लगाने पड़ते थे। वे चिल्लाते रहते थे पानी के लिए।

मित्रो! हमारी आँखें कहती हैं कि हमें तेज चाहिए। हमारे कान कहते हैं कि हमें ताकत चाहिए। हमारा दिमाग कहता है कि हमें खुराक चाहिए। आपके अंदर हर तरह का 'वर्चस्' चाहिए। स्वामी दयानंद सरस्वती एक बार शौच के लिए बाहर गए, तो मार्ग में दो साँड़ कुश्ती लड़ रहे थे। दोनों ही बड़े बलिष्ठ थे और क्रोध में लड़ते हुए लहूलुहान हो रहे थे। आपस में फिर से टक्कर मारने चले, तो स्वामी दयानंद ने कहा, क्यों रे! तुम नहीं मानोगे। साँड़ फिर भी नहीं माने तो स्वामी जी ने लोटे को जमीन पर रख दिया और एक साँड़ का सींग एक हाथ से तथा दूसरे का सींग दूसरे हाथ से पकड़कर घुमा दिया। इससे एक साँड़ गिर गया और दूसरा भाग गया। यह ताकत उनमें कहाँ से आई? संयम से। आपको भी जरूरत है संयम की। आप सभी संयम की दवाई खाइए। यह दवाई शंकराचार्य, भीष्म पितामह, हनुमान जी आदि सभी ने खाई थी। आप कहते हैं कि बाजार की दवाइयों में बहुत ताकत होती है, सो ऐसी बात नहीं है। वे दस पैसे की चीज का एक रुपये वसूल करते हैं। इसी से आप उसकी ताकत का अंदाजा लगा सकते हैं। इसलिए आप संयम की सस्ती दवा खाइए। यही आपको लाभ पहुँचाएगी। इसी से आपका दिल-दिमाग और शरीर स्वस्थ बनेगा। -क्रमशः

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

आत्मिक प्रगति का ककहरा

(उत्तरार्द्ध)

मित्रो! संयम ही जीवन है। संयम चार तरह के हैं। पहला है, इंद्रिय संयम। इंद्रिय संयम से मतलब है, जीभ का संयम, जिसने आपका पेट खराब कर दिया और आप बीमार रहने लगे। जरूरत से ज्यादा आप खाते चले गए और शरीर में जहर फैल गया। आप ठीक हो सकते हैं, बशर्ते आप अपने पेट पर कृपा कीजिए, जरूरत से ज्यादा मत खाइए।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस विवाहित थे। उनकी धर्मपत्नी का नाम शारदा था। वे उन्हें भरपूर प्यार करते थे, परंतु कोई जरूरी नहीं कि एक-दूसरे के शरीर को बरबाद किया जाए। एक-दूसरे के शरीर में बीमारी को प्रवेश करा दिया जाए। क्या इसी से आपका प्यार होता है? क्या मतलब है आपके प्यार से! मरद औरत को खाएगा और औरत मरद को खाएगी, क्या यही अर्थ है विवाह का? गाँधी जी ने एक किताब लिखी है, 'संयम की राह पर'। उसमें लिखा है कि स्त्री और पुरुष बहन-भाई की तरह भी रह सकते हैं। आप पशुओं से भी कुछ सीखिए। साँड़ गायों के झुंड में रहता है, परंतु बिना गाय की आवश्यकता के वह गायों की तरफ देखता भी नहीं है। वह भी ब्रह्मचर्य का पालन करता है। जब पशु संयम से रह सकते हैं, तो आप क्यों नहीं रह सकते?

मित्रो! आप अपनी जीभ को बुरे वचन बोलने और अभक्ष्य खाने से रोकिए, क्योंकि इन दोनों से ही जीभ जलती है। जली हुई जीभ से भगवान् का भजन नहीं किया जा सकता। ''जैसा खाए अन्न-वैसा बने मन''—आपकी यही नियति बन गई है। अत: आप संयम का आरंभ जीभ से करिए। उससे कहिए कि हम आपको भगवान् की पूजा के लायक बनाना चाहते हैं। स्वाद के लिए हम कोई भी ऐसी चीज नहीं खाएँगे जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक हो। हम किसी से ऐसे शब्द नहीं बोलेंगे, जो दूसरों को गुमराह करने वाले हों, दूसरों को पतन के मार्ग पर ले जाने वाले हों। आप संयम जीभ से शुरू कीजिए, फिर देखिए कि आपकी वाणी में चमत्कार कैसे पैदा होता है?

आप इस संबंध में हमसे पूछते हैं कि गुरु जी! आपने अपनी वाणी को कैसे शुद्ध बनाया? बेटे! हमने संयम किया है। चौबीस वर्षों तक जौ की रोटी और छाछ का सेवन किया। इससे हमारी जीभ इस योग्य हुई। नमक हमने बिल्कुल नहीं खाया। इस्लाम धर्म के संस्थापक बिना पढ़े थे, परंतु जीभ के संयम से उन्होंने अपने अंदर अपनी बात मनवाने का गुण पैदा किया। ऋषियों की जीभ से निकले हुए वचन भी मंत्र थे। उन्होंने भी संयम किया था, इसलिए आपको भी उनके बताए मार्ग पर चलना चाहिए। आप भी अपने जीवन के उचित लक्ष्य को प्राप्त कीजिए। धनुष की प्रत्यंचा जितनी खींची जाएगी, तीर उतना ही तेज चलेगा। धनुष से तात्पर्य है, हमारी जीभ से, जो मंत्र के उच्चारण के लिए है। ऋषियों की जीभ से निकले हुए मंत्रों ने राजा दशरथ के चार बच्चों को जन्म दिया था। लोमश ऋषि ने राजा परीक्षित को शाप दिया था कि जा तुझे सातवें दिन साँप काट खाएगा। उनका शाप सच्चा इसलिए था, क्योंकि ऋषि संयमशील थे। अक्षरों में कोई ताकत नहीं है। ताकत तो वाणी के संयम से आती है। शक्ति का स्रोत संयम ही है।

आप दोनों में से कोई भी चीज ले लीजिए, भौतिक या आध्यात्मिक। दोनों में ही संयम की आवश्यकता है। अत: आप इंद्रियों का संयम कीजिए। इंद्रियों के संयम का अर्थ है कि आपने अपने जीवन में जो चार सूराख कर रखे हैं, उनमें से एक-एक को बंद करना। अगर आपने एक भी सूराख को बंद कर दिया तो आप में ताकत आती चली जाएगी। सूराख बंद करते ही आप यह महसूस कर सकते हैं कि आप में ताकत आनी शुरू हो गई। आपको इसके चमत्कार अच्छे स्वास्थ्य के रूप में, दीर्घजीवन के रूप में दिखाई देने लगेंगे।

आप तो हर समय परायी पत्तल ही चाटने की कोशिश करते हैं। आप अपने ऊपर विश्वास करना सीखिए। अपनी ताकत को पहचानिए। संयम की शक्ति का अंदाजा लगाइए। संयम को हम तप कहते हैं। आप खाना खाएँ चाहे न खाएँ। शरीर को धूप में खड़ा रखने से भी कुछ बनता-बिगड़ता नहीं, अनेकों ऋषि धूप में खड़े रहते हैं, परंतु उच्चस्तरीय उपलब्धियाँ संयम के कारण ही मिलती हैं, अन्यथा धूप में खड़े रहने पर कोई फरक नहीं पड़ता।

दूसरा संयम है, मन का संयम, विचारों का संयम। यह इस तरह से है जिस तरह से आवारा लड़के मारे-मारे फिरते हैं। यह भी इसी तरीके का है। आपके मन में हमेशा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बेकार के विचार आते रहते हैं। यदि आप थोड़ा भी संयम विचार को एकत्र करने में लगाएँ तो आप देखेंगे कि आपके विचार क्या से क्या बन जाएँगे। साहित्यकार एवं वैज्ञानिकों में क्या विशेषता होती है? कुछ भी नहीं। बस ये विचारों को एकत्र करते हैं मन की शक्ति से। सर्कस में काम करने वाली लड़कियों में बस एकाग्रता की शाक्ति होती है। वे अपने मन को भागने से रोके रखती हैं तभी तो वे ऊँचे झूले से झूलकर जाल में कूद पड़ती हैं और उनको जरा भी चोट नहीं आती। आप यदि एक काम पर पूरा विचार करना सीख जाएँ तो आप क्या से क्या बन सकते हैं? हमने अपने जीवन में स्वाध्याय का नियमित समय एक घंटे के हिसाब से रखा। पंद्रह वर्ष की उम्र से सत्तर वर्ष की उम्र तक हमने सत्तर लाख पन्ने पढ़े हैं। ये सब विचारों का संयम है।

आप रात को पिक्चर देखकर आते हैं और हीरोइनों के सपने देखने लगते हैं। हीरोइनों के फोटो खरीद कर लाते हैं। पहले आप यह बताइए कि आपका वेतन कितना है? महाराज जी तीन सौ रुपये। अरे! तीन सौ रुपये तो एक हीरोइन अपने सैंट पर खरच कर देती है। आप इसी बल पर हीरोइन से दोस्ती करने की सोच रहे थे। अपने विचारों पर संयम करना सीखो। अपने विचारों को समाज-सुधार के लिए अच्छी दिशा दो। आपके दिमाग व शरीर की शक्ति आपको कहाँ-से-कहाँ पहुँचा सकती है।

मित्रो! एक और संयम है और वह है समय का संयम। आपने जितनी अधिक समय की बरबादी की है, यह उसी का परिणाम है कि आप दुखी जीवन जी रहे हैं। समय भगवान् ने आपको इसलिए दिया है कि समय की कीमत से आप दुनिया की कीमती-से-कीमती वस्तु खरीद सकते हैं। आप चाहें तो समय की कीमत से लोकसेवी बन सकते हैं, साहित्यकार बन सकते हैं। समाज-सुधारक बन सकते हैं, परंतु आपने समय के मूल्य को नहीं पहचाना। आपने अपने जीवन का सारा समय वैसे ही व्यर्थ में नष्ट कर दिया। जिन लोगों ने समय का उपयोग किया है, वे उन्नति के ऊँचे शिखर पर चढ़ते चले गए। चमार, धोबी, मोची, भंगी भी रात्रि पाठशाला में जाकर दो घंटे प्रतिदिन के हिसाब से पढ़कर ऊँचे पद पर तरक्की कर जाते हैं। समय का सदुपयोग करने के कारण ही आज वे अनेकों संस्थाओं में कार्यरत हैं। लेकिन आप तो कहते हैं कि क्या करें साहब! हमारे पिताजी मर गए थे, इसलिए हम प्राइमरी तक ही पढ़ पाए। तो क्या पिताजी अपने साथ आपका शरीर भी ले गए? मित्रो आपने समय की कीमत नहीं पहचानी।

एक ड्राइंग मास्टर थे। साठ वर्ष की आयु में वे रिटायर हुए। रिटायर होने के बाद उन्होंने संस्कृत पढ़ना शुरू किया। संस्कृत पढ़कर वे वेदों के भाष्यकार कहलाए। उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि भी मिली थी। उन्होंने संस्कृत में भी बहुत साहित्य लिखा है। आप क्या करते हैं रिटायर्ड होकर? हमारा बेटा कमाकर लाता है और हम बेकार बैठे रहते हैं। बताइए हम क्या करें? बेकार बैठे रहना भगवान् की दी हुई संपदा का तिरस्कार करना है। उसके नियमों की अवहेलना करना है। आदमी जब तक श्रमशील नहीं होगा, तब तक उन्नतशील नहीं हो सकता। आप अपने श्रम का उपयोग समाज की उन्नति के लिए कीजिए ,जिससे हमारा समाज अच्छा और सुंदर बने।

रावण की कथा है। रावण ने एक दिन काल को पकड़ लिया। पकड़कर पाटी से बाँध लिया और फिर काल की पिटाई लगाई। काल चीखने-चिल्लाने लगा। रावण ने कहा कि काल तू मुझे धन दे और विद्या दे। काल ने डर के मारे लंका को सोने की बना दिया और रावण को विद्वान् बना दिया। काल का क्या अर्थ है? आप तो काल को भूत-प्रेत या देवता मानते हैं, परंतु वास्तव में काल समय को कहते हैं। इसका जो सदुपयोग करते हैं वे महान् उपलब्धियों के स्वामी बनते हैं।

बिहार में हजारी नाम का एक किसान था। उसने अपना सारा समय आम के बगीचे लगाने में लगाया। बिहार में उसने एक हजार बाग लगाए। हजार बागों की वजह से उस जिले का नाम 'हजारी बाग' रखा गया। आप तो अपना समय गप्पें हाँकने में लगाते हैं। समय की कीमत समझिए। आप अपने समय को आध्यात्मिक उन्नति में लगाइए। जिससे आपका जीवन सफल हो जाए। आप समय की दिनचर्या बनाइए।

साथियो! आपकी दौलत चार तरह की है। पहली है- इंद्रिय संयम। इसे अपने जीवन में महत्त्व दीजिए। इंद्रियों का संयम न करने से आप अपने आप को तबाह करते जाते हैं। आप अपने विचारों की संपदा को किन्हीं उपयोगी कार्यों में लगाना सीखिए। यदि आप ने विचारों का संयम करना प्रारंभ कर दिया तो आपका दिमाग जिसे हम ब्रह्मलोक कहते हैं, सद्विचारों का भंडार हो जाएगा। यही अतींद्रिय क्षमता का मालिक है, आपकी शालीनता का, सुख-समृद्धि का स्वामी है। यह दिमाग एक कंप्यूटर की तरह से है, जिसकी क्षमता असीम है। तीसरा संयम-समय का संयम है। इसके लिए आप अपनी दिनचर्या बनाकर चलिए। गाँधी जी ने देश के लिए अनेकों कार्य किए। अपने समय

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

[illegible] उन्होंने बनाकर रखी थी। सब कार्य वे नियत समय पर करते थे। समय को बिल्कुल भी व्यर्थ नहीं गँवाते थे। इन्होंने बहुत सारा साहित्य लिखा।

मित्रो! हम मशीन की तरह से जीते हैं। आठ बजे का समय हमारा सोने का है। मित्र आते हैं और कहते हैं कि हमसे बात कीजिए। हम कहते हैं कि हम नहीं करेंगे आप से बात, यदि आप नाराज होते हैं तो हो जाइए हमारी बला से। हम प्रतिदिन चार घंटे लेखन करते हैं। नौ अखबारों का हम संपादन करते हैं, अखण्ड ज्योति का संपादन करते हैं, अपने मनोयोग और तन के सहयोग से। हम दोनों काम इसलिए कर लेते हैं कि हमारा अपना मन और तन दोनों एक साथ लगते हैं, परंतु आपकी कभी 'तन डोले' तो 'कभी मन डोले' वाली स्थिति रहती है। इसलिए आप काम में अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

गुरु जी! आपकी उन्नति में कौन-कौन सहायक हुआ है? बेटे! आध्यात्मिक दृष्टि से गायत्री मंत्र हुआ है, किंतु इस सबके पीछे जो चमत्कार आपको दिखाई देता है, उसका कारण है, समय का संयम। हम समय के गुलाम हैं। हमारी प्रेमिका कौन है, जिसे देखे बिना हमें चैन नहीं पड़ती? वह है हमारी घड़ी, जो हर समय हमारी मेज पर रखी रहती है। हमारी दृष्टि में हर समय घड़ी की सुइयाँ ही रहती हैं। आपके पास भी है घड़ी? हाँ साहब! हमारे पास और हमारी पत्नी-दोनों के पास घड़ी है। तब तो आपकी पत्नी ने एम० ए० पास कर लिया होगा? नहीं साहब, उसे तो घर के कामों से ही समय नहीं मिलता है। तो दिखाइए अपनी घड़ी और बताइए कि कितने बज रहे हैं? साहब, इसमें तो साढ़े उनतीस बज रहे हैं। समय देखना आता नहीं और घड़ी लिए फिरते हैं।

चौथा एक और महत्त्वपूर्ण संयम है। उसका नाम है-अर्थसंयम। अर्थसंयम का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। ''सादा जीवन -उच्च विचार'' उन आदमियों का जीवन है, जिन्होंने अपना जीवन पहले चरण के हिसाब जिया है। जो आदमी जमीन को चूमते हैं, आसमान को चूमते हैं, वे आदमी बेईमान होते हैं, करजदार होते हैं। जिन्होंने अध्यात्म में प्रवेश किया है और पैसे की दृष्टि से सामंजस्य नहीं रखा, उन्हें आगे चलकर बहुत कठिनाई उठानी पड़ सकती है। मित्रो! उन्हें जीवन की उन्नति के लिए कोई रास्ता नहीं मिलेगा। बच्चों की शिक्षा व पालन-पोषण का वे उचित प्रबंध नहीं कर सकेंगे। हमेशा उनके ऊपर फिजूलखरची छाई रहेगी। आध्यात्मिक दृष्टि से फिजूलखरची एक गुनाह है। कानून चाहे आपके ऊपर मुकदमा चलाए या न चलाए, लेकिन अध्यात्म आपके ऊपर मुकदमा जरूर चलाएगा। जिस देश व समाज में आप पैदा हुए हैं, उसके औसत के हिसाब से आप खरच कीजिए। आप कमा तो सकते हैं, लेकिन अपनी कमाई को खरच नहीं कर सकते। आप अपनी कमाई में से कुछ बचत कीजिए।

अर्थसंयम के बारे में मैं अक्सर ईश्वरचंद्र विद्यासागर का नाम लेता हूँ। उनको पाँच सौ रुपये वेतन मिला था। उन्होंने अपने घरवालों को बुलाया और कहा कि ये लीजिए पचास रुपये। हिंदुस्तान का व्यक्ति इससे ज्यादा खरच नहीं कर सकता। जो रुपये हमारे पास बच जाते हैं, इसको हम विद्यार्थियों के लिए खरच करेंगे। हमारा देश बहुत गरीब है। विद्यार्थियों की भीड़ उनके दरवाजे पर लगी रहती थी। आप तो जरूरत से ज्यादा खरच करते हैं। आपने अपने जीवन में बेकार की जरूरतों को पाल रखा है। फिजूलखरची बंद कीजिए।

मित्रो! एक बार हमने आपको बताया था कि जब हमारे बाप-दादा मरे थे तो जो पैसा हमें मिला था वो सारा हमने गायत्री तपोभूमि पर लगा दिया। हमने अपनी जमीन स्कूल के नाम दान कर दी। अपने लिए हमने कुछ नहीं बचाया। अब रो हम अखण्ड ज्योति में रहे हैं, हम अपने परिवार में पाँच प्राणी हैं, दो बच्चे, एक हमारी माताजी और हम दो पति-पत्नी। परंतु पाँच आदमियों का हमारा खरच दो सौ रुपये आ रहा है। भारत के नागरिकों को बड़े ही किफायत से धन खरच करना चाहिए। गाँधी जी ने बहुत कम धन में गुजारा किया।

अमेरिका के एक सज्जन थे। पुराने कपड़े पहनते थे। खाने में भी किफायत करते थे, लेकिन वे करोड़पति थे। उनके पास एक महिला आई और कहने लगी कि हम आप से विवाह करना चाहते हैं। उस सज्जन ने कहा कि विवाह तो हम कर लेंगे, परंतु आप हमें देंगी क्या? क्या कमाएँगी हमारे लिए? महिला ने कहा, इस कंजूस के साथ कोई शादी नहीं करेगा। उस व्यक्ति के बारे में विख्यात हो गया कि वह बड़ा कृपण है। एक बार एक विश्वविद्यालय को चंदे की आवश्यकता पड़ी। कमेटी के लोग कंजूस के पास गए और कहने लगे कि साइंस की एक प्रयोगशाला बनाई जा रही है। विद्यार्थियों के लिए आप कुछ धन दीजिए।

कहने को तो उसने नमस्ते कर लिया। उसकी मेज पर तीन मोमबत्तियाँ जल रही थीं। उसने एक मोमबत्ती बुझा दी। लोग यह देखकर हँस पड़े। कंजूस ने पूछा कि आपको कितना पैसा चाहिए? कमेटी के लोगों ने डरते हुए कहा पाँच सौ रुपये। कंजूस ने तुरंत पचास हजार रुपये का चेक काट दिया। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। कहने लगे हमने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तो आपसे पाँच सौ रुपये माँगे थे और आपने इतना दे दिया। ये क्या किया आपने? उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था। कंजूस व्यक्ति कहने लगा कि मैं अपने जीवनभर प्रयोगशाला बनाने का सपना देखता रहा, पर पूरा न कर सका। अच्छी बात है जो आप इस काम को करने जा रहे हैं। लीजिए यह पहली किश्त है। मैं आपके विश्वविद्यालय को देखने आऊँगा। अगर काम सही तरीके से हुआ तो आगे भी धन दूँगा। मैं अपनी सारी दौलत आपको देकर के जाऊँगा? मैं इसे रखकर क्या करूँगा?

मित्रो! हम व्यक्तिगत जीवन में भी किफायत कर सकते हैं। पैसा तो ऐसी चीज है कि जरा-सी मुट्ठी खुलते ही समाप्त हो जाता है। फिजूलखरची को ही चोरी कहते हैं। इससे कभी भी पूरा नहीं पड़ सकता। अत: आप संयमशील बनिए और उतना ही खरच कीजिए, जिससे आपका शरीर जिंदा रह सके, परंतु अभी तो आप शरीर के लिए कम तथा विलासिता के लिए अधिक खरच करते हैं। हमारे चारों सूत्रों में से हमारी उन्नति, अध्यात्म, पुण्य और लक्ष्य टपक जाता है।

अध्यात्म-जीवन में संयम को तप कहते हैं। तप चार तरह के होते हैं। यदि आप चारों तरह के तप करना शुरू करेंगे तो तपस्वी को जो सिद्धियाँ मिलती हैं, वे सिद्धियाँ आपको प्राप्त हो जाएँगी। एक बार आप फिर समझ लें कि तप माने इंद्रियनिग्रह, तप माने मनोनिग्रह, विचारों का निग्रह। तप माने समय का संयम और तप माने अर्थ का निग्रह।

एक बात और, देवताओं के अनुग्रह की बात आप समझ लें। देवता नाम इसलिए रखा गया है कि वे दया करते हैं। देवता का अर्थ है, देने वाला। देवता हर समय कुछ न कुछ देते रहते हैं, लेते नहीं हैं। हम माँगते हैं और वे देते हैं, परंतु यहाँ यह विचार करना पड़ेगा कि देवता क्या देते हैं? देवता के पास जो चीजें होंगी वही तो वह देगा। जिसके पास जो चीज नहीं होगी तो वह क्या देगा? जो चीज बैंक में मिलती है वह है रुपया और कुछ नहीं मिलता है बैंक में। रुपये के बदले में आपको सब चीज मिल सकती है। रुपये में ताकत तो है, लेकिन देवता में जो चीज है-वह है-देवत्व। यही देवता हमें दे सकते हैं। देवत्व कहते हैं- गुण, कर्म, स्वभाव में उत्कृष्टता को। गुणों की दृष्टि से श्रेष्ठ, कर्मों की दृष्टि से श्रेष्ठ, स्वभाव की दृष्टि से श्रेष्ठ-इतना काम करने के बाद देवता निश्चिंत हो जाते हैं, अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं।

मित्रो! दुनिया में सफलता एक चीज के माध्यम से मिलती है और वह है-उत्कृष्ट व्यक्तित्व। जिस व्यक्ति ने बिना मेहनत के कोई चीज प्राप्त कर ली है, उसे कहते हैं, तरकीब और तिकड़म। यदि इस तरीके से आपने कोई चीज प्राप्त कर ली है तो वह वस्तु आपके पास नहीं ठहरेगी। आप में हजम करने की ताकत हो तो ही आप सब चीज खा सकते हैं। दौलत को हजम करने का तरीका होना चाहिए। जैसे-जैसे आपके पास पैसा बढ़ता जाएगा तो आपके अंदर दोष बढ़ते जाएँगे। आप गरीबों से भी बुरे पड़ेंगे। जीवन में ऐसी विसंगतियाँ बढ़ती जाएँगी जो आपको दौलत का फायदा पहुँचाना तो दूर आपको नुकसान ही पहुँचाएँगी। यह दौलत आपको तबाह कर देगी। संतानें बिगड़ जाएँगी, इससे तो गरीबी अच्छी है।

दौलत को हजम करने की आपके शरीर में ताकत होनी चाहिए। अच्छे विचार मन में होने चाहिए। तभी आप दौलत को हजम कर सकेंगे, नहीं तो आप बुरे कार्य करेंगे। हिम्मत से बुराइयों का मुकाबला कीजिए। आपका भीम के तरीके से बलवान् होना समाज के लिए अभिशाप साबित हो सकता है। इसलिए आप अपनी ताकत को उचित कार्यों में लगाइए। मैं मानवता का पुजारी हूँ। दुनिया में तबाही पढ़े-लिखे लोगों ने ही मचाई है। तो क्या हम पढ़ना-लिखना छोड़ दें? पढ़ाई छोड़ने से हमारे आगे वही हालात पैदा हो जाएँगे जैसे गाँवों में पहले एक ही आदमी पढ़ा-लिखा होता था। बाकी सब निरक्षर रहते थे। हम आपसे बार-बार कहते हैं कि किताब वालों के पास जाइए, स्वाध्याय करिए। उनका सत्संग करिए।

मित्रो! मेरा ख्याल है कि यदि सबके सब बिना पढ़े रह जाएँ तो दुनिया में शांति कायम रह सकती है, क्योंकि तब आदमी की अक्ल का विस्तार सीमित होगा। वह सीमित क्षेत्र में ही बुराइयाँ करेगा, क्योंकि उसकी अक्ल का विस्तार ही नहीं हुआ है। तो क्या मैं शिक्षा विरोधी हूँ? क्या मैं साक्षरता विरोधी हूँ? नहीं, मैं शिक्षा का विरोधी नहीं हूँ, परंतु शिक्षा को अपने अंदर आत्मसात् करने का गुण होना चाहिए। शिक्षा के साथ मनुष्य में जिम्मेदारी भी आनी चाहिए-इसका मैं हिमायती हूँ। बहुत सारी चीजें दुनिया में हैं। देवता आपको हजम करने की शक्ति देते हैं। दुनिया की दौलत को हजम करने की भी विशेषता आप में होनी चाहिए। यदि देवत्व आपको प्राप्त हो जाए तो आप संसार की समस्त वस्तुओं से लाभान्वित हो सकते हैं। इन्हीं सब बातों पर चलकर आप पूर्णमिद बन सकते हैं।

आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांति ॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

पारस को छूकर स्वर्ण बन जाएँ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो! भाइयो!!

आप लोग जिस कल्प-साधना सत्र में आए हुए हैं, उसमें महत्त्वपूर्ण काम आपको यह करना है कि किसी ऐसी सत्ता के साथ में अपने आपको जोड़ दें, जो बड़ी सामर्थ्यवान् है। अकेले आप सीमित हैं, अकेले आप जो काम करते हैं, उससे गुजारा तो हो सकता है, लेकिन और ज्यादा ऊँचा उठना अकेले के बलबूते पर संभव नहीं है। अकेले प्राणियों को भगवान् ने इतना दिया है, जिससे कि अपना गुजारा कर पाएँ। हर आदमी को इतनी अक्ल दी है, हाथ-पैर भी दिए हैं, शरीर दिया है, जिससे अपने शरीर का गुजारा कर लें और अपने बीबी-बच्चों का गुजारा कर लें और इससे अधिक किसी के पास नहीं है। मनुष्य के पास, इतना तो हर किसी के पास है, प्राणी के पास है, लेकिन इससे ज्यादा की जरूरत पड़े तो, फिर आपको भगवान् का सहारा लेना पड़ेगा, ऐसे शक्तिपुंज का सहारा लेना पड़ेगा, जिसके पास शक्तियों के भंडार भरे पड़े हैं। भगवान् कौन? भगवान्, आप यह मानकर चल सकते हैं कि एक बहुत बड़ा बिजलीघर है, जिसके साथ में बल्ब लगे रहते हैं, पंखे लगे रहते हैं, छोटी-छोटी मशीनें लगी होती हैं और जेनरेटर के साथ में जुड़ जाने की वजह से यह काम करते रहते हैं। अगर वह जुड़ें नहीं तब? तब पंखा कैसे चले? बल्ब कैसे जले? दूसरे काम कैसे बनें? इसलिए इनका जुड़ जाना आवश्यक है। जुड़े बिना बड़ी शक्ति प्राप्त नहीं हो सकती, बड़े काम संभव नहीं हो सकते। मनुष्य बड़े काम करने के लिए किसी बड़ी शक्ति के साथ में जुड़ा रहे, यह बहुत जरूरी है। इस जुड़े रहने की प्रक्रिया का नाम है, उपासना। उपासना माने नजदीक बैठना, पास बैठना। अगर आप पास बैठ जाएँ किसी के, तो उसके गुण, उसके कर्म, उसका स्वभाव व उसकी विशेषताएँ आपके भीतर आना शुरू हो जाएँगी। आग की भट्टी के नजदीक अगर आप बैठने लगें तो, आपका शरीर गरम हो जाएगा। बरफ की फैक्ट्री के भीतर अगर आप घुस जाएँ, तो आपका शरीर ठंढा होने लगेगा। ऐसी दृष्टि से आपको किसी के साथ में जुड़ना चाहिए। उपासना का अर्थ है, पास बैठना। आगे चलकर इसी को जुड़ जाना भी कहते हैं। पास बैठने का उदाहरण आप समझिए। चंदन के पेड़ के नजदीक जब उगते हैं बहुत सारे झाड़-झंखाड़, तो उन झाड़ियों में भी चंदन की विशेषताएँ पैदा हो जाती हैं। यह उपासना हो गई, नजदीक बैठना हो गया। पारस के नजदीक बैठते ही, स्पर्श करते ही लोहा सोना बन जाता है। महान् शक्ति का साथ छू करके कौन नहीं बन जाएगा महान्! आप स्वाति की बूँद के बारे में जानते हैं? स्वाति की बूँद कितनी महान् होती है? वह सीप के मुँह में जा पड़ती है, तो मोती पैदा हो जाते हैं। नजदीक न हों तब? आपस में न मिलें तब? तब सीप के लिए संभव नहीं है कि वह मोती पैदा कर सके। यही बात भगवान् के संबंध में भी है। भगवान् को कल्पवृक्ष बताया गया है, भगवान् को पारस बताया गया है, भगवान् को अमृत बताया गया है। अमृत को पी करके आदमी अजर-अमर हो जाते हैं, कल्पवृक्ष के नीचे बैठे करके आदमी अपनी कामनाओं को पूरा कर लेते हैं और पारस को छू करके लोहा सोना हो जाता है। मनुष्य के बारे में भी यही बात है। भगवान् को छुए आदमी तब? तब फिर सोने का हो जाएगा, लोहे का नहीं रहेगा, घटिया नहीं रहेगा, बल्कि महान् बन जाएगा। ठीक इसी प्रकार से कल्पवृक्ष यानी भगवान् के नीचे आदमी बैठ जाए तेब? तब उसकी वह कामनाएँ, जिनकी वजह से वह हमेशा हैरान बना रहता है, उन हैरानियों से छुट्टी पा सकता है और आदमी की कामनाएँ तृप्त हो सकती हैं। मरते तो वह आदमी हैं, जो शरीर में जिंदा रहते हैं। जो अपने आपको आत्मा समझते हैं, उनके मरने का सवाल कहाँ? क्यों? फिर मरने की कोई बात ही नहीं हो सकती, मरना कभी संभव नहीं है। मरना केवल उन्हीं के लिए संभव है, जो यह विचार करते हैं। कौन-सा? कि हमारा शरीर दूर है उनसे और जिस दिन भगवान् के नजदीक आ करके आदमी यह अनुभव कर ले कि हमारा जीवात्मा भगवान् का एक अंश है, फिर क्यों मरेगा आदमी? जीवात्मा कहीं मरता है क्या? शरीर तो कपड़ों की तरह है। रोज

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बदलते रहते हैं कपड़ों को। इससे कई लाभ हैं, भय से आदमी की निवृत्ति होती है, कामनाओं की पूर्ति के अभाव में जो विक्षोभ उत्पन्न होते हैं, उनसे निवृत्ति होती है। आदमी को अपनी कुरूपता और कमजोरियों से जो हैरानी होती रहती है , पारस से छू करके उसे निवृत्ति मिलती है। यह अनेक निवृत्तियाँ हो जाती हैं भगवान् के नजदीक जाने से। इसलिए उपासना का बहुत महत्त्व बताया गया है।

आप पतंग को देखते हैं न! बच्चे के हाथ में जब पतंग होती है, तो बच्चा झटके से उड़ाता रहता है और पतंग ऊपर चढ़ जाती है। अगर कोई उड़ाने वाला न हो तब ? तब पतंग जमीन पर गिरेगी और मटियामेट हो जाएगी। मनुष्य अपने जीवन की पतंग अगर भगवान् के हाथों में सुपुर्द कर दे, तब फिर जाने कहाँ-से-कहाँ उठता हुआ चला जाता है। अगर यह पतंग सुपुर्द न करे तब ? तब फिर जैसा छोटा, घिनौना मनुष्य है, वैसा ही तो रह जाएगा, आगे कहाँ बढ़ेगा ? आगे उसकी उन्नति के लिए कोई संभावना नहीं है और न कोई गुंजाइश है। ठीक इसी प्रकार से कठपुतली के बारे में आप जानते हैं न! कठपुतली नाचती है, कितना सुंदर तमाशा दिखाती है! बच्चे देखकर कितने खुश होते हैं, देखने वालों को कितना अचंभा होता है ? लेकिन क्या कठपुतली अपने आप नाचती है, नहीं, कठपुतली अपने आप नहीं नाचती। बाजीगर के हाथ में उसके धागे जुड़े हुए होते हैं और वह अपनी उँगलियों से घुमाता रहता है, जिसका परिणाम यह होता है कि कठपुतली सुंदर तमाशा दिखा पाती है। अगर यह धागा न बाँधे कठपुतली तब ? यह कहे, हम तो समर्पित नहीं होते, हम तो इनके अनुशासन को नहीं मानेंगे फिर ? फिर कठपुतली का तमाशा देखा जाना कैसे संभव है ? भगवान् का उद्यान, भगवान् के उद्यान में अगर हम रहें, तब फिर उसी के साथ में लिपटकर चलिए, लिपटकर चलेंगे, तो बेल की तरह चढ़ते चले जाएँगे। पेड़ होता है और पेड़ के ऊपर बेल लिपटती चली जाती है, उतनी ही ऊँची हो जाती है, जितना कि पेड़। पेड़ न मिले तब ? तब फिर मुश्किल है। अगर आप उतने लंबे न हों, जितनी कि बेल, बेल फैल तो सकती है जमीन पर, लेकिन ऊँची नहीं उठ सकती, ऊँचा उठने के लिए जरूरी है कि किसी पेड़ के साथ में बेल को लिपटने का सौभाग्य मिल जाए। भगवान् एक पेड़ की तरह है, जिसके साथ में अगर आप अपने को लपेट देते हैं तो न जाने कहाँ-से-कहाँ चले जाते हैं। ऐसा है यह भगवान्।

इसके साथ-साथ क्या करना चाहिए ? उपासना में क्या करना होता है ? उपासना में नजदीक आते हैं और नजदीक आने के साथ-साथ सबसे पहला काम करना पड़ता है, अपनी सफाई। अपनी सफाई हम कर लें, तब फिर सारी गुंजाइश मिलेगी। अगर सफाई न करें, तब फिर कुछ नहीं। शीशा है, शीशे को अगर आप मैला-कुचैला रख दें, उसमें फिर अपना चेहरा देखना चाहें, तो दिखेगा क्या ? नहीं दिखेगा। पानी के भीतर आप चेहरा देखना चाहे, बिंब देखना चाहें, तो पानी को साफ होना चाहिए। इसलिए भगवान् के नजदीक जाने के लिए सबसे पहला काम जो करना पड़ता है, वह अपनी सफाई करनी पड़ती है। अपनी सफाई के लिए जितने भी कृत्य हैं, जो प्रारंभिक और धार्मिक कृत्य हैं। आध्यात्मिक कृत्य हैं, इन सबमें अपने आप की सफाई, अपना परिष्कार करने की जरूरत पड़ती है। जैसे, आप सुबह पूजा करने बैठते हैं, तो क्या करते हैं ? पहले आप पंचकर्म करते हैं, पवित्रीकरण एक, आचमन दो, प्राणायाम तीन, न्यास चार, शिखावंदन पाँच। यही करते हैं न, पवित्रीकरण में जल हथेली पर लेकर शरीर पर छिड़कते हैं न और यह भावना करते हैं कि

शरीर को देखकर मनुष्य होना पहचाना जाता है और प्रकृति देखकर उसका दैत्य या देवता होना।

हमारी मलीनताएँ जो बाहर की मलीनताएँ हैं, वह दूर हो जाएँ। आचमन तीन बार करते हैं, उसके पीछे क्या संकल्प होता है ? उसके पीछे यह संकल्प होता है कि हमारा मन, वाणी या वचन और कर्म, इन तीनों की शुद्धता के लिए जल पीते हैं और जीभ पर ही पीते हैं, जीभ पर इसकी स्वाद-इंद्रिय है। इसके अंदर से कटुवचन अगर इसके साथ में चलते हैं, तो दूर हो जाएँ, यह आचमन का उद्देश्य है। प्राणायाम, जो साँस हम ग्रहण करते हैं, साँस हमारे अंग-प्रत्यंगों में चली जाती है, तो प्राणायाम में भी हम यह भावना करते हैं कि भगवान् का प्राण लेकर के, भगवान् की शक्ति लेकर के यह हवा हमारे भीतर आए और धोकर के साफ कर दे। इसी प्रकार से न्यास है। न्यास में पाँचों ज्ञानेंद्रियाँ हैं—इनको हमेशा शुद्ध रहना चाहिए अर्थात् इनके द्वारा किए हुए कृत्य शुद्ध और पवित्र होने चाहिए। न्यास, यही उद्देश्य है। शिखावंदन, शिखा का वंदन अर्थात् संस्कृति का वंदन। सिर के ऊपर जो ध्वजा फहरा रखी है ज्ञान की देवी गायत्री माता की, उसके प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करना, यही शिखावंदन है। यह संसार के सारे कृत्य जो कि पंचकर्म कहलाते हैं, यह सब इस उद्देश्य के लिए हैं कि साधक को यह मानकर चलना चाहिए कि अपने आपको

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जितना पुनीत और जितना पवित्र बना सकेगा, उतना ही भगवान् की किरणें उसके भीतर प्रवेश करेंगी जितना अपने आपको जलील और गंदा बनाकर रखेगा, उसी हिसाब से व्यवधान उत्पन्न होते चले जाएँगे और जो चीज वह चाहता है, उससे वंचित रह जाएगा। आप सामान्य जीवन में देखते होंगे, स्नान किए बिना कहाँ काम चलता है, स्नान न करें तब! स्नान शरीर को नहीं कराएँ, तब मैला-कुचैला हो जाएगा और मैल जम जाने से पसीने के छेद बंद हो जाएँगे, आप बीमार पड़ जाएँगे, खाज हो जाएगी, पीलिया हो जाएगा, जुएँ हो जाएँगे। इसलिए स्नान करना बहुत जरूरी है और जीव को स्नान कराना भी। शरीर का ही नहीं, आत्मा का भी। आत्मा का स्नान कराना अर्थात् आत्मा के ऊपर चढ़े हुए कषाय और कल्मषों को हमको दूर करना चाहिए। यही भजन का भी उद्देश्य है। बुहारी से आप देखते हैं न, बार-बार झाड़ लगाते हैं। बरतन माँजते हैं न, रिपिटीशन करते हैं, रिपिटीशन करना जप करने का उद्देश्य है, एक तरह का साबुन लगाना है। कपड़ा धोते हैं, तो बार-बार साबुन घिसते हैं अथवा बार-बार कपड़े को नीचे से ऊपर तक पीटते हैं, दबोचते हैं। इसका अर्थ यह हो गया कि जिस तरीके से राम के नाम से मन के ऊपर साबुन की तरह धोना शुरू करते हैं, तो यही जप का उद्देश्य है। पत्थर पर घिसते हैं, बार-बार रिपीट करते हैं, तो निशान हो जाता है। अगर नहीं करें, तब फिर नहीं होगा। बार-बार करने का मतलब यही है। बहुत-सी चीजें ऐसी होती हैं, जिनको कि रगड़कर चमका दिया जाता है, जैसे मार्बल-सीमेंट को बार-बार घिसते रहते हैं और बार-बार घिसने से वह चमक जाता है। किसी भी चीज को साफ करने के लिए उसको घिसाव देना पड़ता है। अपने आप को भी किसी से रगड़कर घिसाव देना पड़ेगा। घिसाव देने से हममें जो खुरदरापन है, रूखापन है, वह सब चिकनाई में, स्नेह में, सद्भावना में बदल जाता है। यह है रिहर्सल जप की।

जप को आप यह मानकर मत चलिए कि भगवान् को अपनी खुशामद की जरूरत है और खुशामद जो कोई करता है, उससे भगवान् प्रसन्न हो जाता है। आप ऐसा ख्याल कभी मत करना। भगवान् को न खुशामद करने की दरकार है और न कोई शानदार शक्ति खुशामद पसंद करती है। भगवान् की चोर खुशामद नहीं करते, तो क्या देखभाल नहीं करता! चिड़िया कहाँ खुशामद करती हैं? जानवर कहाँ उनकी पूजा और प्रार्थना करते हैं? इतने पृथ्वी के जीव-जंतु हैं, इनमें से कौन पूजा-प्रार्थना करता है, तो क्या भगवान् ध्यान नहीं रखते? तब क्या भगवान् नाराज हो जाते हैं क्या? जो आदमी जप करेगा, उसी से प्रसन्न होंगे। जो जप नहीं करेगा, उससे प्रसन्न नहीं होंगे। नहीं जप करने का मतलब अगर आपने खुशामद समझा है, तो आप गलती करते हैं। भगवान् को न किसी खुशामद की जरूरत है, न किसी के इनाम और उपहार की जरूरत है। भेंट देंगे, पूजा देंगे, प्रसाद बाँटेंगे। आप क्या बच्चों की सी बात करते हैं। फूल भगवान् को रिश्वत के रूप में देंगे। आप रिश्वत क्या देंगे? फूल की जरूरत पड़ेगी, तो भगवान् कहीं भी किसी के बगीचे में घुस जाएँगे और वहाँ से फूल चुनते रहेंगे। सारी दुनिया तो उन्हीं की है, जहाँ जरूरत पड़ेगी, वहीं सुगंध ले सकते हैं। आपके फूलों से क्या बनता-बिगड़ता है उनका। इसलिए उपहार, इनाम, रिश्वत आदि की दृष्टि से न कोई वस्तु दी जा सकती है उसको और न उसके ऊपर किसी वाणी का असर पड़ता है। प्रार्थना करने का, पूजा करने का इनका कोई असर नहीं पड़ता। तब यह पूजा-उपासना, इतना कृत्य जो आप रोज करते हैं, किसलिए किया जाता है? यह वास्तव में अपने मन की धुलाई है, अपने मन की रँगाई है। पहले आप अपने आपको धोकर

व्यक्ति का अंतःकरण वह न्यायालय है, जिसमें परमेश्वर न्यायाधीश बनकर विराजमान् रहता है।

रखेंगे, तो रँगना संभव हो जाएगा, फिर आप उपासना जो करेंगे, सफल हो सकती है, साधनाएँ सार्थक हो सकती हैं। अगर आपने अपनी धुलाई नहीं की, अपने कषाय-कल्मषों को धोया नहीं, तो फिर बहुत मुश्किल है, फिर आपके लिए बहुत कठिन हो जाएगा। खेत को अगर आप जोतेंगे नहीं, तो फिर बीज बोएँगे कैसे? फसल पैदा हो जाएगी? यह खेत की जुताई, राम नाम का जप करना अथवा अन्य किसी तरीके से अपने आपका परिष्कार करना सब एक ही है। जोत करके अगर आपने खेत ठीक तरीके से तैयार कर लिया है, तो बुआई में आपको कोई दिक्कत नहीं पड़ेगी, बुआई सरल हो जाएगी, खेत तो जोता हुआ है और अगर जोता हुआ न हो तब? कंकड़-पत्थर वाला खेत हो तब? सूखा और पत्थर वाला खेत हो तब? तब आप जो कुछ भी बोएँगे जमीन में, आपका सब बीज भी मारा जाएगा और आप फिर निराश होते फिरेंगे। दीवार को चिनने से पहले, खड़ी करने से पहले जमीन खोदनी पड़ती है, तब खोद करके उसमें नींव भरनी पड़ती है। जप करना, पूजा करना, ध्यान करना, यह अपने आपकी खुदाई

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करने के बराबर है, ताकि वहाँ राम के नाम की नींव चिनी जा सके। यह जुताई और बुवाई, रँगाई और धुलाई की तरह है, यह बात समझ में आ जाए, तब फिर आपको उपासना-कृत्यों का रहस्य मालूम हो गया, यह समझना चाहिए।

नमन हम करते हैं, वंदन करते हैं, सूर्य नारायण को जल चढ़ाते हैं—इनका क्या मतलब है? हम अपने आपको समर्पित करते हैं। अपने छोटे-से बरतन में भरा हुआ जल हम सूर्य भगवान् के सामने चढ़ा देते हैं, इसका अर्थ यह होता है प्रकारांतर से कि हमारे शरीर में जो भी जल भरा हुआ है, जीवन-रस भरा हुआ है, इसको हम विराट् सत्ता को, भगवान् को समर्पित करते हैं और यह आशा करते हैं कि हमारे जल को केंद्रित न रखा जाए, बल्कि इसको हवा में बिखेर दिया जाए, ओस के रूप में, ठंढक के रूप में, नमी के रूप में। यह हमारा थोड़ा-सा जल जो अर्घ्य के रूप में चढ़ाया गया है, सारे समाज के काम आए, देश के काम आ जाए, इस उद्देश्य को लेकर सूर्य-अर्घ्य चढ़ाया जाता है। सूर्य-अर्घ्य में आप पानी तो चढ़ा देते हैं, लेकिन उसका भावार्थ नहीं समझे, तब फिर केवल क्रीड़ा-कृत्य हो जाएगा, फिर एक विडंबना हो जाएगी, उससे कुछ बनेगा नहीं। वह सिर्फ जल को विसर्जन करना होगा। जैसे जल को सूर्य नारायण के सामने विसर्जित कर देते हैं, आपको भी वैसे ही विसर्जित करना पड़ेगा अपने आपको। इसका अर्थ है कि उनका अनुशासन अपने ऊपर धारण करना पड़ेगा। इष्ट-भगवान् को स्थापित करते हैं न। इष्ट माने, लक्ष्य, हमारा लक्ष्य क्या है? लक्ष्य का मतलब है, इष्ट। इष्ट आपने कोई तय कर लिया अर्थात् आपका शिव इष्ट है, इसका मतलब हो गया, कल्याण आपका इष्ट है। गायत्री अगर आपका इष्ट है, तो इसका अर्थ हो गया कि आपने शालीनता की देवी का, पुनीत और पवित्रता की देवी का वरण कर लिया, उसके सामने अपने आपको चढ़ाने का निश्चय कर लिया। इसी प्रकार से यह जो है गायत्री, यह प्रज्ञा की देवी, सदाशयता की देवी, शालीनता की देवी, इसके प्रति अगर अपने आपको समर्पित करते हैं, तो आप मान लीजिए आपने इष्ट निर्धारित कर लिया। यह प्रतीक हैं। सारे आध्यात्मिक क्रियाकलापों का अर्थ केवल एक होता है कि हम भगवान् में रम जाएँ, भगवान् में तन्मय हो जाएँ, भगवान् को साथ लेकर के चलें। इन्हीं को हम पूजा के प्रतीकों के माध्यम से चरितार्थ करते हैं। जल चढ़ाते हैं, भगवान् को कोई पानी की जरूरत थोड़े ही है, बल्कि उसका यह अर्थ है कि हम अपने आपको जल जैसा पुनीत, जल जैसा बहने वाला, जल जैसा नम्र बनाते हैं। पुष्प हम भगवान् के ऊपर चढ़ाते हैं, तो इसका अर्थ यह होता है कि फूल जैसा जीवन जिएँगे, सुरभित जीवन जिएँगे। समन्वित जीवन जिएँगे, हँसता और हँसाता हुआ जीवन जिएँगे। फूल चढ़ाना भगवान् को रिश्वत नहीं है, अपने आपका शिक्षण है। आत्मशिक्षण के लिए हम फूल चढ़ाते हैं। हमारा फूल जैसा जीवन ही भगवान् के चरणों पर चढ़ने का अधिकारी बन सकता है। फूल न हो तब? तब क्या चढ़ेगा भगवान् के चरणों पर? पत्ते को कोई चढ़ाता है? जड़ को कोई चढ़ाता है? नहीं। फूल को ही चढ़ाते हैं, इसका अर्थ है भगवान् के सिर पर अगर आपको विराजना है, भगवान् के हृदय से अगर आपको लगना है, भगवान् के चरणों पर स्थान प्राप्त करना है, तो फिर इसका एक ही तरीका रह गया, कौन-सा? कि आप फूल की तरह खिलें। भगवान् के लिए और क्या-क्या करना पड़ता है? धूप देते हैं, नैवेद्य देते हैं, दीपक जलाते हैं। दीपक से क्या अर्थ होता है? दीपक से आप यह मत सोचिए कि भगवान् को कम दिखाई पड़ता है, इसलिए आप रोशनी कर देंगे, तो उनको रास्ता चलने में सुगमता रहेगी। नहीं, ऐसा नहीं है। भगवान् के तो कितने ही दीपक जलते हैं, उनका सूरज दिन में देखा है न आपने? रात को चाँद का



दीपक देखा है न? भगवान् के यहाँ कोई दीपक की कमी नहीं है। हम भगवान् को दीपक नहीं दिखाते हैं। दीपक दिखाने का अर्थ केवल अपने आपको यह सिखाने का है, यह आत्मशिक्षण है कि हमको दीपक की तरह जिंदगी जीनी चाहिए, हमको प्रकाशवान् जिंदगी जीनी चाहिए, हमको शानदार जिंदगी जीनी चाहिए, हमको अच्छी वाली जिंदगी जीनी चाहिए। बस, यही तो उद्देश्य है और कोई उद्देश्य नहीं है। इसलिए आप जो पूजाकृत्य में वस्तु समर्पित करते हैं, उसके पीछे आत्मशिक्षण की, जिसका मूल उद्देश्य है, आत्मपरिष्कार की प्रेरणा ग्रहण करें। नैवेद्य ग्रहण करते हैं, नैवेद्य को मिठास कहते हैं। भगवान् कोई चींटी थोड़े ही है, जो शक्कर तलाश करते फिरें और शक्कर खा लेने से प्रसन्न हो जाएँ, शक्कर के लिए भागते फिरें, ऐसा नहीं है। नैवेद्य का अर्थ होता है, मिठास। हम मिठास जैसा जीवन जिएँ, हमारे व्यवहार में मिठास हो, हमारे में विनम्रता हो, सज्जनता हो, दूसरों का सम्मान करना सीखें। यह क्या है? यही नैवेद्य है। पूजा में आप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

चावल चढ़ाते हैं भगवान् के ऊपर, जिसका अर्थ होता है, अपनी कमाई का एक हिस्सा भगवान् के लिए अर्थात् श्रेष्ठ कामों के लिए हम नियमित रूप से लगाते चलें, तो इसका अर्थ यह हो गया कि आपने भगवान् को नैवेद्य चढ़ा दिया, अक्षत चढ़ा दिए, धूप चढ़ा दी। बस, इन सबका चढ़ाने का मतलब आप भूलना मत। इसमें रिश्वत का कोई भाव नहीं है, उपहार और इनाम बाँटने का कोई भाव नहीं है। ऐसा करके हम भगवान् का और अपमान कर देंगे। हमारी हैसियत ही कहाँ है, जो हम भगवान् को खिला पाएँ। हमारी हैसियत ही कहाँ है, जो हम भगवान् को अँधेरे में से बचाकर रोशनी में ला पाएँ। यह तो हम अपना शिक्षण करते हैं—**'तमसो मा ज्योतिर्गमय'**। हम प्रकाश की ओर चलेंगे, अँधेरे की ओर नहीं। यह शिक्षण करने के लिए हम दीपक जलाते हैं।

इन प्रतीकों के बारे में आप ध्यान रखिए। अगर प्रतीकों के बारे में ध्यान नहीं रखेंगे, तब फिर मुश्किल है। अपने आपका तो शोधन करना ही पड़ेगा। नहीं करेंगे तो मुश्किल पड़ी रहेगी। आपको उस साधु की कथा याद है? जो एक चोर को यह जवाब देता था, भगवान् को देखना कोई कठिन नहीं है, तो एक दिन चोर ने पूछा, स्वामी जी हमें भी दिखा दीजिए। स्वामी ने कहा, अच्छा, दिखा देंगे। उसने पूछा, कब दिखा देंगे? उन्होंने कहा, जब कहो, तभी दिखा देंगे। चोर दूसरे दिन तैयार होकर आ गया सवेरे ही। उसने कहा, हमको दिखाइए भगवान्। संत ने कहा, अच्छा तो चलो, साथ-साथ चलते हैं और इस पहाड़ के ऊपर टीले पर से दिखा पाएँगे। उसने कहा अच्छा तो चलिए। तो उन्होंने कहा, देखो भाई, वहाँ कुछ पूजा-पाठ करना पड़ता है। चार पत्थर लेकर चलना पड़ेगा। चार पत्थर लेकर चलने से ही बात बनेगी। चोर तैयार हो गया। उसने चार पत्थर सिर पर रख लिए और जब चलने लगा, तो रास्ते में थोड़ी दूर ही चढ़ा होगा कि थक गया, तो उसने कहा, स्वामी जी, यह तो बहुत भारी पत्थर हैं। हमको तो बहुत कष्ट होता है। उन्होंने कहा, बेटा! एक पत्थर फेंक दो। उसने एक पत्थर फेंक दिया। थोड़ा और आगे चला, फिर थक गया। स्वामी जी ने कहा, स्वामी जी यह तो तीन पत्थर हैं, थोड़ा और कम कराइए। फिर एक और फेंक दिया। दो पत्थर रह गए। उनको लेकर ऊपर चढ़ने लगा। फिर कहने लगा, यह तो बहुत भारी हैं। एक पत्थर और फेंक दिया। एक पत्थर और रह गया। उसको लेकर जब ऊपर पहाड़ पर चढ़ता चला जा रहा था, तब फिर वह बहुत थक गया। उसने कहा, स्वामी जी आप ऐसी कृपा करें, आप इस पत्थर को भी फिंकवा दीजिए, तब बात बनेगी। अब तो मुझसे चला नहीं जाता। पहले चार पत्थर लाया, फिर तीन लिए, दो लिए, अब मैं चलते-चलते थक गया हूँ कि मेरी गरदन में भी दरद होता है, आप इसको भी फिंकवा दीजिए, तो बाबा जी ने कहा, अच्छा, तो उसे भी फेंक दो। चारों पत्थरों को फेंक देने के बाद में जब वहाँ ऊपर टीले पर पहुँचा, तब महात्मा ने भगवान् को दिखाने के बजाय चोर से यह पूछा, जब चार पत्थर लेकर आप टीले पर चढ़ रहे थे तब चढ़ना मुश्किल था न? अरे साहब! बहुत मुश्किल था, हम चढ़ ही नहीं सकते थे। तब उन्होंने कहा, हमारे सिर के ऊपर पत्थर रखे हुए हैं, हम उन पत्थरों को एक-एक करके फेंक दें, तब फिर हमारे लिए इस टीले पर चढ़ना, भगवान् को देख सकना कोई भी चीज कठिन नहीं रहेगी। काम का पत्थर, क्रोध का पत्थर,

> *चरित्र के अभाव में मनुष्य चापलूसी का आश्रय लेता है। जिन व्यक्तियों में आत्मविश्वास है, वे मात्र औचित्य का निर्वाह करते हैं।*

लोभ का पत्थर, मोह का पत्थर, मद और मत्सर का पत्थर, यह सारे-के-सारे पत्थर ऐसे घिनौने पत्थर हैं, जो हमारी नाक में दम करते रहते हैं, हमको हैरान करते रहते हैं। अगर इस हैरानी को और इन पत्थरों को दूर न करें, तो बहुत मुश्किल हो जाएगी, बस यही तो शिक्षण है। आप सारी उपासना का उद्देश्य बार-बार ध्यान रखिए, इसका एक ही उद्देश्य है कि हम अपने आपको पुनीत बनाएँ, धो करके साफ करें, स्वच्छ करें। दिवाली के दिन घर को साफ करते हैं, ताकि लक्ष्मी जी आएँ। जब दूल्हा घर में आता है, बारात घर में आती है, तो धो-पोंछ करके साफ करते हैं ताकि जो मेहमान आने वाले हैं, साफ-सुथरे घर में प्रवेश करना पसंद करें। आपको यही करना पड़ेगा। उपासना का मतलब नजदीक आना है। नजदीक आने का मतलब अपने आपकी पहले धुलाई और सफाई कर देना है। बस, आप यह कर पाएँगे, तो समझिए आपकी बहुत सारी मंजिल पार हो गई। मुझे उम्मीद है, आप ऐसा ही करेंगे। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति।

❖

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

जीवंत विभूतियों से भावभरी अपेक्षाएँ

(भाग-१)

प्रस्तुत अमृतवाणी १७ अप्रैल १९७४ को गायत्री तीर्थ परिसर में परमपूज्य गुरुदेव द्वारा दिए गए प्रवचन से ली गई है। जाग्रत् प्राणवानों, विभूतियों, प्रतिभाशीलों की पूज्यवर ने सोदाहरण व्याख्या की है एवं अपेक्षा की है कि राष्ट्र, समाज, संस्कृति के पुनरुद्धार हेतु इस संधि वेला में आगे आएँगे। इन्हीं जीवंतों के अग्रगमन से नवयुग-सतयुग का शुभागमन होगा। तीन खंडों में प्रकाशित यह अमृतवाणी विभूति ज्ञान यज्ञ (८ अक्टूबर २०००, नई दिल्ली) एवं सृजन संकल्प विभूति पुरुषमेध महायज्ञ (७ से ११ नवंबर २०००, शांतिकुंज, हरिद्वार) के परिप्रेक्ष्य में निश्चित ही पठनीय-मननीय है। अंदर से बाहर तक झकझोर कर खड़ा कर देने वाली ओजस्वी वाणी को लिपिबद्ध पढ़ें इस व आगामी दो अंकों में।

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलें,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो और भाइयो! भगवान् ने गीता में 'विभूति योग' वाले दसवें अध्याय में एक बात बताई है कि जो कुछ भी यहाँ श्रेष्ठ दिखाई पड़ता है, ज्यादा चमकदार दिखाई पड़ता है, वह मेरा ही विशेष अंश है। जहाँ कहीं भी चमक ज्यादा दिखाई पड़ती है, वह मेरा विशेष अंश है। उन्होंने कहा, वृक्षों में मैं पीपल हूँ। छलों में मैं जुआ हूँ। वेदों में मैं सामवेद हूँ। साँपों में वासुकी मैं हूँ। अमुक में अमुक मैं हूँ-आदि। मुझ में ये सारी विशेषताएँ हैं। मित्रो! आपको जहाँ कहीं भी चमक दिखाई पड़ती है, वो सब भगवान् की विशेष दिव्य विभूतियाँ हैं और जहाँ कहीं भी जितना अधिक विभूतियों का अंश है, यह मानकर के हमको चलना पड़ेगा कि यहाँ इस जन्म में अथवा पहले जन्मों में इन्होंने किसी प्रकार से इस संपत्ति का उपार्जन किया है। अगर यह उपार्जन इन्होंने नहीं किया है, तो सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा उनमें ये विशेषता क्यों दिखाई पड़ती हैं? जिनके अंदर कुछ विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं, मित्रो! उनके कुछ विशेष कर्त्तव्य और विशेष जिम्मेदारियाँ हैं। इसलिए उनको उद्‌बोधन करना चाहिए। उन लोगों को, जिनके अंदर कुछ विशेष प्रभाव और विशेष चमक दिखाई पड़ती है।

संपदा बनाम विभूति

मित्रो! विशेष प्रभाव और विशेष चमक क्या है? वह है जिनको हम विभूतियाँ कहते हैं। कुछ संपदाएँ होती हैं, कुछ विभूतियाँ होती हैं। संपदाएँ क्या होती हैं और विभूतियाँ क्या होती हैं? संपदा उसे कहते हैं जो कि बाप-दादों की है। वे उसे छोड़कर चले जाते हैं और हम उस कमाई को बैठकर खाया करते हैं। ये संपदाएँ हैं। ये स्त्रियों को भी मिल जाती हैं, बच्चों को भी मिल जाती हैं। ये कोढ़ियों को भी मिल जाती हैं, अंधों को मिल जाती हैं और पंगु को भी मिल जाती हैं, गूँगे-बहरे को भी मिल जाती हैं। गूँगे-बहरे भी कई बार जुआ खेलते हैं और लाटरी लगाते हैं। लाटरी लगाने के बाद में उनको रुपया भी मिल जाता है। न मालूम किसको क्या मिल जाता है बाप-दादों की कमाई से? बाप-दादों की कमाई से मिनिस्टरों के लड़के-लड़कियों को ऐसे-ऐसे काम मिल जाते हैं, ऐसे-ऐसे धंधे मिल जाते हैं, जिससे उनको घर बैठे लाखों रुपए की आमदनी होती रहती है। इसे क्या कहते हैं? इसे हम संपदा कहते हैं।

किसी के पास जमीन है। भगवान् की कृपा से उस साल अच्छी वर्षा हो गई, तो दो सौ क्विंटल अनाज पैदा हो गया। दो सौ क्विंटल अनाज बिक गया तो ढेरों पैसा आ गया और उसे बैंक में जमा करा दिया। मकान बन गया, ये बन गया-वो बन गया। पैसे का खेल बन गया। क्या कहता हूँ मैं इनको? इनको मैं संपत्तियाँ कहता हूँ। संपत्ति जमीन में गड़ी हुई मिल सकती है, बाप-दादों की उत्तराधिकार में भी मिल सकती है और किसी बड़े आदमी की कृपा एवं आशीर्वाद से भी मिल सकती है। संपत्ति किसी भी तरीके से मिल सकती है, किंतु संपत्तियों का कोई मूल्य नहीं है, विभूतियों का मूल्य है। विभूतियाँ जहाँ कहीं भी दिखाई पड़ें, उनको आप यह मानकर चलना कि वे भगवान् का विशेष अंश हैं। विशेष अंश जो उनके भीतर है, वह जहाँ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कहीं भी हो, उस अंश को जाग्रत् करना, उसको उद्बोधन करना और सोए हुओं को जगाना हमारा-आपका विशेष काम है।

साथियो! रावण के घर में ढेरों-के-ढेरों आदमी थे। सुना है एक लाख बच्चे थे और सवा लाख नाती-पोते थे, लेकिन जब रामचंद्र जी से लड़ाई हो गई और दोनों ओर की सेनाएँ खड़ी हो गईं, तो उसने देखा कि हमारे पास एक ही सहायक, एक ही मजबूत और जबरदस्त आदमी है। उसको जगाया जाना चाहिए और उसकी खुशामद की जानी चाहिए। उसकी खुशामद की जाने लगी, उसे जगाया जाने लगा। कौन आदमी था वह? उसका नाम था कुंभकरण। वह छह महीने सोया करता था और छह महीने जागा करता था। रावण को यह विचार आया कि कुंभकरण यदि जाग करके खड़ा हो जाए, तो सारे रीछ-बंदरों को एक ही दिन में मारकर खा जाएगा। एक ही दिन में सफाया कर देगा और लड़ना भी नहीं पड़ेगा और रामचंद्र जी की सेना का सफाया हो जाएगा। सुना है कि इसीलिए उसके ऊपर बैल, घोड़े और हाथियों को चलाना पड़ा था, ताकि कुंभकरण की नींद छह महीने पहले ही खुल जाए और वह उठकर खड़ा हो जाए। अगर वह तुरंत उठकर खड़ा हो गया होता, अगर जाग गया होता तो रामचंद्र जी की सेना के लिए मुसीबत खड़ी कर दी होती, लेकिन भगवान् की कृपा ऐसी हुई, भगवान् का जोश और प्रताप ऐसा हुआ कि वह काफी देर से जगा। तब तक बहुत कुछ नष्ट हो चुका था। इसीलिए रावण मारा गया, मेघनाद मारा गया और सारी लंका तहस-नहस हो गई।

विभूतिवान् जागें

मित्रो! हमको समाज में सोए हुए, गड़े हुए कुंभकरणों को जगाना चाहिए। कुंभकरणों की कमी है क्या? नहीं, इनकी कमी नहीं है, पर वे सो गए हैं। हमारा एक काम यह भी होना चाहिए कि जहाँ कहीं भी आपको विभूतिवान् मनुष्य दिखाई पड़ें, तो आपको उनके पास बार-बार चक्कर काटना चाहिए और बार-बार उनकी खुशामद करनी चाहिए।

विभूतिवान् लोगों में एक तबके के वे लोग आते हैं, जिनको हम विचारवान् कहते हैं, समझदार कहते हैं। समझदार मनुष्य इस ओर चल पड़ें तो भी गजब ढा देते हैं और उस ओर चल पड़ें तो भी गजब ढा देते हैं। मोहम्मद अली जिन्ना बड़े समझदार आदमी थे और बड़े अक्लमंद आदमी थे। मालवार हिल के ऊपर मुंबई में उनकी कोठी बनी हुई है। उनके यहाँ चालीस जूनियर वकील काम करते थे और केस तैयार करते थे। मोहम्मद अली जिन्ना केवल बहस करने के लिए हाईकोर्ट में जाते थे और एक-एक केस का हजारों रुपया वसूल करते थे उस जमाने में। मोतीलाल नेहरू के मुकाबले के आदमी थे। उनमें बड़ी अक्ल थी, बड़े दिमाग वाले थे। बड़ा दिमाग वाला, अक्ल वाला मनुष्य इधर को चले तो भी गजब और उधर को चले तो भी गजब। सही भी कर सकता था वह तथा गलत भी। यही हुआ।

मोहम्मद अली जिन्ना एक दिन खड़े हो गए और पाकिस्तान की वकालत करने लगे, पाकिस्तान की हिमायत करने लगे। परिणाम क्या हुआ? परिणाम यह हुआ कि सारे पाकपरस्तों के अंदर उन्होंने एक ऐसी बगावत का माद्दा पैदा कर दिया, ऐसी लड़ाई पैदा कर दी, जेहाद पैदा कर दी और न जाने क्या-क्या पैदा कर दिया कि एक ही देश के लोग एक दूसरे के खूनी हो गए, बागी हो गए। खूनी और बागी होकर के जहाँ-तहाँ दंगे करने लगे। आखिर में गाँधी जी को यह बात मंजूर करनी पड़ी कि पाकिस्तान बनकर ही रहेगा। निर्णय सही था कि गलत, यह चर्चा का विषय नहीं है। वास्तविकता यह जाननी चाहिए कि यह जहर किसने बोया? यह जहर उस आदमी ने बोया, जिसको हम समझदार कहते हैं और अक्लमंद कहते हैं। मोहम्मद अली जिन्ना कहते हैं। यह तो मैं उदाहरण दे रहा हूँ। मनुष्यों का क्या उदाहरण दूँ, मैं तो समझदारी का उदाहरण दे रहा हूँ।

कीमत सही अक्ल की

समझदारी जहाँ कहीं भी होगी, न जाने क्या-से-क्या करती चली जाएगी? समझदार आदमी आर्थिक क्षेत्र में चला जाएगा तो वो मोनार्क पैदा हो जाएगा और हेनरी फोर्ड पैदा हो जाएगा। पहले ये छोटे-छोटे आदमी थे। नवसारी गुजरात का एक नन्हा-सा आदमी, जरा-सा आदमी और समझदार आदमी अगर व्यापार क्षेत्र में चला जाएगा, तो उसका नाम जमशेद जी टाटा होता चला जाएगा। राजस्थान का एक अदना-सा आदमी जुगल किशोर बिड़ला होता चला जाएगा। अगर आदमी के अंदर गहरी समझदारी हो तब? तब एक नन्हा-सा आदमी, जरा-सा आदमी, दो कौड़ी का आदमी जिधर चलेगा अपनी समझदारी के साथ, वह गजब ढाता हुआ चला जाएगा।

मित्रो! गहरी समझदारी की बड़ी कीमत है। गहरी समझदारी वाले सुभाषचंद्र बोस गजब ढाते हुए चले गए। सरदार पटेल एक मामूली से वकील। यों तो दुनिया में एक ही नहीं, बहुत सारे वकील हुए हैं, लेकिन पटेल ने अपनी क्षमता और प्रतिभा यदि वकालत में खरच की होती, तो शायद अपनी समझदार अक्ल की कीमत एक हजार रुपया महीना वसूल कर ली होती और उन रुपयों को वसूल करने के बाद में मालदार हो गए होते और उनका बेटा शायद विलायत में पढ़कर आ जाता और वह भी वकील हो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकता था। उनकी हवेली भी हो सकती थी और घर पर मोटरें भी हो सकती थीं, लेकिन वही सरदार पटेल अपनी समझदारी को और अपनी बुद्धिमानी को लेकर खड़े हो गए। कहाँ खड़े हो गए? वकालत करने के लिए। किसकी वकालत करने के लिए? काँग्रेस की वकालत करने के लिए और आजादी की वकालत करने के लिए। जब वे वकालत करने के लिए खड़े हो गए, तो कितनी जबरदस्त बैरिस्टरी की और किस तरीके से वकालत की और किस तरीके से तर्क पेश किए और किस तरीके से उनने फिजाँ पैदा की कि हिंदुस्तान की दिशा ही मोड़ दी और न जाने क्या-से-क्या हो गया?

मित्रो! अक्ल बड़ी जबरदस्त है और आदमी का प्रभाव, जिसको मैं प्रतिभा कहता हूँ, विभूति कहता हूँ, यह विभूति बड़ी समझदारी से भरी है। अगर यह विभूति आदमी के अंदर हो, जिसको मैं आदमी का तेज कहता हूँ, चमक कहता हूँ, तो वह आदमी जहाँ कहीं भी जाएगा, वो टॉप करेगा। वह टॉप से कम रह ही नहीं सकता। सूरदास जब वेश्यागामी थे, बिल्वमंगल थे, तो उन्होंने अति कर डाली और सीमा से बाहर चले गए। वहाँ तक चले गए जहाँ तक कि अपनी धर्मपत्नी के कंधे पर बैठकर वहाँ गए, जहाँ उनके पिताजी का श्राद्ध हो रहा था। वहाँ भी पिताजी के श्राद्ध के समय भी वे वेश्यागमन के लिए चले गए। श्राद्ध करने के लिए भी नहीं आए। अति हो गई।

प्रतिभाएँ सदैव शीर्ष पर पहुँचीं

और तुलसीदास? तुलसीदास जी भी जिजीविषा के मोह में पड़े हुए थे। सारी क्षमता और सारी प्रतिभा इसी में लग रही थी। एक बार उनको अपनी पत्नी की याद आई। वह अपने मायके गई हुई थी। नदी बह रही थी। वे नदी में कूद पड़े। नदी में कूदने पर देखा कि अब हम डूबने वाले हैं और कोई नाव भी नहीं मिल रही है। तभी कोई मुरदा बहता हुआ चला आ रहा था, बस वे उस मुरदे के ऊपर सवार हो गए और तैरकर नदी पार कर ली। उनकी बीबी छत पर सो रही थी। वहाँ जाने के लिए उन्हें सीढ़ी नहीं दिखाई पड़ी, रास्ता दिखाई नहीं पड़ा। वहाँ पतनाले के ऊपर एक साँप टँगा हुआ था। उन्होंने साँप को पकड़ा और साँप के द्वारा उछलकर छत पर जा पहुँचे। कौन जा पहुँचे? तुलसीदास। यही तुलसीदास जब हिम्मत वाले, साहस वाले तुलसीदास बन गए, प्रतिभा वाले तुलसीदास बन गए, तब वे संत हो गए।

इसी तरह सूरदास, प्रतिभा वाले और हिम्मत वाले सूरदास जब खड़े हो गए और जो भी दिशा उन्होंने पकड़ ली, उसमें उन्होंने टॉप किया। सूरदास ने जब अपने आपको सँभाला लिया और अपने आपको बदल लिया, तब उन्होंने टॉप किया। टॉप से कम में तो वे रह ही नहीं सकते। वही बिल्वमंगल जब वेश्यागामी था तो पहले नंबर का और जब संत बना तब भी पहले नंबर का। संत पहले नंबर का क्यों? इसलिए कि वह भगवान् का भक्त हो गया। जब वह भगवान् का भक्त हो गया, तो फिर वह ऐसा मजेदार भक्त हुआ कि उसने वह काम कर दिखाए, जिस पर हमको अचंभा होता है। हिम्मत वाला और दिलेर आदमी जो काम कर सकता है, मामूली आदमी उसे नहीं कर सकता। उसने अपनी आँखें गरम सलाखें डालकर फोड़ डालीं। हम और आप कर सकते हैं क्या? नहीं कर सकते। ऐसा कोई दिलेर आदमी ही कर सकता है। उसने दिलेरी के साथ और तन्मयता के साथ ऐसी मजबूत भक्ति की कि श्रीकृष्ण भगवान् को भागकर आना पड़ा और बच्चे के रूप में, जिनको कि वे अपना इष्टदेव मानते थे, उसी रूप में उनकी सहायता करनी पड़ी। आँखों के अंधे सूरदास की लाठी पकड़ करके टट्टी-पेशाब कराने के लिए, स्नान कराने के लिए भगवान् ले जाया करते थे और सारा इंतजाम किया करते थे। भगवान् उनकी नौकरी बजाया करते थे।

कौन से सूरदास की? उस सूरदास की, जो प्रतिभावान् था। मैं किसकी प्रशंसा कर रहा हूँ? भक्ति की? भक्ति की बाद में, सबसे पहले प्रतिभा की, समझदारी की। प्रतिभा की बात मैं कह रहा हूँ। प्रतिभा अपने आप में एक जबरदस्त वस्तु है। वह जहाँ कहीं भी चली जाएगी, जिस दिशा में भी चली जाएगी, चाहे वह जहाँ कहीं भी जाएगी, पहले नंबर का काम करेगी। तुलसीदास ने क्या काम किया? तुलसीदास ने जब अपनी दिशाएँ बदल दीं, जब उनकी बीबी ने कहा, नहीं, तुम्हारे लिए ये मुनासिब नहीं है। क्या तुम इसी तरीके से वासना में अपनी जिंदगी खत्म कर दोगे? तुमको भगवान् की भक्ति में लग जाना चाहिए और जितना हमको प्यार करते हो, उतना ही भगवान् से करो, तो मजा आ जाए और तुम्हारी जिंदगी बदल जाए। उनको यह बात चुभ गई। हमको और आपको चुभती है क्या? नहीं चुभती। हमारी औरतें सौ गालियाँ देती रहती हैं और फिर हम ऐसे ही हाथ-मुँह धोकर के आ बैठते हैं। वह फिर गाली सुनाती है और गुस्सा होकर के चले जाते हैं और कहते हैं कि फिर तेरे घर नहीं आएँगे और बस वह जाता है और दुकान पर बैठा बीड़ी पीता रहता है। शाम को घूम-फिरकर फिर आ जाता है। क्यों फिर आ गए? आ गए, क्योंकि उसके अंदर वह चीज नहीं है, जिसे जिंदगी कहते हैं।

जिंदगी वाले इंसान—महामानव

मित्रो! जिंदगी की बड़ी कीमत है। जिंदगी लाखों रुपये की कीमत की है, करोड़ों रुपये की है, अरबों-खरबों रुपये की कीमत की है। तुलसीदास भी जिंदगी वाला इंसान था।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वासना के लिए जब व्याकुल हुआ तो ऐसा हुआ कि बस हैरान-ही-हैरान, परेशान-ही -परेशान और जब भगवान् की भक्ति में लगा, तो हमारी और आपकी जैसी भक्ति नहीं थी उसकी कि माला फिर रही है इधर और मन फिर रहा है उधर। मनके फिर रहे हैं इधर और सिर खुजा रहे हैं उधर। भजन कर रहे हैं इधर और पीठ खुजा रहे हैं उधर। भला ऐसी कोई भक्ति होती है ? तुलसीदास ने भक्ति की तो कैसी मजेदार भक्ति की कि बस पीपल के पेड़ पर से, बेल के पेड़ पर से कौन आ गया ? भूत आ गया। उन्होंने कहा कि हमको भगवान् के दर्शन करा दो। उस भूत ने कहा कि भगवान् के तो नहीं करा सकते, हनुमान् जी के करा सकते हैं। अच्छा! चलो हनुमान् जी के ही करा दो।

हनुमान् जी वहाँ रामायण सुनने जाते थे। उसने उनके दर्शन करा दिए। तुलसीदास ने हनुमान् जी को पकड़ लिया और कहा कि हमको रामचंद्र जी के दर्शन करा दीजिए। आपने पढ़ा है न तुलसीदास जी का जीवन। उन्होंने क्या किया कि रामचंद्र जी, जिनका कि वे नाम लिया करते थे, उन रामचंद्र जी को पकड़कर ही छोड़ा। उन्होंने कहा कि रामचंद्र जी का भी ठिकाना नहीं है और मेरा भी ठिकाना नहीं है। दोनों को एक होना होगा या तो मैं रहूँगा या रामचंद्र जी रहेंगे ? या तो हनुमान् जी रहेंगे या रामचंद्र जी रहेंगे ? मैं तो लेकर के हटूँगा। भला ऐसे कैसे हो सकता है कि मैं हनुमान् चालीसा पढ़ूँगा और हनुमान् जी भाग जाएँ और पकड़ में नहीं आएँ ? पकड़ में कैसे नहीं आएँगे ? हनुमान् को पकड़ में जरूर आना पड़ेगा। हनुमान् जी पकड़ में जरूर आ गए। हनुमान् जी पकड़ में नहीं आए, हनुमान् जी के ताऊ रामचंद्र जी भी पकड़ में आ गए। दोनों को पकड़ लिया उसने। किसने पकड़ लिया ? तुलसीदास ने। हम और आप पकड़ सकते हैं क्या ? हम और आप नहीं पकड़ सकते। भूत तो पकड़ सकते हैं ? नहीं पकड़ सकते। हनुमान् जी को पकड़ लेंगे ? नहीं हनुमान् जी भी पकड़ में नहीं आएँगे और रामचंद्र जी तो भला कैसे पकड़ में आ सकते हैं ? वे भी नहीं आएँगे।

दिशा जो बदली, तो गजब हो गया

मित्रो! क्या वजह है इसकी ? हम में और तुलसीदास जी में क्या अंतर है ? एक अंतर है। नाक, आँख, कान, दाँत और हाथ-पाँव सब बराबर हैं, पर एक चीज जो उनके अंदर थी, वह हमारे अंदर नहीं है। वह चीज है, जिसे मैं जिंदगी कहता हूँ, जिसको मैं प्रतिभा कहता हूँ, जिसको मैं विभूति कहता हूँ, जिसको मैं लगन कहता हूँ, तन्मयता कहता हूँ, जीवट कहता हूँ। वह जीवट मित्रो! जहाँ कहीं भी होगा, तो वह बड़ा शानदार काम कर रहा होगा और गलत दिशा पकड़ने पर गलत काम भी कर रहा होगा।

अंगुलिमाल पहले नंबर का डाकू था। उसने ये कसम खाई थी कि फोकट में किसी का पैसा नहीं लूँगा। उँगलियाँ काट-काटकर उसकी माला बनाकर वह देवी को रोज चढ़ाया करता था। अगर कोई कहता कि अरे भाई! पैसे ले ले, पर उँगली क्यों काटता है हमारी ? वह कहता, वाह! फोकट में, दान में नहीं लेता हूँ। पहले तेरी उँगली काटूँगा, तो मेरी मेहनत हो जाएगी। फिर उस मेहनत का पैसा ले लूँगा। ऐसे मुफ्त में कैसे ले लूँगा किसी का पैसा ? इस तरह वह रोज एक साथ उँगलियाँ काट-काटकर उसकी माला देवी को पहनाया करता था ? कौन ? खूंख्वार अंगुलिमाल डाकू, लेकिन जब उसने पलटा खाया, तो कैसा जबरदस्त पलटा खाया, आपको मालूम है न ? अंगुलिमाल जब तक डाकू था तो पहले नंबर का और जब संत हो गया तो उसने हिंदुस्तान से आगे जाकर के सारे-के-सारे विदेशों में, मिडिल ईस्ट में वो काम किए कि बस, तहलका मचा दिया। वह जहाँ कहीं भी गया, अपने प्रभाव से दुनिया को बदलता हुआ चला गया।

मित्रो! क्षमताएँ जिनके अंदर हैं, प्रतिभाएँ जिनके अंदर हैं, वह कहीं-से-कहीं जा पहुँचता है। आम्रपाली जब तक वेश्या रही तो पहले नंबर की रही। राजकुमार, राजाओं से लेकर सेठ-साहूकार तक उसकी एक निगाह के लिए, उसकी एक चितवन और एक इशारे के लिए ढेरों रुपया खरच कर डालते थे और उसके गुलाम हो जाया करते थे, लेकिन जब आम्रपाली अपनी करोड़ों की संपत्ति को लेकर भगवान् बुद्ध की ओर चली गई, तो न जाने क्या-से-क्या हो गई और सम्राट् अशोक जो था, ऐसा खूनी था कि उसने खानदान-के-खानदान समाप्त कर दिए थे। सभी शाही खानदानों को एक ओर से उसने मरवा डाला था। मुसलमानों ने तो एक-आध को मारा था, लेकिन उसने तो किसी को जिंदा ही नहीं छोड़ा। ऐसा खूनी था अशोक। उसने चंगेज खाँ, नादिरशाह और औरंगजेब, सबको एक किनारे रख दिया था। जहाँ कहीं भी हमले किए, वहाँ खून की नदियाँ ही बहाता चला गया।

लेकिन मित्रो! जब उसने पलटा खाया और जब अपने आप में परिवर्तन कर डाला, तो फिर वह कौन हो गया ? सम्राट् अशोक हो गया, जिसने बौद्ध संघ और बौद्ध धर्म का सारे-का-सारा संचालन किया। आज जो हमारे झंडे के ऊपर और हमारे सिक्कों-नोटों के ऊपर तीन शेर वाला निशान बना हुआ है, वह सम्राट् अशोक की निशानी है। और जो हमारे राष्ट्रीय ध्वज पर चौबीस धुरी वाला और चौबीस पंखुड़ी वाला चक्र लगा हुआ है, यह क्या है ? यह सम्राट् अशोक के द्वारा पारित किया और प्रतिपादित किया हुआ धर्मचक्र प्रवर्तन है, जिसको हमने राष्ट्रीय झंडे के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ऊपर स्थान दिया हुआ है। ये किसकी हिम्मत, किसकी दिलेरी थी, किसकी बहादुरी थी? उसकी थी जो डाकू था और खूँख्वार था।

जीवंत बनाम मुरदे

मित्रो! भगवान् जहाँ कहीं भी अपना अंश देता है, विभूति देता है, उसके अंदर चमक होती है, लगन होती है, उसके अंदर तड़प होती है और मुरदे? मुरदे हमारे और आपके जैसे होते हैं। साँस लिया करते हैं। भगवान् की जब पूजा करते हैं, तो भी ऐसे-ऐसे सिर हिलाते रहते हैं और साँस लेते रहते हैं। सेवा करने जाते हैं, तो वहाँ भी निठल्ले की तरह पड़े रहते हैं। सत्संग करने, शिविर करने आते हैं, तो यहाँ भी मौसी जी-मौसा जी की याद सताती है।

मित्रो! ये क्या होता है? ये मैं किसकी कहानियाँ सुना रहा हूँ? मुरदे की। जिंदा आदमियों की भी कह रहा हूँ। आपके जिम्मे मैं एक काम सुपुर्द कर रहा हूँ कि जहाँ भी आपको जिंदा आदमी मालूम पड़े, जिंदादिल आदमी मालूम पड़े, आप उनके पास जाना। आप उनको मेरा संदेश लेकर के जाना और खुशामद करने के लिए जाना और यह कहना कि भगवान् ने जो विशेषताएँ आपके अंदर दी हैं, आपके अंदर जो प्रतिभा है, जो क्षमता है और जो आपके अंदर विशेषता है, उसके लिए भगवान् ने निमंत्रण दिया है, समय ने निमंत्रण दिया है। युग ने निमंत्रण दिया है, पीड़ित मानवता ने निमंत्रण दिया है और निमंत्रण दिया है मनुष्य जाति के गिरते हुए भविष्य ने और यह कहा है कि पेट भरने के लिए आपको जिंदा रहना काफी नहीं है। पेट तो मक्खी-मच्छर भी भर लेते हैं, कीड़े-मकोड़े और कुत्ते भी भर लेते हैं। किसी ने जलेबी खा ली तो क्या और मक्का की रोटी खा ली तो क्या? खाने के लिए आदमी को पैदा नहीं किया गया है। औलाद पैदा करने के लिए आदमी को पैदा नहीं किया गया है। खाने के लिए और औलाद पैदा करने के लिए सुअर को पैदा किया गया है, जो एक-एक साल में बारह-बारह बच्चे पैदा कर देता है। गंदी-संदी चीजें खाकर के भी हट्टा-कट्टा होकर मोटा पड़ा रहता है। पेट भर गया, बस खर्राटे भरता रहता है। पेट भरने के लिए इंसान को पैदा नहीं किया गया है।

हमारे संदेशवाहक बनें

मित्रो! इंसान बड़े कामों के लिए पैदा किया है। इंसान की जिंदगी कई लाख योनियों में घूमने के बाद आती है। एकाएक कहाँ आ पाती है? इसलिए मित्रो! वहाँ हमारा संदेश लेकर के जाना, युग की पुकार लेकर के जाना। वक्त की पुकार लेकर के जाना और यह कहना कि आपको समय ने पुकारा है, युग ने पुकारा है, राष्ट्र ने पुकारा है, गुरु जी ने पुकारा है। अगर आप उनकी पुकार सुन सकते हों, अगर आपके कान हैं, अगर आपके अंदर दिल है, अगर आपके पास कान नहीं हैं, दिल नहीं है, तो हम क्या कह सकते हैं। फिर कौन आदमी सुनेगा? रामायण की कथा हम सुन लेते हैं और जैसे ही आते हैं, पल्ला झाड़ करके आ जाते हैं। भागवत की कथा हम सुनकर के आते हैं, व्याख्यान हम सुन करके आते हैं और जैसे ही आते हैं, पल्ला झाड़ करके आते हैं। चिकने घड़े के तरीके से हमारे आपके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

मित्रो! आप वहाँ जाना और लोगों से यह कहना कि अगर कहीं आपके अंदर जिंदादिली हो, तो आपको समय की पुकार सुननी चाहिए और युग की पुकार सुननी चाहिए। समय की माँग को पूरा करना चाहिए और युग की माँग को पूरा करना चाहिए और महाकाल ने, भगवान् ने जहाँ आपको बुलाया है, वहाँ आपको चलना चाहिए। हनुमान् जी भगवान् की पुकार सुनकर चले गए थे, रीछ और बंदर चले गए थे, गिलहरी चली गई थी। आपके लिए क्या यह संभव नहीं है? क्या आप इस लोभ और मोह से, अपने वासना और तृष्णा के बंधनों को काटते हुए अंगद के तरीके से चलने के लिए तैयार हैं?

मित्रो! मैं आपको अंगद के तरीके से संदेशवाहक बनाकर के भेजता हूँ। मेरे गुरु ने मुझे संदेशवाहक बनाकर भेजा। हिंदुस्तान से बाहर कई बार अंगद की तरह से मैं केवल संदेशवाहक के रूप में गया हूँ। मैंने कोई व्याख्यान नहीं दिए और न संगठन किए। सारे-के-सारे देशों में, विदेशों में और न जाने कहाँ-से-कहाँ गया, लेकिन अपने गुरु का संदेश लेकर के गया। मैंने लोगों से कहा, देखो अपने को बदल दो। समय बदल रहा है। परिस्थितियाँ बदल रही हैं। धन किसी के पास रहने वाला नहीं है। अगले दिनों में, थोड़े दिनों में आप देखना कि धन किस तरीके से गायब हो जाता है। राजाओं के राज किस तरीके से चले गए, यह हमने और आपने देख लिया। आपने देखा कि थोड़े दिनों पहले जो लोग राजा कहलाते थे, सोने-चाँदी की तलवारें लेकर हाथी पर चला करते थे, आज वे किस तरीके से अपनी दोनों वक्त की रोटी का जुगाड़ कर रहे हैं।

साथियो! जहाँ कहीं भी जाएँगे, वहाँ आप लोगों से कहना कि समय बहुत जबरदस्त है। समय सबसे बड़ा है। धन बड़ा नहीं है। जहाँ कहीं भी विभूतियाँ आपको दिखाई पड़ती हों, वहाँ आप हमारे संदेशवाहक के रूप में जाना, जैसे कि हमारे गुरु जी ने सारी दुनिया के जबरदस्त आदमियों के पास और भावनाशील आदमियों के पास हमको संदेश दे करके भेजा।

(क्रमशः आगामी अंक में जारी)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

जीवंत विभूतियों से भावभरी अपेक्षाएँ (२)

(समापन किश्त)

मित्रो! आपको समय से पहले बदल जाना चाहिए, नहीं तो आपको पश्चात्ताप ज्यादा करना पड़ेगा। जब कोई डाकू चीजें छीन ले जाता है, तो आदमी को ज्यादा अफसोस होता है, लेकिन अगर अपने हाथों से किसी भिखारी को दे देता है, स्कूल की इमारत बनाने के लिए दे देता है, तो उसको संतोष होता है। पैसा तो चला गया न, चाहे वह डाकू ले गया हो तो भी और चाहे स्कूल बनाने के लिए दे दिया तो भी। लेकिन अपने हाथ से देने पर संतोष रहता है। अत: आपको लोगों से यह कहने के लिए जाना है कि अब युग बदल रहा है, समय बदल रहा है, युग की धाराएँ बदल रही हैं। धन के बारे में मूल्यांकन बदल रहा है। धन लोगों के पास रहने वाला नहीं है। धन बहुत तेजी के साथ चला जाने वाला है। आप देख नहीं रहे हैं क्या? गवर्नमेंट क्या-क्या कर रही है? मृत्यु टैक्स लगा रही है। संपत्ति टैक्स लगा रही है और दूसरे टैक्स लगा रही है। अब अगले दिनों जो गवर्नमेंट आने वाली है, अगले दिनों जो समय आने वाला है, उसमें रशिया वाला कानून लागू हो जाएगा, चाइना वाला कानून लागू हो जाएगा। हमको और आपको बस हाथ-पाँव से मेहनत करनी पड़ेगी, परिश्रम करना पड़ेगा और उस मेहनत के बदले में जो खुराक हमको मिलनी चाहिए, जो रोटी मिलनी चाहिए, वह मिल जाएगी। खुराक की सारी-की-सारी चीजें मिल जाएँगी।

वक्त रहते बदलें

साथियो! लोगों से कहना कि आपको भगवान् ने जो विभूतियाँ दी हैं, क्षमताएँ दी हैं, उसका सवाब आप उठा सकते हैं, लाभ उठा सकते हैं, जीवात्मा को शांति दे सकते हैं। जीवात्मा की शांति के लिए, पुण्य के लिए अपने आपको तैयार कर लेना चाहिए, ताकि आपका अंत:करण शांति में रहे और समाज को भी आपके बदले का अनुदान मिले और हमारा सिर भी गर्व से ऊँचा उठ जाए। समय से पहले हम अंगद के तरीके से इसीलिए आपके पास आए हैं, ताकि यह बता सकें कि आपको वक्त रहते बदल जाना चाहिए और लाभ उठा लेना चाहिए।

इसलिए मित्रो! जहाँ कहीं भी क्षमताएँ दिखाई पड़ें, प्रतिभाएँ दिखाई पड़ें, वहाँ आप हमारे संदेशवाहक के रूप में जाना और खासतौर से उनसे प्रार्थना करना, अनुरोध करना। पूर्व में मैंने विभूतिवानों को संबोधित किया था और उनका आह्वान किया था कि आपकी जरूरत है। भगवान् ने आपको विशेषताएँ दी हैं, उसकी उसे जरूरत है। लड़ाई, युद्ध का जब वक्त आता है तो नौजवानों की भरती कंपलसरी कर दी जाती है और जो लोग बुड्ढे होते हैं, उनको छोड़ दिया जाता है। कंपलसरी लड़ाई में सभी नौजवानों को, चौड़े सीने वालों को पकड़ लिया जाता है और फौज में भरती कर दिया जाता है। कब? जब देश पर दुश्मन का हमला होता है। मित्रो! उनसे जो नौजवान हैं, प्रतिभावान् हैं, विभूतिवान् हैं, उनसे मेरा संदेश कहना। लेकिन जो आदमी मानसिक दृष्टि से बुड्ढे हो गए हैं, वे जवान हों तो क्या, सफेद बाल वाले बुड्ढे हों तो क्या, हमको उनकी जरूरत नहीं है। क्यों? क्योंकि वे मौत के शिकार हैं। वे इसी के लिए हैं कि जब मौत को चारे की जरूरत पड़े, तो वे उसकी खुराक का काम करें।

बूढ़ा कौन? कौन जवान?

मित्रो! बुड्ढा आदमी कौन? क्या वह जिसके बाल सफेद हो गए हैं? सफेद बालों वाला बुड्ढा होता है कहीं, वह जवान होता है। इंग्लैंड का प्रधानमंत्री जिसका नाम चर्चिल था, अस्सी वर्ष का हो गया था और उसकी कमर में दरद रहता था। इंग्लैंड के लोगों ने कहा कि हम अपनी हुकूमत और अपने राष्ट्र की जिम्मेदारी इस आदमी के हाथ में सुपुर्द करेंगे, और वो चर्चिल जो था, जब दिन-रात जर्मनी वाले इंग्लैंड के ऊपर बम बरसा रहे थे, तब सारी-की-सारी सत्ता का केंद्र वही एक आदमी था। बड़ा जबरदस्त आदमी, नौजवान आदमी था। कितने वर्ष का था, अस्सी वर्ष का, जो सारे-के-सारे लोगों से कह रहा था, इंग्लैंड के लोगो! घबराने की जरूरत नहीं है। भगवान् हमारा सहायक है और हम ऊँचा उठेंगे, आगे बढ़ेंगे और हम फतह करके रहेंगे। हर आदमी के अंदर उसने जिंदगी पैदा की और जोश पैदा किया। वो कौन आदमी था? जवान आदमी था।

और विनोबा कौन हैं मित्रो! जवान आदमी। और गाँधी जी अस्सी वर्ष के करीब पहुँच गए थे। वो कौन थे? जवान आदमी। जवाहरलाल नेहरू चौहत्तर-पिचहत्तर वर्ष के थे, जब उनकी मृत्यु हुई। तब वे कौन थे? जवान आदमी और राजगोपालाचार्य? राजगोपालाचार्य की जब मृत्यु हुई थी, तो वे अस्सी वर्ष को भी पार कर गए थे। वे कौन थे? जवान आदमी, और हम और आप? हम और आप बड़ढे आदमी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं, जर्जर आदमी हैं, टूटे हुए और लकवा के मारे हुए आदमी हैं। कंगाली के मारे हुए, दरद के मारे हुए, दुर्भाग्य के मारे हुए और हम सब देवताओं के मारे हुए आदमी हैं। हमारी नसें और हड्डियाँ गल गई हैं। हमारा मन सड़ गया है और हमारी भावनाएँ सो गई हैं। हमारा जीवन समाप्त हो गया है। हम लुहार की धौंकनी के तरीके से साँस जरूर लिया करते हैं। हमारी साँस चलती तो है, पर बहुत धीरे-धीरे चलती है। हम कौन हैं? हम मुरदा आदमी हैं। हम मर गए हैं। हमारे अंदर कोई जीवट नहीं है, कोई जिंदगी नहीं है। हमारे अंदर कोई लक्ष्य नहीं है, कोई दिशा नहीं है। हमारे अंदर कोई तड़प नहीं है, कोई कसक नहीं है और हमारे अंदर कोई जोश नहीं है। हमारा खून ठंढा हो गया है।

साथियो! जिनका खून ठंढा हो गया है, उनको मैं क्या कहूँगा? उनको मैं बूढ़ा आदमी कहूँगा। पच्चीस वर्ष का हो तो क्या, अट्ठाइस वर्ष का हो तो क्या, बत्तीस वर्ष का हो तो क्या? वह बूढ़ा आदमी है और मौत का शिकार है। उसके सामने जिंदगी का कोई लक्ष्य नहीं है, उसके सामने कोई चमक नहीं है। जिसके सामने कोई चमक नहीं है। जिसके सामने कोई उम्मीद नहीं है, जिसकी हिम्मत समाप्त हो गई, जो आदमी निराश हो गया। जिसकी आँखों में निराशा और मायूसी छाई हुई है, वह बूढ़ा आदमी है। मित्रो! इन बूढ़े आदमियों का हम क्या करेंगे? इनसे हम क्या उम्मीद कर सकते हैं कि वे स्वयं के लिए क्या काम कर सकते हैं और भगवान् के लिए क्या कर सकते हैं और समाज के लिए क्या कर सकते हैं? यह देखकर हम उनसे ना उम्मीद हो जाते हैं। हम उनसे ज्यादा-से-ज्यादा यही उम्मीद रखेंगे कि हमारा जब हवन होगा, तो उन्हें उम्मीद दिलाएँगे कि आपके बेटा-बेटी हो जाएँगे। उनके लिए बस सब से बड़ा एक ही काम है कि बेटा-बेटी हो जाएँ। पैसा हो जाए।

मृतकों से क्या अपेक्षा?

मित्रो! सारे-के-सारे ये वो लोग हैं जो मर गए हैं, जो सड़ गए हैं। लोभ के अलावा, लालच के अलावा, ख्वाहिशों के अलावा, तमन्नाओं के अलावा इनके पास कुछ नहीं है। जो आदमी खाली हो गए हैं और जो ढोल के तरीके से पोले हैं, उनका हम क्या करेंगे? इनके लिए हम कुछ नहीं करेंगे और न इनसे समाज के लिए, भगवान् के लिए ही कुछ उम्मीद रखेंगे। किसी के लिए भी इनसे उम्मीद नहीं रखेंगे। इनको हम छोड़ देंगे।

मित्रो! हमारा मिशन जो इंसान में भगवान् का अवतरण करने के लिए और जमीन पर स्वर्ग की धाराओं को बहाने के लिए बोया और खड़ा किया गया है, उसके लिए हमें जिंदा आदमियों की जरूरत है। जिंदा आदमी ही इस मिशन को आगे लेकर चलेंगे। मुरदा आदमी ज्यादा से ज्यादा माला घुमा देंगे। एक हनुमान जी की घुमा देंगे, एक लक्ष्मी जी की घुमा देंगे, एक गणेश जी की घुमा देंगे, एक गुरुजी की घुमा देंगे, एक युग-निर्माण की घुमा देंगे और एक अपने बेटे की घुमा देंगे और एक अपने मोहल्ले वाले की घुमा देंगे और कहेंगे कि गुरुजी मैं रोज नौ माला जपता हूँ। उसमें एक आपके लिए जपता हूँ और एक लक्ष्मी जी के लिए। वाह, बेटे! लक्ष्मी जी भूखी बैठी थी और भगवान् जी को तीन दिन से नाश्ता नहीं मिला था। तूने एक माला जपी थी, बस उससे भगवान् जी का कलेऊ हो जाएगा और उनको रोटी मिल जाएगी। अहा! ये हैं असली भगत और असली जादूगर। सारे जादू के पिटारे ये अपने माला में भरे हुए बैठे हैं।

मित्रो! इनसे हमारा काम चलेगा? इनसे हमारा काम नहीं चलेगा। जो व्यक्ति हर काम के लिए माला को ही काफी समझते हैं, उनसे हमारा काम नहीं चलेगा। जब कभी इनको जुंग आती है, छटपटाहट आती है, तो खट माला पकड़ लेते हैं और कहते हैं कि इस पर माला को चलाऊँगा, उस पर माला को चलाऊँगा। इस तरह वे तरह-तरह की चर्खियाँ चला देते हैं। जिस तरह बंदूक में तरह-तरह के कारतूस चढ़ा देते हैं, उसी तरह वे माला के ऊपर किसका कारतूस चढ़ा देते हैं? मंत्र का। इस माला पर महामृत्युंजय मंत्र का कारतूस दनादन चढ़ा दिया, जो खट्-खट् सब बीमारियों को मार डालता है और जब इसको लक्ष्मी जी की जरूरत पड़ती है तब? अहा! "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै बिच्चयै" मंत्र का दे दनादन दे दनादन जप, और वो आई देवी और ये आई चंडी और ये आया पैसा। बस इसके पास तो एक ही मशीनगन है। मरने दो इस अभागे को, इसके पास न कोई जिंदगी है, न कोई दिशा है, न कोई प्रेरणा है, न कोई लक्ष्य है और न इसके पास दिल है। ये अभागा तो केवल माला को लेकर ही दफन होने वाला है और माला को लेकर ही मरेगा।

जीवट वालों को तलाशिए

इसलिए मित्रो! इन लोगों से हमारा क्या बनने वाला है? क्या करेंगे हम इन मुरदा आदमियों का? इनसे हमारा कुछ काम नहीं बनेगा। हमको जीवट वाले आदमियों को तलाश करना पड़ेगा। अतः आपको जहाँ कहीं भी जीवट वाले आदमी मिलें, आप वहाँ जाना। हमारा संदेश लेकर के जाना और कहना कि हम आपकी तलाश करते रहे हैं। हम इसलिए तलाश करते रहे हैं कि हमारा ये ख्याल था, भगवान् जाने सही था या गलत था कि आपके अंदर जीवट नाम की कोई चीज है। इस जन्म की नहीं, तो पहले जन्म की है। कभी भी हमारी इन आँखों ने चमक में धोखा नहीं खाया है। आपके बारे में हमने अपने मन में यह ख्याल बना करके रखा था कि आप जिंदा इंसानों में से हैं और आपके अंदर दरद नाम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की कोई चीज है। आपके अंदर विवेक नाम की कोई चीज है और आपके अंदर तड़प नाम की कोई चीज है। अगर हमको ये चीजें न मालूम पड़ें, तो फिर मुरदे आदमियों को ढोने में क्या आनंद आता है? लाशों को ढो-ढोकर हम कहाँ डालेंगे? सड़े हुए बदबूदार आदमियों को हम कहाँ कंधे पर लिए फिरेंगे? मित्रो! इनको हम बैकुंठ का रास्ता कैसे दिखा देंगे? इनको हम स्वर्ग की कहानी कैसे कह देंगे? भगवान् से मिलने की बात हम कैसे कह देंगे?

मित्रो! हम सड़े हुए मनुष्यों और मरे हुए मनुष्यों की मनोकामना पूर्ण करने की जिम्मेदारी कैसे उठा लेंगे? हमारे लिए यह बिलकुल असंभव था, नामुमकिन था। हमारा एक ही ख्याल था कि आप लोग जिंदा आदमी हैं। अगर आप वास्तव में जिंदा आदमी हैं, तो यहाँ से जाने के बाद जिंदा आदमियों के तरीके से अपनी जिंदगी जीना। विवेकशील लोगों के तरीके से जीना, विचारशील और भावनाशील लोगों के तरीके से जीना, दिलवाले आदमियों के तरीके से जीना। अगर आप इस तरह से जिएँ, तो फिर तलाश करना और यदि कहीं कोई जिंदा आदमी दिखाई पड़े, तो आप उसके आस-पास चक्कर काटना। आप इस तरीके से चक्कर काटना जिस तरीके से भौंरा खिले हुए फूलों के पास चक्कर काटता है। खिले हुए फूल के आस-पास तितलियाँ और मधुमक्खियाँ चक्कर काटती हैं, जैसे हम बराबर आपके पास चक्कर काटते रहते हैं।

साथियो! हमको मालूम पड़ा कि शायद आप खिले हुए फूल हैं, तो हम भी रामकृष्ण परमहंस के तरीके से आपके पास आए हैं, जिस तरीके से वे विवेकानंद के पीछे लगे थे और शिवाजी के पीछे जिस तरीके से रामदास लगे थे। हम भी आपके पीछे उसी तरीके से लगे रहे हैं, जिस तरीके से चाणक्य चंद्रगुप्त के पीछे लगे रहे थे। अगर गलती हो गई हो तो माफ करना, क्योंकि हमने समझा यही है। आप यह मत सोचना कि गुरुजी जो अपना पुण्य हिमालय पर से लेकर के आए हैं, वह हमको मालदार बनाने के लिए और संपत्ति देने के लिए हमारे पीछे लगे हुए हैं। हमको औलाद वाला बनाने के लिए, बेटा-बेटी देने के लिए पीछे लगे हुए हैं। हम इसके लिए नहीं लगे हुए हैं।

संपत्ति नहीं विभूति माँगें

मित्रो! हमारे गुरु ने और हमारे पिता ने हमको लक्ष्मी नहीं दी है, औलाद नहीं दी है, लेकिन जो चीजें हमको दी हैं, वे लक्ष्मी जी से लाख गुनी और करोड़ गुनी ज्यादा हैं। हमारी निगाह में भी और हमारी उम्मीदों में भी यही चीज जमी हुई है कि आपको कोई चीज हम दें, तो कम-से-कम ऐसी चीज दें, जिससे कि आप भी जन्म-जन्मांतरों तक याद करते रहें कि हमको कोई चीज मिली थी और कोई चीज हमको दी गई थी। अगर आपके पास जिंदादिली हो और आपके पास रखने की चीजें हों, तब। रखने की चीजें न होंगी तब फिर बड़ा मुश्किल है। फिर स्वाति की बूँदें बरसती चली जाएँगी और वो अभागी सीप है जिसने अपना मुँह नहीं खोला। मुँह बंद करके पड़ी रही। फिर उसके लिए ये संभव नहीं है, मुमकिन नहीं है कि स्वाति की बूँदें बरसती चली जाएँ और उसके अंदर मोती पैदा हो जाए। ऐसी स्थिति में मोती पैदा नहीं हो सकते।

एक बार अमृत की वर्षा हुई। सारे मरे हुए आदमी जिंदा हो गए। केवल एक आदमी जिंदा नहीं हुआ। लोगों ने पूछा, क्या वजह है? वह आदमी क्यों नहीं जिंदा हुआ? जानने पर यह मालूम हुआ कि वह आदमी अपना मुँह जमीन में गाड़े हुए था और पीठ ऊपर किए हुए था। लोगों ने कहा, अच्छा तो यह वजह है कि जो मुरदे मुँह खोले हुए थे, नाक ऊपर किए हुए पड़े थे। उनमें से अमृत की बूँदें किसी की नाक में पड़ गईं, किसी के मुँह में पड़ गईं और वे सब जिंदा हो गए। लेकिन जिसने अपना मुँह पलट कर के रखा था, जमीन में गाड़कर रखा था, उसकी नाक में भी अमृत की बूँदें नहीं जा सकीं और मुँह में भी नहीं जा सकीं। इसलिए वह जिंदा नहीं हो सका। बेशक वो आदमी जिंदा नहीं हो सकते, चाहे उनका गुरु कोई भी क्यों न हो। गुरुजी! आप अपने गुरुजी के दर्शन करा दीजिए। हम दर्शन क्यों करा दें? हमारे गुरुजी का दर्शन करके तेरा कोई फायदा नहीं हो सकता। कैसे नहीं होगा? बेटे! वो जिंदगी कहाँ है? वो सीप कहाँ है, जहाँ कि अमृत की बूँदें पड़ा करती हैं और जिंदगी पैदा हो जाती है।

मित्रो! हमारे पास अपनी विशेषताएँ होनी चाहिए। अपनी विशेषताएँ नहीं होंगी तो बाहर के आदमी, दूसरे आदमी कोई सहायता नहीं कर सकते। आज तक बाहर वाले आदमियों ने किसी की सहायता नहीं की है। केवल अपना हृदय और अपना मन आगे बढ़ा है, तब दूसरों ने सहायता की है। आदिकाल से यही सिद्धांत था और आगे भी यही रहेगा। इसलिए हम आपको विदा करते वक्त उन लोगों के पास भेजना चाहेंगे, जिनके अंदर विशेषता मालूम पड़ती है और चमक मालूम पड़ती है। आप उन सब नौजवानों को निमंत्रण देने जाना, आमंत्रण देने जाना, जिनके घर में बंदूकें हैं, भाले हैं। उनसे कहना कि गाँव जल रहे हैं, गाँव में डकैतियाँ हो रही हैं और चूँकि आपके पास बंदूकें हैं, भाला है, इसलिए आप चलिए। चूँकि आपके पास जवानी है, इसलिए आप चलिए। चूँकि आपके पास अमुक चीजें हैं, इसलिए आप चलिए। जिन लोगों को आप साधन-संपन्न देखें, उन लोगों को आप निमंत्रण देना। जिनके पास बाल्टी है, उनको आप निमंत्रण देना। जिनके पास रस्सी है, उनको आप निमंत्रण देना। उनसे कहना कि बाल्टी खींचिए। गाँव जल रहा है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उसकी आग को बुझाइए। उनको निमंत्रण देने के लिए हम आपको भेजते हैं।

साथियो! ये दावत खाने का निमंत्रण नहीं है। गुरुजी से आशीर्वाद लेने का निमंत्रण नहीं है। मालदार होने का और बीमारियों को अच्छा करने का नहीं है। औलाद प्राप्त करने का नहीं है। आप ये निमंत्रण मत देना किसी को। ये तो बिना आपके निमंत्रण दिए खुद ही चले आते हैं और उन पर मुझको झल्लाना पड़ता है और ये रोज कहना पड़ता है कि बाबा ! यहाँ ठहरने की जगह नहीं है, चला जा। ये तो पहल भी आते रहे हैं और आते ही रहेंगे। उनको निमंत्रण देने की आपको जरूरत नहीं है। वे तो अपने आप बिना बुलाए आ जाएँगे और सब तरीके से आ जाएँगे।

प्रतिभाओं से है अपेक्षा

मित्रो! आप उन लोगों के पास जाना जिनके पास क्षमताएँ हैं, जिनके पास प्रतिभाएँ हैं, जिनके पास जीवन है, जिनके पास कसक है, जिनके पास विचार हैं। जिनके पास इस तरह की चीजें दिखाई पड़ें, वहाँ आप जाना और जा करके हमारा संदेश दे करके आना। जहाँ कहीं भी आपको विद्या दिखाई पड़े, जिस किसी के पास भी विद्या दिखाई पड़े कि उसके पास विद्या है, तो आप उन विद्यावानों के पास जाना और यह कहना कि आपकी विद्या की समाज को आवश्यकता है और युग को आवश्यकता है। विद्या पेट पालने के लिए नहीं होती है, पेट भरने के लिए नहीं होती है। विद्या का उद्देश्य भिन्न है। विद्या का उद्देश्य है, जो ज्ञान हमको मिला हुआ है, उससे हमको वकालत भी करनी पड़ें, तो उस विद्या के द्वारा लोगों के अज्ञान के निवारण के लिए खरच करना चाहिए। आपकी सारी-की-सारी विद्या धन के लिए, पैसे के लिए खरच नहीं होनी चाहिए। अगर आप पढ़े-लिखे आदमी हैं, जीवट वाले आदमी हैं, तो आपकी विद्या का लाभ उन लोगों को मिलना चाहिए, तो पढ़े-लिखे नहीं हैं, जो निरक्षर हैं।

मित्रो! आप पढ़े-लिखे हुए लोगों से कहना कि यदि आपका गुजारा हो जाता है, तो आपको 'नाइट स्कूल' रात्रि पाठशाला खोलनी चाहिए। बाहर विदेशों में लोग नाइट स्कूल चलाते हैं। सारे-के-सारे लोग पढाई उसी में करते हैं। वहाँ दिन भर आठ घंटे मेहनत-मजदूरी हर आदमी को करनी पड़ती है। छोटे बच्चों की बात जाने दीजिए, वे तो स्कूलों में चले जाते हैं। वे साढ़े नौ बजे चले जाते हैं और शाम को चार बजे आ जाते हैं, पर जिसको पेट पालना पड़ेगा, वो किस तरीके से स्कूल जा सकता है और जो बड़ा आदमी हो गया, जवान आदमी हो गया, वह कैसे जा सकता है? अत: हमको समाज में विद्या का विस्तार करना है। विद्या का ऋण-कर्ज हमारे ऊपर है। इसे चुकाने के लिए हमको दूसरों को विद्यावान् बनाना चाहिए। शिक्षित बनाना चाहिए, ज्ञानवान् बनाना चाहिए, इसके लिए हममें से और आप में से हर आदमी को समाज का ऋण चुकाने के लिए वो काम करना चाहिए, जो कल मैंने आपको बताए थे और आपको बताता रहा हूँ। योरोप के तरीके से हमारे यहाँ भी रात्रि के विद्यालय चलने चाहिए, जहाँ मजदूर, धोबी आदि शाम के वक्त अपने काम से छुट्टी पाने के बाद चले जाते हैं और पढ़ाई करते हैं और जिंदगी के आखिरी वक्त तक एम. ए. हो जाते हैं, पी-एच. डी. हो जाते हैं और डी. लिट् हो जाते हैं। जिंदगी के आखिरी-से-आखिरी वक्त तक जो समय उनको पढ़ने को मिल जाता है, वे उसे पढ़ाई में लगा देते हैं।

मित्रो! हमारे देश में सिनेमाघरों में भीड़ बहुत है। हमारे समाज में गप्पें हाँकने के लिए भीड़ बहुत है, जुआघर में भीड़ बहुत, शराबखानों में भीड़ बहुत होती है, लेकिन आपको उस तरह की भीड़ कहीं भी नहीं दिखाई पड़ेगी कि अपने जातीय संगठन के नाम पर, अपने शिक्षित समुदाय के नाम पर इकट्ठे होकर के हमने सायंकाल के वक्त 'रात्रि पाठशालाओं' को चलाया हो। इन रात्रि पाठशालाओं में असंख्य महत्त्वपूर्ण बातें पढ़ाई जा सकती हैं। मैं यह तो नहीं कहता कि हरेक आदमी को बी. ई. पढ़ाना चाहिए, लेकिन जीवन जीने की कितनी समस्याएँ हैं, उनको हल करने के लिए विद्यावानों को आगे आना चाहिए।

स्वास्थ्य की शिक्षा अभी प्रारंभ नहीं हुई है। हम और आप वकील हों तो मुबारक, विद्वान् हों तो मुबारक, लेकिन आपको नहीं मालूम कि पेट खराब क्यों हो गया? और पेट को खराब होने से बचाने के लिए क्या तरीका होना चाहिए। क्या आपके पास इसके लिए कोई स्कूल है? दवाखाने वाले तो वो चीज हैं कि जहाँ कहीं भी जाइए, हर चीज का इंजेक्शन लगा देंगे। उन्हें ये मालूम नहीं है कि वजह क्या है और किसकी वजह से सेहत खराब कर रहा है? जबकि खान-पान की वजह से सेहत खराब कर रहा है! उन सेहत खराब करने वाली खुराक और आदतों को जब तक ये हेर-फेर नहीं करेगा, तब तक उसकी सेहत कभी भी अच्छी नहीं हो सकेगी, चाहे वह रोज एक-एक दिन में बीस इंजेक्शन लगवाता चला जाए। व्यक्ति इंजेक्शन से कदापि अच्छा नहीं हो सकता। सेहत को अच्छा करने के लिए शिक्षण की आवश्यकता है।

शिक्षण प्रक्रिया नई जन्म ले

मित्रो! हमको शिक्षण की प्रक्रिया राष्ट्र में पैदा करनी पड़ेगी। विद्या हमारे देश में नहीं है। साक्षरता हमारे देश में नहीं है। उसको बढ़ाने के लिए हमको नाइट स्कूलों की जरूरत पड़ेगी। विद्या के लिए घनघोर आंदोलन खड़ा करना पड़ेगा और इस आंदोलन के लिए हम नौकर नहीं रख सकते, कर्मचारी नहीं रख सकते और वेतन-भोगी नहीं रख सकते।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गवर्नमेंट ने इस तरह के वेतन-भोगी रख लिए हैं और आप देखिए क्या हाल हो रहा है? हर डिपार्टमेंट को बढ़ा-बढ़ाकर इतना लंबा-चौड़ा कर लिया है कि अगर इतना पैसा इन डिपार्टमेंट में नहीं लगाया गया होता, तो उस बचत से शिक्षण-प्रशिक्षण की समस्या सुलझ गई होती।

मित्रो! हमको जो काम करना पड़ेगा, उन क्षमता वालों के आधार पर और प्रतिभा वालों के आधार पर करना पड़ेगा। अपना यह मिशन कितना जबरदस्त मिशन है। इसको आगे बढ़ाने के लिए हमको उन आदमियों के पास जाना पड़ेगा, जिनके पास विचारशीलता भी विद्यमान है और क्षमता भी विद्यमान है। विचारशीलता नहीं है और क्षमता है, तो हमको यह कोशिश करनी पड़ेगी कि अपने मिशन की विचारधारा को, मिशन की पुस्तिकाओं को, मिशन के ट्रैक्टों को उनको बार-बार सुनाएँ और किसी प्रकार से इस तरीके से लाएँ कि वे हमारी विचारधारा के संपर्क में आएँ। अगर कोई आदमी हमारी विचारधारा के संपर्क में आ गया, तो यह बड़ी जलती हुई विचारधारा है, यह बड़ी तीखी और प्रखर विचारधारा है। सौ फीसदी मरा हुआ आदमी हो, तब तो हम नहीं कह सकते, लेकिन कोई अगर जिंदा आदमी होगा, तो उसको एक बार तड़पड़ाए बिना, उसको एक बार हिलाए बिना नहीं रह सकती। माला वालों को तो यह शायद जगाएगी नहीं। माला वाले तो अखण्ड ज्योति का चंदा इसलिए भेज देते हैं कि गुरुजी नाराज हो जाएँगे और अगली बार मुकदमे में सहायता नहीं करेंगे। वे पत्रिका को पढ़ते थोड़े ही हैं, कोई नहीं पढ़ते, लेकिन जिन लोगों ने इन विचारों को पढ़ा है, वे आदमी काँपते हैं, हिलते हैं। उन आदमियों के अंदर एक स्पंदन पैदा होता है, फुरेरी पैदा होती है।

आप इन विचारों को लेकर सामान्य जनता तक जरूर जाना। लेकिन सामान्य जनता के अलावा कोई विशेष आदमी दिखाई पड़ते हों, जिनके अंदर आपको जीवट दिखाई पड़ती हो, प्रतिभा दिखाई पड़ती हो, उनके पास आप जरूर जाना। विद्यावानों के पास, प्रतिभावानों के पास, कलाकारों के पास जाना। जहाँ कहीं भी कलाकार दिखाई पड़ते हों, उनके पास आप जरूर जाना। उनसे कहना कि भगवान् ने आपको मीठा वाला गला दिया है, आपको गाने की कला आती है। आप इस गाने की कला के द्वारा जिस तरीके से कामुकता के गीत, अंध विश्वासों का समर्थन करने वाले गीत और भक्ति के नाम पर शृंगार रस के गीत गाया करते हैं। इनके स्थान पर कहीं आप चंदवरदायी के तरीके से समय को कँपाने वाले, भूषण के तरीके से समय को कँपाने वाले, युगों में जीवन भरने वाले गीत आप इसी गले के द्वारा गाने लगें, चौराहे-चौराहे पर खड़े होकर अलख जगाने लगें। गाँव-गाँव जाकर लोगों को इकट्ठा करके गीत की कला का उपयोग करने लगें, तो आपके यही गीत, आपका यही गला और गले की मिठास सैकड़ों-हजारों मनुष्यों के जीवन में हेर-फेर करने में समर्थ हो सकती है। मीरा का गला, मीरा की मिठास और मीरा का संगीत कितने आदमियों के जीवन में हेर-फेर करने में समर्थ हो गया। अतः हमको उस हर मीठे गले वाले व्यक्ति से कहना चाहिए, जिसको ये विशेषताएँ और विभूतियाँ भगवान् ने अमानत के रूप में विशेष रूप से दी हैं।

मित्रो! हमको उनके पास विशेष रूप से जाना चाहिए, जिन लोगों के पास कला है। जिन लोगों के पास लेखन की शक्ति है, जिन लोगों के पास विद्या की शक्ति है, जिन लोगों के पास बुद्धि की शक्ति है, उन लोगों के पास आप जरूर जाना। बीमारी के समय डॉक्टर के पास हमको जरूर जाना चाहिए, क्योंकि वह जानता है और उस काम को आसानी से पूरा कर सकता है। एक डॉक्टर हैजे का मुकाबला आसानी से कर सकता है, जबकि सौ गँवार मिलकर भी हैजे का मुकाबला नहीं कर सकते। इसलिए आप उनके पास चक्कर जरूर लगाना। उनकी खुशामद करने में अपमान महसूस मत करना। आप उनकी खुशामद करना, उनकी मिन्नतें करना, जिनके अंदर आपको जीवन मालूम पड़ता है और जीवट मालूम पड़ता है। अगर आपने खुशामद की है, मिन्नतें की हैं, तो आपने भीख माँगने के लिए नहीं की है, अपना पेट भरने के लिए नहीं की है। अपना उल्लू सीधा करने के लिए नहीं की है, वरन् समाज के लिए की है, देश के लिए की है, मानवता के लिए की है और मिशन के लिए की है।

मित्रो! आपको उन लोगों की खुशामद करनी चाहिए, जिनके पास बुद्धि है, क्षमता है, जिनके पास प्रभाव है, जिनके पास अक्ल है, जिनके पास कला है, जिनके पास जान है। जो आदमी कलम को पकड़ सकते हैं, जो आदमी अपनी विद्या से दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं। जिनके पास भगवान् ने वाणी दी है, जो बोल सकते हैं, जो व्याख्यान दे सकते हैं, उनको आप यह कहना कि आपको जो विशेषताएँ मिली हुई हैं, वह भगवान् की अमानत हैं। आपको इसको इस विशेष समय पर इस्तेमाल करना चाहिए। गवर्नमेंट के पास रिजर्व फोर्स, रिजर्व पुलिस होती है और वह विशेष समय के लिए रखी जाती है, ताकि जिस समय इसकी बेहद आवश्यकता हो, उस समय विशेष रूप से काम आए। आप उनसे यही कहना कि आप भगवान् के रिजर्व फोर्स के तरीके से हैं, तभी तो दूसरे सामान्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धि दी गई है, ज्यादा प्रभाव दिया गया है, ज्यादा प्रतिभा दी गई है और ज्यादा समझदारी दी गई है। यदि आप प्रतिभाओं को, विभूतियों को जगाकर राष्ट्र-निर्माण के लिए लगा सकें, तो इससे बड़ा पुण्य कोई नहीं। आज की बात समाप्त।

।।ॐ शांति।।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

जीवंत विभूतियों से भावभरी अपेक्षाएँ (२)

(समापन किश्त)

मित्रो! आपको समय से पहले बदल जाना चाहिए, नहीं तो आपको पश्चात्ताप ज्यादा करना पड़ेगा। जब कोई डाकू चीजें छीन ले जाता है, तो आदमी को ज्यादा अफसोस होता है, लेकिन अगर अपने हाथों से किसी भिखारी को दे देता है, स्कूल की इमारत बनाने के लिए दे देता है, तो उसको संतोष होता है। पैसा तो चला गया न, चाहे वह डाकू ले गया हो तो भी और चाहे स्कूल बनाने के लिए दे दिया तो भी। लेकिन अपने हाथ से देने पर संतोष रहता है। अत: आपको लोगों से यह कहने के लिए जाना है कि अब युग बदल रहा है, समय बदल रहा है, युग की धाराएँ बदल रही हैं। धन के बारे में मूल्यांकन बदल रहा है। धन लोगों के पास रहने वाला नहीं है। धन बहुत तेजी के साथ चला जाने वाला है। आप देख नहीं रहे हैं क्या? गवर्नमेंट क्या-क्या कर रही है? मृत्यु टैक्स लगा रही है। संपत्ति टैक्स लगा रही है और दूसरे टैक्स लगा रही है। अब अगले दिनों जो गवर्नमेंट आने वाली है, अगले दिनों जो समय आने वाला है, उसमें रशिया वाला कानून लागू हो जाएगा, चाइना वाला कानून लागू हो जाएगा। हमको और आपको बस हाथ-पाँव से मेहनत करनी पड़ेगी, परिश्रम करना पड़ेगा और उस मेहनत के बदले में जो खुराक हमको मिलनी चाहिए, जो रोटी मिलनी चाहिए, वह मिल जाएगी। खुराक की सारी-की-सारी चीजें मिल जाएँगी।

वक्त रहते बदलें

साथियो! लोगों से कहना कि आपको भगवान् ने जो विभूतियाँ दी हैं, क्षमताएँ दी हैं, उसका सवाब आप उठा सकते हैं, लाभ उठा सकते हैं, जीवात्मा को शांति दे सकते हैं। जीवात्मा की शांति के लिए, पुण्य के लिए अपने आपको तैयार कर लेना चाहिए, ताकि आपका अंत:करण शांति में रहे और समाज को भी आपके बदले का अनुदान मिले और हमारा सिर भी गर्व से ऊँचा उठ जाए। समय से पहले हम अंगद के तरीके से इसीलिए आपके पास आए हैं, ताकि यह बता सकें कि आपको वक्त रहते बदल जाना चाहिए और लाभ उठा लेना चाहिए।

इसलिए मित्रो! जहाँ कहीं भी क्षमताएँ दिखाई पड़ें, प्रतिभाएँ दिखाई पड़ें, वहाँ आप हमारे संदेशवाहक के रूप में जाना और खासतौर से उनसे प्रार्थना करना, अनुरोध करना। पूर्व में मैंने विभूतिवानों को संबोधित किया था और उनका आह्वान किया था कि आपकी जरूरत है। भगवान् ने आपको विशेषताएँ दी हैं, उसकी उसे जरूरत है। लड़ाई, युद्ध का जब वक्त आता है तो नौजवानों की भरती कंपलसरी कर दी जाती है और जो लोग बुड्ढे होते हैं, उनको छोड़ दिया जाता है। कंपलसरी लड़ाई में सभी नौजवानों को, चौड़े सीने वालों को पकड़ लिया जाता है और फौज में भरती कर दिया जाता है। कब? जब देश पर दुश्मन का हमला होता है। मित्रो! उनसे जो नौजवान हैं, प्रतिभावान् हैं, विभूतिवान् हैं, उनसे मेरा संदेश कहना। लेकिन जो आदमी मानसिक दृष्टि से बुड्ढे हो गए हैं, वे जवान हों तो क्या, सफेद बाल वाले बुड्ढे हों तो क्या, हमको उनकी जरूरत नहीं है। क्यों? क्योंकि वे मौत के शिकार हैं। वे इसी के लिए हैं कि जब मौत को चारे की जरूरत पड़े, तो वे उसकी खुराक का काम करें।

बूढ़ा कौन? कौन जवान?

मित्रो! बुड्ढा आदमी कौन? क्या वह जिसके बाल सफेद हो गए हैं? सफेद बालों वाला बुड्ढा होता है कहीं, वह जवान होता है। इंग्लैंड का प्रधानमंत्री जिसका नाम चर्चिल था, अस्सी वर्ष का हो गया था और उसकी कमर में दरद रहता था। इंग्लैंड के लोगों ने कहा कि हम अपनी हुकूमत और अपने राष्ट्र की जिम्मेदारी इस आदमी के हाथ में सुपुर्द करेंगे, और वो चर्चिल जो था, जब दिन-रात जर्मनी वाले इंग्लैंड के ऊपर बम बरसा रहे थे, तब सारी-की-सारी सत्ता का केंद्र वही एक आदमी था। बड़ा जबरदस्त आदमी, नौजवान आदमी था। कितने वर्ष का था, अस्सी वर्ष का, जो सारे-के-सारे लोगों से कह रहा था, इंग्लैंड के लोगो! घबराने की जरूरत नहीं है। भगवान् हमारा सहायक है और हम ऊँचा उठेंगे, आगे बढ़ेंगे और हम फतह करके रहेंगे। हर आदमी के अंदर उसने जिंदगी पैदा की और जोश पैदा किया। वो कौन आदमी था? जवान आदमी था।

और विनोबा कौन हैं मित्रो! जवान आदमी। और गाँधी जी अस्सी वर्ष के करीब पहुँच गए थे। वो कौन थे? जवान आदमी। जवाहरलाल नेहरू चौहत्तर-पिचहत्तर वर्ष के थे, जब उनकी मृत्यु हुई। तब वे कौन थे? जवान आदमी और राजगोपालाचार्य? राजगोपालाचार्य की जब मृत्यु हुई थी, तो वे अस्सी वर्ष को भी पार कर गए थे। वे कौन थे? जवान आदमी, और हम और आप? हम और आप बड़ढे आदमी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं, जर्जर आदमी हैं, टूटे हुए और लकवा के मारे हुए आदमी हैं। कंगाली के मारे हुए, दरद के मारे हुए, दुर्भाग्य के मारे हुए और हम सब देवताओं के मारे हुए आदमी हैं। हमारी नसें और हड्डियाँ गल गई हैं। हमारा मन सड़ गया है और हमारी भावनाएँ सो गई हैं। हमारा जीवन समाप्त हो गया है। हम लुहार की धौंकनी के तरीके से साँस जरूर लिया करते हैं। हमारी साँस चलती तो है, पर बहुत धीरे-धीरे चलती है। हम कौन हैं? हम मुरदा आदमी हैं। हम मर गए हैं। हमारे अंदर कोई जीवट नहीं है, कोई जिंदगी नहीं है। हमारे अंदर कोई लक्ष्य नहीं है, कोई दिशा नहीं है। हमारे अंदर कोई तड़प नहीं है, कोई कसक नहीं है और हमारे अंदर कोई जोश नहीं है। हमारा खून ठंढा हो गया है।

साथियो! जिनका खून ठंढा हो गया है, उनको मैं क्या कहूँगा? उनको मैं बूढ़ा आदमी कहूँगा। पच्चीस वर्ष का हो तो क्या, अट्ठाइस वर्ष का हो तो क्या, बत्तीस वर्ष का हो तो क्या? वह बूढ़ा आदमी है और मौत का शिकार है। उसके सामने जिंदगी का कोई लक्ष्य नहीं है, उसके सामने कोई चमक नहीं है। जिसके सामने कोई चमक नहीं है। जिसके सामने कोई उम्मीद नहीं है, जिसकी हिम्मत समाप्त हो गई, जो आदमी निराश हो गया। जिसकी आँखों में निराशा और मायूसी छाई हुई है, वह बूढ़ा आदमी है। मित्रो! इन बूढ़े आदमियों का हम क्या करेंगे? इनसे हम क्या उम्मीद कर सकते हैं कि वे स्वयं के लिए क्या काम कर सकते हैं और भगवान् के लिए क्या कर सकते हैं और समाज के लिए क्या कर सकते हैं? यह देखकर हम उनसे ना उम्मीद हो जाते हैं। हम उनसे ज्यादा-से-ज्यादा यही उम्मीद रखेंगे कि हमारा जब हवन होगा, तो उन्हें उम्मीद दिलाएँगे कि आपके बेटा-बेटी हो जाएँगे। उनके लिए बस सब से बड़ा एक ही काम है कि बेटा-बेटी हो जाएँ। पैसा हो जाए।

मृतकों से क्या अपेक्षा?

मित्रो! सारे-के-सारे ये वो लोग हैं जो मर गए हैं, जो सड़ गए हैं। लोभ के अलावा, लालच के अलावा, ख्वाहिशों के अलावा, तमन्नाओं के अलावा इनके पास कुछ नहीं है। जो आदमी खाली हो गए हैं और जो ढोल के तरीके से पोले हैं, उनका हम क्या करेंगे? इनके लिए हम कुछ नहीं करेंगे और न इनसे समाज के लिए, भगवान् के लिए ही कुछ उम्मीद रखेंगे। किसी के लिए भी इनसे उम्मीद नहीं रखेंगे। इनको हम छोड़ देंगे।

मित्रो! हमारा मिशन जो इंसान में भगवान् का अवतरण करने के लिए और जमीन पर स्वर्ग की धाराओं को बहाने के लिए बोया और खड़ा किया गया है, उसके लिए हमें जिंदा आदमियों की जरूरत है। जिंदा आदमी ही इस मिशन को आगे लेकर चलेंगे। मुरदा आदमी ज्यादा से ज्यादा माला घुमा देंगे। एक हनुमान जी की घुमा देंगे, एक लक्ष्मी जी की घुमा देंगे, एक गणेश जी की घुमा देंगे, एक गुरुजी की घुमा देंगे, एक युग-निर्माण की घुमा देंगे और एक अपने बेटे की घुमा देंगे और एक अपने मोहल्ले वाले की घुमा देंगे और कहेंगे कि गुरुजी मैं रोज नौ माला जपता हूँ। उसमें एक आपके लिए जपता हूँ और एक लक्ष्मी जी के लिए। वाह, बेटे! लक्ष्मी जी भूखी बैठी थी और भगवान् जी को तीन दिन से नाश्ता नहीं मिला था। तूने एक माला जपी थी, बस उससे भगवान् जी का कलेऊ हो जाएगा और उनको रोटी मिल जाएगी। अहा! ये हैं असली भगत और असली जादूगर। सारे जादू के पिटारे ये अपने माला में भरे हुए बैठे हैं।

मित्रो! इनसे हमारा काम चलेगा? इनसे हमारा काम नहीं चलेगा। जो व्यक्ति हर काम के लिए माला को ही काफी समझते हैं, उनसे हमारा काम नहीं चलेगा। जब कभी इनको जुंग आती है, छटपटाहट आती है, तो खट माला पकड़ लेते हैं और कहते हैं कि इस पर माला को चलाऊँगा, उस पर माला को चलाऊँगा। इस तरह वे तरह-तरह की चर्खियाँ चला देते हैं। जिस तरह बंदूक में तरह-तरह के कारतूस चढ़ा देते हैं, उसी तरह वे माला के ऊपर किसका कारतूस चढ़ा देते हैं? मंत्र का। इस माला पर महामृत्युंजय मंत्र का कारतूस दनादन चढ़ा दिया, जो खट्-खट् सब बीमारियों को मार डालता है और जब इसको लक्ष्मी जी की जरूरत पड़ती है तब? अहा! "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै बिच्चयै" मंत्र का दे दनादन दे दनादन जप, और वो आई देवी और ये आई चंडी और ये आया पैसा। बस इसके पास तो एक ही मशीनगन है। मरने दो इस अभागे को, इसके पास न कोई जिंदगी है, न कोई दिशा है, न कोई प्रेरणा है, न कोई लक्ष्य है और न इसके पास दिल है। ये अभागा तो केवल माला को लेकर ही दफन होने वाला है और माला को लेकर ही मरेगा।

जीवट वालों को तलाशिए

इसलिए मित्रो! इन लोगों से हमारा क्या बनने वाला है? क्या करेंगे हम इन मुरदा आदमियों का? इनसे हमारा कुछ काम नहीं बनेगा। हमको जीवट वाले आदमियों को तलाश करना पड़ेगा। अतः आपको जहाँ कहीं भी जीवट वाले आदमी मिलें, आप वहाँ जाना। हमारा संदेश लेकर के जाना और कहना कि हम आपकी तलाश करते रहे हैं। हम इसलिए तलाश करते रहे हैं कि हमारा ये ख्याल था, भगवान् जाने सही था या गलत था कि आपके अंदर जीवट नाम की कोई चीज है। इस जन्म की नहीं, तो पहले जन्म की है। कभी भी हमारी इन आँखों ने चमक में धोखा नहीं खाया है। आपके बारे में हमने अपने मन में यह ख्याल बना करके रखा था कि आप जिंदा इंसानों में से हैं और आपके अंदर दरद नाम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की कोई चीज है। आपके अंदर विवेक नाम की कोई चीज है और आपके अंदर तड़प नाम की कोई चीज है। अगर हमको ये चीजें न मालूम पड़ें, तो फिर मुरदे आदमियों को ढोने में क्या आनंद आता है? लाशों को ढो-ढोकर हम कहाँ डालेंगे? सड़े हुए बदबूदार आदमियों को हम कहाँ कंधे पर लिए फिरेंगे? मित्रो! इनको हम बैकुंठ का रास्ता कैसे दिखा देंगे? इनको हम स्वर्ग की कहानी कैसे कह देंगे? भगवान् से मिलने की बात हम कैसे कह देंगे?

मित्रो! हम सड़े हुए मनुष्यों और मरे हुए मनुष्यों की मनोकामना पूर्ण करने की जिम्मेदारी कैसे उठा लेंगे? हमारे लिए यह बिलकुल असंभव था, नामुमकिन था। हमारा एक ही ख्याल था कि आप लोग जिंदा आदमी हैं। अगर आप वास्तव में जिंदा आदमी हैं, तो यहाँ से जाने के बाद जिंदा आदमियों के तरीके से अपनी जिंदगी जीना। विवेकशील लोगों के तरीके से जीना, विचारशील और भावनाशील लोगों के तरीके से जीना, दिलवाले आदमियों के तरीके से जीना। अगर आप इस तरह से जिएँ, तो फिर तलाश करना और यदि कहीं कोई जिंदा आदमी दिखाई पड़े, तो आप उसके आस-पास चक्कर काटना। आप इस तरीके से चक्कर काटना जिस तरीके से भौंरा खिले हुए फूलों के पास चक्कर काटता है। खिले हुए फूल के आस-पास तितलियाँ और मधुमक्खियाँ चक्कर काटती हैं, जैसे हम बराबर आपके पास चक्कर काटते रहते हैं।

साथियो! हमको मालूम पड़ा कि शायद आप खिले हुए फूल हैं, तो हम भी रामकृष्ण परमहंस के तरीके से आपके पास आए हैं, जिस तरीके से वे विवेकानंद के पीछे लगे थे और शिवाजी के पीछे जिस तरीके से रामदास लगे थे। हम भी आपके पीछे उसी तरीके से लगे रहे हैं, जिस तरीके से चाणक्य चंद्रगुप्त के पीछे लगे रहे थे। अगर गलती हो गई हो तो माफ करना, क्योंकि हमने समझा यही है। आप यह मत सोचना कि गुरुजी जो अपना पुण्य हिमालय पर से लेकर के आए हैं, वह हमको मालदार बनाने के लिए और संपत्ति देने के लिए हमारे पीछे लगे हुए हैं। हमको औलाद वाला बनाने के लिए, बेटा-बेटी देने के लिए पीछे लगे हुए हैं। हम इसके लिए नहीं लगे हुए हैं।

संपत्ति नहीं विभूति माँगें

मित्रो! हमारे गुरु ने और हमारे पिता ने हमको लक्ष्मी नहीं दी है, औलाद नहीं दी है, लेकिन जो चीजें हमको दी हैं, वे लक्ष्मी जी से लाख गुनी और करोड़ गुनी ज्यादा हैं। हमारी निगाह में भी और हमारी उम्मीदों में भी यही चीज जमी हुई है कि आपको कोई चीज हम दें, तो कम-से-कम ऐसी चीज दें, जिससे कि आप भी जन्म-जन्मांतरों तक याद करते रहें कि हमको कोई चीज मिली थी और कोई चीज हमको दी गई थी। अगर आपके पास जिंदादिली हो और आपके पास रखने की चीजें हों, तब। रखने की चीजें न होंगी तब फिर बड़ा मुश्किल है। फिर स्वाति की बूँदें बरसती चली जाएँगी और वो अभागी सीप है जिसने अपना मुँह नहीं खोला। मुँह बंद करके पड़ी रही। फिर उसके लिए ये संभव नहीं है, मुमकिन नहीं है कि स्वाति की बूँदें बरसती चली जाएँ और उसके अंदर मोती पैदा हो जाए। ऐसी स्थिति में मोती पैदा नहीं हो सकते।

एक बार अमृत की वर्षा हुई। सारे मरे हुए आदमी जिंदा हो गए। केवल एक आदमी जिंदा नहीं हुआ। लोगों ने पूछा, क्या वजह है? वह आदमी क्यों नहीं जिंदा हुआ? जानने पर यह मालूम हुआ कि वह आदमी अपना मुँह जमीन में गाड़े हुए था और पीठ ऊपर किए हुए था। लोगों ने कहा, अच्छा तो यह वजह है कि जो मुरदे मुँह खोले हुए थे, नाक ऊपर किए हुए पड़े थे। उनमें से अमृत की बूँदें किसी की नाक में पड़ गईं, किसी के मुँह में पड़ गईं और वे सब जिंदा हो गए। लेकिन जिसने अपना मुँह पलट कर के रखा था, जमीन में गाड़कर रखा था, उसकी नाक में भी अमृत की बूँदें नहीं जा सकीं और मुँह में भी नहीं जा सकीं। इसलिए वह जिंदा नहीं हो सका। बेशक वो आदमी जिंदा नहीं हो सकते, चाहे उनका गुरु कोई भी क्यों न हो। गुरुजी! आप अपने गुरुजी के दर्शन करा दीजिए। हम दर्शन क्यों करा दें? हमारे गुरुजी का दर्शन करके तेरा कोई फायदा नहीं हो सकता। कैसे नहीं होगा? बेटे! वो जिंदगी कहाँ है? वो सीप कहाँ है, जहाँ कि अमृत की बूँदें पड़ा करती हैं और जिंदगी पैदा हो जाती है।

मित्रो! हमारे पास अपनी विशेषताएँ होनी चाहिए। अपनी विशेषताएँ नहीं होंगी तो बाहर के आदमी, दूसरे आदमी कोई सहायता नहीं कर सकते। आज तक बाहर वाले आदमियों ने किसी की सहायता नहीं की है। केवल अपना हृदय और अपना मन आगे बढ़ा है, तब दूसरों ने सहायता की है। आदिकाल से यही सिद्धांत था और आगे भी यही रहेगा। इसलिए हम आपको विदा करते वक्त उन लोगों के पास भेजना चाहेंगे, जिनके अंदर विशेषता मालूम पड़ती है और चमक मालूम पड़ती है। आप उन सब नौजवानों को निमंत्रण देने जाना, आमंत्रण देने जाना, जिनके घर में बंदूकें हैं, भाले हैं। उनसे कहना कि गाँव जल रहे हैं, गाँव में डकैतियाँ हो रही हैं और चूँकि आपके पास बंदूकें हैं, भाला है, इसलिए आप चलिए। चूँकि आपके पास जवानी है, इसलिए आप चलिए। चूँकि आपके पास अमुक चीजें हैं, इसलिए आप चलिए। जिन लोगों को आप साधन-संपन्न देखें, उन लोगों को आप निमंत्रण देना। जिनके पास बाल्टी है, उनको आप निमंत्रण देना। जिनके पास रस्सी है, उनको आप निमंत्रण देना। उनसे कहना कि बाल्टी खींचिए। गाँव जल रहा है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उसकी आग को बुझाइए। उनको निमंत्रण देने के लिए हम आपको भेजते हैं।

साथियो! ये दावत खाने का निमंत्रण नहीं है। गुरुजी से आशीर्वाद लेने का निमंत्रण नहीं है। मालदार होने का और बीमारियों को अच्छा करने का नहीं है। औलाद प्राप्त करने का नहीं है। आप ये निमंत्रण मत देना किसी को। ये तो बिना आपके निमंत्रण दिए खुद ही चले आते हैं और उन पर मुझको झल्लाना पड़ता है और ये रोज कहना पड़ता है कि बाबा ! यहाँ ठहरने की जगह नहीं है, चला जा। ये तो पहल भी आते रहे हैं और आते ही रहेंगे। उनको निमंत्रण देने की आपको जरूरत नहीं है। वे तो अपने आप बिना बुलाए आ जाएँगे और सब तरीके से आ जाएँगे।

प्रतिभाओं से है अपेक्षा

मित्रो! आप उन लोगों के पास जाना जिनके पास क्षमताएँ हैं, जिनके पास प्रतिभाएँ हैं, जिनके पास जीवन है, जिनके पास कसक है, जिनके पास विचार हैं। जिनके पास इस तरह की चीजें दिखाई पड़ें, वहाँ आप जाना और जा करके हमारा संदेश दे करके आना। जहाँ कहीं भी आपको विद्या दिखाई पड़े, जिस किसी के पास भी विद्या दिखाई पड़े कि उसके पास विद्या है, तो आप उन विद्यावानों के पास जाना और यह कहना कि आपकी विद्या की समाज को आवश्यकता है और युग को आवश्यकता है। विद्या पेट पालने के लिए नहीं होती है, पेट भरने के लिए नहीं होती है। विद्या का उद्देश्य भिन्न है। विद्या का उद्देश्य है, जो ज्ञान हमको मिला हुआ है, उससे हमको वकालत भी करनी पड़ें, तो उस विद्या के द्वारा लोगों के अज्ञान के निवारण के लिए खरच करना चाहिए। आपकी सारी-की-सारी विद्या धन के लिए, पैसे के लिए खरच नहीं होनी चाहिए। अगर आप पढ़े-लिखे आदमी हैं, जीवट वाले आदमी हैं, तो आपकी विद्या का लाभ उन लोगों को मिलना चाहिए, तो पढ़े-लिखे नहीं हैं, जो निरक्षर हैं।

मित्रो! आप पढ़े-लिखे हुए लोगों से कहना कि यदि आपका गुजारा हो जाता है, तो आपको 'नाइट स्कूल' रात्रि पाठशाला खोलनी चाहिए। बाहर विदेशों में लोग नाइट स्कूल चलाते हैं। सारे-के-सारे लोग पढाई उसी में करते हैं। वहाँ दिन भर आठ घंटे मेहनत-मजदूरी हर आदमी को करनी पड़ती है। छोटे बच्चों की बात जाने दीजिए, वे तो स्कूलों में चले जाते हैं। वे साढ़े नौ बजे चले जाते हैं और शाम को चार बजे आ जाते हैं, पर जिसको पेट पालना पड़ेगा, वो किस तरीके से स्कूल जा सकता है और जो बड़ा आदमी हो गया, जवान आदमी हो गया, वह कैसे जा सकता है? अत: हमको समाज में विद्या का विस्तार करना है। विद्या का ऋण-कर्ज हमारे ऊपर है। इसे चुकाने के लिए हमको दूसरों को विद्यावान् बनाना चाहिए। शिक्षित बनाना चाहिए, ज्ञानवान् बनाना चाहिए, इसके लिए हममें से और आप में से हर आदमी को समाज का ऋण चुकाने के लिए वो काम करना चाहिए, जो कल मैंने आपको बताए थे और आपको बताता रहा हूँ। योरोप के तरीके से हमारे यहाँ भी रात्रि के विद्यालय चलने चाहिए, जहाँ मजदूर, धोबी आदि शाम के वक्त अपने काम से छुट्टी पाने के बाद चले जाते हैं और पढ़ाई करते हैं और जिंदगी के आखिरी वक्त तक एम. ए. हो जाते हैं, पी-एच. डी. हो जाते हैं और डी. लिट् हो जाते हैं। जिंदगी के आखिरी-से-आखिरी वक्त तक जो समय उनको पढ़ने को मिल जाता है, वे उसे पढ़ाई में लगा देते हैं।

मित्रो! हमारे देश में सिनेमाघरों में भीड़ बहुत है। हमारे समाज में गप्पें हाँकने के लिए भीड़ बहुत है, जुआघर में भीड़ बहुत, शराबखानों में भीड़ बहुत होती है, लेकिन आपको उस तरह की भीड़ कहीं भी नहीं दिखाई पड़ेगी कि अपने जातीय संगठन के नाम पर, अपने शिक्षित समुदाय के नाम पर इकट्ठे होकर के हमने सायंकाल के वक्त 'रात्रि पाठशालाओं' को चलाया हो। इन रात्रि पाठशालाओं में असंख्य महत्त्वपूर्ण बातें पढ़ाई जा सकती हैं। मैं यह तो नहीं कहता कि हरेक आदमी को बी. ई. पढ़ाना चाहिए, लेकिन जीवन जीने की कितनी समस्याएँ हैं, उनको हल करने के लिए विद्यावानों को आगे आना चाहिए।

स्वास्थ्य की शिक्षा अभी प्रारंभ नहीं हुई है। हम और आप वकील हों तो मुबारक, विद्वान् हों तो मुबारक, लेकिन आपको नहीं मालूम कि पेट खराब क्यों हो गया? और पेट को खराब होने से बचाने के लिए क्या तरीका होना चाहिए। क्या आपके पास इसके लिए कोई स्कूल है? दवाखाने वाले तो वो चीज हैं कि जहाँ कहीं भी जाइए, हर चीज का इंजेक्शन लगा देंगे। उन्हें ये मालूम नहीं है कि वजह क्या है और किसकी वजह से सेहत खराब कर रहा है? जबकि खान-पान की वजह से सेहत खराब कर रहा है! उन सेहत खराब करने वाली खुराक और आदतों को जब तक ये हेर-फेर नहीं करेगा, तब तक उसकी सेहत कभी भी अच्छी नहीं हो सकेगी, चाहे वह रोज एक-एक दिन में बीस इंजेक्शन लगवाता चला जाए। व्यक्ति इंजेक्शन से कदापि अच्छा नहीं हो सकता। सेहत को अच्छा करने के लिए शिक्षण की आवश्यकता है।

शिक्षण प्रक्रिया नई जन्म ले

मित्रो! हमको शिक्षण की प्रक्रिया राष्ट्र में पैदा करनी पड़ेगी। विद्या हमारे देश में नहीं है। साक्षरता हमारे देश में नहीं है। उसको बढ़ाने के लिए हमको नाइट स्कूलों की जरूरत पड़ेगी। विद्या के लिए घनघोर आंदोलन खड़ा करना पड़ेगा और इस आंदोलन के लिए हम नौकर नहीं रख सकते, कर्मचारी नहीं रख सकते और वेतन-भोगी नहीं रख सकते।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गवर्नमेंट ने इस तरह के वेतन-भोगी रख लिए हैं और आप देखिए क्या हाल हो रहा है? हर डिपार्टमेंट को बढ़ा-बढ़ाकर इतना लंबा-चौड़ा कर लिया है कि अगर इतना पैसा इन डिपार्टमेंट में नहीं लगाया गया होता, तो उस बचत से शिक्षण-प्रशिक्षण की समस्या सुलझ गई होती।

मित्रो! हमको जो काम करना पड़ेगा, उन क्षमता वालों के आधार पर और प्रतिभा वालों के आधार पर करना पड़ेगा। अपना यह मिशन कितना जबरदस्त मिशन है। इसको आगे बढ़ाने के लिए हमको उन आदमियों के पास जाना पड़ेगा, जिनके पास विचारशीलता भी विद्यमान है और क्षमता भी विद्यमान है। विचारशीलता नहीं है और क्षमता है, तो हमको यह कोशिश करनी पड़ेगी कि अपने मिशन की विचारधारा को, मिशन की पुस्तिकाओं को, मिशन के ट्रैक्टों को उनको बार-बार सुनाएँ और किसी प्रकार से इस तरीके से लाएँ कि वे हमारी विचारधारा के संपर्क में आएँ। अगर कोई आदमी हमारी विचारधारा के संपर्क में आ गया, तो यह बड़ी जलती हुई विचारधारा है, यह बड़ी तीखी और प्रखर विचारधारा है। सौ फीसदी मरा हुआ आदमी हो, तब तो हम नहीं कह सकते, लेकिन कोई अगर जिंदा आदमी होगा, तो उसको एक बार तड़पड़ाए बिना, उसको एक बार हिलाए बिना नहीं रह सकती। माला वालों को तो यह शायद जगाएगी नहीं। माला वाले तो अखण्ड ज्योति का चंदा इसलिए भेज देते हैं कि गुरुजी नाराज हो जाएँगे और अगली बार मुकदमे में सहायता नहीं करेंगे। वे पत्रिका को पढ़ते थोड़े ही हैं, कोई नहीं पढ़ते, लेकिन जिन लोगों ने इन विचारों को पढ़ा है, वे आदमी काँपते हैं, हिलते हैं। उन आदमियों के अंदर एक स्पंदन पैदा होता है, फुरेरी पैदा होती है।

आप इन विचारों को लेकर सामान्य जनता तक जरूर जाना। लेकिन सामान्य जनता के अलावा कोई विशेष आदमी दिखाई पड़ते हों, जिनके अंदर आपको जीवट दिखाई पड़ती हो, प्रतिभा दिखाई पड़ती हो, उनके पास आप जरूर जाना। विद्यावानों के पास, प्रतिभावानों के पास, कलाकारों के पास जाना। जहाँ कहीं भी कलाकार दिखाई पड़ते हों, उनके पास आप जरूर जाना। उनसे कहना कि भगवान् ने आपको मीठा वाला गला दिया है, आपको गाने की कला आती है। आप इस गाने की कला के द्वारा जिस तरीके से कामुकता के गीत, अंध विश्वासों का समर्थन करने वाले गीत और भक्ति के नाम पर शृंगार रस के गीत गाया करते हैं। इनके स्थान पर कहीं आप चंदवरदायी के तरीके से समय को कँपाने वाले, भूषण के तरीके से समय को कँपाने वाले, युगों में जीवन भरने वाले गीत आप इसी गले के द्वारा गाने लगें, चौराहे-चौराहे पर खड़े होकर अलख जगाने लगें। गाँव-गाँव जाकर लोगों को इकट्ठा करके गीत की कला का उपयोग करने लगें, तो आपके यही गीत, आपका यही गला और गले की मिठास सैकड़ों-हजारों मनुष्यों के जीवन में हेर-फेर करने में समर्थ हो सकती है। मीरा का गला, मीरा की मिठास और मीरा का संगीत कितने आदमियों के जीवन में हेर-फेर करने में समर्थ हो गया। अतः हमको उस हर मीठे गले वाले व्यक्ति से कहना चाहिए, जिसको ये विशेषताएँ और विभूतियाँ भगवान् ने अमानत के रूप में विशेष रूप से दी हैं।

मित्रो! हमको उनके पास विशेष रूप से जाना चाहिए, जिन लोगों के पास कला है। जिन लोगों के पास लेखन की शक्ति है, जिन लोगों के पास विद्या की शक्ति है, जिन लोगों के पास बुद्धि की शक्ति है, उन लोगों के पास आप जरूर जाना। बीमारी के समय डॉक्टर के पास हमको जरूर जाना चाहिए, क्योंकि वह जानता है और उस काम को आसानी से पूरा कर सकता है। एक डॉक्टर हैजे का मुकाबला आसानी से कर सकता है, जबकि सौ गँवार मिलकर भी हैजे का मुकाबला नहीं कर सकते। इसलिए आप उनके पास चक्कर जरूर लगाना। उनकी खुशामद करने में अपमान महसूस मत करना। आप उनकी खुशामद करना, उनकी मिन्नतें करना, जिनके अंदर आपको जीवन मालूम पड़ता है और जीवट मालूम पड़ता है। अगर आपने खुशामद की है, मिन्नतें की हैं, तो आपने भीख माँगने के लिए नहीं की है, अपना पेट भरने के लिए नहीं की है। अपना उल्लू सीधा करने के लिए नहीं की है, वरन् समाज के लिए की है, देश के लिए की है, मानवता के लिए की है और मिशन के लिए की है।

मित्रो! आपको उन लोगों की खुशामद करनी चाहिए, जिनके पास बुद्धि है, क्षमता है, जिनके पास प्रभाव है, जिनके पास अक्ल है, जिनके पास कला है, जिनके पास जान है। जो आदमी कलम को पकड़ सकते हैं, जो आदमी अपनी विद्या से दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं। जिनके पास भगवान् ने वाणी दी है, जो बोल सकते हैं, जो व्याख्यान दे सकते हैं, उनको आप यह कहना कि आपको जो विशेषताएँ मिली हुई हैं, वह भगवान् की अमानत हैं। आपको इसको इस विशेष समय पर इस्तेमाल करना चाहिए। गवर्नमेंट के पास रिजर्व फोर्स, रिजर्व पुलिस होती है और वह विशेष समय के लिए रखी जाती है, ताकि जिस समय इसकी बेहद आवश्यकता हो, उस समय विशेष रूप से काम आए। आप उनसे यही कहना कि आप भगवान् के रिजर्व फोर्स के तरीके से हैं, तभी तो दूसरे सामान्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धि दी गई है, ज्यादा प्रभाव दिया गया है, ज्यादा प्रतिभा दी गई है और ज्यादा समझदारी दी गई है। यदि आप प्रतिभाओं को, विभूतियों को जगाकर राष्ट्र-निर्माण के लिए लगा सकें, तो इससे बड़ा पुण्य कोई नहीं। आज की बात समाप्त।

।।ॐ शांति।।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

त्याग-बलिदान की संस्कृति देवसंस्कृति-३

(गतांक से आगे)

मित्रो! आदमी हो या कोई पक्षी हो, बुड्ढा हो, बिना पढ़ा हो या साधनहीन हो, तो भी कम-से-कम उसके भीतर इतनी हिम्मत अवश्य होनी चाहिए कि अनीति का विनाश करने के लिए, लड़ाई लड़ने के लिए सीना तानकर खड़ा हो जाए। बेटे! बड़े-बड़े बादशाहों को तो हम भुला सकते हैं, लेकिन उस पखेरू को हम सदैव याद रखेंगे। उसे हम भुला नहीं सकते। उस पखेरू को न भुलाने का मतलब है, देवपूजन अर्थात् देवत्व का पूजन। बेटे! भारतीय संस्कृति में देवत्व का पूजन करने की परंपरा है। यही परंपरा सतयुग को लाती है, धर्मयुग को लाती है। मानवजाति के उज्ज्वल भविष्य को लाती है। कौन-सी परंपराएँ? जिनको हम दैवीय परंपराएँ कहते हैं। दैवीय परंपराएँ क्या होती हैं? तिलक लगाना, माला जपना, गंगाजी नहाना, सत्यनारायण की कथा कहना आदि, क्या यही दैवी परंपराएँ हैं? नहीं, बेटे! ये तो खेल-खिलौने मात्र हैं। जो इसी खेल-खिलौनों में उलझे रहते हैं, उन्हें हम 'अफीमची' कहते हैं, सनकी कहते हैं। काम होता नहीं है, त्याग की बात बनती नहीं, बैठे-बैठे कोने में झाँकियाँ लेता रहता है, सनकता रहता है और कहता है कि प्रकाश दिखा दीजिए। घंटी बजा दीजिए, कान में नादब्रह्म सुना दीजिए। पेट में से पिल्ला निकाल दीजिए। उसमें से निकाल दें तेरा सिर।

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? दैवीय सभ्यता यह नहीं है। दैवीय सभ्यता वह है, जिसमें त्याग और बलिदान की बात करनी पड़ती है। बेटे! हजारों वर्षों का इतिहास जब हम पढ़ते हैं, तो हमको दैवीय सभ्यता का यही स्वरूप दिखाई पड़ता है। रामचंद्रजी के बाद श्रीकृष्ण जी का नंबर आता है। श्रीकृष्ण जी का जीवन चरित्र जैसा कुछ भी आता है, उन्होंने जिन लोगों को साथ लेकर के काम शुरू किया था, उन लोगों के नाम थे, पांडव। पांडवों में क्या था? दैवीय सभ्यता थी। पांडव देवताओं से पैदा हुए थे। मैंने सुना है कि कुंती ने देवताओं का जप-पूजन किया था और जप-पूजन करने के बाद में बच्चे पैदा किए थे। कैसे थे पाँच बच्चे? तो क्या उनमें एक था आई. ए. एस., एक था इन्कम टैक्स आफीसर, एक था सी. बी. आई. आफीसर आदि। इस तरह क्या उन्होंने लाखों रुपयों की आमदनी की थी? करोड़ों की जायदाद खरीदकर रख गए थे? तो फिर कुंती का बेटा, देवता का बेटा कौन होता है? क्या वह जिसके पास मोटरें हों, जिसके पास दौलत हो, जिसके पास मकान हो। नहीं, यह आपकी परिभाषा है। देवताओं की परिभाषा अलग थी।

मित्रो! देवताओं के बेटों को कैसा होना चाहिए? अगर कोई देवता का बेटा है, तो उसके व्यवहार में और जीवन में क्या गुण आना चाहिए? इसे हम पाँचों पांडवों के जीवन में देख लेते हैं। हमको सबसे अच्छी घटना पांडवों की याद आती है। अज्ञातवास के समय कुंती अपने बच्चों के साथ एक ब्राह्मणी के यहाँ छिपी हुई थी। उस इलाके में कोई एक राक्षस रहता था। जो वहाँ के हर घर से एक-एक आदमी प्रतिदिन मारने के लिए बुलाया करता था और उन्हें खा जाता था। नंबर के हिसाब से उस दिन ब्राह्मणी के बच्चे का नंबर आ गया। ब्राह्मणी रोने लगी। उसने कहा कि हमारे एक ही बालक था और वह भी आज राक्षस के हवाले होने जा रहा है। जब वह बैठी हुई रो रही थी, तो कुंती ने पूछा, बहिन क्या बात है? ब्राह्मणी बोली कि हमारे पास एक ही बच्चा है और उसको आज राक्षस के पास जाना पड़ेगा। उसे मरना ही होगा। अब हम क्या कर सकते हैं?

कुंती ने कहा कि आपने अपनी जान जोखिम में डालकर हमको छिपा रखा है, तो हमारा भी तो कुछ कर्त्तव्य हो जाता है। हम भी तो कुछ करेंगे आपके लिए। उन्होंने कहा, बच्चो! तुम पाँच हो। एक काम करो, यह जो ब्राह्मणी है, इसके एक ही बालक है। इसने अपनी जान जोखिम में डालकर हमको छिपाकर रखा है। इसलिए क्या करना चाहिए बच्चो? तुममें से एक बच्चे को अपना बलिदान कर देना चाहिए और ब्राह्मणी के बच्चे को बचा लेना चाहिए। बच्चों ने कहा, माता जी! इससे बड़ा सौभाग्य हमारा क्या हो सकता है? भीम चले गए और उसे बचा लिया।

मित्रो! यह क्या है? यह है देवता का मन। देवता का मन वह होता है कि जब उसके जीवन में कोई त्याग करने, बलिदान करने का मौका आता है, तो बल्लियों उछलने लगता है। यह होता है, देवताओं का दिल। और राक्षसों का दिल कैसा होता है? राक्षसों का, चोरों का, घटिया आदमी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

का दिल यह है कि जब त्याग का वक्त आता है, तो वह थर-थर काँपने लगता है। हर समय जिसकी यही नीयत रहती है कि यह मंत्र जपूँगा, यह तंत्र जपूँगा, यह पूजा करूँगा और इससे यह पैसा कमाऊँगा, यह औलाद पाऊँगा, धन कमाऊँगा। कामना-ही-कामना, कामना-ही-कामना जिसके अंदर भरी हुई है, बेटे यह कोई अध्यात्म नहीं है।

ठीक है मित्रो! यह बच्चों का अध्यात्म रहा होगा। मैं यह तो नहीं कहता कि बच्चों को इसकी जरूरत नहीं है। हम मिठाई बाँट करके और कोई लोभ देकर के बच्चों को अपने पास बुला लेते हैं। यह भी अध्यात्म का कोई हिस्सा होगा, पर मैं इसको ठूस कहता हूँ, भूसी कहता हूँ। किसकी? अध्यात्म की। भूसी कौन-सी? जिसमें यह पाया जाता है कि अध्यात्म क्या है। बेटे, यह अध्यात्म का खिलवाड़ है, छिलका है, जूठन का पत्ता है। पत्ते पर मिठाई खाकर के लोग उसे फेंक देते हैं और कुत्ते उसे चाटने के लिए टूट पड़ते हैं, चट कर जाते हैं। यह भी हो सकता है प्राप्त करने की दृष्टि से। अध्यात्म को हम भौतिक चीजों को पाने के लिए इस्तेमाल करते हैं, इसलिए बेटे, मैं इसको जूठन का पत्ता कहता हूँ। किसी आदमी का खाया हुआ पत्ता फेंक दिया गया, दूसरा कहता है कि हमको भी दे दीजिए। हाँ बेटे, तुझे भी दे देंगे।

बेटे, हमने तप किया है और तप करके पाया है और तू हिस्सा माँगता है। चल तुझे भी दे देंगे। यह क्या है? छोटी चीज है, रत्तीभर चीज है। न इसमें किसी को घमंड करने की जरूरत है और न सफलता प्राप्त करने की जरूरत है। हमने अध्यात्म से यह पा लिया, वह पा लिया। बेटे, पाने से अध्यात्म का कोई संबंध नहीं है। अध्यात्म का संबंध है, देने से। आपने क्या दिया, बताइए? बस, यही एक सवाल है। अगर आप यह कहते हैं कि हम भगवान् की भक्ति से कोई ताल्लुक रखते हैं, तो आप यह जवाब दीजिए कि दैवीय सभ्यता के लिए, श्रेष्ठ आचरणों के लिए, लोगों के सामने अच्छी परंपरा स्थापित करने के लिए आपने क्या दिया? यही एक जवाब दीजिए और दूसरा हम कुछ नहीं सुनना चाहते। हमने इतना भजन किया। तो ठीक है अपने भजन को डिब्बी में रखिए। भजन का या किसी और का हवाला देना हम नहीं सुनना चाहते। गायत्री मंत्र की ग्यारह कापी हमने लिखीं। तो आप अपनी ग्यारह कापी ताले में बंद कर दीजिए। हमें मत बताइए। हमको तो यह बताइए कि आपने दैवीय सभ्यता के लिए कितना त्याग किया है? कितना बलिदान किया है? कितनी सेवा की है? नहीं साहब! हमने तो ग्यारह कापियाँ लिखी हैं। अच्छा, ग्यारह कापियाँ मुबारक हों, उसे अपने घर रखिए। हम नहीं सुनना चाहते।

मित्रो! अध्यात्म की प्राचीन परंपराएँ, शालीन परंपराएँ, महान् परंपराएँ भगवान् को अपनी ओर खींचती हैं और खींचने के अलावा दूसरों की सहायता करने में समर्थ होती हैं। ऐसा कोई अध्यात्म नहीं है, जो मनोकामना को प्राप्त कराता है। अध्यात्म वह है, जिससे आदमी अपना कल्याण करते हैं और दूसरों का कल्याण करने में समर्थ होते हैं। ऐसी शक्ति, जो दूसरों का कल्याण करती है, वह केवल असली अध्यात्म में रहती है। वह त्याग किए बिना, बलिदान किए बिना, सेवा धर्म किए बिना, दैवीय सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप जीवन ढाले बिना किसी में नहीं आ सकती। न आई है और न आएगी। कौन-सी? जिसमें त्याग जुड़ा हुआ न हो, सेवा जुड़ी हुई न हो, लोकहित जुड़ा हुआ न हो, कष्ट सहने की बात जुड़ी हुई न हो, उसमें अध्यात्म कैसे हो सकता है? नहीं बेटे! इससे कम में कभी अध्यात्म न था और न कभी होगा।

मित्रो! भगवान् श्रीकृष्ण ने उस जमाने में, दुर्योधन के जमाने में जब चारों ओर असभ्यता और अनीति फैली पड़ी थी, तब यही नमूना पेश किया था। उनके पाँच हितैषी और हिमायती थे। पाँचों हिमायतियों का मैं एक नमूना बता रहा था। पाँचों पांडवों से कुंती ने कहा, बच्चो! तुममें से एक को वहाँ जाना चाहिए। बच्चे उछलने लगे और कहने लगे कि यह सौभाग्य तो हमको मिलना चाहिए। प्रतिस्पर्द्धा-कॉम्पिटीशन शुरू हो गई कि बलिदान में हम आगे जाएँगे। पाँचों बच्चों में प्रतिस्पर्द्धा शुरू हो गई। कुंती के लिए जद्दोजहद खड़ी हो गई। युधिष्ठिर कहते कि हम सबसे बड़े हैं। हम दुनिया में सबसे पहले आए थे, इसलिए हमारा नंबर पहला है। सबसे छोटे वाले नकुल कहने लगे कि हम सबसे छोटे हैं, इसलिए हमको जाना चाहिए। अर्जुन कहने लगे कि इसके लिए हमको जाना चाहिए। सबमें झगड़ा होने लगा। कुंती ने कहा, अच्छा तुममें से कौन सबसे भाग्यवान है, इसके लिए मैं गोली बनाकर निकालती हूँ। पाँचों पांडवों के नाम से गोली बनाकर डाल दी गई और कहा गया कि अच्छा, एक गोली उठा लो। जिसका नाम आ जाएगा, उसी को जाना चाहिए।

गोली उठाई गई। भीम का नाम आ गया। भीम उछलने लगे, ओ हो! यह मेरा सौभाग्य है। मित्रो! सौभाग्य किसे कहते हैं? नौकरी में तरक्की हो जाने को? लॉटरी में रुपया निकल आने को? तीन बेटियों के बाद दो बेटा हो जाने को? आपकी दृष्टि में इसके अतिरिक्त और कोई सौभाग्य

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

होता है क्या ? नहीं होता। बेटे! यह सौभाग्य नहीं होता। सौभाग्य वह होता है, जिसमें आदमी अजर-अमर हो जाता है। बेटे! सौभाग्य वह होता है, जिसमें हजारों-लाखों आदमी श्रद्धा के सुमन चढ़ाते रहते हैं और उसके चरणों पर आँसू बहाते रहते हैं और जिसके मरने के बाद भी आदमी उससे प्रकाश-प्रेरणा ग्रहण करते रहते हैं, रोशनी ग्रहण करते रहते हैं। देवता उन्हें ही कहते हैं, सौभाग्य उसे कहते हैं। सौभाग्यशाली वे हैं, वंदनीय वे हैं, जिन्होंने अपना आचरण इस तरीके से पेश किया कि जिससे प्रेरित होकर हजारों आदमी नमूने पेश करते रहें और दिशा प्राप्त करते रहें।

मित्रो! ऐसा ही हुआ। भीम का नंबर आ गया। भीम बच्चा था और राक्षस नौजवान। राक्षस कितना बड़ा था? समझ लीजिए छत के बराबर रहा होगा। और भीम? छोटा-सा ही था। भीम लड़ने के लिए चला गया। महाभारत की कथा के अनुसार मैंने सुना है कि भीम ने कहा, अच्छा, आप हमको खाएँगे तो हो ही, तो क्यों न पहले दो-दो हाथ कर देख लें। राक्षस ने कहा, चल, इसमें कोई ऐतराज नहीं है हमको। आ, हो जाए, दो-दो हाथ। भीम लड़ने के लिए खड़ा हो गया और उसने राक्षस को पटककर मार दिया।

क्यों साहब! ऐसा हो सकता है? हाँ बेटे, ऐसा हो सकता है। सत्य हजार हाथी के बराबर बलवान होता है। बच्चों ने भी सत्य का आश्रय लेकर बड़ी-बड़ी सफलताएँ पाई हैं। कौन-कौन ने पाई हैं? चंद बच्चों के नाम बता सकता हूँ। प्रह्लाद बच्चा था, लेकिन उसका बाप हिरण्यकशिपु कितना समर्थ था। वह इतने बड़े दैत्य से लड़ने के लिए खड़ा हो गया और उसका कचूमर निकाल दिया। यह बच्चों की बात कह रहा हूँ। कंस से लड़ने के लिए श्रीकृष्ण भगवान् गए थे। तब वे कितने छोटे थे। बच्चा जब लड़ने के लिए गया तो कंस को, चाणूर को और बकासुर को मार डाला और किस-किस को मारा? हाथियों को, कालिया को मार डाला, कैसे मार डाला बच्चे ने? बेटे, बच्चे ने नहीं, सत्य ने मार डाला। सत्य के पास हजार हाथियों के बराबर बल होता है। इसीलिए मुष्टिकासुर कौन था? एक हाथी था। भगवान् श्रीकृष्ण चाहते तो और भी निन्यानवे हाथियों को मार सकते थे, क्योंकि उनके पास सत्य था। बच्चा हो तो क्या, बड़ा हो तो क्या, जिसके पास सत्य है, विजय उसकी ही होती है।

मित्रो! महाभारत की कथाएँ भी इसी तरह की मालूम पड़ती हैं, जिसमें लोगों ने देवत्व पैदा किया। देवत्व का छोटा-सा फार्म बनाया, सीढ़ी बनाई, आदर्श उपस्थित किया, जिससे लोगों के सामने देवत्व घिसटता हुआ चला गया, और वे दिन भी आए, जबकि दुर्योधन की आसुरी सभ्यता का निवारण हो गया, समाधान हो गया। कभी और भी ऐसे ही हुआ था। सारे इतिहास में तो यही पढ़ता रहता हूँ। अठारह पुराणों का अनुवाद मैंने किया है और इतिहास भी पढ़ा है। दो वर्ष पहले मैंने इतिहास को ज्यादा गहराई और ध्यान से पढ़ा है। 'भारतीय संस्कृति का समस्त विश्व को अजस्र अनुदान' नामक बड़ा ग्रंथ मैंने लिखा है। आपने पढ़ा होगा, उसमें मैंने हिंदुस्तान की सारी-की-सारी हिस्ट्री लिखी है। सारी दुनिया को निहाल कर देने की हिस्ट्री। किससे निहाल कर दिया था? बेटे, सारी दुनिया को धन दिया था, विद्या दी थी, ज्ञान दिया था। सारी दुनिया में भारतीयों का वर्चस्व छा गया था और उनको जगद्गुरु माना गया था, देवता माना गया था।

महाराज जी! यह सब कैसे हुआ था? बता दीजिए हम भी करना चाहते हैं। ऐसी विधि हमको भी बता दीजिए। हाँ बेटे, ला तुझे भी बता देते हैं कि क्या विधि है? बस एक तो तू माला ले ले और एक मंत्र। मंत्र लेकर क्या करूँ? जप किया कर ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय। नमः शिवाय से क्या हो जाएगा? सारे विश्व में तेरा यश हो जाएगा और तू अजर-अमर हो जाएगा। सारी दुनिया का कल्याण हो जाएगा। ऐसा हो जाएगा? नहीं बेटे, ऐसा नहीं हो सकता।

मित्रो! मैंने जो पुस्तक लिखी है 'भारतीय संस्कृति का समस्त विश्व को अजस्र अनुदान'। उसमें मैंने यह लिखा है कि भारतीय लोगों ने किस कदर त्याग और बलिदान किए हैं और एक से बढ़कर एक कैसे-कैसे नमूने खड़े किए हैं। बलिदानों का जखीरा लगा दिया है। भारतीय सभ्यता को अपने अनुदान देने वाले लोगों का जब मैं इतिहास पढ़ता हूँ, तो आँखों में से आँसू टपक पड़ते हैं। उनमें से एक थे, कुमारजीव, जो हिंदुस्तान से रवाना हुए और चीन पहुँच गए। जहाँ की न वे भाषा जानते थे और न कुछ जानते थे। "चीन नाम का देश है, जिसमें जाकर बौद्ध धर्म का प्रसार करेंगे।" यह सोचकर वे अकेले ही रेगिस्तानों को पार करते हुए चले गए। उन भयंकर रेगिस्तानों को जहाँ तीस-तीस दिनों तक पानी की एक बूँद भी नहीं मिलती थी। पेड़ की एक छाया तक नहीं है, केवल रेगिस्तान-ही-रेगिस्तान भरा पड़ा है। अपनी थैली में थोड़ा-सा पानी लेकर वे रवाना हो गए। कौन? कुमारजीव। वे चाइना में रह गए। चाइना में कौन था उनका? न कोई बेटा था, न मित्र था, न कोई शिष्य था उनका। वहाँ जाकर के उन्होंने चायनीज भाषा सीखी और सीखने के बाद में बौद्ध

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

धर्मग्रंथों का अनुवाद करके वहाँ रखा। सारे-के-सारे चाइना को बौद्ध बनाने का श्रेय कुमारजीव जैसे बुद्ध के अनुयायियों को था।

गुरुजी! यह कैसे हो गया? बेटे, जादू से। जादू से कैसे हो गया? हमको भी सिखा दीजिए। बेटे, जिस जादू से दुनिया में बड़े-बड़े काम हुए हैं और अध्यात्म का प्रणयन हुआ है, उसका नाम है, त्याग और बलिदान। नहीं महाराज जी। त्याग-बलिदान का नहीं, हमको तो बता दीजिए मंत्र। मंत्र कैसा होता है? अहा! इसी मंत्र के चक्कर में फिर रहा है धूर्त। अच्छा महाराज जी! बता दीजिए जादू। जादू बता दें तेरा सिर। मित्रो! क्या हुआ? सारी-की-सारी पुस्तकों में मैंने लिखा है कि भारत के गौरव को ऊँचा उठाने के लिए, सारे विश्व का कायाकल्प कर डालने के लिए, जो आधारभूत मंत्र था, वह था त्याग और बलिदान। त्याग और बलिदान की आवश्यकता महात्मा बुद्ध को पड़ी कि जिससे न केवल हिंदुस्तान, वरन् सारे के सारे विश्व को सुसंस्कृत बनाया जाए, फिर से सुसंस्कृत बनाया जाए। इसके लिए उन्हें अपील करनी पड़ी कि जो हमारे सबसे प्यारे हों, जो हमारे हितैषी हों, जो हमारी आज्ञा का पालन करने वाले हों, जो हमसे यह कहते हों कि बुद्ध हमारा है, तो वह त्याग करके दिखाएँ। यही सीधा-सरल मार्ग है।

महाराज जी! हम तो आपके चरणों में फूल चढ़ा देंगे। आपके ऊपर फूल चढ़ाएँगे और तीन बार नमस्कार करेंगे। ओ हो। बड़ा भारी शिष्य है हमारा। और क्या करेगा? महाराज जी! पच्चीस पैसे का आपका एक रंगीन फोटो खिंचवाऊँगा। फिर क्या करेगा उसका? टाँगूँगा। कैसे टाँगेगा, उलटा या सीधा? महाराज जी! टाँगूँगा तो सीधा। बेटे, हमारा कहना मान तो उलटा टाँग दे फोटो को। उलटा टाँग देगा, तो ज्यादा फायदा हो जाएगा। क्यों? क्योंकि तब गुरु जी की नाक में दम आएगी तो जल्दी आशीर्वाद देंगे। तो यह मामला है? हाँ बेटे, घटिया लोगों का, छोटे लोगों का, हलके लोगों का यही मामला है। इनके लिए जितनी गाली दी जाए, कम है। यह हमारे आपके सबके ऊपर लागू होती है। इसमें आदमी सिवाय चालाकी के, सिवाय माँगने के, सिवाय बड़ा आदमी बनने के, सिवाय ऐय्याशी के, सिवाय विलासिता के कुछ बाकी नहीं है।

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? भारतीय सभ्यता और संस्कृति को जिंदा रखने के लिए बुद्ध ने जो कदम उठाए, उसने अपने-अपने मित्रों और शिष्यों से कहा कि आप आएँ और हमारे पीछे-पीछे चलें। किस तरह चलें? आप हमारी बात मानते हैं, तो हमारे रास्ते पर चलें और हमारा अनुकरण करें। क्या रास्ता है आपका? हमारा रास्ता है, त्याग और बलिदान का। किसने त्याग और बलिदान के रास्ते पर कदम बढ़ाए? एक लाख शिष्य और सवा लाख शिष्याओं ने। उन सारे-के-सारे लोगों ने कहा कि हम आपके रास्ते पर चलेंगे। आपने जिस काम के लिए अवतार लिया है, उस काम में हम आपका सहयोग करेंगे और सहायता करेंगे। दो लाख आदमियों को लेकर बुद्ध ने न केवल हिंदुस्तान, वरन् समूचे एशिया, न केवल एशिया, वरन् सारे-के-सारे महाद्वीपों में दैवीय सभ्यता का प्रसार किया। उस जमाने में सात महाद्वीप माने जाते थे। अब तो हमने पाँच कर लिए हैं। सारे महाद्वीपों में उन लोगों ने न जाने क्या-से-क्या काम करने शुरू कर दिए, जिससे वे जगद्गुरु कहलाने के अधिकारी हुए।

यह क्या किया बुद्ध ने? बेटे, बुद्ध ने यही किया। दैवीय सभ्यता का प्रसार इसी से हुआ है। तो क्या बुद्ध ने बड़े व्याख्यान दिए थे? हाँ बेटे, बुद्ध ने बड़े व्याख्यान दिए थे, लेकिन व्याख्यान देने के साथ-साथ में उसके नमूने भी पेश किए गए थे। क्या नमूना पेश किया? उनका बेटा राहुल आया और बोला, पिताजी! हम आपके अंश-वंश से पैदा हुए हैं। हाँ बेटे, तुम हमारे अंश-वंश से पैदा हुए हो तो तुम्हें हमारी वंश-परंपरा की रक्षा करनी चाहिए। वंश-परंपरा की रक्षा कैसे होती है? पंडित जी से पूछा, तो वे बोले, बस जौ का पिंड बना लो और उस पर धूप-दीप, फूल लगा दो और 'तर्पयामि' करके पिंड को गंगा जी में चढ़ा दो। बस, वंश का उद्धार हो जाएगा। तो क्या पिताजी। ऐसे उद्धार होगा? नहीं बेटे, ऐसे उद्धार नहीं होगा। कैसे होगा? जिस रास्ते पर हम चले हैं, उस रास्ते पर तू भी चल।

राहुल ने कहा, अच्छा पिता जी! कोई और रास्ता बताइए? बुद्ध ने कहा, नहीं बेटे, हम जिस रास्ते पर चले हैं, उससे अच्छा कोई रास्ता नहीं हो सकता है। अगर रहा होता, तो हम भी उस पर चल दिए होते। यही सबसे अच्छा रास्ता है। तुझे यही करना पड़ेगा। अगर तू हमारा बेटा है और यह कहता है कि हम आपका वंश चलाएँगे, तो हमारे रास्ते पर चल। राहुल तैयार हो गया। वह सारी जिंदगी भर अपने पिता के कदमों पर चलता रहा और न जाने कहाँ-से-कहाँ चला गया। वह वर्मा गया। सारे-के-सारे विश्व में एक सिरे से दूसरे सिरे तक भटकता फिरा और अपने पिता के कामों का और उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के लिए त्याग-बलिदान की झड़ी लगाता रहा।

(क्रमशः) ❋

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

त्याग-बलिदान की संस्कृति देवसंस्कृति-४

(गतांक से आगे)

मित्रो! बेटा कैसा होना चाहिए? राहुल की तरह से होना चाहिए। बेटा ऐसा नहीं होना चाहिए कि बाप मरेगा तो उसकी जायदाद हमको मिलनी चाहिए और जो खेत है, वह हमको मिलना चाहिए। बाप का पैसा हमको मिलना चाहिए। बाप जिंदा है, तो हिस्सा मिलना चाहिए। नहीं, ऐसे बेटे नहीं हो सकते। नहीं, महाराज जी! बेटे ऐसे ही होते हैं। बाप के पास इक्कीस बीघे जमीन है। बाप को मरने में अभी देर है। बेटा कहता है कि हमारा हिस्सा अभी दे दो। हम मरेंगे तब देंगे। नहीं, मरने का इंतजार हम नहीं करेंगे, अभी दे दो। यह कौन है? क्या बेटे ऐसे ही होते हैं? नहीं, ऐसे नहीं होते बेटे। श्रवणकुमार के तरीके से बेटे होते हैं और राहुल के तरीके से बेटे होते हैं और बेटियाँ कैसी होती हैं? बेटियाँ संघमित्रा के तरीके से होती हैं। संघमित्रा सम्राट् अशोक की बेटी थी। उसने कहा, पिता जी आपने सन्यास ले लिया? हाँ। तो फिर हमारे लिए हुक्म दीजिए कि हमको क्या करना चाहिए।

मित्रो! संघमित्रा जो थी, उसने कहा, पिता जी क्या करना पड़ेगा? बेटी, हमारे रास्ते पर चलना पड़ेगा। सम्राट् अशोक की बेटी संघमित्रा निकल पड़ी और उसने जितने बुद्ध ने विहार बनाए थे, उससे ज्यादा विहार बनाकर दिखा दिए। महिलाओं के क्रियाकलाप, महिलाओं के संगठन, महिलाओं के विहार संघमित्रा ने ढेर सारे बना दिए। यह सब हमारी किताब में वर्णन किया गया है; उसका मैं हवाला दे रहा था। कितने ज्यादा बुद्ध के विहार थे और कितने महिलाओं के लिए? यह कैसे हो गया? बेटे, इस तरीके की परंपराओं से हो गया। कहाँ-से-कहाँ तक हुआ? बेटे, जहाँ कहीं भी अनीति के विरुद्ध संघर्ष करने की जरूरत पड़ी होगी अथवा धर्म की स्थापना करने की जरूरत पड़ी होगी और जब ठोस कदम उठाने की जरूरत पड़ी होगी, तब जैसे कि आज है। पोला कदम जब तक उठाना है, तब तक तो मीटिंग करेंगे, वार्षिकोत्सव करेंगे, रामायण सम्मेलन करेंगे। ठीक है बेटे, ये पोला कदम हो सकता है, पर यह ठोस कदम नहीं हो सकता। ठोस कदम यह हो सकता है कि हमें लोगों के, जनसाधारण के सामने त्याग और बलिदान की परंपराएँ प्रस्तुत करनी चाहिए, ताकि लोगों का मुँह यह कहने के लिए बंद हो जाए कि ये कहने-सुनने की बातें हैं। ये दूसरों को उपदेश देने की बातें हैं। ये बातें काम नहीं आ सकतीं और कोई आदमी इन्हें जीवन में करके नहीं दिखा सकता। दूसरों को कह सकता है कि आपको त्यागी होना चाहिए, ब्रह्मचारी रहना चाहिए, परोपकारी होना चाहिए। आप और हम कह सकते हैं, लेकिन जब स्वयं करने का मौका आएगा तब हम नहीं कर सकते। यही कारण है कि वक्ताओं का, उपदेशकों का कहीं कोई प्रभाव पड़ता नहीं दिखाई देता।

मित्रो! चिंता करने की कोई बात नहीं है। आप अपने से ही शुरुआत कीजिए, नमूना बनिए, साँचा बनिए। हमारी परंपरा स्वयं से शुरुआत करने की रही है। जहाँ कहीं भी हम देखते हैं, अपने से ही शुरुआत देखते हैं। विश्वामित्र और हरिश्चंद्र दोनों आपस में घनिष्ठ थे। इतने घनिष्ठ थे कि गुरु-शिष्य का प्रेम जो राजा विश्वामित्र में था और किसी में नहीं देखा गया। विश्वामित्र एक बड़ा काम करने वाले थे, नई दुनिया बनाने वाले थे। जब हम पढ़ते हैं, तो उसमें नई सृष्टि लिखा हुआ है। वे नई सृष्टि बना रहे थे। मैं समझता हूँ नई सृष्टि तो क्या बना रहे होंगे, लेकिन नया जमाना ला रहे होंगे। विश्वामित्र ने राजा हरिश्चंद्र से कहा, तू हमारा मित्र है, दोस्त है? उनने कहा, हाँ। तो फिर हमारे साथ-साथ चल, हमारे काम आ। राजा हरिश्चंद्र ने कहा, हम आपके साथ-साथ चलेंगे और आपके काम आएँगे। तो फिर काम आ, चल हमारे साथ।

मित्रो! विश्वामित्र को पैसे की जरूरत पड़ी होगी, तो उन्होंने हरिश्चंद्र का राज्य माँगा होगा, दूसरी चीजें माँगी होंगी और आखिर में जहाँ मौका आ गया होगा, तो भौतिक साधनों के लिए राजा हरिश्चंद्र ने अपने आपको नीलाम कर दिया होगा। अपनी बीबी-बच्चे को नीलाम कर दिया होगा। यह क्या चीज है? त्याग और बलिदान है। इसको हम भूल नहीं सकते। क्यों विश्वामित्र ने हरिश्चंद्र को ही दोस्त क्यों बनाया। इससे कम में काम नहीं चल सकता था? अभी भी हजारों गाँधियों को पैदा करने की ताकत हरिश्चंद्र में है। गाँधी जी ने बचपन में हरिश्चंद्र का ड्रामा देखा और ड्रामा देखकर उन्होंने कहा, मैं हरिश्चंद्र होकर जिऊँगा। वे वास्तव में हरिश्चंद्र होकर के जिए। हरिश्चंद्र ने एक हरिश्चंद्र तो अभी-अभी पैदा किया है हमारे सामने और असंख्य हरिश्चंद्र जाने कितने पैदा कर गए। कैसे हो गए? बेटे और कोई तरीका नहीं है अपने आपको त्याग की बलिवेदी पर समर्पित करने के अलावा। अगर हमारे व्यक्तिगत जीवन में लोकहित के लिए, परमार्थ के लिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कहीं त्याग की परंपरा नहीं है, तो फिर कहने भर की बातें हैं, बरगलाने भर की बातें हैं और आपको छलने एवं जनता को बरगलाने की बातें हैं। नया युग लाने के लिए तो हमें फिर वहीं से आरंभ करना होगा, जहाँ हमारे ऊपर यह बात लागू होती है कि त्याग और बलिदान का प्रश्न आए, तो हम कहाँ होते हैं? बगलें झाँकते हैं या आगे बढ़-चढ़कर लग जाते हैं।

मित्रो! हमारी संस्कृति में त्याग-बलिदान की परंपराएँ आदि काल से रही हैं, चाहे बुद्ध हो या हरिश्चंद्र, कोई भी रहा हो। त्याग-बलिदान की परंपराएँ गाँधी जी के आश्रम में भी थीं। गाँधी जी के आश्रम में जब 'नमक-सत्याग्रह' शुरू हुआ तो लोगों ने कहा कि आप चुपचाप बैठे रहिए और लोगों को हुक्म दीजिए। सब लोग जेल जा सकते हैं, नमक बना सकते हैं, आप शांति से बैठे रहिए, बाकी लोग ये सब काम करेंगे। गाँधी जी ने कहा, ऐसा नहीं हो सकता। जो लोग साबरमती आश्रम में रहते हैं, उन आश्रमवासियों का सबसे पहले नंबर है, बाकी लोगों का पीछे नंबर है। उन्होंने सबसे पहले अपना नाम लिखाया। गाँधी जी के आश्रम में जो उन्नीस आदमी थे, उनको लेकर और आश्रम में ताला डालकर गाँधी जी अपने साथियों को लेकर नमक बनाने के लिए रवाना हो गए और वहाँ से जेल चले गए। उनके जेल जाने के बाद जो आग फैली, तो गाँधी जी के बच्चे, जनसेवक सभी ने कहा कि हमें भी जेल जाना चाहिए। यह प्रभाव व्याख्यानों का था? नहीं, त्याग के लिए गाँधी जी का स्वयं को प्रस्तुत करने का था। बिना कोई व्याख्यान दिए, बिना कोई कथा कहे, बिना कोई प्रवचन दिए, बिना कोई सम्मेलन बुलाए कितने सारे आदमी जेल चले गए। गाँधी जी के उस साहस, को त्याग को देखकर लोगों ने समझ लिया कि इस आदमी की कथनी और करनी के बारे में दो राय नहीं है। इसकी कथनी और करनी एक है।

सिख धर्म भी इसी का साक्षी

मित्रो! यही परंपरा बनी रही है और बनी रहेगी। सारे का सारा इतिहास, पुराणों का इतिहास, धर्म-शास्त्रों का इतिहास, अमुक का इतिहास जब हम देखते हैं, तो दूसरा कोई तरीका दिखाई नहीं पड़ता। यवनों के विरुद्ध जब सिख धर्म बनाया गया और इस बात की जरूरत पड़ी कि लोगों को हिंदू धर्म की रक्षा के लिए सिपाहियों के तरीके से, सैनिकों के तरीके से तनकर खड़ा हो जाना चाहिए और अपनी जान को जोखिम में डालना चाहिए। यह बहादुरी जब गुरुगोविंद सिंह पैदा करने वाले थे, तब उन्होंने लोगों से पूछा कि इसका कौन-सा तरीका हो सकता है? लोगों में बहादुरी कैसे भरी जा सकती है? अगर यह उपदेश से हो जाए कि उससे सब लोग सूली पर चढ़ जाएँ, सब मारे जाएँ और हम सुरक्षित बैठे रहेंगे, ऐसा नहीं हो सकता। गुरुगोविंद सिंह ने कहा, ''पहला नंबर हमारा है।'' उन्होंने जान-बूझकर ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कीं, ताकि लोगों में जोश और जीवन पैदा हो सके।

मित्रो! गुरुगोविंद सिंह के दो बच्चे दीवार में चिनवा दिए गए। दो बच्चे युद्ध में थे। एक बच्चा लड़ाई के मैदान में जब मारा गया दो दूसरा बच्चा, जो उसके साथ-साथ लड़ रहा था, भागकर आया और अपने पिता जी को खबर सुनाई कि हमारे भाईसाहब तो लड़ाई में मारे गए। गुरुगोविंद सिंह ने कहा, मारे गए, तो बेटा फिर तू कैसे आ गया? उस वक्त बच्चे से जवाब नहीं बन पड़ा। वह बेचारा समझ नहीं सका कि पिता जी का क्या इशारा है? पिताजी का यह इशारा था कि एक भाई लड़ाई के मैदान में मारा गया, तुझे भी मरना चाहिए था। वह इशारा समझ गया, लेकिन उनके आगे जवाब क्या दे सकता था। उसने कहा, पिताजी! मुझे प्यास लगी थी। पानी पीने के लिए और आपको खबर सुनाने एवं सुस्ताने के लिए मैं आया था। ठीक है बेटा! जितनी देर सुस्ताना था सुस्ता लिया। हाँ और देख प्यासा है, तो बेटे बैरी के खून से अपनी प्यास बुझाना। चल यहाँ से और उसे भगा दिया।

मित्रो! वह चलता हुआ चला गया। मैं यह क्या कह रहा हूँ। ये अध्यात्म की बातें कह रहा हूँ, देव-परंपराओं की बातें कह रहा हूँ और ये बात कह रहा हूँ कि अगर दुनिया में कोई बड़े काम हुए हैं या बड़े काम हो सकते हैं, तो इससे कम में नहीं हो सकते और न इससे अधिक में हो सकते हैं।

तमाशों से उबरें, सच्चा अध्यात्म जानें

भाइयो! अपना ये कुटुंब हमने बहुत दिनों पहले बनाया था। उस समय हमारे पास बच्चे-ही-बच्चे थे। बच्चों के बारे में जो नीति अख्तियार करनी चाहिए, वो ही नीति हमारी थी। बच्चों के लिए, उन्हें देने के लिए क्या हो सकता है? पिताजी गुब्बारा देना, टॉफी देना, लेमनचूस देना। पिताजी चाबी की रेलगाड़ी लाना। हम बरफ की कुल्फी खाएँगे, आदि सारी-की-सारी माँगें, फरमाइशें-डिमांड बच्चे करते रहते हैं। ये कौन हैं? बच्चे। अध्यात्म क्षेत्र में फरमाइश करने वाले ये कौन हैं? बिलकुल बच्चे हैं, बालक हैं। इनको इसी बात की फिक्र पड़ी रहती है कि हमको दीजिए, हमको दीजिए। इसलिए ये बालक हैं। बेटे, आज से तीस साल पहले हमने बिलकुल बालकों का समूह जमा किया था और लोगों से कहा था कि हमारे पास जो कुछ है, आप ले जाइए। तब लोगों ने कहा था, पिता जी! आपके पास क्या है? गुब्बारे हैं। तो हमको दे दीजिए। बस एक गुब्बारा पेटी से निकाला, फूँक मारकर हवा भर दी और कहा ये रहा तुम्हारा गुब्बारा। एक ने कहा, पिताजी! आपने सबको देकर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

देते हैं ? हाँ बेटे, हमारी पेटी में बहुत-सी चीजें हैं। ये देख टॉफी है, ये लेमनचूस है। ये नौकरी में तरक्की है। ये दमे की बीमारी का इलाज है।

ये क्या है ? ये बेटे सब तमाशे हैं, खेल-खिलौने हैं। ये सब बहुत दिनों पहले थे। अब हमारी दुकान बड़ी हो गई है और अब मैं आपसे दूसरे तरीके से उम्मीद करता हूँ। अब आप गुब्बारे माँगते हैं, तो मैं नाराज होता हूँ और आप से कहता हूँ कि अब आप तीस साल के हो गए हैं। आपको शर्म नहीं आती, जो गुब्बारे माँगने आए हैं। तो पिताजी! मुझे क्या करना चाहिए? बेटे अब हम बुड्ढे हो गए हैं और तू कमाने लगा है। तुझे साढ़े छह सौ रुपये मिलते हैं। देख, हम ये फटा हुआ पाजामा पहनते हैं, हमारे लिए नया पाजामा ला दे और देख हम बुड्ढे हो गए हैं और हमको कम दिखाई पड़ता है। डॉक्टर ने कहा है कि आँखों को टेस्ट कराना और चश्मा खरीद देना। डॉक्टर ने बताया था कि अट्ठाईस रुपये का चश्मा आएगा। बेटे, निकाल अट्ठाईस रुपये का चश्मा। बेटे, निकाल अट्ठाईस और हमारी आँखों का टेस्ट कराकर ला। चश्मा खरीदकर ला। अरे! पिताजी, आपने तो 'टर्न' ही बदल दिया। हाँ बेटे, बदल दिया। पहले हम गुब्बारे दिया करते थे, अब हम चश्मे के लिए पैसे माँगते हैं। ये क्या बात हो गई ? ये तो बिलकुल उलटा हो गया। हाँ बेटे हमारा ही क्या उलटा हो गया, तेरा भी उलटा हो गया। जब तू गोदी में था तब नंगा फिरता था और अब तो तू कच्छा भी पहनता है, पैंट भी पहनता है। तूने बदल दिया कि नहीं ? हाँ महाराज जी! मैंने तो बदल दिया। बेटे तू बदल गया, तो हम भी बदल गए।

मित्रो! अब हमारा कुटुंब जवान हो गया है। हम जवान आदमियों से अपेक्षा करते हैं देने की। अब हम माँगने की अपेक्षा करते हैं और हमारा हक है कि हम आपसे माँगें। अब आप से माँगा गया है और माँगना चाहिए। बेटे, जहाँ कहीं भी वास्तविकता का उदय हुआ है, जहाँ कहीं भी जवानी आई है, जहाँ कहीं भी प्रौढ़ता आई है, जहाँ कहीं भी विवेकशीलता आई है, वहीं परंपरा पलट जाती है। अब हम आपसे लेने की परंपरा आरंभ करते हैं, क्योंकि आप अब जवान हो गए हैं। खासतौर से इस जमाने में, जिसमें हम और आप जिंदा हैं। यह जीवनभर का सवाल है। आज मनुष्य जाति जहाँ चली जा रही है, आदमी का चिंतन जिस गहराई के गड्ढे में धँसता हुआ चला जा रहा है, ये ठीक वही परंपराएँ हैं, जो कि रावण के जमाने में आई थीं। इसमें वह मनुष्यों को मारकर हड्डियों के ढेर लगा देता था। आज हड्डियों के ढेर तो नहीं लगाए जाते, पर हम हड्डियों के ढेर को चलते-फिरते आदमियों के रूप में देख सकते हैं। हड्डियाँ जो जिंदा तो हैं, पर जिनको चूस लिया गया है। मैं समझता हूँ कि प्राचीनकाल में ज्यादा भले आदमी थे और शरीफ आदमी थे। कौन से आदमी ? वे जो मारकर डाल देते थे, उनको मैं ज्यादा पसंद करता हूँ, क्योंकि तब आदमी को मारकर खत्म कर देते थे, लेकिन आज का तरीका बहुत गंदा है। आज तो आप रुला-रुलाकर मारते हैं, कोंच-कोंचकर मारते हैं, तरसा-तरसाकर मारते हैं। ये गंदा तरीका है। रावण के जमाने में तब भी अच्छा तरीका था, सीधे खत्म कर देने का।

आज की विडंबना

मित्रो! आज हम क्या करते हैं ? आज हम अपनी स्वार्थपरता के कारण हर एक को चूसते हैं। किसको चूसते हैं ? जो कोई भी हमारे पास आता है, हम उसको चूस जाते हैं, उसे जिंदा नहीं छोड़ना चाहते, केवल उसकी हड्डियाँ रह जाती हैं। उदाहरण के लिए, जैसे हमारी बीबी। हमने अपनी बीबी को चूस लिया है। अब वह सिर्फ हड्डी का ढाँचा मात्र है। कैसे हुआ ? बेटे, जब वह अपने बाप के घर से यहाँ आई थी, तो यह उम्मीद लेकर आई थी कि हमारा स्वास्थ्य अच्छा बनाया जाएगा। हमको पढ़ाया जाएगा, शिक्षित किया जाएगा और यह उम्मीद लेकर आई थी कि बाप हमको जितना स्नेह देता है, जितनी हमें सुविधा देता है, हमारा पति और भी अधिक प्यार और सुविधा देगा। लेकिन हमने उसको चूस लिया। हर साल बच्चे पैदा किए। कामवासना-पूर्ति की वजह से हमने उसके पेट में से पाँच बच्चे निकाल दिए। पाँच बेटियाँ हो गईं, अभी एक बेटा और होना चाहिए। अब वह बेचारी लाश रह गई है। बार-बार हमारे पास आती रहती है और कहती रहती है कि हमारे पेट में दरद होता है, कमर में दरद होता है और हमारे सिर में दरद होता है। मैं कहता हूँ कि बेटी तू जिंदा है, भगवान् को बहुत धन्यवाद दे कि ये पिशाच तुझे अभी तक जिंदा छोड़े हुए है। इसका बस चले तो तुझे खाकर तेरी जिंदगी खत्म कर दे, चांडाल कहीं का। इसे तो अभी और बच्चे चाहिए।

मित्रो! उस बेचारी के पास न मांस है, न रक्त है शरीर में और न उसके पास जान है। उसके पास कुछ भी नहीं है। न जाने किस तरीके से साँस ले रही है और कैसे दिन बिता रही है। नहीं साहब! मेरा तो वंश चलना चाहिए। इस राक्षस का, दुष्ट का वंश चलना चाहिए ? ये क्या है ? ये बेटे, कसाईपन है। आज हर आदमी कसाई होता हुआ चला जा रहा है। आज हम देखते हैं कि न हमको अपनी बीबी के प्रति दया है, न अपने माँ-बाप के प्रति दया है, न अपने बच्चों के प्रति दया है। रोज बच्चे पैदा कर लेते हैं। इस बात की लिहाज-शर्म नहीं है कि आखिर इनको पढ़ाएगा कौन ? शिक्षा के लिए पैसा कहाँ से आएगा ? इनको खेलने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के लिए रेल कहाँ से आएगी? हमको तो बस काम-वासना से प्यार है। हम तो चौरासी बच्चे पैदा करेंगे। आज आदमी चांडाल होता हुआ चला जा रहा है।

मित्रो! आज हमें किसी के ऊपर दया नहीं है। हमारे पास कहीं भी धर्म नहीं है। हमारे पास कहीं भी ईमान नहीं है। आज आदमी इतना खुदगर्ज होता हुआ चला जा रहा है कि मुझको ये मालूम पड़ता है कि हमारी खुदगर्जी का पेट इतना बढ़ता हुआ चला जा रहा है कि इंसानों से हमारा गुजारा नहीं हो सकता। अब जो कोई भी सामने आएगा, हम उसको अपनी खुदगर्जी का शिकार बनाएँगे। किसको बनाएँगे? देवी-देवताओं में से जो भी हमारे चक्कर में फँसेगा, हम उसको खत्म करके रहेंगे। देवताओं के ईमान को खत्म करके उन्हें बेईमान बनाकर रहेंगे। संतोषी माता हमारे चक्कर में आ जाएँगी, तो उनको बदनाम करके रहेंगे। हम उन्हें दो बकरे खिलाएँगे और ये कहेंगे कि हमको डकैती में फायदा करा दो। हम उसको बदनाम कराकर रहेंगे। हर एक को हम बदनाम कराएँगे। जो कोई भी हमारा गुरु होगा, हम उसको बदनाम कराकर रहेंगे। हम कहेंगे कि हमारा गुरु ऐसा है, जिसको न इंसाफ की जरूरत है, न उचित-अनुचित की जरूरत है। जो कोई भी हाथ जोड़ता है, जो कोई भी सवा रुपये देता है, उसी की मनोकामना पूरी कर देता है।

दुर्मतिजन्य दुर्गति से हुआ आदमी का अवमूल्यन

बेटे, हम कहाँ जा रहे हैं और न जाने क्या हो रहा है? हम जिस जमाने में रह रहे हैं, उसमें आदमी न जाने क्या होने जा रहा है? अगर आदमी इसी तरीके से बना रहा, तो उसका परिणाम क्या होगा? अभी जितनी ज्यादा मुसीबतें आई हैं, आगे उससे भी ज्यादा आएँगी। इससे तो अच्छा होता अगर युद्ध हो जाता और दुनिया खत्म हो जाती, लेकिन हमारी स्वार्थपरता जिंदा रही और आज हम पर हावी होती चली जा रही है। आदमी, जैसा निष्ठुर, जैसा नीच, जैसा स्वार्थी होता हुआ चला जा रहा है, अगर यही क्रम जारी रहा तो मैं आपसे कहे देता हूँ कि आदमी-आदमी को मार करके खाएगा। पकाकर खाएगा कि नहीं, मैं नहीं जानता, लेकिन आदमी-आदमी से डरने लगेगा। अभी तक हमको भूत का डर लगता था, साँप का डर लगता था, चोरों का डर लगता था, लेकिन अब हमको मनुष्यों का डर लगेगा। इतना तो अभी ही हो गया है कि आदमी की कीमत उसके बिस्तर से कम हो गई है। आज आप बिस्तर लेकर धर्मशाला में जाते हैं, तो धर्मशाला वाला कहता है, आइए साहब! कमरा खाली है, लेकिन अगर आपके पास बिस्तर नहीं है, अटैची नहीं है और आप एक थैला लेकर जाते हैं और कहते हैं कि साहब! धर्मशाला में ठहरने की जगह है कि नहीं? धर्मशाला वाला कहता है कि आपके साथ और कौन-कौन हैं। आपका सामान कहाँ है? अरे भाई! गरमी के दिन हैं, सामान की क्या जरूरत है? अरे साहब! आजकल बड़ी भीड़ है। सारी जगह भरी हुई है। कहीं जगह नहीं है। आप ऐसा कीजिए, चौथे नंबर की धर्मशाला है, वहाँ चले जाइए। वहाँ जाते हैं, तो वह कहता है कि अरे साहब! आप अब आए हैं? आपसे पहले पच्चीस आदमियों को मना कर दिया है कि यहाँ जगह नहीं है। ऐसा क्यों होता है? क्यों मना करते हैं? यह आदमी का मूल्य, आदमी की प्रामाणिकता, आदमी की इज्जत को बताता है कि आदमी की कीमत से धर्मशाला के बिस्तर की कीमत ज्यादा है। आज आदमी का मूल्य इतना गिर गया है। कल आदमी और भी भयंकर होने वाला है।

मित्रो! आदमी जब कल और भयंकर हो जाएगा, तब वह भूत बन जाएगा, पिशाच बन जाएगा। तब आदमी को देखकर आदमी भागेगा और कहेगा, "आदमी आ गया' चलो भागो यहाँ से। वह देखो आदमी खड़ा है।" कल यही परिस्थितियाँ पैदा होने वाली हैं। यह हमारे मन का घिनौनापन है। अभी हमारे ऊपर स्वार्थ छाया हुआ है। हम समाज के किसी काम में भाग लेना नहीं चाहते। हम समाज के लिए कोई सेवा करना चाहते हैं, तो पहले यह देखते हैं कि सेवा के बहाने हमारा उल्लू सीधा होगा कि नहीं होगा। हमारा उल्लू सीधा होता है, तो बेटे हम संस्था में जाते हैं, कमेटी में जाते हैं, प्रेसीडेंट बनते हैं, मीटिंग में जाते हैं, अगर उल्लू सीधा नहीं होता है, तो कहते हैं कि समाज के जीवन से हमारा कोई लगाव नहीं है, कोई संबंध नहीं है।

मित्रो! लोकहित के लिए हमारे मन खाली होते चल गए। उदारता हमारे मन में से निकलती चली जा रही है और निष्ठुरता हमारे रोम-रोम में घुसती चली जा रही है। परिणाम क्या होगा? आप देख लेना, इसका परिणाम बहुत भयंकर होगा। कलियुग के बारे में पुस्तकों में जो बताया गया है, उसको मैं सही मानता हूँ। आदमी का चिंतन जैसा और जितना घटिया होगा, मुसीबतें उसी हिसाब से आएँगी। आज भगवान् की दी हुई मुसीबतें हमारे पास आती हुई चली जा रही हैं। बीमारियाँ हमारे पास बराबर बढ़ रही हैं। डॉक्टर बढ़ रहे हैं, अस्पताल बढ़ रहे हैं, लेकिन बीमारियों का दौर अभी और बढ़ेगा। डॉक्टर कितने बढ़ गए हैं, भगवान् करे डॉक्टर दोगुने-चौगुने हो जाएँ। लेकिन बीमारियों का क्या हो जाएगा? बीमारियाँ अच्छी नहीं हो सकतीं। बीमारियाँ सौ गुनी ज्यादा होंगी, हजार गुना ज्यादा होंगी। वे तब तक अच्छी नहीं हो सकतीं, जब तक आदमी आध्यात्मिकता के रास्ते पर लौटकर नहीं आएगा, तब तक आदमी का पिंड बीमारियों से नहीं छूटेगा और घर का नरक? बेटे घर का नरक भी दूर नहीं हो सकता।

(शेष अगले अंक में)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

त्याग-बलिदान की संस्कृति—देव संस्कृति—5

(समापन किश्त)

त्याग-बलिदान ही भारतीय संस्कृति की मूल थाती रही है, इसी के बलबूते सतयुगी समाज की परिकल्पना की गई है। परमपूज्य गुरुदेव की विगत पाँच अंकों से प्रकाशित अमृतवाणी की यह समापन किश्त प्रस्तुत है।

अगले दिन और खराब होंगे

गुरुजी! हमारे घर का नरक तो दूर हो जाएगा। कैसे हो जाएगा? गुरुजी! हमने तो अपने चारों बच्चों को चार-चार सौ रुपया महीना देकर देहरादून के पब्लिक स्कूल में भेज दिया है। उससे क्या हो जाएगा? उससे गुरुजी! हमारे बच्चे ऐटीकेट सीखकर के आएँगे। ऐटीकेट क्या होता है? ऐटीकेट उसे कहते हैं, जब कोई आदमी आए और घर में पानी पीने को माँगे, तो उसको कहना चाहिए, ''थैंक यू वैरी मच।'' तो क्या इसी को ऐटीकेट कहते हैं? हाँ इसी को कहते हैं। हमने चार सौ रुपये महीने पर बोर्डिंग स्कूल में अपने बच्चे को दाखिल करा दिया है। वह क्रीज किया हुआ पैंट पहनेगा। हमारा लड़का अच्छा बनेगा। नहीं बेटे, तेरा लड़का अच्छा नहीं बन सकता, क्योंकि उसके भीतर, उसकी जीवात्मा में भाइयों के लिए, बहनों के लिए, माता-पिता के लिए जो प्रेम और सेवा की वृत्ति होनी चाहिए, वह कहाँ से आएगी? बेटे, हमको ये मालूम पड़ता है कि अगले दिन बहुत बुरे आने वाले हैं। अगले दिनों युद्ध के दौर भी आ सकते हैं, बीमारियों के दौर भी आ सकते हैं। टेंशन बढ़ता हुआ चला जा रहा है। क्यों महाराज जी! सबको टेंशन हो जाएगा? शायद सबको हो जाए। अमेरिका में तो छाप भी दिया गया है कि सिगरेट पीजिए, टेंशन बुलाइए। सिगरेट पीजिए, कैंसर बुलाइए। तो क्या सबको टेंशन हो जाएगा? हाँ। अगर टेंशन न हुआ तो और बीमारी हो जाएगी। डायबिटीज हो जाएगी। नींद न आने की शिकायत हो जाएगी। पेप्टिक अल्सर हो जाएगा और बहुत-सी बीमारियाँ हैं, जो आदमी को धर दबोचेंगी।

ये कैसे हो जाएँगी? मित्रो! आदमी की जो घटियाँ वृत्तियाँ हैं, वे न केवल आदमी के शरीर को, वरन् उसके ईमान को और अंत:करण को गलाती और जलाती चली जाएँगी। घर नरक बनते चलते जाएँगे। नहीं साहब! हमारे बेटे की बहू तो एम. ए. पास है। तो बेटे, तेरे घर में जल्दी नरक आएगा। हमारे बेटे की बहू तो इंटर पास है। तो तेरे घर में थोड़ी देर भी हो सकती है। अरे साहब! हमारी औरत तो बिना पढ़ी-लिखी है। तो तेरे घर और भी कुछ ज्यादा दिन तक शांति रह सकती है। लेकिन अगर तेरी बहू एम. ए. पास है, तो बेटे, तेरे घर में नरक जल्दी आएगा, तू देख लेना।

मित्रो! ऐसा क्यों होता चला जा रहा है? शिक्षा की दृष्टि से, धन की दृष्टि से, अमुक की दृष्टि से, सब तरह से आदमी संपन्न होता चला जा रहा है, लेकिन ईमान की दृष्टि से, अंतरंग की दृष्टि से इतना खोखला होता चला जा रहा है कि उसके ऊपर मुसीबतें आएँगी। नेचर हमारे ऊपर मुसीबतें पटक देगी। वह हमें क्षमा करने वाली नहीं है। हमारे शरीर का स्वास्थ्य सुरक्षित रहने वाला नहीं है। हमको किसी से प्यार-मोहब्बत रहने वाली नहीं है। हम मरघट के प्रेत-पिशाच के तरीके से अब जिंदा रहने वाले हैं। मरघट के प्रेत-पिशाच में एक ही बात होती है कि न तो कोई उसका होता है और न वह किसी का होता है। प्रेत-पिशाचों में क्या फर्क होता है? बेटे, एक ही होता है, हर भूत के मन की ये बनावट होती है कि न वह किसी का और न कोई उसका। तो महाराज जी! आपने देखे हैं कि भूत कैसे होते हैं? हाँ, हमने देखे हैं और आपको भी दिखा सकते हैं।

चलते-फिरते प्रेत-पिशाच

ये भूत आपको कहाँ मिलेंगे? मित्रो! आप पाश्चात्य देशों में चले जाइए। वहाँ आपको प्रेत मिलेंगे, पिशाच मिलेंगे। कैसे? जो अशांत-ही-अशात हैं। पैसा जिनके पास अंधाधुंध है, लक्जरी जिनके पास बहुत सारी है, टेलीविजन है, पीने को फलों का जूस है, लेकिन वे इतने अधिक अशांत हैं, टेंशन में हैं कि प्रेत-पिशाचों से कम नहीं हैं। न कोई उनका और न वे किसी के। न बीबी उसकी, न भैया उसका। दोनों-के-दोनों वेश्या और भड़ुवे हैं। जब

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तक दोनों आते हैं, तब तक तमाशा दिखाते हैं और जब मन भर जाता है, तो एक-दूसरे को लात मारकर भगा देते हैं। हम ये किसकी बात कह रहे हैं? बेटे, इसी को पिशाच कहते हैं। पाश्चात्य देशों में यही होता है।

मित्रो! इसका परिणाम क्या होगा? इसका परिणाम यह होगा कि हमारा अंतरंग खोखला होता चला जाएगा। पैसा बढ़ेगा, तो हम क्या कर सकते हैं? शिक्षा बढ़ेगी, सभ्यता बढ़ेगी, तो हम क्या कर सकते हैं? दौलत बढ़ेगी तो हम क्या कर सकते हैं? मित्रो! इससे आदमी के ऊपर मुसीबतें ही आएँगी। हम और आप जिस जमाने में रहते हैं, बेटे, हमारे प्राण निकलते हैं उसे देखकर। जब हम भविष्य की ओर देखते हैं, विज्ञान की ओर देखते हैं, तब हमें खुशी होती है कि हमारे बाप-दादे कच्चे मकानों में रहते थे और हम पक्के में रहते हैं। हमारे बाप-दादों में से कोई पढ़ा लिखा नहीं था और हम सब पढ़े-लिखे हैं। सुविधाओं को देखते हैं, तो हमारे पास टेलीफोन है और बहुत सारी चीजें हैं, लेकिन जब उनके साफ-सुथरे जीवन को, उज्ज्वल चरित्र को देखते हैं, तो उस दृष्टि से हम किस कदर दिनों दिन घटते हुए चले जा रहे हैं, यह स्पष्ट दिखाई देता है।

विवेकानंद के पास रामकृष्ण परमहंस जाया करते थे और कहते थे कि बेटा हमारा कितना काम हर्ज होता है? तू समझता नहीं है क्या? महाराज जी मैं बी. ए. करूँगा, एम. ए. करूँगा, नौकरी करूँगा। नहीं बेटे, तू नौकरी करेगा, तो मेरा काम हर्ज हो जाएगा और हम जिस काम के लिए आए हैं और तू जिस काम के लिए आया है, सो उसका क्या होगा? नहीं महाराज जी! देखा जाएगा, पहले तो मैं नौकरी करूँगा। नहीं बेटे, ऐसा नहीं हो सकता। एक दिन रामकृष्ण परमहंस रोने लगे। उन्होंने कहा, बेटे तू नौकरी करेगा, तो मेरा काम हर्ज होगा। मित्रो! विवेकानंद चले गए और रामकृष्ण ने उन्हें क्या-से-क्या बना दिया। कई आदमी कहते रहते हैं कि गुरुजी! हमको आशीर्वाद देकर आप विवेकानंद बना सकते हैं? बेटे, हम आपको बना सकते हैं। इसके लिए हम व्याकुल भी हैं और लालायित भी, लेकिन पहले तू कीमत तो चुका। नहीं, महाराज जी! कीमत तो नहीं चुकाऊँगा। आप तो आशीर्वाद दीजिए। बेटे, जो तू आशीर्वाद-ही-आशीर्वाद माँगता है, वह जीभ की नोंक से कह देने भर से आशीर्वाद नहीं हो जाता। उसे आशीर्वाद नहीं कहते। आशीर्वाद के लिए आदमी को अपना पुण्य देना पड़ता है, मनोयोग देना पड़ता है, तप देना पड़ता है, श्रम देना पड़ता है। नहीं, महाराज जी! जीभ हिला देते हैं, सो वही आशीर्वाद हो जाता है।

आशीर्वाद इतना सस्ता नहीं

बेटे, तू जीभ हिलाकर के आशीर्वाद माँगता है। मैं समझता हूँ तू जीभ हिलाकर के ही राम के नाम को भी हजम करना चाहता है, मंत्र को हजम करना चाहता है। जीभ को हिलाकर और न जाने क्या-क्या काम कराना चाहता है। मंत्र जपने से देवता मिल सकते हैं, स्वर्ग मिल सकता है, तो फिर गुरुजी का आशीर्वाद क्यों नहीं मिल सकता? जीभ से सब चीजें मिल सकती हैं। हाँ, महाराज जी! जीभ की नोंक हिलाइए फिर देखिए, क्या करामात आती है। हाँ बेटे, जीभ की नोंक हिलाकर वहाँ चला जाना बैंक में और जीभ हिला देना—दीजिए दो हजार रुपये। देखें कहाँ से लाएगा जीभ हिलाकर। बेटे, तुझे सब जीभ ही-जीभ दिखाई पड़ती है और कोई दूसरी चीज नहीं दिखाई पड़ती। गुरुजी का आशीर्वाद भी जीभ और हमारा भजन भी जीभ, सब जीभ-ही-जीभ। क्रिया की जरूरत ही नहीं पड़ेगी? हाँ गुरुजी! क्रिया की क्या जरूरत है। आप तो जीभ हिला दीजिए, बस हो जाएगा, आशीर्वाद। बेटे, ऐसा कोई आशीर्वाद नहीं है, न था और न कभी होगा।

युग की पुकार सुनिए

मित्रो! फिर क्या करना पड़ेगा? अब मैंने आपको इसलिए बुलाया है कि हमको आपकी आवश्यकता आ पड़ी है। हम तीस साल से कुटुंब बनाकर रह रहे थे और तीस साल से आपको बुला रहे थे। अब हम आपसे पूछते हैं कि क्या आपके लिए ऐसा संभव है कि आप अपने जीवन में दैवी संपदा का खरच और सबूत दे पाएँ। क्या आपके लिए यह संभव है कि आप अपने जीवन में त्याग का, सेवा का, बलिदान का, परोपकार का और परमार्थ का कोई प्रमाण दे सकते हैं कि नहीं? मित्रो! अभी ये लड़कियाँ गा रही थीं और मेरे मन में भी लहर आ रही थी। वे ग रही थीं, "जरूरत आ पड़ी है, काल की भी चाल मोड़ो तुम।" ये समय ने पुकार की है, युग ने पुकार की है, संस्कृति ने पुकार की है, देश ने पुकार की है, धर्म ने पुकार की है, मानवी सभ्यता ने पुकार की है कि आपके पास कुछ है, तो आप दीजिए। गुरुजी हमारे पास नहीं है। ठीक है, जहाँ तक पैसे का सवाल है, मैं जानता हूँ कि आपके पास पैसा होता तो शायद आप मेरे पास न आते। मैं जानता हूँ आपकी गरीबी को और परेशानी को, पर इस गरीबी के बीच में भी मेरी ये आँखें चमकती हैं और एक चीज के बारे में दृष्टि डालती हैं, तो पाती हैं कि अभी भी आपके पास मन है, आपके पास कलेजा है। आपके पास दिल है। अगर आप अपने मन, अपने हृदय और अपने श्रम की बूँदें

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लगा सकते हों, तो इस परीक्षा की घड़ी में आपका आना जीवन धन्य बनाने के लिए पर्याप्त है।

मित्रो! अब परीक्षा की घड़ी सामने आ गई है। इसको हमने पुनर्गठन योजना कहा है। इसके कितने पहलू हैं, कल हमने इस बारे में बताया था और फिर आज बताएँगे कि इसके क्या परिणाम आ सकते हैं? हम अपने जवान कुटुंब से क्या कराना चाहते थे और क्या करा सकते हैं? क्या संभावना है? हाँ, सौ फीसदी संभावना है। महाराज जी! आप तो ऐसे ही सपने देखते हैं। हाँ बेटे, हमने सपने ही देखे हैं और हमारे सपने पूरे होकर रहे हैं। हमने सपने देखे, जब गायत्री तपोभूमि नहीं बनी थी। जब हमारे पास मात्र छह हजार रुपये थे, तब हमने 'गायत्री तपोभूमि' का एक नक्शा छापा था अखण्ड ज्योति पत्रिका में, तो लोगों ने कहा, क्यों साहब! आपने तो बड़ा लंबा-चौड़ा सपना छाप दिया। हाँ भाई ये सपना है। गायत्री तपोभूमि हम ऐसे ही बनाएँगे। महराज जी! ये तो कितनों रुपयों की हो जाएगी? आपके पास इतने रुपये कहाँ हैं। देख बेटे, मेरे पास छह हजार रुपये हैं। इतने से नहीं बनेगी तो छह लाख से बन जाएगी।

मित्रो! हमारा ख्वाब और हमारा सपना पूरा होकर के रहा। गायत्री तपोभूमि जो बनी है, वह उससे तीन-चार साल पहले छपे हुए गायत्री तपोभूमि के चित्र से हू-बहू मिलती हुई बनाई गई है। हमारे सपने युग को बदलेंगे, नया जमाना लाएँगे। दैवीय सभ्यता और दैवीय संपदा की फिर से स्थापना करेंगे। हम असुरता को चैलेंज करेंगे। क्यों? क्योंकि हम मनुष्यता से प्यार करते हैं, क्योंकि हम मानवी भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहते हैं, क्योंकि हमको अपनी नई पीढ़ियों के बारे में बड़ी उमंग है। हम अपनी नई पीढ़ियों को बहुत प्यार करते हैं। जिन मुसीबतों से हम गुजर रहे हैं, अपनी नई पीढ़ियों को गुजरवाना नहीं चाहते, क्योंकि हम बच्चों को बहुत प्यार करते हैं।

इसलिए मित्रो! हम नई सभ्यता लाने के लिए और नया युग लाने के लिए प्रयत्न करते हैं और उस प्रयत्न के लिए आपसे सहयोग माँगते हैं। पुनर्गठन योजना हमारे और आपके समय की परीक्षा की एक कसौटी है। इसमें हम आपका पी. एम. टी. के लिए इम्तिहान लेते हैं, क्योंकि अगले चरण में, जिनमें हमको ब्रह्मवर्चस की स्थापना भी करानी है, अपने अनुदान भी देने हैं, आपके यश भी-अजर-अमर बनाने हैं, आपकी जीवात्मा में शक्ति का संचार भी करना है। इसके लिए यह देखना है कि आप लोगों में से कुछ में जान है, जिसको 'दैवीय सभ्यता' कहते हैं, 'दैवीय संपदा' कहते हैं। उसमें त्याग-बलिदान की बात होती है। क्या उसके लिए आप कुछ कर पाएँगे?

दैवीय संपदा का विस्तार करें

साथियो! दैवीय सभ्यता जिसका अर्थ भजन करना नहीं होता, वरन् जीवन को दैवीय सभ्यता के अनुरूप ढाल लेना होता है। छोटे-से अनुदान के रूप में से हर एक का हमने समय माँगा है। हमने जो कार्यक्रम बनाए हैं, सब एक उद्देश्य से बनाए हैं। वह सब इसलिए बनाए हैं कि हममें से कोई भी आदमी निष्क्रिय न रहने पाए। हर एक से कहा है कि अगर आपके अंदर निष्क्रियता है, तो उसे दूर कीजिए और अपने अंदर सक्रियता का विकास कीजिए। अपने युग निर्माण परिवार के हर सदस्य को हम सक्रिय देखना चाहते हैं। किसके लिए? जो हमारा मिशन है, उसके लिए। गुरुजी! आपने किसको क्या-क्या सक्रियता सौंपी है? बेटे, हमने उन आदमियों के लिए भी, जो घोर व्यस्त हैं, कार्य सौंपा है। जिनके पास योग्यता है, उनको भी कार्य सौंपा है और कहा है कि आप इस विचारधारा को फैलाने में योगदान दीजिए, मदद कीजिए।

महाराज जी! हम आपकी मदद कैसे करें? बेटे, आपके पास जो हमारी रिसर्च है, जिसको आपने माना है, जो आप हमारी पत्रिकाएँ पढ़ते हैं, उनको आप पाँच आदमियों को पढ़ाइए। अगर आप पुस्तकालय नहीं चला सकते हैं, तो कोई बात नहीं, लेकिन आप एक पत्रिका को पाँच आदमियों को पढ़ा सकते हैं। इससे हमारा मिशन पाँच गुना अधिक दो महीने के भीतर हो जाएगा। इस तरह जितना हमने तीस साल में किया है, उतना आप एक साल में कर सकते हैं।

गुरुजी! और हम क्या कर सकते हैं? बेटे, कब से हमारे झोला पुस्तकालय चल रहे हैं, चल पुस्तकालय चल रहे हैं। इन्हें आप दो घंटे भी चला दिया करें, तो मजा आ जाए। दो घंटे का उदाहरण मैं अक्सर देता रहता हूँ। हमारे यहाँ सुलतानपुर के कई बच्चे आए हुए हैं। वहीं के एक वकील हैं लखपति राय। वे अभी भी हैं, यद्यपि अब बुड्ढे हो गए, शरीर उतना काम नहीं करता। लेकिन अब से दस साल पहले उनका नियम था कि वे चल पुस्तकालय की धकेलगाड़ी लेकर चल पड़े बाजार में, लीजिए साहब पुस्तक पढ़िए। लीजिए हमारे गुरुजी का साहित्य पढ़िए, युग निर्माण का साहित्य पढ़िए। जितने भी मुवक्किल थे, दुकानदार थे, सबको साहित्य देते हुए चले जाते थे। सारे-के-सारे सुलतानपुर में उन्होंने इस तरह रौब गाँठ दिया।

एक अकेले का पुरुषार्थ

एक बार मैं सुलतानपुर गया। पहले भी कई बार जा चुका था। लोग पाँच कुंडीय यज्ञ कराते थे, तब सौ पचास आदमी इकट्ठा हो जाते थे। मुझे याद है, एक- दो बार मेरे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रवचन भी हुए थे। वकील साहब ने जब मुझसे कहा, गुरुजी! एक बार आप आ जाएँ, तो मजा आ जाए। मैंने कहा, क्या आएँगे आपके यहाँ, पाँच कुंडीय यज्ञ ही तो करते हैं? नहीं, गुरुजी! अबकी बार बड़ी जोर से करेंगे। कैसे करेंगे? सौ कुंड का यज्ञ करेंगे। मित्रो यज्ञ करने का निर्धारण होने के बाद चलते समय मैंने उनसे कहा कि जाने से पहले गायत्री तपोभूमि के लिए कुछ पैसे छोड़ जाने का हमारा मन है। क्या आप कुछ पैसे इकट्ठा करा सकते हैं? हाँ गुरुजी! हम करा देंगे। कितना? पच्चीस हजार का तो हमारा वायदा है, फिर आगे आपका भाग्य है।

मित्रो, उन्होंने क्या काम किया कि सारे शहर को हमारा साहित्य पढ़ा दिया और हर एक व्यक्ति से ये कहा, हमारे गुरुजी जिनका कि आपने साहित्य पढ़ा है, क्या आपको पसंद है? सबने एक स्वर से कहा कि अरे भाई! पढ़ा ही क्या, हम तो पगला गए हैं, उनके विचारों को पढ़कर। हम गुरुजी को बुलाकर लाएँ, तो आप उनके लिए कुछ खरच करेंगे क्या? उनको बुलाएँ, तो आप अपना कुछ समय हर्ज करेंगे क्या? हाँ साहब! खरच करेंगे। मित्रो! उन्होंने तीन-चार दिन का कार्यक्रम रखा था। जब मैं वहाँ गया, तो मैंने अचंभा देखा। देखा कि सुलतानपुर, जो कि छोटी-सी बस्ती है, छोटा-सा जिला है, वहाँ उन्होंने लगभग पचास हजार आदमियों के बैठने के लिए पांडाल बनाया था। मैं सोचता हूँ, उसमें एक लाख से कम आदमी नहीं थे। इतना बड़ा विशाल आयोजन देखकर मैं अचंभे में पड़ गया कि ये सुलतानपुर है या और कोई शहर है। इसकी तो आबादी ही इतनी है। दूर-दूर के देहातों से लोग आए थे।

मित्रो! मैं यह एक व्यक्ति की बात कह रहा हूँ कि एक अकेले आदमी ने क्या-क्या कर डाला। एक आदमी की सक्रियता का परिणाम ये हुआ कि उसने सारे सुलतानपुर को जगा दिया था। तीन-चार दिन यह चमत्कार मैंने देखा और जब विदा हुए, तो मैं समझता हूँ कि उन्होंने हमको यज्ञ में से बचाकर पैंतीस-चालीस हजार रुपये दिए थे। यह मैं एक आदमी की करामात कहता हूँ, जिसमें उसके सहयोगी भी शामिल थे। उन्होंने भी सहयोग किया, पर मैं बात एक की कहता हूँ। आपसे पूछता हूँ कि आप क्या ये काम नहीं कर सकते? आप एक घंटा समय नहीं दे सकते? दो घंटे समय नहीं दे सकते? कलेजा है आप में? हृदय है आप में? हिम्मत है आप में? जीवन है आप में? निष्ठा है आप में? श्रद्धा है आप में? अगर ये नहीं हैं, तो ये बहाने मत बनाइए कि शाखा बंद हो गई है। कोई आता नहीं है। सबमें लड़ाई हो गई है। सबमें फूट फैल गई है। गुरुजी! कोई सुनता नहीं है। कमेटी में कोई आता नहीं है। धूर्त, बेकार की बातें बकता है, वह नहीं करता, जो मैं कहता हूँ। कितनी बार एक ही बात को कहता है। मैं पूछता हूँ तू क्या करता है?

मिशन—नया युग-मानव का भविष्य

मित्रो! जब एक आदमी लड़ने के लिए खड़ा हो जाए, तो क्या कर सकता है, यह बात मैंने एक उदाहरण देकर बताई। ऐसे मैं ढेरों उदाहरण बता सकता हूँ आपको। एक आदमी सक्रिय हो गया, तो उसने सारे इलाके को सक्रिय कर दिया। आपसे मैं पूछता हूँ कि आपके अंदर अगर निष्ठा है, तो क्या आप समय नहीं दे सकते मिशन के लिए? मिशन से मतलब 'नया युग' से है। मिशन से मतलब मानवी सभ्यता, मानवी भविष्य। इस पर आपकी आस्था है या कुछ भी नहीं है? नहीं, महाराज जी! हमारी तो बेटे पर आस्था है और पैसे पर आस्था है। तो बेटे, मैं तुझे बालक मानूँगा और ये कहूँगा कि अध्यात्म की किरणें तेरे पास नहीं आईं। अध्यात्म की किरणें जब भी आई हैं, तो देवत्व को आसुरी सभ्यता खिलाफ खड़ा होना पड़ा है। हमारे अंदर जब गायत्री मंत्र आया, तो साथ में देवत्व भी आया। देवत्व और गायत्री मंत्र दोनों ने मिलकर के चमत्कार दिखाया। बेटे, तू तो गायत्री मंत्र लिए ही फिरता है, देवत्व कहाँ है तेरा? देवत्व तो है ही नहीं। केवल मंत्र-ही मंत्र रटने चला है।

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? मैं चाहता हूँ कि हमारी परीक्षा की घड़ी में आप लोग साथ दें। पुनर्गठन योजना आपकी एक परीक्षा है, ब्रह्मवर्चस् के आधार पर और दूसरे आधारों पर यह आपकी परीक्षा है। हम अपने कुटुंब को कुछ और मजबूत बनाना चाहते हैं, सक्षम बनाना चाहते हैं, लेकिन हम क्या कर सकते हैं? आप चाहें तो झोला पुस्तकालय के माध्यम से, चल पुस्तकालय के माध्यम से इसे अकेले ही चला सकते हैं। तीर्थयात्राओं के माध्यम से, स्लाइड प्रोजेक्टर के माध्यम से अकेले ही चला सकते हैं। यह मैं एक व्यक्ति की बात कहता हूँ। अब हम नए किस्म के स्लाइड प्रोजेक्टर बनाने वाले हैं। अब कुछ ऐसी योजना बना रहे हैं, जिससे ये सब चीजें तीन सौ-साढ़े तीन सौ के भीतर ही तैयार हो जाएँ। आप तीन सौ रुपये खरच कीजिए और हर घर में हमारा सिनेमा दिखाइए।

मित्रो! यह मैं अकेले की बात कहता हूँ, 'एकला चलो रे'— 'एकला चलो रे' की बात कहता हूँ। अकेले चलकर भी आप जाने क्या-से क्या कर सकते हैं। तीर्थयात्रा के लिए, साइकिल यात्रा के लिए, पदयात्रा के लिए आप निकल सकते हैं और एक-दो आदमी साथ ले सकते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दीवारों पर सद्वाक्य लिखने का काम आप अकेले कर सकते हैं। अकेले के इस तरह ये इतने काम हैं, झोला पुस्तकालय, तीर्थयात्रा, दीवारों पर वाक्य-लेखन आदि। ये सब एक आदमी का काम है। इसे एक व्यक्ति अकेले ही कर सकता है। इसलिए अगर आप चाहें, अगर आपके अंदर जीवन हो, देवत्व की भावना उदय होती हो, तो आप इन सब चीजों को कर सकते हैं।

संगठित हों, इंजन बनें

यह तो हुई नंबर एक बात। नंबर दो—अगर आप अकेले नहीं कर सकते और आप में कोई संगठन की वृत्ति है, तो संगठन की वृत्ति के लिए आप हमारा हाथ बँटाइए और अपना थोड़ा समय दीजिए। टोली नायकों का काम स्थानीय है। आप उसमें सम्मिलित होकर के एक घंटा-दो घंटा समय लगा सकते हैं और आपको लगाना चाहिए। आप टोली में सम्मिलित हो सकते हैं और होना चाहिए। दस-दस आदमी की आप टोली बना लें और पचास पाठकों को इकट्ठा कर लें, तो बेटे, ये साठ की मंडली होती है। साठ व्यक्तियों की मंडली बहुत बड़ी होती है। साठ डाकुओं ने सारे चंबल को हिलाकर रख दिया था। साठ आदमियों का संगठन अगर आपके पास है, तो आप गजब कर सकते हैं। अगर आपके पास जीवट है, तो साठ आदमी बहुत होते हैं। इंजन अगर जीवित हो, तो साठ डिब्बों की रेलगाड़ी जाने कहाँ-से-कहाँ जा सकती है। इंजन जिंदा हो तो, लेकिन अगर इंजन मरा हुआ हो तो बेटे हम नहीं जानते।

इसलिए मित्रो! टोली नायकों की दृष्टि से आपको काम करना चाहिए। आप चाहें तो समय दिए बिना अपने स्थानीय क्षेत्र में घर में रहकर एक काम यह भी कर सकते हैं कि आप जन्मदिन मनाने की परंपरा को जीवंत करने के लिए समय लगा सकते हैं। घर-घर में गोष्ठियाँ, घर-घर में सभा, घर घर में सम्मेलन हम जन्मदिन के माध्यम से फिर से शुरू कर सकते हैं। शुरू के दिनों में दिक्कत मालूम पड़ेगी, फिर बाद में आप देखेंगे कि कितना ज्यादा लोग सहयोग देते हैं। पहले आपको साथ-साथ सत्संग में सहयोग नहीं मिलता था, लेकिन अगर आप देखें, तो पाएँगे जन्मदिन के आधार पर जन्मदिन मनाते समय लोग कितना खुश होते हैं। उसमें व्यक्ति को अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने का मौका मिलता है, खुशी का मौका मिलता है। सब आदमी आशीर्वाद देते हैं, कोई फूल चढ़ाता है और कोई प्रणाम करता है। आज हमारा जन्मदिन है। हम अपना मुँह शीशे में देखते हैं, तो कितनी खुशी होती है, आप ये भी नहीं जानते? इसमें जनता के सहयोग का कितना ज्यादा लाभ भरा पड़ा है, क्या आप इसे नहीं जानते? अगर आप हकीकत में आएँ, तो आप इसे देख सकते हैं। हकीकत में नहीं आएँ, तब मैं नहीं कह सकता। अगर आप जन्मदिन मनाने की परंपरा को फिर से फैला सकें, तो आप देखेंगे कि ये मिशन, जिसमें देवत्व के पुनरुज्जीवन का संकल्प छिपा हुआ है, उसको जिंदा करने के लिए आप क्या कर सकते हैं।

बेटे, एक और काम के लिए हमने आपसे कहा था कि अगले वर्ष हम और भी सामूहिक जोश उत्पन्न करेंगे, वार्षिकोत्सव के रूप में। अब यह नियम बना दिया गया है कि कोई भी शाखा ऐसी नहीं रहनी चाहिए, जिसका कि वार्षिकोत्सव न मनाया जाता हो। जो शाखा वार्षिकोत्सव नहीं मनाएगी, उसका हमारे रजिस्टर में से शाखा के नाम से नाम कट जाएगा। क्यों साहब! नाम कट जाएगा कि नाक कट जाएगी? चाहे जो समझ ले बेटा। तू अपने संबंध में समझ ले कि नाक कट गई और हम समझ लेंगे कि तेरा नाम कट गया। बात एक ही है।

मित्रो! हमने हर एक जीवंत शाखा के ऊपर यह वजन डाला है कि उनको वार्षिकोत्सव करना ही पड़ेगा और करना ही चाहिए। कम-से-कम कितने में यह कार्यक्रम हो सकता है? हमने छाप दिया है कि ढाई सौ से चार सौ रुपये तक में बहुत बढ़िया यज्ञ हो सकता है, आयोजन हो सकता है। इसमें हजार आदमी भी आएँ, तो यज्ञ भी हो जाए और जुलूस भी निकल जाए, सब हो जाए। यह सब चार-पाँच सौ रुपये में हो सकता है। इतना पैसा गुरुजी! हम इकट्ठा कर लेंगे। हाँ बेटे! इतना इकट्ठा करने में क्या लगता है। एक दिन की तनख्वाह निकालता हुआ चला जाए, तो एक साल में अकेले ही इतना खरच कर सकता है। बेटे, एक माह में तुझे कितने रुपये मिलते हैं? सात सौ रुपये मिलते हैं। तो एक दिन की तनख्वाह कितनी होगी? गुरुजी! इक्कीस-बाईस रुपये होती है। तो बाईस रुपया महीने के हिसाब से कितना हो गया? महाराज जी! ये तो कोई दो सौ साठ रुपये हो गए। बस बेटे, तू अकेला हो जा और हर महीने में एक दिन की तनख्वाह निकालता चल। अब साथ में दस व्यक्ति और ले ले। इसी से एक वार्षिकोत्सव पूरा हो जाएगा। नहीं, गुरुजी! इससे चंदा माँगूँगा, उससे माँगूँगा। अपने पास से कुछ देगा? अपने में से तो कुछ नहीं दूँगा। कंजूस कहीं का, पहले अपने पास से निकाल, तब चंदा माँगना।

मित्रो! क्या करना चाहिए? वार्षिकोत्सव में कहीं कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। अगर आपके पास रोटी खाने के लिए आर्थिक तंगी नहीं है, सिगरेट पीने के लिए आर्थिक तंगी नहीं है, सिनेमा देखने के लिए आर्थिक तंगी नहीं है। हाँ, महाराज जी! इसके लिए तो तंगी नहीं है। बड़ा आया आर्थिक तंगी वाला। न उद्देश्य को समझता है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

न धर्म को समझता है, न संस्कृति को समझता है और न देवत्व को समझता है। आर्थिक तंगी की रट लगाता है। मित्रो! चाहे तो यह सब एक आदमी अकेले ही कर सकता है।

हमारा एक ही लक्ष्य वार्षिकोत्सव

मित्रो! हम चाहते हैं कि वार्षिकोत्सव हर जगह हो। उसके लिए हमको एक और दिक्कत पड़ेगी। हमने छाप दिया है कि हमारा प्रतिनिधि आएगा, रिप्रजेन्टेटिव आएगा। अब हमको वक्ता नहीं चाहिए। वक्ताओं से हमको घृणा होती चली जा रही है, क्योंकि वक्ता जीभ तो चलाते हैं, परंतु जीभ चलाकर जितना काम करना चाहिए, उससे चौगुना सफाया कर जाते हैं। अपना आचरण, अपना व्यवहार, अपना खान-पान, अपने रहन-सहन से ऐसी छाप डालकर आते हैं कि उसे देखकर लोग कहते हैं कि ऐसे वक्ता को गोली मारो। जो बक्-बक् करता है, उसका नाम 'वक्ता' है। हमें ऐसा वक्ता अब नहीं चाहिए जो बकता तो बहुत है, पर आचरण और व्यवहार में बिलकुल विपरीत है। अब हम वक्ता नहीं, अपना प्रतिनिधि भेजेंगे। यह प्रतिनिधि कैसा होगा? हमारा नमूना होगा और हमारे आचार्य कैसे होने चाहिए? उनका रहन-सहन, उनकी बोल-चाल, उनका व्यवहार, उनका आचरण, उनका उठना-बैठना, उनका खान-पान बिलकुल ऐसा होना चाहिए, जैसा कि हमारा है। उसे देखकर लोग ये कहें कि यह आचार्य जी का प्रतिनिधि है, आचार्य जी का बेटा है। बेटे, हमको ऐसे व्यक्तियों की बहुत तलाश है, क्योंकि हम ये घोषणा कर चुके हैं कि हम छह हजार शाखाओं का वार्षिकोत्सव करेंगे। इसे हम थोड़े ही समय में पूरा करने के इच्छुक हैं। अक्टूबर से लेकर मार्च तक पूरा कर लेना चाहते हैं, क्योंकि फिर गरमी आ जाती है, इम्तिहान आ जाता है। स्कूलों में स्पीकर लगाना बंद हो जाता है। गरमी में लू चलती है, आँधी-तूफान चलते हैं। इसलिए इस अभियान को हम जल्दी पूरा करना चाहते हैं।

मित्रो! इस कार्यक्रम के लिए हमें प्रतिनिधियों की विशेष रूप से आवश्यकता पड़ेगी। हमको आप लोगों में से जो अपने आपको इस लायक समझते हों कि हम गुरुजी के विचारों को, युग निर्माण के विचारों को, पुनर्गठन के विचारों को जन-साधारण के सामने व्यक्त कर सकते हैं, तो अपने नाम हमें नोट करा दें और जो ये प्रतिज्ञा कर सकते हों कि हम जाएँगे तो आपकी फजीहत कराकर नहीं आएँगे, आपकी बदनामी कराकर नहीं आएँगे, वहाँ आपकी बेइज्जती कराकर नहीं आएँगे। बेटे, वह आपकी बेइज्जती नहीं, हमारी बेइज्जती है। आप यहाँ से हमारे वक्ता हो करके जाएँगे और होटलों में चाय पिएँगे, तो वह आप नहीं हम पी रहे होंगे, क्योंकि आप हमारे प्रतिनिधि हैं, रिप्रजेंटेटिव हैं। रिप्रजेंटेटिव को न केवल वक्ता होना चाहिए, न केवल व्याख्यानदाता होना चाहिए, बल्कि उसके अंदर वे सारी विशेषताएँ होनी चाहिए, जो हमारे रहन-सहन में, उठने-बैठने में है।

वाणी से नहीं, आचरण से शिक्षण

मित्रो! ये आपको अभ्यास का मौका है। इस बहाने, इस लोक-लाज के बहाने आपको हम बंधनों में इतना बाँधकर भेजेंगे कि अगर आप छह महीने अभ्यास कर लें तो आप समझना कि आपने छह महीने का योगाभ्यास कर लिया। छह महीने की तप-साधना कर लेंगे आप। आपकी जीभ के ऊपर अंकुश, खान-पान के ऊपर अंकुश, उठने-बैठने के ऊपर अंकुश, हजार अंकुश लगाने पड़ेंगे। नहीं गुरुजी! हम तो व्याख्यान देंगे। बेटे, हमें नहीं कराना व्याख्यान। अगर हमारी शर्तें पूरी कर सकता है, तो तेरे व्याख्यान का स्वागत है। नहीं साहब! हम कोई शर्त पूरी नहीं करेंगे, हम तो बक्-बक् करेंगे और चाहे जैसे रहेंगे। बेटे, हम तुझे चाहे जैसे नहीं रहने देंगे।

इसलिए मित्रो! ऐसे लोगों की खासतौर से हमको आवश्यकता है, जो बक्-बक् से नहीं, अपने आचरण और व्यवहार से हमारा प्रतिनिधित्व करें। ये शिविर, जो हमने बुलाया है, इस हिसाब से भी बुलाया है कि हमको छह हजार शाखाओं में वार्षिकोत्सव कराने के लिए अपने छह हजार प्रतिनिधियों की जरूरत पड़ेगी। क्या हम ऐसा नहीं कर सकते कि अपने दो लाख मित्रों में से, जिनमें अधिकांश व्यक्ति पढ़े हों, सुशिक्षित हों, इस लायक हों कि आत्मशोधन और आत्मनिर्माण के अलावा लोकनिर्माण की जिम्मेदारी निभा सकते हों, उनको हम छह महीने का योगाभ्यास कराना चाहते हैं। यह विशुद्ध प्रशिक्षण है, जिसमें लोक-लाज की वजह से और हमारी शरम की वजह से, दोनों दबावों की वजह से व्यक्ति अपने चरित्र को ठीक ढालता हुआ चला जाएगा और लोकहित के लिए, जिसमें मानव-जाति का हित जुड़ा हुआ है, दोनों काम करता हुआ चला जाएगा। आप हमारे प्रतिनिधि के रूप में जाना और जो शाखाएँ, जो शक्तिपीठें निष्क्रिय पड़ी हुई हैं, उनमें उमंग पैदा करना और कहना कि आपको गुरुजी का सम्मेलन करना पड़ेगा, टोलियाँ बनानी पड़ेंगी, जन्मदिन मनाना पड़ेगा और अपने आचरण एवं व्यवहार से लोगों को शिक्षण देना पड़ेगा। यदि इतना काम आप कर सके, तो हमारा यह शिविर सार्थक हो जाएगा, हम और आप दोनों धन्य हो जाएँगे। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति।

❋

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

हर दिन नया जन्म, हर दिन नई मौत

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! अपने भारतीय धर्म में संध्यावंदन के दो समय नियुक्त हैं, एक प्रातःकाल एवं दूसरा सायंकाल। जब रात्रि और दिन दोनों मिलते हैं, तो उसे 'संध्याकाल' कहते हैं। यह सबेरे भी होता है और सायंकाल को भी होता है। इसलिए संध्यावंदन जब सूर्य उदय होता है तब और जब सूर्य अस्त होता है तब करना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन में इस संध्यावंदन को हम एक और तरीके से कर सकते हैं। सोने को हम रात मान लें और जागने को दिन मान लें, तब प्रातःकाल एवं सायंकाल की संध्यावंदन का आध्यात्मिक समय वह बनेगा, जब आदमी सोकर उठेगा अथवा सोएगा।

प्रातःकाल की और सायंकाल की संध्यावंदन के लिए यही हो सकता है कि लोग शिकायत करें कि उस वक्त तक हमारी नींद नहीं खुलती है, उस वक्त तक तो हम दुकान पर रहते हैं, अमुक काम करते हैं। परंतु यह संध्यावंदन हरेक आदमी के लिए संभव है कि वह जब प्रातःकाल उठे, किसी भी वक्त तो उठेगा, अतः कभी भी सोए तो जो सोने का समय हो, उसे रात्रि का संध्यावंदन काल मान लिया जाए और जब उठ जाए, तो प्रातःकाल का संध्यावंदन का समय मान लें, तब फिर किसी को यह शिकायत नहीं रहेगी कि हमको साधना-उपासना के लिए, संध्यावंदन के लिए समय नहीं मिलता।

सबसे सरल तरीका

मित्रो! दैनिक उपासना करने के संबंध में लोगों को एक और भी शिकायत रहती है कि हमको जाड़े के दिनों में ठंढ लगती है, स्नान करना संभव नहीं होता, कैसे उठें, पानी मिलता नहीं है। उसके लिए यह संध्यावंदन, जो आपको हम बता रहे हैं, इसको आप यहाँ से जा करके नियमित रूप से करते रहें। संध्यावंदन के लिए ऋषियों ने जो प्रातःकाल और सायंकाल का समय बताया है, उसके स्थान पर प्रातःकाल सो करके उठने का समय और रात्रि को सोने का समय, यह दो समय आपके लिए हम नियुक्त किए देते हैं। कई लोगों के पास स्थान नहीं होता है, पर स्थान नहीं है, पूजा का सामान नहीं है, नहाने का समय नहीं है, तो न सही, फिर आप ऐसा करें, चारपाई पर पड़े-पड़े ही संध्यावंदन कर लिया करें। इसके लिए न उठने की जरूरत है और न कुछ है। इससे सरल तो संध्यावंदन का और कोई तरीका हो ही नहीं सकता। यह सबसे सरलतम तरीका है कि आप प्रातःकाल और सायंकाल का संध्यावंदन अपनी चारपाई पर पड़े हुए भी उस समय कर लिया करें, जबकि आपकी नींद खुलती है और आप नींद लेने के लिए जाते हैं। दोनों समय की इस संध्या को आप भूलना मत। इसमें सिवाय आपकी लापरवाही और गैर जिम्मेदारी के अतिरिक्त और कोई बाधा नहीं हो सकती? आप चाहें

पुराने जमाने में ईश्वर पर विश्वास नहीं करने वाला नास्तिक होता था और नए धर्म में स्वयं पर विश्वास न करने वाला नास्तिक कहलाता है।

—विवेकानंद

तो नियमित रूप से, हर परिस्थितियों में, बीमारियों में भी, सफर में भी, कहीं भी यह संध्यावंदन कर सकते हैं।

नया जन्म नई मौत

मित्रो! सायंकाल की संध्या और प्रातःकाल की संध्या में क्या करें? क्या करना चाहिए, क्या विचार करना चाहिए? आपको इन दोनों समयों में आत्मबोध और तत्त्वबोध की साधना करनी चाहिए। प्रातःकाल जब आप उठा करें, तो एक नए जीवन का अनुभव किया करें। यह अनुभव किया कीजिए कि रात को सोने का अर्थ है, 'पिछले जन्म की स्मृति और उस दिन की मौत' सबेरे उठने का अर्थ है, 'नया जन्म'। 'जब आँख खुली तब नया जन्म' आप यह अनुभव कर लिया करें, तो मजा आ जाए। आप हर दिन सबेरे यह अनुभव किया कीजिए कि हमारा नया जन्म हो गया। अब नए जन्म में क्या करना चाहिए? आपकी सारी बुद्धिमानी इस बात पर टिकी हुई है कि आपने अपनी जीवन संपदा का किस तरीके से उपयोग किया। यह मानना सही नहीं है कि यह जन्म भजन करने के लिए मिला हुआ है। नहीं मित्रो! यह जीवन भजन करने के लिए नहीं मिला हुआ है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वरन् इसलिए मिला हुआ है कि आप इस जीवन की संपदा को ठीक तरीके से इस्तेमाल करें। यह आपकी परीक्षा है। परीक्षा में जो पास हो जाते हैं, अगली कक्षा में उनके नाम चढ़ा दिए जाते हैं। फिर पास हो जाते हैं, तो और आगे चढ़ा दिए जाते हैं।

साथियो! यह जो पहली परीक्षा भगवान् ने आपको मनुष्य का जीवन देकर ली है, उसमें आपका एक ही फर्ज हो जाता है कि आप इसका अच्छे-से-अच्छा उपयोग करके दिखाएँ। बस भगवान् ने यही अपेक्षा की है आप से, यही उम्मीद है और यही वह चाहता है। वह न आपसे पूजा चाहता है, न उपहार चाहता है, न भजन चाहता है, न मनुहार चाहता है, न मिठाई चाहता है, न कपड़े चाहता है, न कथा चाहता है, न कीर्तन चाहता है। इन सब बातों से भगवान् का कोई ताल्लुक नहीं है। यह तो अपने आपके परिशोधन की प्रक्रियाएँ हैं। न जाने क्यों लोगों ने यह मान लिया है कि इससे भगवान् प्रसन्न हो जाएगा। आप लोग विश्वास रखें, इससे भगवान् कभी प्रसन्न नहीं हो सकता। इससे आपको जीवन संशोधन करने में, कार्य निवारण करने में तो सहायता मिल सकती है, लेकिन जहाँ तक भगवान् की प्रसन्नता का ताल्लुक है, वहाँ सिर्फ एक बात है कि आपको जो बहुमूल्य मनुष्य का जीवन दिया गया था, उस जीवन का आपने किस तरीके से और कहाँ उपयोग किया। बस यही एक प्रश्न है, दूसरा कोई प्रश्न नहीं है। जब आपको यह दिया गया है, तो विश्वास रखें कि भगवान् ने अपनी बहुमूल्य संपत्ति आपके हाथ कर दी। इससे बड़ी संपत्ति भगवान् के खजाने में और कोई नहीं है।

आदमी बनने का प्रयास करें

मित्रो! मनुष्य के जीवन से बढ़कर और क्या हो सकता है? आप दूसरे प्राणियों पर नजर डालिए न। कोई नंगा फिर रहा है, किसी के खाने का ठिकाना नहीं है, कोई कहीं है, तो कोई कहीं है, न बोल सकता है, न लिख सकता है। किंतु आपको सारी सुविधाओं से भरा हुआ जीवन इसलिए दिया गया है कि आप उसका अच्छे-से-अच्छा उपयोग करके दिखाएँ। क्या अच्छा उपयोग हो सकता है जीवन का? इसके दो ही अच्छे उपयोग हैं, एक आप स्वयं को ऐसा बनाएँ, जिसको कि आदमी कहा जा सकता है। दूसरों के सामने आपका उदाहरण इस तरीके से पेश होना चाहिए कि जिसको देख करके दूसरे आदमियों को प्रकाश मिले, रोशनी मिले या पीछे चलने का मौका मिले और आपकी अंतरात्मा कषाय-कल्मषों का परिशोधन करती हुई साफ और स्वच्छ बनती चली जाए। यह आपका स्वार्थ है। और परमार्थ? परमार्थ यह है कि भगवान् की इस विश्व-वाटिका में, जिसमें कि आपको काम करने के लिए भेजा गया है, उसमें आप एक अच्छे माली के तरीके से काम करें। भगवान् को साथियों की जरूरत है, इंजीनियरों की जरूरत है, ताकि उनके इतने बड़े बगीचे, इतने बड़े कारखाने की सुव्यवस्था करने में वे हाथ बँटा सकें। आपको हाथ बँटाने के लिए पैदा किया गया है, खुशामदें करने के लिए नहीं, नाक रगड़ने के लिए नहीं, चापलूसी करने के लिए नहीं, चमचागीरी करने के लिए नहीं, मिठाई, उपहार भेंट करने के लिए नहीं पैदा किया गया। आपको सिर्फ इसलिए पैदा किया गया है कि बेहतरीन जिंदगी जिएँ और भगवान् के काम में हाथ बँटाएँ।

इसके लिए मित्रो क्या करना चाहिए? आमतौर से आदमी काम की बातें भूल जाते हैं और बेकार की बातें, बेबकूफी की बातें सब याद रखते हैं। आपको सबरे उठते ही प्रातःकाल चारपाई पर पड़े-पड़े यह ध्यान करना चाहिए

> ***सुंदरता चेहरे की बनावट एवं साज-सज्जा पर टिकी हुई नहीं है। वह तो अच्छे स्वभाव और सज्जनोचित व्यवहार से उभरती है।***

कि आज हमारा नया जन्म हुआ है और हमको इतनी बड़ी कीमत मिली, संपत्ति मिली कि जिसकी तुलना में और किसी प्राणी को कोई चीज नहीं मिली। आप अपने आपको सौभाग्यवान् महसूस कीजिए, भाग्यशाली अनुभव कीजिए। यह अनुभव कीजिए कि हमारे बराबर भाग्यशाली कोई नहीं। अभावों की बात, चिंता की बात, कठिनाइयों की बात आप सोचते रहते हैं, लेकिन यह क्यों नहीं सोचते कि आप कितने शक्तिशाली हैं कि इतना बड़ा जीवन आपको भगवान् ने दिया। आप अपने भाग्य को सराहें और सराहना के साथ-साथ एक और बात ध्यान में रखें। आप एक ऐसी 'स्कीम' बनाएँ, 'योजना' बनाएँ, जिससे इस जीवन का अच्छे-से-अच्छा उपयोग करना संभव हो सके।

जीवन सँवारने के सूत्र

मित्रो! यह प्रयोग एक दिन के जीवन से करना चाहिए। जिस दिन आप सोकर उठें, उसी दिन आप यह याद रखिए कि बस हमारे लिए एक ही दिन जिंदगी का है और इस आज के दिन को अच्छे-से-अच्छा बनाकर दिखाएँ। बस, इतने क्रम को दैनिक जीवन में सम्मिलित कर लें, तो इसे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

रोज-रोज अपनाते हुए आप अपनी सारी जिंदगी को अच्छा बना सकते हैं। एक-एक दिन को हिसाब से जोड़ देने का मतलब होता है, सारे समय को और सारी जिंदगी को ठीक तरह और सुव्यवस्थित बना देना। आप प्रातःकाल उठा कीजिए और यह ध्यान किया कीजिए कि 'हर दिन नया जन्म और हर दिन नई मौत को आप प्रातःकाल से सायंकाल तक कैसे प्रयोग करेंगे ? इसके लिए सुबह से ही उठकर टाइमटेबिल बना लेना चाहिए कि आज आप क्या करेंगे, कैसे करेंगे और क्यों करेंगे ? क्रिया के साथ में आप चिंतन को जोड़ दीजिए। चिंतन और क्रिया को जोड़ देते हैं, तो दोनों से एक समग्र स्वरूप बन जाता है। आप शरीर से काम करते रहें, मगर कोई उद्देश्य न हो अथवा अगर आप उद्देश्य ऊँचे रखें, लेकिन उसे क्रियान्वित करने का कोई मौका न हो, तो दोनों ही बातें बेकार हो जाएँगी।

इसलिए मित्रो ! सबेरे उठते ही जहाँ अपने जीवन को सराहें या मनुष्य जीवन पर गौरव का अनुभव करें, वहाँ एक बात और साथ-साथ में चालू कर दें, सुबह प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक का एक ऐसा टाइमटेबिल बनाएँ जिसको कि सिद्धांतवादी कहा जा सके, आदर्शवादी कहा जा सके। इसमें भगवान् की हिस्सेदारी रखिए। शरीर के लिए भी गुजारे का समय निकालिए, भगवान् के लिए भी गुजारे का समय निकालिए। आपके जीवन में भगवान् भी तो हिस्सेदार है, उसके लिए भी तो कुछ करना है। आपका शरीर ही सब कुछ थोड़े ही है, आत्मा भी तो कुछ है। आत्मा के लिए भी तो कुछ किया जाना चाहिए। सब कुछ शरीर को ही खिलाने-पिलाने के लिए करेंगे क्या ? ऐसा क्यों करेंगे ? आत्मा का कोई औचित्य नहीं है क्या ? आत्मा की कोई इज्जत नहीं है क्या ? आत्मा का कोई मूल्य नहीं है क्या ? आत्मा से आपका कोई संबंध नहीं है क्या ? अगर है तो फिर आपको ऐसा करना पड़ेगा कि साथ-साथ दिनचर्या में आदर्शवादी सिद्धांतों को मिलाकर रखना पड़ेगा।

मित्रो ! अपनी दिनचर्या ऐसी बनाइए जिसमें आपके पेट भरने की भी गुंजायश हो और अपने कुटुंब के परिवार के लोगों के लिए भी गुंजाइश हो। लेकिन साथ-साथ में एक और गुंजाइश होनी चाहिए कि अपनी आत्मा को संतोष देने के लिए और परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए कार्यों का और विचारों का भी समावेश हो। आप स्वाध्याय का दैनिक जीवन में स्थान रखिए। आप सेवा का दैनिक जीवन में स्थान रखिए, आप उपासना का दैनिक जीवन में स्थान रखिए। इन सब बातों का समन्वित जीवन का अभ्यास कर लें, तो यह प्रातःकाल वाला संध्यावंदन पूरा हो हो जाएगा।

व्यस्त रहें, जीवनचर्या व्यवस्थित बनाएँ

जीवन की अनुभूति, जीवन की महत्ता की अनुभूति के साथ-साथ में सोते समय तक की सारी कार्यविधि का निर्धारण अगर आप कर लेते हैं, तो फिर आपकी उन-उन खुराफातों से बचत हो जाएगी, जो कि आप गृहस्थ जीवन के अभाव में करते रहते हैं। जो आदमी व्यस्त है, वह एक निर्धारित लक्ष्य में लगा रहता है। जो आदमी खाली है अर्थात् जो शरीर से खाली होगा, तो उसका दिमाग भी खाली होगा और दिमाग का खाली होना शैतान की दुकान है। इसलिए अपना दिमाग शैतान की दुकान न होने पाए और आपका शरीर खाली रहने की वजह से दुष्प्रवृत्तियों में न लगने पाए, इसके लिए बहुत अधिक आवश्यक है कि आप व्यस्तता से भरा हुआ टाइमटेबिल और कार्यक्रम बना लें और उस पर चलें। न केवल टाइमटेबिल बना लें, वरन् यह भी हर समय ध्यान रखें कि जो सबेरे कार्यपद्धति बनाई गई थी, वह ठीक तरीके से प्रयोग होती भी है कि नहीं।

आप अपने टाइमटेबिल में विश्राम का समय भी नियत रखें। यह कोई नहीं कहता कि विश्राम मत रखिए, लेकिन

घृणा को घृणा से और बैर को बैर से जीत सकना कठिन है। आग में ईंधन डालने से वह भड़कती भर है। बुझाने के लिए प्यार की सजलता चाहिए।

विश्राम भी एक समय से होना चाहिए, टाइम से होना चाहिए और एक विधि से होना चाहिए। चाहे जहाँ जरा-सा काम किया और फिर विश्राम, जरा-सा काम और फिर विश्राम ऐसे कोई काम होते हैं क्या ? काम करने की शैली ही कर्मयोग है। कर्मयोग को अगर आप ज्ञानयोग में मिला दें, संध्यावंदन में मिला दें, तो मजा आ जाए, सारी-की-सारी दिनचर्या को आप भगवान् का कार्य मानकर चलें, तो फिर समझिए आपकी प्रातःकाल की संध्या पूर्ण हो गई।

इसके बाद अब सायंकाल की संध्यावंदन का नंबर आ गया। आप सायंकाल की संध्या उस समय किया कीजिए, जब आप सोया करें। जब भी सोएँ—नौ बजे, ग्यारह बजे, बारह बजे, सोना तो आखिर है ही आपको। जब सोएँगे, तो यह बात भी सही है कि आप नींद की गोद में अकेले ही जाएँगे। ठीक है, बच्चे बगल में सोते हों तो क्या और कोई सोता हो तो क्या, परंतु नींद तो आपको अकेले ही को आएगी न, दो को तो एक साथ नहीं आ सकती ? आप सुबह उठेंगे, तो अकेले उठेंगे न, दो तो एक साथ नहीं उठ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकते ? यह आपका एकांत जीवन है। सायंकाल को सोते समय आप उस एकांत जीवन में ऐसे विचार किया कीजिए कि हमारे जीवन का अब समाप्ति का समय आ गया, अंत आ गया। अंत को लोग भूल जाते हैं। आदि को भी भूल जाते हैं बस मध्य में ही उलझे रहते हैं।

आदि और अंत का ध्यान

मित्रो! आदि यह है मनुष्य योनि में जन्म का सौभाग्य और उसको ठीक तरीके से उपयोग करने का निर्धारण। और अंत ? अंत वह है जिसमें भगवान् के दरवाजे पर जाना ही पड़ेगा, भगवान् की कचहरी में पेश होना ही पड़ेगा, इससे कोई बचत नहीं हो सकती। आपको भी दूसरों की तरह मरना ही पड़ेगा और मरना भी चाहिए। यह नहीं हो सकता कि आपके मरने का कोई दिन न आए, जरूर आएगा, निश्चित आएगा। जब आपके मरने का दिन आएगा, तो फिर क्या होगा ? तब आपको यहाँ से जाने के बाद में सीधे भगवान् के दरबार में जाना पड़ेगा और सिर्फ एक बात का जबाव देना पड़ेगा कि आपने इस जिंदगी का कैसे इस्तेमाल किया। अगर आपने ठीक तरीके से इस्तेमाल नहीं किया है, तो भगवान् आपसे बेहद नाराज होंगे, भले ही आपने अनुष्ठान किया हो, तीर्थयात्रा की हो, उपवास किए हों, तिलक लगाए हों, जो भी किया हो, इससे भगवान् का कोई समाधान होने वाला नहीं है।

इसलिए रात्रि को सोते समय यह ख्याल किया कीजिए कि अब हमारे जीवन का अंत है और अंत को अगर आप ध्यान कर लें तब ? तब फिर आप चौंक पड़ेंगे। जिंदगी भर आदमी न जन्म को याद करता है, न मौत को याद करता है। अगर मौत को याद किया करें, तो मजा आ जाए। सिकंदर जब मरने को हुआ, तो उसने सब लोगों को बुलाया और कहा कि हमारा सब माल-खजाना हमको दीजिए, हम साथ लेकर के जाएँगे। क्योंकि बड़ी मेहनत से भी कमाया है और बड़ी बेईमानी से भी कमाया है। उसने जो कमाया था, लोगों ने वह सब उसके सामने रख दिया। सिकंदर कहने लगा कि इसे हमारे साथ भेजने का इंतजाम करो। लोगों ने कहा, यह कैसे हो सकता है ? यह सब चीजें तो यहीं की थीं और यहीं पड़ी रह जाएँगी। आप तो बेकार ही कहते हैं कि यह हमारे साथ जाएगा। आपके साथ तो आपका पुण्य और पाप जाएगा और कुछ नहीं जा सकता।

काश ! हमें हर पल मौत याद रहे

सिकंदर फूट-फूटकर रोने लगा। उसने कहा कि अगर मुझे यह मालूम होता कि मेरे साथ में केवल पुण्य-पाप ही जाने वाला है, तो मैं इस छोटी-सी जिंदगी को गुनाहों से भरी हुई न बनाता। फिर मैं भगवान् बुद्ध के तरीके से जिया होता, सुकरात के तरीके से जिया होता, ईसा के तरीके से जिया होता। ऐसी गलती क्यों कर डाली ? इस संपदा को, जिसकी मुझे जरूरत नहीं थी, उसी को मैं इकट्ठा करता रहा। यह क्यों करता रहा ? मौत तो होनी ही है। उसको जब मौत याद आई, तो वह बार-बार यही बोला, मरते वक्त मेरे दोनों हाथ ताबूत से बाहर निकालकर रखना। उसने अपने सैनिकों से कहा कि आप लोग जब हमें दफनाने के लिए जाएँ, तो हमारे दोनों हाथ हमारे जनाजे से बाहर निकाल देना, ताकि लोग यह देखें कि सिकंदर खाली हाथ आया था और खाली हाथ चला गया।

मित्रो! यह वैराग्य श्मशान घाट में ही बन सकता है। श्मशान घाट की एवं मौत की याद आपको आ जाए, तो आप निश्चित ही जो घिनौनी जिंदगी जी रहे हैं, उसकी कतई इच्छा नहीं होगी। फिर आप यह कहेंगे कि इस नए मौके का अच्छे-से-अच्छा उपयोग क्यों न कर लिया जाए।

लोग धर्म के लिए कहते हैं, सुनते हैं, झगड़ते और मरते-मारते हैं। पर ऐसे कुछ ही लोग हैं, जो धर्म के लिए जीवन जीते हैं।

फिर आप क्या करेंगे ? फिर आप अपना टाइमटेबिल और अपनी रीति-नीति ऐसी बनाएँगे जैसे कि राजा परीक्षित ने बनाई थी। राजा परीक्षित को मालूम पड़ गया था कि आज से सातवें दिन साँप काट खाएगा। उसने यह निश्चय किया कि इन सात दिनों का अच्छे-से-अच्छा उपयोग करेंगे। उन्होंने भागवत् कथा का अनुष्ठान किया और दूसरे अच्छे कर्म किए। इससे उनकी मुक्ति हो गई।

मित्रो! सात दिन में तो सबको ही साँप काटने वाला है। आपको भी सात दिन में ही काटेगा। कुल सात ही दिन तो होते हैं न, मौत का साँप इन्हीं दिनों में तो काटता है। सातवें दिन के बाद आठवाँ दिन कहाँ है ? इसलिए आप भी राजा परीक्षित के तरीके से विचार कर सकते हैं कि हमारी बची हुई जिंदगी, जो मौत के दिनों के बीच में बाकी रह गई है, इसका हम अच्छे-से-अच्छा कैसे उपयोग कर सकते हैं ? सायंकाल को आप विचार किया कीजिए कि इसका कैसे अच्छे-से-अच्छा उपयोग किया जाए। सायंकाल को दिनभर के कार्यों की समीक्षा किया कीजिए और समीक्षा करने के बाद में यदि लगे कि हमने गलती की या नहीं की। यदि की है, तो उसके लिए अपने को धिक्कारिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं, धमकाइए नहीं, वरन् अपने आपको इस बात के लिए रजामंद कीजिए कि जो कुछ आज कमियाँ रह गईं अथवा गलतियाँ हो गईं, वह कल नहीं रहेंगी। कल हम उस कमी को पूरा कर लेंगे, गलती को सुधार लेंगे। फिर क्या हो जाएगा? कमी की पूर्ति हो जाएगी। अगली बार गलती नहीं होगी, काम बहुत अच्छा हो जाएगा।

गलतियों से सीखें, आत्मचिंतन करते रहें

इस तरह प्रात:काल जिस तरीके से आपने आज की नीति का निर्धारण किया था, उसी तरीके से आज की गलतियों का और आज की सफलताओं का अनुमान लगाते हुए कल की बावत आप तैयारी कर सकते हैं कि कल हमको कैसे जीना है। यह सब आप रात को सोने से पहले तय कर लेंगे, तो दूसरे दिन आपको सफलता मिलेगी, यकायक चिंतन करेंगे, तो थोड़ा कठिन पड़ेगा। इसलिए हर दिन सोते समय में, मौत की गोद में, नींद की गोद में जाते समय यह विचार लेकर जाया करें कि अब हम इस संसार से चले और भगवान् के यहाँ गए। ऐसी स्थिति में फिर आपको क्या करना चाहिए? लगाव को कम करना चाहिए। लोगों से, वस्तुओं से आपका लगाव जितना ज्यादा होगा, आप उतना ही ज्यादा कष्ट पाएँगे। आप लगाव को कम कीजिए। लगाव ही ज्यादा कष्टकारक है, जिम्मेदारियों का निभाना ज्यादा कष्टकारक नहीं है। जिम्मेदारियाँ तो आपको निभानी ही चाहिए। आप अपनी जिम्मेदारी माता के प्रति निभाइए, पत्नी के प्रति निभाइए, बच्चों के प्रति निभाइए, मोहल्ले के प्रति निभाइए और समाज के प्रति निभाइए, लेकिन लगाव आपको बहुत हैरान कर देगा। हमारा ही बच्चा है, यह आप क्यों कहते हैं? यह क्यों नहीं सोचते और कहते कि भगवान् का बच्चा है। यह हमारी बीबी है, यह क्यों कहते हैं? यह क्यों नहीं कहते कि यह भगवान् की बेटी है। यह कह देंगे, तो क्या हो जाएगा?

आप रात्रि को जब सोया करें और मौत को जब याद किया करें, तो साथ में दो बातें और भी याद कर लिया करें कि हम खाली हाथ जा रहे हैं। लालच हमारे साथ जाने वाला नहीं है और मोह भी हमारे साथ जाने वाला नहीं है। हर प्राणी अपने संस्कार लेकर आया है और अपने संस्कार लेकर चला जाएगा। फिर आप उनके मालिक कैसे हुए? संपत्ति जितनी आप खा सकते हैं और जितनी इस्तेमाल कर सकते हैं, उतनी ही तो ले सकते हैं। बाकी जमीन पर ही छोड़नी पड़ेगी, चाहे संबंधियों के लिए छोड़ें, चाहे उत्तराधिकारियों के लिए छोड़ें और चाहे पुलिस वालों के लिए छोड़ें। तो जब छोड़नी ही पड़ेगी, तो आप उन लोगों के लिए क्यों नहीं छोड़ते, जो कि इसके हकदार हैं। आप उतना ही क्यों न कमाएँ, जिससे कि आप ईमानदारी के साथ अपने लोक और परलोक को बनाए रखें। आप अपने खरच उतने ही क्यों न रखें, जिससे कि सीमित आजीविका में ही आदमी का गुजारा चल सकता है।

करें हर क्षण मृत्यु का स्मरण

मित्रो! ऐसे हजारों विचार हैं जो आपको तब आएँगे जब आप यह ख्याल करेंगे कि हमको मौत के मुँह में जाना है। अगर यह ख्याल आप नहीं कर सकते, तो फिर आप पर व्यामोह छाया रहेगा और यही भवबंधन छाए रहेंगे कि और कमाना चाहिए। लालच छाया रहेगा, मोह छाया रहेगा, चाहे उसकी जरूरत हो या न हो। बेटे-पोते सब समर्थ हो गए हैं, फिर भी आप यही सोचते रहेंगे कि इनकी सहायता करें। इनको ही पैसा दें आपके मन में कभी यह ख्याल भी नहीं आएगा कि इनके अलावा भी कोई दुनिया में और भी रहता है। यह त्याग, वैराग्य, भक्ति तब आती है जब आदमी मृत्यु का स्मरण करता है। आप मृत्यु का स्मरण कीजिए। मृत्यु का स्मरण करना बहुत जरूरी है। ॐ कृतो स्मर:....। किसको याद करो, मौत को याद करो। ''भस्मीभूतमिदं शरीरं'' यह शरीर भस्मीभूत होने वाला है।

आप इस मरने वाले शरीर के बारे में ध्यान रखें कि यह कल या परसों मिट्टी में मिलने वाला है। फिर हम क्यों ऐसे गलत काम करें, जिससे हमारी परंपरा बिगड़ती हो, पीछे वालों को कहने का मौका मिलता हो, धिक्कारने का मौका मिलता हो और आपकी आत्मा को असंतोष की आग में जलने का मौका मिलता हो। आप मत कीजिए ऐसा काम। यह दोनों शिक्षाएँ आपको नया जीवन और नई मौत के स्मरण करने से मिल सकती हैं और कोई तरीका नहीं है। आप इन दो संध्यावंदन को भूलिए मत। गुरुजी हम तो उस समय गायत्री मंत्र का जप करते हैं। दूसरे समय पर कीजिए। प्रात:काल तो यह चिंतन और मनन कीजिए ''नया जन्म नई मौत'' ''और हर दिन को नया जन्म और हर रात को नई मौत।'' इस मौत और जिंदगी के झूले में आप झूलते हुए अपने फर्ज, कर्त्तव्य और बुद्धिमत्ता के बारे में विचार करेंगे, तो ऐसी हजारों बातें मालूम पड़ेंगी, जिसके आधार पर आपका जन्म सार्थक हो सके और आप अध्यात्मवाद के सच्चे अनुयायी और उत्तराधिकारी बन सकें। आज आप से यही कहना था।

॥ॐ शांति॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

आत्मविकास के चार महत्त्वपूर्ण सोपान

(२९/७/७३ को शांतिकुंज परिसर में दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! भजन-पूजन की बात आप सुन चुके, स्वाध्याय और सत्संग की बात भी कर ली। इसके अतिरिक्त पूजापरक-उपासनापरक दो और भी आध्यात्मिक प्रयोग हैं, जो आपको करने ही चाहिए। इनमें से एक का नाम है, 'चिंतन' और दूसरे का नाम है, 'मनन'। चिंतन और मनन के लिए किसी कर्मकांड की जरूरत नहीं है, किसी पूजा-विधान की जरूरत नहीं है और किसी समय निर्धारण की जरूरत नहीं है। अच्छा तो यह हो कि इन सब कामों के लिए आप सबेरे का समय ही रखें। अध्यात्म साधना के लिए सबसे अच्छा समय प्रातःकाल का ही है। दूसरे कामों के लिए भी प्रातःकाल का ही है, यानी कि चौबीस घंटों में जो सबसे अच्छा समय है, वह प्रातःकाल का ही है। प्रातःकाल के समय को आप जिस भी काम में लगा देंगे, उसी काम में आपको बड़ी प्रसन्नता मिलेगी और सफलता भी मिलेगी।

अंतर्गुहा में प्रवेश करें

इसलिए चिंतन और मनन की एकांत साधना के लिए अगर आप प्रातःकाल का समय निकाल पाएँ, तो बहुत अच्छा। कदाचित् प्रातःकाल का समय निकालना आपके लिए संभव न हो तो आप ऐसा करें कि और कोई समय एक साथ मनोयोगपूर्वक काम करने हेतु आप निकाल लें। जब कभी आप यह देख पाएँ कि एक आधा घंटा या पंद्रह मिनट का समय ऐसा निकलता है, जिसमें आप शांतचित्त हैं। इसमें मन के लिए शांतचित्त होना जरूरी है। भागदौड़ में, रास्ता चलते, चलते-फिरते कहीं भी जप कर लेंगे, नहीं, ऐसा मत कीजिए। चिंतन-मनन के लिए ऐसा संभव नहीं है। इसके लिए ऐसा स्थान होना चाहिए जहाँ बाहरी विक्षेप उत्पन्न न होता हो और आपका मन शांत और एकाग्र हो जाता हो। इसके लिए कोई मुनासिब एकांत का स्थान मिल जाए, तो और भी अच्छा, लेकिन अगर न मिले, तो आप आँखें बंद करके भी ऐसी जगह बैठ सकते हैं, जहाँ कोलाहल न हो। आँखें बंद कर लेंगे, तब भी गुफा-निवास की स्थिति बन जाती है। गुफा में चले जाना और शांत-एकांत में चले जाना एक ही बात है। अगर ऐसा संभव न हो तो आप आँखें बंद कर लें। आँखें बंद करना भी एक काम है। आँखें बंद करने से भी बहुत काम बन सकता है। आँखें बंद कर लेने पर भीतर-ही-भीतर का दिखता है, बाहर न कुछ है और न दिखता है।

अतः आप अपनी आँखें बंद करके अपने आपको एकांत में समाया हुआ देखें। इस प्रकार जैसे भी काम चल सकता हो, चिंतन-मनन के लिए आप कहीं थोड़ी देर के लिए शांतचित्त से बैठ जाएँ और यह समझें कि हम अकेले हैं, कोई हमारा साथी और सहकारी नहीं है। साथी अपनी जगह पर, सहकारी अपने स्थान पर, कुटुंबी अपने स्थान पर, पैसा अपने स्थान पर, व्यापार अपने स्थान पर, खेती बाड़ी अपने स्थान पर इन सबको अपने-अपने स्थान पर रहने दीजिए। आप तो सिर्फ यह अनुभव कीजिए कि हम एकाकी हैं और एकांत में बैठे हुए हैं। फिर क्या करें? फिर आप दो तरह के विचार करना शुरू कीजिए। यह विचार करने की शैली है। यह ध्यान की शैली नहीं है, यह विचारणा है। चिंतन और मनन में विचार करने की गुंजाइश है, मन को भागने की पूरी छूट है। ध्यान में तो एक केंद्र ही करना पड़ता है, पर इसमें एक केंद्र में नहीं कर पड़ता। इसके लिए विचार करने के लिए काफी लंबी-चौड़ी गुंजायश है।

चिंतन अर्थात् अपनी समीक्षा

चिंतन उसे कहते हैं जिसमें भूतकाल के लिए विचार किया जाता है कि हमारा भूतकाल किस तरीके से व्यतीत हुआ। इसके बारे में आप समीक्षा कीजिए। आप अपनी समीक्षा तो नहीं कर पाते, लेकिन दूसरों की समीक्षा करने अच्छी तरह जानते हैं। आप पड़ोसी की समीक्षा कर सकते हैं, अपनी बीबी के दोष निकाल सकते हैं, बच्चों की नुक्ताचीनी कर सकते हैं, सारी दुनिया की गलती निकाल सकते हैं, भगवान् की गलती निकाल सकते हैं, भाग्य की गलती बता सकते हैं। कोई भी ऐसा नहीं है जिसकी कि आप गलती न बताते हों, लेकिन अपनी गलती? अपनी गलती पर तो आप विचार भी नहीं करते। अगर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपनी गलतियों पर विचार करना शुरू करें, अपनी स्वयं की समीक्षा करें, तो ढेरों-की-ढेरों चीजें ऐसी मालूम पड़ेंगी, जो हमको नहीं करनी थीं। ढेरों चीजें ऐसी मालूम पड़ेंगी कि जिन कामों को हमने किया है। जिन बातों को अपनाया है, उनको नहीं अपनाना चाहिए था। यह विचार कभी आता है आपको ? नहीं कभी नहीं आता।

मित्रो! मन की बनावट ही कुछ ऐसी है कि अपना जो कुछ है सो अच्छा। हमेशा मन में यही बात बनी रहती है कि अपना स्वभाव भी अच्छा, अपनी आदतें भी अच्छी, अपना विचार भी अच्छा, सब कुछ अपना ही अच्छा, बाहर वालों का गलत। आमतौर से लोगों की यही मनोवृत्ति होती है और यह मनोवृत्ति गलत है। आध्यात्मिक उन्नति में यह मनोवृत्ति बहुत भयंकर है। आध्यात्मिक उन्नति में इसके बराबर अड़चन डालने वाला दूसरा और कोई व्यवधान है ही नहीं। इसलिए आप पहला काम वहाँ से शुरू कीजिए, आत्मसमीक्षा से। एकांत में चिंतन के लिए जब आप बैठें तो आप यह विचार किया करें कि हम पिछले दिनों क्या भूल करते रहे हैं। हम रास्ता भटक तो नहीं गए, भूल तो नहीं गए। इसके लिए ही जन्म मिला था क्या ? जिस काम के लिए जन्म मिला था, वही किया गया ? पेट के लिए जितनी जरूरत थी, उससे ज्यादा कमाते रहे क्या ? कुटुंब की जितनी जिम्मेदारियाँ पूरी करनी थीं, उसके स्थान पर अनावश्यक संख्या में लोग बढ़ाते रहे क्या और जिन लोगों को जिस चीज की जरूरत नहीं थी, उनको प्रसन्न रखने के लिए उपहार रूप में लादते रहे क्या ? क्यों ? आखिर क्या वजह थी ? यह सब गलतियाँ हैं। इनकी समीक्षा करना शुरू कीजिए।

इसी तरह अपने खान-पान के लिए, स्वास्थ्य के लिए, आहार-विहार के लिए, जैसा रखना था, वैसा ही रखा क्या ? चिंतन की शैली में जैसी शालीनता का समावेश होना चाहिए था, वैसा रखा क्या ? नहीं। न हमने अपने शरीर के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन किया, न अपने मस्तिष्क के प्रति कर्त्तव्य का पालन किया, न अपने कुटुंबियों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन किया। कर्त्तव्यों की दृष्टि से हम बराबर पिछड़ते हुए चले गए। अत: जहाँ-जहाँ पिछड़ते हुए चले गए, उन सबके विषय में एक बार फिर विचार कीजिए।

आत्मसुधार की प्रक्रिया

क्यों, विचार करने से क्या फायदा है ? विचार करने से यह फायदा है कि गलतियाँ जब समझ में आ जाएँगी, तो सुधार की भी गुंजायश बढ़ेगी। गलतियाँ समझ में नहीं आएँगी, तो आप सुधारेंगे ही क्यों ? बीमारी का निर्धारण हो जाए, कोई चैकिंग करके पता चला ले कि आपके भीतर टी. बी. की शिकायत है, तभी तो आप उसका इलाज कराएँगे न ? अगर आपको मालूम ही नहीं है, तो यही कहेंगे कि हमारा तो ऐसे ही शरीर ढीला हो जाता है, कोई बीमारी नहीं है। इसलिए समीक्षा जो है, नाड़ी परीक्षा की तरह है, उसे अपने आप ही कीजिए—भूतकाल के संबंध में। पापों को ही 'क्राइम' नहीं कहते। पाप उन्हें भी कहते हैं, जो कि जीवन को ठीक तरीके से जीने का क्रम है, उसका व्यतिक्रम भी पाप में आता है। 'क्राइम' तो यह है चोरी, डकैती, अपहरण, हत्या बगैरह। यह तो बुरे कर्म हैं ही, मगर यह भी कम बुरा कर्म नहीं है कि आप आलस्य और प्रमाद में ही समय काट दें। आप अपने स्वभाव को गुस्सेबाज बनाकर रखें, ईर्ष्या किया करें, चिंतन और मनन को अस्त-व्यस्त बनाकर रखें। यह भी कोई ढंग है ? यह क्या है ? यह भी गलतियाँ हैं। व्यक्तिगत जीवन में आपके गुण, कर्म, स्वभाव संबंधी गलतियाँ क्या हुईं और क्राइम-अपराध, जुर्म करने के संबंध में क्या भूलें हुईं ? इन दोनों के बारे में एक बार विचार किया कीजिए, यह विचार करना बहुत जरूरी है। इससे यह मालूम होता है कि हमारी गलतियाँ कहाँ हैं और हम कितनी चूक करते रहे हैं और चूक कर रहे हैं।

आत्मनिरीक्षण द्वारा इन चूकों को सुधारने वाला अगला कदम आता है—आत्मपरिष्कार अर्थात् आत्मनिरीक्षण के बाद में आत्मपरिष्कार का दूसरा नंबर आता है। सुधार कैसे करें ? सुधार में क्या बात करनी होती है ? सुधार में रोकथाम करनी होती है, मसलन आप शराब पीते हैं, तो शराब पीना बंद कीजिए। आप बीड़ी पीते हैं, सिगरेट पीते हैं, अपना कलेजा जलाते हैं, तो अब विचार कीजिए कि अब हम कलेजा नहीं जलाएँगे। आत्मपरिशोधन इसी का नाम है कि जो गलतियाँ आपसे हुई हैं, उनके विरुद्ध आप रुकावट खड़ी कर दें, रोकथाम के लिए आमादा हो जाएँ और संकल्प लें कि जो भूलें हमसे हुई हैं, अब न हों। इसके लिए स्कीम बनाएँ।

अपने मन से स्वयं लड़िए

मित्रो! गलतियाँ न होने देने का तरीका क्या है ? अपने अंदर जो कमजोरियाँ, कच्चाइयाँ आई हैं, उन्हें कैसे दूर करेंगे ? यह कमजोरियाँ और कच्चाइयाँ जब मजबूर करेंगी कि जो ढर्रा चलता रहा है, वही चलता रहना चाहिए, तब फिर क्या करेंगे ? अपने साथ में पक्षपात और रियायत करने का जब आपका मन उठे तब आप स्वयं अपने मन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के विरोधी हो जाइए। मन को निग्रहीत कीजिए, मन को तोड़िए-मरोड़िए, मन से लड़ाई कीजिए। मन भला आदमी है क्या, जो कहने से मान जाता है? नहीं, किसी का मन कहने से माना नहीं है। आप सबको यही शिकायत रहती है न कि हमारा मन नहीं लगता। तो फिर मन को लगाइए न। मन क्या कोई ऐसा भला आदमी है, जो अच्छे कामों में लग जाएगा? नहीं लगेगा, क्योंकि मन के ऊपर कुछ कुसंस्कार जमे हुए हैं। आप यह उम्मीद करते हैं कि आपका मन अच्छे कामों में लगेगा? ध्यान में लगेगा? भजन में लगेगा? नहीं लगेगा। इसको लगाना पड़ता है। जिस तरह बैल को हल में चलना सिखाना पड़ता है, घोड़े को जिस तरह जबरन ताँगे में चलाना पड़ता है, जैसे सरकस के जानवरों को कोड़े मार-मारकर अभ्यास कराना पड़ता है, ठीक उसी तरीके से आपको अपने मन को मारना पड़ेगा, मन को तोड़ना-मरोड़ना पड़ेगा, मन से प्रतिद्वंद्विता करनी पड़ेगी, मन से बगावत करनी पड़ेगी। उसको सजा देने की भी जरूरत पड़ेगी, जिससे घूम-फिरकर वह सही रास्ते पर आ जाए।

प्रश्न उठता है कि अगर मन न माने तब? तब फिर अपने खाने में और सोने में किफायत कर डालिए। इतने पर भी यदि मन नहीं माना और आप जहाँ सोचना नहीं चाहते थे, जो करना नहीं चाहते थे, किया, तो आप एक समय का खाना बंद कर सकते हैं। पूरा खाना न बंद करना हो तो आप उसमें कटौती कर सकते हैं। आप चार रोटी खाते हैं और अगर आपका मन गड़बड़ी करता है, तो दो रोटी खाइए, आधा बंद कर दीजिए। कहने का तात्पर्य यह है कि आप खाने और सोने के साथ में कटौती कीजिए। रोज आप पाँच बजे उठते हैं, तो आज आप प्रात: तीन बजे उठेंगे। दो घंटे हम इसीलिए जागेंगे और टहलेंगे। जैसे मिलिट्री के सिपाही जब गलती करते हैं, तो उनको सजा बोल दी जाती है और वे मिट्टी ढोते हैं, दौड़ लगाते हैं। आप भी जगने की सजा बोल दीजिए कि हम दो घंटे जगेंगे। रोज नौ बजे सोते हैं, तो आज हम ग्यारह बजे सोएँगे, बाहर टहलते रहेंगे, रामायण पढ़ते रहेंगे, नींद से लड़ेंगे। क्यों? यह दंड है।

मित्रो! अपने आपको दंड देने की पद्धति भी आवश्यक है। इसके बिना सुधार होना संभव नहीं है। दंड की प्रक्रिया भी जरूरी है। समझाने भर से ही कहाँ मान जाते हैं, खासतौर से दुराग्रही लोग, दुराग्रही जानवर और दुराग्रही मन। खासतौर से दुराग्रही मन से आप यह उम्मीद मत कीजिए कि आपके कह देने से, पढ़ लेने से या सुन लेने से या समझा देने से बात बन जाएगी। ऐसे नहीं बनेगी। इसके लिए आपको लड़ना पड़ेगा। मन के साथ बगावत को क्या करना है और उस खाई को कैसे पाटना है, यह तभी तो करेंगे जब पिछली बातें याद आएँ। पिछली बातें याद करने का नाम है, 'चिंतन'। चिंतन आप जरूर किया कीजिए।

मनन भी उतना ही जरूरी

दो बातें हो गईं न। एक हो गया आत्मनिरीक्षण और एक हो गया, आत्मपरिष्कार या आत्मपरिशोधन। यह हो गया चिंतन। चिंतन की दो ही धाराएँ हैं, गलतियों को याद करना और गलतियों को सुधारने के लिए हिम्मत इकट्ठी कर लेना और तदनुरूप कार्यपद्धति बना लेना। इस तरह एकांत का आधा काम समाप्त। इस एकांत सेवन के चिंतन को याद कीजिए। इसके बाद दूसरा वाला कदम उठाइए। यह दूसरा कदम हरदम आपको एकांत में बैठकर उठाना पड़ेगा। इसका नाम है 'मनन'। मनन क्या है? मनन के भी दो हिस्से हैं। जिस तरह चिंतन के दो हिस्से हैं, उसी तरह मनन के दो हिस्से हैं। इनमें से एक का नाम है, 'आत्म-निर्माण और दूसरे का नाम है आत्मविकास आत्मनिर्माण क्या है? आत्मनिर्माण उसे कहते हैं कि जो चीज आपके पास नहीं है या जो उच्चस्तरीय गुण, कर्म, स्वभाव आपके व्यक्तित्व में शामिल नहीं है, वह शामिल कीजिए। मसलन आप पढ़े-लिखे नहीं हैं, विद्या नहीं है आपके पास, तो आप कोशिश कीजिए कि आपको विद्या पढ़नी है। हम ईमानदारी से रहते हैं, बीड़ी भी नहीं पीते? आपकी बात सही है, लेकिन मैं यह पूछता हूँ कि विद्या की जो कमी है, उसे आप पूरा क्यों नहीं करते? विद्या की कमी को आप पूरा नहीं करेंगे, तो उन्नति कैसे होगी? आपके ज्ञान का दायरा कैसे बढ़ेगा? बुद्धि का विकास कैसे होगा? इसलिए यहाँ आत्मनिर्माण के लिए भी ढेरों काम करने हैं।

आपका स्वास्थ्य कमजोर है, तो इसी से काम नहीं चल जाएगा कि आप पहले बीड़ी पीते थे और अब पीना बंद कर दिया है। बीड़ी पीना तो बंद करना ही पड़ेगा, पर साथ में एक काम और करना पड़ेगा। स्वास्थ्य संवर्द्धन करने के लिए आपको अपने आहार में क्रांतिकारी परिवर्तन करना पड़ेगा, ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ेगा और व्यायाम का कोई नया तरीका अख्तियार करना पड़ेगा। ये जो नए तरीके अख्तियार करना है, इसके लिए, प्रगति के लिए यह सब कार्य आत्मनिर्माण में आते हैं। कमी को सुधारने से थोड़े ही काम चल जाएगा, कमी को पूरा भी तो करना पड़ेगा। विद्या को आप नहीं पढ़ेंगे, स्वास्थ्य को आप नहीं सुधारेंगे, जनसंपर्क नहीं बढ़ाएँगे, सेवा के लिए कदम नहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बढ़ाएँगे, तो काम कैसे बनेगा? अत: जो काम करने हैं, वह तो करने ही पड़ेंगे। आप अपनी गलती को सुधारिए और अपनी योग्यताओं को, अपनी क्षमताओं को और अपनी भावनाओं को विकसित कीजिए। इसी को हम **'आत्मनिर्माण'** कहते हैं।

आत्मनिर्माण में बराबर यह देखना पड़ेगा कि हमारे जीवन में क्या कमी है और उस कमी को कैसे पूरा करें? इसके लिए अपने स्वभाव को, अपनी आदतों को हम ठीक बनाएँ। निर्माण का मतलब बनाना होता है। अपने आप को बनाइए। अपने स्वास्थ्य को बनाइए। अपने व्यक्तित्व को बनाइए। अपने चरित्र को बनाइए। अपने स्वभाव को बनाइए। अपनी कार्यशैली को बनाइए। प्रत्येक चीज को बनाइए। इन सबको बनाने के अतिरिक्त एक और बात का ध्यान रखिए, आप अपने कुटुंब को बनाइए। निर्माण उसका भी जरूरी है। हम अकेले संत बन जाएँगे और रामायण पढ़ेंगे, मिठाई नहीं खाएँगे। आपका कहना ठीक है, परंतु वह भी तो आपका ही अंग है। जो कुटुंब है, वह भी तो आपके साथ जुड़ा हुआ है, निर्माण उसका भी करना पड़ेगा। अगर आप उसका निर्माण नहीं करेंगे, तो सारे-के-सारे आपके घर वाले कमीने, उजड्ड, मूर्ख, दुष्ट बनकर रहेंगे। ऐसी स्थिति में आपकी शांति कैसे स्थिर रहेगी? फिर आप भजन कैसे कर लेंगे? फिर आप अच्छी जिंदगी कैसे जी लेंगे? फिर आप मीठे वचन का अभ्यास कैसे कर लेंगे? जब हर आदमी हैरान करेगा, तो आपको गुस्सा कैसे नहीं आएगा?

इसलिए मित्रो! क्या करना चाहिए? अपना व्यक्तिगत जीवन सुख और शांतिमय बनाने के लिए अपने कुटुंब और परिवार के बारे में ठीक वही नीति निर्धारण कीजिए, जो कि अपने बारे है। कुटुंबी भी तो अपने अंग हैं, ठीक उसी तरीके से जैसे अपने हाथ-पैर हैं। आप यदि कहें कि हम हाथ को तो धोएँगे, पर पैर नहीं धोएँगे। यह क्या बात हुई, आप पैर को क्यों नहीं धोएँगे? आपको पैर भी धोना पड़ेगा। इस तरीके से अपने व्यक्तिगत जीवन को ही अच्छा बनाना पर्याप्त नहीं है। अपने कुटुंब और परिवार का निर्माण करना भी इसी शृंखला में शामिल होता है और समाज निर्माण भी। इन सबको बनाइए, इनके भीतर श्रमनसाहत पैदा कीजिए, आदर्श पैदा कीजिए, चरित्र निष्ठा पैदा कीजिए, सत्प्रवृत्तियाँ पैदा कीजिए।

सबसे बड़ा निर्माण—आत्मनिर्माण

आप संपन्न बन जाएँ या न बन पाएँ, इससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं है। गरीबी में भी लोगों ने शानदार जिंदगियाँ जी हैं और अमीर रहते हुए भी आदमी ने इतने कलह उत्पन्न किए हैं कि वे स्वयं तो मरे ही हैं, दूसरों को भी मार डाला है। इसलिए संपन्नता की बात मैं आपसे नहीं कहता। निर्माण से मेरा मतलब गुण, कर्म, स्वभाव से है। आप इन विशेषताओं को, आदमी की शालीनता को, आदतों को और चिंतन की शैली को बदलने के लिए जो कुछ कर सकते हैं, वह सब कुछ कीजिए, लेकिन परिवार के लिए भी कीजिए। परिवार के पंचशीलों में 'श्रमशीलता' का नाम आता है, सुव्यवस्था का नाम आता है, मितव्ययता का नाम आता है, सहकारिता, शालीनता का नाम आता है। यह सब बातें उसमें आती हैं। आप इन सब बातों का स्वयं निर्धारण कीजिए और घरवालों को धारण करवाइए। यह व्यक्तित्व के निर्माण, चरित्र के निर्माण, चिंतन के निर्माण करने का एक शानदार तरीका है। आप इसको किस तरीके से कार्यान्वित कर सकते हैं, इसके बारे में एकांत में चिंतन और मनन करने जब बैठें, तब यह विचार किया कीजिए। यह तीसरी वाली बात निर्माण वाली धारा है।

जब तक अपने को उठाने और सुधारने के लिए तुम स्वयं तैयार नहीं होते, तब तक कोई दूसरा तुम्हें उठा या सुधार नहीं सकता।

चौथी वाली एक और धारा है, जिसे 'मनन' का दूसरा हिस्सा कह सकते हैं अथवा चिंतन-मनन की चौथी वाली कड़ी कह सकते हैं। उसका नाम है, 'आत्मविकास' आत्मविकास का क्या मतलब है? आत्मविकास का यह मतलब है कि अपने आपका, अपने 'अहं' के दायरे को बढ़ा देना। लोगों का दायरा कूप-मंडूक के तरीके से बहुत छोटा है। वे अपने शरीर को ही अपना मानते हैं। यह नहीं मानते कि हम समग्र समाज के एक घटक मात्र हैं। रक्त के एक कण की क्या कीमत हो सकती है? रक्त के सारे कणों का समूह जब मिल जाता है, तभी तो खून का संचार होता है। एक कण से क्या होता है, संयुक्त होने पर ही बात बनती है। इसलिए आप अपने दायरे को सीमित मत कीजिए। आप संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊँचे उठने की कोशिश कीजिए। अपने 'मैं' के स्थान पर आप 'हम' कहना सीखिए। अगर 'मैं-मैं' करते रहेंगे, तो आप बकरे की तरह सीमित हो जाएँगे और कूप मंडूक के तरीके से एक ऐसे छोटे दायरे में घिरे रहेंगे, जिसमें आप और आपका कुटुंब, बस इतने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ही आदमी रह जाएँगे। आपका समाज से अथवा भगवान् से कोई संबंध ही नहीं रह जाएगा, इसलिए अपने आपका दायरा विकसित कीजिए।

आत्मवत् सर्वभूतेषु की भावना

''हम सबके हैं और सब हमारे हैं'' इस तरीके से विचार कीजिए। आप ''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' इस तरीके से विचार कीजिए। यह सारा संसार हमारे ही समान है। इसी के सहयोग से हम जिंदा हैं। अत: हमारा सहयोग सबको मिलना चाहिए। अगर आप इस तरह से विचार करेंगे, तो आप समाजनिष्ठ होते चले जाएँगे, चरित्रवान नागरिक होते चले जाएँगे, देश, धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति आप अपना लगाव व्यक्त करने लगेंगे और उनकी समस्याओं को भी अपनी समस्या मानने लगेंगे। यह क्या हो गया आत्मा का विस्तार। आत्मा का विस्तार यही है जिसको कि हम आध्यात्मिक उन्नति के नाम से पुकारते हैं। आत्मिक प्रगति के नाम से पुकारते हैं, यही वह रास्ता है, जिस पर चलते हुए आदमी का पूर्ण लक्ष्य तक पहुँचना संभव है। आपके लिए भी यही रास्ता है।

मित्रो! आपके लिए एवं सभी के लिए एक ही रास्ता है अपने आपके दायरे को बढ़ा देना। संतों ने यही किया था, महापुरुषों ने यही किया था। वे अपने लिए नहीं जिए। समाज के लिए जिए, देश, धर्म और संस्कृति के लिए जिए। सबके दु:खों में शामिल हुए, औरों के दु:ख बँटाते रहे और अपने सुख बाँटते रहे। अपने सुखों को बाँट देना और दूसरों के दु:खों को बँटा लेना, यही कौटुंबिक प्रवृत्ति है। आप अपनी प्रवृत्तियों को कौटुंबिक बनाइए, पारिवारिक बनाइए। अपने परिवार को जिस तरह आप अपना समझते हैं, ठीक उसी तरीके से सारे समाज को भी अपना समझिए, सारे देश को अपना समझिए, सारी मानव जाति को, प्राणिमात्र को अपना समझिए और अपना दायरा बढ़ाइए।

मित्रो! जो चीजें आपको अपनी मालूम पड़ती हैं, उनसे प्रसन्नता होती है और उनको आप अपना समझते हैं। लेकिन अगर आप सबको अपना मान लें तब? आपको कितना गौरव और प्रसन्नता का अनुभव होगा, कह नहीं सकते। तब सूरज भी आपका, चाँद भी आपका, सितारे भी आपके, नदी भी आपकी, पहाड़ भी आपके, जमीन भी आपकी, सारे इनसान भी आपके, सारे कुटुंब भी आपके, सारा संसार भी आपका। इस तरह अपना दायरा चौड़ा कर लें तब? तब आपकी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा। अभी तो आपने थोड़े-से लोगों को, थोड़ी-सी वस्तुओं को आपने अपना माना है। उससे भी कुछ-न-कुछ तो आपको राहत मिलती है, प्रसन्नता होती है, लेकिन जिस दिन आप सबको अपना मानने लगेंगे और अपने को सबका मानने लगेंगे, तब आप देखना कि आपको कैसा मजा आता है, कितना आनंद आता है और जीवन में, गतिविधियों में कैसा हेर-फेर होता है और आपकी प्रसन्नता किस तरीके से जमीन से आसमान को छूने लगती है। इस तरह आप अपने अंदर ऐसी स्थिति पैदा कीजिए।

संक्षेप में कहे तो चिंतनपरक-आत्मसमीक्षा एक, आत्म-सुधार दो और मननपरक आत्मनिर्माण एक और आत्मविकास दो। दो मनन की धाराएँ और दो चिंतन की धाराएँ चारों

एक साधु द्वार पर बैठे तीन भाइयों को उपदेश कर रहे थे, ''वत्स! जो कछुए की तरह अपने हाथ-पाँव सब ओर से समेटकर आत्म-लीन हो जाता है, ऐसे निरुद्योगी पुरुष के लिए संसार में किसी प्रकार का दु:ख नहीं रहता।''

घर के भीतर बुहारी लगा रही माँ के कानों में साधु की यह वाणी पड़ी तो वह चौकन्ना हो उठी। बाहर आई और तीनों लड़कों को खड़ा करके छोटे से बोली, ''ले यह घड़ा पानी भर कर ला।'' मझले से कहा, ''तू चल और सब कूड़ा उठाकर बाहर फेंक।'' अंत में साधु की ओर देखकर उस कर्मावती ने उपदेश दिया, ''महात्मन्! निरुद्योगी मैंने बहुत देखे हैं, कई पड़ोस में ही बीमारी से ग्रस्त, ऋण-भार से दबे शैतान की दुकान खोले पड़े हैं।''

ज्ञान को कर्म का सहयोग न मिले, तो कितना ही उपयोगी होने पर भी वह ज्ञान निरर्थक है।

को मिला दीजिए। यह चारों वेदों का सार है। यह चारों दिशाओं से भगवान् के बरसने वाले अनुदानों को प्राप्त करने का सही तरीका है। आपकी उपासना में चिंतन और मनन का भी स्थान रहना चाहिए और न केवल स्थान रहना चाहिए, बल्कि उसे मजबूती से पकड़े रहना चाहिए। छोड़ना किसी भी कीमत पर न हो, अगर आपका ऐसा संकल्प हो तो आप अध्यात्म जीवन में तेजी से आगे बढ़ेंगे और वह लाभ प्राप्त करेंगे जो अध्यात्मवाद की शक्ल में प्राप्त होते रहे हैं। ॥ ॐ शांति ॥ ❋

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शक्ति अध्यात्म आखिर है क्या

(शांतिकुंज परिसर में ३०/७/७२ को परमपूज्य गुरुदेव द्वारा दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! मनुष्य को इस सांसारिक जीवन की सफलता के लिए दो चीजों की आवश्यकता है, पहला है, श्रम और दूसरा ज्ञान। श्रम के द्वारा हम मेहनत करते हैं, मजदूरी करते हैं तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करके संतोष महसूस करते हैं। दूसरी चीज है, ज्ञान। ज्ञान का विकास मनुष्य के श्रम द्वारा होता है तथा उसके बाद मनुष्य की उन्नति होती है। सांसारिक जीवन में श्रम और ज्ञान दोनों की आवश्यकता है। श्रम हमारे पास हो और ज्ञान न हो तो हमारी भौतिक प्रगति, भौतिक संपदा नगण्य होती है, परंतु जब ज्ञान मनुष्य के पास होता है, तो वह इंजीनियर होता है, डॉक्टर होता है, कलाकार होता है। ज्ञान के द्वारा ही हमारा विकास होता है तथा हमारे विचार में परिवर्तन होता है। अतः हमको सांसारिक प्रगति के लिए श्रम को विकसित करना चाहिए। आप किसान की तरह से, श्रमिक की तरह से श्रम करके दौलत कमा सकते हैं। जापान में सब लोग श्रम का महत्त्व समझते हैं, श्रम की ही पूजा करते हैं।

श्रम की महिमा

एक बार स्वामी रामतीर्थ जापान गए। उन्होंने सोचा कि यह जापान थोड़े ही समय में इतना संपत्तिवान-लक्ष्मीवान कैसे हो गया? भारत के लोगों ने हजारों वर्षों से लक्ष्मी जी का पूजन किया, लक्ष्मी स्त्रोत का पाठ किया, परंतु संपत्तिवान न हो सके। इसका क्या कारण है। यह जानने के लिए स्वामी रामतीर्थ जापान गए। जापान एशिया में सबसे बड़ा दौलतमंद देश था। अमेरिका तो 'फर्स्ट वर्ल्डवार' तथा सेकंड वर्ल्डवार अर्थात् प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संपत्तिवान हुआ, परंतु प्रथम विश्वयुद्ध के पहले जापान ही एक देश था, जो दौलतमंद था। जापान कैसे मालदार हुआ, यह देखने वे गए। वहाँ वे एक कारखाने का निरीक्षण करने लगे। उन्होंने देखा कि एक ओर मशीनों से तेल टपक रहा है तथा दूसरी ओर श्रमिकों के शरीर से पसीना टपक रहा है। यह देखकर वे आश्चर्यचकित रह गए और समझ गए कि यही कारण है, जिससे जापान के लोग संपत्तिवान हो गए।

सन् १९२९ से पहले की बात है। वहाँ के लोग श्रम के कारण सारी दुनिया की संपत्ति अपने यहाँ इकट्ठा कर लेना चाहते थे। हमें याद है कि उस जमाने में जापान की साइकिल भारत में २२ रुपये में मिलती थी, जिसमें भारत के जापान से लाने में १० रुपये खरच होते थे। वह सारी दुनिया में इतनी बिकती थी कि इसके कारण जापान एशिया में मालदार हो गया। उसने उन दिनों अमेरिका पर भी हमला किया था। वह छोटा-सा देश दुनिया में सबसे मालदार यानि भौतिक दृष्टि से महान् बनना चाहता था।

भौतिक उन्नति कैसे हो सकती है, यह देवी की पूजा, संतोषी माता की पूजा-पाठ से नहीं हो सकती है। यह आध्यात्मिक विषय है। देवता का काम दौलत बाँटना नहीं है। श्रम के देवता का काम धन देना है। आप रेलवे स्टेशन पर जाएँ और यह कहें कि बाबू जी हमें चिपकाने वाला टिकट दे दीजिए। अरे! आपको यह भी नहीं मालूम कि कौन-सी चीज कहाँ मिलती है। आपको चिपकाने वाली टिकट डाकघर में मिलेगी। रेल से सफर करने का टिकट रेलवे स्टेशन पर मिलेगा।

स्वामी रामतीर्थ ने देखा तो यह पाया कि वहाँ के श्रमिक प्रातः ९ बजे से शाम के चार बजे तक श्रम करते हैं। बच्चे, पत्नी एवं घर के सभी लोग वहाँ छह घंटे अवश्य श्रम करते हैं, जिसके कारण वह देश दौलतमंद है। आप श्रम करेंगे, तो आपकी भौतिक उन्नति होगी।

शिक्षा नहीं ज्ञान

मित्रो! दूसरी चीज ज्ञान है। यह शिक्षा से संबंध नहीं रखता है। ज्ञान का मतलब विद्या से है, जिसके द्वारा मनुष्य का विकास होता है, प्रगति होती है। ज्ञान, जिसे आप शिक्षा कहते हैं, इसे हम जानकारी कहते हैं। मित्रो! आप रास्ता बदल दें, तो आप भी मालदार बन सकते हैं। अभी आपको श्रम करने का अभ्यास नहीं है, श्रम का तिरस्कार करते हैं। हमारे इस अभागे समाज ने श्रम के प्रति अवज्ञा की है। जो आदमी श्रम करता है, उसे हम चमार, धोबी, डोम, मोची आदि कहते हैं तथा उसका हम तिरस्कार करते हैं। श्रम के प्रति इस देश में जब तक अवज्ञा होती रहेगी, इसका भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता। मित्रो! हम श्रमिक हैं तथा २४ घंटे श्रम करते हैं। हम श्रम का सम्मान

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करते हैं। हमारे विचार में 'कामचोर' 'हरामखोर' एक गाली है। अत: यदि आप उन्नति करना और इससे बचना चाहते हैं, तो आपको श्रम करना चाहिए तथा श्रम के प्रति सम्मान जाग्रत् करना चाहिए। हमारा विचार यही है कि भारत के लोग श्रम करें एवं सुखी रहें। आज आप अपनी औलाद को देखें, वह श्रम के अभाव में शराबी, मांसाहारी तथा व्यभिचारी हो गई है। चूँकि आपने ढेर सारी संपत्ति को उसके लिए रख छोड़ा है। वह मौज-मस्ती का जीवन जीती है। इस प्रकार आपका तो सत्यानाश हो जाएगा। आपने देखा नहीं कि राजमहलों का क्या हुआ? आप श्रम का सम्मान करेंगे, तो आपका विकास होगा। आज सम्मान उन्हें मिल रहा है, जो हाथ से काम नहीं करते हैं, जैसे कि पंडित जी, पुरोहित जी। आपकी निगाह में काम न करने वालों को पंडित जी, पुरोहित जी, जागीरदार जी, बाबू जी आदि कहा जाता है। यह गलत है। इसमें सुधार की आवश्यकता है।

मित्रो! अगर आपको दौलत प्राप्त करनी है, धनवान बनना है, तो हम आपको सही तरीका बतला सकते हैं। आप श्रम की शक्ति को बढ़ाइए। इसे आप तब बढ़ा सकेंगे जब आप श्रम का सम्मान हमारी तरह कर रहे होंगे। हाथ-पाँव से मशक्कत करके आपने पैसा कमाया है, तो आप उसका उपयोग सही ढंग से कर सकते हैं। बाप की कमाई अगर बेटा खा रहा है, तो यह अनैतिक कार्य है। यह मांस खाने के बराबर है।

प्राचीनकाल में श्राद्ध की परंपरा थी। आज भी वह किसी-न-किसी रूप में जीवित है। पहले जमाने में जब किसी की मृत्यु हो जाती थी, तो पंचायत बैठती थी तथा यह निर्णय लेती थी कि इनके बच्चों का काम मेहनत करने से, मशक्कत करने से चल सकता है या नहीं? अगर ये वयस्क होते थे, हाथ से कमाते थे, तो उनके पिता का सारा पैसा समाज के कल्याण के लिए लगा दिया जाता था। उसका नाम श्राद्ध था। अगर उनके पास कुछ नहीं होता तो पंचायत उन बच्चों को दे देती थी। वास्तव में वही व्यक्ति सही रूप से खरच कर सकता है, जो श्रम से कमाता है।

मित्रो! शारीरिक श्रम से ही आत्मविकास एवं भौतिक प्रगति संभव है। प्राय: लोगों को शिकायत रहती है कि शारीरिक श्रम से हम थक जाते हैं। बेटे! वही व्यक्ति थकता है, जो श्रम को बेकार समझकर करता है। खिलाड़ी को कभी थकावट नहीं आती है, क्योंकि काम करते समय उसमें उत्साह होता है। इसलिए उसे थकावट नहीं आती। कैदी थकता है, परंतु किसान नहीं थकता है। थकता वह है जो काम को पराया समझता है। हमने शारीरिक तथा मानसिक श्रम किया है। आज जो आप देख रहे हैं, वह श्रम का फल है। श्रम करने से हमारे भीतर दो गुना उत्साह पैदा हो गया है। हमारे नस-नाड़ी, मस्तिष्क, शरीर पूर्ण स्वस्थ हैं। पेंशन पाने वाले आज जल्दी थक जाते हैं, अस्वस्थ हो जाते हैं। उनकी सेहत खराब हो जाती है।

आदमी को जन्म से लेकर मृत्यु तक श्रमिक होना चाहिए। रामप्रसाद विस्मिल को फाँसी लगने वाली थी। वह बीस मिनट पहले व्यायाम कर रहे थे। लोगों ने पूछा कि आपको तो अब फाँसी लगने वाली है, यह क्या कर रहे हैं? उन्होंने कहा कि हमने जीवनभर मेहनत एवं मशक्कत की है। वह अभ्यास हमें हर दिन करना है। अजगर पड़ा रहता है। आप तो खरगोश बनें तथा दौड़ते रहें। मशक्कत करने से ही लाभ होगा। उनने चटाई उठाकर एक जगह पर रख दी तथा कहा कि अगर दूसरे कैदी आवें तो वह यह न कहें कि कैसा गंदा कैदी था। सब काम पूरा करने के बाद उसने गीता को उठाया और सीने से बाँधकर यह गीत गाता हुआ चल दिया, 'मेरा रंग दे वसंती चोला'.....। 'मैं आत्मा हूँ, आत्मा रहूँगा। बदल डालूँगा यह पुराना चोला'।

दैनंदिन जीवन की सिद्धि

मित्रो! अगर आपको भौतिक जीवन में तथा आध्यात्मिक जीवन में सिद्धांतों का पालन करना हो तो श्रम और ज्ञान के प्रति सम्मान होना चाहिए। अगर श्रम के प्रति आपके अंदर सम्मान है, तो फिर आप देखना कि क्या चमत्कार होता है। आप श्रम करेंगे तो दीर्घजीवी होंगे। इसके लिए खुराक की जरूरत है, अमुक चीज की जरूरत है, इसके साथ ही सबसे आवश्यक है, मनुष्य की मशक्कत यानी-श्रम! इसके बिना मनुष्य को दीर्घजीवन प्राप्त करना संभव नहीं है। एशिया के अंतर्गत एक रेगिस्तान है। वहाँ के लोग सौ वर्ष से कम जीते ही नहीं हैं। एक आदमी अभी एक सौ साठ वर्ष की उम्र में मरा है। उसने सौ वर्ष की उम्र में भी शादी की थी। उसके साठ से ऊपर बच्चे थे। यह दीर्घजीवन कैसे मिला? यह खान-पान से हुआ था, यह भी ठीक है। यह संयम से संभव हुआ था, यह भी ठीक है, परंतु एक चीज इससे भी आगे की है और उसका नाम है श्रम। इसके बिना अर्थात् मशक्कत किए बिना आप दीर्घजीवन नहीं प्राप्त कर सकते हैं। खुराक खाना ही ज्यादा नहीं है, अगर आप मशक्कत नहीं करेंगे तो आपका पेट बढ़ता हुआ चला जाएगा, चर्बी बढ़ती हुई चली जाएगी और आप मरेंगे। बेटे यह भौतिकता की बात नहीं है, यह आध्यात्मिकता का प्रशिक्षण है, जिसके बिना आपको भौतिक लाभ मिल ही नहीं सकता।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मित्रो! एक दूसरी चीज है जिसका नाम शिक्षा है। इसके बिना मानवीय विकास संभव नहीं है। हम योरोप गए थे और वहाँ देखकर आए थे। बेचारे गरीब लोग, जो किसी तरह अपना पेट भरते हैं, वह भी यह सोचते हैं कि हमारी शिक्षा का विकास होना चाहिए। केवल शरीर के विकास से ही सब कुछ संभव नहीं है। उनका यह विचार है कि मनुष्य के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी जरूरी है। मानसिक विकास के बिना सांसारिक जीवन में हम प्रगति नहीं कर सकते हैं। वे सात घंटे परिश्रम करते हैं, परंतु दो घंटे नियमित रूप से रात्रि पाठशाला में भाग लेते हैं। आप तो पत्ते खेलने में बर्बाद कर देते हैं। जो मेकेनिक होता है, वह अपने विभाग के लोगों से जानकारी लेता हुआ आगे चलकर बी. ई., एम. ई. बन जाता है। छोटा-सा मजदूर उसी क्षेत्र का इंजीनियर बन जाता है। उस क्षेत्र में नाम एवं ख्याति प्राप्त करता है।

स्वामी विवेकानंद जब अमेरिका गए थे, उस समय वहाँ की जनता को वे वेदांत की शिक्षा देने लगे, तो उन्होंने एक प्रश्न किया कि क्या आपने भारतवर्ष में इस शिक्षा को पूरा कर लिया? थोड़ी देर वे मौन रहे, फिर उन्होंने कहा कि आप लोगों ने मैट्रिक पास कर लिया है। आप लोगों ने पहली चीज अर्थात् शरीर बल प्राप्त कर लिया है। आपने श्रम करके संपत्ति भी प्राप्त कर ली है, जो आध्यात्मिकता का प्रथम चरण है। आगे अब आपको वेदांत की आवश्यकता है। इस कारण से हम यहाँ आए हैं। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान में वह स्थिति नहीं आई है। वहाँ के लोगों को हम कर्मयोग सिखाते हैं। उन्हें हम बतलाते हैं कि आप मशक्कत करें तथा रोटी कमाना सीखें। आपने तमोगुण को पूरा कर लिया अर्थात् आप अब जड़ प्रकृति के नहीं हैं। आपने परिश्रम करना सीख लिया है। भारतवर्ष के अंतर्गत यह होता है कि बाप पचास वर्ष के हो गए तथा बेटा बाईस वर्ष का हो गया और नौकरी करने लगा, तो वह स्वयं काम करना ठीक नहीं समझते। यह है कामचोरी, हरामखोरी, जो आपके यहाँ नहीं है। अत: आपको वेदांत का शिक्षण दिया जा सकता है।

हमारा जीवन एक मिसाल

मित्रो! आप भजन नहीं काम करें। भजन तो एक घंटे होता है। बेटे! हमारा सिनेमा रात के एक बजे से प्रारंभ हो जाता है। हम भजन भी करते हैं तथा सोलह घंटे मशक्कत भी करते हैं। आप श्रम नहीं करेंगे, तो आपको मैं बेहूदा, हरामखोर कहूँगा और इससे ऊपर की भी गाली दूँगा। जो मशक्कत नहीं करते हैं, उन्हें मैं घृणा की दृष्टि से देखता हूँ। बेटे! हमारा रात्रि एक बजे से सुबह सात बजे तक सिनेमा चलता है। सात बजे से नौ बजे तक 'इंटरवल' होता है। इसके बाद जब तक हम आपको ध्यान नहीं करा देते हैं, विश्राम नहीं करते हैं। हम एक श्रमिक हैं। श्रमिक की दृष्टि से हमारी उम्र सत्रह वर्ष है, वैसे इस समय हमारी उम्र सत्तर वर्ष की है। 'सेवन्टीन' तथा 'सेवन्टी' में कोई अंतर नहीं है। साधारणतया दाँत न हों तो जबान से इस तरह की भूल हो जाती है, लेकिन शरीर और मन से हम 'सेवन्टीन के हैं। परिश्रम हमारे लिए एक योगाभ्यास है, प्रगति चाहने वाले हर मनुष्य के लिए यह आवश्यक है।

मित्रो! शारीरिक श्रम के साथ ही मानसिक श्रम भी आवश्यक है। अमेरिका में बहुत से स्कूल हैं, परंतु वैसे विद्यार्थी अधिक हैं स्कूलों में, जो शनिवार और रविवार को क्लास करते हैं और अपना आत्मविकास करते हैं। इस कारण उनका प्रगति का रास्ता खुल जाता है। पाँच दिन मेहनत-मजदूरी करके पेट भरते हैं तथा दो दिन छुट्टी होती है, तो उसी के आधार पर उनका विकास होता चला जाता है। जब तक उनके आँखों की रोशनी खत्म नहीं होती है, वह अपनी पढ़ाई तथा आत्मविकास का कार्य रोकते नहीं हैं।

मित्रो! मैं यह बतला रहा था कि आपके देवता तो अनेक हैं, परंतु उनमें से दो देवता—श्रम और ज्ञान प्रधान हैं। अगर आप इनकी पूजा-उपासना कर सकेंगे, तो आपको भौतिकता की सारी उपलब्धियाँ प्राप्त हो जाएँगी। आप शेखचिल्ली की उड़ान न भरें, वरन् आध्यात्मिकता के सही स्वरूप को समझने का प्रयास करें, तभी वास्तविक श्रम का लाभ व सत्परिणाम आपको प्राप्त होगा। आप दौलत चाहते हैं, तो आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। हमको स्वर्ग की कोई इच्छा नहीं है। हमने पंडितों से सुना है कि एक स्वर्ग है, जो बहुत ही वाहियात किस्म का है। वहाँ बड़े-बड़े पेड़ हैं, इंद्र की अप्सराएँ नाच करती रहती हैं। आदमी के विचार वास्तव में जानवरों के समान हैं।

भ्रांतियों से निकलें, वास्तविकता जानें

अगर आप हिंदू हैं या मुसलमान हैं, तो आपके स्वर्ग एवं जन्नत में दो ही चीजें रखी हैं, शराब और अप्सराएँ। जन्नत में शराब एवं शहद रखा है, हूर और गुलमा है। अरे! आपको पानी पीने से क्या काम, आप तो शराब पिएँ। वहाँ सत्तर हूर रहती हैं। हूर किसे कहते हैं, खूबसूरत औरतों को। सत्तर गुलाम हैं, जो आपकी सेवा करेंगे। आपकी चप्पल उतारेंगे, पानी पिलाएँगे, शराब पिलाएँगे। आपका कुर्त्ता साफ करेंगे। स्वर्ग की कामना करने वाले

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कामचोर, हरामखोर, व्यभिचारी, घटिया लोग यही चाहते हैं कि ये चीजें जन्नत में मिलेंगी। इसी ख्वाब में लोग डूबे रहते हैं। आज के संतों पर हमें गुस्सा आता है। उनको यहाँ भी एकादशी के दिन उपवास और वहाँ स्वर्ग में जाने पर भी एकादशी का व्रत रहेगा और कहेंगे कि कहाँ है कल्पवृक्ष-मेवा और फल चाहिए। मक्कार कहीं का, केवल स्वर्ग की कामना करता है।

मित्रो! हम आपको वास्तविकता से परिचय कराना चाहते हैं। अगर आपको सांसारिकता से लगाव है तथा शरीर को नीरोग और खुशहाल बनाना चाहते हैं, तो मशक्कत करें। श्रम करें। अक्ल की भी पूजा कर लेंगे तो सब चीजें पूरी हो जाएँगी। आपकी कामना पूरी हो जाएगी। आपकी तृष्णा पूरी हो जाएगी। तृष्णा क्या है? बेटे! आपने बेटे की शादी में पचास हजार रुपये खरच कर दिया। ऐसा क्यों किया, जबकि आपको इसका सूद मिलता था। अब तो घाटा गया है। हाँ साहब! हो तो गया, पर दूसरों को दिखाने के लिए, रौब झाड़ने के लिए, अपना सिक्का बजाने हेतु ऐसा किया। इसे ही तृष्णा कहते हैं। एक और भूत हमारे ऊपर सवार रहता है, उसका नाम 'अहं' है। जिसका हम प्रदर्शन करते हैं। मोटर पर बैठकर बादशाह की तरह से चलते हैं। यह है अहं, जो समाज को दिखाया जाता है। यह अहं ही पिशाच है, राक्षस है। यह हमारा हर तरह से नुकसान पहुँचाते हैं। इसे पूरा करने के लिए हम न जाने कितना आडंबर बनाते हैं। अहं, वासना और तृष्णा ये ही मनुष्य को पतन की ओर ले जाते हैं।

हमारी जीभ में स्वाद है, परंतु उसके लिए खुराक चाहिए। पेट भरने के लिए रोटी, सब्जी चाहिए, हमको अमुक चीज चाहिए। यह सारी चीजें पूरी करने के लिए मनुष्य को श्रम करना पड़ता है। श्रम तथा बुद्धि के आधार पर हम साधन इकट्ठा करते हैं। अगर आपको भौतिक चीजों की ही लालसा है, तो आपको आध्यात्मिकता की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। उसके लिए श्रम कीजिए।

मित्रो! किंतु क्या किया जाए! ये देवी-देवता हत्यारे हैं, चुडैल हैं, जो बकरा खाते हैं और मनोकामना पूर्ण करते हैं। आपकी समस्याएँ बिलकुल भौतिकवादी हैं। अध्यात्मवाद से आपका कोई संबंध नहीं है। आपकी तो मिट्टी पलीद हो ही चुकी है, अब हमारी होने वाली है। अध्यात्म की मिट्टी पलीद होने वाली है। अरे, हम एक नाव में जो बैठे हैं। आप मरेंगे तो हम भी मरेंगे। लोभी गुरु-लालची चेला दोनों मरेंगे।

मित्रो! एक मौलवी साहब थे। उनका एक चेला था। चेले को समझाकर मौलवी साहब मक्का-मदीना हज करने चले गए। इधर चेले ने अपनी करामात दिखाना शुरू कर दिया। उसको जो भी चढ़ावा आता, वह उसे खाता तथा अपने पास रख लेता। इस बीच में वह चेला खूब खा-पीकर मोटा हो गया था।

चेले ने सोचा कि जब मौलवी साहब आ जाएँगे, तो हमारी क्या चलेगी तथा हमें कौन पूछेगा? उसने एक चाल चली और गाँव के हर मुसलमान के घर गया और औरत, बच्चे, बूढ़े प्रत्येक नर-नारी से एक ही बात कहता रहा कि मौलवी साहब मक्का-मदीना से आने वाले हैं। वे बहुत बड़े सिद्ध पुरुष होकर के आ रहे हैं, जिसे जो कह देंगे, कर देंगे, उसको लाभ मिलेगा। वे बहुत चमत्कारी बनकर आ रहे हैं। उनतीस तारीख को मौलवी साहब आ गए। भीड़ लगने लगी। चेले ने कहा कि आप जानते नहीं हैं, मौलवी साहब की दाढ़ी में चमत्कार है। पहले बाल में पूरा चमत्कार है। दूसरे-तीसरे में क्रमशः बीस प्रतिशत, पंद्रह प्रतिशत लाभ मिलेगा। अब तो हल्ला मच गया। पहले बाल के लिए भीड़ लग गई।

२९ तारीख को सबने अपना कारोबार बंद कर दिया और पहुँच गए मौलवी साहब के पास। सभी ने उन्हें मालाएँ पहनाईं। मौलवी साहब प्रसन्न थे। वे बैठे भी नहीं थे कि अरे भाई! जरा रुको। यह क्या कर रहे हो? कोई माना नहीं और उनकी दाढ़ी तथा सिर के सभी बाल उखाड़ लिए। अब मौलवी साहब ने सोचा कि मेरे सारे बाल उखड़ गए। अब हम घर पर जाएँगे, तो घरवाली रहने नहीं देगी। अतः यहाँ से भागना ही अच्छा है। मौलवी साहब चले गए। चेले की पौ बारह हो गई।

असली अध्यात्म समझें

मित्रो! मैं क्या कह रहा था? मनोकामना की बात, सिद्धियों की बात कह रहा था। अगर इसका नाम अध्यात्म है, गायत्री है, अनुष्ठान है, तो मैं आपसे बहुत ही नम्र शब्दों में कहना चाहूँगा कि इससे आपको कोई फायदा नहीं होने वाला है। आपको महात्मा के पास जाने से, चक्कर काटने से कोई लाभ मिलने वाला नहीं है। आप दो ही देवताओं श्रम और शिक्षा की, ज्ञान की पूजा करें और अपने जीवन को महान् बनाएँ। यह एक अध्याय आज समाप्त हुआ। इसके आधार पर भी भौतिक जीवन में आप सुख और आनंद पा सकते हैं।

मित्रो! एक दूसरा रास्ता और है, जिसे हम अध्यात्म कहते हैं। बेटे! अध्यात्म वह चीज है जो भौतिक शरीर के भीतर निवास करता है, जिसके द्वारा मनुष्य को सिद्धि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मिलती हैं। भौतिक शक्ति एवं आध्यात्मिक शक्ति को जब हम मिलाते हैं, तो एक नए किस्म की चीजें मिलती हैं, जिसे हम 'विभूतियाँ' कहते हैं। विभूतियाँ वह चीज हैं जो देखलाई नहीं पड़ती हैं। मित्रो! हमारी नसों में-नाड़ियों में जो शक्ति है, उसे हम दिखा नहीं सकते हैं। हम नसों को दिखा सकते हैं, किंतु उसकी शक्ति को नहीं। नहीं साहब! हम तो उस शक्ति को देखना चाहते हैं, जिससे जब आप किसी को घूँसा मारते हैं और गिरा देते हैं। बेटे! हम अपनी चेतना को भी नहीं दिखा सकते हैं। वह भी उसी प्रकार की चीज है। बेटो! ब्रह्मांड में जो चीजें विद्यमान हैं वह सारी-की-सारी चीजें हमारे शरीर में भी विद्यमान हैं। इतना ही नहीं, हमारे अंदर दिव्य शक्ति विद्यमान है।

दिव्य शक्ति किसे कहते हैं? मित्रो! यह देवताओं की शक्ति है, जो हमारे अंग-अंग में विद्यमान है। इसके अलावा हमारे भीतर 'सुप्रीम पावर' अर्थात् परमात्मा विद्यमान है। परमात्मा क्या है? यह आस्था है, संवेदना है। हम अपनी चेतना को आस्था एवं संवेदना के साथ जोड़ लें, तो हम सारी खुशी प्राप्त कर सकते हैं। हमारे अंदर 'शिवोऽहं' की भावना आ सकती है। अगर चेतना को सुप्रीम पावर के साथ जोड लें, तो मनुष्य बहुत ज्यादा सुख तथा आनंद का अनुभव कर सकता है।

मित्रो! इसके साथ ही हमारे शरीर के हर चीज के दो रूप हैं। एक है भौतिक रूप आँखों का, जिसके द्वारा हम बाहर की चीजें देख सकते हैं। आँखों का आध्यात्मिक रूप जिसे हम आज्ञाचक्र कहते हैं, दिव्य दृष्टि कहते हैं। जिसके द्वारा दूर की चीजें, भूत, वर्तमान, भविष्य की चीजें देख सकते हैं। इसे हम माइक्रोस्कोप से भी नहीं देख सकते हैं। यह वस्तु का सूक्ष्म रूप है। यह टेलीविजन तथा टेलीफोन की तरह है। संजय ने अपनी दिव्य दृष्टि से महाभारत के सारे दृश्य देखे थे तथा धृतराष्ट्र को पूरा-का-पूरा विवरण सुनाया था। यह दिव्य दृष्टि क्या थी? मित्रो! हमारे भीतर बहुत सारी चीजें फिट हैं। इतनी ज्यादा फिट हैं कि हम उनका वर्णन नहीं कर सकते हैं। अगर हमारी अक्ल तथा श्रम ठीक से काम करे, तो उस टेलीविजन से हम सारी चीजें प्राप्त कर सकते हैं। हमारे भीतर अतींद्रिय क्षमताएँ भरी पड़ी हैं। अगर हम उसे जगा लें, तो सारी-की-सारी भौतिक उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

जीवो ब्रह्मैव नापरः

मित्रो! उसी चेतना को, जिसमें आध्यात्मिक शक्ति भरी पड़ी है, उसे अक्ल के माध्यम से, शिक्षा के माध्यम से, ज्ञान के माध्यम से हम जगा सकते हैं तथा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उस समय हम महात्मा, सिद्धपुरुष, देवात्मा बन जाते हैं। हम परमात्मा भी बन सकते हैं। परमात्मा भी मनुष्य है। वह मनुष्य का साफ-सुथरा स्वरूप है। ब्रह्म अलग है, जिसका हमने स्वरूप नहीं देखा है, परंतु जो चौबीस अवतार हुए हैं, उसमें से अधिकांश का मनुष्य का ही स्वरूप रहा है। परशुराम जी तीन कला के, रामचंद्र जी बारह कला के और श्रीकृष्ण जी सोलह कला के अवतार थे। ये सब कला के मनुष्य थे। तीन कला का मतलब क्या हुआ? मनुष्य से तीन गुना अधिक शक्ति रखने वाले व्यक्ति। हम सब एक कला के भगवान् हैं, अवतार हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश हेतु हमें अपनी चेतना को परिष्कृत करना चाहिए। हमें यह समझना चाहिए कि एक दुनिया वह है, जो आपके लिए बाहर खड़ी है। एक दुनिया यह है, जो हमारे भीतर अर्थात् 'एटम' के भीतर है। इसे अध्यात्म द्वारा ही जाना जा सकता है।

मित्रो! हमें अब यह बतलाना है कि अंतः में जो ताकत है, उसे कैसे जगाया जा सकता है। अंतरंग जीवन में एक अनोखी और शक्तिशाली दुनिया है। इसमें अपनी अंतः चेतना का प्रवेश कैसे करा सकते हैं, यह हमें बतलाना है। उसे विकसित कैसे कर सकते हैं, यह बतलाना है। अध्यात्म से भौतिक लाभ मिल सकते हैं? हाँ बेटे! भौतिक लाभ इससे मिल सकते हैं। इससे हम सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। सोने से कपड़ा खरीद सकते हैं, मकान खरीद सकते हैं। विभूतियों के द्वारा ही आध्यात्मिक सफलता मिलती है।

हम अपनी अंतःसामर्थ्य को कैसे विकसित कर सकते हैं, विभूतियाँ एवं सिद्धियाँ कैसे प्राप्त कर सकते हैं, यह कल से हम आपको बतलाने का प्रयास करेंगे। आज तक हमने आपको भौतिक जीवन का स्वरूप समझाने में अपना समय लगा दिया। अगर जब समय मिलेगा आपसे अध्यात्म की विशद् चर्चा करेंगे तथा बताएँगे कि ब्रह्मवर्चस का उपासना-साधना का, आध्यात्मिक का जो प्रशिक्षण दिया जा रहा है, उसका उद्देश्य क्या है? उसका प्रयोग क्या है? उसके सिद्धांत बताने के साथ यह भी बतलाने का प्रयास करेंगे कि यहाँ पर जो क्रियाएँ हमने सिखाई हैं, उसमें आप कैसे सफल और पारंगत हो सकते हैं? इसमें आपको क्या-क्या करना होगा? यह विषय समझाना आज से हमारा उद्देश्य है। आज से हम अपनी व्याख्यान माला शुरू कर रहे हैं। आध्यात्मिकता का पूरा-का-पूरा स्वरूप आपकी समझ में जब तक नहीं आ जाए, तब तक हमारा यह कार्यक्रम चालू रहेगा, ताकि आप आध्यात्मिकता का सही स्वरूप समझ सकें तथा इस रास्ते पर चलने का प्रयास कर सकें। आज की बात समाप्त। ॥ ॐ शांतिः ॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

इन्सान के अंदर का भगवान् जगाएँगी प्रतिभावान विभूतियाँ

(१६-४-७४ का शांतिकुंज में दिया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! इन दिनों मनुष्य जाति एक ऐसे चौराहे पर खड़ी है, जिसके एक ओर सर्वनाश है, एक ओर उत्थान। हम सभी सामूहिक आत्महत्या करने के लिए खड़े हुए हैं। मनुष्य जाति चाहेगी, तो थोड़े दिनों पीछे सामूहिक रूप से आत्महत्या भी करनी पड़ेगी, क्योंकि तब हमारे ऊपर एटम बम बरसने लगेंगे और सारे-का-सारा वातावरण जहरीला हो जाएगा। मौत और जिंदगी में से एक का निर्धारण करने का सही वक्त यही है। ये चौराहा है। ये युग की संध्या है। इस युग की संध्या में हमको और आपको, उन लोगों को जिनके पास क्षमताएँ हैं, उनको थोड़े समय के लिए कम-से-कम एक जिंदगी के लिए इस बात का विचार करना चाहिए कि हम इस जन्म में मालदार नहीं बनेंगे, तो हमारा पुण्य अगले जन्म में हमें मालदार बना सकता है। इस जन्म में हम औलाद वाले और संतान वाले नहीं बनेंगे, तो अगले जन्म में हम संतान वाले और औलाद वाले बन सकते हैं। इस जन्म में अगर हमने वासना और तृष्णा को पूरा नहीं भी किया, तो अगले जन्म में हम पूरा कर सकते हैं, अगर अगला जन्म इन्सान का मिल गया तब।

भौतिक इच्छा में पुत्रेषणा आती है, लोकेषणा आती है, वित्तेषणा आती है, वासनाएँ आती हैं, तृष्णाएँ आती हैं, लोभ-मोह को पूरा करना आता है। इन्हीं चार-पाँच चीजों के चंगुल में इन्सान की जिंदगी बँधी हुई सड़ रही है। लोगों से हमें कहना है कि इन बंधनों में से अपनी जिंदगी को निकालिए और जहाँ समय ने, युग ने, मनुष्यता ने और भगवान् ने आपको पुकारा है, वहाँ जाकर के खड़े हो जाइए। आप यहाँ से ये प्रेरणा लेकर जाएँ, संदेश ले करके जाएँ, उद्‌बोधन लेकर के जाएँ और वहाँ जाएँ जहाँ फूल खिला हुआ हो। बगीचा तो सारा है। वहाँ कहीं कलियाँ होती हैं, कहीं पत्ते होते हैं, लेकिन भौंरों और शहद की मक्खियों को खासतौर से वहीं चक्कर काटना पड़ता है, जहाँ खिलावट ज्यादा होती है। हमको और आपको सर्वसाधारण के पास भी जाना पड़ेगा, जन-जन के पास जाना पड़ेगा, हर आदमी को संबोधित करना पड़ेगा, लेकिन जहाँ कहीं भी आपको ज्यादा चमक दिखाई पड़ती हो, प्रभाव ज्यादा दिखाई पड़ता हो, वहाँ आपको अपनी आँखों को बहुत तीखी रखना पड़ेगा।

आप जादूगर होकर जाएँ

मित्रो! गाँधी जी में यह विशेषता थी कि वे मनुष्य को जानने-परखने में बहुत होशियार थे। उनकी समझ में और पकड़ में ज्यादा देर नहीं लगती थी कि इसका नाम जवाहर लाल नेहरू है। इस तरह लोगों की आँखों में आँखें डालकर, चेहरे पर निगाहें डालकर आदमियों को पहचानने में उन्हें जरा भी गलत-फहमी नहीं होती थी कि ये काम का आदमी है और मजेदार आदमी है। उन्होंने इस तरह के काम के और मजेदार आदमी जहाँ कहीं भी पाए, उनकी खुशामद की तो क्या, प्यार किया तो क्या, कहीं-न-कहीं से गढ़कर हिंदुस्तान की आजादी की सेना में एक-से-एक बढ़िया आदमी लाकर के खड़े कर दिए। आदमी को पहचानने वाले जादूगर थे और बाजीगर थे वे। आपको भी मैं चाहूँगा कि आप जादूगर होकर के जाएँ, बाजीगर हो करके जाएँ और आदमी को पहचानने वाला होकर के जाएँ। आपको जहाँ कहीं भी ये दिखाई पड़ता हो कि ये काम का आदमी है, तो आप उसके पास सौ बार जाना, सौ बार खुशामद करना। हमारे लिए तो यह संभव नहीं हो पाता। हम तो चिट्ठी भी नहीं लिख पाते। हमारे पास तो चार सौ-पाँच सौ चिट्ठियाँ आती हैं। हमारे लिए तो उस डाक को पूरा करना और जवाब देना ही मुश्किल हो जाता है। हम तो उन लाखों लोगों में से जिनमें चमक देखी, प्रभाव देखा, उनके पास जा भी नहीं सकते और बुला भी नहीं सकते। आपको हम उसी तरीके से 'डेलिगेट' नियुक्त करते हैं, जैसे हमारे गुरु ने हमको प्रतिनिधि नियुक्त किया हुआ है। मेरे गुरुजी ने कहा कि मुझे वहाँ जाना चाहिए जहाँ कहीं भी दुनिया में चमकदार आदमी दिखाई पड़ें, जबर्दस्त आदमी दिखाई पड़ें। उनकी खुशामद करनी चाहिए, उन पर नजर डालनी चाहिए, उनकी चापलूसी करनी चाहिए, जो आदमी आत्मविश्वास से भरे हुए हों, विद्या से भरे हुए हों, जीवट और जान से भरे हुए हों, प्रभाव से भरे हुए हों और प्रतिभा से भरे हुए हों।

जहाँ भी चमक है, वहाँ विभूति है

मित्रो! हम आपको अपना प्रतिनिधि, अपना डेलीगेट, अपना संदेशवाहक नियुक्त करके भेजते हैं। इस तरह की चमक जहाँ कहीं भी आपको दिखाई पड़े, वहाँ आपको खासतौर से ध्यान देना चाहिए। क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता की विभूतियों में ये कहा है कि जहाँ कहीं भी चमक दिखाई पड़ती है, वहाँ-वहाँ मैं हूँ। पेड़ों में पीपल का पे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कामचोर, हरामखोर, व्यभिचारी, घटिया लोग यही चाहते हैं कि ये चीजें जन्नत में मिलेंगी। इसी ख्वाब में लोग डूबे रहते हैं। आज के संतों पर हमें गुस्सा आता है। उनको यहाँ भी एकादशी के दिन उपवास और वहाँ स्वर्ग में जाने पर भी एकादशी का व्रत रहेगा और कहेंगे कि कहाँ है कल्पवृक्ष-मेवा और फल चाहिए। मक्कार कहीं का, केवल स्वर्ग की कामना करता है।

मित्रो! हम आपको वास्तविकता से परिचय कराना चाहते हैं। अगर आपको सांसारिकता से लगाव है तथा शरीर को नीरोग और खुशहाल बनाना चाहते हैं, तो मशक्कत करें। श्रम करें। अक्ल की भी पूजा कर लेंगे तो सब चीजें पूरी हो जाएँगी। आपकी कामना पूरी हो जाएगी। आपकी तृष्णा पूरी हो जाएगी। तृष्णा क्या है? बेटे! आपने बेटे की शादी में पचास हजार रुपये खरच कर दिया। ऐसा क्यों किया, जबकि आपको इसका सूद मिलता था। अब तो घाटा गया है। हाँ साहब! हो तो गया, पर दूसरों को दिखाने के लिए, रौब झाड़ने के लिए, अपना सिक्का बजाने हेतु ऐसा किया। इसे ही तृष्णा कहते हैं। एक और भूत हमारे ऊपर सवार रहता है, उसका नाम 'अहं' है। जिसका हम प्रदर्शन करते हैं। मोटर पर बैठकर बादशाह की तरह से चलते हैं। यह है अहं, जो समाज को दिखाया जाता है। यह अहं ही पिशाच है, राक्षस है। यह हमारा हर तरह से नुकसान पहुँचाते हैं। इसे पूरा करने के लिए हम न जाने कितना आडंबर बनाते हैं। अहं, वासना और तृष्णा ये ही मनुष्य को पतन की ओर ले जाते हैं।

हमारी जीभ में स्वाद है, परंतु उसके लिए खुराक चाहिए। पेट भरने के लिए रोटी, सब्जी चाहिए, हमको अमुक चीज चाहिए। यह सारी चीजें पूरी करने के लिए मनुष्य को श्रम करना पड़ता है। श्रम तथा बुद्धि के आधार पर हम साधन इकट्ठा करते हैं। अगर आपको भौतिक चीजों की ही लालसा है, तो आपको आध्यात्मिकता की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। उसके लिए श्रम कीजिए।

मित्रो! किंतु क्या किया जाए! ये देवी-देवता हत्यारे हैं, चुडैल हैं, जो बकरा खाते हैं और मनोकामना पूर्ण करते हैं। आपकी समस्याएँ बिलकुल भौतिकवादी हैं। अध्यात्मवाद से आपका कोई संबंध नहीं है। आपकी तो मिट्टी पलीद हो ही चुकी है, अब हमारी होने वाली है। अध्यात्म की मिट्टी पलीद होने वाली है। अरे, हम एक नाव में जो बैठे हैं। आप मरेंगे तो हम भी मरेंगे। लोभी गुरु-लालची चेला दोनों मरेंगे।

मित्रो! एक मौलवी साहब थे। उनका एक चेला था। चेले को समझाकर मौलवी साहब मक्का-मदीना हज करने चले गए। इधर चेले ने अपनी करामात दिखाना शुरू कर दिया। उसको जो भी चढ़ावा आता, वह उसे खाता तथा अपने पास रख लेता। इस बीच में वह चेला खूब खा-पीकर मोटा हो गया था।

चेले ने सोचा कि जब मौलवी साहब आ जाएँगे, तो हमारी क्या चलेगी तथा हमें कौन पूछेगा? उसने एक चाल चली और गाँव के हर मुसलमान के घर गया और औरत, बच्चे, बूढ़े प्रत्येक नर-नारी से एक ही बात कहता रहा कि मौलवी साहब मक्का-मदीना से आने वाले हैं। वे बहुत बड़े सिद्ध पुरुष होकर के आ रहे हैं, जिसे जो कह देंगे, कर देंगे, उसको लाभ मिलेगा। वे बहुत चमत्कारी बनकर आ रहे हैं। उनतीस तारीख को मौलवी साहब आ गए। भीड़ लगने लगी। चेले ने कहा कि आप जानते नहीं हैं, मौलवी साहब की दाढ़ी में चमत्कार है। पहले बाल में पूरा चमत्कार है। दूसरे-तीसरे में क्रमशः बीस प्रतिशत, पंद्रह प्रतिशत लाभ मिलेगा। अब तो हल्ला मच गया। पहले बाल के लिए भीड़ लग गई।

२९ तारीख को सबने अपना कारोबार बंद कर दिया और पहुँच गए मौलवी साहब के पास। सभी ने उन्हें मालाएँ पहनाईं। मौलवी साहब प्रसन्न थे। वे बैठे भी नहीं थे कि अरे भाई! जरा रुको। यह क्या कर रहे हो? कोई माना नहीं और उनकी दाढ़ी तथा सिर के सभी बाल उखाड़ लिए। अब मौलवी साहब ने सोचा कि मेरे सारे बाल उखड़ गए। अब हम घर पर जाएँगे, तो घरवाली रहने नहीं देगी। अतः यहाँ से भागना ही अच्छा है। मौलवी साहब चले गए। चेले की पौ बारह हो गई।

असली अध्यात्म समझें

मित्रो! मैं क्या कह रहा था? मनोकामना की बात, सिद्धियों की बात कह रहा था। अगर इसका नाम अध्यात्म है, गायत्री है, अनुष्ठान है, तो मैं आपसे बहुत ही नम्र शब्दों में कहना चाहूँगा कि इससे आपको कोई फायदा नहीं होने वाला है। आपको महात्मा के पास जाने से, चक्कर काटने से कोई लाभ मिलने वाला नहीं है। आप दो ही देवताओं श्रम और शिक्षा की, ज्ञान की पूजा करें और अपने जीवन को महान् बनाएँ। यह एक अध्याय आज समाप्त हुआ। इसके आधार पर भी भौतिक जीवन में आप सुख और आनंद पा सकते हैं।

मित्रो! एक दूसरा रास्ता और है, जिसे हम अध्यात्म कहते हैं। बेटे! अध्यात्म वह चीज है जो भौतिक शरीर के भीतर निवास करता है, जिसके द्वारा मनुष्य को सिद्धि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

खा-पीकर लाल पड़ गया और यहाँ-वहाँ डोला-डोला फिरने लगा। कभी-कभी हमारे यहाँ भी आ जाता था।

एक साल क्या हुआ? एक साल दुकानदार को पड़ गया नुकसान। बस दुकानदार को आ गया गुस्सा। उसने कहा कि मैंने तीन साल के अंदर तुमको बीस हजार रुपये दिए। मेरा बीस हजार रुपया निकाल या मेरा मुनाफा करा, नहीं तो मैं तेरी दाढ़ी उखाड़ लूँगा। उसने कहा, अब क्या करूँ, कैसे मुनाफा हो और कैसे घाटा पूरा हो? उसने कहा, चल अपने गुरुजी के पास चलता हूँ। उसे लेकर मेरे पास आ गया। मैंने कहा, बेटे क्या बीमारी लेकर आ गया। दुकानदार ने कहा, गुरुजी इसने कहा कि मैंने चौबीस लक्ष का अनुष्ठान किया है, तो तुम्हें ये फायदा हो जाएगा, लेकिन मुझे इस वर्ष नुकसान पड़ गया। मैंने उसे ठीक करके उसका घाटा पूरा करा दिया और दोनों से कहा कि बेटा तू अपने घर रह और तू अपने घर। दाढ़ी वाले लड़के से कहा कि बेटा तू भिक्षा माँग के खा। गायत्री का जप करता है और दुकानदारी के पैसे में शेयर होल्डर बनता है? तुझसे ये किसने कहा?

मित्रो ! अगर मैं ये करना चाहूँ तो सोने-चाँदी के जखीरे खड़ा कर सकता हूँ। जो आशीर्वाद मैं फोकट में देता रहता हूँ, अगर उसकी कीमत बना दूँ, तो फिर जाने मैं क्या-क्या कर लूँ। लेकिन उस ओर मैं कभी गया नहीं। क्यों नहीं गया? क्योंकि वह धन, जिसके पीछे श्रद्धा जुड़ी हुई नहीं है, जिसके पीछे प्रेम जुड़ा हुआ नहीं है। जिस पैसे के पीछे आदमी की भावना जुड़ी हुई नहीं है, इस तरह का पैसा अगर मैंने लेना शुरू कर दिया, तो मित्रो ! मेरा तेज, मेरा ब्रह्मवर्चस, मेरा मिशन और मेरे वो क्रियाकलाप सब नष्ट हो जाएँगे। ये जो इमारत है, इसमें जो कोई बैठेगा और जब तक व्याख्यान खत्म नहीं होता, तब तक तो उसके ऊपर इन इमारतों का चूना और इन इमारतों की ईंटें निकल-निकलकर उसके ऊपर गिरेंगी। जो कोई इसमें सोएगा, उसको रात में ऐसे सपने दिखाई पड़ेंगे और रात को वेश्याएँ दिखाई पड़ेंगी और भूत दिखाई पड़ेंगे और गुरुजी का प्रवचन जाने कहाँ छू हो जाएगा, इस तरह दबाव का पैसा हमारे मिशन में लगा होगा, तो वह सारे ईमान को भ्रष्ट कर देगा।

हमारा मूल है श्रद्धा

इसलिए मित्रो ! मैंने जिंदगी भर यही रखा कि जहाँ श्रद्धा से भरा हुआ पैसा, ईमानदारी से भरा हुआ पैसा, भावनाओं से भरा हुआ पैसा आता होगा, उसे ही इस मिशन के लिए स्वीकार करेंगे। यह ठीक है कि हमारे मिशन को पैसे की बहुत जरूरत है, लेकिन हम जानते हैं कि हमारे बंधन कितने बँधे हुए हैं। अभी हम आप वानप्रस्थों को साठ-साठ और सत्तर-सत्तर की संख्या में हर महीने बुलाते हैं। अगर हमारे पास व्यवस्था हो, साधन हो, हमारे पास ठहरने का प्रबंध हो, खाने का प्रबंध हो, व्याख्यानों का प्रबंध हो तो हम बजाय साठ-सत्तर के छह सौ वानप्रस्थ हर महीने बुला सकते हैं और तीन सौ पेयर सारे हिंदुस्तान में और सारे विदेश में भेज सकते हैं और हम एक क्रांति ला सकते हैं। पर हम रुके हुए बैठे रहते हैं। हमारे यहाँ शिविर चलते रहते हैं। हम एक बार में पच्चीस महिलाओं को बुलाते हैं और उन्हें प्रशिक्षित करके पच्चीस शाखाओं में भेजते हैं। अगर हमारे पास उनके ठहरने, खाने, व्याख्यान आदि का प्रबंध हो तो हम क्यों बुलाएँगे पच्चीस महिलाएँ? फिर हम एक महीने के शिविर में एक हजार महिलाएँ बुला सकते हैं और एक हजार गाँवों में महिलाओं के विद्यालय चालू कर सकते हैं। पर हमारे पास साधनों का अभाव है।

मित्रो ! अगर हमने चंदा माँगा होता, हर आदमी से कहा होता, हर आदमी को दबाव दिया होता और मजबूर किया होता। हर आदमी को लोभ और आश्वासन दिए होते, तो हमारे पास हीरे-जवाहरातों की खानें खड़ी होतीं, हमारे पास सोना खड़ा होता।.हमको यह विद्या याद है और हमारा तप उस कीमत का है कि अगर हम उसकी कीमत पर पैसा इकट्ठे करने के लिए खड़े हो जाएँ, तो हम जाने कितना इकट्ठा कर लें। अगर हम अपीलें करने लगें कि आपको देना चाहिए, तो अपील के नाम पर इकट्ठा कर लें। लेकिन हमने आज तक कभी माँगा नहीं और न माँगेंगे। हम जो काम करने चले हैं, उसमें हम ये चाहते हैं कि भावना से जुड़ा हुआ, श्रद्धा से जुड़ा हुआ, प्रेम से जुड़ा हुआ, मोहब्बत से जुड़ा हुआ, निष्ठा से जुड़ा हुआ और अपनी अंत:प्रेरणा से जुड़ा हुआ पैसा आए, चाहे वह कानी कौड़ी ही क्यों न हो? चाहे हम पच्चीस आदमी ही क्यों न बुलाएँ, पचास आदमी ही क्यों न बुलाएँ? चाहे हम जिंदगी भर में थोड़ा ही काम करें, छोटी ही बात रखें, लेकिन हम उतना ही करेंगे, जितना कि श्रद्धा से भरा हुआ पैसा हमारे पास आएगा।

आप जाइए ज्ञानयज्ञ के लिए धन एकत्र करिए

लेकिन हम आपको भेजते हैं और इसलिए भेजते हैं कि आप खुली जबान से और खुले हुए मुँह से कह सकें उन लोगों से भी, जिनके पास पैसा है। अगर वे लोग आपको इस तरीके से दिखाई पड़ते हैं कि वे किसी अच्छे काम के लिए और इस मिशन जैसे क्रियाकलापों के लिए खरच करने की स्थिति में और दान देने की स्थिति में हैं, तो आप इस तरीके से कहना। अगर इस तरीके के कामों में वे खरच करते हुए आपको दिखाई न पड़ें, तो उनसे कहना

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कि आपके पास जो दबा हुआ पैसा पड़ा है, रुका हुआ पैसा पड़ा है, उस पैसे को ऐसे क्रिया-कृत्यों में लगा दीजिए जिससे हमारे विचार क्रांति के लिए बहुत बड़ा साहित्य तैयार किया जा सकता है। मनुष्य की जीवात्मा की भूख मिटाने के लिए अभी तक ऐसा साहित्य नहीं लिखा गया है। किसी ने इस पर कलम छुई नहीं है, किसी ने पट्टी-पूजन किया नहीं है कि जो आदमी के दिलों को हिला दे। दिमागों को बदल दे। केवल गंदे उपन्यास और गंदी कहानियाँ, जादू की किताबें लिखी गई हैं, जिनमें वाहियात भरा हुआ पड़ा है। अभी तक इन्सान को हिलाने और जगाने वाला साहित्य किसी ने पढ़ा या लिखा नहीं है।

मित्रो ! जो लोग तंबाकू की फैक्ट्रियाँ चलाते हैं, बीड़ियों की फैक्ट्रियाँ, शराब की फैक्ट्रियाँ चलाते हैं, कसाई खाने चलाते हैं, चमड़े का उद्योग करते हैं और केवल इसलिए करते हैं कि किसी भी कीमत पर, किसी भी तरीके से उनके पास पैसा आना चाहिए। आपकी अगर हिम्मत हो और कोई आपकी बात मान ले, तो आप ये कहना कि उसमें आपको रुपये में चार आने मिलते हैं, लेकिन इसमें रुपये में एक आना मिलेगा। अगर आप चाहें तो इस तरह के व्यापार और उद्योग-धंधे शुरू कर सकते हैं, जिससे कि हमारे समाज के खोए हुए मनोबल को पुनः जाग्रत् किया जा सके। दान मत दीजिए, अपने पास ही रखिए! बाबा ! हम दान नहीं माँगते हैं, लेकिन आप अपने उद्योग को बदल दीजिए। बीड़ी के उद्योग में आपने बीस करोड़ रुपया लगा दिया है। उसमें से निकाल लीजिए और उस बीस करोड़ रुपये को आप साहित्य के प्रकाशन में डाल दीजिए। फिर देखिए हम क्या व्यवस्था करते हैं ?

नारी का जागरण करने के लिए एक भी किताब अभी तक नहीं लिखी जा सकी है, जो महिलाओं में जीवट उत्पन्न कर सके। इसी तरह बच्चों में जीवट उत्पन्न करने के लिए किसी ने कलम नहीं छुई है। मेढक की कहानी लिखी है, बंदर की कहानी लिखी है, कुत्ते की कहानी लिखी है, भूत की कहानी लिखी है, लेकिन बच्चों के अंदर जीवट पैदा करने की एक किताब नहीं लिखी गई। इस तरह का साहित्य जो हमारे समाज की कुरीतियों से लोहा लेने में समर्थ हो सके, इस तरह का साहित्य जो मनुष्य के भीतर दबे हुए भगवान् को जगा सके। हमारा अखण्ड ज्योति का जरा-सा साहित्य, मुट्ठी भर पैसों से प्रकाशित होने वाला साहित्य अपनी भूमिका को बखूबी प्रस्तुत कर रहा है। अगर यही साहित्य और यही प्रकाशन असंख्य धाराओं में लिखा जा सके और उसके प्रकाशन की व्यवस्था की जा सके तथा उसके लिए बुकसेलर तैयार किए जा सकें। उसका सारी दुनिया सारी हिंदुस्तान की चौदह भाषाओं में प्रकाशन किया जा सके, तो क्या आप समझते हैं कि हम हिंदुस्तान में नई फिजां पैदा नहीं कर सकते ? नई दिशाएँ पैदा नहीं कर सकते ? मुट्ठी भर निकलने वाली अखण्ड ज्योति क्या गजब ढा रही है, आप देख नहीं रहे हैं ? इस तरह की अखण्ड ज्योतियाँ अगर सब भाषाओं में निकलने लगें और जगह जगह निकलने लगें, तो गायत्री तपोभूमि एवं अखण्ड ज्योति संस्थान के रूप में छोटे-से केंद्र, जिनमें थोड़ा सा प्रकाशन होता है, इस तरह का प्रकाशन अगर जगह-जगह चालू हो सके, तो क्या हम कुछ भी काम नहीं कर सकते हैं। हाँ हम बहुत कुछ काम कर सकते हैं।

मित्रो ! आप लोगों से यह कहना कि अगर आप में दान देने की या खरच करने की हिम्मत नहीं है, तो आप इतना तो कर ही सकते हैं कि अपने व्यवसाय को बदल दें। मनुष्य के दिमाग को बदलने के लिए और जीवात्मा की भूख मिटाने के लिए आज जिस साहित्य की जरूरत है, उसके लिए आप पैसा दीजिए और इस काम को अपने हाथ में लीजिए। हम आपका एग्रीमेंट कर देंगे और आपकी व्यवस्था बना देंगे। हम आपके लिए साहित्य लिखकर दे देंगे, आपकी सहायता कर देंगे और आपको नुकसान नहीं पड़ने देंगे। ये गारंटी हम दे सकते हैं। लेकिन हम क्या कर सकते हैं ? मित्रो ! हमारे पास धन नहीं है और हम कोई काम शुरू नहीं कर सकते। ऐसा उद्योग चालू करने के लायक हमारे पास कोई सामर्थ्य नहीं है, साधन नहीं है।

साहित्य के बाद सुरुचिपूर्ण कला

मित्रो ! यह तो हुआ साहित्य का काम नंबर एक, दूसरा काम है चित्रों का। चित्र, आपने देखा नहीं कितने काम करते हैं ? गंदे चित्र बिकते हुए आपने देखे नहीं ? दीपावली के दिनों आपने गली-गली, मोहल्ले मोहल्ले और चौराहे-चौराहे पर तसवीर वालों की दुकानों को देखा नहीं है कि इन तसवीरों में क्या है ? आपको इनमें अस्सी फीसदी तसवीरें वे मालूम पड़ेंगी, जो मनुष्य की वासना को उद्दीप्त करती हैं, जो आदमी के अंदर के शैतान को भड़काती हैं। जो हमारी माँ को, बहन को और बेटी को वेश्या के रूप में प्रस्तुत करती हैं, उस तसवीर के माध्यम से। नारी, जिसको हमने सम्मान दिया, जिसको हमने माँ कहा, बेटी कहा, बहन कहा, उसकी शक्ल इन तसवीर वालों ने इस तरीके से हमारे सामने प्रस्तुत की है, जिससे कि हमारी आँखें खराब हो जाएँ और जो औरत हमें दिखाई पड़े, वो वेश्या के रूप में दिखाई पड़े और अपनी कामना की पूर्ति के लिए दिखाई पड़े। इस तरह तसवीर वालों ने हमारी आँखें बदल दी हैं।

साथियो ! तो क्या इस बात की जरूरत नहीं है कि हम फिर से इस तरीके से लोगों में तसवीरों के प्रति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अभिरुचि पैदा करें, जिसमें शिवाजी की जद्दोजेहद और त्याग-बलिदान का स्वरूप परिलक्षित हो ? क्या हम ऐसा नहीं कर सकते कि महर्षि दधीचि जिन्होंने अपनी हड्डियों तक का दान कर दिया था, उनकी तसवीरें लोगों को दें ? ऐसी तसवीरें क्या कहीं दिखाई पड़ती हैं ? मैंने तो आज तक नहीं देखीं। उनके जैसा हिंदुस्तान में त्याग करने वाला अनोखा उदाहरण एकमात्र वही थे। आज हम ऐसा अनोखा उदाहरण प्रस्तुत करने वाले की एक भी तसवीर नहीं खरीद सकते। जिन लोगों ने स्वराज्य के लिए और उसके पूर्व स्वराज्य के लिए त्याग-बलिदान और कुरबानियाँ दी हैं, क्या आपके पास उनकी तसवीरें हैं ? गणेश जी की तसवीर तो आप कहीं से खरीद सकते हैं, लेकिन ऋषि दधीचि की कोई तसवीर आपको नहीं मिल सकती।

मित्रो ! क्या करना पड़ेगा ? यह भी एक ऐसा काम है, जो मनुष्य के जीवन को और मनुष्य की दिशाओं को हिलाकर रख सकता है। अगर कहीं ऐसा उद्योग खड़ा करने में हम समर्थ हो जाएँ, कहीं हम स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को और अमुक समस्याओं को हल करने के लिए प्रकाशन का बड़ा संस्थान खड़ा कर सके, तो फिर मजा आ जाए। आप पैसे वालों के पास जाना और उनसे कहना कि हमारे पास बहुत सारे कीमती काम करने के लिए पड़े हैं। साहित्य के अलावा कला के मंच अभी जिंदा हैं। सरस्वती का प्रतीक कला के मंच क्या गजब ढा रहे हैं, आपको दिखाई नहीं पड़ता ? हिंदुस्तान में जितनी संख्या में सारे अखबार प्रकाशित होते हैं, हिंदी से लेकर अँगरेजी तक सब भाषाओं के, उससे तीन गुने पाठक वे हैं जो सिनेमा को रोज देखने जाते हैं। सिनेमा अगर हमारे हाथ में रहा होता, सिनेमा तंत्र को चलाने के लिए अगर हमको धन मिल गया होता, तो मित्रो ! हमने ऐसी सैकड़ों, हजारों फिल्में नई बनाकर समाज में फेंक दी होतीं, जिसमें कि ऋषियों का जीवन, देवताओं का जीवन, संतों का जीवन, महापुरुषों का जीवन, उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए होते। वे सारी-की-सारी घटनाएँ, जो लोगों को अपने जीवन में क्रांति और हलचल पैदा करने वाली दिखाई दे सकती थीं, उनको बनाने के लिए हम समर्थ हो सकते थे, लेकिन करोड़ों रुपया फिल्म उद्योग में लगा हुआ है।

मित्रो ! अगर आप चाहें कि थोड़ा-सा भी पैसा ऐसे कामों के लिए मिल जाए, तो लोग तैयार नहीं हो सकते। क्योंकि वे देखते हैं कि ज्यादा मुनाफा इसमें नहीं है। वे यह देखते हैं कि लोगों की माँग क्या है ? जमाने की माँग क्या है ? जमाना जो चीज माँगता है, हम वह बराबर देते हुए चले जाते हैं। जमाना बीड़ी माँगता है, इसलिए हम बीड़ी देते हुए चले जाते हैं। जमाना शराब माँगता है और हम शराब की फैक्ट्रियाँ खोलते हुए चले जाते हैं। जमाना जुआ माँगता है, हराम का पैसा माँगता है और हम देते हुए चले जाते हैं। जमाना जो माँगता है, उसको हम देते हुए चले जाएँगे, तो मित्रो ! जमाने को फिर उठाएगा कौन ? जमाने को दिशाएँ देगा कौन ? जमाने में हेर-फेर करेगा कौन ? जमाने में हेर-फेर करने और दिशाएँ देने के लिए जरूरत उन लोगों की है, जो लोगों के दिमागों को मोड़ने में समर्थ हो सकें और लोगों की समझ को चैलेंज कर सकें, लोगों की समझ को ढालने के लिए नया प्रयास कर सकें।

धर्मतंत्र से चलें ढेरों प्रयास

मित्रो ! इस तरह के प्रयास असंख्य दिशाओं में किए जाने आवश्यक हैं। हम और आप अपने संत के रूप में, ब्राह्मण के रूप में, पंडित के रूप में, कथावाचक के रूप में और ज्ञानी के रूप में जाएँगे और धर्ममंच का सहारा लेकर धर्म के माध्यम से जहाँ कहीं भी हमको धार्मिक भावनाओं की जगह दिखाई पड़ेगी, वहाँ हम बदलने की कोशिश करेंगे, पलटने की कोशिश करेंगे। मित्रो ! समाज को ऊँचा उठाने के लिए, राष्ट्र को ऊँचा उठाने के लिए, मानवता को ऊँचा उठाने के लिए आपकी जरूरत है। आपको धर्मवीर होना चाहिए और जहाँ कहीं भी धर्म की किरणें दिखाई पड़ती हों, धर्म के बीजांकुर दिखाई पड़ते हों, वहाँ जाकर के आपको खाद के तरीके से, पानी के तरीके से बरसना चाहिए, ताकि जहाँ कहीं धर्म के बीजांकुर जिंदा हों, वहाँ उनको उगाया जा सके, जगाया जा सके। ये आपका वैयक्तिक काम है और निजी काम है। इसे आप कर सकते हैं और आपको करना चाहिए। उसके अतिरिक्त ढेरों-के-ढेरों काम पड़े हैं। उनके लिए दूसरे आदमियों के सहायता की भी जरूरत है। इसके लिए आप वहाँ जाना, जहाँ कहीं भी आपको बुद्धि दिखाई पड़ती हो, चमक दिखाई पड़ती हो, प्रतिभाएँ दिखाई पड़ती हों, विभूतियाँ दिखाई पड़ती हों, प्रभाव दिखाई पड़ता हो, ज्ञान दिखाई पड़ता हो, धन दिखाई पड़ता हो।

आप उन सब लोगों के पास जाना और खुशामदें करना। आप उनको लेकर के चले आना और इस मोरचे पर खड़े करना, जहाँ कि आगे वाली लाइन में आप खड़े हैं। आपके दायीं ओर, बायीं ओर, आपके आगे और पीछे वे लोग सहायकों के रूप में साथ-साथ चलें। जिस राह पर चलते हुए हमको इन्सान के अंदर भगवान् की स्थापना करनी है और पृथ्वी पर स्वर्ग का अवतरण करना है, उस राह के लिए आपको अकेले चलना ही काफी नहीं है। प्रतिभावान विभूति को भी साथ-साथ लेकर चलना है। आप से ऐसा है मेरा निवेदन और ऐसा है अनुरोध। आज की बात समाप्त । ॥ ॐ शांति ॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

श्रावणी पर्व पर कार्यकर्त्ताओं की रीति-नीति

(२६-८-८५ को दिया गया वीडियो संदेश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! ढाई वर्ष होने को आया, हमारा एवं आपका मिलन संभव न हो सका। एकाध आदमी की बात अलग है, परंतु अधिकांश व्यक्तियों से हम न मिल पाए। इतने दिनों तक हम एवं आप अलग-अलग रहे, अतः हम अपने मन की बातें आपको बतलाना चाहते हैं। यह कोई व्याख्यान नहीं है। अतः श्रावणी के इस शुभ अवसर पर आपसे कुछ बातें करना चाहते हैं।

आपको वह दिन याद है जिस दिन आप अपना काम-धंधा छोड़कर, घर को छोड़कर यहाँ के लिए चले थे। हमें तो यह बात बिलकुल याद है, आपको याद हो या न हो, पर हमें याद है कि आपने कितना त्याग भरा कदम उठाया था। कितनी आमदनी का घाटा उठाया, यह बात तो मैं नहीं कहता हूँ। अपने जमे हुए अपने घोंसले को छोड़कर आने का प्रयास किया। अपने घरवालों से, अपने पड़ोसी से आपका संपर्क था। वह भी अपने आप में एक महत्त्व रखता है। धन का सवाल नहीं है कि आपके पास कितना था और आपने कितना त्याग किया। आपके पास सौ मन मिठाई थी, उसमें से नब्बे मन आपने दान कर दिया। यह उतना ही महत्त्व रखता है, जितना कि चार रोटी में से तीन रोटी दान कर दे। आपने कितनी शिक्षा प्राप्त की, यह भी नहीं कह सकता, परंतु हम आपके त्याग के प्रति आभारी हैं। हम आपके रहने तक की भी व्यवस्था नहीं कर पाए। एक कोठरी में आपके पूरे परिवार को ठहरा दिया। हम समझते हैं कि इस समय आपको मुर्गी की तरह से, कबूतर की तरह से रहना पड़ रहा है। यह आपको मालूम था, यहाँ की व्यवस्था आप देखकर गए थे। जब आप यहाँ आए थे, तो यह भी देखकर गए थे कि धन की भी यहाँ कोई विशेष व्यवस्था नहीं है। यहाँ ब्राह्मणोचित जीवन जीने की बात थी।

ब्राह्मणोचित जीवन

मित्रो ! पैसा जब बढ़ता है, तो इन्सान की आदत खराब हो जाती है। वह अपनी सुविधा बढ़ा लेता है। परंतु आप जब यह अनुभव करेंगे कि जो पैसा आपको दिया जा रहा है, वह हमारे बच्चों ने अपना पेट काटकर, अपने बच्चों के दूध का खरच कम करके हमारे पास भेजा था, उस समय अवश्य आप अपने खरच को कम करने का प्रयत्न करेंगे। कितनी श्रद्धा, भावना से लोगों ने दिया है, उसे हमें किस ढंग से खरच करना चाहिए, यह बात समझ में आनी चाहिए।

मित्रो ! आपको यह मालूम था कि हम यहाँ बाहर के व्यक्ति की तरह नहीं, वरन् एक साधारण ब्राह्मण का जीवन जी सकते हैं। यह जानते हुए उस समय आपने हिम्मत के साथ कदम बढ़ाया, हमारे लिए यह बहुत प्रसन्नता की बात है। गाँधी जी को जब आवश्यकता पड़ी, तो अनेक सत्याग्रही गोली खाने, मरने, कटने के लिए तैयार होकर आ गए। हमें वह जमाना याद है, जब बुद्ध के लिए हजारों नर-नारी अपना सब कुछ छोड़कर उनके कामों को पूरा करने के लिए आगे आ गए थे।

मित्रो ! उसी परंपरा का निर्वाह आपने किया, यह देखकर हमें प्रसन्नता है, काफी खुशी है। आपके लिए हमारा मन कृतज्ञता से भरा पड़ा है। आपके मन में एक हूक उठी और आपने सारे व्यवधानों को, सारे रास्तों को काटकर यहाँ आने का प्रयास किया, आपकी यह भावना हमें याद है। शिवाजी ने समर्थ गुरु रामदास को अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था और उनके नौकर बन गए थे। आप लोगों ने भी भावना की दृष्टि से उनकी तरह ही साहस भरा कदम उठाया। आपकी भावना, श्रद्धा डगमगाने लगेगी, तो यह आपके लिए भी बुरा होगा और हमारे लिए भी बुरा हो जाएगा। अतः ऐसा मत होने देना।

मित्रो ! अगर किसी स्त्री का पति मर जाए तथा वह पति के साथ सती होने को तैयार हो जाए। सारा गाँव उसे देखने को आए तथा उसकी जय-जयकार करे और फूल बरसाने लगे। उसके बाद जब चिता में आग लग जाए और वह औरत ऐन मौके पर भाग जाए, तो बहुत बुरा होता है। आदमी श्रद्धा-भावना लेकर आए और फिर कहे कि हमारा जीवन बर्बाद हो गया। मित्रो ! आप यह मत होने देना। आपको हमेशा अपनी इज्जत बचाकर रखनी है। आपको

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यह देखना होगा कि जब आप घर छोड़कर आए थे, तब आपकी भावना क्या थी ? जब आप घर से चले थे और जो स्तर आपका था, वह स्तर कम होने पर या समाप्त हो जाने पर आपकी हालत उसी स्त्री की तरह हो जाएगी, जैसा कि अभी हमने बताया है कि उसे लोग धिक्कारने लगे थे।

स्तर कम न होने पाए

साथियो ! आपका स्तर कम न होने पाए, इस कार्य हेतु हम आपको एक शीशा देना चाहते हैं, जिसमें आप अपनी शकल देखें कि आपकी नाक, दाँत, मुँह ठीक है या नहीं। इसे आप स्वयं समझ सकते हैं, इसके बारे में हम क्या कहें। यह हुई शीशे की कसौटी नंबर एक। दूसरे—सोने को कसौटी से परखकर हम देखना चाहते हैं कि आप वही हैं, जो आए थे या बदल गए हैं। आप उसी बिरादरी में हैं या दूसरी बिरादरी में तो नहीं चले गए। इस संसार में अच्छे काम भी होते हैं और बुरे-से-बुरे काम भी होते हैं। आप शूरवीर भी बन सकते हैं तथा गलत काम करके पुलिस के हवाले भी हो सकते हैं। आदमी अगर टिकाऊ हो तो क्या कहना। आप अपना वेष बदलें नहीं, टिकाऊ बनें। वेष बदलने में शोभा नहीं है। इसकी इज्जत नहीं है। संत ज्ञानेश्वर के पिता ने अपना वेष बदल दिया था। कैसे बदला, यह मैं नहीं कहता हूँ, परंतु बाद में वे परेशान हो गए। संत ज्ञानेश्वर को उनका प्रायश्चित करना पड़ा।

मित्रो ! सिद्धांतों का रास्ता चलना यह भी बड़ी बात है। कहाँ जा रहे हैं ? ऊँचे आदर्श का जीवन जीने जा रहे हैं। अगर पीछे हट गए, तो वह दो कौड़ी का बन जाता है। गृहस्थ जीवन में बच्चा पैदा हो जाए, तो कोई बात नहीं, परंतु कोई बाबा जी हो जाए और फिर बच्चा पैदा कर ले, तो बेकार का हो जाएगा। उस लड़के या लड़की के लिए समाज में मुश्किलें पैदा हो जाएँगी तथा संत समाज के लिए भी उसे अपनाना मुश्किल हो जाएगा। इसी तरह जब आप आए थे, तो आपको वहाँ के लोगों ने विदाई दी थी और जब आप यहाँ आए थे, तो हमने भी प्रसन्नता की थी, क्योंकि आपने बड़े ऊँचे काम के लिए कदम उठाया था।

जीवन कितने दिन का होता है ? विवेकानंद की मृत्यु उनतालीस वर्ष की उम्र में हो गई थी। शंकराचार्य की भी ३२ वर्ष की आयु में मृत्यु हुई थी। रामकृष्ण परमहंस भी बहुत दिन नहीं जिए थे। बाकी जितने महापुरुष थे, उनको भी जवानी नहीं आई और वे इस दुनिया से चले गए थे। भगवान् करे आप हजार वर्ष जिएँ, परंतु कल के लिए भी तैयार रहें। आप देखते नहीं कि रास्ता चलते किसी का हार्ट फेल हो जाता है। इन्सान की खाल पानी से भरा हुआ कच्चा घड़ा है। वह कब फूट जाएगा, यह किसको पता है ? इन्सान का यह शरीर एक गुब्बारा है। इसमें से हवा कब निकल जाएगी, इसको कौन जानता है ? यह कोई आश्चर्य नहीं है। इसलिए आप अपने त्याग को, अपनी भावना को, केवल भावना को ही नहीं, वरन् उस काम को हमेशा याद रखें, जिसके लिए आपने साहस भरा कदम उठाया था। जिंदगी बड़ी शानदार है, इस तथ्य को आपको समझना चाहिए।

मित्रो ! आपको यह समझना चाहिए कि भगवान् ने आपको यह जिंदगी बहुत ही शानदार दी है तथा आप जो काम कर रहे हैं, वह बड़ा ही शानदार है। इसमें करोड़ों लोगों का भाग्य छिपा है। आप यह नहीं समझते हैं, किंतु हम स्पष्ट रूप से देख रहे हैं। एक इतिहास बनने वाला है। आगामी दिनों गाँधी जी के आंदोलन के बाद कोई कार्यक्रम अगर इस दुनिया में है और अगर कोई उसकी चर्चा होगी, तो वह शांतिकुंज, युगनिर्माण योजना का कार्यक्रम होगा। इतना बड़ा तथा महत्त्वपूर्ण कार्य कभी बना नहीं तथा कोई ऐसा कार्यक्रम बना भी नहीं सकता है। यह सफल होगा और बिलकुल सफल होगा, हमें पूरा विश्वास है, आपको विश्वास हो या न हो। हम जब भगवान् के पास बैठते हैं, हमें इस बात का पूरा-पूरा विश्वास दिलाया जाता है।

मित्रो ! आप में से किसी के मन में यह बात नहीं आनी चाहिए कि यह योजना सफल नहीं होगी। सफल न होने पर हम मारे-मारे फिरेंगे, यह बात भी आपको अपने मन में कभी सोचनी नहीं चाहिए। इस मिशन में आप ऐसे सफल होंगे, जो इतिहास के पन्नों में कभी नहीं आए। परंतु वह स्थिति आने में कभी-कभी रुकावट भी आ जाती है। आपने सूर्य और चंद्रमा में ग्रहण पड़ते देखा होगा। आदमी कभी-कभी गुस्से में आकर माँ-बाप को गाली-गलौज भी कर देता है और घटिया बन जाता है। हम आपको सभी तरह के घटियापन से सावधान करना चाहते हैं, ताकि आपके बारे में कोई न तो उँगली उठाए और न कहीं आपका रास्ता घूम जाए। रेलगाड़ियाँ पटरियों पर घूम जाती हैं और अपनी दिशा बदल देती हैं और हमें एवं आपको पता भी नहीं चलता।

कसौटी पर होगी परीक्षा

साथियो ! हम आपको कसौटी पर कसना चाहते हैं। हम यह देखना चाहते हैं कि आप जब यहाँ आए थे और उस समय आपकी जो भावना थी, उसमें कहीं कच्चापन तो नहीं आ रहा है ? आप कहीं उसी स्थिति में लौट जाने का मन तो नहीं बना रहे हैं ? कहीं आपके अंदर यह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विचार तो नहीं उठ रहे हैं कि हम चले जाएँगे तथा मजे से रहेंगे और अधिक खरच करेंगे। अधिक सुख-सुविधा में रहेंगे। आपके पास जो दान-दक्षिणा का पैसा आ रहा है, उसमें से अनावश्यक रूप से खरच करने का कोई अधिकार आपको नहीं है। गाँधी जी को किसी ने मुट्ठी भर पैसा दे दिया था, तो उसमें से एक चवन्नी नीचे गिर गई। गाँधी जी वहीं पर बैठ गए थे। लोगों ने उनसे कहा कि आप हट जाइए, यहाँ भीड़ आ रही है। आप दब जाएँगे। गाँधी जी ने कहा कि हमें दबना मंजूर है, परंतु जिस श्रद्धा के साथ उस आदमी ने दान दिया है, उसका दुरुपयोग करना मंजूर नहीं है।

उसी प्रकार जिस आदमी ने यहाँ संस्था को दान दिया है, वह श्रेष्ठ भावनाओं के साथ दिया है। अगर आपको दान के पैसे को ज्यादा खरच करने की बात मन में आ गई हो, तो यह आपका दुर्भाग्य और हमारा दुर्भाग्य है। अगर आप एक बार भी इस छत पर चढ़े, तो हम मानेंगे कि आप औंधे मुँह जमीन पर गिर गए । इससे अच्छा होता कि आप छत पर ऊपर ही नहीं चढ़ते। आप धन के संबंध में अपनी महत्त्वाकांक्षा को रोकिए। आप विलासी न बनें और न परिवार बढ़ाएँ। अगर परिवार बढ़ेगा तो खरच बढ़ेगा, कपड़ा, पढ़ाई आदि का खरच बढ़ेगा। अत: आप में से जो स्थाई कार्यकर्त्ता हैं, उनसे मेरी प्रार्थना है कि आप फैमिली प्लानिंग करा लें, क्योंकि हम जानते हैं कि आप ब्रह्मचर्य से नहीं रह सकते हैं। आपका लोभ, मोह बढ़ेगा, तो आप ब्राह्मण नहीं रह सकते हैं, तब आप बनिया बन जाएँगे। आपको बनिया बनने के लिए हमने नहीं बुलाया है। अगर आपकी खरचीली आदत पड़ गई है, तो उसे कसें और कम खरच में काम चलाएँ। आपकी कमजोरी आप ही दूर कर सकते हैं। आप इनका पालन करें।

स्वयंसेवक बनकर रहें

मित्रो ! आपकी एक कमजोरी और है, जो मनुष्य को सामूहिक जीवन में प्रवेश करने पर होती है और वह है—लोकेषणा, पुत्रेषणा और वित्तेषणा। इनमें भी सबसे बढ़कर एक हूक उठती है, वह है नेता बनने की महत्त्वाकांक्षा। यह मनुष्य को नीचे गिराने की प्रवृत्ति है। संत के लिए यह तीनों चीजें नहीं होनी चाहिए। नेता वह होते हैं, जो अपना फोटो छपाना, नाम, यश प्राप्त करना चाहते हैं। यह नेता नहीं अभिनेता हैं। अगर बड़प्पन प्राप्त करना है, तो सबसे छोटा बनकर रहना चाहिए। सिर नीचा करके रहना चाहिए। स्वयंसेवक बनकर रहना चाहिए। गाँधी जी किसी संस्था के पदाधिकारी भी नहीं थे, परंतु लोगों ने उन्हें ऊँचा उठा कर रख दिया। वे ही राष्ट्रपिता बापू बने। उनका ही करोड़ों का स्मारक बना।

विनोबा को आप जानते हैं। वह ट्रस्टी नहीं थे, सभापति नहीं थे। ईसा, विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस को ही देख लें। समाज में लोग नम्रता की, शालीनता को, व्यावहारिकता की कद्र करते हैं। आज लीडर कौन होता है। जो तस्कर होता है, शातिर दिमाग होता है। मित्रो ! दूसरों के द्वारा दिया हुआ सम्मान तो आपकी इज्जत बढ़ाता है, परंतु जब आप स्वयं अपना बड़प्पन दिखाकर सम्मान प्राप्त करना चाहते हैं, तो प्रगति नहीं हो सकती है। आज जिन लोगों ने अनेक संस्थाओं को नष्ट किया है, वे सब नेता बनना चाहते थे। नेता बनने में अगर किसी को कष्ट हुआ या अवरोध आया, तो उन्होंने अन्य साथियों का गला घोटना शुरू कर दिया और उसे बरबाद करके चैन लिया। परंतु वे नहीं जानते कि भगवान् का डडा बहुत प्रबल है। उससे वे नहीं बच सकते हैं।

मित्रो ! नेतागीरी एक प्रकार का नशा है। यह नशा शराब, भाँग, हेरोइन से भी बड़ा है। अगर किसी के मन में वह आ गया हो कि हमें मशक्कत नहीं करनी चाहिए, हमें स्वयंसेवक नहीं रहना चाहिए। हमें अपनी मनमर्जी चलानी चाहिए। हमें किसी की बात न मानकर यह दिखलाना चाहिए कि देखो हम कितने समर्थ हैं, जो लोगों को इस तरह कर डालते हैं। अगर आप ऐसा करते हैं, तो आपको धिक्कार है। अगर आप अपनी मरजी चलाना चाहते हैं तथा मिशन को बर्बाद करना चाहते हैं, तो हम आपको शाप देते हैं कि आप कभी सफल नहीं होंगे। नेतागीरी थोड़ी देर के लिए आपके हाथ में आ भी जाए, परंतु बाद में आपकी मिट्टी पलीद हो जाएगी, आपको लोग थू-थू करेंगे। अगर ऐसा न हो तो आप हमें जो मन हो कह देना।

मित्रो ! आपको यह देखना होगा कि स्वयं के आपके जीवन में कहीं अपव्यय, नेतागीरी तथा हरामखोरी तो नहीं आ गई है। हरामखोरी से कोई महान् नहीं बनता है। काम के द्वारा ही व्यक्ति महान् बनता है। हरामखोरी माने जो हाथ से काम नहीं करता है, उसके दिमाग में गलत बातें आती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति जगह-जगह बैठता रहता है और यह बतलाता रहता है कि हम गिरे हैं और तुम्हें भी गिरना चाहिए। ऐसा व्यक्ति मिशन की बातें इधर-उधर करता है। बेटे हमारे पास कोई नौकरी नहीं है, जो तीन महीने का वेतन देकर आपको घर भेज दें। इस कार्य में हमें भी शर्म आती है, आपको आती है या नहीं, पता नहीं। यह भी हमें करना पड़ सकता है कि आपके विस्तर को हम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

फेंक दें, परंतु यह काम करने में हमें बहुत शर्म आएगी। अगर आप किसी काम को करते हैं, तो बेशक करें, परंतु आपने आने के दिन जो तीन प्रतिज्ञाएँ की थीं, उन्हें निभाने का प्रयास करें।

याद करें वे प्रतिज्ञाएँ

कौन-सी तीन प्रतिज्ञाएँ की थीं? पहली प्रतिज्ञा थी कि हम वित्तेषणा से बचेंगे। कम-से-कम में गुजारा करेंगे। आप रिश्तेदारों के लिए, घूमने के लिए खरच नहीं कर सकते हैं। अगर करते हैं, तो आप वह काम करते हैं जिसके लिए आपकी आत्मा आपको कभी-न-कभी धिक्कारेगी अवश्य। दूसरा अगर आप संतान बढ़ा रहे हैं, तो वह गलत होगा। परंतु अगर यह मान्यता हो कि हमारा बेटा भी स्वयंसेवक होगा, तो ठीक है। परंतु यह ख्वाब कि हमारा बेटा आदमी बनेगा, विलायत जाएगा, तो गलत होगा।

महात्मा गाँधी के पास एक आदमी आया और उसने अपनी शिक्षा के बारे में बतलाया तथा अपनी योग्यता के अनुसार कार्य देने का अनुरोध किया। गाँधी जी ने कहा कि हम योग्यता के अनुसार तो काम नहीं दे सकते हैं। आपको जो भी हम काम देंगे, उसे करना पड़ेगा। उन्होंने उसे गेहूँ साफ करने का काम सौंपा और उसने किया। यह घटना मैं आपको इसलिए सुनाता हूँ कि यह आपके ऊपर भी लागू होती है। आपको भी हम शिक्षा, योग्यता के अनुसार काम नहीं दे सकते हैं। हम जो भी काम सौंपें, उसे आपको करना है। इस तरह का जो आदमी होता है, वह अपने ऊपर अंकुश बर्दाश्त नहीं कर सकता है। वह स्वच्छंद रहना पसंद करता है। आपको अनुशासन में रहना पड़ेगा, ताकि आप ज्यादा महत्त्वपूर्ण काम कर सकें। आप ज्यादा व्यस्त रह सकें तथा आपके क्रियाकलापों का प्रभाव लोगों पर पड़ सके।

आपने देखा नहीं जनता पार्टी का क्या हुआ? सभी प्रधानमंत्री बनना चाहते थे। आपने देखा नहीं, इन लोगों ने देश को तबाह कर दिया। यह महत्त्वाकांक्षा वाले व्यक्तियों का काम है। हरिद्वार में मालवीय जी ने एक ब्रह्मचर्य आश्रम बनाया था, जो किसी जमाने में गुरुकुल आश्रम के बराबर का था। हिंदू विश्वविद्यालय के समान उसे भी बनाने का उनका सपना था। इसमें काफी इमारतें बनी थीं। आर्थिक व्यवस्था राजाओं के द्वारा बना दी गई थी। मालवीय जी के मरने के बाद वहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने इस कदर लूटमार मचा दी कि उसका क्या कहना? अपना स्वार्थ सीधा करने के लिए उन्होंने उस संस्था का न जाने क्या-क्या कर डाला। अगर वह आश्रम जिंदा होता, तो हिंदू विश्वविद्यालय के स्तर का होता, परंतु उसका सर्वनाश हो गया।

मित्रो ! हमें सबसे बड़ा दु:ख उस समय होता है, जब वे व्यक्ति, जिनको हमने अपने हाथ, पैर, होंठ समझा था, उनके ऊपर गंदगी की परतें जमती जा रही हैं। वे आज नहीं तो कल इस संस्था की जड़ों पर कुल्हाड़ी चलाएँगे तथा इसे काट डालेंगे और इसका सर्वनाश कर देंगे। परंतु आप भी इस स्थिति में प्रशंसा के भागीदार नहीं हो सकते हैं। हमने वह सब चालीस वर्षों के अंदर देखा है कि वे अपने आप में तो बर्बाद हो ही गए, उस संस्था का भी सर्वनाश कर दिया। हम ऐसा नहीं होने देंगे। मित्रो ! आपका श्रम से जी चुराना एवं आपकी अनुशासनहीनता हमें बिलकुल पसंद नहीं है। आपमें से किसी के भी अंदर यदि नेतागीरी का बीज पल रहा तो इसे कुचल दें। इससे हमें दु:ख है। ये आदतें हमें बिलकुल पसंद नहीं हैं। आप हमारा जी दुखाने का कष्ट न करें। इससे आप भी सुखी नहीं रह सकते हैं। आप इस प्रकार त्रास देंगे, तो आप सुखी नहीं रह सकते ।

हमारा लक्ष्य उज्ज्वल भविष्य

किसान दो महीने पहले अपने खेतों में लगी हुई फसल को देखकर नित्य नयी-नयी योजनाएँ बनाता है तथा मन में प्रसन्नता रहती है। कोयल जब वसंत के महीने में आम के बौर को देखकर प्रसन्न होती है, तो कूकती रहती है। हमारे अंदर भी उज्ज्वल भविष्य को लेकर प्रसन्नता है। औरत के पेट में जब बच्चा होता है, तो उसकी माँ पहले से कपड़ा सिलकर तैयार रखती है। हमारा भी लक्ष्य है कि इस दुनिया को सँवारने का हम जितना प्रयत्न कर रहे हैं, उतना अधिक-से-अधिक करें। यह कार्य होते हुए देखकर हमें प्रसन्नता होती है। अपने कार्यकर्त्ताओं को देखकर हमें काफी प्रसन्नता होती है। आप में से कुछ पके हुए आम हैं, तो कुछ कच्चे हैं। दोनों में कुछ फर्क है क्या? नहीं, कोई फर्क नहीं है। गायत्री तपोभूमि, शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस तथा शक्तिपीठों पर लगे कार्यकर्त्ता एवं समयदानी भी हमारे प्यारे बच्चे हैं, जिन्होंने साथ- साथ चलने का संकल्प लिया है।

मित्रो ! आज श्रावणी के दिन जो मेरा संदेश सुन रहे हैं, वे सब समयदानी हैं। कैसे समयदानी हैं? आप एक महीने के बाद जन्म लेने वाले हैं तथा उसके बाद गोद में खेलेंगे। बाद में तैयार हो जाएँगे तथा हमारा सहयोग करेंगे। यहाँ जो भी हैं, वह विचार करके आगे-पीछे आए हैं। हमारी एक वंश परंपरा है। यह ऋषियों की परंपरा है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आप उसके सदस्य हैं। आगे-पीछे यह बढ़ने वाला है। जो बूढ़े हो जाएँगे वे मरेंगे तथा नौजवान आते जाएँगे तथा परंपरा चालू रहेगी। हमने निश्चय किया था कि हम इतना साहित्य लिखेंगे, वह हमने पूरा किया। यह हमारा कोई लक्ष्य था ? नहीं, यह नहीं था। हमारा इससे बड़ा लक्ष्य था। हमने नया जमाना लाने का, कुरीतियों को समाप्त करने का तथा इस धरती पर स्वर्ग का अवतरण करने का संकल्प लिया है। इस काम के लिए काफी लड़ाई लड़ने की आवश्यकता है। हमें प्रसन्नता है कि हमारे साथ ढेरों-के-ढेरों व्यक्ति चल रहे हैं। अनुशासित सिपाही की तरह बंदूक चलाना चाहते हैं।

हमारा दूसरा लक्ष्य नया युग लाने, नया वातावरण बनाने, नई परंपरा तथा नया मनुष्य बनाने और न जाने कितनी हमारी योजनाएँ हैं। देश, समाज, परिवार, जनमानस को बनाने के लिए न जाने हमें कितने काम करने हैं। इस काम को हम अकेले पूरा नहीं कर सकते हैं। यह काम हमारी जीवात्मा करेगी। इसका मतलब हमारे सहयोगी इस कार्य को पूरा कर सकते हैं। मित्रो ! अकेले न हम शांतिकुंज बना सकते थे, न प्रज्ञा-संगठन बना सकते थे और न इतना बड़ा प्रचार तंत्र खड़ा कर सकते थे, परंतु हमारे बहुत सारे सहयोगियों के द्वारा यह काम पूरा हो गया। यह हमारे हाथ-पैर हैं। हमारा साधन, संप्रदाय, संगठन का मतलब हम हैं। हम अकेले नहीं करते हैं। संगठन न होता तो हम अकेले क्या कर सकते थे। हमारे साथ माता जी हैं, जो हमारा सारा काम सँभालती हैं। हमारे सहयोगी जो हारी-बीमारी में, दुःख-कष्ट में हमें सलाह देते हैं। लेखन-संपादन भी करते हैं। अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता है। शाखा-संगठन के बिना कुछ नहीं हो सकता है। आप हमारी बिरादरी के हैं, तो आप हमारे विचार का ख्याल रखें, हमारी इज्जत का ख्याल रखें, क्योंकि अब आप हमारे कुटुंब, परिवार में सम्मिलित हो गए हैं। हमारी दस सूत्री योजना, बीस सूत्री योजना और न जाने कितनी योजनाएँ हैं। जो आदमी जिस योग्यता-क्षमता का है, वृक्षारोपण से लेकर अनेक काम कर सकता है।

तीन चीजें कम कर लें

मित्रो ! हमको यह कहना है कि आप तीन चीजें कम कर लें तो आप सेवा कर सकते हैं। तब आप हमारे पक्के, ईमानदार तथा महान् कुटुंबी सदस्य हैं। ये तीन चीजें हैं, लोभ, मोह और अहंकार।

पहला—आप अपने लोभ को कम करें। कम-से-कम में ही जीवन चलाने का प्रयास करें। अगले दिनों कोई भी व्यक्ति संपत्तिवान् नहीं रह सकता है। आने वाले युग में जो अधिक जमा करेंगे, अधिक ठाट-बाट में रहना चाहेंगे आने वाले समय में लोग उन्हें जिंदा नहीं रहने देंगे। आपकी योग्यता है, तो ज्यादा देंगे। आपको कलम, चश्मा आदि की आवश्यकता है, तो हम देंगे। लेकिन आप आवश्यकता से अधिक नहीं रख सकेंगे। औसत भारतीय नागरिक का जीवन आपको जीना होगा। आप ज्यादा खाना नहीं खा सकते हैं। आप इक्कीस रोटी खाकर तो हमें दिखाइए। आप बहुत से कपड़े पहनकर तो दिखाइए। इस संसार में हर आदमी का कोटा है। उसी सीमा में रहना चाहिए। जिस आदमी ने लोभ को जितना कम कर लिया वह आध्यात्मिकता की दृष्टि से, लोकसेवी की दृष्टि से उतना ही महान् बनता हुआ चला जाएगा।

दूसरा—कुटुंब है तो उसे सीमित बनाने का प्रयास करना। आप संतान की संख्या जितनी बढ़ाएँगे, उतनी ही आप समाज की सेवा नहीं कर पाएँगे। आप हमारे हाथ-पैर, कुटुंबी, परिवार का अंग होकर तब काम नहीं कर सकेंगे, जब आपका परिवार बढ़ा चढ़ा होगा। आज के जमाने में बच्चा पैदा करना एक जुल्म है।

तीसरी बात है—'अहं' की। 'अहं' यानी-अहंकार। यह एक इतना बड़ा चांडाल है, जल्लाद, इतना बड़ा कसाई है कि उसके बाद सार्वजनिक सेवा कार्य में और कोई जालिम हो ही नहीं सकता। लोकसेवा के क्षेत्र में जो अहंकारी है, वह मरेगा। वह बड़ा बनने के चक्कर में सबको मारेगा तथा मिशन को मारेगा और स्वयं भी कुछ दिन में मरेगा। अतः आप अपने बारे में यह तैयारी करें कि छोटे-से-छोटा कार्यकर्त्ता रहकर काम कर सकें। आप ज्यादा-से-ज्यादा मशक्कत करने का प्रयास करें। आप हमारी हड्डी को खोलकर देख लें, हमने अपना तेल निकाल दिया है। दधीचि की तरह से दान तो नहीं दिया, परंतु हमने मेहनत की है। मेहनत, मशक्कत, श्रम एवं मनोयोग ही समस्त सफलताओं की कुंजी है।

अगली महत्त्वपूर्ण बात है, सबको अपने से बड़ा मानना, स्वयं सबसे छोटा बनकर रहना। 'एटम' सबसे छोटा है, परंतु न जाने कैसा तूफान पैदा कर देता है। अपने व्यक्तित्व को छोटा बनाकर ऊँचा उठने का प्रयास करना। गाँधी जी ने हमें छोटा काम जो भंगी का था, उसे सौंपा। उन्होंने कहा कि अगर तू इसे कर लेगा तो हमारे आश्रम तथा गाँधी जी को समझ लेगा। छोटे काम में भी बड़प्पन सीखना चाहिए। जो आदमी छोटा काम करेगा, वह उतना ही बड़ा आदमी है तथा जो वक्ता होकर, मैनेजर होकर,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गायक होकर रहेगा, ऐसा सोचता है वह घटिया आदमी होगा। गाँधीजी, विनोबा, विवेकानंद आदि छोटे होकर जिए और बड़े बन गए।

मित्रो ! भारत जब आजाद हो गया तो गाँधी जी को राष्ट्रपति बनने की बात कही गई थी, तो उन्होंने कहा कि खबरदार, जो ऐसा कहा। जनता पार्टी की सरकार आई तो उस समय जयप्रकाश नारायण से भी राष्ट्रपति बनने की बात कही गई थी, तो उन्होंने साफ इन्कार कर दिया था। अगर नेता बनने की, कुरसी की, मंच की, यह दोष कभी भी तुममें आ गया, तो बेकार हो जाओगे। अपनी आत्मा के विकास के बारे में सोचिए, नहीं तो दो कौड़ी के हो जाएँगे। इस प्रकार के हो जाएँगे, तो हमें दु:ख होगा। हम चाहते हैं कि अपना प्यार-तप आपके ऊपर बिखेर दें, लेकिन पुण्य, ज्ञान यह नहीं हो सकेगा। इसे स्वयं अर्जित करना पड़ता है। अगर बच्चे के अंग में गंदगी लगी है, तो उसे हम कैसे गोद ले सकते हैं? जो बड़े काम करना चाहते हैं और छोटे काम से जी चुराते हैं, उनकी सफलता संदिग्ध ही बनी रहती है। नहीं साहब! बैठे रहते हैं, सेठ बैठे रहते हैं, काम तो मजदूर करते हैं। हमें काम से क्या लेना-देना? तब बेटे हमारी तुम्हारी कुट्टी हो जाएगी, निभेगी नहीं।

सफलता के सूत्र

मित्रो ! आपको लोभ-लालच होगा तो आप प्रगति नहीं कर सकते। जिसने जितना कमाया है और उतना ही खरच कर डाला है, तो खाली हाथ रहा है। आप मोह को भी घटा देना, बच्चे कम पैदा करना तथा यह मत सोचना कि आपका बच्चा विदेश जाएगा, वकील बन जाएगा। आप अपनी नम्रता तथा मशक्कत के बारे में पूरा-पूरा प्रयास करना। जब कभी हम चौके की तरफ झाँकते हैं, तो हमारा एक स्वयंसेवक बड़ी ही मुस्तैदी से काम करता दिखाई देता है। वह असली नेता मालूम पड़ता है। जब कभी देखा, धोती कसा हुआ मालूम पड़ता है। हमें उसे देखकर बहुत प्रसन्नता होती है। हम आपके बारे में ऐसी ही मान्यता रखते हैं। आपके साथ भी हमारी तीन कसौटी हैं, (१) क्या आप हमारा प्यार चाहते हैं? (२) क्या आप भगवान् पर विश्वास करते हैं? (३) क्या आप समय की माँग को पूरा करने हेतु अपने अंदर उत्साह से भरे हैं?

अगर यह आपको प्राप्त हो जाएगा तो आपके दुश्मन भाग खड़े होंगे तथा आपका अहंकार समाप्त हो जाएगा और आप वजनदार, इज्जतदार आदमी हो जाएँगे तथा आपको हर जगह सम्मान मिलेगा। अगर ये तीन चीजें हो जाएँगी, तो आप हमारे पास खिंचते चले आएँगे। लोहे को चुंबक खींच लेता है। आप लोहा बन जाना, हम खींच लेंगे। हमारे पास जो भी जीवन का सार है, उसे आपके जिम्मे सुपुर्द कर देंगे। इसके अलावा और क्या कहें आपको? हम आप में से जो पुराने कार्यकर्त्ता हैं और जो नए आ रहे हैं, उन्हें बहुत प्यार करते हैं और हमेशा करते रहेंगे। हमें पूर्ण आशा है कि आप सब के सहयोग से ही सारे विश्व का जो नया भविष्य बनने वाला है, वह आप लोगों के सहयोग से ही होगा। इसके लिए आपको अपना व्यक्तित्व लेकर हमारे पास खड़ा होना होगा। आपका फूहड़, निकम्मा, अनगढ़ व्यक्तित्व लेकर हम क्या करेंगे? आपका वजन और लादना होगा।

ज्ञातव्य

'केंद्रीय हलचलें' स्तंभ के अंतर्गत विगत अंक में देवसंस्कृति महाविद्यालय के शुभारंभ की सूचना दी गई थी। पाठ्यक्रम निर्माण के संबंध में जिनकी रुचि एवं गति हो, उन्हें भी संबोधित किया गया था। अब इस माह के अंत तक यह सारा कार्य सुनियोजित रूप ले लेगा। जल्दी ही पत्राचार करें। इस महाविद्यालय को ही विश्वविद्यालय बनना है। लाखों परिजनों की आशा का केंद्र यह विश्वविद्यालय जल्दी ही बनकर खड़ा हो, ऐसी अभिलाषा है। विभिन्न विभूतियों से इस संबंध में 'देवसंस्कृति महाविद्यालय प्रकोष्ठ' से पत्राचार करने हेतु कहा जा रहा है।

आप रोज विचार करना कि हमारा लोभ, मोह, अहंकार घटा कि नहीं, हमारी श्रमशीलता, कार्यक्षमता बढ़ी या नहीं। अगर इस प्रकार नित्य चिंतन कर सकेंगे, तो आपकी जीवात्मा ही आपको इतना ऊँचा उठा देगी कि आप देखते रह जाएँगे। उस समय आप हमारे प्राणप्रिय बन जाएँगे तथा मिशन के लिए बड़े ही उपयोगी हो जाएँगे। इसी बात को हम हमेशा आपको समझाते रहते हैं। इसके लिए आपको सदा प्रयास करते रहना चाहिए तथा हमारे प्राणप्रिय बनकर रहना चाहिए। हम चाहते हैं कि हम और आप इस काम को एक साथ पूरा करें तथा नये युग को ला सकें।

॥ॐ शांति॥ ❋

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

देवपूजन का मर्म

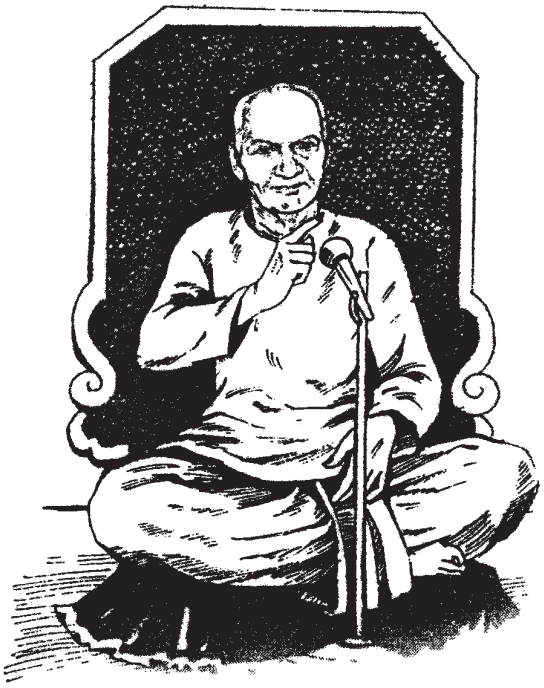

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ--

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् !

देवियो, भाइयो! देवता का अनुग्रह पाने के लिए देवता का पूजन करना आवश्यक है। इसके बिना देवता प्रसन्न नहीं हो सकते, देवता का अनुग्रह नहीं मिल सकता, देवता का प्यार नहीं मिल सकता, देवता की कृपा नहीं हो सकती। देवता का पूजन करने के लिए जो प्रक्रिया अपनाई जाती है, अगर हम उसे बताने लगें, तो बात लंबी हो जाएगी। इसलिए पंचोपचारपरक देवपूजन की व्याख्या तो मैं यहाँ नहीं कर सकता। लेकिन इस पंचोपचार की व्याख्या मैंने हजारों बार की है, जिंदगी भर की है और सारी जिंदगी भर करूँगा, ताकि आपकी देवात्मा पर आस्था बनी रहे।

अपना निर्धारण स्वयं करें

अगर आप सच्चे अध्यात्मवादी हैं तो आप या तो हिंदू हो जाइए या मुसलमान हो जाइए। नहीं साहब ! हम हिंदू भी नहीं हो सकते और मुसलमान भी नहीं हो सकते, तो फिर आप मर जाइए या जिंदा हो जाइए। नहीं साहब ! हम मरना भी नहीं चाहते और जिंदा भी नहीं होना चाहते हैं। तो फिर क्या होना चाहते हैं ? अच्छा तो वही रहिए जो आप इस समय हैं। इस समय न आप मरे हुए हैं और न जिंदा हैं। न आप भौतिकवादी हैं और न अध्यात्मवादी हैं। अगर आप भौतिकवादी हैं तो कम्यूनिस्ट हो जाइए। यह आपकी मरजी है कि आप भगवान् का नाम नहीं लेंगे और आप अगर अध्यात्मवादी हैं तो सच्चे मायने में अध्यात्मवादी हो जाइए, जैसा कि हम आपको सिखाते हैं। जिस तरह हम आपको सिखाते हैं, उस तरह का अध्यात्मवाद भी आपको मंजूर नहीं और उस तरह का कम्यूनिज्म भी मंजूर नहीं। अतः कम्यूनिज्म भी आपके लिए उतना ही मुश्किल-कठिन है, जितना कि अध्यात्म।

मित्रो ! कम्यूनिज्म भी यह सिखाता है कि आप मशक्कत कीजिए और अपनी योग्यता बढ़ाइए। इससे कम में कुछ नहीं मिल सकता। आप वह भी नहीं करना चाहते। नहीं साहब, हमको तो ऐसे दिलवाइए, जादू से, चमत्कार से दिलवाइए। कम्यूनिस्ट जी ! हाँ साहब ! बताइए आपको चमत्कार पर विश्वास है ? मशक्कत पर विश्वास है ? आपको मशक्कत के लिए कहा जाएगा तो आपका अध्यात्म गायब हो जाएगा, फिर आप क्या करेंगे ? साईं बाबा की पूजा करेंगे, मनसा देवी की पूजा करेंगे। क्या करेंगे इनकी पूजा करके ? कम्यूनिज्म बहुत कष्टसाध्य है, उसे आप बर्दाश्त नहीं कर सकते। प्रत्येक क्रिया के लिए आपको उचित मूल्य चुकाना पड़ेगा और अपनी क्षमता का विकास करना पड़ेगा। आपको वह भी मंजूर नहीं है और यह भी मंजूर नहीं है, फिर आप क्या हैं ? मैं नहीं जानता कि आप क्या हैं ?

ऐसी स्थिति में यही कहा जा सकता है कि न आप हिंदू हैं, न आप मुसलमान हैं, न आप पशु हैं, न आप पक्षी हैं और न आप भौतिकवादी हैं और न अध्यात्मवादी हैं। भौतिकवादी आपकी इच्छाएँ हैं और अध्यात्मवादी आपकी क्रियाएँ हैं। आप अध्यात्मवादी इच्छाएँ कीजिए और भौतिकवादी क्रियाएँ कीजिए। नहीं साहब ! हम भौतिकवादी इच्छाएँ रखेंगे और अध्यात्मवादी क्रियाएँ करेंगे। बेटे ! यह कैसे हो सकता है ? ऐसा नहीं हो सकता। इसलिए आपको एक कदम आगे बढ़ाना चाहिए।

देवपूजन का शिक्षण

मित्रो ! पाँच चीजें हैं, जो देवताओं के पूजन में लगानी पड़ती हैं। आखिर ये क्या हैं ? बेटे ये इशारे हैं। किसके इशारे हैं ? वे उसी के लिए हैं, जो अध्यात्म का मूल उद्देश्य है, 'आत्मसंशोधन'। सारा-का-सारा अध्यात्म इसी पर खड़ा हुआ है। बेटे, इसीलिए मैं कहता हूँ कि हमको अपने आपकी सफाई करनी चाहिए। सचाई पैदा करने के लिए परिश्रम करना चाहिए। यही श्रद्धा है। देवपूजन के लिए मैंने कितनी बार आपको बताया है, कितनी बार व्याख्याएँ की हैं। आपको मैंने हमेशा यही कहा है कि धूपबत्ती जलाने का मतलब अपने जीवन की सुगंध को फैला देना है, जिसे सूँघकर हर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आदमी को प्रसन्नता हो। गंदगी को सूँघकर नाक फड़फड़ाती है और व्यक्ति कहता है कि अरे साहब ! कहाँ से बदबू आ रही है। दूसरी ओर खुशबू को सूँघकर मन प्रसन्न हो जाता है और कहता है कि यहाँ तो बड़ी खुशबू आ रही है। यह तो जबाकुसुम-सी मालूम पड़ती है।

देवपूजन में हम धूपबत्ती जलाते हैं, जिसका मतलब है कि हमारा जीवन और हमारा व्यक्तित्व ऐसा हो जिसकी सुगंध, जिसकी खुशबू जहाँ कहीं भी जाए, वहाँ हर आदमी की तबियत खिल पड़े, प्रसन्न हो जाए। अच्छा मान लीजिए, यहाँ आप मोहनलाल का जिक्र कर रहे हैं। हाँ साहब! क्या कहना उनके व्यक्तित्व को। बेचारे संत थे। जब हम उनकी दुकान पर गए, तो उन्होंने कहा कि जो चाहिए शांतिपूर्वक ले जाइए। पैसे भी आपके जमा हैं। आप सारे बाजार में घूम आइए। अगर कोई माल हमारे माल से एक पैसे कम में भी मिलता हो तो आप उस चीज को ले जाना। हमारे यहाँ बेईमानी का कोई चक्कर नहीं है। खराब माल दिखाई पड़े, तो आप घर से वापस ले आना, हम आपको ठीक चीज देंगे और सही कीमत पर देंगे। साहब! मोहनलाल ऐसे व्यक्ति थे। उनका बोलना, बातचीत करना, व्यवहार क्या शानदार था कि उसके क्या कहने? उसने इस तरह देखा। उसने उससे प्रशंसा की और उसने उससे। इस तरह उनकी खुशबू फैलती गई। इसे कहते हैं व्यक्तित्व की खुशबू।

मित्रो ! धूपबत्ती का मतलब यह नहीं है कि आप एक लकड़ी को जला दें और सुगंध फैला दें। उस धूपबत्ती से देवता प्रसन्न नहीं हो सकते। उससे आपके कमरे की सफाई हो सकती है। इससे आपका कमरा जरूर खुशबूदार हो जाएगा, लेकिन आपकी धूपबत्ती भगवान् तक नहीं पहुँच सकती, क्योंकि भगवान् बहुत दूर रहते हैं। भगवान् जहाँ रहते हैं, वहाँ आपकी अगरबत्ती का धुआँ कैसे पहुँच सकता है? वहाँ तो केवल आपकी जिंदगी की महक ही पहुँच सकती है।

इसी तरह दीपक जलाने का मतलब मैंने कई बार आपको बताया है। कई बार तो मैं इसका माखौल उड़ाने लगता हूँ और कहने लगता हूँ कि भगवान् की आँखों में लाइट अभी ठीक है। सभी कुछ दिखाई पड़ता है। सूरज-चाँद निकलते रहते हैं। मैं उन लोगों का मजाक उड़ाता हूँ, जो यह ख्याल करते हैं कि केवल दीपक जलाने से भगवान् को प्रसन्न कर सकते हैं। कई लोग मुझसे बहस करने लगते हैं और कहते हैं कि गुरुजी ! किसका दीपक जलाएँ? कोई कहता है कि हमारे यहाँ गाय का घी है, तो कोई कहता है कि भैंस का घी है। मैं उनसे यही कहता हूँ कि गाय का है तो उसे ही जला लिया करें। भैंस का है तो उसे जला लें। वे कहते हैं कि अभी तो आप गाय का कह रहे थे। बेटा मैं क्या कह रहा हूँ, बात तो कुछ समझता नहीं है, केवल 'गाय का घी' या 'भैंस का घी' के झगड़े में पड़ा है। असलियत को समझना नहीं चाहता।

काया का दीपक व भावना का घी

मित्रो ! काया को दीपक और भावना को घी कहते हैं तथा श्रम को बत्ती कहते हैं और उसके भीतर जो प्रकाश काम कर रहा है, वह अंतरात्मा का है। हमारी अंतरात्मा की ज्योति दीपक में जला करती है और हमारे श्रम की वर्तिका उसमें लगी रहती है और प्यार उसमें भरा रहता है। पात्रता का दीपक, जो मिट्टी का शकोरा होता है, उसे पात्र कहते हैं। हमारे जीवन में पात्रता एक, जीवन स्नेह से भरा हो दो, श्रम-लगनशीलता की वर्तिका उसमें जलती हो तीन और उसके अंदर भगवान् का प्रकाश चमक रहा हो चार। अगर इन चारों से युक्त हमारा व्यक्तित्व है, तो वह भगवान् के चरणों पर रखने योग्य है। ऐसा व्यक्तित्व भगवान् को प्रकाश दे सकता है और अपने आपको प्रकाश दे सकता है। हमने कितनी बार कहा है कि आप दीप यज्ञ करें। जीवन दीपक का प्रतीक है। अच्छा साहब ! दीपक प्रतीक है तो दीपक जलाऊँगा और भगवान् को पकड़कर लाऊँगा। बेटे, दीपक से कैसे पकड़ सकता है तू भगवान् को, बता तो सही? दीपक का मकसद, धूपबत्ती का मकसद समझिए, तब भगवान् को पकड़ने का प्रयास कीजिए।

स्नान अर्थात् पसीना परहित के लिए

देवपूजन में पानी क्यों चढ़ाते हैं? महाराज जी ! हम तो एक चम्मच जल छोड़ देते हैं और कहते हैं, "*स्नानम् समर्पयामि।*" अच्छा तो बता बेटे, तूने भगवान् जी को एक चम्मच जल से कैसे स्नान करा दिया। तू अपनी स्त्री को क्या कभी एक चम्मच जल से स्नान करा सकता है, फिर गायत्री माता तो बड़ी हैं, उन्हें कैसे करा देगा स्नान? महाराज जी ! '*स्नानम् समर्पयामि*' कहकर। बेटे ! तू असली मकसद को समझता नहीं है, केवल पानी, चम्मच आदि के चक्कर में ही घूम रहा है। अरे उससे आगे बढ़ और स्नान का मतलब समझ ! स्नान का अर्थ यह है कि हम अपने पसीने की बूँदें, श्रम की संपत्ति लोकमंगल के लिए खरच करेंगे। अभी तो तेरा सारा पसीना अपने बेटे के लिए, पैसे के लिए खरच होता रहता है। तेरे पसीने की एक बूँद समाज के काम न आ सकी, श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिए खरच न हो सकी। सारा-का-सारा समय, सारा-का-सारा श्रम और सारा-का-सारा स्वेद बिंदु पसीने की बूँदें हमारी हमारे ही काम में खरच हो गईं, भगवान् के लिए खरच नहीं हुईं। हम कसम खाते हैं कि भगवान् अब हम पसीने की बूँदें आपके लिए टपकाएँगे। पानी से, स्नानम् से यही मतलब है।

अक्षत् अर्थात् एक अंश भगवान् का

अक्षत् से क्या मतलब है? अक्षत् से मतलब है, हमारी कमाई का एक हिस्सा भगवान् के लिए, समाज के लिए लगना चाहिए। हम जो कुछ कमाते हैं, स्वयं के लिए नहीं खा जाएँगे। जो आप कमाता है और आप ही खाता रहता है, वह चोर है। जो व्यक्ति समाज के सहयोग से कमाता है और स्वयं ही सब खाकर खत्म कर देता है, वह चोर है। भाईसाहब!

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आप अपनी कमाई का एक हिस्सा समाज के लिए दीजिए। आप गवर्नमेंट को टैक्स देते हैं, औरों को देते हैं, आप धर्म को भी टैक्स दीजिए, समाज को टैक्स दीजिए। सत्प्रवृत्तियों को टैक्स दीजिए, हिस्सा निकालिए। नहीं साहब ! हम नहीं निकाल सकते। नहीं आपको निकालना पड़ेगा। यही है *'अक्षतं समर्पयामि'* संक्षेप में अक्षत् का मतलब यह है कि हम अनाज कमाते हैं, पैसा कमाते हैं, वस्तुएँ कमाते हैं, उसका एक अंश भगवान् के लिए अलग से निकालना पड़ेगा।

मित्रो ! भगवान् हमारी जिंदगी का पार्टनर है। उस पार्टनर का शेयर चुकाइए। नहीं साहब ! उसका तो हम शेयर नहीं चुकाएँगे, हम ही अकेले खा जाएँगे। नहीं बेटे ! वह हिस्सेदार है, वह दावा कर देगा तो तेरी अकल ठिकाने लगा देगा। पचास फीसदी का हकदार है भगवान्। हमारे जीवन में पचास फीसदी का 'मैटर' और पचास फीसदी का 'अध्यात्म' है। पचास फीसदी का प्राण और पचास फीसदी का शरीर। ये तेरे आधे का पार्टनर है। कौन? भगवान्। अतः उसके लिए भी निकाल। अरे, महाराज जी! मैं तो थोड़ा-सा ही निकालूँगा। कितना निकालेगा? बस 'अक्षत् समर्पयामि' मैं तो सात चावल रोज निकालूँगा। नहीं बेटे, ऐसा नहीं हो सकता। पचास परसेंट का हकदार है भगवान्, तो पच्चीस परसेंट, दस परसेंट कुछ तो दे। उसमें से पाँच परसेंट तो दे। एक परसेंट तो दे। नहीं साहब ! मैं तो केवल 'अक्षतं समर्पयामि' करूँगा। अहा...। अच्छा तो ये मामला है। इसीलिए तू अक्षत् चढ़ा रहा था कि बाकी सारा माल स्वयं हजम कर ले। आपको पच्चीस हजार का जो फायदा हुआ, उसमें से लाइए पचास परसेंट। नहीं साहब ! उसमें से पंद्रह पैसे लेना हो तो ले जाइए भावनापूर्वक, प्रेमपूर्वक, श्रद्धापूर्वक! अहहा.....। बड़ा चालाक है तू।

इस तरह से मित्रो 'अक्षतं समर्पयामि' का उद्देश्य समझिए। आप उद्देश्य नहीं समझेंगे, बस चावल फैलाते रहेंगे तो इससे अच्छा है कि उस चावल को चिड़िया को खिला दें अन्यथा उस चावल को बाहर डालेंगे, झाड़ू से झाड़कर बाहर फेंक देंगे और वह बेकार हो जाएगा। अनाज और खराब हो जाएगा। अगर आप यह सब नहीं समझना चाहते, इसका उद्देश्य ग्रहण नहीं करना चाहते, उसकी प्रेरणा स्वीकार करना आपको मंजूर नहीं तो आप उस चावल को कहीं और लगा दीजिए। किसी चिड़िया को या किसी पक्षी के बच्चे को खिला दीजिए, फेंकिए मत। इन चावलों को फेंकने से क्या फायदा।

गुणों की सुगंधि

इसी तरह मित्रो ! जब हम चंदन चढ़ाते हैं तो इसका मतलब होता है कि हम अपने व्यक्तित्व से अपने समीपवर्ती वातावरण में उसी तरह से सुगंध बिखेर दें जिस तरह से चंदन का दरख्त अपने आस-पास के छोटे-छोटे पौधों को अपने समान सुगंधित बनाता चला जाता है। आप जहाँ कहीं भी रहें और जो भी आपके संपर्क में आए, उसे श्रेष्ठ बनाइए। दूसरों को अपनी अच्छाई का फायदा जरूर दीजिए। आप दूसरों को अच्छा जरूर बनाइए। नहीं साहब ! हम तो अच्छे रहेंगे, किंतु किसी को अच्छा नहीं बनाएँगे? नहीं बेटे ! औरों को भी अच्छा बनाना चाहिए जैसे कि चंदन बनाता है।

मित्रो ! मैं आपको यही समझा रहा था कि आप इस खुशबू को फैलाइए। एक से दस के रूप में विस्तृत हो जाइए। आप चंदन के दरख्त की तरह हो जाइए और अपनी खुशबू को दूसरों में फैलने दीजिए। मैं आपसे यही कह रहा था कि सारी-की-सारी वस्तुओं का विकास देवपूजन के पीछे जुड़ा हुआ है। देवपूजन के सिद्धांत के पीछे समर्पण का भाव छिपा हुआ है, लेकिन यहाँ तो हमारा सारा जीवन राक्षस के लिए जुड़ा हुआ है। अभी तक हमने सारा जीवन असुर के लिए, पशु के लिए खरच किया है।

क्या होते हैं देवी-देवता

देवत्व का अर्थ होता है—श्रेष्ठताएँ। देवता कहाँ रहते हैं? हमें नहीं मालूम। हम एक बार कैलाश पर्वत पर थे तो मरते-मरते बचे थे। देवता कहाँ रहते हैं? पीपल के पेड़ पर रहते होंगे। अच्छा तो चलिए दिखाइए। नहीं साहब ! वहाँ तो देवी रहती है। कहाँ रहती है? महाराज जी ! वह तो नागरकोट में रहती है, कलकत्ता में रहती है। अच्छा तो वहीं चलो। मैं तो कलकत्ता देख आया हूँ। वहाँ काली जीभ निकालकर चिढ़ा रही है। किसी स्टूडेंट ने पूछा था कि क्यों साहब ! काली देवी जीभ निकालकर क्यों चिढ़ाती है? अरे भाई ! जीभ निकालना उनका शौक है। महाराज जी! एक देवी नागरकोट में रहती है। मेरे बाल-बच्चों का मुंडन वहाँ होगा। अच्छा बेटे ! तेरी कुलदेवी कहाँ रहती है। महाराज जी ! बाड़मेर में, जैसलमेर में। तो वहाँ क्या करेगा? बच्चे का मुंडन कराऊँगा। और कहीं करा ले तो? नहीं महाराज जी! देवी नाराज हो जाती है। क्या कहती है तेरी देवी? यों कहती है कि मैं बाल खाऊँगी, तू बाल यहीं काट। बेटे तू ऐसा भी कर सकता है कि घर पर मुंडन करा ले और बाल एक डिब्बे में बंद करके उसे देवी के पास पार्सल से भेज दे, देवी के काम आएगा। नहीं महाराज जी! देवी कहती है कि मुंडन के लिए हमारे यहाँ ही आना पड़ेगा, नहीं तो वह नाराज हो जाएगी।

साथियो ! आपने देवी देखी है क्या? अगर देखी हो तो मुझे भी बता देना। मैंने तो देखी नहीं ऐसी देवी जो मुंडन कराती हो और बाल खाती हो। मैंने जो देवी देखी है, वह विचारणाओं के रूप में, भावनाओं के रूप में, सिद्धांतों के रूप में देखी है। मनोवृत्तियों के रूप में और कृतियों के रूप में देवियाँ देखी हैं। इनमें से एक का नाम दया की देवी, एक का नाम करुणा की देवी, एक का नाम श्रद्धा की देवी, एक का नाम दान की देवी है। मैंने असंख्य देवियों की पूजा की है और उनके साथ में इतना आनंद उठाया है कि वे मेरी सहेलियों की तरह, मित्रों की तरह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मुझे हँसाती रहती हैं, मुझे खिलाती रहती हैं। देवियों के उद्यान में मैं विचरता रहता हूँ और देवियाँ मुझे प्यार देती रहती हैं। मरने के बाद स्वर्ग में जिन देवियों और अप्सराओं का वर्णन किया गया है, उन देवियों और अप्सराओं को मैंने इसी वन में देखा है, प्रकृति के रूप में और प्रवृत्तियों के रूप में।

मित्रो ! देवता कर्म हो सकता है, देवता विचार हो सकता है, देवता भावना हो सकता है, देवता व्यक्ति नहीं हो सकता। देवता अगर व्यक्ति होता तो दुनिया में छाया रहता, एक जगह नहीं रहती। शंकर जी शैवों में छाए रहते हैं। देवी शाक्तों में छाई रहती है और विष्णु भगवान् वैष्णवों में छाए रहते हैं और रामचंद्र जी राम भक्तों में छाए रहते हैं, खुदाबंद करीम मुसलमानों में छाए रहते हैं। बेटे ! इतने सारे भगवान् नहीं हो सकते। सारी दुनिया में एक ही तरह का भगवान् हो सकता है, अनेक तरह का कैसे हो सकता है ? तो क्या अनेक तरह के भगवान् नहीं हो सकते ? बेटे! हमें विश्वास नहीं कि अनेक तरह के भगवान् होते हैं। हमारा विश्वास इस बात के ऊपर है कि भगवान् की जो असंख्य शक्तियाँ हैं, वे मनुष्य के भीतर जब प्रवेश करती हैं तो वे देववृत्तियों के रूप में प्रवेश करती हैं।

देववृत्तियाँ जहाँ हैं, वहाँ हैं देवता

देववृत्तियाँ किसे कहते हैं ? श्रेष्ठ चिंतन एक, श्रेष्ठ कर्म दो, श्रेष्ठ भावनाएँ तीन—इन्हीं का नाम देववृत्तियाँ हैं। वे श्रेष्ठताएँ जिनमें होंगी, उन्हें अगर मैं देवता कहूँ तो आप बुरा मत मानना। वास्तव में यही देवता हैं। बाहर के प्रतीकों के माध्यम से जनसाधारण को हम सिखाते हैं कि ये प्रतीक वास्तव में हमारे देवता हैं। प्रतीक हाँ बेटे प्रतीक । शंकर जी की जब हम पूजा करते हैं, तो हम कुछ प्रतीक के माध्यम से उन संवेदनाओं की, सिद्धांतों की, आदर्शों की पूजा करते हैं, जो शंकर जी में समाविष्ट हैं। जैसे कि शंकर जी के सिर में से ज्ञान की गंगा प्रवाहित होती है। शंकरजी के मस्तक पर संतुलन का चंद्रमा टिका हुआ है। जिन्होंने मुंडों की माला अर्थात् मृत्यु को संगिनी बनाने के लिए अपने गले में मुंडों की माला पहनी हुई है। जिन्होंने साँपों को गले से लगाकर रखा है। जिसका कि तीसरा नेत्र खुला हुआ है। तीसरा नेत्र कौन-सा ? विवेक का नेत्र, ज्ञान का नेत्र, देवता का नेत्र, आज से लेकर हजारों वर्षों तक आगे और पीछे की अपनी परिस्थितियों को देखं सकने वाला 'टेलिस्कोप' जिससे कि हम भविष्य देखते हैं। जिससे हम अपने बुढ़ापे को देखते हैं, जिससे अपनी मृत्यु को देखते हैं, जिससे हम परलोक को देखते हैं, जिससे हम जन्म-जन्मांतरों को देखते हैं, ऐसा हमारा टेलिस्कोप 'तृतीय नेत्र' खत्म हो गया है।

मित्रो ! आज हमको अनीति दिखाई पड़ती है। साठ साल की उम्र में क्या कर रहा है ? गुरुजी! हमारे तो साढ़े सात नंबर का चश्मा चढ़ गया है और वह खो गया है। तो अब आपको दिखाई नहीं पड़ता ? हाँ गुरुजी! हमें दिखाई नहीं पड़ता। अच्छा तो अभी के फायदे के पीछे आप अपने भविष्य का सत्यानाश करने पर उतारू हैं । भविष्य को देखिए, बुढ़ापे को देखिए, परलोक को देखिए, मृत्यु को देखिए और जन्म-जन्मांतर को देखिए। क्या आगे वाली चीजें नहीं देख सकते ? नहीं साहब ! हमको दिखाई नहीं पड़तीं। तो आप शंकर जी की भक्ति कीजिए और उनसे वरदान माँगिए कि आपने जो अपना विवेक का तीसरा नेत्र खोला हुआ था, वह हमारा भी खोल दीजिए।

मस्तिष्क का संतुलन किसे कहते हैं ? जिसमें आदमी ऐसे भी और वैसे भी अर्थात् दोनों परिस्थितियों में 'बैलेंस' कायम रख सकता है। साइकिल सवार को अपना 'बैलेंस' कायम रखना पड़ता है। बैलेंस गँवा देगा तो इधर गिरेगा या उधर गिरेगा और हाथ-पैर तुड़वा बैठेगा। अतः साइकिल चलाते समय बैलेंस बनाकर चलते हैं। किसी भी कार्य में अगर हम संतुलन कायम नहीं रख सकते, तो सफलता नहीं मिल सकती। यहाँ तक कि हम खुशी में भी संतुलन नहीं कायम नहीं रख पाते तो हम पागल हो जाते हैं और व्यसन तथा व्यभिचार की ओर मुड़ जाते हैं। जब हम गरीब होते हैं तो चोरी करने पर विवश हो जाते हैं। हमरा 'बैलेंस' यों भी खराब हो जाता है और यों भी खराब हो जाता है।

मित्रो ! 'बैलेंस' रखने वाली बत्ती का नाम है—मस्तिष्क। मस्तिष्क पर चंद्रमा होने का मतलब है—ज्ञान की गंगा, अमृत की धारा का प्रवाहित होना। ज्ञान की धाराएँ, अमृत की धाराएँ प्रवाहित होते रहने से मतलब है, हमारा मस्तिष्क स्वयं ज्ञान से भरा रहे और अपने श्रेष्ठ विचारों से सारे समाज में ज्ञान की गंगा बहाते चलें।

शंकर भगवान् भूत-प्रेतों के साथ प्रेम करने वाले हैं। भूत-प्रेतों के हाल सुधारने के लिए खड़े होने वाले, पापी एवं पतित लोगों को सहारा देने वाले, ऊँचा उठाने वाले ही सच्चे अर्थों में शिवभक्त कहे जा सकते हैं। बाबा आम्टे की तरह से जिन्होंने कोढ़ियों का विद्यालय शुरू किया और अब वहाँ नागपुर के पास उनका विश्वविद्यालय भी बन चुका है। अभी-अभी अखबार में छपा है, उनकी फोटो भी छपी है, जिसकी कटिंग भी मैंने रखी है। टी. वी. पर भी देखा है। उन्होंने सारी जिंदगी पीड़ितों के लिए, पतितों के लिए, कोढ़ियों के लिए खरच कर दी। अंधों के लिए, गूँगों के लिए, बहरों के लिए उन्होंने एक आश्रम बनाया, जहाँ उनका प्रशिक्षण होता है और उनमें से समाजसेवी निकलकर बाहर आते हैं। ऐसा है उनका विश्वविद्यालय। ये हमारी वो वृत्ति है, जिसका ज्ञान की गंगा के रूप में प्रवाहित होना स्वभाव है। ये वृत्तियाँ देववृत्तियों के रूप में, देवताओं के रूप में हमारे भीतर विद्यमान हैं। उन्हें विकसित करने के लिए, उभारने के लिए ही देव-पूजन की पंचोपचार प्रक्रिया अपनाई है। *(क्रमशः अगले अंक में)*

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

देवपूजन का मर्म

मित्रो ! देवता कौन हो सकता है ? देवता वह होता है, जो देता है, दूसरों को श्रेष्ठ बनाता है। देवता वह नहीं है, जो आप रंग-बिरंगे खिलौने बनाकर लाते हैं। ये किसकी मूर्ति बनाकर लाए ? भैरव जी की बनाकर लाए। भैरव जी का मुँह ऐसा क्यों है ? अरे साहब ! इनका मुँह तो ऐसा ही है। अच्छा ये देवी जी जीभ क्यों निकालती हैं ? ये तो काट खाएँगी। अरे साहब ! ये तो बकरा खाएँगी। धत् तेरे की ! अगर ये बकरा काटने वाली हैं, तो जो हमारे पड़ोस में कसाई रहता है, उसमें और इसमें क्या फरक है ? नहीं साहब ! ये तो देवी जी हैं। मांस तो ये भी खाती हैं और वो कसाई भी खाता है, तभी तो मैं इसे कसाई कह रहा हूँ। नहीं साहब ! ये कसाई नहीं देवी है। नहीं बेटे, ऐसी देवी नहीं हो सकती, जो बकरा खाती हो।

सच्चा अध्यात्म क्या कहता है

इसलिए मित्रो ! जो आपने रंग-बिरंगे, चित्र-विचित्र खिलौने बनाकर रखे हैं और उन रंग-बिरंगे खिलौनों से अगर आप ये ख्याल करते हैं कि ये देवी हमारा यह भला करेगी, हमारी अमुक मनोकामना पूरी करेगी, तो हम देवी को ये मिठाई खिलाएँगे, मालपुए खिलाएँगे, तो यह आपकी खामख्याली है। अगर आप ऐसे काम नहीं करना चाहते, तो वहाँ आइए, जहाँ सच्चा अध्यात्म आपकी प्रकृति का उद्धार करता है, आपको आत्मदर्शन कराता है। वहाँ आइए जहाँ अध्यात्म आपके दिमाग की सफाई करता है और यह कहता है कि देववृत्तियाँ, श्रेष्ठ वृत्तियाँ जो संयम के ऊपर टिकी हुई हैं और लोकमंगल के ऊपर टिकी हुई हैं, उनको दो हिस्सों में बाँट सकते हैं। सारी-की-सारी देवियों और सारे-के-सारे देवताओं को दो भागों में बाँट सकते हैं। एक वर्ग देवी-देवताओं का वह है, जो हमारे व्यक्तिगत जीवन पर छाए रहते हैं, जो हमको संयमशील बनाते हैं, श्रमनिष्ठ बनाते हैं, परिष्कृत व्यक्तित्व वाला बनाते हैं, भावनाशील बनाते हैं, संस्कारवान बनाते हैं, साहसी बनाते हैं, इत्यादि। वे हमारे व्यक्तिगत जीवन में सद्गुणों का समावेश करते हैं।

दूसरा वर्ग देवताओं का वह है, जो हमारे व्यवहार को समाज के प्रति उदार बनाता है, उदात्त बनाता है। दूसरों की सेवा करने के लिए, पीड़ा-पतन निवारण करने के लिए, दूसरों को ज्ञान देने और ऊँचा उठाने के लिए, दूसरों को परामर्श देने के लिए हमें प्रेरित करता है। इस तरह हम देवी-देवताओं को दो वर्गों में बाँट सकते हैं। इनमें से एक वे हैं जो हमारे व्यक्तित्व- परिष्कार के लिए खड़े हुए हैं और दूसरे वे हैं जो उदारता के ऊपर खड़े हुए हैं। ऊपरी तौर से देखने पर वे दो वर्गों में विभक्त दिखते भर हैं, पर वास्तव में वे दोनों हैं एक ही भाग। क्योंकि जब हम अपने आपको श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं तो हमको बाहर की मदद लेनी पड़ती है। जब हम तैरने की इच्छा करते हैं, तो हमको तालाब में प्रवेश करना पड़ता है। तालाब में प्रवेश किए बिना आपको तैरना नहीं आ सकता। आपको अपना श्रेष्ठ व्यक्तित्व बनाने के लिए लोकव्यवहार को विनम्र, सुशील और सेवाभावी बनाना आवश्यक है। लोकमंगल के लिए, अपना व्यक्तित्व श्रेष्ठ बनाने के लिए, सेवा के लिए, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए अगर हम तैयार न हों, तो हम अपना व्यक्तिगत जीवन अच्छा बना ही नहीं सकते। वास्तव में यह वर्गीकरण मैंने आपकी सुविधा के लिए और जानकारी के लिए इसलिए किया है, ताकि आप दोनों को आसानी से समझ सकें, अन्यथा वो दोनों एक ही हैं।



Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मित्रो! देवता के लिए अनुदान देना, देवता के लिए अनुदान प्रस्तुत करना—यही देवोपचार का उद्देश्य है। आप कहीं भी मंदिर में जाते हैं, तो कुछ-न-कुछ वहाँ चढ़ाते हैं। कुछ भी नहीं है, तो भी 'पत्रम् पुष्पम् फलम् तोयम्' तो चढ़ाते ही हैं। इसलिए आप यह बात ध्यान रखना कि जब किसी भी देवता के यहाँ जाएँ, तो कुछ भी न मिले तो तुलसी का एक पत्ता जरूर ले जाना। तुलसी का पत्ता न हो तो आप फूल जरूर ले जाना। फूल या पत्ता भी न हो तो ताँबे का एक नया पैसा, एल्युमीनियम-गिलेट का एक पाँच पैसे का सिक्का ही डाल देना। महाराज जी! अगर नहीं डालें तो? तो बेटे देवता नाराज हो जाएँगे और शाप दे देंगे। पंडित जी के यहाँ पत्रा दिखाने जाते हैं, अगर खाली हाथ जाएँगे, तो आपको शाप पड़ेगा। राहु भी नाराज हो जाएगा, चंद्रमा भी नाराज हो जाएगा। पंडित जी! पत्रा देखकर बताइए कि हमारे ग्रह कैसे हैं? ला, पहले पत्रा का पूजन तो कर। अरे पंडित जी! हम तो खाली हाथ आ गए। बेटा खाली हाथ नहीं आते। देवता के सामने खाली हाथ नहीं जाते। देवता के सामने, गुरुजी के पास आते हैं, तो कुछ-न-कुछ लेकर आते हैं। फूल लाते हैं, केला लाते हैं। नहीं, महाराज जी! हम तो ऐसे ही चले आए। नहीं बेटे ऐसे नहीं आना चाहिए। कुछ भी लाया कर। फल-फूल कुछ भी लाया कर। हाँ गुरुजी! फूल लाया था। बस, तो ठीक है, काम बन जाएगा। काम बन गया।

देने वाले ही देवता

मित्रो! देने वाले को देवता कहते हैं और देवपूजन के लिए आदमी को देने वाला व्यक्ति बनना पड़ता है, लेने वाला नहीं। देवता किसी से लिया नहीं करते, हर एक की मदद करते हैं। आपको भी देवता की मदद करनी चाहिए। देवता का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए ही देवपूजन किया जाता है। देवपूजन की शिक्षाएँ हैं कि हम अपने जीवन में देवत्व का समावेश करें। हम पशु जीवन से ऊँचे उठें, मनुष्य जीवन से ऊँचे उठें और दैवी जीवन में प्रवेश करें। दैवी वृत्तियों का आह्वान करें और पशु प्रवृत्तियों का विसर्जन करें। हमारे जीवन में चारों ओर से पशु छाया हुआ है, इंद्रियों पर पशु छाया हुआ है। हर जगह पशु-प्रवृत्तियाँ छाई हुई हैं। पशु कौन है, जो अपने आप तक सीमित है। पशु में एक ही खराबी है कि वह केवल अपने आप तक सीमित रहता है। वह न समाज की सोचता है, न अपने वर्ग की सोचता है, न देश की सोचता है, न वृत्तियों की सोचता है। केवल अपने पेट की सोचता रहता है और अपनों की सोचता रहता है। इसीलिए तो हम पशु की निंदा करते हैं।

मित्रो! अभी आप वास्तव में नरक के पशु जैसा जीवन जी रहे हैं। अगर कोई आपकी जिंदगी का विश्लेषण करे कि आप क्या हैं, तो जो निष्कर्ष आएगा उसे देखकर आप हैरान रह जाएँगे। चलिए, हम आपको लैबोरेटरी में ले चलते हैं। हम लैब में विश्लेषण करने के पश्चात् जो आपकी पैथोलॉजिकल रिपोर्ट तैयार करेंगे, उसमें हम आपको यह 'डिक्लेयर' अर्थात् घोषित कर सकते हैं। बताइए साहब! यह किसकी हड्डी है? ये तो साहब कुत्ते की हड्डी है। नहीं साहब! ये मनुष्य की हड्डी है। मनुष्य की हड्डी कैसे हो सकती है? यह कौन बताएगा? यह बात डॉक्टर अपनी प्रयोगशाला में बताएगा। इसी तरह हम अपनी प्रयोगशाला में ले जाकर कह सकते हैं कि अभी आप इनसान नहीं बन पाए, न देवता बनने की हिम्मत ही जुट रही। अभी आप पशु का जीवन जी रहे हैं। पशु का जीवन स्वार्थी जीवन, चालाक जीवन, कामनाओं से भरा हुआ जीवन, वासनाओं से भरा हुआ जीवन, तृष्णाओं से भरा हुआ जीवन जी रहे हैं।

मित्रो! अब क्या होना चाहिए? अब हमारा जीवन एक ही दिशा में बढ़ना चाहिए, देवत्व की दिशा में। देवत्व की दिशा में बढ़ें, तो क्या हो सकता है? तब बेटे! हमारा देवपूजन का उद्देश्य पूरा हो सकता है। हम आपको देवपूजन की सारी प्रक्रियाएँ केवल इस मकसद से सिखाते हैं कि आपके भीतर देने की वृत्ति हो जाए, उदारता की वृत्ति पैदा हो जाए, श्रेष्ठता की वृत्ति पैदा हो जाए और आप देवता बनने की कोशिश करें।

देवता व मनुष्य में अंतर

देवता में क्या विशेषता होती है? देवता और मनुष्य में क्या फरक होता है? देवता खाते तो रहते हैं, पर पखाना नहीं करते। हनुमान जी को चाहे जितना खाना खिला दो-रोटी खिला दो और दूसरे दिन देखो, कहीं मल विसर्जित किया हुआ नहीं मिलेगा। देवता की एक पहचान तो यही है। देवता अगर मल विसर्जन कर दे तो समझना चाहिए कि वह देवता नहीं है। दूसरी पहचान देवता की यह है कि वे कभी बूढ़े नहीं होते। देवता सदैव जवान रहते हैं। अच्छा बताइए कि भगवान् रामचंद्र जी का ऐसा फोटो क्या किसी ने देखा है, जिसमें उनके दाँत उखड़ गए हों और बाल सफेद हो गए हों? आपने देखा है? नहीं साहब! हमने तो नहीं देखा। अच्छा तो कृष्ण भगवान् का देखा होगा? कृष्ण भगवान् की जब मृत्यु हुई थी तब वे एक सौ पच्चीस वर्ष की उम्र के थे। मैं आप से पूछता हूँ कि एक सौ पच्चीस वर्ष की उम्र के व्यक्ति के चेहरे पर झुर्री आई होंगी कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं ? हाँ, महाराज जी! जरूर आई होंगी। बाल सफेद हुए होंगे या काले ? सफेद हुए होंगे। अच्छा, एकाध दाँत उखड़ा होगा या नहीं ? हाँ साहब! जरूर उखड़ा होगा। अच्छा, कृष्ण भगवान् का एक फोटो हमको दिखाइए। बताइए यह फोटो बुढ़ापे का है या जवानी का। नहीं साहब! यह बुढ़ापे का नहीं है, जवानी का है। जवानी किसमें रहती है ? देवता में रहती है। देवता जवान होता है। देवता अगर बूढ़े होने लग जाएँ, तो समझना चाहिए कि ये सब बेकार हैं। देवताओं के चेहरे भरे हुए होते हैं। देवता वह होते हैं जिनके चेहरे पर जवानी छाई रहती है, उमंगें छाई रहती हैं, उत्साह छाया रहता है, जीवट छाया रहता है। देवता की पूजा करने के लिए आपकी मन:स्थिति उसी तरह की होनी चाहिए।

ईमानदारी की बात यह है कि देवी-देवताओं की जितनी भी छवियाँ हैं, वास्तव में ये सब मॉडल हैं। हमको क्या बनना है, इस लक्ष्य को पाने के लिए हम उसी के अनुरूप देवता अर्थात् मॉडल चुनते हैं। जैसे ताजमहल बनाने के लिए पहले मॉडल बना दिया गया था कि मीनार कितनी बड़ी बनेगी, गेट कैसे बनेगा, अमुक चीज कैसी बनेगी आदि। कागज पर बने नक्शे से उतना साफ नहीं हो पाता, इसलिए हमेशा बहुत बढ़िया इमारतों के लिए 'मॉडल' बनाकर रखते हैं। इसी तरह यदि हम राम की खूबियाँ धारण करना चाहते हैं, तो राम की मूर्ति सामने रखते हैं। हम कृष्ण की उपासना इसलिए करना चाहते हैं कि हम कृष्ण जैसे बनना चाहते हैं। कृष्ण भगवान् की खुशामद और चापलूसी करने से क्या हो सकता है ? बेटे तू बता तो सही कि कृष्ण जी अपनी खुशामद करने वाले को, चापलूसी करने वाले को या किसी चमचे को अपना चमचा बनाना चाहते हैं क्या ? असली यही बात है ना ? हाँ गुरुजी! हम तो भगवान् का चमचा बनना चाहते हैं। बेटे! चमचे तो उनके होते हैं, किनके ? वेश्याओं के, नेताओं के और राजाओं के, जो कहते हैं कि अरे साहब! आपकी सात पीढ़ियों ने बड़े-बड़े शेर मारे हैं। पाँच साल बाद आया हूँ, एक शाल तो लूँगा ही। अच्छा ले जा चारण।

मित्रो! आप क्या बनना चाहते हैं ? चारण बनना चाहते हैं या चमचे बनना चाहतें हैं ? क्या आप वेश्याओं के पीछे चमचे बनकर फिरना चाहते हैं ? अरे साहब! इनके क्या कहने ? इन्होंने तो वहाँ गाया था, नाचा था, बड़े गजब का था। ये श्रीकृष्ण भगवान् हैं। देखिए, इनके मुकुट और इनके ये रेशमी कपड़े और बाजूबंद और देखिए इनकी गायें। देखिए इनकी बाँसुरी। क्या बनना चाहते हैं आप श्रीकृष्ण भगवान् के चमचे। बेटे! चमचा बनने से कोई उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। आपको देवता बनने के लिए उन वृत्तियों को 'मॉडल' के रूप में ग्रहण करना पड़ेगा और अपने आपको ढालने की तैयारी करनी पड़ेगी। आप रामचंद्र जी के उपासक हैं, तो रामचंद्र जी बनने की तैयारी कीजिए। कृष्णचंद्र जी बनना चाहते हैं तो आप कृष्णचंद्र जी बनने की तैयारी कीजिए। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

आप हनुमान जी बनना चाहते हैं न ? हाँ गुरुजी हमारे इष्ट तो हनुमान जी हैं, तो आप हनुमान जी बनिए, हमें क्या शिकायत है। नहीं साहब! हनुमान जी तो हम नहीं बनना चाहते। रहेंगे तो हम वही, जैसे पहले थे और पूजा करेंगे हनुमान जी की। चलेंगे पश्चिम को और देखेंगे पूरब को। वाह बेटे! खोज कर रहा है पूरब की और चलेगा पश्चिम की ओर। अरे! इष्ट का मतलब तो लक्ष्य है। हम क्या बनना चाहते हैं ? हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है ? आखिर हम क्या बनेंगे ? अगर हम यह तय कर लें, तो मित्रो! हमारे भीतर देवता की हस्ती पैदा हो सकती है। देवताओं की संज्ञा में तब आप खड़े होंगे जब आपके शरीर में से गंदगी पैदा न होती हो। देवता पखाना नहीं करते। उनको पसीना भी नहीं आता। इसको कहते हैं देवता। वे पेशाब भी नहीं करते। अच्छा पानी तो पीते होंगे। हाँ बेटे! शंकर जी को तू पानी चढ़ा सकता है। कितना पानी चढ़ा दूँ ? सामर्थ्य भर खूब पानी चढ़ा दे। महाराज जी! शंकर जी इतना पानी पिएँगे तो फिर पेशाब तो करेंगे ही। नहीं बेटे ! शंकर जी पानी पीते रहते हैं, खाना खाते रहते हैं हमारी भावनाओं के रूप में, श्रद्धा के रूप में और हमारे जीवन की दुष्ट प्रवृत्तियों, पाप आदि का निष्कासन करते रहते हैं, ताकि दुष्कर बलाएँ न आएँ।

देव-पूजन किसलिए

देवता को इसलिए इष्ट मानते हैं, देवता का पूजन इसलिए करते हैं, देवता की आराधना इसलिए करते हैं कि हमारी देववृत्तियाँ विकसित होती हुई चली जाएँ। देवता की आराधना हम इसलिए करते हैं कि हमारा देवत्व निराशा न लाए। देवत्व कभी निराशा नहीं ला सकता। देवत्व की ओर चलने वाला व्यक्ति निराश नहीं हो सकता। सफलता नहीं मिली, न सही, अगले जन्म में मिलेगी। देवत्व की ओर बढ़ने वाले में क्या ताकत आ गई कि वह कहता है कि अभी नहीं तो अगले जन्म में मिल जाएगी। देवता कभी अपने सत्प्रयत्नों की ओर से निराश नहीं पाया जा सकता। निराशा माने बुढ़ापा। बुढ़ापा किसे कहते हैं, निराशा को। बुढ़ापा क्या होता है, निराशा । बेटे! शरीर का तो यह धर्म

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ही है कि वह बूढ़ा होने वाला है। वह बूढ़ा होगा ही, लेकिन शरीर के बूढ़े होने से कोई फरक नहीं पड़ता।

जिन दिनों जर्मनी ने इंग्लैंड के ऊपर हमले किए थे और इंग्लैंड के जीवन-मरण का प्रश्न था, उन दिनों वहाँ का प्रधानमंत्री चर्चिल इतना बूढ़ा हो गया था कि वह पार्लियामेंट की मेज पर वहाँ बैठकर काम नहीं कर सकता था। उसके लिए एक चारपाई बिछा दी गई थी और पार्लियामेंट के मेंबर और दूसरे मिनिस्टर उसके दायें-बायें बैठते थे और वह करवट लेकर बात करता था, चलता था तो छड़ी लेकर चलता था, बूढ़ा इतना हो गया था कि काम नहीं कर सकता था, लेकिन उसने सारे इंग्लैंड को आश्वासन दिलाया, "हमारे पास खून है और हमारे पास पसीना है। इसलिए इस बड़ी-से-बड़ी मुसीबत को बर्दाश्त करेंगे। इंग्लैंड को कोई गुलाम नहीं बना सकता। आप लोग खून-पसीना बहाने के लिए तैयार हो जाइए। मैं आपकी आजादी की सुरक्षा करने की गारंटी देता हूँ।" उसने ये वचन तब कहे जब सारे इंग्लैंड के ऊपर जर्मनी का हमला हो रहा था। वह खड़ा हो गया। उसने कहा, "हम जिंदा हैं, इसलिए आप में से हर एक को जिंदा रखेंगे, इंग्लैंड को जिंदा रखेंगे। इंग्लैंड के किसी नागरिक को डरने की आवश्यकता नहीं है।"

मित्रो! ये कौन लोग थे? इनको जवान आदमी कहते हैं। आज जब कम उम्र के व्यक्ति जरा-जरा-सी बात पर निराशा की बात करते हैं, निराशा की बात कहते हैं और ये कहते हैं कि साहब! हम तो इम्तिहान में फेल हो गए, हमारा भविष्य अंधकारमय हो गया। अब तो हम कुतुबमीनार से कूदकर मरेंगे। रेलगाड़ी से कटकर मरेंगे। उस तरह की जब कोई खबर हमारे पास आती है कि अरे साहब! कोई लड़का था, मर गया, बड़े दुःख की बात है। मैं कहता हूँ कि बेटे! तू एक गलती सुधार। तू यह मत कह कि एक लड़का मर गया। तो क्या कहूँ? यों कह कि एक बुड्ढा व्यक्ति मर गया। बुड्ढा कैसे? वह तो लड़का था। नहीं बेटे, वह बुड्ढा था। बुड्ढा आदमी वह है जिसकी उम्मीदें खत्म हो गईं, जीवन खत्म हो गया, जोश खत्म हो गया, उमंगें खत्म हो गईं, आशाएँ खत्म हो गईं, वह आदमी बूढ़ा है। ऐसा आदमी थक जाता है। जो आदमी हार जाता है, जिस आदमी ने हिम्मत गँवा दी, जिस आदमी ने अपने उज्ज्वल भविष्य के सपने गँवा दिए, वह आदमी बूढ़ा हो गया।

साथियो! देवता बूढ़े नहीं हो सकते। देवपूजन के माध्यम से हम देवताओं की आराधना करते हैं, देववृत्तियों की आराधना करते हैं। जब हम शंकर जी की आराधना करते हैं, संघशक्ति की देवी दुर्गा की आराधना करते हैं, पूर्णपुरुष कृष्ण भगवान् की आराधना करते हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम की आराधना करते हैं, भक्त शिरोमणि हनुमान की आराधना करते हैं, तो इस माध्यम से उनकी जो श्रेष्ठ वृत्तियाँ हैं, उनको अपने अंदर धारण करते हैं। नहीं साहब! हनुमान जी हमें रुपया-पैसा दे जाएँ, हमारा व्याह करा दें। हनुमान जी बेटा दे जाएँ। बेटे! ऐसे कैसे हो सकता है? जिसके यहाँ जो होगा, वही तो देगा। जो चीज है ही नहीं, तो वह कैसे दे देगा? जब हनुमान जी का व्याह हुआ नहीं, उसके बच्चा हुआ ही नहीं, तो बेटा कैसे दे जाएँगे आपको? गुरुजी हम बीमार हैं, इंजेक्शन लगा दीजिए। बेटे! हम कैसे लगा देंगे। नहीं गुरुजी! आप तो महात्मा हैं, एक इंजेक्शन तो हमारे लगा ही दें। अच्छा आप इंजेक्शन नहीं लगा सकते, तो हमारा दाँत हिलता है, उसे ही उखाड़ दें। बेटे, हमसे तेरा दाँत भी नहीं उखड़ेगा। फिर आप किस बात के गुरु हैं? गुरु हैं तो बेटा हम ज्ञान देंगे, रामायण पढ़ा देंगे, गीता पढ़ा देंगे और दूसरे पाठ पढ़ा देंगे। नहीं साहब! आप तो हमारा दाँत उखाड़ ही दीजिए। बेटे हम कैसे उखाड़ सकते हैं? हमको स्वयं ही नहीं आता। यह क्या है? पागलपन है, अज्ञानता है।

देवताओं के वरदान—सत्प्रवृत्तियाँ

मित्रो! देवता दैवी शक्तियों से भरे हुए, दिव्यतत्त्वों से भरे हुए, दिव्य विचारणाओं से भरे हुए, दिव्य भावनाओं से भरे हुए होते हैं। देवता अगर किसी को वरदान देंगे तो वे मानवता का वरदान देंगे, सद्गुणों का वरदान देंगे, श्रेष्ठता का वरदान देंगे, सत्प्रवृत्तियों का वरदान देंगे। ये सद्गुण और सत्प्रवृत्तियाँ ऐसी हैं, जिनको हम 'ट्रेवलर्स चेक' कह सकते हैं। इस हुंडी को आप कहीं भी भुना लीजिए। सत्प्रवृत्तियों को लेकर के आप बाजार में जाइए और यह कहिए कि हम महात्मा गाँधी हैं और हम महात्मा हैं और हमारे महात्मा की कीमत लाइए। जनता आपके ऊपर नोट बरसाना शुरू कर देगी और जब आप मरेंगे तो सौ करोड़ रुपये का आपका स्मारक बना देगी। ये हुंडी है महानता की। आप नहीं खाते तो कोई हर्ज की बात नहीं, आप खिला सकते हैं। ठीक है, हम अपने इस्तेमाल में खरच नहीं कर सकते, लेकिन हम चाहें तो किसी को भी फायदा पहुँचा सकते हैं। चाणक्य ने असंख्यों को फायदा पहुँचाया। समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को धनी बना दिया। महात्माओं के वरदान और आशीर्वाद से न जाने क्या-क्या हुए। वे स्वयं लँगोटी पहनते थे, तो कोई

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हर्ज की बात नहीं थी। देवत्व जब मनुष्य के भीतर आता है, तो महानता के रूप में आता है और महानता वह हुंडी है, जो नरसी मेहता की तरह से हर एक के ऊपर बरस सकती है।

मित्रो! आध्यात्मिकता वो हुंडी है, देवत्व वह हुंडी है और मानवता वह हुंडी है, जिसको भुनाने के लिए सुदामा की तरह से आप कभी भी भगवान् के बैंक में जा सकते हैं और अपना पैसा वसूल कर सकते हैं। अगर आपको भौतिक चीजों की जरूरत पड़ जाए, तो भी इससे आप खरीद सकते हैं, लेकिन मैं समझता हूँ कि उसको अपने आपकी संपदा इतनी महान् मालूम पड़ती है कि भौतिक वस्तुओं को इकट्ठा करने में कोई आनंद नहीं आता। इसलिए जिसको देवत्व का रस मालूम पड़ जाता है, वह उन चीजों को जो नाशवान हैं, जो कल नहीं रहने वाली हैं, जो केवल चमकदार मालूम पड़ती हैं, वास्तव में वे चमकदार नहीं हैं, बाहर से वे मृगतृष्णा की तरह मालूम पड़ती हैं और आनंद का कारण नहीं बन सकतीं। ऐसा व्यक्ति जानता है कि भौतिकता हमारे आनंद का कारण नहीं बन सकती, औलाद हमारे आनंद का कारण नहीं बन सकती, वैभव, आर्थिक उन्नति हमारे आनंद का कारण नहीं बन सकती। बेटे! यह सब मालूम पड़ता है, महसूस होता है, पर असलियत में है नहीं। यदि होता, तो संपन्न आदमी, बेटे वाले आदमी, पैसे वाले आदमी, ताकतवर आदमी—सबके सब ये कहते कि हम तो अपने जीवन में धन्य हुए। हम इस जीवन में सुखयापन करते हैं।

महानता सबसे बड़ा वरदान

मित्रो! देवत्व वह संपत्ति है जो हमारे जीवन के साथ जुड़ी रहती है और जन्म-जन्मांतरों तक साथ जा सकती है। भौतिक संपत्ति को तो कोई चोर भी ले जा सकता है, अमुक भी ले जा सकता है, इन्कम टैक्स वाला भी ले जाता है और मरने के बाद हमारा बेटा, पोता ले जाता है, लेकिन जो हमारे जीवन को हर क्षण आनंद से सरावोर रखती है, और लोक-परलोक तक हमारे साथ चली जाती है, उस दैवी शक्ति, दैवी विभूति, दैवी संपदा का नाम है, 'महानता'। महानता देना देवता काम है! कोई देवता अगर प्रसन्न होगा तो क्या पैसे देगा? नहीं। तो पैसे के स्थान पर 'चेक' देगा, बैंक ड्राफ्ट भेज देगा? मित्रो! ध्यान रखना—देवता आपको पैसा नहीं देगा। उसका चेक, ड्राफ्ट महानता है। देवता महानता दिया करते हैं। महानता की कीमत पर आदमी संपदाएँ कमा सकता है, यश कमा सकता है, वैभव कमा सकता है। इसलिए देवपूजन में हम अपनी उन वृत्तियों का विकास करते हैं, जो जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते हैं। देवपूजन के माध्यम से हम आत्मशोधन का प्रयास करते हैं। ये हमारे प्रत्येक क्रियाकलाप के माध्यम हैं। आत्मशोधन स्वर्णजयंती वर्ष का भी माध्यम है। अगर आप स्वर्णजयंती वर्ष और दूसरी किसी अन्य उपासना में संलग्न होना चाहते हैं, तो आपको किसी-न-किसी रूप में देवपूजन करना पड़ेगा। हिंदू हैं तो भी करना पड़ेगा, निराकारवादी हैं, तो भी करना पड़ेगा। मुसलमान हैं, तो धूपबत्ती जलानी पड़ेगी। ईसाई हैं तो भी आपको मोमबत्ती जलानी पड़ेगी, फूल चढ़ाना पड़ेगा। देवता के सामने श्रद्धांजलि अर्पित करनी पड़ेगी, मस्तक झुकाना पड़ेगा, सिर झुकाना पड़ेगा, श्रद्धा व्यक्त करनी पड़ेगी। देवता के सामने श्रद्धा की अभिव्यक्ति का नाम देवपूजन है।

आत्मशोधन का अर्थ है, अपने आपकी सफाई, अपनी शारीरिक सफाई, मानसिक सफाई, आर्थिक सफाई, व्यवहार की सफाई, पैसे की सफाई, शारीरिक क्रियाओं की सफाई, मानसिक विचारों की सफाई, अगर आप ये सब सफाइयाँ कर सकते हों, तो मैं यकीन दिलाता हूँ कि अध्यात्म के जो पुण्य बताए गए हैं, सिद्धियाँ बताई गई हैं, चमत्कार बताए गए हैं, देवता की कृपा बताई गई है, भगवान् का साक्षात्कार बताया गया है। जो कुछ भी आपने उसके माहात्म्य सुने हैं, वे सौ फीसदी सही हैं और जरूर मिल सकते हैं। मैं फिर कहता हूँ कि नकद धर्म के रूप में वे इसी जन्म में मिल सकते हैं। गवाही के रूप में मैं हमेशा अपने आपको पेश करता रहा हूँ। मैंने सही अध्यात्म पाया है और साथ में सही परिणाम भी। मैं चाहता हूँ कि आप सही अध्यात्म ग्रहण करें, देवपूजन का उद्देश्य समझें, आत्मशोधन का उद्देश्य समझें और नींव भर लें, जिसके उपर एक विशालकाय महल बनाया जा सकता है। आज मैंने नींव भरने की प्रक्रिया आपको बताई कि आप किस तरीके से आत्मशोधन और देवपूजन इन दो प्रक्रियाओं के माध्यम से अपने व्यक्तित्व के निर्माण की, अध्यात्म और योगाभ्यास की नींव भर सकते हैं। मैं आपको महल बनाने की विधि आगे कभी बताऊँगा कि आप खिड़की कैसे लगा सकते हैं, किबाड़ कैसे लगा सकते हैं, छत कैसे डाल सकते हैं और शीशे कैसे लगा सकते हैं इस महल में, जिसको आप बनाना चाहते हैं, आत्म उन्नति का मकान। आज की बात समाप्त। ॥ॐ शांतिः॥

❑

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

कैसे विकसित हो आदर्श परिवार-१

(पूर्वार्द्ध)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्!

देवियो, भाइयो! आप जिस सत्र में शामिल हुए हैं, उसका नाम परिवार सत्र है। आपको ऐसा मालूम पड़ रहा है कि आपको यहाँ किसी छोटे काम के लिए एकत्रित कर लिया है, परंतु ऐसी कोई बात नहीं है। किसी खास मकसद से आपको यहाँ बुलाया गया है। आप इस परिवार के सदस्य हैं। परिवार कोई मजाक की बात नहीं है। अरे साहब! परिवार में हम कैसे रह रहे हैं, यह तो हम स्वयं जानते हैं। परिवार हमारे लिए मुसीबत है।

मित्रो! आमतौर से परिवार माने मुसीबत, परिवार माने झंझट, यही परिवार की परिभाषा है। परिवार माने झंझट, आपत्ति, झगड़ा—आमतौर से लोग इसे ही परिवार कहते हैं। तो क्या हमने इसीलिए आपको बुलाया है? क्या नमक, तेल, हल्दी के मामलों की बात, दैनिक घरेलू कार्यों की बात बतलाने हेतु हमने आपको बुलाया है? नहीं, मित्रो! इस शिविर का बहुत महत्त्व है। यह हमारा बहुत प्यारा शिविर है।



पारिवारिकता ही होगा अगले दिनों लक्ष्य

साथियो! परिवार शब्द के साथ बहुत-सी महान् चीजें जुड़ी हुई हैं, इसलिए परिवार शब्द से हमें बहुत प्रेम है। परिवार हमें बहुत प्यारा लगता है। अगले दिनों में जब नए युग का निर्माण होने जा रहा है, तो इसके सिद्धांत क्या होंगे, आदर्श क्या होंगे? क्रियाकलाप क्या होगा? यही बतलाने के लिए हमने यह शिविर बुलाया है। इसका मतलब कुटुंब एवं पारिवारिकता है। अगले दिनों संसार का यही लक्ष्य होगा। अगले दिनों इसके विशेष निर्धारण होने हैं। आपने देखा नहीं है कि जिस घर में आपाधापी होती है, वह घर नरक बन जाता है। बच्चे जेवर चुराकर भाग जाते हैं। लड़कियाँ अपने जेवर मायके में रख आती हैं। औरतें काम नहीं करती हैं। आपने देखा नहीं है कि बच्चे किस प्रकार गद्दी पर से, दुकान पर से रुपये चोरी करके आ जाते हैं। बहुएँ अपने पति के साथ अलग रहना चाहती हैं। इस तरह आपाधापी से परिवार के बरबाद होने से दुनिया बरबाद हो जाती है तथा समाज में तबाही आ जाती है।

आज दुनिया के सामने, जिसे हम नवयुग की समस्या कहते हैं, उसके सामने बहुत-सी समस्याएँ हैं, कठिनाइयाँ हैं। आज बहुत सारी दिक्कतें हैं, जिन्हें सुनने के बाद ऐसा लगता है कि इसका कोई समाधान ही नहीं है। मित्रो! आपको इस पर विचार करना होगा, क्योंकि आज दुनिया बहुत छोटी हो गई है। पहले जमाने में दुनिया बहुत बड़ी थी, बहुत फैली थी। एक आदमी का दूसरे से कम ताल्लुक था। अपना गाँव ही अपनी दुनिया थी। सभी जगहों से कोई मतलब नहीं था। गाँव की महिलाएँ घूँघट मारती थीं। पहले दुनिया ससुराल से घर तक सीमित थी, लेकिन आज दुनिया बहुत फैल गई है। आज सिनेमा की दुनिया से बच सकते हैं आप? बचकर दिखलाइए न। लड़के फैशन वाले पैंट पहने फिरते हैं, सिनेमा के गाने गाते फिरते हैं। उससे बचकर दिखलाइए न। उसे रोककर दिखलाइए न। घर में बगावत हो जाएगी।

मित्रो! आपका लड़का आपसे तो नहीं कहता, परंतु अपने दोस्तों से कहता फिरता है कि हम फिल्म के एक्टर बनेंगे। वह अपनी मम्मी का जेवर चुराकर घर से भाग जाता है। हाँ साहब! वह मुंबई चला गया था। क्यों गया था, जब आपने पूछा, तो उसने बताया था कि हम फिल्मों में काम करेंगे। फिल्मी ऐक्टर बनेंगे। लेकिन वहाँ फिल्म वालों ने इसे घुसने भी नहीं दिया, तो भागकर वापस आ गया। इसलिए कहता हूँ कि आप सिनेमा से बच्चों को बचाकर दिखाइए। साहब! हम तो रामायण पढ़ते हैं और हम अपने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बच्चों को गुरुदीक्षा दिलाकर लाएँगे। अरे आप गुरुदीक्षा दिलाकर तो दिखाइए तब जानें। जमाने की हवा ने आपकी लड़की को क्या बना दिया? आप इस बारे में शरम के मारे कुछ कहना नहीं चाहते हैं।

जमाने की हवा तो देखिए

मित्रो! जमाने की हवा से हम जुड़े हैं, उससे अलग नहीं हो सकते। आप कहते हैं कि हम अलग दुनिया बसा लेंगे। साथियो पहले कभी सौ-दो सौ, पाँच सौ साल पहले था ऐसा जमाना, लेकिन अब ऐसा बनाना तथा जीवन जीना संभव नहीं है। आज दुनिया आपके साथ जुड़ी है तथा आप दुनिया के साथ जुड़े हैं। आज की दुनिया में आपको कुटुंब के आधार पर जीना होगा। कुटुंब का एक ही सिद्धांत है, मिल-जुलकर रहना तथा मिल-बाँटकर खाना। अरे! हम तो जमा करेंगे। नहीं, आप अपने लिए जमा नहीं कर सकते हैं। आप मिल-जुलकर काम कीजिए तथा मिल-जुलकर खाइए। हम कमाते हैं तो हम जमीन खरीदेंगे, मकान बनाएँगे, अपनी बीबी को जेवर खरीदेंगे, कपड़े बनवाएँगे। आप भले से इसे कर लीजिए, हम कौन होते हैं आपको रास्ता बताने वाले, परंतु मित्रो, इससे आपकी समस्याएँ, गुत्थियाँ बढ़ेंगी ही, उलझेंगी ही, समाप्त नहीं होंगी। उनका समाधान नहीं होगा। इसका एक ही समाधान है कि आदमी को कुटुंब के रूप में आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, परसों नहीं तो अगले दिनों रहना होगा। इसके अलावा कोई समाधान नहीं हैं।

साथियो! कुटुंब का एक सिद्धांत है। इसमें ऐसा नहीं होता कि जिसमें योग्यता, पुरुषार्थ, पराक्रम ज्यादा है और जो जितना अधिक कमाता है, वह उतना ही ज्यादा खाएगा। नहीं भाईसाहब! वह ज्यादा नहीं खाएगा। उसे दूसरों को, कुटुंब को भी खिलाना होगा। यह कुटुंब का सिद्धांत है, जिसके आधार पर हमारा कुटुंब-परिवार चलता है तथा उसका विकास होता है। आगे भी यही कुटुंब का आधार होगा। अगले वाली दुनिया का, आने वाले समय का यह एकमात्र सिद्धांत होगा। अगले दिनों जो नियम, कानून एवं मर्यादा बनेगी, धर्म एवं संस्कृति बनेगी, जो भी आचार संहिता मनुष्य को चलाने-बढ़ाने के लिए बनेगी, उसका नाम होगा, 'पारिवारिकता' 'कुटुंब'।

प्राचीनकाल में ऋषियों ने इसके लिए एक नारा दिया था, **'वसुधैव कुटुंबकम्'** का अर्थात् सारी दुनिया को एक कुटुंब के रूप में रहना चाहिए। अंतः आप मिल-बाँटकर खाइए और हिल-मिलकर रहिए। अगर इस बात को इंसान नहीं समझेगा तो उसकी ऐसी पिटाई होगी कि होश ठिकाने आ जाएँगे। आप अगर इसे अध्यात्मवादी-साम्यवाद कहें तो हमें कोई ऐतराज नहीं होगा। लेकिन हम कहेंगे कि आप कोई ऐसा फार्मूला बनाएँ जिसमें मनुष्य चैन से रहे और दूसरों को चैन से रहने दे। स्वयं खाए, प्रगति करे तथा दूसरों को भी खाने दे तथा प्रगति करने दे। आदमी हँसे तथा दूसरों को हँसने दे। वह स्वयं खिले और दूसरों को खिलने दे। आदमी जिए और दूसरों को जीने दे। यही वह सिद्धांत है, जिसे पारिवारिकता कहते हैं। इन्हें आसानी से ग्रहण कर लें तो ठीक है, वरन् ऐसी जबरदस्त ताकतें आ रही हैं, जो आपको मजबूर करेंगी कि आपको मिल-जुलकर ही रहना पड़ेगा और मिल-जुलकर ही खाना पड़ेगा। इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है।

क्यों भाई! आप अमीर बनेंगे? हाँ साहब! अरे मिल-जुलकर खाइए न। नहीं साहब! हम कमाएँगे और स्वयं खाएँगे। चुप, धूर्त कहीं का, ऐसा करेगा तो मार-मार कर दुनिया तुझे ठीक कर देगी। मित्रो! आप कमाइए तो सही, परंतु दूसरों के लिए भी खरच कीजिए। नहीं, साहब! हम तो बेटे के लिए खरच करेंगे। चुप बदमाश कहीं का, अरे साहब! हम हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं, भजन करते हैं, प्राणायाम करते हैं। बेटे, इससे क्या होता है। सिद्धांत तो समझता नहीं है, भजन करता है, मक्कार कहीं का। यह पूजा-पाठ भगवान् को खुश करने के लिए नहीं बनाया गया है।

यह पूजन किस काम का?

मित्रो! एक बार हमने एक भगवान् जी से पूछा कि आपका क्या ख्याल है? दुनिया वालों का तो ऐसा ख्याल है कि आप प्रसाद चढ़ाने वालों, सुपारी व नारियल चढ़ाने वालों, आरती उतारने वालों पर खुश हो जाते हैं। यह क्या मामला है? भगवान् हम पर बहुत क्रोधित हो गए। गुस्सा हो गए। उन्होंने कहा गुरुजी! आप तो पढ़े-लिखे हैं और पढ़े-लिखे होकर भी इस प्रकार के बेहूदेपन को पसंद करते हैं। क्या हम इतने घटिया और छोटे हो सकते हैं, जो इस छोटे-से पूजा-पाठ से खुश हो जाएँ और आशीर्वाद दें? भगवान् जी! हम तो नहीं मानते हैं, लेकिन हमारे चेले यही मानते हैं। तो फिर आप ऐसे चेलों की पिटाई कीजिए, जो हमारे ऊपर इस प्रकार का लांछन लगाते हैं और हमें इस प्रकार का जलील समझते हैं। दोस्तो! आपकी पूजा, आपकी उपासना आपको मुबारक हो, लेकिन अध्यात्मवाद को इससे कोई मतलब नहीं है। इन सब प्रक्रियाओं से एक ही मतलब है कि आदमी का चरित्र, आदमी का व्यवहार, आदमी का व्यक्तित्व ऊँचा उठे, परिष्कृत बने।

साथियो! देवता बहुत व्यस्त रहते हैं, हमसे भी ज्यादा व्यस्त रहते हैं। भगवान् के पास आपकी बेहूदी बातों के लिए समय नहीं है। छोटी-छोटी कंपनियाँ होती हैं, उसे सँभालने में आदमी का कचूमर निकल जाता है, फिर भगवान् तो इतनी बड़ी सृष्टि की व्यवस्था को देखता है। आपको मालूम नहीं है कि हमारे पास कितना काम है। ब्रह्मवर्चस का काम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हमारे पास है; लेखन का काम हमारे पास है, मिशन का काम हमारे पास है। इतना काम हमारे पास है कि हमारे पास बेकार के कामों के लिए फुर्सत नहीं है। इंदिरा गाँधी से मालूम कीजिए न, उनका सेक्रेटरी आपको डंडे मारकर भगा देगा। गुरुजी! हम तो आपको माला पहनाएँगे, चरण धोएँगे। मक्कार कहीं का, हमारा समय खराब करता है। भगवान् से ज्यादा व्यस्त समय किसी के भी पास नहीं है। आप बेकार की बातें मत करें। इस संसार में जितनी भी महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ हैं, उनके पास समय नहीं होता है। वे पूरे समय व्यस्त रहते हैं।

मित्रो! पूजा-पाठ का एक ही मतलब है, इसे चाहे एक बार सुनिए, चाहे निन्यानवे बार सुनिए। इसका तथ्य एक ही है कि इंसान के सोचने का ढंग, विचार करने का ढंग इंसान के तरीके से हो जाए यानि उनका व्यक्तित्व ऊपर उठ जाए। जैसे-जैसे आप सही इंसान बनते जाते हैं, वैसे-वैसे आप भगवान् के नजदीक पहुँचते जाते हैं। उस समय आप भगवान् के सान्निध्य का लाभ एवं भगवान् की ऋद्धि एवं सिद्धियों को आप प्राप्त कर सकते हैं। स्वर्ग, चमत्कार, मुक्ति सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। आपसे हम यह कहना चाहते हैं कि यह सारा-का-सारा अध्यात्म मनुष्य के पूजा-पाठ से संबंध नहीं रखता है, बल्कि मनुष्य के चिंतन एवं चरित्र से संबंध रखता है। आपको यह मालूम होना चाहिए कि जैसे-जैसे आपका चिंतन, चरित्र ऊँचा उठता चला जाएगा, आपके अंदर सिद्धियाँ आती चली जाएँगी। यह अध्यात्म सुभाष चंद्र बोस के अंदर आया था, नेहरू, पटेल के अंदर आया था। यह उन लोगों के अंदर आया था, जिनका चिंतन और चरित्र महान् बना।

साथियो! आप तो देवताओं की हजामत बनाने वाले हज्जाम हैं, चिड़ियों को मारने वाले चिड़ीमार हैं। इससे काम नहीं चलेगा। आप देवताओं को पकड़ना चाहते हैं। ऐसा अध्यात्म कभी हुआ है क्या? मछलीमार जैसा अध्यात्म, चिड़ीमार जैसा अध्यात्म कभी नहीं हुआ, जैसा कि आज है। अरे साहब! कोई भी देवी-देवता हमारे चंगुल में नहीं आया और हमारी मनोकामना पूर्ण नहीं हुई। इस तरह काम कैसे चलेगा? चुप रह मक्कार कहीं का, बड़ा आया भक्त बनने। ख्वाब मत देखिए, वास्तविकता के पास आइए और अपने सोचने एवं काम करने का ढंग बेहतरीन बनाइए। आप बेहूदेपन की पूजा बंद कीजिए। आपने तो पूजा के नाम पर उलटे जंजाल फैला दिया है। इससे आपको कोई लाभ होने वाला नहीं है।

नवयुग-सतयुग

मित्रो! मैं यह कहना चाहता था कि अगली दुनिया जिसमें सब लोग प्रसन्नता का जीवनयापन करेंगे, खुशहाली, शांति, सिद्धि, चमत्कार का जीवन जिएँगे, यह युग सतयुग होगा, धर्मयुग होगा। इसे चाहे जो भी आप नाम दें, इसमें हमें कई नाराजगी नहीं होगी, लेकिन नवयुग का आधार एक होगा, कानून एक होगा। नवयुग की संस्कृति एक होगी। तब क्या होगा? पारिवारिकता का वातावरण होगा। वह क्या है? आप जो दायरा अभी इस्तेमाल करते हैं, वह बड़े दायरे में करना होगा। आपको आठ सौ पचास रुपया मिलता है, इससे आप क्या करते हैं? अरे साहब! खाने में, बीबी-बच्चों में खरच हो जाता है। छोटा भाई स्कूल जाता है, उसमें खरच हो जाता है। कुछ शादी में कर्ज लिया था, उसको दे देते हैं। क्यों अपने लिए ही तो खरच नहीं करते हैं? नहीं साहब! इतना पैसा हम अकेले में कैसे खरच करेंगे? हमें अपनी बहन को भेजना पड़ता है।

साथियो! जो सिद्धांत आज आप अपने कुटुंब में लागू कर रहे हैं, उसे सारे समाज में लागू करना होगा। आपके पास धन है, आप संपन्न व्यक्ति हैं, इसका श्रेय आपको मिलेगा, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप स्वयं अकेले खाएँगे, मौज-मस्ती करेंगे। अगर आप ऐसा करते हैं, तो लोग आपका गला दबाकर उल्टी करा देंगे। अध्यात्म का युग आएगा, तो इसी प्रकार का आएगा। अनावश्यक चीजें आपको नहीं मिलेंगी। आपके पेट में जितनी जगह है, उतना ही खाइए, शेष बाँटिए, नहीं तो लोग आपका गला दबाएँगे तथा उल्टी करा देंगे। तो गुरुजी! क्या ऐसा जमाना आ रहा है? हाँ बेटे, बिलकुल आ रहा है।

मित्रो! आपके चाहने से आपके लिए दुनिया तो नहीं बदलेगी। आप अपनी चाह, अपनी मरजी को अपनी जेब में रखिए। दुनिया की समस्या का हल जिस तरह से होना है, वह उसी प्रकार से होगा। ऋषियों ने जो नारा लगाया था, आज हम पुनः उस नारे को लगाते हैं, **'वसुधैव कुटुंबकम्'** का। इसके आधार पर ही दुनिया में मोहब्बत, चलन, रिश्ते, व्यवहार एक होंगे। इसका विकास पारिवारिकता की भावना से ही होगा।

हमारा अपना गायत्री परिवार

'परिवार' शब्द से हमें बहुत प्यार है। हमने अगर विश्वास किया है, तो पारिवारिकता पर किया है। हमने जो संगठन बनाया है, तो उसका आधार कौटुंबिकता है। कुटुंब पर मैं विश्वास करता हूँ। हर ईमानदार आदमी अपना सारा का सारा समय, संपदा अपने कुटुंब तथा परिवार के विकास के लिए खरच करता है। हमने भी गायत्री परिवार के नाम से जो परिवार बनाया है, उसके लिए खरच करते हैं। जब मिशन छोटा था और हम तपोभूमि में रहते थे, उस समय अखण्ड ज्योति निकलती, तो हमने 'अखण्ड ज्योति परिवार' शब्द का इस्तेमाल किया है। पुराने लेटर पैड पड़े होंगे, उनमें यही छपा है। जब गायत्री का प्रचार हमने शुरू किया तो 'गायत्री परिवार' बना दिया। उसके बाद 'युग निर्माण परिवार' बना दिया। अब प्रज्ञा अभियान शुरू किया तो 'प्रज्ञा परिवार' बना दिया।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मित्रो! यह परिवार हमारे प्राणों का अंश है। आप देखते नहीं हैं? इसको हमने सींचा है, बढ़ाया है। हमारा परिवार किस तरह से जुड़ा है, आप देखते नहीं? माताजी आपकी माताजी हैं। वे अगर आपकी माताजी हैं, तो हम भी आपके पिताजी हैं। आपने इस परिवार में यह नहीं देखा होगा कि कोई इस परिवार में छोटा है तथा कोई बड़ा है। हमारे यहाँ परिवार के अलावा अन्य कोई व्यवहार, सिद्धांत है नहीं। इसके अलावा हम किसी चीज पर विश्वास नहीं करते हैं।

साथियो! परिवार शब्द बड़ा महान् है। इसके साथ मानवीय समस्याएँ, विश्व की समस्याएँ जुड़ी हुई हैं। आप यह कहते हैं कि घर-परिवार से निश्चिंत हो जाएँगे, तो उसे छोड़ देंगे। उस समय मैं खून का घूँट पीकर रह जाता हूँ तथा आपको कुछ कहता नहीं हूँ। जब आप यह कहते हैं कि गुरुजी! घर का जंजाल छूटा और हम आपके शरण में आए, तो हमें हँसी आ जाती है और मैं कहता हूँ कि जब यहाँ आएगा, तो बड़ा परिवार तेरे ऊपर हावी हो जाएगा। अभी तेरे परिवार में कितने आदमी हैं। गुरुजी! माँ, पत्नी और दो बच्चे हैं। अच्छा! तो पाँच का परिवार है। तू क्या समझता है कि यहाँ बाबा जी लोग रहते हैं, बेकार के लोग रहते हैं, जो तू निश्चिंत होकर आएगा। नहीं साहब! मैं तो सब तरह से 'फ्री' होकर आऊँगा और यहाँ आकर माला जपूँगा। गुरुजी आपकी सेवा करूँगा। चल हट मक्कार कहीं का, ऐसा डंडा मारूँगा कि अकल ठीक हो जाएगी। परिवार को छोड़कर आएगा। अरे! हमारे पास भगोड़ों के लिए कोई जगह नहीं है।

मित्रो! जोधपुर के महाराज युद्ध में हार गए। सारे सैनिक मारे गए। राजा साहब किसी तरह जान बचाकर आ गए और उन्होंने गेट पर से, जो बंद था, आवाज लगाई। रानी ने कहा, "राजा साहब! आप अकेले कैसे आ गए? आपको सैनिकों के साथ आना चाहिए था। बिगुल बजाकर आना चाहिए था।" गेट खोलने जा रहे अपने सिपाही से रानी ने कहा कि ठहर जा। वे महल के ऊपर चढ़ गईं और बोलीं, "आप राजा नहीं हो सकते। सेना कहाँ गई?" उन्होंने कहा कि सेना मारी गई। रानी ने कहा, "जोधपुर का महाराज ऐसा बेहूदा नहीं हो सकता। आप हमारे पति नहीं हो सकते। आप वहीं जाइए तथा युद्ध कीजिए। आप यदि मारे भी जाएँगे, तो आपके सिर को लेकर मैं प्यार करूँगी। भगोड़े को मैं प्यार नहीं करूँगी। इसी तरह यदि आप भी भगोड़े बनकर आ जाएँगे, घर छोड़कर आ जाएँगे, तो आपके लिए शांतिकुंज का यह दरवाजा बंद मिलेगा। हम आपको घुसने नहीं देंगे। आप कहते हैं कि हम जिम्मेदारी से निवृत्त हो जाएँगे तब आएँगे। क्या निवृत्त हो जाएँगे? क्या समाज का उत्तरदायित्व नहीं है आपके ऊपर? देश का उत्तरदायित्व नहीं है? नहीं साहब! अभी तो बेटी की शादी करनी है, उससे निवृत्त हो जाऊँगा, तब आऊँगा। तब ऐसी चपत लगेगी कि होश ठिकाने आ जाएँगे। पारिवारिकता बहुत विशाल चीज है।

समझें अध्यात्म के मर्म को

आध्यात्मिकता के बारे में भी क्या आप कुछ सोचते हैं, जानते हैं? इसके सिद्धांतों को, आदर्शों को भी समझिए। नहीं साहब! हम जप करेंगे, प्राणायाम करेंगे तो हमें सिद्धि मिलेगी। बड़े आए सिद्धि वाले? देवताओं का साक्षात्कार करेंगे? देवताओं का दर्शन करेंगे? बेटे! देवता इतने फालतू नहीं हैं कि आपने पुकारा और वे आ गए। आप शंकर भगवान् को बुलाना चाहते हैं न? वे आपसे कोसों दूर हैं। उन्हें आप ऐसे नहीं बुला सकते हैं। आप स्वामी जी को बुलाते हैं, तो उनको फर्स्ट क्लास का टिकट दिया है या नहीं? आप हमें बुलाएँगे तो दान-दक्षिणा देंगे कि नहीं? आप पेट्रोल का खरच तो देंगे ही। हाँ साहब! हम देंगे। अच्छा तो यह पक्की बात है। आप शंकर भगवान् को बुलाना चाहते हैं, तो जरा उन्हें पेट्रोल का खरच दीजिए। आप लक्ष्मी-नारायण को बुलाना चाहते हैं, तो उन्हें पेट्रोल का खरच दीजिए। हम उन्हें फोन कर देंगे और वे आ जाएँगे। अरे साहब! लक्ष्मीनारायण जी दस हजार किलोमीटर दूर हैं। चुप रह, सारे दिन बक-बक करता रहता है कि देवता का दर्शन करा दीजिए। अज्ञानी कहीं का। पहले आध्यात्मिकता का सिद्धांत समझिए।

आदमी अपने ऊपर तो हावी हो सकता है, किंतु देवताओं के ऊपर नहीं हो सकता और न ही उन पर हावी होने की जरूरत है। देवता के सामने नाक रगड़ने की भी आवश्यकता नहीं है। आप अपने आप अपनी नाक रगड़िए, अपने आपको सही कीजिए। आप अपने आपको ठीक करना शुरू कीजिए, फिर देखिए आपको सिद्धि मिलती है या नहीं। आप अपने को बनाने का प्रयास नहीं करते हैं। आप तो देवता की हजामत बनाने के लिए उस्तरा, कैंची लिए फिरते हैं। इसे बंद कीजिए।

मित्रो! अगले दिनों अध्यात्म का नया स्वरूप सामने होगा। तब आपकी जो भी भावना अपने परिवार की बच्ची के प्रति है, वही भावना व व्यवहार समाज की बच्ची के साथ रखना होगा। पारिवारिकता में वे सारी चीजें शामिल हैं। नारी के प्रति अभी जो दृष्टिकोण आपका है, उसे बदलना होगा। बच्चियों के प्रति आपका दृष्टिकोण कैसा हो, माँ-बाप के प्रति तथा संसार में जो इस उम्र के हैं, उनके प्रति आपका दृष्टिकोण क्या हो? इसका सही रूप से मूल्यांकन करना होगा।

घर को तपोवन, परिवार को प्रयोगशाला बनाइए

अगर आपको अध्यात्म सीखना हो, तो जंगलों में तप करने, तपोवन बनाने मत जाइए। अपने घर को ही तपोवन बनाइए, उसे ठीक कीजिए। हमने ढेर सारी पुस्तकें इस संदर्भ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

में लिखी हैं। उन्हें पढ़िए एवं अपने घर को स्वर्ग बनाइए। परिवार एक प्रयोगशाला है। आप अपने माता-पिता के प्रति अहसान चुकाइए। आप तो केवल अपने बीबी-बच्चों का ही ख्याल रखते हैं। बुढ़िया को दमे की शिकायत है, उसका इलाज कराइए तथा एहसान चुकाइए और भी जिनका एहसान आपके ऊपर है, उसे चुकाइए। अगर आप अपने माता-पिता का एहसान नहीं चुकाएँगे, तो कल आपके बच्चे कैसे आपकी कदर करेंगे? मित्रो! इससे अच्छी प्रयोगशाला कहीं भी नहीं है। आपके अंदर जो श्रेष्ठ गुण हैं, उसे आप कहाँ से सीखेंगे और परखेंगे? कौन-सा योगाभ्यास करेंगे? परिवार जैसी लैबोरेटरी संसार में कहीं भी नहीं। क्या आप अपनी धर्म-पत्नी से नहीं सीखते हैं कि उसने कितना बड़ा आदर्श उपस्थित किया है, जो आप नहीं कर सकते हैं। उसके आत्मसमर्पण के सिद्धांत को आप स्वीकार नहीं करेंगे क्या? वह अपने माँ-बाप, भाई-बहन को छोड़कर आपके घर आई। उसने अपनी जवानी, अपनी सेहत, अपना पुरुषार्थ, जेवर, पैसा, सब कुछ आपको अर्पित कर दिया था। जब आपके ऊपर करज हो गया था, तो उसने अपना जेवर आपके हाथ में रख दिया था।

मित्रो! आपकी खुशहाली के लिए आपकी बीबी ने क्या-क्या नहीं किया? इसे आप समझते नहीं हैं। चौकीदार की तरह से, नौकरानी की तरह से काम किया। जब आपको बच्चों की आवश्यकता थी, तो उसने अपने रक्त-मांस में से काटकर बच्चे के रूप में आपके पास रखा। वह अठारह घंटे काम करती रहती है। उस गरीब के त्याग का मूल्यांकन आपने नहीं किया? वह केवल छह घंटे सोने के लिए समय देती है, शेष अठारह घंटे आपके लिए खपती रहती है। रूखी रोटी और फटे कपड़े के ऊपर वह नौकरानी की तरह से आपके कामों को करती रही। उसने कभी भी आपसे पेमेंट नहीं माँगा, कोई बोनस नहीं माँगा, ग्रैच्युटी नहीं माँगी। क्या आपने कभी उसका मूल्यांकन किया? मक्कारो आपने उस देवी का रूप नहीं देखा, फिर आप कैसा अध्यात्म चाहते हैं?

मित्रो! आपको सिखाने वाला एक मास्टर माँ के रूप में क्या नहीं मिला, जिसने अपने कलेजे का खून सफेद दूध में परिवर्तित करके पिलाया। स्वयं गीले में सोती रही और आपका इस प्रकार निर्माण कर दिया। अभी आपने अध्यात्म को समझा नहीं। आप गुफा में जाएँगे? भाड़ में जाएँगे। आश्रम में जाएँगे? हम कहते हैं कि इससे बड़ा आश्रम कहाँ है, जिसमें आपकी माँ रहती है, बाप रहता है, बीबी, बच्चे, भाई, बहन रहते हैं। मित्रो! हम संयम सिखाने आपको कहाँ ले जाएँगे। आप यह संयम अपनी बहन से, बेटी से सीखिए न। वे आपको सिखाती हैं कि आपकी आँखों में शैतानी नहीं आनी चाहिए। इसका व्यावहारिक शिक्षण—अध्यात्म देने के लिए आपकी बहन, बेटी एक उत्तम अध्यापिका हो सकती हैं। आपको संयम सिखाने के लिए इससे बड़ी अध्यापिका हम कहाँ से लाएँगे। आपने इस अध्यात्म को सीखने-समझने का कभी प्रयास नहीं किया, फिर कौन-सा महात्मा, संत, योगी लाऊँ आपके लिए। आपकी माता, बाप, पत्नी, बच्चे, बच्चियाँ, बहन, भाई अलग-अलग तरह की नसीहतें देते हैं, जो आपको व्यावहारिक अध्यात्म बतलाते हैं। इससे बड़ा प्रशिक्षण आपके पास हम कहाँ से लाएँ? आपके लिए यह लैबोरेटरी आपको अध्यात्म के पूरे-के-पूरे प्रशिक्षण देने में सक्षम है। आपको इसे समझना चाहिए।

गुरुजी! आप परिवार से अलग हो सकते हैं? बेटे! हम परिवार से कभी भी अलग नहीं हुए हैं। वह परिवार जिसे आप वंश कहते हैं, उससे हमारा उतना मतलब नहीं है, जितना कि यह 'गायत्री परिवार' 'प्रज्ञा परिवार' युग निर्माण परिवार, आपको हम परिवार बढ़ाने के लिए कहते हैं, वंश बढ़ाने के लिए नहीं कहते। आपको इसे ज्यादा नहीं बढ़ाना चाहिए। आपके छोटे भाई हैं न, भतीजे हैं न उनको योग्य बना दीजिए। यह क्यों नहीं करते हैं आप? आपकी संतान नहीं है तो क्या हुआ, भाई के तो हैं। उनका पालन आप क्यों नहीं करते हैं? आपका वंश डूबता है, तो डूब जाए, ऐसे वंश से क्या फायदा? ऐसा स्वार्थी आदमी जो अपनी बीबी के पेट से निकले बच्चे को ही अपना बच्चा समझता है तथा बाकी बच्चों को बकरी के बच्चे समझता है, उसे मैं बेहूदा, मक्कार, नालायक कहता हूँ।

आज जनसंख्या बढ़ती जा रही है। लोग मक्खी, मच्छरों, सुअरों की तरह का वंश बढ़ाते जा रहे हैं। उनके लिए रोटी, कपड़ा, मकान की समस्या बढ़ रही है। ऐसे लोगों को इस बात की भी जानकारी नहीं है कि बच्चे खेलेंगे कहाँ? आप तो केवल वंश के पीछे पड़ गए हैं। आप यह नहीं समझना चाहते कि आपके बच्चे ही केवल अपने बच्चे नहीं हैं, आपकी बहन के बच्चे, भाई के बच्चे भी आपके बच्चे हैं। उनका लालन-पालन करिए। आप अकेले तो रह नहीं सकते हैं। कहीं-न-कहीं तो रहेंगे ही, चाहे वह जेलखाना ही क्यों न हो, घर बसाकर रहेंगे। आपको यहाँ आना हो तो अपने उत्तरदायित्व को पूरा करके आएँ। हमारे पारिवारिकता के सिद्धांत अलग हैं। हम मिल-जुलकर रहते हैं, एक साथ रहते हैं, एक साथ खाना खाते हैं। यह है हमारा पारिवारिकता का सिद्धांत। यह पारिवारिकता ही हमारे परिवार की समस्या, कुटुंब की समस्या, समाज की समस्या और राष्ट्र की समस्या हल करती है।

सही अर्थों में कुटुंब

साथियो! आपका कुटुंब कहाँ है? कितना बड़ा है। गुरुजी! हमारा कुटुंब बहुत बड़ा है। हमारे परिवार में अनेक सदस्य हैं। बेटे! उसे घर नहीं, जेलखाना कहिए। उसे भेड़ों का बाड़ा कहिए। एक ही बिल में से कितने चूहे निकलते

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं? आपने भेड़ों का झुंड नहीं देखा, एक ही जगह से कितनी भेड़ें निकलती हैं। आपने जेलखाना नहीं देखा है? आपने भटियारों का सराय नहीं देखा है? आपने कुटुंब का मजा कभी नहीं चखा है? आपने तो भटियारों का मजा चखा है। उनके पास मुसाफिर आते हैं। उन्हें वे रोटी बनाकर खिला देते हैं। खाट बिछाकर सोने की व्यवस्था कर देते हैं। आपका कुटुंब भी इसी प्रकार का भटियारखाना है। आप सराय में रहते हैं, भटियारखाने में रहते हैं, जहाँ न त्याग है, न सेवा है, केवल एक ही चीज है जालसाजी। आज बीबी-मरद का, मरद बीबी का, भाई-भाई का नहीं है, केवल शतरंज की विशात बिछी हुई है सर्वत्र। कौन किसको मात देगा, कहा नहीं जा सकता कि ऊँट घोड़े को मात देगा या घोड़ा हाथी को मात देगा अथवा प्यादा बादशाह को मात देगा। सभी जगह शतरंज की चाल बिछी हुई है। क्या ऐसा ही कुटुंब होता है? ऐसे कुटुंब पर लानत है, जो किसी को देखना ही नहीं चाहता, जहाँ केवल अपना स्वार्थ ही सबको दिखाई देता है।

कुटुंब कैसे होते हैं? यही बताने के लिए हमने आपको बुलाया है। हम चाहते हैं कि सारा समाज ही अगर बने तो कुटुंब के आधार पर बने, पारिवारिकता के आधार पर बने। कोई भी कानून बने, नीति बने, मर्यादा बने, चाहे वह सामाजिक हो अथवा राजनीतिक, वह इसी आधार पर हो। अगर आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक कानून बने, तो वह भी इसी आधार पर बने। प्राचीनकाल में समाज इसी आधार पर बनाया जाता था। इसी आधार पर हमने यह पारिवारिक सत्र बुलाया है। यह हमें प्राणों से भी प्यारा है। आपको अपना व्यक्तिगत स्वार्थ प्यारा है न। चलिए आप इसी के द्वारा अपना शारीरिक स्वास्थ्य मजबूत बनाना चाहते हैं न? आप मन में शांति चाहते हैं न? आपके साथ जो रहते हैं, उनसे आत्मीयता, प्रेम चाहते हैं न? आप जो पैसा कमाते हैं, उसमें किफायत करके बचत करना चाहते हैं न? तो हम आपसे एक बात कहना चाहते हैं कि कुटुंब को नए सिरे से देखिए। उन पर नए सिरे से गौर करना, विचार करना शुरू कीजिए। उस पर ध्यान रखना शुरू कीजिए।

मित्रो! आपके ख्याल में कुटुंब का मतलब आपके खानदान वालों के साथ है। उन्हें ज्यादा-से-ज्यादा खुशहाल कैसे रख सकते हैं? चमकदार कैसे बना सकते हैं? अभी आप जब १२०० रुपये महीने पाते हैं, तो अपनी लड़की को खुशहाल बनाने के लिए ऐसे कपड़ा बनाना चाहते हैं, उसकी ऐसी कटिंग करना चाहते हैं कि जब वह स्कूल या कॉलेज जाए, तो वहाँ सारी-की-सारी लड़कियाँ उसे देखें तथा लड़के भी उसे देखें। लोग कहें कि बाबू जी की लड़की आई है। अभी आप तनिक-सी खुशहाली के लिए लड़के एवं लड़की को जो छूट दे रहे हैं, उसकी सजावट के लिए, प्रसन्नता के लिए जो आप कर रहे हैं, वह एक दिन आपके लिए मुसीबत लेकर आएगी, आप तबाह हो जाएँगे। ऐसी खुशहाली आपको कहीं का नहीं छोड़ेगी। आपकी लड़की मरेगी तथा उसे गुंडे तंग करेंगे। वह बार-बार जो शीशे में आँखें देखती है, काजल लगाती है, देख लेना जब वह ससुराल जाएगी तथा शादी होगी तो उसके ऊपर क्या आफत आएगी।

फैशनपरस्ती को बढ़ावा देकर आप लड़की को मार डालेंगे क्या? उसका ड्रेस बनाकर, फैशन बढ़ाकर क्या करेंगे? उसे हिप्पी बनाएँगे, सिनेमा की ऐक्ट्रेस बनाएँगे, क्या करेंगे उसका? बेदिमाग, बेहूदापन के आगे आप अपने कुटुंब को भाड़ में झोंक रहे हैं। आप कहते हैं कि समाज में मेरी लड़की मेरे लड़कों की इज्जत होती है। आप इस भटियारखाने को समाज कहते हैं। भेड़ों को आप समाज कहते हैं। आप समझते नहीं हैं कि आज का कुटुंब कितना नालायक हो गया है। जब तक आप कमाएँगे, व्यापार करेंगे, आपके कुटुंब के लोग आपकी बात को सहते रहेंगे, परंतु आप जैसे ही अवकाश प्राप्त करेंगे, रिटायर होंगे, आपकी घर में, कुटुंब में कोई इज्जत नहीं होगी। कोई आपको एक गिलास पानी देने वाला नहीं होगा, क्योंकि आपने उसे संस्कारवान् बनाया नहीं है। सादगी का जीवन जीना सिखाया नहीं है, प्रेम, त्याग बतलाया नहीं है। आपने मूक दर्शक बने रहकर अपना तथा परिवार का कचूमर निकाल दिया है।

मित्रो! ऐसी स्थिति में आप जब कमजोर हो जाएँगे, आप जब अवकाश प्राप्त कर लेंगे, तब आपकी दुकान भी नहीं है, क्योंकि वह तो बेटे की है। आपने उसे सौंप दिया है। तब आप देख लेना कि आपके कुसंस्कारी लड़के, बहू किस तरह आपके साथ व्यवहार करते हैं। उनकी दुर्भावना भरी आदतें, व्यवहार आपको शीघ्र ही मौत की नींद सुला देंगे। आपने तो उन्हें कुछ सिखाया ही नहीं, संस्कार देने से आप मुँह मोड़ते रहे। संस्कार के नाम पर आपने केवल अपने बच्चे, लड़की और पत्नी की बातें मानीं। उन पर दबाव डाला नहीं, त्याग सिखाया नहीं। अब क्यों रोते हैं? परेशान क्यों होते हैं? मित्रो! यही हालत आपकी होगी जब आप कमजोर हो जाएँगे, याद रखिए। आपने जिस कुटुंब के लिए ईमानदारी, बेईमानी करके उसे इतना बड़ा किया है, जिसके लिए आपने उचित तथा अनुचित ढंग से विकास करने का प्रयास किया है, देखना आपके कमजोर होने पर वे क्या करते हैं? आपने कल को देखा नहीं? आपने समय को देखा नहीं? केवल आप अपने बीबी, बच्चे को देखते रहे और उन्होंने अब क्या हाल कर दिया आपका? कुसंस्कारी जो बनाया है आपने उन्हें। देखना वे अपने आप दुःखी होंगे, आपको दुःखी करेंगे तथा अपने परिवार वालों को, बीबी-बच्चों को दुःखी करेंगे।

(उत्तरार्द्ध अगले अंक में)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

कैसे विकसित हो आदर्श परिवार

(उत्तरार्द्ध)

मित्रो ! संस्कारवान् परिवार ही आगे बढ़ते, प्रगति करते और खुशहाल रहते हैं। अत: आपको अपने बच्चों को संस्कारवान् बनाना चाहिए था, उन्हें स्नेह देना चाहिए था। आपने कुटुंब बनाया है, तो उसमें आपको संस्कार देना चाहिए था। आपको अपने कुटुंब में रंग-बिरंगे ठाठ-बाट नहीं बनाने चाहिए थे, वरन् उसे स्नेह देना चाहिए था। आपने भारी भूल की है, जिसके कारण आज परिवार टूटते चले जा रहे हैं। आपको यह समझना चाहिए कि परिवार की एक ही माँग है—मोहब्बत, स्नेह।

आत्मा को चाहिए स्नेह

मित्रो ! जब आपका पेट माँगता है कि हमें भूख लगी है, हमें रोटी मिलनी चाहिए, तो आप रोटी देते हैं। उसी प्रकार आपको अपने परिवार के लिए रोटी से ज्यादा मोहब्बत, प्यार देना चाहिए। शरीर का भीतरी हिस्सा अपने को चलाने के लिए रोटी माँगता है। बाहरी हिस्सा हमेशा ठंढक से, गरमी से बचाव चाहता है। उसके लिए कंबल तथा पंखा, कूलर की माँग करता है। उसकी आप पूर्ति करते हैं। परंतु साथियो ! एक और चीज है आपके भीतर उसका नाम है, 'आत्मा'। आत्मा-अंतरात्मा की एक ही कसक है और वह एक ही चीज माँगती है। वह क्या है ? वह है मोहब्बत, वह है स्नेह। आपकी बीबी क्या आपके घर में रोटी, कपड़ा के लिए आई है ? क्या उसके घर में इनकी कमी थी ? उसके घर में जब नौकरानी काम करती है, तो यहाँ किसलिए आई है ? कामवासना की पूर्ति के लिए ? नहीं, आपको नहीं मालूम, इसके लिए नहीं आई है। तो किसके लिए आई है ? उसका एक ही मकसद है और वह है प्यार।



साथियो ! इंसान के भीतर चाहे वह मरद हो या औरत, उसके अंदर एक ऐसी भूख है, जिसका नाम है प्यार। वह दोनों एक ऐसा साथी, सहयोगी तथा अभिन्न अंग तलाश करते हैं, जो आपस में प्यार दे सके तथा आपस में घुल-मिलकर रह सके। वह दु:ख-सुख में साथी हो सके। हर कमजोरी को दोनों मिल-जुलकर दूर करते हैं। आप तो केवल बीबी की बात करते हैं, पर हम तो बच्चों की भी बात करते हैं। बच्चों को माँ का प्यार-मोहब्बत तो थोड़ा मिलता भी है, परंतु बाप का प्यार-मोहब्बत कहाँ मिलती है।

मित्रो ! सभी के अंदर एक भूख होती है और वह है, प्यार-मोहब्बत की। उसके बिना इंसान की प्रगति नहीं हो सकती है। माँ का कर्त्तव्य तो पूरा हो जाता है। माँ ने उसके लिए खाना पका दिया, कपड़े साफ कर दिए, उसे स्नान करा दिया, परंतु बाप का क्या कोई कर्त्तव्य नहीं है ? उसे भी सोचना होगा। माँ ने शरीर का उद्देश्य पूरा कर दिया, लेकिन आपने उसे प्यार दिया ? नहीं साहब। हमने उसे नैनीताल में भर्ती करा दिया। उसके लिए ट्यूशन आने-जाने के लिए साइकिल आदि की व्यवस्था कर दी। गुरुजी ! आपका प्रवचन भी सुना दिया। अच्छा तो यह बता कि नैनीताल या देहरादून के स्कूल में बच्चे को माँ-बाप का प्यार मिलता है क्या ? नहीं साहब ! वहाँ तो नहीं मिलता है। तो उसका विकास कैसे होगा, कभी आपने सोचा है क्या ? हम तो ५०० रुपये महीना भेज देते हैं। हाँ, यह तो ठीक है कि उसने बच्चों ऐटीकेट सिखा दिया होगा, ''थैंक्यू वेरी मच'' सिखा दिया होगा, परंतु इससे क्या होता है ? इससे क्या वह संस्कारवान् बन जाएगा ? इससे क्या उसे प्यार-मोहब्बत मिल जाएगी ?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं साहब! यह तो हम नहीं कह सकते। मैं पूछता हूँ कि क्या वहाँ ऐसी कोई माँ है, जो उसे छाती से लगाकर प्यार दे सके? आपने देहरादून के विद्यालय में इन लावारिस बच्चों को, इन अनाथ बच्चों को क्यों भरती करा दिया? आपने उसे अनाथ बना दिया। नहीं साहब! हमने तो उसे मिलिट्री स्कूल में भरती करा दिया। हमारा बच्चा साहब बन जाएगा। हम यह नहीं जानते हैं कि आपका बच्चा साहब बनेगा या धूर्त? बनता है, तो बन जाए, लेकिन इतना अवश्य है कि वह इंसान नहीं बन सकता।

मित्रो! इंसान बनने के लिए, उसे संस्कारवान् बनाने के लिए प्यार-मोहब्बत की आवश्यकता है, जो इन पब्लिक स्कूलों में नहीं मिल सकता है। उसके लिए आपको बच्चों को प्यार-मोहब्बत देना चाहिए था, बच्चों को उसके लिए आपको समय देना चाहिए था, परंतु आपका सारा-का-सारा समय फिल्मों में, टी. वी. देखने, ताश-चौपड़ खेलने में, मटरगस्ती में एवं क्लबों में खत्म हो जाता है। फिर आप बच्चों को समय कब देंगे? इससे अच्छा है बच्चों को आप मार दीजिए। बच्चा कहता है कि हमें पापा का प्यार मिलना चाहिए और पापा है कि उधर से ही शराब की बोतलों से टन्न होकर आ जाता है और घर में आकर खुराफात करता है। उसके पास समय कहाँ है, जो अपने बच्चों को, बीबी को प्यार एवं मोहब्बत दे सके। आज इसी के कारण समाज एवं परिवार समाप्त हो रहा है। इसे आपको सँभालना है।

मित्रो! क्या आप बच्चों को छाती से लगाएँगे? उसे छोटी-छोटी कहानियों से प्रेरणा देंगे? गुरुजी! हमने तो बच्चों के लिए नौकर रख छोड़ा है। नौकर ही बच्चों को खिला देता है, स्नान करा देता है। अच्छा तो बेटे! खाने के लिए भी नौकर रख ले न। गुरुजी! पूजा करने के लिए भी हमने एक नौकर रखा है। मंदिर में नौकर से काम चलेगा क्या? आप समझते नहीं हैं। क्या ये बच्चे आपके नौकरों के या आया के पेट में से पैदा हुए हैं, जो आपके बच्चों को ये प्यार देंगे। आपको अपने परिवार के लिए ज्यादा समय, पैसा खरच करना चाहिए था। आप आठ घंटे नौकरी करते हैं या व्यापार करते हैं, यह मैं मानता हूँ, परंतु जो सोलह घंटे आपके पास बचते हैं, उतना समय आपको घर में, परिवार में रहना चाहिए। उसे हरा-भरा बनाना चाहिए, संस्कारवान् बनाना चाहिए।

समय परिवार को दीजिए

गुरुजी! उतने समय के लिए तो हम फिल्म देखने चले जाते हैं। क्या मिलता है इन फिल्मों से, क्लबों से आपको? इन फिल्मों या क्लबों में क्या रखा है? अरे तू अपने बीबी-बच्चों से बात करना शुरू कर, फिर देख कैसा रहेगा सिनेमा? इससे अच्छा गुड्डा क्या आपको सिनेमा में मिल सकता है। आप जब अपने बच्चे को एक चाभी वाला खिलौना लाकर देते हैं, तो खुशी के मारे उछलने लगता है और कहता है कि मेरे पापाजी मेरे लिए लाए हैं। आपके घर में जिंदा गुड़िया है, पर उससे बात करने का आपके पास समय नहीं है। उससे दो मीठी बातें करने की आपको फुर्सत नहीं है। आपको बच्चों को बिल्ली-बंदर की कहानी सुनाना नहीं आता? आपके बच्चे बिल्ली की कहानी, बंदर की कहानी सुनने में कितना आनंद अनुभव करते हैं, इसका पता आपको नहीं है। अरे आपने यह मोहब्बत देखी नहीं है और न इसे देने का आपका मन है। यह आपको पसंद नहीं है, तो फिर क्यों घर बसा लिया? आपने बच्चों को कसाईखाने में रख दिया है। आप कुटुंब बसाते हैं, तो उसे कसाईखाने में मत रखिए, उसे भूखा मत रखिए। आप उसकी आत्मा को मोहब्बत के बिना भूखा क्यों मारते हैं? क्या आप यह नौकरानी खरीद कर लाए हैं या कामवासना की मशीन खरीद कर लाए हैं? यह कौन है आपकी? आप इसे प्यार नहीं दे सकते? अरे इस प्रकार की मशीनें, विदेशों में रबर की औरतें मिलती हैं। आप उसी को खरीद लाइए। वह आप से कुछ नहीं माँगेगी। आपको खाना बनाने में कितना खरच होता है? वह तो सौ रुपये में हो जाता है। फिर आपने इसके लिए औरत को क्यों रखा है। आपने अर्थशास्त्र पढ़ा है। आपको जोड़, भाग, गुणा आता है। आप कागज निकालिए और हिसाब लगा लीजिए। इसकी अपेक्षा आप नौकर रख लेते तो आपको किफायती पड़ता।

मित्रो! आप खाना बनाने के लिए, कामवासना के लिए, घर की चौकीदारी के लिए घर बसाते हैं, तो आप गलती करते हैं। शादी-विवाह का यह मकसद नहीं है। इंसान के अंदर एक आत्मा है। उसके विकास के लिए मनुष्य कुटुंब बनाता है, घर बसाता है। आपने तो आत्मा को देखा भी नहीं, आत्मा का नाम सुना भी नहीं, आत्मा को आपने छुआ भी नहीं। आत्मा का आपने कभी संपर्क भी नहीं किया। एक पंडित जी आते हैं और कहते हैं कि आत्मा का साक्षात्कार करिए। आपको भ्रम-जंजाल में फँसाकर वे लूट लेते हैं।

साथियो! 'आत्मा' आदमी के भीतर एक सत्ता का नाम है, जो प्यार पीती है और प्यार पिलाती है। यह एक ही जगह पूरी हो सकती है, जिसका नाम कुटुंब है, जिसका

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नाम परिवार है। आज सारी-की-सारी चीजें भौतिक मिल रही हैं अर्थात् आर्टीफीशियल। इस प्रकार के युग में आत्मीयता-प्यार कहाँ मिलेगा ? यह सिर्फ एक ही फैक्ट्री, एक ही उद्यान में मिलती है और उसका नाम है, कुटुंब-परिवार। आपने जो भी कमाया, सब इसके लिए खरच किया। आपने तप किया, तो केवल इस परिवार के लिए। आपने संत की तरह से, महात्मा की तरह से, राजा कर्ण की तरह से इसके लिए त्याग किया, सहयोग किया। राजा कर्ण जो भी कमाता था, वह समाज के लिए, धर्म के लिए दान कर देता था। आप भी राजा कर्ण की तरह से हैं। आपने जो कुछ भी कमाया, जो कुछ भी पाया, उन्हीं के लिए खरच कर दिया। उन्हीं के लिए जिनका नाम कुटुंब है, परिवार है। हम कुटुंब से प्यार करते हैं, मोहब्बत करते हैं, इसलिए हमने यहाँ पर भी कुटुंब-परिवार बसा दिया है।

मित्रो! हमारी एक पुस्तक है, 'सुनसान के सहचर'। हमें हिमालय के जंगलों में, पहाड़ों में रहने का मौका मिला। वहाँ घास-पात के अलावा कुछ भी नहीं था। हमने सोचा कि इस एकांत में, सुनसान में हम कैसे रह सकते हैं। सुनसान में आदमी नहीं रह सकता है। हमने वहाँ भी अन्य प्राणियों का कुटुंब बना लिया। कुटुंब के बिना मनुष्य रह नहीं सकता ? आदमी अपने गुणों का विकास कुटुंब के बिना, परिवार के बिना कहाँ कर सकता है ? आदमी कहाँ सीख सकता है। धर्मपत्नी के प्यार का, एक आत्मा का दूसरे आत्मा के साथ समर्पण का, उसके प्यार का अनुभव आदमी परिवार के अतिरिक्त और कहाँ कर सकता है ? आप अपनी पत्नी के बिना यह सब कहाँ से लाएँगे ? कहाँ से पाएँगे ? कहाँ से सीखेंगे ? आप वेश्यालय जाकर वासना पूर्ति कर सकते हैं, लेकिन प्यार-मोहब्बत आप नहीं ला सकते हैं। आप माँ-बाप का प्यार कहाँ से लाएँगे ? कौन से बाजार से लाएँगे ?

माँ का स्नेह-वात्सल्य पीकर शिवाजी की आत्मा, लव-कुश की आत्मा न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गई। शकुंतला का प्यार पीकर भरत की आत्मा क्या से क्या हो गई ? आपने माँ का प्यार नहीं पिया क्या ? नहीं साहब! हमारी माँ नहीं है, परंतु एक आदमी कह रहा था कि आपकी माँ जिंदा है। मित्रो! वह आपकी माँ नहीं है, वह है आपके घर में रहने वाली एक बुढ़िया, जिसे आप फटकार भी लगाते रहते हैं। इधर से उधर भगाते भी रहते हैं। वह आपकी माँ नहीं हो सकती है। माँ का तो आपने दर्शन भी नहीं किया। आप तो संतोषी माता, शीतला माता को पूजते रहे, लानत है आपको। काश, अगर आप अपनी माँ को समझे होते, उसके प्यार का बदला चुकाया होता। उसके अनुदान का बदला चुकाया होता तो आप धन्य हो जाते। आप अभागे हैं, जो माता के नाम पर न जाने क्या-क्या करते रहे, संतोषी माता, मनसा देवी को पूजते रहे। इसी तरह के ख्वाबों में आप भटकते रहे। आप जाइए जहन्नुम में, जिसने अपनी माँ को समझा ही नहीं।

सच्ची मित्र आपकी अपनी पत्नी

मित्रो! आप आसमान पर चलना बंद कीजिए और जमीन पर चलना शुरू कीजिए। आपकी सच्ची मित्र अपनी पत्नी को आप संस्कारवान् बनाएँ। उसे ऊँचा उठाइए। राम-भरत की तरह रहिए। अपनी बीबी की मोहब्बत को देखिए। हमने बीबी में से धर्मपत्नी को पैदा किया। औरत कामिनी नहीं है, वह धर्मपत्नी है। हमारी धर्मपत्नी हमारी सहयोगी है, साथी है। हम लोग आपस में बातचीत कर सकते हैं। कामवासना पर लानत है। हम दोनों का समर्पण, प्यार अद्वितीय है। हम एक-दूसरे के लिए जीवन जीते हैं। एक-दूसरे को देखकर हमारे चेहरे प्रसन्न हो जाते हैं। औरत सब अच्छी होती हैं, आपने सभी की तरह से उसे भी समझा है। आपने उसे मोहब्बत दी होती, सहकार दिया होता तो वह आपकी सहयोगी होती। आप बनवास में भी होते तो भी सीता की तरह साथ होती। आप राजा नल की तरह से दमयंती को वन में अकेले छोड़ जाते तो भी वह आपकी धर्मपत्नी होती, परंतु आपने उसे धर्मपत्नी कब बनाया है ? धर्मपत्नी नहीं बनाया। आप अगर उसे धर्मपत्नी बनाने का प्रयास करते तो यह घर स्वर्ग बन जाता।

साथियो! हमने कुटुंब तथा परिवार के महत्त्व को बतलाने हेतु ही यह शिविर लगाया है। अगर यह सिद्धांत आप सीख लेते तो धन्य हो जाते। हमने सुना है कि वहाँ स्वर्ग होता है, जहाँ परियाँ होती हैं, लोग आनंद-विभोर जीवन जीते हैं, परंतु वह स्वर्ग तो हमने देखा नहीं। हम गए भी नहीं, अगर गए होते तो आपको बतला देते कि स्वर्ग ऐसा होता है। परंतु एक स्वर्ग हमने देखा है और वह है, गृहस्थ जीवन। यह जमीन का स्वर्ग है, जिसका नाम गृहस्थ है, अगर बनाने वाला हो तो ? परंतु अगर आपने औरत को बना दिया बाघिन तथा बच्चों को बना दिया डकैत, माँ को शाप देने वाली चुड़ैल तथा भाई को बना दिया एक-दूसरे को मार-काट करने वाले, तो लानत है आपके इस कुटुंब के ऊपर। अरे साहब हम तो कमाते हैं। लानत है आपकी कमाई पर। कमाई और खरच पर दुनिया नहीं टिकी हुई है। अगर जीवन में मोहब्बत तथा प्यार नहीं है तो कोई फायदा नहीं होगा परिवार बसाने से।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आप यहाँ से एक नई दृष्टि लेकर जाइए। कुटुंब को जंजाल मत कहना, वरन् बगीचा कहना। आप इसका उपभोग करने वाले नहीं हैं। यह बगीचा किसी और का है, आप माली की तरह रहना। यहाँ भगवान् ने आपका इम्तहान लेने, आपकी परीक्षा लेने के उद्देश्य से भेजा है कि आप इस बगीचे को प्यार-मोहब्बत दे सकते हैं या नहीं? आपकी बीबी नौवीं दरजा तक पढ़कर आई थी, आपने उसे आगे पढ़ाया या नहीं? केवल यह कह दिया कि हम तो गरम खाना खाएँगे, चाहे दिन के दो बजे हों या रात ही क्यों न हो, तुम्हें उसी समय बनाना पड़ेगा।

मित्रो! मैं यह पूछता हूँ कि जे. बी. मंघाराम आपको गरम खाना खिलाता है क्या? आप जो ये बिस्कुट खाते हैं वह छह महीने पुराना है, जिसे आप बड़े चाव से खा जाते हैं और बीबी को आप कहते हैं कि हम गरम खाना खाएँगे। आपको उसने इसीलिए खसम बनाया है क्या? दिनभर उसका खून पीते हैं। आप गरम खाना खाते हैं न, ऐसा कीजिए गरम लकड़ी मुँह में रख लीजिए और रोटी खाते जाइए। बीड़ी पीते जाइए और रोटी खाते जाइए। ये सब आपकी बुरी आदतें हैं, इन्हें छोड़िए! नहीं साहब हम तो गरम खाना खाएँगे। अरे थोड़ी देर पहले का बना खा लेने पर क्या आफत आ जाएगी? गरम खाने के पीछे उसकी शिक्षा, उसका सोना, उसका चिंतन करने का सारा-का-सारा समय बरबाद हो गया। सारा-का-सारा समय खाना पकाने में खरच हो गया। मैं यह पूछता हूँ कि क्या इसे दांपत्य जीवन कहते हैं? क्या इसे स्नेह कहते हैं? क्या इसे सहकारिता कहते हैं? अरे मक्कारो! यह तो मालिक तथा जानवरों का व्यवहार और मालिक तथा दासी का व्यवहार है। यह समानता का व्यवहार नहीं है।

आपने उसे पढ़ाया क्यों नहीं? आपके पास वह नौवीं दरजा पास करके आई थी, फिर उसको आगे क्यों नहीं पढ़ने दिया। अरे साहब! समय नहीं मिला। आपको उसकी नींद खराब करने के लिए चार घंटे का समय मिल गया, परंतु उसके विकास के लिए एक घंटे का भी समय नहीं मिला। यदि एक घंटा पढ़ा दिया होता तो वह अभी तक बी. ए. हो जाती। आपने उसे नौकरानी बनाकर रखा ताकि वह आपकी हुकूमत में रह सके। आपने उसके पंख मुर्गी के पंख की तरह से काट दिए। उसे कभी भी उड़ने नहीं दिया, ताकि वह आगे न बढ़ सके। आपने उसे कबूतर की तरह पाल रखा है और आप कबूतर की तरह से उसके पंख काटते रहते हैं, ताकि वह कभी भी स्वावलंबी न बन सके। उसे कभी नौकरी भी नहीं करने दी।

मित्रो! यह आपका अहंकार तथा अविश्वास है। क्या शिक्षा बुरी बात है? यदि है तो आप अपने बेटे को, बेटी को, भाई को क्यों पढ़ाते हैं? आपने बीबी को ही क्यों मना कर दिया? उसको क्यों नहीं आगे बढ़ाया? क्या यही दृष्टिकोण है, आपके दांपत्य जीवन का? क्या यही आपकी दृष्टि है कुटुंब के, परिवार के विकास के प्रति? आप उसे दबाकर केवल शरीर का, पसीने का, श्रम का फायदा उठा सकते हैं। बस यही है कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व आपका अपनी पत्नी के प्रति। इस तरह आप कभी भी उसके सहयोग-सम्मान, श्रद्धा का लाभ नहीं उठा सकते हैं, जो श्रम से लाखों गुना फायदेमंद हैं। क्या इस संबंध में आपने समझने का, ख्याल करने का कभी प्रयास नहीं किया है।

पैसे का नहीं, संस्कारों का संबंध हो

मित्रो! मैं आप सबसे घर-परिवार की बात कहता हूँ। आपसे यह कहता हूँ कि परिवार में जिनके साथ आपकी

दो पेड़ पास-पास उगे। एक सूख गया, तो मालिक ने उस ठूँठ को भी काट डाला। कटते हुए उसने पड़ोसी पेड़ से शिकायत की। जिन्हें मैं जीवनभर सुविधा पहुँचाता रहा, उन्हें मेरा अस्तित्व बना रहना भी सहन न हुआ। कितने स्वार्थी हैं, ये लोग।

हरे पेड़ ने समझाते हुए कहा, "दोस्त! चिंतन बदलो और इस तरह सोचो कि अस्तित्व मिटते-मिटते भी मैं लोगों को सूखी लकड़ी दे सकने का सौभाग्य अर्जित कर सका।"

डीलिंग है, संबंध हैं, उनके साथ आप शराफत का व्यवहार कीजिए। इसका एक मतलब यह है कि उनको आप शालीनता, सज्जनता सिखाएँ। उनको आप स्वावलंबी बनाएँ, उनको गुणवान बनाएँ। आपको इससे पुण्य मिलेगा। आप जब घर में प्रवेश करेंगे, तो आपको ऐसा मालूम पड़ेगा कि आप स्वर्ग में प्रवेश कर रहे हैं। इतना ही नहीं आप इस परिवार में, कुटुंब में शांति प्राप्त करेंगे। आप सफल गृहस्थ होंगे। आपको ऐसा लगेगा कि हम देवताओं की दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं। हम शांति के सागर में प्रवेश कर रहे हैं। पैसे की दुहाई मत दीजिए। नहीं तो आपको केन्या देश के मसाई की संज्ञा दे देंगे। केन्या वाले, नंगे रहने वाले जिनके पास घर भी नहीं है, परंतु वे काफी हिम्मती होते हैं। शेर को मारकर रख लेते हैं, फिर उसकी पूँछ को पकड़कर ले आते हैं, परंतु उनकी ताकत का क्या कहना? जहाँ कहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भी खेलकूद प्रतियोगिता होती वे वहाँ से छह-सात स्वर्ण-पदक तक जीतकर ले आते। ऐसी परिस्थिति में विश्व में कानून बनाना पड़ा कि तीन से ज्यादा स्वर्णपदक इन्हें नहीं दिए जा सकते। आप पैसों के पीछे पागल हैं। उससे ताकत बटोरना चाहते हैं। आप सोचते हैं कि हम बच्चे को काजू, पिस्ता खिलाएँगे तथा उसे ताकतवर बनाएँगे। लानत है ऐसे पैसों को। हम क्रीम लाएँगे तथा पाउडर लाएँगे। अरे हम पूछते हैं कि क्या इसके बिना सेहत सही नहीं होगी। इससे बच्चों में संस्कार नहीं लाए जा सकते हैं।

मित्रो! लवकुश जो महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रहते थे। कुशा एवं पत्तों का बना आश्रम था उनका। वहाँ न कोई मास्टर-अध्यापक था, न कोई उन्हें ट्यूशन पढ़ाने वाला था। न अच्छा भोजन था, न मोटरगाड़ी थी, परंतु जमीन पर सोने वाले बच्चे इतने महान् ताकत वाले, संस्कारवान् बन गए कि जब वे रामचंद्र जी के दरबार में गए तो उनके सद्गुणों के आगे सब लोग नतमस्तक हो गए। इतने समुन्नत बच्चे कैसे बन गए?

आज आप सोचते हैं कि पैसों से लड़कों को संस्कारवान् बना लेंगे। यह फिजूल की बातें मत कीजिए। पैसों से केवल आप घर की सजावट बढ़ा सकते हैं। आप बच्चों में प्राण-जीवट नहीं भर सकते हैं। उन्हें संस्कारवान् नहीं बना सकते हैं। अगर उनमें प्राण, संस्कार आप भर सकें तो ये काले बच्चे, चेचक के दाग वाले बच्चे चमत्कार कर देंगे, फिर आपका घर चाहे फूस, मिट्टी का बना हो, वहाँ स्वर्ग होगा। अगर बाजरा और नमक की रोटी भी होगी तो भी बच्चे स्वस्थ-सानंद होंगे। आपस में प्यार-मोहब्बत हो तो पैसे का अभाव विकास में बाधक नहीं होगा तथा घर में स्वर्ग का वातावरण होगा। आप संस्कार का मूल्य एवं महत्त्व समझें।

इस संदर्भ में हम आपकी अदालत में बिनोवा की माँ को पेश करते हैं। बिनोवा की माँ बहुत गरीब थीं। बहुत बार वह गेहूँ, ज्वार, बाजरा, चना पीसने को ले आती थीं। बिनोवा अपनी माँ की बगल में बैठे होते थे। अनाज पीसते समय कुछ दाने इधर-उधर जा पड़ते थे। बिनोवा उन्हें चुनकर खाते रहते थे। नाश्ते का कोई प्रबंध नहीं था। बिनोवा की तरह गरीब तथा अभावग्रस्त परिवार शायद ही कोई हो, परंतु उनकी माँ ने तीनों लड़कों को संत, महात्मा बना दिया। उनमें से एक का नाम बिनोवा, दूसरे का बाल्कोवा और तीसरे का शिबोवा था। तीनों देश के लिए समर्पित थे। मदालसा की बात तो पुरानी हो गई।

मित्रो! आप अपने बच्चे को संत, सुधारक नहीं बनाना चाहते हैं। आप तो उसे इन्कमटैक्स आफीसर, पुलिस का दरोगा बनाना चाहते हैं। वकील बनाना चाहते हैं जो सच्चे को फँसा दे तथा झूठे को जिता दे। यही चाहते हैं न आप? आप चाहते हैं कि आपका लड़का सिविल इंजीनियर हो जाए, ताकि बैगन के बैगन सीमेंट तथा लोहा खा जाए तथा एक वर्ष में ही मकान बना ले, बीबी के गहने बना ले तथा बहिन की शादी में चालीस हजार रुपए भी खरच कर दे। उसे मासिक पेमेंट तो ग्यारह सौ रुपये ही मिलते हैं, तो फिर इतना सारा पैसा वह कहाँ से लाएगा? इसके लिए क्या किया, उसको आपने देखा नहीं, उसने रेल की लाइनों को कमजोर कर दिया। देश को तबाह कर दिया आपके बेटे ने। यही चाहते थे न आप? मक्कार कहीं के, बेटे को गलत रास्ते पर चलने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। उसे सभ्य नागरिक तथा कर्त्तव्यनिष्ठ अध्यापक नहीं बनाएँगे?

एक बार फूलों से लदे गुलाब के पौधे को चिंतामग्न देख पास में उगे आम के झुंड ने इसका कारण पूछा। गुलाब ने कहा, ''आज तो मैं फूलों से लदा हूँ, पर वह पतझड़ दूर नहीं, जब मैं पत्तों सहित झड़ जाऊँगा और फिर मेरी कँटीली डालियों को कोई आँख उठाकर भी न देखेगा। क्या यह कम चिंता की बात है?''

आम ने कहा, ''मित्र! इस आज की सुषमा और अगले पतझड़ के बाद फिर आने वाली अपनी सुंदरता का विचार क्यों नहीं करते? मुझे देखो न, अभी फल-फूलों से लदने में कई वर्ष लगेंगे, पर उसकी आशा और कल्पना करने में निरंतर प्रमुदित बना रहता हूँ।''

दृष्टिकोण बदलें, तनावमुक्त हों

मित्रो! मैं आपसे फिर कहता हूँ कि आप आज से अपना दृष्टिकोण—महत्त्वाकाक्षाओं के बारे में, घर-परिवार, कुटुंब के बारे में, अध्यात्म के बारे में बदल दीजिए। आपकी उँगलियों की तरह ही आपका कुटुंब आप से जुड़ा हुआ है। आपकी उन्नति, प्रगति, समृद्धि, विकास सारा-का-सारा आपके कुटुंब के साथ जुड़ा है। अत: इस संदर्भ में आप अपना विचार बदल दें। अरे नहीं साहब! हमें टेंशन की शिकायत है। टेंशन किसे कहते हैं? जिसमें दिमाग में तनाव रहता है, नींद नहीं आती, गरमी रहती है। आपके घर में स्नेह-सहयोग का वातावरण नहीं है, इसी कारण यह परिस्थिति है। यूरोप की दुनिया में यह गलती

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सभी ने की है। इसी कारण वहाँ लोगों ने कुटुंब, परिवार संस्था को बरबाद करके रख दिया है। केवल मियाँ-बीबी का रिश्ता रह गया है। उसमें भी टिकाऊपन नहीं है। सिद्धांत के बिना क्या टिकाऊपन होता है ? उनके यहाँ छह महीने के बाद नई बीबी, नया पति होता रहता है। उन्होंने कुटुंब-परिवार का सर्वनाश कर दिया है। इसका एक ही कारण है कि उनके ऊपर एक भूत सवार हो गया है और उसका नाम है 'सेक्स'। खूबसूरती के लिए उन्होंने परिवार संस्था का सत्यानाश कर दिया। वहाँ भौंरे की तरह से औरतें तथा मरद घूमते रहते हैं तथा जहाँ भी खुशबू होती है वहीं हावी हो जाते हैं। वे अभागे, दुखी, हारे हुए दिखाई पड़ते हैं। आप हैं जो हमेशा 'फॉरेन' जाना चाहते हैं। क्या करेंगे वहाँ जाकर, बरबाद हो जाएँगे। वहाँ का पैसा देखा है आपने ? आप 'फॉरेनर' को ध्यान से देखना, वे बिलकुल खाली और खोखले हो गए हैं।

मित्रो ! इस दुनिया में सबसे ज्यादा सुंदर मोहब्बत-प्यार की दुनिया थी, परंतु अब आपने उसे चौपट कर दिया है तथा सब इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। आदमी आज अकेला इक्कड़ की तरह हो रहा है। वह भूत की तरह हो गया है। उसे अपनी बीबी से और बीबी को खसम से डर हो गया है। वे हमेशा चिंतित रहते हैं कि कहीं दोनों एक दूसरे पर हावी न हो जाएँ। इस प्रकार से उनकी नींद हराम हो जाती है। आप देखिए न, देश-विदेशों में कितनी ट्रैन्क्युलाइजर खपत होती है, मात्र नींद लाने के लिए। इनको दिनभर थकान रहती है। वे कॉफी, बियर, रम पीते रहते हैं तथा रात में सुरा-सुंदरी में डूबे रहते हैं। लड़के से जब पूछा जाता है कि तेरे पिताजी कौन हैं, तो वह कहता है कि नंबर ८, नंबर ९। पत्नी भी उसी क्रम में नंबर ५, नंबर ६ होती है। आज कैबरे डांस, क्लबों के अलावा लोगों में शांति नहीं है। आज यूरोप अमेरिका में परिवार, कुटुंब के नाम पर क्या रहता है ? सेक्स। सेक्स यानी भूत। आज लड़की की शादी में लोग 'कट' देखते हैं और कहते हैं कि शौक से शादी करेंगे। अगर यही पाश्चात्य बीमारी आपके घर में, पत्नी में आ गई तो आपका कचूमर निकल जाएगा। वह भी आपको जहर दे सकती है तथा आपका सर्वनाश कर सकती है। आप परिवार तथा कुटुंब का आधार सेक्स बनाना चाहते हैं। आप इस तरह की गृहस्थी बसाएँगे क्या ? इस तरह का कुटुंब बसाएँगे क्या ?

मित्रो ! आप इस तरह का परिवार-कुटुंब मत बसाइए। आप प्यार-मोहब्बत का परिवार, स्नेह, सहयोग का कुटुंब बसाइए तो आपके जीवन में सुख-शांति आएगी। आपकी आत्मोन्नति होगी, विकास होगा तथा इस धरती पर स्वर्ग का अवतरण होगा, आपका जीवन देवतुल्य होगा। इसी को बताने के लिए हमने आपको इस सत्र में बुलाया। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति ❖

एक विद्वान् और जिज्ञासु राजा की सभा में हर समय विद्वानों का जमघट लगा रहता।

एक रात राजा अपने शयन-कक्ष में लेटा था। ठीक सामने दीपक जल रहा था। सहसा राजा के मन में एक प्रश्न उठा, दीपक का प्रकाश कितना उजला है। न तेल काला है और न बाती काली है। फिर भी यह काजल उगल रहा है, ऐसा क्यों होता है ?

प्रातः होते ही उसने यह समस्या विद्वानों के समक्ष रखी। विद्वानों ने अपने-अपने विचार रखे, पर राजा संतुष्ट न हुआ। अंत में राजा ने राजसभा में बैठे एक वृद्ध महात्मा से पूछा, "गुरुवर, जग को प्रकाश देने वाले दीपक के पास सिर्फ कालिमा ही क्यों रह जाती है ?"

वृद्ध महात्मा बोले, "राजन् पहले मेरे इस प्रश्न का उत्तर दें, दीपक क्यों जलाया जाता है ?"

"प्रकाश के लिए।" राजा ने कहा।

"अर्थात् अंधकार को नष्ट करने के लिए, इसका अर्थ यह भी हुआ कि दीपक अंधकार खाता है। राजन् जो जैसा खाएगा, वह वैसा ही उगलेगा। तभी तो राजन् यह कहा जाता है, जो जैसा करता है, वैसा ही बदले में पाता है। जो देना बंद कर देता है, वह अंततः नाश को प्राप्त होता है।"

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

भगवान् के अनुदान किन शर्तों पर मिलते हैं

(१३-४-७९ को दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्!

देवियो, भाइयो! अनुग्रह और मनुहार, इन दोनों का आपस में संबंध तो है और ये क्रम चलता भी है। इसको हम शाश्वत सिद्धांत महसूस कर सकते हैं। मनुहार, खुशामदें, मिन्नतें, प्रार्थनाएँ, आप इन्हें कीजिए, इनकी भी आवश्यकता है। यह क्रम भी इस दुनिया में चलता तो है। मैं यह तो नहीं कहता कि यह क्रम चलता नहीं है, पर क्या अनुग्रह मिलते भी हैं? हाँ, अनुग्रह भी मिलते रहते हैं। अनेक आदमी जीवित हैं, अपंग भी इसी पर जीवित हैं, अंधे भी इसी पर जीवित हैं, दुर्बल भी इसी पर जीवित हैं और सिद्धांत भी अनुग्रह के ऊपर जिंदा है। अनुग्रह दुनिया में से खत्म हो चला? नहीं बेटे! खत्म होने की बात नहीं कहता, पर मैं यह कहता हूँ कि सिद्धांत और इसके आधार पर कोई बड़ी लंबी योजना नहीं बन सकती और कोई महत्त्वपूर्ण कार्य इसके आधार पर सिद्ध नहीं हो सकता।



मित्रो! अगर आप कहें कि अनुग्रह के आधार पर कृपा कीजिए, हमारी सहायता कीजिए, हमको ये दीजिए। लेकिन क्या ये चलेगा? चल तो सकता है, पर वहाँ तक शोभा नहीं देता, जहाँ तक आदमी स्वयं में समर्थ हो। जैसे बच्चा, बच्चा क्या करता है? बच्चा स्वयं में असमर्थ होता है, कुछ कमा नहीं सकता। इसलिए कुछ कमा सकने की स्थिति में न होने की वजह से, असमर्थ होने की वज़ह से माँ-बाप उसकी सहायता करते हैं। बच्चे को रोटी देनी चाहिए, कपड़े देने चाहिए, सहायता देनी चाहिए। बच्चे की मनःस्थिति माँगने की होती है, क्योंकि वह विकसित नहीं है।

बालक जैसी मनःस्थिति

अविकसित जितने भी प्राणी हैं, खासतौर से मनुष्य, उनकी पहचान एक है। क्या पहचान है? ये पहचान है कि वे माँगते रहते हैं। माँगता हो तो आप क्या कहेंगे उसको? चाहे बड़ी उम्र का भी हो जाए तो भी क्या कहेंगे? तो मैं उसको बच्चा कहूँगा। बच्चा बड़ी उम्र का? हाँ बड़ी उम्र के भी बच्चे होते हैं। मनःस्थिति की दृष्टि से वे सब आदमी बच्चे हैं जो अपने पुरुषार्थ के ऊपर निर्भर नहीं हैं, दूसरों से माँगकर अपना काम चलाने के इच्छुक हैं। इसी से वे अपना गुजारा करते हैं। ये भौतिक दृष्टि से, भावनात्मक दृष्टि से बालक हैं। बालकों को मिलता है? हाँ बालकों को भी मिलता है। बालकों को क्या-क्या मिलता है बताइए जरा? बालकों को रबड़ की गुड़िया मिलती है और क्या मिलता है? गुब्बारा मिलता है और क्या मिलता है? लेमनचूस मिलता है और क्या मिलता है? टॉफी मिलती है और क्या मिलता है, झुनझुना मिलता है। नहीं साहब! बड़ी चीज बताइए। बेटे! बड़ी चीजें नहीं मिलतीं। माँ-बाप बच्चों को प्यार करते हैं? बहुत प्यार करते हैं, लेकिन कीमती चीजें? कीमती चीजें आपको नहीं मिल सकतीं, क्योंकि आप बच्चे हैं।

मित्रो! बच्चों को कभी कीमती चीजें नहीं मिलती हैं। उनका मनोविनोद करने के लिए खेल-खिलौने, उनका मन रखने के लिए, तबियत बहलाने के लिए उनको जो कुछ चीजें दी जा सकती हैं, वे टिकाऊ नहीं होतीं। तो क्या बड़ों को भी मिलती हैं? हाँ बड़ों को भी मिलती है। बड़ों

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को कब मिलती हैं ? बड़ों को तब मिलती हैं जब वे मुसीबत में फँसे हुए होते हैं। जैसे मान लीजिए कि वे दुर्घटनाग्रस्त हो गये हों, अकाल से पीड़ित हो गए हों, कोई दूसरी मुसीबतें आ गई हों, रेलवे में एक्सीडेंट हो गया हो। साहब! मुसीबत में हमारी सहायता कीजिए। हम जरूर सहायता करेंगे आपकी, लेकिन कब तक ? सवाल यह है कि कब तक सहायता करेंगे, हमेशा, जिंदगी भर ? नहीं बेटे, जिंदगी भर नहीं कर सकते।

अच्छा तो कब तक करेंगे ? सिर्फ उस समय तक करेंगे, जब तक अपने पैरों पर आप खड़े नहीं हो जाते, बस। बाद में ? बाद में नहीं करेंगे। अगर आप कहेंगे कि हम मुसीबत में फँसे हुए हैं और सारी जिंदगी भर के लिए आप हमारा ठेका ले लीजिए, तो ये मुश्किल है। साहब! हम पाकिस्तान से आए हैं, तो आप हमारा गुजारा कीजिए ? हम तो शरणार्थी हैं। ठीक है आप शरणार्थी हैं, तो हम थोड़े दिन आपकी सहायता करेंगे। इंसान को इंसान की सहायता करनी चाहिए, पर आप इसे सिद्धांत बनाकर नहीं चल सकते। सिद्धांत मत बनाइए। सिद्धांत बना देंगे तो मुश्किल हो जाएगा।

मित्रो! बच्चा जब बड़ा हो जाता है तब माँ-बाप की त्योरियाँ बदलती देखी हैं कि नहीं आपने ? वे कहते हैं कि तुझे शरम नहीं आती है, पच्चीस साल का हो गया है, मूँछें निकल आई हैं, कमाई के लायक हो गया है। पच्चीस साल में बी.ए. पास करा दिया है, एम.ए. पास करा दिया। अब कमा कर ला। नहीं पिताजी पैंट बनवा दीजिए, नहीं पिताजी सिनेमा देखने के लिए पैसे दे दीजिए, नहीं पिताजी ये दे दीजिए। सबके माता-पिता दे भी देते हैं, पर आपने देखा नहीं! देते समय उनका चेहरा कैसे बदल जाता है, तेवर कैसे बदल जाते हैं। क्यों बदल जाते हैं ? इसलिए कि ये अपने आप में कमाने लायक हो गया है। इसको अब हमारी मदद करनी चाहिए थी, जबकि ये उलटा हम से ही माँगता है। ये स्थिति किसकी कह रहा हूँ मैं ? बच्चों की कह रहा हूँ। उन व्यक्तियों की कह रहा हूँ जो अनुग्रह के ऊपर और मनुहार के ऊपर जिंदा रहना चाहते हैं।

मनुहार पर नहीं पात्रता के विकास पर टिकें

मित्रो! मनुहार किसे कहते हैं ? खुशामद को कहते हैं। खुशामद भी एक सिद्धांत है। बिना माँगे किसी को क्या पता चलेगा कि आपको क्या जरूरत है ? क्या आप जरूरत की बात नहीं कहेंगे ? आप जरूरत की बात कहिए। जरूरत की बात कहेंगे तो चीजें मिल जाएँगी ? हाँ चीजें तो मिल जाएँगी, लेकिन नुकसान हो जाएगा। क्या नुकसान हो जाएगा ? जैसे ही चीज मिलेगी उससे ज्यादा कीमती चीज हाथ से चली जाएगी। क्या चला जाएगा ? आपका स्वाभिमान चला जाएगा। आप किसी से बिना कीमत चुकाए, अहसान में कोई चीज ले लेते हैं, तो आपका सिर नीचे झुक जाएगा। आप नीचे हो जाएँगे और आप दूसरे दरजे के व्यक्ति हो जाएँगे और आपको दूसरे के आगे आँखें नीची करनी पड़ेंगी। अगर आप कृतज्ञ हैं तो तुरंत अपनी कृतज्ञता का इजहार कीजिए। "थैंक्यू वैरी मच" कहिए। आपने हमको पानी पिला दिया, आपने हमको चाय पिला दिया, अहसान है।

आदमी दूसरों की सहायता पाकर के लाभ तो उठा सकता है, लेकिन दबता है। दबना ? हाँ दबना। जहाँ तक मनुष्य के आध्यात्मिक स्तर का सवाल है, दबना आदमी के लिए खराब है। आदमी को दूसरों के अहसान से नहीं दबना चाहिए। दूसरों की दूसरी चीजों से दबना चाहिए जैसे प्यार से दब सकते हैं तो दबिए आप। दूसरों से प्यार करते हैं। माँ का आपसे प्यार है। माँ हम आपके बहुत

बुद्धिवाद कितना ही उपयोगी क्यों न हो उसकी गरिमा हृदयवाद से ऊँची नहीं हो सकती। जहाँ विशुद्ध जड़ प्रयोजनों की बात है, वहाँ एकाकी बुद्धि को भी मान्यता दी जा सकती है, पर जब प्रश्न जीवित चेतना मनुष्य की समस्या पर विचार करना हो तब हृदयवाद को मान्यता देने से काम चलेगा!

अहसानमंद हैं। लेकिन आप पैसे के संबंध में और रोटी के के संबंध में मत दबिए। रोटी भगवान् ने आपको नहीं दी है ? आप इज्जत वाले हैं, स्वाभिमानी हैं। आपसे कोई कहे खाना खा लें, हाँ साहब खाना खाकर आ रहे हैं। नहीं साहब रोटी खा लीजिए। नहीं खाई हो, शायद आपके घर में आजकल रोटी की तंगी हो, तो भी आपको कहना चाहिए कि नहीं साहब! कोई दिक्कत की बात नहीं है। भगवान् की कृपा है। रोटी तो देर-सबेर मिल ही जाती है, फिर आपके यहाँ क्यों खाएँगे ? अच्छा जब न हो तो आप हमारे यहाँ खाइए। आपकी बड़ी कृपा है, आपने पूछ लिया यही क्या कम है। आप खा लीजिए। आपको रोटी नहीं खानी चाहिए। ठीक है कोई आपका ऐसा निजी दोस्त है, जिगरी दोस्त है, जो आपके यहाँ खा जाता है और आप उसके यहाँ खा लेते हैं। उसकी बात नहीं कहता हूँ मैं, पर ऐसे सामान्य नियम की बात कहता हूँ कि आपको दूसरों की सहायता पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किसकी बात कह रहे हैं ? लौकिक जीवन की। बेटे, सिद्धांत तो वही है। आज आप लौकिक जीवन में इसे व्यवस्थित कर लीजिए अथवा पारलौकिक जीवन में व्यवस्थित कर लीजिए। नहीं साहब ! आध्यात्मिकता में तो माँगना-ही-माँगना है। बेटे, माँगना नहीं है आध्यात्मिकता में, किसने कहा था आपसे ? नहीं साहब, अध्यात्म में सारी प्रार्थना-ही-प्रार्थना भरी है। प्रार्थना का मतलब यह नहीं है, जो आपने समझा है कि आप माँगेंगे और मिलेगा। "माँगेंगे और मिलेगा" का सिद्धांत, ये शायद आध्यात्मिकता की व्याख्या करने में बहुत गलती हो गई। यही कारण है कि आदमी आज स्वाभिमानी और स्वावलंबी कम होते जा रहे हैं। आध्यात्मिकता ने कितना फायदा किया है वर्तमान में, यह मैं नहीं जानता, पर रूहानी दृष्टि से आज की आध्यात्मिकता ने आदमी का नुकसान किया है। क्या नुकसान किया है ? आदमी को परावलंबी बना दिया है। परावलंबन माने दूसरों की तरफ मुँह ताकने वाला, दूसरों से अपेक्षाएँ करने वाला, दूसरों से आशाएँ रखने वाला। किसके लिए ? अपनी जिंदगी की नाव ढोने के लिए। इससे आपको दूसरों के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है। इससे आपको क्या मिल गया ? क्या मिला मैं नहीं जानता, लेकिन सबसे कीमती चीज जो आपकी 'शर्म' थी वह आपने गँवा दी।

इस संबंध में मुझे एक घटना याद आ गई। क्या घटना याद आ गई ? एक बार संत इमरसन के पास एक आदमी आया। वह हट्टा-कट्टा था, जवान था। माँगने लगा, तो उनसे कुछ कहते तो नहीं बना, पर उन्होंने क्या किया कि एक कपड़ा उठाकर अपना मुँह ढक लिया। दूसरों ने कहा साहब आपको देना है तो दे दीजिए, नहीं देना तो इसे मना कर दीजिए। कपड़े से मुँह ढक लिया, ये क्या करते हैं आप ? उन्होंने कहा, "मुझे देने में ऐतराज नहीं है, पर इस आदमी को देखने का मेरा मन नहीं। क्यों ? क्योंकि इस आदमी ने इंसान की इज्जत को गँवा दिया। हट्टा-कट्टा होते हुए भी, जवान आदमी होते हुए भी, अपने हाथ-पैर से, अपने पुरुषार्थ से अपना गुजारा करने में समर्थ होते हुए भी यह यहाँ हाथ पसारने आया है। इंसानियत को कलंकित कर दिया इसने। इसीलिए मुँह ढक लिया मैंने।"

मित्रो ! न जाने किसलिए, न जाने क्यों, न जाने कैसे हो गया कि आध्यात्मिकता का स्वरूप आज ऐसा बना दिया गया कि इनसे माँगना चाहिए। किससे माँगना चाहिए ? देवता से माँगना चाहिए। देवता को तो देना चाहिए। "दानात् वा सा देवता।" देवताओं को सहायता करनी चाहिए। नहीं साहब, देवता से तो माँगना चाहिए। अच्छा बेटे और किससे माँगना चाहिए ? संत पुरुषों से माँगना चाहिए, दिव्य पुरुषों से माँगना चाहिए, अमुक से माँगना चाहिए। नहीं बेटे ! संत पुरुषों की सेवा करनी चाहिए, सिद्ध पुरुषों की सहायता करनी चाहिए। आपको मालूम है कि मंदिर में जाने का एक नियम है। मंदिर में आप जाएँ, तो फल-फूल लेकर के जाएँ। नहीं गुरुजी ! हम तो ऐसे ही दर्शन करेंगे। नहीं बेटे ! ऐसे दर्शन नहीं करना, देवता नाराज हो जाएँगे। यह प्राचीनकाल की परंपरा है, आज की तो मैं नहीं कह सकता। कहीं भी आप किसी देवमंदिर में जाएँ तो पत्र-पुष्प लेकर जाना, फल लेकर के जाना, कुछ-न-कुछ लेकर के जाना और चढ़ाना, तब नमस्कार करना। इसका क्या मतलब है ? इसका मतलब है कि आप कुछ देकर के आइए। आप लेकर के आएँगे ? लेकर नहीं बेटे, देकर के आना। यह परंपरा आध्यात्मिकता की परंपरा है।

हमें देना आना चाहिए

जिस देवपरिवार में हम शामिल होते हैं, उस देव-परिवार में शामिल होने का मतलब है कि हमारे भीतर देवत्व का विकास होना चाहिए। देवत्व का विकास किस तरीके से होता है ? देवत्व का विकास इस मायने में होता है कि आदमी दिल से उदार हो जाता है। उदार होकर आदमी यह सीखता है कि हमको देना आना चाहिए। किसको देना चाहिए ? सबको देना चाहिए, अपने शरीर को देना चाहिए ताकि यह धन्य हो जाए और अपने दिमाग को देना चाहिए ताकि यह शांत हो जाए। हमारा मस्तिष्क बहुत अशांत रहता है, बहुत परेशान रहता है। दिमाग को कुछ ऐसी चीज देनी चाहिए, जिससे यह शांत रह सके, खुश रह सके। और क्या करना चाहिए ? आपको अपने शरीर को देना चाहिए। शरीर को क्या देना चाहिए ? शरीर बेचारा मुसीबत में फँसा हुआ है, रोज-रोज बीमार पड़ जाता है, रोज-रोज कमजोर हो जाता है, इसे कुछ देना चाहिए। इस शरीर के आप देवता हैं न ? हाँ, देवता हैं तो आप दीजिए कुछ इसको। नहीं साहब, हम क्या कर सकते हैं ? आप सब कुछ कर सकते हैं। आप मुसीबत में फँसी हुई अपनी देह को निश्चित रूप से बीमारियों से छुट्टी दिला सकते हैं। निजात दिला सकते हैं।

जिसका अपनापन जितना संकुचित है, वह आत्मिक दृष्टि से उतना ही छोटा है।

—परमपूज्य गुरुदेव

बीमारियों से आप कैसे सहायता कर सकते हैं ? चंदगीराम पहलवान को टी.बी. की शिकायत थी। बाईस

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

साल की उम्र में उनको टी.बी. इस कदर हो गई थी कि फेफड़े में से खून आने लगा था और मरने के दिन नजदीक थे। किसी ने उनको यह सलाह दी कि हकीमों का इलाज कराने के साथ आप अपना इलाज स्वयं करिए। पहला इलाज क्या है ? अपनी जीभ के ऊपर और अपनी इंद्रियों के ऊपर, आदतों के ऊपर कंट्रोल कीजिए। उन्होंने अपनी आदतों पर कंट्रोल करना शुरू कर दिया। वर्जिश की और बीमारी से छुटकारा पा लिया।

साथियो! जीभ जो आसमान से पाताल तक जाती है और आपकी पिटाई कराती है। आपकी पिटाई किसने कराई है बताना जरा ? आपकी पिटाई जीभ ने कराई है। यह तो उलटा-सीधा कहकर लपालप मुँह में घुस जाती है और जूते आपके सिर पर पड़ते हैं। जहाँ जाते हैं वहीं जूते पड़ जाते हैं। किस-किस के पड़े ? आपकी बीबी के पड़े, बीबी के पड़े ? बीबी ने जूते-चप्पल तो नहीं मारे, पर आपके साथ ऐसा व्यवहार किया जो जूते से भी ज्यादा था। जीभ पर काबू नहीं है आपका। अल्लम-गल्लम बकते रहते हैं। मोहब्बत करना आता नहीं, शऊर है नहीं, तमीज है नहीं कि इंसान के साथ किन शब्दों में बात करें। इंसान की इज्जत की रखवाली करने के बाद में आदमी से सहानुभूति किस आधार पर माँगनी चाहिए, आपको मालूम ही नहीं है। हावी होते जाते हैं। जूते पड़ेंगे आपके, अभी और पड़ेंगे।

मित्रो! जीभ ने क्या कर दिया ? जीभ ने आपकी सेहत खराब कर दी। सेहत को खराब करने की जिम्मेदारी एक आदमी की है। जिसने आपकी अच्छी-खासी तंदुरुस्ती को तबाह कर डाला है। ये कौन है ? इसका नाम है जीभ। हकीम लुकमान सही कहते थे कि आदमी अपने मरने के लिए और दफन होने के लिए जो कब्र खोदता है, वह अपनी जीभ की नोक से खोदता है। यह सच है ? हाँ यह बिल्कुल सच है कि आदमी अपनी जीभ की नोंक से अपनी कब्र खोदता है। आपने जो खाया है, जरा उसकी लिस्ट लाइए। क्या खाया है ? आपने जहर खाया है और वो चीज खाई हैं, जो आपको नहीं खानी चाहिए थीं। आपने जिस तरीके से खाई हैं, उस तरीके से नहीं खानी चाहिए थीं। आपने चीजों को नहीं खाया है, वरन् चीजों ने आपको खा लिया। अब आप क्या शिकायत करते हैं ? आपने बदतमीजी से और बेहूदगी से चीजों को खाया है। अब बेहूदे तरीके से खाने की वजह से ये बेहूदी चीजें आपका सफाया करती हैं। यह कौन करती है ? जीभ करती है।

मित्रो! अब आप क्या कर सकते हैं ? आप सेहत की एक तरीके से सहायता कर सकते हैं। देवपरिवार में आकर, आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने के बाद में आपके लिए हम एक नीति तय कर देंगे। किसके लिए ? जो भी हमारे नजदीक हैं उसके लिए। किस को देंगे ? आप शरीर को दीजिए। आपका नजदीक घर, आपका सेवक, आपका स्वामिभक्त कुत्ता है— आपका शरीर, जो चौबीस घंटे आपके साथ रहता है। आपको उस पर दया नहीं आती, आपको करुणा नहीं आती। आप इसको दे सकते हैं। अगर दे सके तो चंदगीराम पहलवान की तरह से आप टी.बी. की बीमारी तक से निजात पा सकते हैं। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आप सेहत पा सकते हैं, बशर्ते आप पहले जीभ पर काबू पाइए, जीभ पर अंकुश रखिए, डंडे लगाइए ऐसी जीभ पर जिसने आपको खा लिया। अगर आप जीभ पर काबू पा सकते हैं और इंद्रियों पर काबू पा सकते हैं तो चंदगीराम पहलवान के तरीके से आप अपनी सेहत फिर पा सकते हैं। निश्चित रूप से ? हाँ निश्चित रूप से।

सेहत देवता व हकीम नहीं दे सकते

मित्रो! सेहत कौन दे सकता है, देवता ? देवता नहीं दे सकता। हकीम जी ? हकीम जी भी नहीं दे सकते। क्यों साहब! हकीम जी के पास तो बहुत अच्छी-अच्छी दवाएँ हैं। बेटा बेकार की दवाएँ हैं। एक दिन हकीम जी से पूछा था कि क्यों साहब! आपके पास तो बहुत सारी दवाएँ हैं। क्या-क्या दवाएँ बेचते हैं ? हम तो टॉनिक बेचते हैं। अहहा और क्या बेचते हैं ? सब बीमारी की दवा बेचते हैं। अच्छा तो आप अपने खानदान वालों को खिलाकर दिखाइए। बीबी को क्या तकलीफ हो रही है ? बीबी की साँस चल रही है। क्यों साहब! इनको आपने पहलवानी की दवा नहीं दी। पहलवानी की दवा क्या होती है ? पहलवानी की प्रोटीनॉल, प्रोटिनेक्स, हॉरलिक्स और विटामिन बी कांपलेक्स, विटामिन बी-१२ आदि पच्चीसों दवाइयाँ हैं। इनको खाकर पहलवान हो जाएँगे। आपने इन बच्चों को नहीं खिलाया ? अरे साहब सबको खिलाते हैं, किंतु हम जानते हैं कि ये बिल्कुल बेकार की चीजें हैं।

आप तो कह रहे थे कि इसमें इतनी ताकत है, इसमें इतनी प्रोटीन है, इसमें इतने विटामिन हैं। इसमें इतनी अधिक चीजें हैं, तो फिर आप बच्चों को क्यों नहीं खिला देते ?

जो परमार्थ में लीन है, तन-मन धन से परोपकार एवं परहित में निरत है, वही सज्जन है, वही सत्पुरुष है और वही धनवान है।

—परमपूज्य गुरुदेव

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आप तो गरीब हैं न ही ? गरीब तो नहीं हैं गुरुजी। इसमें कुछ तो है ही। ये तो प्रोटीन युक्त प्रोटीन्यूल है। दूध में मिलाकर खाते हैं और प्रोटीन मिल जाता है। ये भुना हुआ सोयाबीन का आटा है। विटामिन बी कांपलेक्स क्या है ? यह कुछ भी नहीं है, गेहूँ का छिलका है। छिलकों को पानी में भिगोकर जो मसाला निकल जाता है, उसी को बना लेते हैं। गेहूँ का छिलका जो गायों को फेंक देते हैं, भैंस को डाल देते हैं ? हाँ साहब वही छिलका है। तो क्या ये सब फ्राड है ? किनका फ्राड है ? दवाफरोशों का फ्राड है, जो लोगों को सब्जबाग दिखा करके ये चीजें बेचते रहते हैं और कहते हैं हम आपकी सेहत अच्छी कर देंगे, आपको तंदुरुस्त बना देंगे। अगर तंदुरुस्त बना देते तो एक भी हकीम की घरवाली कमजोर न पाई जाती।

अच्छा, हकीम जी, आप अपनी बीबी को पेश करिए हमारे सामने। अच्छा तो यही हैं आपकी धर्मपत्नी। इनकी सेहत अच्छी होती, पर इनकी तो मिट्टी पलीद हो रही है। दवाई भी खिलाते हैं। क्या दवाई खिलाएँगे, ये तो बहकाने की दवाई हैं ? हाँ बेटा ! ठीक है आपका कहना। दवा वाले अपना गुजारा कर रहे हैं, कैमिस्ट अपना गुजारा कर रहे हैं, कंपाउंडर अपना गुजारा कर रहे हैं। लेकिन अच्छी सेहत पानी है तो कौन दे सकता है ? आप दे सकते हैं, आपके अलावा और कोई नहीं दे सकता। आपके अलावा कोई मरीज नहीं है और न आपके अलावा दुनिया के परदे पर आपके लिए कोई हकीम है। दूसरों के लिए तो हो भी सकते हैं, पर आपके लिए आप ही हकीम हैं। कैसे हो सकते हैं ? अगर आप ये निश्चय कर लें कि हमको इस शरीर को देना है। क्या देना है ? इस शरीर को ख्याति देनी है, यश देना है, अजर-अमर बनाना है। लोगों की निगाहों में इज्जतदार बनाना है, जिससे कि आपकी फोटो देखकर लोग आँखें नीची कर लिया करें। यह सब आप दे सकते हैं। कब ? अगर आप देने की आदत सीख लें तब।

मित्रो ! अगर आप देने की आदत सीख लें तब ? तब आप अपने दिमाग को ऐसी चीजें दे सकते हैं कि आपका दिमाग कहे कि हमको लंबी जिंदगी जीने का मौका इन्होंने दिया। किसको ? दिमाग को। दिमाग क्या है ? दिमाग बेटे वो है जो हमारी भीतरी और बाहरी जिंदगी के ऊपर पूरी तरह से कंट्रोल करता है। दिमाग को आपने गरम कर डाला है। दिमाग बेशक जलता रहता है। कैसे जलता रहता है ? जैसे श्मशान जलता रहता है और उस श्मशान में भूत और पिशाच जलते रहते हैं। इस तरह से हमारा बेहतरीन कंप्यूटर जलता रहता है। चिंताओं की वजह से, फिक्र की वजह से, द्वेष की वजह से, ईर्ष्या की वजह से, अमुक की वजह से। क्यों साहब ! ये बात सही है, आवश्यक है ? नहीं बेटे ! जरूरी नहीं है कि इन वजहों से ही आपका मस्तिष्क जलता रहता है। ये चीजें कतई जरूरी नहीं हैं।

क्यों साहब ! इन परिस्थितियों में हर कोई जलेगा ? नहीं, इन परिस्थितियों में हम आपको ढेरों आदमी बता देते हैं, जो आप से भी गई-बीती परिस्थितियों में थे, लेकिन प्रसन्न थे, हँस सकते थे। कैसे ? दिमाग पर कंट्रोल रखते थे। जिस मशीन से जिंदगी की हर चीज का काम निकालना है, उसी को आप असंतुलित कर देते हैं। फिर बताइए कैसे काम चलाएँगे ? समस्याओं को कैसे हल करेंगे ? जो चीज आपके काम की थी दिमाग, उसको तो आपने गरम कर डाला, जला डाला। आप चाहें तो अपने दिमाग पर रहम कर सकते हैं। दिमाग पर क्यों ? आप चाहें तो उसे जलन से बचा सकते हैं, जो चौबीसों घंटे जलता रहता है। रहम अगर हो तो आप अपने घर में जलते हुए जानवरों को निकाल सकते हैं। अगर आपको रहम नहीं हो तो कहेंगे कि मरने दीजिए। रहम हो तो दूसरों के ऊपर भी दया कर सकते हैं। अगर आपके भीतर रहम है तो फिर आपके भीतर वह ताकत है, शक्ति है, जिससे निश्चित रूप से आप अपने दिमाग को राहत दे सकते हैं। यह बेहतरीन कंप्यूटर है और यह करोड़ों रुपये कीमत का कंप्यूटर है।

अपना कंप्यूटर आप ही ठीक करें

मित्रो ! आपने इसे गरम कर दिया। मशीन को ज्यादा गरम करने से तो हर चीज जल जाती है। पानी की मोटर जल जाती है, गाड़ी की मोटर जल जाती है। ज्यादा गरम कर देंगे, टेंप्रेचर बढ़ा देंगे तो वे जल जाएँगी। आपने अपने दिमाग को जला दिया और जली हुई मोटर जिस तरीके से खड़बड़-खड़बड़ करती है और धुआँ देती है, आपका दिमाग भी उसी तरह से हर वक्त धुआँ देता रहता है। आप अगर चाहते तो आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करके देवत्व ग्रहण करते और अपने दिमाग पर रहम कर सकते थे। आप चाहते तो अपने शरीर पर रहम कर सकते थे। इसका फल जरूर मिलता, सैकंडों में मिलता। फल ? हाँ बेटे फल, अध्यात्म नकद धर्म है। आप सही तरीके से इसका इस्तेमाल तो कीजिए। आप सही तरीका ही नहीं जानते हैं, तो मैं क्या करूँगा। आपने एक ही चीज सीख रखी है, मनुहार और अनुग्रह। उसके सामने नाक रगड़ेंगे, इसके सामने मिन्नतें करेंगे, सब गोरखधंधा है। यही आध्यात्मिकता तो बताई गई है न आपको, बताइए नाक रगड़ना, मिन्नतें करना, मनुहार करना और अनुग्रह पाना।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मित्रो! आपका भगवत् भजन क्या है, आपकी संतोषी माँ की पूजा क्या है, आपका हनुमान चालीसा क्या है बताइए जरा? सारी-की-सारी धुरी का जब हम पोस्टमार्टम करते हैं, विश्लेषण करते हैं तो आज का अध्यात्म, पुरातन नहीं, पूरी तरह से इसी जंजाल में फँसा हुआ मिलता है। इसमें दो ही चीजें दिखाई पड़ती हैं, एक मिन्नतें दिखाई पड़ती हैं, मनुहार दिखाई पड़ती है और दूसरा इस मिन्नत-मनुहार के बदले में अनुग्रह पाने की इच्छा मालूम पड़ती है। ये कहाँ तक सही है, बेटे मालूम नहीं, पर मैं जानता हूँ कि यह कहीं भी शोभा देने लायक नहीं है। आप इस आधार पर कोई बड़ी चीज नहीं पा सकेंगे।

कैसे बड़ी चीज नहीं प्राप्त कर सकेंगे? जैसे एक सेठ जी थे। उनके यहाँ एक पच्चीस-छब्बीस साल का लड़का आया। उसने कहा, कुछ काम-धंधा नहीं है हमारे यहाँ और आज रोटी भी नहीं मिली, सेठ जी हमारी कुछ सहायता कीजिए। मुनीम जी, देखना इसकी कुछ सहायता कर देना। मुनीम जी ने एक रुपया दिया और कहा लो भाई बाजार से रोटी खा लेना। साहब एक रुपये में रोटी कैसे मिलेगी? आप तो जानते ही हैं कि आजकल तीन रुपये में थाली मिलती है। एक रुपये में पेट नहीं भरेगा। अच्छा मुनीम जी इनको कुछ और दे दीजिए। तो फिर क्या दे दें? दो रुपये दे दो। अच्छा दो रुपये ले। भगवान् करे आपका कल्याण हो। सेठ जी बड़े उदार हैं, मुनीम जी बड़े उदार हैं, यह कहते वह चला गया। क्या ले गया? दो रुपया। कितनी बार कहा, कितना दीन बना, धन्यवाद कहा, तब जाकर के सेठ जी की कृपा से, मुनीम जी की सिफारिश से दो रुपये ले करके गया और अपना पेट भर लिया।

मित्रो! थोड़ी देर में एक और लड़का आया। उसकी भी उम्र वही पच्चीस-छब्बीस साल थी, शक्ल-सूरत में भी बिल्कुल वैसा ही मिलता-जुलता था। जब वह आया तो मुनीम जी उठकर खड़े हो गए, सेठ जी भी उठकर खड़े हो गए। सेठ जी ने कहा, आइए, खैरियत तो हैं? बहुत दिन में आना हुआ। आइए, बैठिए साहब! सेठ जी ने अपना काम बंद कर दिया और नौकर से बोले, तू अखबार ला, पंखा ला, चाय जल्दी ला, मिठाई ला। दो-तीन दिन तक ऐसी खुशामद की, ऐसी इज्जत की कि क्या कहने? जब विदा हुए तब तरह-तरह के उपहार दिए, पेंट-सूट दिया, किराये के लिए सौ रुपये दिए। टिकिट लाकर दिया। घर से गाड़ी में स्टेशन तक पहुँचाने के लिए गए। वह बार-बार कहता रहा कि आप क्यों कष्ट उठाते हैं? हमें इनकी क्या जरूरत है, रहने दीजिए। हम तो आपके बच्चे हैं। नहीं साहब! ये सब तो आपको लेकर जाना पड़ेगा। वही सेठ और वही मुनीम जोर दे रहे थे, दबाव डाल रहे थे कि नहीं साहब लेना ही पड़ेगा।

बेटे! लड़के दोनों ही थे; एक मिन्नतें कर रहा था, खुशामदें कर रहा था, तब दोनों की सिफारिशों से दो रुपये लेकर गया था और पीछे आशीर्वाद देकर गया था, लेकिन दूसरे को जो चीजें मिलीं। साहब ये क्या फर्क है? सेठ जी वही हैं, लड़के वही हैं। दोनों बाहर के थे, पर दोनों में फर्क था। क्या फर्क था? ये लड़का जो पीछे आया था, सेठ जी का जँवाई था। जँवाई क्या होता है? जँवाई उसे कहते हैं जिसके साथ लड़की की शादी कर देते हैं। तो आपने इसको क्यों दिया? इसलिए दिया जिससे ये हमारी बेटी की सहायता करे। इसकी कमाई के ऊपर हमारी बेटी की जिंदगी निर्भर है। इससे प्यार मिलता है, इसकी संपदा का वह फायदा उठाएगी। अच्छा तो आपने बेटी के पक्ष में इसकी सहायता की है। आप बिल्कुल सच कहते हैं। यह

महानता के उपासकों को बड़प्पन की अभिलाषा को नियंत्रित ही रखकर चलना होता है।

-परमपूज्य गुरुदेव

है तो एक लोकाचार, परंतु सही बात यह है कि सहायता प्राप्त करने की वजह से हमने इसको दिया है।

ये क्या कह रहे थे भिखारी और जँवाई की बात? हाँ बेटे, आपसे मैं इसलिए कह रहा हूँ कि आप शुरू से देखिए कि जिनसे आप मिन्नतें करते हैं, जिनसे आप कुछ पाना चाहते हैं, उनके दरवाजे पर आप भिखारी होकर जाते हैं कि जँवाई होकर। जामाता के लिए जँवाई शब्द बड़ा खराब है, पर आप मुझे कहने दीजिए। जब कोई और अच्छा शब्द मिल जाएगा तो मैं उसको इस्तेमाल करूँगा, अभी तो मेरे पास और कोई शब्द नहीं है। हाँ तो आप क्या चाहते हैं? बेशकीमती चीजें पाने के लिए, अच्छी चीजें पाने के लिए, इज्जत पाने के लिए आपको क्या करना चाहिए? आपको जँवाई बनना चाहिए। किनका जँवाई बनना चाहिए? भगवान् जी और किसका? साईं बाबा का और किसका आचार्य जी का। हरेक का जँवाई बनना चाहिए। चल बदमाश कहीं का, दरिद्र और भिखमंगे पहले अपनी हैसियत को ऊँची उठा। अपनी हैसियत को ऊँचा उठाए बिना, ऊँची चीजें-कीमती चीजें न कभी मिली हैं और न मिलने वाली हैं। *(क्रमशः)* ✡

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

भगवान के अनुदान किन शर्तों पर मिलते हैं (२)

(गतांक से आगे)

यह अध्यात्म सही नहीं

मित्रो! अध्यात्म उस चीज का नाम है जो आदमी के व्यक्तित्व और स्तर को ऊँचा उठा देता है। जो अध्यात्म आदमी के व्यक्तित्व और उसके स्तर को नीचे गिराता हो, मैं उसे अध्यात्म नहीं मानता। उसके पीछे मैं बहुत नाराज हूँ। इसलिए हर क्षेत्र में हम बगावत पैदा करते हैं। हम जहाँ अनैतिकता के विरुद्ध बगावत पैदा करते हैं, जहाँ अवांछनीयता के विरुद्ध बगावत पैदा करते हैं, वहीं हम इस नकली अध्यात्म के विरुद्ध भी बगावत पैदा करते हैं। फिर तो आप कम्युनिस्ट हैं? कम्युनिस्ट तो नहीं हैं बेटे, पर हम कम्युनिस्टों की आवाज में आवाज लगाकर कह सकते हैं कि यह अवांछनीय अध्यात्म जो आज हर जगह फैल गया है, अगर यह नष्ट होता है, तो आपको दुःख है? नहीं, मुझे प्रसन्नता है। आपका ये अखंड कीर्तन बंद हो जाए तो आपको नाराजगी है? नहीं मुझे कोई नाराजगी नहीं है, मुझे बहुत प्रसन्नता है। ये कौन से मंदिर, भिन्न-भिन्न देवियों के मंदिर गिर पड़ें तो आपको नाराजगी है? नहीं बेटे, मुझे बहुत खुशी है। मनसा देवी, जो आपकी मनसाओं को, आपकी इच्छाओं को बिना कीमत चुकाए देना चाहती हैं, केवल पंद्रह पैसे का प्रसाद खा लीजिए और हमारी मनसा पूरी कर दीजिए। बेटे हम आपकी ऐसी मनसा देवी से बहुत नाराज हैं।



क्या कहते हैं आप? बेटे! मैं यह कहता हूँ कि आप अनैतिक आचरण पैदा करती हैं। आप लोगों को भिखमंगा बनाती हैं और आप लोगों को दरिद्र बनाती हैं और लोगों को ऐसे गंदे आश्वासन देती हैं, जो आपको नहीं देने चाहिए। जो आपको शोभा नहीं देते और लेने वालों को भी शोभा नहीं देते, दोनों को शोभा नहीं देते, क्योंकि इंसानियत के लिए जो बेसिक सिद्धांत हैं, फंडामेंटल सिद्धांत हैं, आप उनको गलाती हैं, इसलिए आप भाग जाइए।

मित्रो! क्या करना चाहिए? मैं यह कह रहा था कि आध्यात्मिकता के मौलिक आधारों का प्रतिपादन होना चाहिए, ताकि उससे हम वास्तविक फायदे उठा सकें, जैसे कि हमारे पूर्वजों ने उठाए थे। हमारे पूर्वजों ने आध्यात्मिकता से हर क्षेत्र में शानदार फायदे उठाए थे। उनके व्यक्तित्व बहुत शानदार होते थे। मैं आपको एक बात बताता हूँ कि जिन चीजों को आप चाहते हैं, जिन सुविधाओं को आप चाहते हैं, जो संपदाएँ आप चाहते हैं, वे अच्छे व्यक्तित्व के पीछे-पीछे चलती हैं। रोशनी के पीछे छाया चलती है। आप रोशनी की तरफ मुँह करके चलिए छाया आपके पीछे चलेगी और आप छाया के पीछे चलिए, छाया की तरफ मुँह करके भागिए तो रोशनी भी हाथ से चली जाएगी और छाया भी पकड़ में नहीं आएगी। आप अपने व्यक्तित्व को ऊँचा उठाइए।

वास्तविक अध्यात्म फिर क्या है?

मित्रो! आध्यात्मिकता का उद्देश्य था, आदमी के व्यक्तित्व को ऊँचा उठा देना, चिंतन को सही कर देना, आदमी के दृष्टिकोण को परिष्कृत कर देना। अगर कोई आदमी यह कर सके तब? तब मैं कहूँगा कि जीवन में वास्तविक अध्यात्म आ गया। वास्तविक अध्यात्म को प्राप्त करने के बाद में आप वो चीजें पाएँगे जो आपको मिलनी चाहिए। माँगने पर भी मिलेंगी, बिना माँगे भी मिलेंगी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

महापुरुषों के नाम सुने नहीं आपने ? आप उन महापुरुषों की हिस्ट्री तलाश कीजिए,जनता ने जिनको निहाल कर दिया है। माँगने पर ? माँगने पर नहीं, बिना माँगे निहाल कर दिया। कल मैं गाँधी जी का हवाला दे रहा था, बुद्ध का हवाला दे रहा था। जनता की बात कहूँ, हाँ जनता की बात कहूँगा और भगवान् की बात ? भगवान् की बात भी कहूँगा, हरेक की बात कहूँगा। मैं कहूँगा कि अगर आपका व्यक्तित्व और आपका अंतर्मन सच्चे में, वास्तव में पात्र है, तो आपको तीनों ओर से सहायता मिलेगी। क्यों साहब, एक ओर से कि तीनों ओर से ? आप एक ओर से माँगते हैं, पर मैं वायदा करता हूँ कि तीनों ओर से आपको सहायता मिलेगी और इतनी अधिक सहायता मिलेगी, जिसको पाकर के आप निहाल हो जाएँगे।

साथियो ! आप क्या चाहते हैं ? हम ये चाहते हैं कि देवताओं की सहायता मिले। ये तो नहीं चाहते कि हमारे पड़ोसी से हमें सहायता मिले ? नहीं ये नहीं चाहते वो क्या सहायता देगा। पड़ोसी से तो लड़ाई है हमारी, वो हमें सहायता नहीं देगा और किससे माँगेंगे ? पिताजी से। नहीं पिताजी भी हमसे नाखुश हैं, वो नहीं देंगे। तो भाई से माँग लीजिए। नहीं भाई ने भी मना कर दिया। तो फिर अपने साले से माँग लीजिए, कहिए हम आपके बहनोई हैं। साले से भी एक बार हमने कहा था कि हम पैसे की तंगी में हैं, हमें दो हजार रुपये भेज दीजिए। साले ने कहा कि हम नहीं दे सकते, हम आपसे भी ज्यादा तंगी में हैं। हमारे पास नहीं है। किसी ने नहीं दिया। कोई और बाकी रह गया है ? नहीं और कोई नहीं। हमें सबने इंकार कर दिया। एक भी आदमी हमारी सहायता करने के लिए रजामंद नहीं है। अब तो एक ही बाकी रह गया है और उसका नाम है 'देवता'। इसे हम ट्राई करते हैं।

ट्राई कैसे करते हैं ? अनुष्ठान करते हैं। अहा....ये अनुष्ठान से पकड़ में आएँगे। सच-सच बताना, इसी का नाम अनुष्ठान है ना—देवताओं से ट्राई करना ? क्या ट्राई करना ? हमारा ट्रांसफर करा दीजिए। हमने वहाँ कहा-स्युपरिन्टेंडेंट से। उसने क्या कहा ? उसने कहा कि ५०० रुपये दे दीजिए, तो हम आपका ट्रांसफर करा देंगे। आपने फिर कमिश्नर से भी कोशिश की होगी, पर ट्रांसफर नहीं हुआ। अब कौन बाकी रह गया है ? एक ही आदमी बाकी रह गया है, देवता। देवता ट्रांसफर कराता है ? हाँ साहब ! देवता के हाथ में सब कुछ है। तो क्यों देवता जी आपके पास क्या ट्रांसफर कराने का कोई डिपार्टमेंट है ? नहीं साहब ! हमारे हाथ में नहीं है ट्रांसफर। आप क्या काम करते हैं ? हम डीलिंग में नहीं जाते हैं। ट्रांसफर में हमारी डीलिंग नहीं है।

ये देवी-देवता हमें क्या देंगे ?

मित्रो ! आप देवताओं से भी वो काम कराना चाहते हैं, जो देवता बेचारे नहीं कर सकते, जो उनके काबू में नहीं है, उनके पास भी नहीं है। क्या काबू में नहीं है ? हनुमान जी से आप चाहते हैं कि हमारा ब्याह-शादी हो जाए और हमारे लड़के के बाल-बच्चे हो जाएँ। एक बार हनुमान जी से हमने पूछा कि क्यों साहब ! ये आपका डिपार्टमेंट है कि जब किसी का ब्याह-शादी नहीं होती तो आप जाकर ब्याह-शादी कराते हैं। फिर हमने दूसरी बात पूछी कि किसी के बच्चा न हो तो उसको बच्चा पैदा कराने का महकमा भी आपके पास है। हनुमान जी ने जवाब दिया कि आचार्य जी ! आपको तो समझ है, आप तो पढ़े-लिखे आदमी हैं और अच्छी तरह जानते हैं कि जिन कामों में हमारा कोई दखल नहीं है, कोई वश नहीं, उन्हें भला हम किस तरीके से कर सकते हैं। अगर ब्याह-शादी करने लायक हमारे अंदर शऊर होता तो हमारा भी ब्याह हो गया होता। हमारा ब्याह किसी ने नहीं कराया। नाई भी आए, पंडित भी आए। उन्होंने कहा, क्यों साहब आप हमारी लड़की के साथ शादी कर लीजिए। नहीं, हम ब्याह नहीं करते।

हनुमान जी ने कहा, "राम काज कीन्हे बिना मोहि कहाँ विश्राम।" रामकाज में लगा रहता हूँ। न कोई खेती-बेती है, न नौकरी है, न धंधा, न घर, न स्कूटर, कुछ भी नहीं है हमारे पास। अत: सब चले गए। एक ने भी ब्याह नहीं किया। गुरुजी ! आपको तो मालूम ही है कि हमारा किसी ने ब्याह नहीं किया। हाँ हमको मालूम है कि आपका किसी ने ब्याह नहीं किया था। तो अब आप ही बताइए कि बिना ब्याह वालों की हम कैसे मदद कर सकते हैं ? फिर हमने पूछा कि शादी-ब्याह नहीं हुआ तो बाल-बच्चों की ही मदद कीजिए, क्योंकि ये कहता है कि हमारे तीन लड़कियाँ हैं, एक-दो लड़के और हो जाएँ तो अच्छा है। आप उनकी कुछ सहायता कीजिए। हनुमान जी ने कहा कि ये हमारा काम नहीं है, आप हमें बेकार क्यों तंग करते हैं। हम लड़के इनके पास कैसे भेज सकते हैं ? जब हमारे ही लड़के नहीं हैं, तो हम इनकी कैसे मदद करें, अगर हम अपने लड़के पैदा कर लेते तो आपके भी कर देते। भगवान् शिवजी के पास ट्राई करते हैं और कहते हैं, महादेव जी ! हमारा पक्का मकान बना दें। महादेव जी तो वहाँ रहते हैं मरघट में। इनके पास अगर मकान बनाने लायक पैसे होते,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तो अपने लिए क्यों नहीं बनवा लिया होता। कपड़े तो पहनने को हैं नहीं, फिर मकान कैसे बनवाएँ।

अपनी योग्यता बढ़ाइए

मित्रो! बेसिलसिले की बातें, बेतुकी बातें आप करते रहेंगे और पीछे शिकायतें करते रहेंगे कि हमारी मनोकामना पूरी नहीं। मैं कल भी नाराज हो रहा था इसी बात पर। आपको निराशा तो होगी, पर इससे बाद में पूरे अध्यात्म विज्ञान पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। आदमी अध्यात्म विज्ञान के प्रति नफरत करते चले जाएँगे और इसके प्रति जन-साधारण में जो श्रद्धा थी वो खत्म हो जाएगी। क्यों? क्योंकि आपकी मनोकामना पूरी नहीं हो सकती। आपकी मनोकामना पूरी करने की दो शर्तें हैं। क्या दो शर्तें हैं? साथियो! भगवान् ने, देवताओं ने, ऋषियों ने दुनिया में एक से एक बड़ी मनोकामनाएँ पूरी की हैं, पर उसकी दो शर्तें पूरी करनी पड़ी हैं। एक तो आदमी की योग्यता बढ़ी-चढ़ी होनी चाहिए। आपको क्या मिलता है? हम तो साहब प्राइमरी स्कूल के मास्टर हैं। तो आप कहाँ तक पढ़े हैं? हमने साहब मैट्रिक पास किया है और बी. टी. सी. पास की है। इसीलिए हमको २५० रुपये मिलते हैं। तो अब आप क्या चाहते हैं? हमको बड़ी नौकरी मिल जाए। अच्छा तो आप एक काम कर लीजिए-आप बी.ए. कर लीजिए, बी.एड. कर लीजिए। फिर हमारे पास आना तो हम कोशिश करेंगे, किसी से सिफारिश करेंगे और आपको नौकरी दिला देंगे। नहीं साहब, बी. ए., बी एड तो हम नहीं कर सकते, आप हमें ७५० रुपये की तनख्वाह दिला दीजिए। बेटे, हम कैसे दिला दें, जो कायदा-कानून नहीं है, नियम नहीं है, उसे कैसे करा देंगे।

मित्रो! आदमी को अपनी मनोकामना पूरी करानी है तो उसे अपनी योग्यता बढ़ानी पड़ेगी। आप अपनी योग्यता बढ़ाइए। आदमी की जितनी योग्यता होती है, उतनी ही उसकी तरक्की होती, पैसा मिलता है और मिलता है मान-सम्मान। योग्यता आप बढ़ाते नहीं तो फिर किस तरह से आपकी सहायता करेंगे। दूसरी शर्त है—आप अपने में परिश्रम का माद्दा बढ़ाइए। आप में परिश्रम का माद्दा कम है। आपको जितना परिश्रम करना चाहिए, जिस स्तर का पुरुषार्थ करना चाहिए, उतना नहीं करते। मनोयोग और श्रम दोनों को मिलाकर परिश्रम की क्वालिटी बनती है। आप क्वालिटी क्यों नहीं बनाते? नहीं साहब! हम तो आठ घंटे काम करते हैं। आठ घंटे आपके ढाई घंटे के बराबर हैं। आप आठ घंटे मनोयोग के साथ काम कीजिए तो वह दस घंटे के बराबर हो जाएगा. अटठाइस घंटे के बराबर होगा।

मित्रो! 'इफीशिएन्सी' अर्थात् दक्षता का भी ध्यान रखिए। नहीं साहब! हम तो उसे 'सीनिऑरिटि' कहते हैं। बेटे, सीनिऑरिटि ही नहीं काम करती, 'इफीशिएन्सी भी काम करती है। इफीशिएन्सी आप बढ़ाइए न, कुछ पुरुषार्थ बढ़ाइए न, फिर हम देखेंगे कि कौन है जो आपका रास्ता रोकता है। देखेंगे कौन आदमी आपकी तरक्की को रोकता है। आपकी तरक्की को कोई रोकता हो, तो आप इस्तीफा दे देना और हमारे पास आ जाना। हमारे पास जो लोग काम करते हैं वे पूरे श्रम और मनोयोग से करते हैं। वे जिस काम को करते हैं, पूरे मन से करते हैं। हमको कहीं लगा दीजिए। क्या मिलता है आपको? ६५० रुपये मिलते हैं। अच्छा तो हम आपको ७५० रुपये दिलाएँगे और जगह दिला देंगे, परंतु आप तो परिश्रम की क्वालिटी नहीं बढ़ाते। अपनी योग्यता बढ़ाते नहीं हैं और मनोकामनाएँ लिए फिरते हैं।

मित्रो! ये मनोकामनाएँ अवैज्ञानिक हैं। अवैज्ञानिक बातें क्या निभेंगी कभी? अवैज्ञानिक बातें न कभी निभी थीं, न कभी निभेंगी। आप क्या कह रहे थे? मैं यह कह रहा था कि आपको जो सबसे श्रेष्ठ धंधा, व्यवसाय बताया है, वह अध्यात्म है। अध्यात्म का व्यवसाय इससे ज्यादा शानदार, इससे ज्यादा फायदेमंद, इससे ज्यादा कीर्ति दिलाने वाला अर्थात् तीन तरह के फायदे दिलाने वाला धंधा और कहीं नहीं है और व्यवसायों में सिर्फ एक तरह का फायदा होता है। क्या? पैसा मिल जाता है और कोई बहुत फायदे या धंधा? और कोई धंधा नहीं है। जिसको आप व्यवसाय कहते हैं वह केवल एक ही फायदा कराता है। हम क्या कराते हैं? हम बेटे, ये धंधा जो पैसे वाला है, ये तो गौण है, बाहर वाला है। इसके अलावा हम तीन फायदे करा सकते हैं। उस अध्यात्म के बारे में बता रहे हैं जिसको सिखाने के लिए हमने आपको यहाँ बुलाया है। जिसके लिए हम आपको अनुष्ठान कराते हैं। हमारे इस अध्यात्म को आप समझ लें तो मैं फिर आपकी गाड़ी आगे बढ़ाऊँ। आप क्या सिखाना चाहते हैं? आप समझिए तो सही। आप तो नहीं रहते हैं। कहाँ? हमारी मनोकामना, भजन और माला। बेटे, ये तो गलत है।

पहले साधना तो हो

माला और मनोकामना का भी सिद्धांत है और सही होता है तो फिर मैं एक चीज और शामिल करना चाहूँगा। क्या चाहेंगे? माला—एक। माला से व्यक्तित्व का विकास। व्यक्तित्व के विकास के फलस्वरूप साधना दो। यों है बेटे इसका चक्र। आप समझ गए. यह एक चक्र है। कौन-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सा? इसमें तीन चीजें शामिल हैं, साधना एक। साधना सफल है, सही है या गलत है, इससे व्यक्तित्व का विकास जुड़ा हुआ है। व्यक्तित्व के विकास के बाद में वो करना, जिसको हम ऋद्धियाँ कहते हैं, सिद्धियाँ कहते हैं, सफलता कहते हैं। नहीं साहब! भजन करने से सिद्धियाँ मिलनी चाहिए। नहीं बेटे, आप गलत बात कहते हैं। भजन करने से सिद्धियाँ नहीं मिल जातीं। नहीं साहब! हम तो यही ख्याल करते हैं। आप गलत ख्याल करते हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस गलत ख्याल को निकाल दें। नहीं साहब हम तो नहीं निकाल सकते। जप करने से पैसा मिलता है। नहीं बेटे, जप करने से पैसा मिलता तो मंदिरों में—जो हिंदुस्तान में एक लाख से ऊपर मंदिर ऐसे हैं जहाँ पुजारी-नौकर रहते हैं, वे मालामाल हो गए होते। आप एक लाख पुजारियों का आयोग बैठा दीजिए। सर्वे कीजिए और रिपोर्ट मँगाइए इसकी। फिर देखिए क्या हाल है? इन पुजारियों में से हर आदमी मामूली मजदूर की अपेक्षा, एल.डी.सी. क्लर्क की अपेक्षा, प्राइमरी स्कूल के मास्टर की अपेक्षा गई-बीती हैसियत में है।

मित्रो! जो व्यक्ति सारे दिन पल्लेदारी ढोते हैं और रिक्शा चलाते हैं, उनको एक तराजू में रखिए और पुजारी जी को एक तराजू में रखिए। देखिए साहब, क्या बात है? आप सिनेमा भी देखते हैं, सिगरेट भी पीते हैं, दिन में छह कप चाय भी पी जाते हैं। आप कौन हैं? आप रिक्शे वाले हैं और आप? पुजारी जी हैं। अरे सिनेमा देखते हैं? नहीं साहब सिनेमा हमारे भाग्य में कहाँ से आया। जाने का मन होता है? मन तो होता है, पर हम कैसे जा सकते हैं। आपकी ये बात वो बात सब तराजू में तौलते हैं, तो मालूम पड़ता है न रिक्शे वाला फायदे में है और न ये पुजारी जी। क्या बात है? आप समझते नहीं क्या? गलतफहमी को क्यों दबाए बैठे हैं। गलतफहमी को आप हटा दीजिए। मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि अगर आपके मन में यह गलतफहमी है कि भजन और माला के फलस्वरूप सिद्धि मिल जाएगी तो आप इसे निकाल दीजिए।

तो क्या करें? इसमें एक चीज आप और शामिल कर लें तो बात सही हो जाएगी। क्या शामिल कर लें? स्कूल में पढ़ाई करें और पढ़ाई के बाद नौकरी करें। नहीं साहब पढ़ाई के साथ ही नौकरी मिल जाए तो अच्छा है। अच्छा बेटे तू स्कूल जाएगा? हाँ साहब, लेकिन पढ़ाई करनी पड़ेगी। गुरुजी! मुझे यह नहीं पता था। अच्छा तो अब हम बता देते हैं कलम पकड़ और पी-एच. डी. हो जा। लेकिन एक कमी है। क्या? कलम पकड़ने के साथ-साथ पढ़ाई भी करनी पड़ेगी। गुरुजी! हम तो यह जानते थे कि जिसके हाथ में कलम होती है, वही पी-एच. डी. हो जाता है। बेटे, कलम से पी-एच.डी. होती है, तेरी यह बात सही है, पर हमारी भी एक बात क्यों शामिल नहीं करता कि कलम के साथ-साथ में अध्ययन भी करना और तब लिखना चाहिए। थीसिस लिखने की कीमत होती है और होनी भी चाहिए।

मात्र क्रिया से परिणाम नहीं मिलता

गुरुजी! ये तो बड़ा झमेला पड़ गया। हाँ बेटे, झगड़ा तो था ही। तू क्या समझता था? हम तो यह समझते थे कि ये सब प्रारंभिक वस्तुएँ हैं और उनसे ही सफलता मिल जाती है। मसलन आपके हाथ में छेनी और हथौड़ी दे दें और कहें कि इस पत्थर के टुकड़े को ले जाइए और इसमें से आप एक मूर्ति बना दीजिए। मूर्ति कितने रुपये की होती है? बहुत कीमती होती है। हमने जयपुर से एक मूर्ति मँगाई है, वह तीन हजार रुपये में आई है। इसमें कितने रुपये का पत्थर लगा होगा? मैं सोचता हूँ कोई पचास रुपये का पत्थर होगा। आाप पचास रुपये का पत्थर ले लीजिए और छेनी, हथौड़ी ले जाइए, घिसने के लिए रेती ले जाइए और मूर्ति बनाकर लाइए। आपको तो पत्थर ही नहीं दिखाई पड़ा और ऊपर से छेनी और हथौड़ी भी तोड़ डाली और अपनी अँगुली पर भी पट्टी बाँध रहे हैं। आपने तो बताया था कि हम मूर्ति बनाएँगे तो क्या बन गई आपकी मूर्ति? कहाँ बनी गुरुजी! छेनी टूट गई, हथौड़ी टूट गई और देखिए हमारी अँगुली में चोट भी लग गई। बेटे, मूर्ति कहाँ गई? उसका क्या हुआ? तीन हजार की मूर्ति तो मिली नहीं? मिलती भी कैसे, मूर्तिकला का जो अभ्यास है, वह अलग है।

मित्रो! यह क्या है? यह एक टेक्निक है। मूर्तिकला छेनी-हथौड़े की सहायता से विकसित तो की जाती है, पर इसके पीछे अभ्यास होता है, तब कहीं मूर्ति बनाना आता है। तब आदमी हजार रुपये महीने कमाता है। इससे कम में कमाए, इससे कम में नहीं कमा सकता। चित्रकार चित्र बनाते हैं। कितने का बिका ये चित्र? बहुत दाम का बिका। हम अखण्ड ज्योति के कवरपेज की डिजाइन बनवाते हैं। उसके लिए हमें पाँच सौ रुपये देने पड़ते हैं। चित्रकार दो दिन में बना देता है। गुरुजी! यह तो अच्छा धंधा है। एक दिन में एक चित्र बनाने के ढाई सौ रुपया रोज कमाता है। इससे महीने में कितना कमा लेगा और साल भर में कितना कमा लेगा? गुरुजी! मैं तो वही धंधा करूँगा, बेटे कर ले। इसके लिए क्या-क्या चीज

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

चाहिए? कागज, ब्रुश, रंग। लीजिए बनाइए चित्र। किसके लिए बनाएँ? हमारी अखण्ड ज्योति के लिए बनाइए। गुरुजी! आप तो पाँच सौ रुपये तो वैसे ही दे देंगे, देखिए चित्र बनाकर लाया हूँ। बेटे! ये तूने क्या बनाया? हमारा कागज भी बरबाद कर दिया और रंग भी खराब कर दिया और ऐसे ही लकीरें बना लाया। नहीं बेटे, लकीर नहीं बनानी चाहिए।

मित्रो! कागज काम तो आता है, पर यह भी ध्यान रखिए कि क्या चीज चाहिए। यहाँ एक और शब्द लगा हुआ है। 'पर' यह इसलिए लगा हुआ है कि चित्रकला का अभ्यास होना चाहिए, जो समयसाध्य और श्रमसाध्य है। नहीं साहब! हम तो इस झगड़े में नहीं पड़ेंगे। तो क्या करेंगे? हम यह करेंगे कि क्रिया के माध्यम से परिणाम पाना चाहेंगे। बेटे, यह तो संभव नहीं, असंभव बात है, जो आपने कल्पना बना रखी है। आप इस असंभव के पीछे भागेंगे तो आपको हैरानी के सिवाय, परेशानी के सिवाय, खीझने के सिवाय, निराशा के सिवाय और कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा। अब तक आप निराश हैं तो आगे भविष्य में अगर आपका यही सिद्धांत रहा, तो मैं आपको शाप देता हूँ कि भविष्य में आपको हमेशा निराशा ही हाथ लगेगी और कभी आपको सफलता प्राप्त नहीं होगी।

साधना कोई शॉर्टकट नहीं

साहब! आप शाप क्यों देते हैं। इसलिए देते हैं कि आप उस सिद्धांत को समझते नहीं, जिस सिद्धांत पर चल करके आप वहाँ पहुँच सकते हैं। उस सिद्धांत को स्वीकार भी नहीं करते। बेटे, ये 'नेशनल हाईवे' है, राजमार्ग है। साधना कोई शॉर्टकट नहीं है। किसी भी क्षेत्र में कोई शॉर्टकट रास्ता नहीं है। आप एम.ए. पास होने का शॉर्टकट बताइए। बेटे, हमें तो मालूम नहीं है। हमने तो जिनको देखा है, वे पढ़ते हैं और नंबर बाई नंबर, कक्षा दर कक्षा फीस देते हैं। अच्छा बंबई जाने का शॉर्टकट बताइए? बंबई जाने का शॉर्टकट यही है बेटे कि उधर से कोटा से होकर निकल जाए या भोपाल से होकर निकल जाए। कितना किराया लगता है? यही कोई लगता होगा सौ-डेढ़ सौ रुपये का टिकट। नहीं साहब! कोई शॉर्टकट रास्ता बताइए। जिससे कि इतना सफर भी न करना पड़े और पैसा भी खरच नहीं करना पड़े और मैं बंबई भी पहुँच जाऊँ। नहीं बेटे, ऐसा कोई शॉर्टकट रास्ता नहीं है।

मित्रो! आपने अध्यात्म माने शॉर्टकट समझ रखा है। आप चाहते हैं,"हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा आवे।" बेटे तू क्या चाहता है कि बंबई पहुँच जाऊँ। हाँ गुरुजी। ऐसा चमत्कार दिखाइए, जादू दिखाइए कि हम पाँच मिनट में बंबई पहुँच जाएँ और पैसा भी न खरच करना पड़े। आँखें बंद करते ही बंबई आ जाए। बताइए आपको ऐसा चमत्कार आता है। हाँ, हमको आता है। अच्छा तो आप कितनी देर में पहुँचा देंगे? तू कितनी देर में पहुँचना चाहता है। हम तो तुझे पाँच मिनट में पहुँचा देंगे बंबई। अच्छा पाँच मिनट में आप इतने बड़े योगी हैं? तू पहले खड़ा तो हो जा, फिर देख पहुँचता है कि नहीं पाँच मिनट में। अच्छा एक काम कर आँख पर एक पट्टी बाँध ले। अगर पट्टी नहीं तो आँख पर हाथ रख ले, ताकि रास्ते का सफर तुझे दिखाई न पड़े। और देख जब मैं कहूँ तब एक पैर उठाना, फिर दूसरा पैर उठाना। जब मैं कहूँ एक दो तीन— आँख खोल, आ गया बंबई। गुरुजी! मैं तो यहीं खड़ा हूँ। अरे देख यह लिखा हुआ है बंबई। गुरुजी आप तो हमारे साथ मजाक करते हैं।

मित्रो! आप भी तो अध्यात्म के साथ क्या करते हैं? मजाक और माखौल करते हैं। कौन-सी वाली? जो आप लिए फिरते हैं कि अमुक मंत्र का जप करेंगे और पैसा कमाएँगे। आप भगवान् के साथ मखौल करते हैं, सिद्धांतों, आदर्शों के साथ मखौल करते हैं और प्राचीनकाल की ऋषि परंपरा के साथ मखौल करते हैं। आपको किसने बताया था यह सब? साहब! एक बाबाजी ने बताया था। मारा नहीं उस बाबाजी को? नहीं साहब! अच्छा अब की बार आए तो उसके कान पकड़ लेना और कहना कि गलत बात बता रहा है। मित्रो! क्या बताना चाहिए था? वह बताना चाहिए था, जिस शानदार अध्यात्म के लिए मैंने आपको बुलाया है। जिसके लिए मैं आपको अनुष्ठान कराना चाहता हूँ। जिसके लिए मैं चाहता हूँ कि आप उन सिद्धांतों के जानकार हो जाएँ। आप सिद्धांतों के जानकार हो जाएँगे तो फिर विधि बताने में मुझे देर नहीं लगेगी। विधि तो बहुत सरल है। जिस तरह ऑपरेशन करना बहुत सरल है। मोतियाबिंद का ऑपरेशन कितने मिनट लेता है। मुश्किल से एक मिनट लेता है। एक मिनट में डॉक्टर सुन्न करके खट् झिल्ली काट करके अलग कर देता है। क्यों साहब! आप एक मिनट में ऑपरेशन करना सिखा देंगे? हाँ बेटे, हम सिखा देंगे। लेकिन पहले सात साल तक मेडिकल की पूरी पढ़ाई करने के साथ-साथ तुझे प्रैक्टिस भी करनी होगी। तब हम तुझे बताएँगे।

अगले अंक में जारी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

भगवान के अनुदान किन शर्तों पर मिलते हैं

गतांक से आगे

मित्रो ! मैं आपको उस अध्यात्म को सिखाना चाहता हूँ, जिसे मेरे गुरु ने मुझे सिखाया और जिसे ऋषियों ने अपने शिष्यों को पढ़ाया । हम उसी शानदार सिद्धांत पर विश्वास करते हैं और आपको उसी शानदार अध्यात्म को अपनाने की प्रार्थना करते हैं। इसी के लिए हमने सब इंतजाम रचाया है। अगर आप सीख सकते हों, कर सकते हों, तो कर लें, सीख लें। फायदा उठा सकते हों तो फायदा उठा लें। जो अध्यात्म हम सिखाना चाहते हैं, जिसके लिए हमने आपको इस आध्यात्मिक शिविर में बुलाया है, वह कैसा अध्यात्म है ! उसके तीन फायदे हैं। सिद्धियाँ कितनी होती हैं ? यह आठ होती हैं, लेकिन ये अष्ट सिद्धियाँ और नौ ऋद्धियाँ मेरी समझ में नहीं आतीं। मेरी समझ में तो तीन सिद्धियाँ आती हैं और ये सुनिश्चित रूप से मिलती हैं। अष्ट सिद्धियों के बारे में तो मैं नहीं कह सकता कि इससे हवा में तैरना आ जाता है। हाँ गुरुजी ! सिद्धियों से चमत्कार आते हैं। अष्ट सिद्धियाँ, नव निधियाँ होती हैं। अच्छा तो आपका मतलब हवा में तैरने से है। आप यही कह रहे थे न कि सिद्धियाँ मिल जाएँ। चलिए सिद्धि की एक घटना याद आ गई, उसे ही आपको सुनाता हूँ।



जमीन पर चलें, हवा में नहीं

हसन नाम के एक बड़े सिद्ध पुरुष थे। राबिया नाम की एक संत महिला भी बड़ी सिद्ध थी। दोनों की ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। हसन के बारे में राबिया ने तारीफ सुन रखी थी और राबिया की तारीफ हसन ने सुन रखी थी। एक बार हसन ने कहा—चलो हमें ही राबिया के पास जाना चाहिए। हसन राबिया के पास पहुँच गए। राबिया बहुत खुश हुई। उसने कहा—आप आ गए, हमारा भाग्य खुल गया। हम तो कहीं जाते नहीं, आपने कृपा की और हमारे घर आ गए। उन्हें बिठाया, स्वागत-सत्कार किया।

नमाज पढ़ने का वक्त आ गया। हसन ने कहा—राबिया ! आज हम साथ-साथ नमाज पढ़ेंगे। नमाज का टाइम हो गया तो पढ़नी ही चाहिए। उन्होंने अपना बिछाने का कपड़ा-जिसको अरबी में 'मुसल्ला' कहते हैं, लिया और पानी में फेंक दिया। वह पानी में तैरने लगा। हसन ने कहा कि हम तो पानी पर बैठकर नमाज पढ़ेंगे और चमत्कार दिखाएँगे। राबिया तुम भी आ सकती हो। राबिया समझ गई कि हसन अपनी करामात दिखाना चाहते हैं और यह सिद्ध करना चाहते हैं कि हम पानी पर सवार हो सकते हैं और बिना डूबे बैठ सकते हैं। वे चमत्कार दिखा रहे थे कि देखो हमारे पास कितनी सिद्धियाँ हैं !

राबिया को बहुत दुःख हुआ। राबिया उनके पास तो नहीं गई, पानी के ऊपर मुसल्ला भी नहीं फेंका। उसने अपना मुसल्ला फौरन हवा में फेंक दिया। वह हवा में तैरने लगा। राबिया ने कहा—हसन ! पानी में नमाज पढ़ना ठीक नहीं। पानी में मेढक रहते हैं, पेशाब करते हैं। मछलियाँ अंडे देती हैं। इसलिए उसमें हमेशा गंदगी छाई रहती है। इसमें बहकर कूड़ा-कचरा आ जाता है, बादलों की धूल आ जाती है। ये गंदी जगह है। पानी खुदा की नमाज पढ़ने के लिए ठीक नहीं है। आइए हवा में नमाज पढ़ेंगे।

हसन पानी-पानी हो गए। पानी पर तैरने की तो उन्होंने सिद्धि प्राप्त कर ली थी, पर हवा में तैरने की सिद्धि नहीं आई थी। राबिया के सामने जब हसन शर्मिंदा हो गए, तो राबिया ने कहा—हसन आप गलती पर थे और मैं आप से भी ज्यादा गलती पर थी। जो काम एक मेढक और मछली कर सकती है, आप वह काम करने वाले थे और यह दिखाने वाले थे कि हम कोई चमत्कार दिखाने वाले हैं और मैं आपसे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भी ज्यादा बेअक्ल थी। मैंने अपना मुसल्ला हवा में फेंक करके यह जाहिर करने की कोशिश की कि जो काम एक मच्छर कर सकता है, एक कीड़ा, एक पतंगा कर सकता है, उस कीड़े, मक्खी, मच्छर वाले काम को मैं करने जा रही थी। मैं आप से भी ज्यादा बेअक्ल थी और आप मुझसे भी ज्यादा बेअक्ल थे। आइए हम लोग जमीन पर मुसल्ला बिछाएँ और जमीन पर चलें।

अध्यात्म : एक नकद धर्म

मित्रो ! आप जमीन पर चलिए, हवा में तैरना बंद कीजिए। देवलोक जाना बंद कीजिए। सिद्धियों का ख्वाब देखना बंद कीजिए। आप जमीन पर आइए और जमीन पर चलना शुरू कीजिए, ताकि वो अध्यात्म मिल सके जो कि हमारे लिए संभव है, स्वाभाविक है, जो कि हमको मिल सकता है, जिससे आप फायदा उठा सकते हैं। ऐसा अध्यात्म लेने में आपको हर्ज क्या है ! हवाई उड़ान आपको क्या दे सकती है ! आपको हवा ही मिलनी चाहिए, इससे आपको क्या फायदा ! मरने के बाद हमको मुक्ति मिलनी चाहिए, स्वर्ग मिलना चाहिए। मरने के बाद क्यों, यदि इसी जीवन में, इसी जन्म में और अभी स्वर्ग और मुक्ति मिल जाए तो क्या हर्ज है आपको ! नहीं साहब ! कोई हर्ज नहीं। तो फिर आप क्यों कहते हैं कि भगवान् मरने के बाद मिले। अभी क्यों नहीं मिले ? नहीं साहब ! भगवान् तो धर्म लोक में रहता है, बैकुंठ लोक में रहता है। चलिए, हम आपको दूसरा फायदा करा दें और भगवान् से आपको अभी मिला दें तो कोई हर्ज है आपको ? साहब ! वो तो और भी अच्छा है, आप वही क्यों नहीं करते।

मित्रो ! आप नकद धर्म को ग्रहण कीजिए और उसकी कीमत चुकाइए। नकद धर्म कैसा होता है ? जो ध्यान हम आपको सिखाना चाहते हैं, उसमें तीन सिद्धियाँ हैं। चौथी सिद्धि तो उसका ब्याज है। मूलधन वह होता है, जिसे बैंक में जमा कर देते हैं। ब्याज क्या होता है ? बेटे, ब्याज वह धन होता है, जो आपके जमापूँजी पर आठ-दस प्रतिशत के हिसाब से अतिरिक्त रूप में मिलता है। अपना रुपया हमारे बैंक में जमा कर जाइए, हम आपको और भी नफा दे देंगे। क्या नफा दे देंगे ? हम आपको ब्याज दे देंगे। ब्याज हमारा रुपया नहीं ! हाँ ब्याज आपका तो नहीं है, पर हम आपको दे देंगे। कौन-सी वाली ब्याज है, जो आप चाहते हैं, वह मूलधन नहीं है, ध्यान रखें। अध्यात्म नकद धर्म है, मूलधन है, ऋद्धि-सिद्धियाँ उसकी ब्याज हैं।

साथियो ! जिस तरह का अध्यात्म हम आपको सिखाना चाहते हैं, उसके लिए हम आपको तरीके बताएँगे। उसकी साधना सिखाने का ही हमारा उद्देश्य है। उसके लिए ही आपको बुलाना पड़ता है। आप न सीखें, न समझें तो फिर हम क्या कर सकते हैं ! आप पर तो गलतफहमियाँ हावी होती जा रही हैं। इन गलतफहमियों को जब तक न निकालूँ, तब तक वास्तविकता आपको कैसे बताऊँ। आप पर तो यही गलतफहमियाँ हावी हो रही हैं कि मंत्र जपो, धन आएगा। आपको वहाँ बैठे ही मूलधन चाहिए। अगर आप ऐसे ही उलझे रहेंगे तो मैं आपको सच्चा अध्यात्म कैसे बताऊँगा ? नहीं गुरुजी ! आप ऐसा मंत्र बताइए जिससे पैसा मिल जाए, बेटा मिल जाए। चलो अभी बता देते हैं। क्या मंत्र है ! बस वही है जो बाबा बता गया था और आपसे मोटी दक्षिणा ले गया था। चलो हम भी वही बता देते हैं। क्या है ? वही—"ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डयै बिच्चै:" बेटे, इससे तो बहुत रुपया आया होगा ? हाँ गुरुजी ! हमने जप किया था। अच्छा तो अभी और झक मार और 'चामुण्डयै बिच्चै:' जपता रह। दुष्ट लूट का माल मारने के लिए खड़ा है और कहता है कि मंत्र का चमत्कार दिखाइए।

चमत्कारों की जन्मस्थली अपना आपा

मित्रो ! मंत्रों के चमत्कार कहाँ से आते हैं ? मंत्रों के चमत्कार आदमी के भीतर से आते हैं। पेड़ जो आपको बाहर खड़ा दिखाई पड़ता है, कहाँ से आता है ? पेड़ पर फल, फूल, पत्ते कहाँ से आते हैं ? अच्छा, पहले बताइए कि पत्ते कहाँ से आते हैं ? पत्ते, साहब ! हवा में से भागते हुए आ जाते हैं और डाली से चिपक जाते हैं। अच्छा फूल कहाँ से आते हैं ? फूल रात में तारों से ऊपर से गिरते हैं और पेड़ पर चिपक जाते हैं और ये फल कहाँ से आते हैं ? फल, गुरुजी ! रात में बादल आते हैं तो बहुत से फल लाते हैं। अच्छा तो फल क्या करते हैं ? टप-टप टपक पड़ते हैं और पेड़ पकड़ लेते हैं। पेड़ उन सबको चिपका लेते हैं। बेटे, ये तेरा ख्याल गलत है कि फल बाहर से आते हैं। अच्छा, ये फूल भी बाहर से आते हैं और पत्ते भी बाहर से आते हैं ? हाँ साहब ! नहीं बेटे, तेरा यह ख्याल गलत है। तो गुरुजी ! आप ही बताइए कि सही बात क्या है ? बेटे, पेड़ की जड़ें जमीन में होती हैं, जो दिखाई नहीं पड़तीं। ये जड़ें जमीन से रस चूसती हैं और उसे चूसने के बाद खाने की तरह ऊपर तने में फेंक देती हैं, डालियों में फेंक देती हैं, पत्तों में फेंक देती हैं, फूलों में फेंक देती हैं और फलों में फेंक देती हैं। यह कहाँ से आता है ? बाहर से नहीं भीतर से आता है। बाहर से मतलब-देवताओं से नहीं आता। आप समझते क्यों नहीं ? इसी का नाम अध्यात्म है।

अध्यात्म किसे कहते हैं ? 'साइंस ऑफ सोल' को अध्यात्म कहते हैं। सोल की साइंस में—आत्मा के विज्ञान में हर चीज भीतर से निकलती है। आप बाहर से ही माँगते हैं। देवताओं से माँगते हैं। मनुहार-उपहार, अनुग्रह-उपहार यही आपकी मान्यता है। मनुहार करेंगे, उपहार पाएँगे, यही ख्याल है न आपका ? अच्छा बताइए कि बादलों में पानी किसने पैदा किया ? नहीं

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org Akhand Jyoti - May, 2002
Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

साहब, मनुहार करेंगे, उपहार पाएँगे, साष्टांग दंडवत करेंगे और उपहार पाएँगे, आशीर्वाद पाएँगे। आपको यह सब किसने कहा था? साहब! वो बाबा कह रहा था। पागल है बाबा।

मित्रो! क्या करना चाहिए? आपको वास्तविकता के नजदीक आना चाहिए। वास्तविकता के फायदे बताने के बाद मैं आपको आध्यात्मिकता के तरीके बताना चाहूँगा कि आपको क्या करना चाहिए। वास्तविकता के फायदे जानने के बाद यदि आपको काफी मालूम पड़ते हों, तो आप अध्यात्म के नजदीक आइए और अगर ये कम मालूम पड़ते हों तो आप न भी आएँ तो कोई हर्ज नहीं है। हमने तो इससे तीन फायदे उठाए हैं। पहला फायदा यह आता है कि हमारा भीतर वाला हिस्सा-जिसको हम 'अंत:करण' कहते हैं, इतना शुद्ध और पवित्र हो जाता है कि आदमी को हर समय एक वरदान मिलता रहता है, जिसको हम 'संतोष' कहते हैं।

अंदर की खुशी : एक दिव्य वरदान

मित्रो! खुशियों के तरीके दो हैं। एक खुशी बाहर से आती है-मसलन खाना। खाने के समय कोई जायकेदार चीज मिल जाए तो यह एक बाह्य खुशी है। साहब क्या खाकर आए? पेड़े खाकर आए, लड्डू खाकर आए, अच्छा ठीक और एक खुशी वो होती है कि आप सिनेमा देखकर आए। ये कौन-सी खुशियाँ हैं? ये चीजें मिलने की वजह से खुशियाँ होती हैं। ये खुशियाँ होती तो हैं, पर थोड़ी देर के लिए ही ठहरती हैं, फिर गायब हो जाती हैं। सिनेमा देखकर आए-गायब, मिठाई खाकर आए, गायब। थोड़ी देर में ही ये सारी खुशियाँ गायब हो जाती हैं। ये टिकाऊ नहीं होतीं। टिकाऊ चीज क्या होती है? जो चीज भीतर से निकलती है, उसका नाम है-'शांति'। शांति का ही दूसरा नाम संतोष है। शांति के बारे में जो आपने सुन रखा है, उस चैन को शांति नहीं कहते। कोई मुसीबत न आए, हल्ला-गुल्ला न मचे, कोलाहल न हो, इसे शांति नहीं कहते। नहीं साहब! शांति उसे भी कहते हैं कि काली कमली लेकर चले जाएँगे और कहीं गुफा में रहेंगे, जहाँ कोई झंझट, घोटाला न हो, कोई बोले-चाले नहीं। हर तरफ शांति हो। बेटे, ये मान्यता गलत है। यह शांति की परिभाषा नहीं है। शांति की प्राथमिक परिभाषा यह है कि आदमी को संतोष रहता है। संतोष किसको रहेगा? संतोष सिर्फ एक आदमी को रहेगा, जिसने अपने जीवन का क्रम ऐसा बना लिया है कि जिससे उसके अंदर अंतर्द्वंद्व नहीं रहते।

अंतर्द्वंद्व क्या है? अंतर्द्वंद्व बेटे दो साँड़ों की लड़ाई की तरह है। दो साँड़ों की लड़ाई देखी है न आपने? हाँ गुरुजी! जब दो साँड़ लड़ते हैं तो खेत को, दुकान को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं। एक बार तो दो खोमचे वाले बैठे थे और दो साँड़ लड़ते हुए आ गए। फिर क्या हुआ? उन्होंने खोमचे वालों का सामान फैला दिया और मुसाफिरों को धक्के मारे। और क्या हुआ? और गुरुजी! उसने दीवार में टक्कर मारी और धकेल वाले को उछाल दिया। एक दिन हमने खेत में लड़ते हुए साँड़ देखे। वो क्या करते थे? गुरुजी! वे दोनों ऐसे लड़े कि बेचारी गेहूँ की फसल और धान की फसल को चौपट करके धर दिया। लड़ते-लड़ते वे सब चौपट कर गए।

मित्रो! साँड़ कहाँ होते हैं? साँड़ हमारे भीतर रहते हैं। साँड़ कौन होते हैं? एक तो वे जिन्हें अवांछनीयता कहते हैं, अनैतिकता कहते हैं। बेटे, हमारे भीतर एक नैतिक पक्ष है और एक अनैतिक पक्ष है। दोनों के भीतर कोहराम मचता रहता है। दोनों के बीच लड़ाई चलती रहती है। यह लड़ाई कभी बंद नहीं होती। एक कहता है कि आप मान जाइए, दूसरा कहता है कि आप मान जाइए। दोनों ही नहीं मानते। हमारे भीतर जो शैतान बैठा हुआ है, वो भी नहीं मानता और अंदर बैठे भगवान् से कहते हैं कि आप ही चुप हो जाइए, तो वो भी नहीं मानता। दोनों के भीतर जो कोहराम मचता रहता है, अंतर्द्वंद्व चलता रहता है, इसकी वजह से हमारे भीतर अशांति पैदा होती है। हर जगह अशांति, हर जगह नाराजगी, हर जगह असंतोष—हमारे भीतर छाया रहता है।

अध्यात्म से क्या हो जाएगा? इस शिविर में मैं उस अध्यात्म को आपको सिखाने वाला हूँ, जो मुझे मेरे गुरु ने सिखाया है और उसका परिणाम नगद धर्म है। इससे आपको क्या मिलेगा? इससे आपको भीतर से एक ऐसी चीज मिलेगी, जिसे संतोष कहते हैं। संतोष किसे कहते हैं? बेटे, संतोष उसे कहते हैं जिसके कारण आदमी मस्ती में झूमता रहता है, खुशी से झूमता रहता है। आदमी की परेशानियाँ दूर हो जाती हैं। न आदमी को ट्रैंक्युलाइजर की गोलियाँ खानी पड़ती हैं, न ड्रिंक करना पड़ता है और न सिनेमा जाना पड़ता है। आदमी अपनी जिंदगी शांति से, चैन से जी लेता है। ऐसी शांति की जिंदगी, जिसमें बहुत गहरी नींद आती है। भगवान बुद्ध पूरे आठ घंटे सोया करते थे। उनकी नींद में एक और विशेषता थी कि जिस भी करवट एक बार हाथ धर कर सो जाते थे, सबेरे उधर ही उठते थे। सोते समय एक बार जिधर पैर रख लिया, सबेरे तक वह वहीं रहेगा, क्योंकि उन्हें बहुत गहरी नींद आती थी। नींद का मजा तो आपने लिया ही नहीं। आपने किसका मजा लिया—रोटी का मजा लिया। कभी आपको असली मजा लेना हो तो—नींद का होता है, उसे लेना। आज इसके बिना आदमी हैरान रहते हैं और कहते हैं कि नींद ही नहीं आती। नींद किसको आएगी? हरेक आदमी को आएगी, जिसका अंतर्द्वंद्व बंद हो जाएगा। जिनके अंदर के साँड़ लड़ना बंद कर देंगे। जो एक रास्ते पर चलेंगे।

क्रांतिकारी अध्यात्म की ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ

मित्रो! अगर आपको यह पसंद हो कि आपको संतोष हो और संतोष की वजह से शांति मिले, तो आपको इस अध्यात्म

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को अपनाना होगा। इसमें फसल भीतर से उगना शुरू कर देती है, जिसको आप अतींद्रिय क्षमता कहते हैं। अतींद्रिय क्षमता क्या होती है? दूरदर्शन की क्षमता—दूर देखने की क्षमता, दूर श्रवण की क्षमता। हमारे अंदर टेलीविजन लगे हुए हैं, वायरलेस लगे हुए हैं। इतने सारे वैज्ञानिक उपकरण लगे हुए हैं, जो साधारण आदमी को नहीं मिल सकते, लेकिन आप को मिल सकते हैं। शर्त केवल यह है कि आपके भीतर जो कोहराम मचा रहता है, उसे आप बंद कर दें।

साथियो! जो अध्यात्म हम आपको सिखाएँगे, उसमें यह कोहराम बंद हो जाएगा। जब आपके अंदर का कोहराम खत्म हो जाएगा, तब हर जगह आपको जिंदगी का जायका, जिंदगी का मजा मिलेगा। जिंदगी का मजा संतोष के ऊपर टिका हुआ है, खुशी के ऊपर टिका हुआ है। आप सारे कार्य खुशी के लिए ही तो करते हैं! खुशी के लिए सिनेमा देखते हैं। खुशी के लिए बच्चों के ब्याह में सम्मिलित होते हैं, लेकिन खुशी का बेहतरीन स्वरूप वो है, जिसको हम संतोष कहते हैं। संतोष अगर आपको मिल सकता है, तब आपके चेहरे पर हर समय खुशी दिखाई पड़ेगी। चेहरे पर आपको क्या मालूम पड़ेगा? दो बातें मालूम पड़ेंगी—एक तो आपको गहरी नींद आया करेगी और दूसरा आपके चेहरे पर गुलाब के फूल की तरह खुशी दिखाई पड़ेगी। फिर आपकी खीझ, आपकी झल्लाहट, आपकी नाराजगी सब दूर हो जाएगी।

मित्रो! वो अध्यात्म जो हम आपको सिखाने वाले हैं और जिसको हमारे गुरु ने सिखाया है, आपकी जिंदगी में से खीझ खत्म कर सकते हैं। अगर ये सिद्धि आपको मंजूर हो तो आइए हमारे साथ, हम आपको सिखाएँगे। आप उसे सीखिए और कीमत चुकाइए। आदमी का संतोष जो भीतर से निकलता है, प्रतिभा जो भीतर से निकलती है, प्रखरता जो भीतर से निकलती है—सब भीतर से निकलती हैं। 'भीतर' से आप क्या समझते हैं? जमीन के भीतर क्या छिपा हुआ है? बाहर तो मिट्टी है, पर जरा-सा खोद दें तो मिलेगा—पानी। और जरा गहरा खोदें तो पेट्रोल मिलेगा। जहाँ आप बैठे हैं, अगर उस पाँच फुट जगह में मशीन से खुदाई करना शुरू कर दें और जहाँ तक जमीन है, वहाँ तक गड्डा कर डालें, तो उसमें करोड़ों, अरबों, खरबों रुपए की दौलत मिल जाएगी। बेटे, बाहर तो मिट्टी है, पर भीतर संपत्ति है, बहुमूल्य संपदा है।

मित्रो! आदमी के व्यक्तित्व के भीतर जाने क्या-क्या भरा पड़ा है। आदमी के बाहर—यह जो आपको दिखाई पड़ता है, यह रोटी खाता रहता है, टट्टी-पेशाब करता रहता है। यह तो इसका लिफाफा है, जो पैसा कमाता रहता है, सिनेमा देखता रहता है, बच्चे पैदा करता रहता है—यह लिफाफा है। लिफाफा भी होता है और उसमें भी जंजाल बन जाते हैं। कैसे? अरे भाई! जैसे हमारे जुएँ पड़ जाते हैं। जुओं के लिए कोई मकान है? कोई घर-गृहस्थी है? कोई खेती-बाड़ी है? कोई भी नहीं है। वे इसी में गुजारा कर लेते हैं। इसी तरह जुएँ के तरीके से आप अपने जीवन का महत्त्व समझते हैं। सिर में से कितने जुएँ निकले? पाँच। ये पाँच जुएँ क्या होते हैं? ये पाँच बच्चे हैं। जुएँ और बच्चे की बात एक ही होती है—बिल्कुल एक ही बात। बच्चे हमारा बहिरंग जीवन है।

अंतरंग जीवन क्या है? अंतरंग जीवन को तो आपने कभी देखा भी नहीं। उसे कभी छुआ भी नहीं। अंतरंग जीवन की कभी हवा भी नहीं लगी आपको। अंतरंग जीवन की आपको कभी गंध भी नहीं आई। आपने अंतरंग जीवन का स्वरूप ही नहीं देखा। आदमी के अंतरंग का जो स्वरूप है, अगर उसे आप देख पाते, तो आपकी जिंदगी में मजा आ जाता। अगर आप अपने भीतर वाले को शानदार बना लेते, तो मैं यह कहता हूँ कि आपको दो शक्तियाँ मिलतीं। एक तो आपको गहरी नींद आती। गुरुजी! आपको गहरी नींद आती है? हाँ बेटे, हमको ऐसी गहरी नींद आती है कि हम आठ बजे यहाँ से जाते हैं और बिस्तर पर लेटते ही साढ़े आठ बजे तक गहरी नींद में चले जाते हैं, फिर साढ़े बारह बजे हमारी आँख खुल जाती है और एक बजे तक आधे घंटे में हम नहा-धोकर अपना काम चालू कर देते हैं, भजन-पूजन करते हैं। हम कितने घंटे सोते हैं? चार घंटे सोते हैं। चार घंटे में हमको इतनी गहरी नींद आती है कि चाहे जमीन फट जाए या आसमान टूट जाए, हमें सामान्य घटनाएँ प्रभावित नहीं करतीं।

संतोष धन : सबसे बड़ी पूँजी

हमें इतनी गहरी नींद क्यों आती है? क्योंकि हमें कोई चिंता नहीं है। आपके शांतिकुंज की हमें बिलकुल चिंता नहीं, गायत्री तपोभूमि की हमको बिलकुल चिंता नहीं। आपके युग निर्माण की हमको बिलकुल चिंता नहीं। क्यों? क्योंकि हम भगवान पर विश्वास करते हैं। आपको चिंता क्यों है? क्योंकि आप भगवान पर विश्वास नहीं करते। भगवान का नाम लेते हैं, पर भगवान पर विश्वास नहीं करते। हम भगवान पर विश्वास करते हैं और ये समझते हैं कि सारी दुनिया उसी के चक्र पर घूम रही है और हम भी उसी के इशारे पर कठपुतली की तरह काम करते हैं और उसको जो काम करना होगा, वह ठीक हो जाएगा। इसीलिए हमें पूरी नींद आती है और रात को जरा भी असंतोष नहीं होता और चिंता बिलकुल नहीं आती। और क्या रहता है? बेटे, हमारे चेहरे पर मुस्कराहट छाई रहती है।

मित्रो! गाँधी जी के चेहरे पर सदैव मुस्कराहट रहती थी, वे जल्दी-जल्दी हँसते रहते थे। वे मजाक भी करते थे। गाँधी जी से एक बार पूछा कि आप तो बार-बार हँसते हैं। उन्होंने कहा—हँसेंगे नहीं तो जिएँगे कैसे। हँसने के ऊपर ही

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org Akhand Jyoti - May, 2002
Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तो हमारी जिंदगी कायम है। जो आदमी हँसते नहीं, वे मनहूस होते हैं। मनहूस माने राक्षस, शैतान—जिसको देखकर बच्चे भाग जाते हैं। यह कौन आ गया? मनहूस आ गया। मनहूस कैसा होता है ? जैसे—पापा। पापा किसे कहते हैं? मनहूस को। पापा जब घर में घुसेगा तो सब पर हावी होता चला जाएगा। बीबी पर हावी, बच्चों पर हावी, साइकिल पर हावी, खाने पर हावी, थाली पर हावी—सब चीजों पर हावी होता चला जाएगा। यह कौन है? मनहूस है, राक्षस है जो हँसना-हँसाना नहीं जानता।

मित्रो! अगर आपके भीतर कदाचित् अध्यात्म आ गया तो आपके चेहरे से मिठास बरसेगी। आपकी वाणी से रस बरसेगा। आपके व्यवहार में न जाने क्या-क्या शानदार चीजें आएँगी। अध्यात्म उस चीज का नाम है जो आपके भीतर संतोष लाकर के देगा। यह हुई सिद्धि नंबर एक। अगर आपको यह सिद्धि स्वीकार हो तो चलिए फिर हम आपको साधना बताएँगे। गुरुजी! साधना बताने में तो बहुत टाइम लग जाएगा ? नहीं बेटे ये तो मिनटों की बात है। आपरेशन में क्या देर लगती है ! दवा खिलाने में क्या देर लगती है ! इंजेक्शन तो एक मिनट में लगा देंगे। और क्या करेंगे? खान-पान का परहेज रखते हुए मरीज ठीक हो जाएगा। असली इलाज तो बेटे परहेज है। नहीं साहब! सुई है। सुई में कितनी ताकत है? सुई में तो बेटे जरा भी ताकत नहीं है, पर परहेज में बहुत है।

अच्छा, अब आप क्या पढ़ा रहे हैं। अब बेटे हम परहेज पढ़ा रहे हैं और फिलॉसफी पढ़ा रहे हैं। और आगे क्या बताएँगे—मंत्र? मंत्र तो कभी भी बता देंगे। मंत्रों में क्या देर लगती है। यह तो सेकंड का काम है। जब आप कहेंगे, चलते-फिरते तभी बता देंगे। अभी असली बात तो उसकी 'फिलॉसफी' सीखिए। बेटे, हम आपको वो अध्यात्म सिखाने के इच्छुक थे, जिसको अगर आप सीखना चाहें तो आपको एक और चीज मिल सकती है। इसको सीखने पर आपको एक और सिद्धि मिलेगी। वो सिद्धि बाहर की होगी। पहली सिद्धि भीतर से मिलेगी और उसका नाम है—संतोष। संतोष की वजह से आपका स्वास्थ्य, संतोष की वजह से आपकी खुशी, संतोष की वजह से आपकी जवानी, संतोष की वजह से आपकी दबी हुई अतींद्रिय क्षमताओं का विकास ये सब के सब भीतर से मिलेंगे।

और बाहर से—दुनिया से क्या मिलेगा? दुनिया से भी बेटे आपको एक चीज मिलेगी। दुनिया आपको कैसे देगी? दुनिया कभी आपने देखी है? मोटर साइकिलें जब भागती हैं, तो उसके पीछे-पीछे पत्ते भागते हैं। आपने देखे हैं कि नहीं देखे ? पत्तों को कोई बुलाता है क्या? वे अंधाधुंध भागते हुए चले आते हैं। अरे बाबा! तुम कहाँ जा रहे हो? हम तो कहीं नहीं जा रहे, इस दौड़ती हुई मोटर के साथ जा रहे हैं। ये मोटर कौन है, तुम्हारी मौसी है या रिश्तेदार? कोई नहीं है। जब ये मोटर भागती है तो इसकी कशिश हमें खींचती है । रेत के कण, धूल, पत्ते इसके पीछे-पीछे भागते-फिरते रहते हैं। भीतर वाली कशिश और भीतर वाली मैग्नेट जब विकसित होती है तो दुनिया बेटे, आपको एक उपहार देती है और उस उपहार का नाम है—'सम्मान'। बाहर की इस सिद्धि को पाकर आप सम्मानित व इज्जतदार आदमी बन जाएँगे।

सम्मान बरसेगा

मित्रो! जो अध्यात्म मैं आपको सिखाने वाला हूँ, मालूम नहीं कि आप सीखेंगे कि नहीं और हम सफल होंगे कि नहीं, लेकिन यदि आपने सीख लिया तो एक चीज और आपको मिलेगी। दुनिया की दृष्टि से आपको सम्मान मिलेगा। गुरुजी! वैसे तो सम्मान किसी को मिलता नहीं, हाँ चापलूसी जरूर मिलती है। हाँ बेटे, चापलूसी तो खरीदी भी जा सकती है। पैसे दीजिए, चापलूसी खरीद लीजिए। चापलूसी आप कहीं से भी खरीद लीजिए। भाँड़ों से, रंडियों से, चमचों से—किसी से भी चापलूसी खरीद लीजिए और अपना फोटो छपवा लीजिए। लेकिन आप जो चाहते हैं, वह सम्मान नहीं है। वह तो चापलूसी है और जब आपकी खरीदने की ताकत कम हो जाएगी, तो ये नाराज हो जाएँगे। अभी रंडी आपको मदिरा पिलाती है, पान खिलाती है और कहती है कि आइए, आप बहुत दिन में आए, लेकिन जब आपके पैसे खत्म हो जाएँगे, ये लात मारेगी और कान उखाड़ देगी।

बेटे, जिसे आप इज्जत कहते हैं, वह पैसे से नहीं खरीदी जा सकती है। मैं जिस सम्मान की बात कहता हूँ, वह वो चीज है जो उन लोगों पर बरसती है, जिन्हें हम अध्यात्मवादी कहते हैं। उनके ऊपर सम्मान बरसता है, श्रद्धा बरसती है और उससे जो फायदा होता है; उसे आप नहीं समझ सकते।

मित्रो! श्रद्धा के साथ, सम्मान के साथ एक और चीज जुड़ी होती है और उसका नाम है—सहायता। श्रद्धा के साथ सहायता जुड़ी होती है। श्रद्धा आपके साथ में आएगी, अगर जन-समाज का सम्मान आपके प्रति होगा, तो आपके प्रति बेटे सहयोग जरूर आएगा। नानक के प्रति श्रद्धा थी, अतः लोगों का सहयोग आया। उनका स्वर्ण मंदिर बना हुआ है, जो इसका साक्षी है। बुद्ध के प्रति श्रद्धा पैदा हुई और उनके प्रति लोगों का सम्मान पैदा हुआ। अशोक ने तो कमाल ही कर दिया था। आम्रपाली से लेकर अंगुलिमाल तक कौन-कौन जाने कितने आदमियों का सहयोग इस कदर बरसता था कि मैं आपसे क्या कहूँ? जहाँ सम्मान होगा, वहाँ सहयोग अवश्य बरसेगा।

—क्रमशः (समापन अगले अंक में)

❁

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

भगवान के अनुदान किन शर्तों पर मिलते हैं

(समापन किश्त)

गतांक से आगे .....

मित्रो! जहाँ सम्मान होता है, वहाँ सहयोग आता है। महापुरुषों पर सहयोग बरसा, गाँधी जी पर सहयोग बरसा। अरे, मैं तो ये कहता हूँ कि अनेक आदमियों पर सहयोग बरसा है। बाटा एक मोची का नाम है, जिसके माता-पिता का देहांत हो गया था। बारह-तेरह साल का यह लड़का रह गया। कुछ पढ़ा-लिखा भी नहीं था। बाप जो था, पुराने जूतों की मरम्मत करता था। वही काम बेचारा वो भी करने लगा। जो भी आता, यही पूछता कि तुम्हारे पिता जी दिखाई नहीं पड़ते? लड़का कहता कि हमारे पिता जी का स्वर्गवास हो गया, अब आप ही हमारे पिता जी हैं। आपसे रहम तो नहीं माँगते, पर आपसे श्रम माँगते हैं। आप चाहें तो अपने जूतों की मरम्मत हम से करवा लिया कीजिए, उनकी पॉलिश हमसे करवा लिया कीजिए। इससे आपकी सहायता भी हो सकती है और हमारा गुजारा भी हो सकता है। लोगों ने अपने चप्पलों की मरम्मत करवाना शुरू किया। जूतों पर पॉलिश करने को दी। उसने इस वफादारी से मरम्मत की कि लोग बाग-बाग हो गए। सबको लाभ हो गया। उनने औरों से कह दिया कि ऑफिस में किसी को जूतों की पॉलिश करानी हो, तो उस लड़के से कराना। शानदार लड़का है। इतनी तबियत से पॉलिश करता है कि चार दिन तक जूते की पॉलिश खराब नहीं होती। मरम्मत कराना हो, तो उसी से कराना।

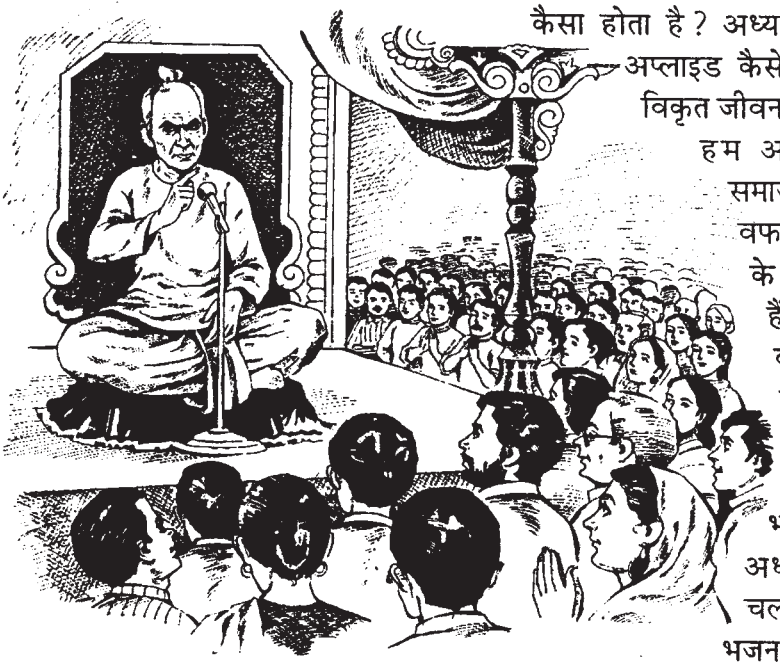

सबने प्रशंसा करनी शुरू कर दी। क्या नाम था? बाटा। कौन-सा बाटा? जिसका आज करोड़ों रुपये का जूते का बिजनेस चलता है। जब लड़का बड़ा हुआ, तो लोगों ने कहा कि बाटा हमारे लिए अच्छे जूते बना सकते हो। हाँ साहब! हम अच्छे जूते बना देंगे, पर पैसा नहीं है हमारे पास, आप पैसा दीजिए, राहत दीजिए। राहत में लोगों ने चमड़ा ला दिया और सामान ला दिया। उसने भी तबियत से अच्छे-अच्छे जूते बना दिए।

सामाजिक जीवन का अध्यात्म

मित्रो! ईमानदारी, वफादारी और जिम्मेदारी तीनों को मिलाकर सामाजिक जीवन में अध्यात्म हो जाता है। अध्यात्म कैसा होता है? अध्यात्म को जीवन में अप्लाइड कैसे करते हैं? अपने विकृत जीवन में संयम के रूप में हम अप्लाइ करते हैं। समाज में हम जिम्मेदारी, वफादारी और ईमानदारी के रूप में प्रयुक्त करते हैं। जीवन में इन तीनों को समाविष्ट कर लेते हैं, तो वह अध्यात्म हो जाता है। नहीं साहब, भजन और माला को अध्यात्म कहते हैं। चल..... सब बात में भजन लगा देता है, भजन भी दिमाग का एक खेल है। वह अपने अंतर्मन की एक कसरत है। कसरत कई तरह की होती है। अंतर्चेतना के व्यायाम का एक नाम वह भी है, जिसको आप मंत्र कहते हैं। वह भी अध्यात्म का एक हिस्सा है, लेकिन केवल वही सारा अध्यात्म नहीं हो सकता। वह एक हिस्सा है। मंत्र भी एक हिस्सा है। समस्त अध्यात्म मंत्र नहीं हो सकता है।

मित्रो! बाटा ने जूतों की मरम्मत से उन्हें बनाना शुरू कर दिया और लोगों ने जूता माने बाटा, बाटा माने जूता कहना शुरू कर दिया। उसका व्यापार बढ़ता हुआ चला गया। मैं क्या कहूँ आपसे, करोड़ों रुपये का व्यापार उसने

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org Akhand Jyoti - Julyl, 2002

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किया। जब मैं अफ्रीका गया, तो वहाँ भी बाटा की दुकानें देखीं। हरेक देश में बाटा छाया हुआ है। अफ्रीका में बिकता है, हिंदुस्तान में भी बिकता है। मैंने देखा उसकी नेट आमदनी गवर्मेंट के टैक्स देने के बाद में दो करोड़ के करीब बच जाती है। सहयोग से इस तरह बाटा फैलता हुआ चला गया।

गुरुजी! आप अध्यात्म से अनुदान के विषय में कह रहे थे? बेटा, मैं कह रहा था कि जब सम्मान आता है, तो सहयोग भी आता है : श्रद्धा आती है। आप क्यों नहीं सुनते? हमें तो कोई जरूरत नहीं है। हमारे सब विरोधी हैं। विरोधी भी बेटे इज्जत करते हैं। क्रांतिकारियों को बेटे अँगरेजों ने फाँसी दे दी थी। उनको फाँसी देने वाले मजिस्ट्रेट ने, उनके जो रिमार्क लिखे हैं, उसे पढ़कर देखिए आप। उन्होंने क्या रिमार्क लिखे हैं? उन्होंने ये रिमार्क लिखे हैं कि हम इनकी इज्जत करते हैं, क्योंकि उन्होंने जिस काम के लिए ये गुनाह किए, वो मकसद बहुत ऊँचे थे। इन्होंने गुनाह किए, इसलिए हमारा संविधान, हमारा कानून कहता है कि इन्हें जेल में फाँसी लगनी चाहिए, इसलिए हमने फाँसी लगवा दी, पर फाँसी लगाते हुए हम इनकी इज्जत करते हैं।

सिद्धियों के कई प्रकार—सहयोग एवं अनुदान

मित्रो! आपको इज्जत मिल सकती है। किससे? उस अध्यात्म से, जो हम आपको सिखाने वाले हैं। उससे आपको इज्जत मिलेगी, तो आप देखना आपको सहयोग भी मिलेगा। सहयोग कहाँ से मिलेगा? बेटे, हमको पहले मिली है इज्जत, फिर हमको मिली सहायता। सहायता नहीं मिलती, तो हम कहाँ से यह सब काम चला रहे हैं, बताइए? हमारे कितने जीवनदानी मुट्ठी में हैं। ब्रह्मवर्चस एक, ब्रह्मवर्चस में कितने आदमी काम करते हैं? वे क्या हैं? आठ-दस तो वे हैं, जो पोस्ट ग्रेजुएट हैं, पी. एच-डी. हैं, मेडिकल के एम. बी. बी. एस. हैं, एम. एस हैं, एम. डी. हैं। कितने लड़के काम करते हैं। इनको नौकरी देकर तो देखिए। एक-एक व्यक्ति कम-से-कम पंद्रह-पंद्रह सौ रुपये की नौकरी छोड़कर आया है। कितने आदमी हैं? बीस हैं। कितने रुपये लगेंगे? तीस हजार रुपये महीने लगेंगे। पहले नौकरी दीजिए, पीछे काम लेना। यह सब कहाँ से आता है : श्रम के रूप में सहयोग, अकल के रूप में सहयोग, भावनाओं के रूप में सहयोग। आप सहयोग का अर्थ केवल पैसा समझते हैं।

मित्रो! अगर आपका यही ख्याल है कि सहयोग का अर्थ पैसा होता है, तो चलिए मैं अभी देता हूँ। गाँधी जी पर भी पैसा आया था, दूसरों पर भी पैसा आया था, तीसरों पर भी पैसा आया था। विनोबा पर कितनी जमीन आ गई थी? करोड़ों एकड़ जमीन भूदान में आ गई थी। मैं क्या कहूँ बेटे, कोई इतनी जमीन खरीदता, तो दिवाला निकल जाता। हमने जरा-सी जमीन खरीदी है, डेढ़ लाख लग गया और उन्होंने कितनी जमीन खरीदी? करोड़ों रुपये की जमीन खरीदी विनोबा ने, भूदान यज्ञ में सहयोग दिया था। आपको सहयोग मिलता है? किसी का नहीं मिलता। धर्मपत्नी का मिलता है? नहीं साहब, उसका भी नहीं मिलता। माता जी का मिलता है? नहीं माता जी का भी नहीं मिलता। पिता जी का? पिता जी का भी नहीं मिलता। किसी का मिला सहयोग? नहीं साहब, सब बड़े चालाक हैं और सब दुनिया बेईमान है। हाँ, आपका कहना बिल्कुल सही है। दुनिया तो है ही चालाक, लेकिन हर आदमी के भीतर एक और माद्दा है। कौन-सा वाला? जो दूसरों की सहायता करता है। आप पहले अपना सम्मान प्राप्त कीजिए।

मित्रो! लोग सम्मान नहीं देते, सम्मान लिया जाता है। कैसे? उस अध्यात्म से जो हम आपको सिखाने वाले हैं और समझाने वाले हैं। उससे आप क्या करेंगे? उससे उस अध्यात्म की कीमत पर आप जनता का सम्मान खरीदेंगे। फिर क्या होगा? फिर आप पर सहयोग बरसेगा। ये क्या हो गया? ये सिद्धि नंबर दो है। ये किसकी सिद्धि हो गई। ये बाहर की सिद्धि हुई। ईश्वर, जीव और प्रकृति तीन होते हैं। मैं पहले जीव की बात कह रहा था। जीवात्मा के भीतर से- हमारे अंतर्मन से जो सिद्धियाँ निकलती हैं, अभी मैं उसका हवाला दे रहा था। अब मैं प्रकृति का हवाला दे रहा हूँ। प्रकृति के साथ समाज जुड़ा हुआ है। बहिरंग से आपको तरह-तरह के सहयोग मिलेंगे, सहायता मिलेगी, तरह-तरह की प्रसन्नताएँ मिलेंगी, तरह-तरह के भाव मिलेंगे।

साथियो! जो सिद्धांत, जो अध्यात्म मैं सिखाने वाला हूँ और जिसके लिए मैंने आपको बुलाया है, उस अध्यात्म की सफलता पर मेरी उम्मीदें टिकी हुई हैं और जिस सफलता के आधार पर आपका भविष्य टिका हुआ है। आप अगर जंजाल में फँसेंगे, तो मरेंगे। नहीं साहब, मंत्र जपेंगे और पैसा कमाएँगे। यह सब झूठ है। अभी भी यही जालसाजी लिए बैठा है। जादूगरी लिए बैठा है। जादू क्या होता है? मिट्टी में फूँका, हो गया जादू। यही है तेरा अध्यात्म? बाजीगर कहीं का, बाजीगरी सीखने आया है। क्या सिखाएँ? बाजीगरी सिखाइए, मिट्टी में फूँक मारिए और पैसा मँगाइए। गायत्री मंत्र पढ़िए और बेटा पैदा कर दीजिए। हट मूर्ख कहीं का, ये क्या करता रहता है बेअक्ली की बात।

अध्यात्म बेअक्ली का नाम नहीं है। बेअक्ली अलग बात है और अध्यात्म अलग बात है। जिससे आप फायदा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उठा सकते हैं, जिसको पाकर हिंदुस्तान शानदार हुआ था और आप भी शानदार हो सकते हैं। वह अध्यात्म अलग है और ये बेअक्ली अलग है। कौन-सी ? जो मैं शुरू में ही कह रहा था मनुहार और उपहार की। मनुहार कीजिए और उपहार पाइए। बेटे, ये बच्चों का धंधा है। अगर आप बच्चे हैं, तो मैं नहीं कह सकता और छोटी चीजों तक भी मैं नहीं कह सकता, पर अगर बड़ी चीजों की बात है, तो बड़े लोगों की तरह से आप इजहार करना शुरू कीजिए।

दैवी अनुग्रह : भगवान की सिद्धि

यहाँ तक दो बातें हो गईं। एक जीव की शक्ति हो गई और एक प्रकृति की सिद्धि हो गई। एक सिद्धि और बाकी है। वह सिद्धि कौन-सी है ? वह सिद्धि भगवान की सिद्धि है, तीसरी सिद्धि है। भगवान की सिद्धि किसे कहते हैं ? जिसे हम दैवी अनुग्रह कहते हैं। हाँ, दैवी अनुग्रह भी आते हैं। दैवी अनुग्रह हो सकते हैं ? हाँ बेटे, दैवी अनुग्रह भी होते हैं। दैवी अनुग्रह भी आदमी को मिलते हैं, परंतु हरेक को नहीं मिलते। गुरु जी जो माँगेगा, उसे भी नहीं ? नहीं बेटा, सबको नहीं मिलते। दैवी अनुग्रह प्राप्त करने की भी शर्त है। कौन-सी शर्त है ? अब हम आपको यही समझाने वाले हैं। जिसके लिए हम आपको अब मजबूर करने वाले हैं, जिसके लिए हम दबाव डालने वाले हैं, जिसके लिए हम जोर लगाते हैं, वह है पात्रता का विकास। जिस दिन आपकी पात्रता विकसित हो जाएगी, उस दिन क्या होगा ? दैवी अनुग्रह बरसेंगे।

मित्रो ! दैवी अनुग्रह बरसते हैं, माँगे नहीं जाते। ये हवा जो है, ऑक्सीजन लेकर आती है। इतने काम की ऑक्सीजन आपको दी जाती है कि मैं क्या कहूँ आपसे। कितने दाम की ऑक्सीजन है ? डॉक्टर साहब से पूछिए कि ऑक्सीजन का सिलेंडर कितने का मँगाया था ? छह सौ पचास रुपये का। एक आदमी के लिए कब तक एक सिलेंडर चल सकता है ? अगर एक आदमी सारे दिन लगाए रखे तो दो-तीन दिन में खत्म हो जाएगा। हवा आपकी नाक में ऑक्सीजन की नली लेकर आती है और हर दिन लगभग तीन सौ रुपये की ऑक्सीजन आपको फोकट में दे जाती है। बेटे, आप देवता का अर्थ समझते नहीं हैं। देवता कहाँ से आते हैं ? सूरज की धूप कहाँ से आती है। सूरज की धूप का दाम निकालिए। हमारे यहाँ लाइट जलती है। सौ वाट का बल्ब जलता है, यह कितनी बिजली कंज्यूम करता है ? अपने मीटर को देख लें। हमारे यहाँ जो बिल आता है, हजार रुपये से ज्यादा का आता है। हमारे यहाँ हजार-डेढ़ हजार रुपये की बिजली जलती है। हम देखते हैं कि रात में कितनी देर बिजली जलती है, तो कहते हैं कि भाई बंद करो बत्ती। आपने सौ वाट का बल्ब लगा रखा है, चालीस वाट का लगाइए, पंद्रह का लगाइए। हम किफायत करते हैं। सूरज कितने हॉर्स पावर का है ? कितने कैंडिल का आप समझते हैं सूरज को ? वह आपके मकान पर जलता है। आप हीटर जलाते हैं, कितनी बिजली जल जाती है ? ढाई रुपये की और ये हीटर कितने रुपये में आता है ?

मित्रो ! आसमान से लाइट बरसती है, रोशनी बरसती है, ऑक्सीजन बरसती है, जीवन बरसता है, प्राण बरसता है, सौंदर्य बरसता है। पानी की तरह से जाने क्या-क्या बरसता है। सब कुछ बरसता है। यह सब भगवान बरसाता है, आदमी नहीं बरसाता। ये सब अनुग्रह भी बिना कीमत के मिलते हैं। सुकरात के पास एक शक्ति थी। उसका नाम उन्होंने डेमॅन रखा था। सुकरात उसके ऊपर पूरी तरह से निर्भर रहते थे। डेमॅन ऊपर से आता था और सहायता करता था। विक्रमादित्य के बारे में भी मैंने सुना है कि उनके पास भी शक्तियाँ आती थीं और उनकी मदद करती थीं। बेटे, कितने देवता होते हैं, जो आदमी की सहायता करते हैं। वे इतनी सहायता करते हैं कि मैं क्या कहूँ आपसे। उनकी सहायता के मारे आदमी धन्य हो जाता है।

देवता कौन होते हैं ? देवता अड़ोसी-पड़ोसी नहीं होते। वे संबंधी भी नहीं होते। देवता उन शक्तियों का नाम है, जो आदमी के ऊपर बरसती हैं और आदमी को धन्य करती हैं। किस-किसके ऊपर देवता बरसे ? बेटे, ज्यादा तो नहीं कहता मैं, औरों का हवाला तो नहीं देता, बस अपना हवाला देता हूँ कि हमारे ऊपर कौन बरसता है। सुकरात के तरीके से एक डेमॅन हमारे भीतर भी बरसता है और सारा-का-सारा अनुग्रह उसी से काम करता है। कैसा अनुग्रह है ? आपको मालूम है उसमें अक्ल का अनुग्रह भी है। अक्ल कहाँ से बरसती है ? अक्ल कहाँ से आती है ? आप कौन से स्कूल में पढ़े हैं ? बेटे, कहीं भी नहीं पढ़े हम। ये जो सारी अक्ल बरसती है, वो आसमान से बरसकर हमारे दिमाग में घुस जाती है और पैसा कहाँ से बरसता है ? पैसा बेटे, आसमान से बरसता है और हमारी तिजोरी में घुस जाता है। इससे हम कहते हैं कि ठहरिए अभी तिजोरी बंद है, चाबी नहीं मिल रही है। चाबी नहीं मिल रही है तो क्या हुआ, हम ऐसे ही घुस जाएँगे और पैसा तिजोरी से निकाल लाएँगे।

डेमॅन—गुरु-देवता

ये कौन घुसाता है ? डेमॅन। डेमॅन कौन-सा होता है ? डेमॅन कहते हैं भगवान को। आपके डेमॅन का क्या नाम है ? अपने गुरु को हम डेमॅन कहते हैं। गुरु क्या होता है ? अरे बेटे, वह भगवान है। भगवान हमको देता है। हरेक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को वह नहीं दे सकता। आपका गुरु हमको दे देगा? नहीं बेटे, आपको नहीं देगा। गुरु जी आप हमको अपने गुरु जी का साक्षात्कार करा दें। हाँ बेटे, हम दर्शन तो आपको करा देंगे, लेकिन उससे क्या फायदा होगा? जैसे ही दर्शन करेंगे, वैसे ही वे पैसा दे देंगे। चल बेहूदा कहीं का, इसीलिए तू दर्शन करेगा। देख मैं कुछ नहीं देता। उदाहरण के लिए बैंक में जाइए और कहिए कि मैनेजर साहब! हाँ, हम आपका दर्शन करेंगे, तो आप दर्शन कीजिए न। हाँ साहब, दर्शन हो गए आपके। अब जाइए आप। नहीं साहब, हम जिस काम से आए थे, जिस मनोकामना को पूरी करने के लिए आए थे, उस मनोकामना का क्या हुआ? हमको पंद्रह हजार रुपये दे दीजिए। आपका बैंक में एकाउंट है? नहीं साहब! बैंक में तो कोई एकाउंट नहीं है, तो फिर किस बात के माँगते हैं। दर्शन की फिलॉसफी नहीं समझते और आ गए दर्शन करने। तो हो गया हमारा दर्शन, जाइए। नहीं साहब, अभी तो दर्शन नहीं हुआ। हम कौन हैं? राजेश खन्ना हैं, जो दर्शन करने को आए हैं। बेकार की बातें करता है। यही समझता है कि हम देखेंगे और देख करके निहाल हो जाएँगे। देखने से कुछ भी नहीं होगा।

आप स्वर्ग देखेंगे या नरक, चलिए हम दिखा लाते हैं। अच्छा चलिए पहले लक्ष्मी जी के दर्शन करते हैं। स्टेट बैंक में जब नोटों के बंडल आते हैं, तो खुलते हैं और रख जाते हैं। देखिए, लक्ष्मी जी के दर्शन कीजिए। दर्शन कर लिए, अब आप जाइए। फलाने जी का दर्शन करेंगे, ढिकाने जी का दर्शन करेंगे, बस दर्शन ही दिमाग में सवार हो गया है। एक तो वो वहम सवार हो गया था कि मनुहार करेंगे और उपहार पाएँगे। अब एक और वहम आ गया कि दर्शन करेंगे और निहाल हो जाएँगे। बहुत करेंगे दर्शन? दर्शन की फिलॉसफी समझते नहीं और दर्शन के लिए कहते हैं। दर्शन करने का मतलब क्या है जानते हैं आप? गाँधी जी का दर्शन जिन्होंने किया था, उनका नाम था नेहरू। गाँधी जी का दर्शन जिन्होंने किया, उनका नाम था पटेल। गाँधी जी का दर्शन जिन्होंने किया, उनका नाम था मालवीय। गाँधी जी का दर्शन जिन्होंने किया, उनका नाम था अमुक और अमुक। उनका दर्शन तो हमने भी किया था। अच्छा गाँधी जी का दर्शन किया था तो फिर क्या हुआ आपका? अरे साहब! चप्पल खो गई और हमारी जेब कट गई, जब गाँधी का दर्शन करने गए थे। दर्शन करने गए थे या भाड़ में?

अध्यात्म है साइंस ऑफ सोल

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? आपको आध्यात्मिक जीवन में पात्रता का विकास करना होगा। तभी आवाज की प्रतिध्वनि की भाँति भगवान के अनुग्रह बरसते हैं और आदमी अपनी सामर्थ्य से अधिक काम करने में समर्थ हो जाता है। बड़े-से-बड़े काम करने के लिए, अपने लिए और पराये के लिए कुछ करने में वह समर्थ हो जाता है। मेंहदी हम पीसते हैं दूसरों के फायदे के लिए, पर हम स्वयं निहाल हो जाते हैं। ऐसा है अध्यात्म, जो मैं आपको सिखाने वाला था। इस अध्यात्म का बेस बेटे एक ही है। क्या बेस है कि आप अपने व्यक्तित्व को ठीक करें। अपने भीतर वह कशिश पैदा कीजिए। कौन-सी? जिससे जो चीज आप पाना चाहते हैं, पा सकें। इसे क्या कहते हैं? अध्यात्म इसी का नाम है। जो अध्यात्म आपने पढ़ा है, वह अध्यात्म नहीं है। अध्यात्म माँगने की विधा का नाम नहीं है। बाहर से पाने की विधा का नाम नहीं है। अध्यात्म किसे कहते हैं? अध्यात्म कहते हैं, साइंस ऑफ सोल को, सोल की साइंस को। सोल का हम डेवलपमेंट कैसे कर सकते हैं, सोल को परिष्कृत कैसे कर सकते हैं? सोल को हम शानदार कैसे बना सकते हैं, जिससे बाहर की चीजें खिंचती हुई चली जाएँ।

मित्रो! हमारा अपना मैग्नेट सुरक्षित करने की कला का नाम अध्यात्म है। अपना मैग्नेट जब खींचता है, तो ये बाहरी चीजें खिंचती हैं। प्लांट जब खींचते हैं, तो बादल बरसते हैं। बादलों का मैग्नेट नहीं है। पेड़ जब खत्म हो जाते हैं, तो पानी बरसना बंद हो जाता है। पेड़ों का मैग्नेट ही उन्हें खींचता है। खजाने जब पैदा होते हैं, तो इसके अंदर जो लोहा होता है, वो दूर-दूर तक खींचता रहता है और खजाने में अपने पास जमा कर लेता है। मैग्नेट खींचता रहता है। चोर चोरों को खींचते रहते हैं। आपको मालूम है कि एक जुआरी के पास ढेरों जुआरी जमा हो जाते हैं और वेश्याओं के यहाँ भँवरे जमा हो जाते हैं। कहाँ से भँवरे आ जाते हैं? क्यों साहब, आप कहाँ से आए? हम तो साहब बहुत दूर के रहने वाले हैं। आपका ये कौन लगता है? कोई नहीं लगता। क्यों साहब, फिर ये आपके कमरे में क्यों रहते हैं? कशिश ने इन्हें खींच लिया। जुआरी के पास जुआरी, चोरों के पास चोर, लफंगों के पास लफंगे, विद्वानों के पास विद्वान्, ज्ञानियों के पास ज्ञानी खिंचे चले आते हैं। ऐसी आदतें या आदमी के भीतर का मैग्नेट जब उछाल मारता है, कशिश उठती है, तो वह समानधर्मी को अपने पास अनायास ही खींच लेता है।

मित्रो! जब आपका मैग्नेट भीतर से बढ़ेगा, तब आप खींचने में समर्थ हो जाएँगे। वे चीजें जिनका अनुभव मुझे व्यक्तिगत रूप से है, वही आपको बता रहा हूँ। हवा में गायब हो जाने का? बेटे, हवा में गायब हो जाने का अनुभव हमको नहीं है और क्या पेशाब से दिया जलाने का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अनुभव आपको नहीं है ? बेटा, वो भी नहीं है। हमको जब दिया जलाना पड़ता है, तो मोमबत्ती जलाते हैं और तेल जलाते हैं। पेशाब से जला दीजिए। बेटे, हमको नहीं आता और कोई करामातें भी नहीं आतीं। करामातों से कोई अध्यात्मवादी नहीं हो जाता। अध्यात्म अपने आप में सबसे बड़ी करामात है। उससे आदमी महान् आत्मा हो जाता है, देवात्मा हो जाता है, ऋषि हो जाता है और नर से नारायण हो जाता है। ये अपने अपने आप में एक विधा है।

व्यक्तित्व का चुंबक

मित्रो! आध्यात्मिक शक्तियों को आदमी की कशिश खींचती है। किसको खींचती है ? जो सिद्धियाँ आप चाहते हैं, उनको कशिश खींचती है। गुलाब का फूल जब खिलता है, तो भँवरों को खींचता है, तितलियों को खींचता है और शहद की मक्खियों को खींचता है। आदमी जब खिलता है, तब देवताओं को खींचता है, भगवान को खींचता है, पड़ोसियों को खींचता है, समाज को खींचता है और अपने अंतरंग में दबी हुई क्षमताओं को खींचता है। सारी-की-सारी चीजें खिंचती हुई आ जाती हैं और आदमी संपन्न हो जाता है, समर्थ हो जाता है। ये किसके ऊपर टिका हुआ है अपना व्यक्तित्व, अपने आपको सुधार लेने के ऊपर। यही हैं अध्यात्म के सिद्धांत, जो मैं आपको सिखाने वाला था, पढ़ाने वाला था।

मित्रो! मैं क्या कहने वाला था ? ऋषियों की उसी वाणी को दुबारा दोहराने वाला था, जिसमें यह कहा गया था कि ***आत्मा वा रे ज्ञातव्य ध्यातव्य निदिध्यःसतव्यं।*** अरे मूर्खो, अपने आपको देखो, अपने आपको समझो और अपने आपको ठीक करो। यह क्या है ? यह ऋषियों की वाणी है और यह वो अध्यात्म है, जिसमें भगवान ने कहा है कि यदि इंसानों से आप ऊँचा उठना चाहते हैं, आगे बढ़ना चाहते हैं. खुशी होना चाहते हैं, समृद्ध होना चाहते हैं, संपन्न होना चाहते हैं, तो उसके लिए क्या तरीका हो सकता है ? फार्मूला क्या हो सकता है ? भगवान ने कहा, ***उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।*** अर्थात् अपने आपको उठाइए, अपने आपको गिराइए मत।

मित्रो! गिराता कौन है ? इंसान। उठाता कौन है ? भगवान। इंसान के भीतर उठाने वाला जो माद्दा है, उसको कहते हैं भगवान। भगवान किसे कहते हैं ? आदमी के भीतर एक ऐसी प्रेरणा है, जो आदमी को उठा देती है, वही भगवान है। जो व्यापक भगवान है, उसको तो बेटा कौन कहेगा। वह तो बहुत फैला हुआ है, उसकी तो बात ही मत कीजिए। ब्रह्म तो इतना विस्तृत है, इतना विस्तृत है कि हमारी अक्ल भी काम नहीं करती। हमारे भीतर वह भगवान है, जो हमें उठाता है और वह भगवान नहीं है। जो गिराता है, उसको बेटे, शैतान कहते हैं। शैतान को रोकिए, भगवान का समर्थन कीजिए और आप स्वयं ऊँचे उठिए।

मित्रो! ये किसने कहा है ? गीताकार ने कहा है, ***उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।*** अपने आपको उठाओ, अपने आपको गिराओ मत। अपने आपको कौन गिराता है ? अरे कोई नहीं गिराता, आप स्वयं अपने आपको गिराते हो। नहीं साहब, हमको पड़ोसी तंग करता है और बीबी तंग करती है और मुहल्ले वाले तंग करते हैं, बुखार तंग करता है। कोई नहीं तंग करता। आप अपने आपको स्वयं तंग करते हैं। आपका अपने आपको तंग करने का माद्दा ही है, जो आपके सामने आ जाता है। आप अपने आपको ठीक करिए। आप एक मित्र से मित्रता बना लीजिए और एक दुश्मन से आप पीछा छुड़ा लीजिए। अध्यात्म में कौन-सा मित्र है और कौन-सा दुश्मन है ? ***आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः*** अर्थात् आप ही अपने बैरी हैं और आपने ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ा मारा है और आप ही हैरान होते हैं। आप ही उद्धरेत् अर्थात् अपने आपको सही कीजिए, अपने आपको ठीक कीजिए।

अपने आपको बदलें

मित्रो! आप अपने आपको बदल लीजिए, फिर देखिए किस तरह से दुनिया बदल जाती है। सारा-का-सारा वातावरण बदल जाता है। आप अपनी आँखों का चश्मा बदलिए, हरा चश्मा छोड़िए और लाल चश्मा पहनिए, फिर देखिए, सारी दुनिया लाल हो जाएगी। आपके पास जो निगेटिव चिंतन है, अंतर्मुखी जीवन है। स्वार्थ से घिरा हुआ चिंतन आपके ऊपर हावी है, इसको आप ठीक करना शुरू कर लें, फिर मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, विश्वास दिलाता हूँ कि आपको तीनों तरह की सहायता मिलेगी। देने के लिए तीनों खड़े हुए हैं, पहला—आपका अंतःकरण, सिद्धियाँ देने के लिए खड़ा है। हमारे भीतर दिव्य शक्तियाँ हैं, दिव्य क्षमताएँ भरी पड़ी हैं और हम आपको उछाल सकते हैं। आपके भीतर का वर्चस्व, आपके भीतर का वैभव उठे, तो वह आपको निहाल कर देगा। दूसरा—समाज के लोग आपकी आरती उतारने के लिए खड़े हैं। आप जरा प्रकाशवान तो होइए, फिर देखिए हम आपकी कितने तरीके से सहायता करते हैं। सामाजिक जीवन में लोग कितना सहयोग करते हैं और तीसरे—भगवान का, जीवन देवता का अनुदान-वरदान किस तरीके से आपके ऊपर बरसते हैं। आपके लिए देवता फूलों का विमान लिए बैठे हैं। आप अपने को बदलिए तो सही, ऊँचा तो उठाइए। दैवी अनुदान सतत आप पर बरसते ही रहेंगे। आज की बात समाप्त। ◆

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मातृवाणी (पूर्वार्द्ध)

गुरुसत्ता के महाप्रयाण के बाद मातृसत्ता का संदेश

(परमवंदनीया माताजी के यह वचनामृत गुरुसत्ता के महाप्रयाण के चौदह दिन बाद के प्रवचन से लिए गए हैं)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

बच्चो, तुम्हें मालूम होना चाहिए कि यह मिशन किस तेजी से बढ़ता हुआ चला जा रहा है। उसमें आप लोगों का क्या योगदान होना चाहिए? आप लोगों का जो योगदान होना चाहिए, वह है हिम्मत का, साहस का। बुजदिली का नहीं, रोने और चिल्लाने का नहीं होना चाहिए। भावना और भावुकता में अंतर होता है। भावुकता हमें बुजदिली सिखाती है, भावुकता हमें कायरता सिखाती है और भावना? भावना हमें यह सिखाती है कि अपने इष्ट के प्रति जो हमारा समर्पण है, उसके लिए हमें क्या करना चाहिए। आपको याद होगा कि आप जब अपने घर से आए थे, आपकी क्या भावनाएँ थीं? यही थीं न कि हम गुरुजी के लिए, गुरुजी के कार्य के लिए तथा मिशन के लिए, समाज-सेवा के लिए, राष्ट्र के उत्थान के लिए हम यह संकल्प लेते हैं कि हम आजीवन यह कार्य करते चले जाएँगे। यही था न?

बेटे, मैं एक और बात यह कह रही हूँ कि पूर्व में आपकी जो भावनाएँ थीं, वही विद्यमान रहनी चाहिए। जब हम उनमें मिल गए और वो हममें मिल गए, तो एकाकार हो गए। एकाकार हो गए, तो अब अलग कहाँ रहे। समय-समय पर जो हमारे अंदर कुसंस्कार उदय होते रहते हैं, उन कुसंस्कारों को तो हमें हटाना चाहिए और सद्संस्कारों का उदय होना चाहिए। हमारा हर कार्यकर्त्ता शक्तिशाली दिखाई पड़ना चाहिए, हनुमान जैसा, अर्जुन जैसा, एकलव्य जैसा, शिवाजी जैसा। उसका चिंतन और चरित्र दोनों ही उच्चस्तरीय होने चाहिए। जो चिंतन में होता है, वही चरित्र में भी होता है और जो चरित्र में होता है, वही व्यवहार में भी होता है। यह व्यवहार में होता है, तो स्वतः ही उसी प्रकार का वातावरण बना लिया जाता है। वह बाद में अपने आप बनता हुआ चला जाता है।

गुरुजी जैसे बनो

बेटे, गुरुजी ने ऐसा ही तो किया था न। बाल्यकाल से ही उन्होंने अपने चिंतन को इस तरीके से ढाला कि एक स्वयंसेवक की मनोवृत्ति उनके अंदर हमेशा से विद्यमान रही। जहाँ कहीं भी उन्होंने कार्य किया, लोग उन्हें सराहते रहे। सैनिक प्रेस में जब काम करते थे, तो जो उनसे बड़े थे, वे सबसे यही कहते थे कि कहिए साहब, मैं बाजार जा रहा हूँ, कोई आपका काम है क्या? उनने कहा, हमारी बीबी के बच्चा होने वाला है। अच्छा दायी का प्रबंध करता हूँ और कोई बात? हमारे पास चारपायी नहीं है। अच्छा, चारपायी का प्रबंध करते हैं। कहने का मतलब मेरा यह है कि उनमें जो स्वयंसेवी वृत्ति थी, वही वृत्ति पनपती हुई चली आई। उनके जीवन में शुरू से ही करुणा. त्याग और संवेदना विद्यमान रही। मैंने एक घटना उस रोज सुनाई थी, शायद सभी कार्यकर्त्ता थे।

बेटे, मैंने आपको एक कबूतर की घटना सुनाई थी और एक उस हरिजन महिला की सुनाई थी, जिसमें कि उसके कीड़े पड़ गए थे और उन्होंने घाव धोया और मरहम लगाया। बेटे, चाहे तो रामकृष्ण परमहंस से जोड़ लें आप, चाहे अन्य किसी से जोड़ लें। जो भी ऋषि और संत-सुधारक हुए हैं, उनके अंदर जनमानस के लिए एक करुणा उदय होती है। करुणा जब आ जाती है सारे विश्वकल्याण के लिए, तो वह तिल-तिल करके अपने को समर्पित करता चला जाता है। जिसने अपने को समर्पित कर दिया है, श्रद्धा तो उसको मिलने ही वाली है। बनावटीपन में नहीं, बनावटीपन तो थोड़े दिन में खुल जाता है। फिर सब लोग छिटकते हुए चले जाते हैं। बनावटीपन यदि नहीं है, तो फिर आपको सहयोग मिलना ही चाहिए। जनश्रद्धा मिलनी चाहिए, मदद मिलनी चाहिए। आपने देखा भी है कि हमारे छोटे-छोटे,जरा-जरा से बच्चे, नाचीज बच्चे जब बाहर जाते हैं, तो जो सत्कार होता है, वो किसका होता है? आपका। आपका नहीं होता, यह मानकर चलना। जिसके अंदर यह अहंकार विद्यमान हो कि यह हमारा पुरुषार्थ है। यह हमारा नहीं बेटे, उस महापुरुष का है, जिसने सारा जीवन लोकमंगल के लिए, राष्ट्र के उत्थान के लिए लगा दिया। अंतिम क्षणों में भी उन्होंने एक ही बात कही कि हमें विश्वभर में विचार क्रांति का विस्तार करना है। यह यों ही थोड़े हो जाएगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

संकल्प पूरे होंगे, उनके निमित्त जीकर

बेटे, जो संकल्प लिए गए हैं, ये यों ही पूरे हो जाएँगे क्या ? ये यों ही पूरे नहीं होंगे। आजकल मुझे रात को नींद नहीं आती। सोचती हूँ कि ये जो संकल्प लिए गए हैं, वे अधूरे तो रह नहीं सकते, क्योंकि जो रग-रग में समाया है, काम तो उन्हीं इष्टदेव का है न। काम उनका है, पर काया अपनी है। इसमें कोई शक नहीं है। शरीर अपना है और बल उनका है। जब हमारे अंदर यह हिम्मत आ जाएगी और यह साहस आ जाएगा कि देने वाला तो दूसरा है, करने वाले हम हैं, फिर कोई भी काम अधूरा नहीं रहेगा। जिस दिन कहीं यह आ गया मैं-मैं-मैं-मैं-मैं क्या होती है ? आपको मालूम होना चाहिए कि गुरुजी ने यह शब्द कभी नहीं कहे। यह शब्द कहे होंगे कि बेटा, तुम्हारे लिए भगवान से प्रार्थना करेंगे, सब ठीक हो जाएगा, हाँ ठीक हो जाएगा। वे कष्टों को लेते भी रहे, पर उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मैं करूँगा। मैं शब्द उन्होंने कभी नहीं कहा।

एक दफा एक कार्यकर्त्ता अपने विद्यार्थी को लाया और बोला, गुरुजी, इसको भूत आ रहा है। भूत अच्छा, कैसा भूत ? अब वह लड़का सिर हिलाने लगा। खामखाह की बातों को जब हम बढ़ावा देते हैं, तो लोगों की नजरों में गिर जाते हैं। उन्होंने क्या किया ? उन्होंने कहा, अच्छा अभी देखता हूँ तेरा भूत। दो डंडे तुझमें लगाऊँगा और दस डंडे इसमें लगाऊँगा। पढ़ा-लिखा होकर, प्रोफेसर होकर और तू ये कह रहा है कि भूत आ रहा है। इसी तरह बहुत दिनों की शुरू-शुरू की बात है। हमारे यहाँ एक लड़की थी। अब वह सो गई, लेट गई। हमारी और छोरियाँ डर गईं। बोलीं माताजी, इस को तो भूत आ गया। यह तो वहाँ हॉस्टल में रहती थी। मैंने कहा, अभी उतारती हूँ इसका भूत। मैंने रोल लेकर कहा, ऐ उठती है कि नहीं। या तो तू उठ, नहीं तो मैं एक जमाती हूँ तेरी कमर पर। अब वह छोरी झट से उठ बैठी। भूत हो तो ना। कहीं भूत थोड़े ही होता है। एक तो बनावटीपन होता है, दूसरे जो बढ़ावा देते रहते हैं, उनको बल मिलता रहता है।

बेटे, गुरुजी ने कभी भी यह नहीं कहा कि आज हमको यह लगा, आज हमसे यह कहा गया। हाँ, उन्होंने यह जरूर कहा कि संवेदना के रूप में हमें एक ऐसा प्रकाश मिलता हुआ चला जाता है कि जो संकल्प हम करते हैं, वे पूरे होते हुए चले जाते हैं। हमारे गुरुदेव का बल हमको मिलता हुआ चला जाता है, यह गुरुजी ने हमेशा कहा, लेकिन यह कभी नहीं कहा कि आज यह अनुभूति हुई, आज वह हुई। ऐसी बात अगर आप किसी के अंदर हो तो बेटे, उसे तो अपने मन से निकाल ही देना। अनुभूति जो होती है वह कहने की नहीं होती, वह संवेदना की होती है। कल-परसों की बात है। मैं स्नान कर रही थी। स्नान करते समय मुझे जोर से ऐसी आवाज आई शैलो। कोई बात होती थी तो वे मुझे शैलो कह करके आवाज देते थे। मैं समझ गई कि कुछ कह रहे हैं। मैं तिलमिला गई। जब मैं बाहर आई तो समझ गई कि वह क्या कहना चाहते हैं। अब भी मुझे स्वप्न में, जाग्रत् अवस्था में भी ऐसा प्रतीत होता है कि वे मेरे दायें-बायें हैं और जब मैं कभी डगमगाती हूँ तो मेरा हाथ पकड़ते हैं और कहते हैं कि चलो चलें। मैंने शपथ ली है और उन्होंने कहा है चलो, तो आगे तो बढ़ना ही है न।

बेटे, वे कह गए हैं कि हमने यह जो वृक्ष लगाया है, कहीं ऐसा न हो कि सूख जाए। सो हिम्मत के साथ और दिलेरी के साथ आँसू पीना है और आगे बढ़ना है। हर बच्चे को आगे बढ़ाना है। तुम्हारा कोई दुःख, कष्ट-कठिनाई होगी बेटे, उसे हम जी-जान से निवारण करेंगे। आध्यात्मिक दृष्टि से भी निवारण करेंगे, शक्ति से भी निवारण करेंगे और औपचारिक दृष्टि से भी निवारण करेंगे। तुम हमारे बालक हो। हम तुम्हारे लिए जान पर खेल जाएँगे, इसमें कोई दो राय नहीं है। तुम्हारे अंदर कोई दोष-दुर्गुण होंगे, तो उन्हें हटाने के लिए मैं रिआयत नहीं करूँगी। बेटे, गुरुजी ने इस मामले में कभी रिआयत नहीं की। अब तक तो मैं रिआयत करती आई थी, पर अब नहीं करूँगी। क्यों नहीं करूँगी ? क्योंकि उन्होंने कह दिया है कि मैं तुम्हारे अंदर समाया हुआ हूँ। जब मेरे अंदर पूर्ण समाए हैं तो बेटे, मैं माताजी का और गुरुजी का दोनों ही का रोल अदा करूँगी। दोनों रोल मुझे इसलिए करने पड़ेंगे, ताकि मिशन में कोई गड़बड़ी न आने पाए। गड़बड़ी का जहाँ कहीं भी मुझे बीज मालूम पड़ेगा, वहाँ उस बीज को मैं नाबूद कर दूँगी। बिलकुल कर दूँगी, बगैर किसी मोह के कर दूँगी, चाहे कोई भी क्यों न हो।

ब्राह्मण बीज चाहिए

मुझे तो वह बीज चाहिए, जो कि ब्राह्मण हो अर्थात् ब्राह्मणवृत्ति उनके अंदर पनपे और ब्राह्मण जैसा जीवन जिए। यही तो गुरुजी का उद्देश्य था बेटे। यहाँ बैठे हुए तुम सब ब्राह्मण ही हो। तुम्हारे लिए फिजूल का कहाँ है ? तुम ब्राह्मण ही हो, पर कहीं भी चिंतन गड़बड़ाता हो, तो उस चिंतन को तुम साफ करना। आगे आने वाले समय में कितना काम करना है। मैं देख चुकी हूँ तुम्हारे साहस को। उस समय हमारे कुछ बच्चे बाहर गए थे। मुझे भीतर से

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वेदना हुई कि इन बच्चों को ऐसा लगा होगा कि हमने गुरुजी के अंतिम दर्शन भी नहीं किए। बेटे, जो बच्चे यहाँ नहीं थे, उनकी वेदना को मैं जानती हूँ, क्योंकि मैं वेदना से ग्रसित हूँ। इसलिए तुम्हारा दरद समझती हूँ, लेकिन तुमने जो कार्य किया, उस कार्य में ही गुरुजी के दर्शन थे और गुरुजी हजार आँखों से, लाख आँखों से तुम्हें सराह रहे थे और आशीर्वाद दे रहे थे कि हमारे बच्चे कितने साहसी हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी जिन्होंने मनोबल बनाए रखा।

बेटे, हमें मनोबल बनाना है अपना और दूसरों का। स्वयं उठना है और दूसरों को उठाना है। कहीं भी चिंतन न बिगड़े। क्या पूछना है? आपस में राजी-खुशी पूछो। एक-दूसरे के दु:ख-दरद में काम न आएँगे, तो और कौन आएगा। मैं तो यहाँ बैठी रहती हूँ, मुझसे कोई कहने आएगा, तभी तो मुझे मालूम पड़ेगा। मैं तुम्हारी माँ हूँ। कोई दु:ख-कष्ट हो, फौरन मेरे पास आओ। तुम्हारे कष्ट का निवारण होगा। आपस में हो सकता हो, तो आपस में करना। सबसे मिलना-जुलना और सबके दु:ख-कष्ट में शामिल होना, लेकिन एक कार्य में शामिल मत होना। कौन से में? चुगली वाले कार्य में। इससे बहुत ज्यादा नफरत है हमें। गुरुजी कभी भी किसी की ऐसी बात तो सुनते ही नहीं थे। कभी किसी का पत्र आता था और मैं कहती थी साहब, यह पत्र आया है, जरा मैं सुना दूँ क्या आपको। क्या है इसमें लाओ, उठाया और रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। उन्होंने उस पत्र को कभी महत्त्व नहीं दिया, चाहे किसी कार्यकर्त्ता ने दिया हो, चाहे बाहर की शाखाओं की कोई शिकायत ऐसी हो, जो आपस में प्रतिद्वंद्विता की हो, एक-दूसरे को नीचा दिखाने वाली बात हो।

कार्य के लिए तो कंपटीशन होना चाहिए। कौन-सा कंपटीशन? आलस्य और प्रमाद का नहीं, वरन् उसका जो गुरुजी कहते थे कि आठ घंटे नौकर काम करता है, स्वयंसेवक बारह घंटे काम करता है और मालिक सोलह घंटे काम करता है। तुम सब जितने बैठे मालिक हो। एकोएक मालिक हो। सीनियर-जूनियर का यहाँ कोई चक्कर नहीं है। इतना तो है कि भाई जो पहले आए हैं, उनका अनुभव है। अनुभव के द्वारा काम तो हमें उनसे ही कराना है। अब प्रत्येक को थोड़े ही हम बुलाएँगे। हमने एक यूनिट बना रखी है, वह संचालन करेगी, बताएगी आप लोगों को। हमारे लिए भावनाओं की दृष्टि से चाहे बेटा गरीब हो, अमीर हो, छोटा हो, बड़ा हो, सब बच्चे एक से हैं। माँ के लिए बच्चा चाहे प्रोफेसर हो और चाहे रिक्शा चलाता हो, दोनों के लिए माँ की ममता एकसी होती है। माँ ऐसी नहीं होती कि उसका दुलार किसी के लिए विशेष होता हो और किसी के लिए नहीं होता हो, फिर वह माँ ही कैसी है? ठीक है, जो नजदीक आते रहते हैं, बार-बार जिनको बुलाते रहते हैं, कार्य के लिए तो बेटा, बुलाया ही जाएगा, कहा भी जाएगा। अब एक-एक करके पाँच सौ आदमियों को कहाँ तक हम बुलाएँगे, दूसरे भी तो कार्य हैं। जो जिससे संबंधित है, कार्य तो उन्हीं से कराएँगे। पत्र व्यवहार से संबंध है, तो भी हमें संतोष तब होगा, जब कुछ आउटपुट निकलेगा। रिस्पोंस कुछ भी न निकले और दिखा दें साहब, ये दो चिट्ठी लिखी हैं तो धिक्कार नहीं है। तुम्हारे लिए धिक्कार है और हमारे लिए उससे भी ज्यादा धिक्कार है। क्यों? मिशन का खाते हो, दबाव सारा मिशन के ऊपर पड़ता है और काम एक घंटे का भी नहीं होता। ये सड़ना और सड़ाना, गलना और गलाना छोड़ना चाहिए और स्फूर्ति बनाए रखनी चाहिए।

अपनी कमियाँ निकालें, पूर्ण बनें

बेटे, अब तक मान लो तुममें कुछ कमियाँ थीं, लेकिन अब आगे आने वाले समय में नहीं होनी चाहिए। आगे बहुत जिम्मेदारियाँ सँभालनी हैं। इतनी जिम्मेदारियाँ सँभालनी हैं कि बेटे क्या कहूँ? जो लेखन में हैं, वे भी अपना पुरुषार्थ दिखाएँ। कार्य की दृष्टि से भी, भावनाओं की दृष्टि से भी कि बस आनंद आ जाए। बेटे, गुरुजी एक-एक दिन में मैं समझती हूँ तीन-तीन, चार-चार लेख लिखते थे। वैसे तो उन्हें कभी कुछ होता नहीं था। एक बार उनके पाँव में चोट लग गई। हुआ यों कि टट्टर में बंदर आ गए। उन्हें भगाने के चक्कर में उनका पैर टट्टर में फँस गया। पैर सूज गया, थोड़ा पक भी गया और टेंपरेचर भी होने लगा। मैं आपको बताती हूँ कि हमारे यहाँ मूँज की चारपाई थी। उस चारपाई में गड्ढा हो गया। क्यों? बैठे-बैठे। वे नित्यप्रति बैठ करके इतना लेखन करते थे कि मैं हैरान रह गई। मैंने कहा, जब कष्ट में इतना लिख सकते हो, तो बगैर कष्ट में कितना लिखेंगे। वे अपने सारे शरीर को भुला देते थे, इतना कार्य करते थे। तुम सब उनके शिष्य हो, उनके बालक हो, हमारे बालक हो, तो तुम्हें भी अपने अंदर वही चेतना जाग्रत् करनी पड़ेगी। गुरुजी का अनवरत आशीर्वाद तुम्हें मिलता रहेगा।

बेटे, हमारी ममता भी तुम्हें मिलती रहेगी, पर गड़बड़ी फैलाएँगे तो हमें नाराजगी भी होगी। कटुभाषा से नाराजगी नहीं होगी, तो और क्या होगा? नहीं साहब, बिच्छू का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

डंक मारे बिना हमारा तो काम ही नहीं चलता। नहीं बेटे, अपनी जुबान पर जरा शहद लगाइए। जब आते हैं, अपना अहंकार दिखाते आते हैं, सबसे बॉसपना दिखाते हैं। कोई बॉसपना नहीं दिखाएगा यहाँ। यहाँ तो नम्रता चाहिए। नम्रता बहुत बड़ी चीज है। गुरुजी के अंदर नम्रता थी और इस सीमा तक थी बेटे कि इन हाथों से तुम्हारे सब के बरतन धोते-धोते, माँजते-माँजते हमें बीसियों साल बीत गए। हमारे जो पुराने परिजन होंगे, उनको मालूम है कि किस तरह हम बच्चों की सेवा करते थे। तब यहाँ तक का इतना लंबा सफर तय करके आए हैं। तुम्हें क्या मालूम है ? गुरुजी परिजनों को अपने साथ ले जाया करते थे। उसके कंधे पर हाथ रखकर कहते, चल बेटा, जमुना जी वहाँ बैठेंगे। वे कंधे पर तौलिया डाले रहते थे, सो अपनी तौलिया बिछाई और वहाँ उसको बिठाते थे। यह है आत्मीयता, यह है घुलना-मिलना। यह नहीं होता कि हम मंच पर बैठ गए। ये कौन हैं ? आ हा हा हा ..... ये आए साहब। महंत जी, ओ हो हो हो ..... अब इनको सुनो। अच्छा, तुम्हारी सुनो या गुरुजी को सुनो। बेटे, गुरुजी को सुनो। गुरुजी को जो सुनेगा, वह नम्र होगा। वह सबमें घुलता हुआ मिलता हुआ चला जाएगा। यह अनुकरण उनको करना चाहिए, जिन्होंने अभी तक नहीं किया। जिन्होंने किया है, उनकी सराहना है, उनके लिए ढेरों आशीर्वाद हैं।

सबको प्यार बाँटो, आत्मीयता दो

बेटे, सबको अपने समान समझो। अपने जो छोटे भाई हैं, उनको प्यार दो। अपने से जो बड़े हैं, उनका सम्मान करो। किसी को यह महसूस न होने पाए कि यहाँ गुरुजी नहीं हैं। यहाँ तो सारे निर्जीव बसते हैं, जैसे इनमें जान ही नहीं है। बेटे, सबको गुरुजी जैसा प्यार, आत्मीयता दो। मुझे कई बार उन लड़कों को झिड़कना पड़ता है, जो हमारे पास रहते हैं। नीचे तो मुझे नहीं दिखाई पड़ता, पर पास में तो मैं दो-तीन लड़कों को बहुत झिड़कती हूँ। क्या करूँ, मेरा स्वभाव ऐसा नहीं है, पर जब देखती हूँ कि जब ये लोगों को मिलाते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे भेड़-बकरियों को आगे करते हैं। भेड़-बकरियों की तरह नहीं, बल्कि सभ्यता-शालीनता का क्रम चालू करो। जल्दी-जल्दी चलाओ, लेकिन तुम्हारी जुबान में मिठास होनी चाहिए। मिठास होगी तो क्या होगा ? सारे-के-सारे व्यक्ति तुम्हारी सराहना करेंगे। दो तरह की मिठास होती है, एक तो प्रकृतिप्रदत्त-स्वभावगत और दूसरी चापलूसी। जिससे काम लेना है, उसी की चापलूसी करो। चापलूसी करने में छोटापन होता है, हेटापन होता है। उसमें व्यक्ति का बौनापन झलकता है। हमें बौना भी नहीं बनना है और अहंकारी भी नहीं बनना है, चूँकि मिशन तुम्हारे द्वारा चलना है, तुम्हारे कंधों पर चलना है, इसलिए हमारा प्रत्येक कार्यकर्त्ता गुरुजी की दूसरी कॉपी होना चाहिए।

तुम सब गुरुजी के बेटे हो, तो फिर तुम्हारा स्वभाव गुरुजी की तरह ही होना चाहिए। इस माने में नहीं कि गुरुजी तो महंत हैं साहब। नहीं, गुरुजी ने यह कभी नहीं कहा कि हम महंत हैं। हमारे जो पुराने परिजन हैं, कभी गुरुजी के संपर्क में आए होंगे, उन सबने यह ही कहा होगा कि गुरुजी हमको जितना प्यार करते थे, उतना शायद किसी और को नहीं करते थे। उन्होंने सबको एक ही निगाह से देखा। सबको एकसा कार्य सौंपा। यह बात

बीज को गलकर वृक्ष का रूप लेने की प्रक्रिया समयसाध्य है। जो अधीरता बरतते हैं, कर्मों का प्रतिफल तुरंत चाहते हैं, उन्हें निराश ही होना पड़ता है। इससे यह नहीं सोचना चाहिए कि दुष्कर्मों की प्रतिक्रिया नहीं होती और सत्कर्मों के पुण्यफल प्राप्त नहीं होते। जो दूरदर्शी होते हैं, वे कर्मफल व्यवस्था में सच्चे आस्तिकवादी की तरह विश्वास रखते हैं।

अलग थी कि अब बुढ़ापा था, सो कभी थोड़ा झल्ला जाते थे, लेकिन उन्होंने मन से कभी किसी से द्वेष नहीं माना। यहाँ तक कि जो हमको विरोधी मानते थे, उनके लिए भी उन्होंने कभी कुकल्पना नहीं की। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि उसने हमारे साथ ऐसा किया है, तो हम इसका बदला लेंगे। उन्होंने उसके साथ सज्जनतापूर्ण व्यवहार किया, वे कभी भी बौखलाए नहीं। बस चाल उलटी बदल दी। उन्होंने कहा, अच्छा यह बात है, अपने काम की गति बढ़ा दो। बजाय सड़ने-कुढ़ने के उन्होंने सारा समय श्रेष्ठ चिंतन में लगा दिया। अरे, दूसरा तो सड़ ही रहा है, हम और उसके साथ सड़ जाएँ। क्यों ? हमें मिशन चलाना है, तो हम में प्रखरता होनी चाहिए, नम्रता भी होनी चाहिए, साथ ही अपने अंदर साहस और बल भी होना चाहिए।

बेटे, हम ऐसे बुजदिल भी न हों कि कोई आए, हाँ साहब कौन हैं ? अरे हम तो संत हैं। अच्छा, तो एक इधर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से भी दे जाए और एक उधर से भी दे जाए। ऐसा संत भी नहीं बनना है। मैं कई बार कह चुकी हूँ कि तुम लोग लाठी चलाओ, यह पुरुषार्थ का प्रतीक है। सारे आश्रमों की निगाहें हमारी तरफ जाती हैं। यह सब कहेंगे कि यहाँ मरे-मराए नहीं, जिंदादिल लोग रहते हैं। किसी ने कहा, कहाँ गए? अरे साहब, मंदिर गए तो पता चला कि वहाँ से घंटी-बंटी भी कोई उठा ले गया। उन्होंने कहा, यहाँ कौन बसते हैं? यहाँ तो निर्जीव हैं, जिन्हें यह भी ध्यान नहीं कि हम यहाँ मंदिर में बैठे हैं और यहाँ से सामान भी चला गया। बेटे, हमारे यहाँ सभी जिंदादिल लोग ही रहने चाहिए।

दो महान् संकल्प

अब चलिए, मैं थोड़ा-सा प्रसंग बदल रही हूँ। यह इतना बड़ा काम है, मैंने उस रोज दोनों संकल्पों के बारे में बताया था न। हाँ बेटे, मैं फिर दोहरा रही हूँ कि हमने दो संकल्प ले लिए हैं। मैं समझती हूँ कि इन्हें पूरा कराने में वही मदद करेंगे, तभी होंगे पूरे। मेरा मन ऐसा कहता है कि वे मदद जरूर करेंगे, क्योंकि जब उनका हर कार्य पूरा होता हुआ चला गया, तो ये दो संकल्प भी पूरे होंगे। मैंने जो उस रोज निवेदन किया था और कहा था कि एक शानदार श्रद्धांजलि समारोह मनाएँगे। उसके लिए तुम्हारे पैरों में गति, तुम्हारी हिम्मत, तुम्हारा साहस अब और भी डबल होना चाहिए।

देखो बेटे, मेरा साहस डगमगाया नहीं है। कभी-कभी आँखों में आँसू तो आ जाते हैं, पर रोकती हूँ। आज जब एक गीत गाया जा रहा था, तो मैं अपने को नहीं रोक सकी और अंदर-ही-अंदर आँसू पीती रही। सामने वाला यह नहीं भाँप पाया कि माताजी की आँखों में आँसू भी हो सकते हैं। क्या करें बेटे? पचास साल जिसके साथ में गुजारे, उसे हम कैसे भुला सकते हैं? वह नहीं भुलाया जा सकता, लेकिन फिर भी मैं भीतर से इतनी कड़ी और इतनी हिम्मत वाली हूँ कि मैं आँसुओं को भुला दूँगी, उन्हें पी जाऊँगी। उनका जो उद्देश्य है, जो उनका लक्ष्य है, उसके लिए तो अब हमें मर मिटना है। इसी भूमि में वे समा गए और इसी में बेटा मुझे भी समाना है। तुम लोगों का भी यही लक्ष्य होना चाहिए कि जब हम यहाँ शांतिकुंज में आए हैं, तो हमें नाक कटाकर नहीं रहना चाहिए। यह नहीं होना चाहिए कि मन में कुछ और है, तन में कुछ और। जो मन में है, वही हमारे तन में है। तुम सब अपने मन की परिशुद्धि करना, तभी तुम्हारी भावनाएँ और तुम्हारा समर्पण शुद्ध होगा। अभी तक तो तुम्हारा समर्पण है, आगे की तो मुझे मालूम नहीं। बेटे, आगे भी तुम इसी तरीके से बने रहना, शुद्ध भावना और पवित्र समर्पण के साथ।

बेटे, अब तीन महीने रह गए हैं। तीन महीने कितने होते हैं? बहुत जरा से होते हैं। दिन और रात तुम सबको श्रम करना पड़ेगा। दिन और रात एक करने पड़ेंगे, तब कहीं हम उस कार्य को पूरा कर पाएँगे। चैन की नींद सोते रहे, तो क्या ऐसे ही काम हो जाएगा? बेटे, ऐसे काम नहीं होगा। जरा-जरा से काम में कितना समय लगता है। जो छह यज्ञ हुए हैं, उनमें कितने लोगों ने दिन और रात एक किए हैं, तब सफल हुए हैं। सो भी उतने बड़े नहीं थे। यह कार्य तो कितना विशाल है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर का है। अंतर्राष्ट्रीय काम यों ही हो जाएगा क्या?

दूसरा संकल्प स्मारक बनाने का है, तो वह भी यों ही हो जाएगा क्या? चलो, उसे तो यह भी है कि हम अपने द्वारा पूरा कर लेंगे, लेकिन यह जो श्रद्धांजलि का कार्य है, इसके लिए तो तुम्हें अपना मन और अपना तन दोनों ही समर्पण करने पड़ेंगे। इसके लिए बेटे, अपनी हिम्मत, अपना साहस और अपनी भावनाएँ लगानी होंगी। भावनाओं के बगैर कोई भी कार्य पूरा हो नहीं पाता। इसके बिना हम भगवान की पूजा भी नहीं कर पाते हैं। हाथ में माला तो जरूर लगी रहेगी, पर दिमाग हमारा दूसरी तरफ लगा रहेगा। क्यों? इसलिए लगा रहेगा कि भगवान के प्रति जो हमारा उदात्त भाव, जो हमारा समर्पण, जो हमारी करुणा होनी चाहिए, वह करुणा ही नहीं पैदा हुई, तो हम भगवान की पूजा कैसे करेंगे? इस तरह क्या हम भगवान के बताए रास्ते पर चल सकेंगे? हम अगर भगवान के बताए रास्ते पर नहीं चल सकेंगे, तो हम गुमराह होते जाएँगे। गुमराह होते ही हम पलायनवादिता की ओर चलते चले जाएँगे, जबकि उपासना, साधना और आराधना तीनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं।

तीनों योग जीवन में अनिवार्य

उपासना भगवान के समीप बैठना अर्थात् उसमें मिल जाना। अनुभूति होना, करुणा पैदा होना, दया पैदा होना। ये सब कौन और क्या हैं? ये भक्ति का स्वरूप हैं और दूसरा वह है जिसका मन शुद्ध, जिसके अंदर दया, करुणा और संवेदना होती है, फिर वह अपने तक सीमित नहीं रहता, वरन वह ऊँचा उठ जाता है, जिस तरीके से वाल्मीकि ने एक पक्षी के जोड़े को तिलमिलाते हुए देखा और उनकी करुणा फूट पड़ी। इसी तरह संत तुलसीदास की करुणा फूट पड़ी। ऐसा व्यक्ति ही जनमानस के लिए समर्पित होता है और अपने जीवन को धन्य बनाता है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

'साधना' माने—अपने जीवन को ऊँचा उठाना, अपने को साधक बनाना ताकि वह जनसेवा कर सके। जनसेवा हमारा मुख्य ध्येय है। इसीलिए तो गुरुजी आए। सारी जिंदगी उन्होंने यही तो किया था। बेटे, जितनी उन्होंने उपासना की, उससे कम उपासना कलम की नहीं की, और उससे कम उपासना उन्होंने समाज की नहीं की। जितनी गायत्री माता के प्रति उनकी श्रद्धा थी, उससे ज्यादा कलम के लिए थी और उससे भी ज्यादा समाज सेवा के लिए थी। वे समाज को ऊँचा उठाना चाहते थे। वे समाज को, राष्ट्र को बहुत से होनहार नागरिक देना चाहते थे, यही उनका उद्देश्य था। उनकी सारी जिंदगी इसी में लग गई। यह कौन-सा कार्य है? यही साधना है।

आराधना-समाज सेवा है। ये तीनों एक-दूसरे के पूरक हैं। बेटा, अब हमको उपासना तो नित्यप्रति करनी ही है। हमारे जो कार्यकर्त्ता हैं वे बजाय आलस्य के चाहें तो आधा घंटा उपासना करें। मैं यह तो नहीं कहती कि सारे दिन माला लेकर तुम बैठे रहो। बैठे रहेंगे तो काम कौन करेगा। चाहे तुम पंद्रह मिनट ही उपासना करो, पर ऐसे तल्लीन हो जाओ कि बस आनंद आ जाए। हमारे यहाँ अखण्ड ज्योति कार्यालय में एक चित्र है, जो अभी भी है। गुरुजी जब उपासना में बैठते थे तो छह घंटे यह नहीं मालूम पड़ते थे कि जाने कहाँ निकल गए। फिर सारा दिन काम करते थे। छह घंटे तो नहीं, तुम्हारे लिए आधा घंटा ही बहुत है। आधा घंटा नित्यप्रति जब खाना खाएँ तो पहले उपासना कर लें। इसके बाद अपने जीवन का शोधन करें, कहाँ-कहाँ हमारी कमियाँ हैं, किस तरीके से अपनी इन कमियों को हम निकालें।

बेटे, अपनी कमियाँ व्यक्ति को नजर नहीं आतीं। जिस दिन अपनी कमियाँ नजर आ जाएँगी, तो व्यक्ति न जाने कहाँ-से-कहाँ पहुँच जाएगा। हम दूसरों की कमियाँ तो देखते हैं कि अमुक में ये कमी है, अमुक में वो कमी है, पर अपने गरेवान में मुँह डालकर नहीं देखते कि हम में कितनी कमियाँ हैं। हमारे प्रत्येक कार्यकर्त्ता को चाहिए कि वह अपनी कमियों को खोज-खोजकर निकाले। दूसरों से पूछे-क्यों भाई साहब! आज यह बताइए कि मुझसे कोई दुर्व्यवहार तो नहीं हुआ? मेरे अंदर कोई कटुता तो नहीं आई? दूसरा तुम्हारी कमियाँ निकाले तो उस पर खीजो मत, वरन् उसको सराहो कि हमारी कोई कमी निकालने, बताने वाला तो है। हमारे अंदर जो कमी है उसे निकालिए। बेटे, गुरुजी का यह गुण था कि चाहे वे आर्य समाजी हों, चाहे कोई और हों, उनके लिए कमियाँ निकालने की खुली छूट थी। गुरुजी ने कहा कि कोई कहने वाले तो है, जिससे मालूम तो पड़े कि हमारे अंदर क्या कमी है। हम उस कमी को निकालेंगे। उन्होंने चाहे पाँच साल का बालक ही क्यों नहीं हो, कोई बात उसके मुँह से निकली है और वह फिट बैठती है तो वे उसकी भी बात मान लेते थे। यह नहीं कहते थे कि मैं इतना बड़ा हूँ और जरा से बच्चे की बात मानूँगा। वे सबकी मानते थे।

क्रमशः (उत्तरार्द्ध आगामी विशेषांक में)

●

एक व्यक्ति ने अपनी संपदा परमार्थ प्रयोजनों के लिए दान कर दी और लोकसेवा के कार्यों में निरत रहने लगा।

उसकी सर्वत्र प्रशंसा होने लगी। इस परिवर्तन के लिए लोग उसकी भूरि-भूरि सराहना करने और बधाई देने आते।

उत्तर में वह एक प्रश्न करते, आपके झोले में कंकड़-पत्थर भरे हैं और अनायास कोई बहुमूल्य वस्तु मिले, तो उन पत्थरों को फेंककर मूल्यवान वस्तु उसमें भरेंगे या नहीं? लोग उत्तर में सिर हिला देते।

मैंने कोई त्याग नहीं किया, मात्र विवेकशीलता का, चयन की दूरदर्शिता का परिचय दिया है। जो व्यर्थ ही बटोर रखा था, वह बोझ बढ़ाता और अनर्थ सिखाता था। अब उस जंजाल को फेंक देने पर मनःस्थिति परमार्थ करने जैसी बन गई और वे कार्य हो सके, जिनकी प्रशंसा आप सब करते हैं और मुझे संतोष पाने तथा भविष्य उज्ज्वल बनाने का अवसर मिला है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गुरुसत्ता के महाप्रयाण के बाद मातृसत्ता का संदेश

(गतांक से आगे)

प्रस्तुत मातृवाणी अगस्त २००२ की 'अखण्ड ज्योति' में प्रकाशित अमृतवाणी का उत्तरार्द्ध है। इसमें परमवंदनीया माताजी के द्वारा अपनी आराध्य सत्ता के महाप्रयाण के ठीक दो सप्ताह बाद १६-६-९० को एक प्रेरक उद्बोधन के साथ कार्यकर्त्ताओं के लिए एक अभिभावक-संगठक के माध्यम से कहे गए निर्देश हैं। किसी को भी 'गायत्री परिवार' के विकास का इतिहास समझने में ये दो अंक बड़े सहायक होंगे। पढ़ें विगत अंक की तीनों योगों—उपासना, साधना एवं आराधना के बाद की चर्चा।

प्रभाव सिद्धांतों का पड़ेगा

बेटे, अगर सिद्धांतों को हमने अपने जीवन में उतार लिया है, तो फिर चाहे तुम सब छोटे-छोटे से क्यों नहीं हो, तुम्हारा प्रभाव पड़ेगा। गाँधी जी छोटे से थे, जरा से थे, लेकिन उनका प्रभाव कितना जबरदस्त था। पहले नहीं था! पहले तो एक मुवक्किल ने टाई पकड़ ली थी कि तुमसे बहस नहीं होती, तो लाओ हमारे पैसे और फिर .... फिर क्या हुआ! बड़े से बड़ा व्यक्ति भी उनके आगे झुकता हुआ चला गया। उनकी एक आवाज पर लोगों ने घर छोड़ दिए, फाँसी के फंदे पर लटक गए और सारे देश को आजाद कराने के लिए कटिबद्ध हो गए। कब प्रभाव पड़ता है? प्रभाव तब पड़ता है, जब हम अपने जीवन को उसके लायक बना लेते हैं। प्रभाव पड़ेगा? हाँ बेटे, बिलकुल पड़ेगा। मैं चाहती हूँ कि हमारा प्रत्येक कार्यकर्त्ता इसी तरीके से बनता हुआ, निखरता हुआ, सँभलता हुआ चला जाए। तुम लोग तो इतने बैठे हो, खचाखच हॉल भर गया है। इसमें लगभग मेरे ख्याल से तीन सौ-साढ़े तीन सौ लोग तो बैठे ही होंगे। थोड़े बहुत कम-ज्यादा होंगे। इतने लोग कि वहाँ जीने तक बैठे हैं। इतनी बड़ी फौज है हमारे पास।

बेटे, हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास इतने सारे कार्यकर्त्ता हैं। औरों के पास कहाँ हैं? दो-दो, पाँच-पाँच हैं। फिर भी वे इतने काम कर गुजरते हैं। हम तो जाने कहाँ-कहाँ की छलाँग लगाएँगे, देखते जाइए। हम अगले दिनों सारे विश्व को हिलाकर रख देंगे। हमें अपना साहस यों ही रखना चाहिए, फिर तो सारे विश्व को हम मथकर रख देंगे। कौन रखेगा हिम्मत? रखेंगे तो वे ही, पर साहस तुम्हारा काम करेगा और बेटे, धक्का मैं भी दूँगी तुम्हें। आगे-आगे चलना तुम्हें पड़ेगा और तुम्हारी पीठ पर हाथ मैं रखूँगी, इसमें दो राय नहीं है। मैं इसी तरीके से तुम्हें छाती से लगाए रखूँगी। तुम्हें कोई भी अभाव नहीं व्यापेगा। मैं तुम्हें सँभालती भी आई हूँ। बहुत दिनों से उन्होंने यह कार्य मेरे हाथ में दे ही रखा था, तो अब मैं पीछे कदम थोड़े ही हटाऊँगी। नहीं, अब ये कदम आगे-ही-आगे चलेंगे, चाहे जो भी परिस्थितियाँ आएँ। वैसे परिस्थितियाँ कोई खराब नहीं हैं।

अगर आप ये कहें कि गुरुजी के बाद क्या होगा? बेटे, गुरुजी का शरीर ही तो चला गया, लेकिन आत्मा तो उनकी यहीं विद्यमान है। मेरे पास भी है और सारे शांतिकुंज में भी विद्यमान है। आप जैसे पहले रहते थे, वैसे ही अब रहेंगे। क्यों साहब, माताजी जब आप नहीं रहेंगी, तो फिर हमारा क्या होगा? बेटे, आपसे हमारा वायदा है कि आपके लिए कोई घाटा होने वाला नहीं है। न तो पहनने का और न खाने का, कोई भी घाटा होने वाला नहीं है। घाटा होगा तो केवल आपकी संकीर्णता का होगा। संकीर्ण आप रहेंगे, बुजदिल आप रहेंगे, कायर रहेंगे और जो आपका पहले संकल्प था, उस संकल्प को अगर आप तोड़ेंगे, तो कहीं के नहीं रहेंगे, दो कौड़ी के हो जाएँगे। जब हमें इसी मिट्टी में मिलना है, इसी में रहना है, इसी में मरना है, इसी में खपना है, तो अपना मनोबल बनाए रखना चाहिए। आप के लिए बेटे, हम इतना छोड़ जाएँगे और इतना वे छोड़ भी गए हैं कि आपका पेट पालन होता रहेगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भिखारी मत बनना, देवता बनना

बेटे, हमारा एक भी कार्यकर्त्ता भिखारी नहीं है, फिर से सुन लो। हमारा कार्यकर्त्ता त्यागी और तपस्वी की लाइन में आता है। भिखारी की लाइन में नहीं आता। हमें उन लोगों से नफरत है, जो हमारे बच्चों को भिखारी के रूप में देखें अथवा हमारे बच्चों की मनोभूमि में ऐसी बात पैदा हो, जो कि छोटे-छोटे उपहारों से उनका मनोबल गिरा दे। धिक्कार है ऐसे लोगों को और धिक्कार है ऐसी मनोभूमि को। कुछ दिन पहले लंदन की एक महिला मेरे पास आई और बोली, माताजी, मैं चाहती हूँ कि यहाँ सबको अमुक चीज बाँट दूँ। मैंने कहा, देवी नमस्कार है तेरे लिए। तू हमारे बच्चों का मनोबल मत गिरा। जो देना होगा अपने बच्चों को हम देंगे। हमने उन्हें सादगी सिखाई है। हमारे बच्चे भिखारी नहीं हैं। हमारे पास होगा तो देंगे अन्यथा हम नमक-रोटी खिलाएँगे। हमें नहीं चाहिए तेरा साग और नहीं चाहिए तेरी मेवा-मिठाई। तू ले जा और वहाँ कहीं देकर आ जहाँ कोढ़ी बैठ होंगे। तू इसे कोढ़ियों को, भिखारियों को बाँट आना।

नहीं साहब, और आश्रमों में तो यही होता है कि वहाँ जो सेठ जी आते हैं, सो कुछ-न-कुछ बाँटते हैं। पीछे-पीछे जैसे कुत्ता लगा फिरता है न मिठाई देखकर, इसी तरह से पीछे-पीछे लोग लगे रहते हैं, उनका जयकारे बोलते हैं। नहीं बेटी तू वहीं कहीं दे आना आश्रमों में, पर यहाँ तू मेरे बच्चों को गिराने तो मत आया कर। यहाँ मेरे बच्चों का मनोबल तो मत गिराए। मैं आप से भी निवेदन करती हूँ कि आप कभी स्वार्थपरता में, कभी लालच में मत फँसना। बेटे, कई बार हमारी मनोभूमि विचलित हो जाती है, पर सँभालो विचलित मत होने दो उसे। कई बार कुछ ऐसी चीजें देखकर के मन में लुभावनापन आ जाता है। आप ऐसा मत होने देना, नहीं तो हम दूसरों की आँखों में गिर जाएँगे। जो भगवान ने हमें दिया है, उसी में हम अपना संतोष व्यक्त करेंगे। बेटे, आप इसी तरीके से रहना।

सूक्ष्म सत्ता ही सतत मार्गदर्शन करेगी

आगे आने वाले समय में, तीन महीने रह गए हैं। अब आपके पुरुषार्थ में, आपकी भावनाओं में ऐसी उमंग आनी चाहिए, ऐसी उमंग आनी चाहिए जैसी कि माताजी को आ रही है। गुरुजी कहाँ गए हैं! कहीं नहीं गए, हमारे अंदर हैं। शरीर में जब तक थे, तो तुम कब मिलते थे बताना जरा? कौन मिलता था रोज-रोज? कोई नहीं मिलता था। दूर से दर्शन हो जाते थे। तीन साल से तो दूर से भी उनके दर्शन नहीं हुए। फिर क्या आप शरीर को ही महत्त्व देंगे? शरीर को महत्त्व नहीं देंगे—उनकी दिव्य चेतना को महत्त्व देंगे, जो हमारी रग-रग में समायी हुई है। जो हमारा मार्गदर्शन करती है, जो हमें प्रेरणा देती है और आगे चलने के लिए जो हमारा पथ बनाती है। हमको साहस देती है, हमको बल देती है।

बेटे, यही बात मुझे आज तुमसे कहनी थी और ये कहना था कि साक्षात् मुझे देख जाइए जो कि आज पंद्रह दिन हो रहे हैं। इस बीच में भी मैंने गायत्री जयंती से लेकर और परसों बुधवार तक अपने आप को किस तरह सँभाला, मैं विचलित नहीं हुई। आँखों में आँसू जरूर आए, विह्वल भी हुई, लेकिन कोई भी कार्य मैंने नहीं छोड़ा कि कोई यह कह दे कि भाई साहब, माताजी ऐसी हो गई हैं कि बोल भी नहीं सकीं। बेटे, ठीक एक घंटा बोलकर आई हूँ। वैसे चालीस-पैंतालीस मिनट ही बोलती थी, लेकिन उस रोज मैं एक घंटा बोलकर आई और अभी भी मुझे पौन घंटा हो रहा है, जबकि दो-सवा दो घंटे वहाँ बैठकर लोगों से मिलकर आई हूँ। जरा इस बुढ़ापे में ख्याल तो रखो, ध्यान तो दो कि क्या हालत हो रही होगी शरीर की। यहाँ सारे दिन भीड़ होती रहती है फिर शरीर का कचूमर निकलेगा कि नहीं! निकलने दो, लेकिन मेरे अंदर हिम्मत है, इसमें दो राय नहीं है। मैंने जो वायदा किया है, वह मैं अब निभाकर के दिखाऊँगी।

बेटे, आप लोगों ने भी जो वायदा किया था गुरुजी से, उसे आप भी निभाइए। आप भी अपने संकल्पबल को ठीक कीजिए और अपने चिंतन को, चरित्र को ठीक कीजिए। जो भी कुचिंतन आ रहा हो, उसको भी साफ कीजिए। हमारे सब बच्चे हमको बहुत प्रिय हैं। हम किसी को हटाना नहीं चाहते, किसी को भगाना नहीं चाहते, लेकिन गड़बड़ी होगी तो बेटे, उस सड़े टमाटर को हम फेंक भी देंगे, इसमें दो राय नहीं है। चाहे वह हमारा कितना ही विरोधी क्यों न हो जाए। हमें इसकी चिंता कुछ नहीं है। हमें तो उनका बनाया हुआ यह वंश आगे फैलाना है, इसे मजबूत बनाना है और विश्वव्यापी बनाना है। इसका विश्वविस्तार करना है। इस विश्वविस्तार में आपकी क्या क्या भूमिका होनी चाहिए। इसके लिए आप तैयार हो जाइए। बस यही बात मुझे कहनी थी। इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करती हूँ।

ॐ शांति।

◆

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अमृतवाणी

नारी अपनी गरिमा को जाने और आगे बढ़े

(परमवंदनीया माताजी का १९८४ का एक महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

प्रज्ञापुत्रो, बेटियो और प्रज्ञा परिजनो! शिवाजी के पिताजी मुस्लिम शासन के एक वेतनभोगी कर्मचारी थे। यह उनकी माता जीजाबाई के संस्कार ही थे, जिनने शिवाजी को महान बनाया। हमीरदेव के पिता में सभी सामंतवादी कुसंस्कार थे, पर उन्हें ऐतिहासिक व्यक्तित्व मिला, इसमें उनकी माँ की भूमिका प्रमुख थी। जगद्‌गुरु शंकराचार्य संन्यासी पीछे बने, पहले उनकी मनोभूमि के अध्यात्मीकरण की शिक्षा माता के अंक में ही पूरी हुई थी। विश्व विजेता नेपोलियन के पिता साधारण सिपाही थे। उनके अंतःकरण में अजेय संकल्प शक्ति का बीज उनकी माँ ने आरोपित किया था। यह तो माताओं की बात हुई।

पुरुष के निर्माण में नारी का योगदान सहधर्मिणी-धर्मपत्नी स्वरूप उससे कम गरिमायुक्त नहीं है। एक पुलिस कोतवाल के बिगड़े हुए बेटे मुंशीराम, जिन्हें छोटी उम्र से ही जुआ, शराब आदि दुर्गुण विरासत में मिले थे, किंतु अपने पवित्र साहचर्य से आर्य समाज के मूर्द्धन्य मनीषी के रूप में ढालने वाली उनकी पत्नी ही थी। सरदार चूड़ावत को कौन जानता, यदि उनकी सहधर्मिणी हाडारानी ने राष्ट्र, जाति एवं संस्कृति के लिए मर मिटने का प्राण न फूँका होता। दुर्गा भाभी की पवित्र प्रेरणाओं ने सरदार भगतसिंह को इतिहासपुरुष बना दिया और वीर बहन उत्तरा ने शंख जैसे कायर भाई को महान योद्धा बनने का पथ प्रशस्त किया। ये उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि पारिवारिक जीवन में पुरुष और नारी दोनों की समानता होते हुए भी मुख्य भूमिका किसकी है ? यह तय करना हो तो ध्यान स्त्री पर अपने आप केंद्रित हो जाता है, क्योंकि अंतरंग व्यवस्था से लेकर पारिवारिक जीवन में संवेदना, करुणा और ममता की मूलस्रोत वही है। इन्हीं गुणों के कारण परिवार का प्रत्येक सदस्य उसके निकट का हो जाता है और प्रभावित होता है।

नारी का स्थान गरिमापूर्ण—इससे स्पष्ट है कि यदि किसी परिवार की सुख-शांति और समुन्नति का अनुमान लगाना हो तो सर्वप्रथम उस परिवार में स्त्रियों की स्थिति का मूल्यांकन करना अनिवार्य हो जाएगा। स्त्रियाँ अगर अनपढ़, अनगढ़ और असभ्य हों तो उनके बालकों से कोई भी शिष्ट-सुसंस्कृत व्यवहार करने की आशा नहीं कर सकता। इसीलिए प्राचीनकाल से ही हमारे देश में नारी को सद्‌गृहिणी के रूप में प्रतिष्ठा मिल सकी थी और उसके स्वरूप को स्थिर बनाए रखने के लिए शिक्षा, सुसंस्कारिता और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वरिष्ठता प्रदान की गई थी। सीताराम, गौरीशंकर, लक्ष्मीनारायण, राधेश्याम आदि शब्द नारी जाति की सजीव गरिमा का ही उद्‌घोष करते हैं। प्रत्येक नाम से पहले देवियों का नाम जोड़कर ही देवता का नाम स्मरण किया जाता है। माता, पुत्री, बहन, भाभी, चाची, दादी आदि रिश्ते नारी की गरिमा का ही अर्थबोध कराते हैं। ये सभी रिश्ते पारिवारिक जीवन में प्रत्येक सदस्य को अपने-अपने स्तर से प्रभावित करते हैं। इसलिए एक का भी कुसंस्कारी, अशिक्षित-अनपढ़ और विग्रहप्रिय होना सारे कुटुंब की शांति व्यवस्था को डुबो देता है।

परिवार संस्था को सर्वजनीन सुख-शांति के शाश्वत आधार के रूप में खड़ा करना है, तो उसके प्रमुख घटक नारी को सभ्य, सुशिक्षित और सुसंस्कारवान बनाने की प्रक्रिया का शुभारंभ करना सर्वोत्तम उपाय सूझ पड़ता है। इस प्रमुख तथ्य को हमारे ऋषि-मनीषियों ने सभ्यता के आरंभिक दिनों में जान लिया था। एक समय था जब नारी जाति की विशेषता को पूरी तरह समझा गया था। ''जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं'' इस एक वाक्य से भारत के अतीत की झलक मिल जाती है। हमारे देश के तैतीस कोटि नागरिकों को यदि देवता के सम्मानास्पद विशेषण से संबोधित किया गया, तो स्पष्ट है कि यहाँ नारी समाज को बहुत सम्मान मिला होगा। कौशल्या, सुमित्रा, सुनीति और सीता जैसी सुगृहिणियों,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गार्गी मैत्रेयी, घोषा, इला, विश्ववारा, अपाला, अरुंधती जैसी ब्रह्मवादिनी ऋषिकाएँ और समरांगण में बैरियों के दाँत खट्टे करने वाली कैकेयी, सुभद्रा जैसी वीरांगनाएँ इन्हीं देवियों की देन हैं।

प्रगतिशील चिंतन वाली भारतीय नारी—बेटे, रूढ़िवादी एवं अंधविश्वासी हेय चिंतन प्राचीन भारत में कभी स्थान नहीं पा सका था। पारिवारिक उत्तरदायित्व से लेकर शिक्षा, संस्कृति, समाज तथा शासन कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं रहा जिसमें भारतीय नारी का योगदान पुरुषों से कम रहा हो। वाचस्पति ने व्याकरण शास्त्र लिखा। उसकी प्रमुख श्रेयाधिकारिणी उनकी पत्नी भामती थी। याज्ञवल्क्य जैसे प्रकांड पंडित को विदुषी गार्गी के पांडित्य का लोहा मानना पड़ा था। ब्रह्माजी ने एक बार बड़ा यज्ञ आयोजित किया था। उसके आचार्य का पद मनु महाराज को सँभालना था। मनु अस्वस्थ हो गए। प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि इस यज्ञ का संचालन कौन करे? उस समय सारे विद्वानों ने एक स्वर से मनु की पुत्री इला को प्रमुख आचार्य घोषित किया। उन्हीं ने इतना बड़ा यज्ञ संपन्न कराया।

ऋषि कण्व के आश्रम में पली और पढ़ी शकुंतला ने न केवल भरत जैसे प्रतापी बालक को जन्म दिया, अपितु कठिन समय में भी परावलंबन स्वीकार नहीं किया। जंगल में रही तब भी अपनी आजीविका और बालक भरत की शिक्षा-दीक्षा का भार स्वयं उठाया और वापस लौटी तो राजा दुष्यंत का सारा राजकाज वहीं सँभालती रही। एक ओर नारी का यह वर्चस्व प्रधान जीवन तो दूसरी ओर आज की धार्मिक प्रतिगामिता, जिसने नारी जीवन को अछूत की श्रेणी में ला पटका। उसके आत्मविकास के सारे अधिकार छीन लिए। इस स्थिति से नारी को उबारे बिना अब भावी पीढ़ी का निर्माण संभव नहीं है।

मध्य युग : कलंक और पतन का युग—मध्य युग भारतीय नारी के अपमान और पतन का इतिहास है। अशिक्षा, बाल-विवाह, पर्दाप्रथा, दहेज आदि जैसे अंधविश्वासजनित बंधनों ने उसे इस तरह जकड़ा है कि इन दिनों उसकी स्थिति अर्द्धमूर्च्छित और मृतक जैसी हो रही है। स्वतंत्रता के सैंतीस वर्ष बाद भी नारी के स्तर में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। शिक्षा के क्षेत्र में थोड़ी प्रगति देखने को मिली तो अवश्य, पर उसी अनुपात से दहेज की माँग बढ़ जाने की समस्या ने उनके भविष्य पर जबरदस्त प्रश्नचिह्न लगा दिया कि बच्चियों को ऊँची शिक्षा दिलाई जाए अथवा नहीं? भारतीय समाज की प्रगति में यह प्रश्न अहं महत्त्व रखता है। उसे सुलझाया न गया तो परिवार नारकीय यंत्रणाओं के दिन गुजारते रहेंगे। विग्रह, कुसंस्कारिता, पराभव का अभिशाप आगे आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा। चिंतन और चरित्र की उत्कृष्ट धरोहरों से विमुख उद्दंड, आवारा और सब तरह से हेय कर्मों में लिप्त संतानें यहाँ के समुदाय में जन्में-पनपें, तो कोई आश्चर्य नहीं समझा जाना चाहिए।

भावनाओं की दृष्टि से भारतीय नारी का स्थान आज भी सारे संसार से ऊँचा है। इस संदर्भ में लाला लाजपत राय की आत्मकथा का वह अंश याद आ जाता है। घर की महिलाएँ मंगल करवाचौथ का व्रत कर रही थीं। उनके नन्हे नाती ने प्रश्न किया, 'बाबा आज दादी-मम्मी ने भोजन क्यों नहीं किया?' लालाजी ने बताया कि वे व्रत कर रही हैं। बच्चे के मुँह से फिर प्रश्न उभरा, 'फिर आपने और पापा जी ने ऐसा क्यों नहीं किया?' उत्तर में लालाजी ने सुदूर अतीत का स्मरण कराते हुए कहा, 'बेटा, भारतीय नारी में श्रेष्ठता के संस्कार जन्मजात होते हैं, इसलिए पुरुषों को आशंका नहीं रहती कि उन्हें खराब पत्नी मिलेगी। हर पुरुष चरित्रनिष्ठ और सदाचारी होगा, इसमें संदेह है। महिलाएँ इसीलिए व्रत-उपवास करती हैं, ताकि अच्छा ही घर मिले।

आज परिवार-निर्माण के महान उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए नारी की योग्यता, शारीरिक और मानसिक क्षमता विकसित करने की आवश्यकता है। परदे में रहने, चक्की-चूल्हे और बच्चे पैदा करने के अत्यधिक दबाव में रहने से महिलाओं का शारीरिक स्वास्थ्य तो चौपट हुआ ही है, साथ ही कुंठाग्रस्त मस्तिष्क भी किसी काम का नहीं रह गया। फिर श्रेष्ठ संतति की आशा कैसे की जा सकती है? ऐसी स्थिति में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन, सुसंस्कारिता के प्रबल समर्थन द्वारा ही अपंगता के इस कलंक को छुड़ाया जा सकता है। हमारी प्रत्येक भावनाशील बेटी जीवन की इन अभिन्न चार आवश्यकताओं की पूर्ति में जुट पड़े तो देखते-ही-देखते परिवार का एक अच्छा स्वरूप उभरकर सामने आएगा, फिर उससे समृद्धि भी सच्चे अर्थों में प्राप्त हो सकेगी।

परंपराएँ बदलें, कुरीतियाँ मिटें—अब छोटी अल्पवयस्क बच्चियों के शादी-विवाह का समाज में औचित्य नहीं रहा। विदेशी आक्रांताओं से शील-धर्म की रक्षा हेतु कभी मध्यकाल में वह परंपरा पनपी थी। तब ग्यारह वर्ष की कन्याओं के विवाह को तत्कालीन धर्माचार्यों ने भी मान्यता प्रदान की थी। संकट की घड़ी में लिया गया निर्णय हमेशा के लिए पत्थर की लीक बन जाए, यह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शोभनीय नहीं है और न ऐसी अनुमति शास्त्र देते हैं। बाल-विवाहों के दुष्परिणाम कितने घातक निकलते हैं, इसका खुला दस्तावेज मद्रास की लेडी डॉक्टर मिस मेयो की पुस्तक 'नरभक्षी बकासुर' है। इसे पढ़ लेने से बात पूरी तरह से समझ में आ जाती है। भले ही यह परंपरा कभी श्रेष्ठ ठहराई गई हो, पर आज उसे त्याग देना ही धर्म के सर्वथा अनुकूल बात होगी। नारी जीवन की यह करुणाजनक स्थिति अपने ऋषि वंशजों से पूछती है कि क्या सचमुच हमारे पितामह इतने निर्मम रहे होंगे?

कन्या को करुणा और वात्सल्य की स्नेहमूर्ति समझने वाले भारतीय समाज ने समय-समय पर इन घातक कुप्रथाओं का स्वयं परिशोधन किया है। ऋषि दयानंद जैसे विचारकों ने बार-बार इस ओर ध्यान आकृष्ट किया, किंतु पोंगापंथी अंध श्रद्धालु, समाज को विवेकशीलता की देहरी तक पहुँचने दें, तब तो कुछ बात बने। इसका स्पष्ट निर्देश स्मृति में मनु महाराज ने किया था। हमें खेद है कि उसी बुद्धिजीवी मनीषी परंपरा के धर्माचार्य मध्ययुग की अंधचलन की ही लकीर पीट रहे हैं। इससे न देश का भला होगा, न राष्ट्र का, न जाति का और न संस्कृति का। आज देश स्वाधीन है। जनसंख्या का अत्यधिक दबाव भी है, अतएव अल्पवयस्क बालकों के विवाह का कोई औचित्य नहीं बैठता।

एक बार दमयंती अकेली जंगल में भटक गई तब एक बहेलिये से आत्मरक्षा के लिए उन्हें शरीर बल का ही सहारा लेना पड़ा था। हमीर देव की माता तब अविवाहित थीं। एक राजकुमार उन्हें रस्सी फेंककर पटकना चाह रहा था। तब उनने रस्सी जोर से खींची तो राजकुमार धरती पर आ पड़ा और उसने अपनी हार मान ली और हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना करने लगा। हमारी बच्चियों का स्वस्थ, सुशिक्षित होना इस दृष्टि से आवश्यक है और स्वस्थ संतति की दृष्टि से भी। लड़कियों को सबल और समर्थ बनाने की दृष्टि से खेलकूद, व्यायाम आदि पर भी उतना ही महत्त्व दिया जाए जितना कि लड़कों पर। एक की भी उपेक्षा समूचे समाज की दुर्गति का कारण बनेगी।

वास्तविक सौंदर्य कौन-सा—सफाई भी स्वास्थ्य का ही अंग है। इस बात को तो हमारी बेटियाँ भी समझें। बनावटी फैशन-परस्ती, जेवरों और शृंगार प्रसाधनों में सिवाय बर्बादी के और कुछ भी नहीं। इन सबसे स्वास्थ्य तो चौपट होता ही है, घर की अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सौंदर्य के लिए स्वास्थ्य और स्वच्छता ये दो उपादान पर्याप्त हैं। वेषभूषा साधारण हो, पर स्वच्छ हो तो वह बनावटी शृंगार की अपेक्षा अधिक उत्तम होगी। इससे अनेक दुर्घटनाओं से बचाव का लाभ तो अनायास ही मिल जाता है, साथ ही गृहस्थ जीवन की गाड़ी सुभीते से आगे बढ़ती है। अश्लील आचरण की रोकथाम पुरुष करे अथवा न करे, पर इससे उत्पीड़ित नारी को अब विलंब नहीं करना चाहिए। वह स्वयं आगे बढ़ेगी, तो पुरुष भी प्रेरणा पाएँगे। सभ्यता एक सीढ़ी और ऊपर चढ़ेगी।

शिक्षा नारी जीवन के उत्कर्ष की दूसरी बड़ी आवश्यकता है। जरूरी नहीं कि वह स्कूली और आधुनिक ही हो। विचारशील होने के लिए जिस शिक्षा की आवश्यकता होती है, वह स्कूल की पुस्तकों से पूरी हो भी नहीं पाएगी। आजकल तो उसमें भ्रमित करने वाले अंश अधिक हैं। शिक्षा का अर्थ है—मानवीय गरिमा का बोध। प्रारंभिक ज्ञान तो विद्यालय में कराया जा सकता है, पर उच्चशिक्षा के लिए विद्यालय आवश्यक नहीं। उसके लिए जीवन को ऊँचा उठाने वाले साहित्य की नारियों को भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी किसी पुरुष को। इसके लिए उपयुक्त व्यवस्था अभिभावकों को करनी चाहिए। इसको पूरा करने के लिए सत्साहित्य की रचना की ओर और प्रसार की ओर हमारा ध्यान हमेशा बना रहा है। अनपढ़ और प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षा की देखभाल करना प्रत्येक गृहस्थ का आवश्यक कर्तव्य है। अपने साथी और सहयोगियों का बौद्धिक स्तर बढ़ाने में रुचि लेना नारी जीवन और समाज की बहुत बड़ी सेवा है।

परिवार को ऊँचा उठाने, बालकों की अधिक अच्छी देखभाल—ये दो लाभ इस सेवा-साधना से हाथोंहाथ प्राप्त हो सकते हैं। इसमें महिलाएँ भी पीछे न रहें। शिक्षित महिलाएँ तो अग्रणी भूमिका निभा सकती हैं। कमला हास्पेट, शिवदेवी शास्त्री जैसी समाजसेवी देवियाँ अपने प्रज्ञा परिवार के बीच से निकलें और अनपढ़ महिलाओं को साक्षर बनाने के लिए थोड़ा-सा समय निकालें, तो यह अपने तरीके की एक महान सेवा होगी। जन समर्थन, जन सहयोग की कमी उन्हें नहीं पड़ेगी।

संस्कार सर्वोपरि—सुसंस्कारिता का महत्त्व शिक्षा से भी बढ़ा-चढ़ा है। माँ के संस्कार अच्छे हों और शैक्षणिक योग्यता कम भी हो तो काम आसानी से चल सकता है। प्राचीनकाल में भारतीय परिवारों में षोडश संस्कारों की, बलिवैश्व की तथा कथा-कहानियों की परंपरा पूरे उभार पर थी। पहली रोटी गो-ग्रास की बच्चों में परमार्थ भावना का बीजारोपण करती है। बलिवैश्व से देवत्व के प्रति समर्पण का पाठ पढ़ाया जाता है। षोडश संस्कार बाल

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मनोविज्ञान का अति उच्चस्तरीय निर्धारण कहा जा सकता है। सड़क के हर मोड़ पर, चौराहे पर दिशा-निर्देश के बोर्ड लगे होते हैं, ताकि यात्रियों और वाहनों को निर्धारित दिशा की राह पकड़ने में सुविधा हो। संस्कारों को भी इसी तरह का उच्चकोटि का मार्गदर्शक समझना चाहिए, बल्कि इससे अनेक गुना श्रेष्ठ।

मनुष्य जीवन के प्रत्येक नाजुक मोड़ पर विद्या का प्रकाश मिलता है। बालक का ध्यान विचारों की ओर मोड़ने के लिए चूड़ाकर्म, शिक्षा के महत्त्व को बतलाने के लिए समझ विकसित होते ही विद्यारंभ, किशोरावस्था के भटकावों से बचाने के लिए व्रतबंधन अर्थात् यज्ञोपवीत संस्कार, पारिवारिक वातावरण में कितने उपयोगी थे, इसे आज भी स्पष्ट देखा जा सकता है। यह कार्य घर की महिलाओं के जिम्मे ही रहे हैं। जीवन के मूल उद्देश्य की ओर सतत जागरूक रखने वाली इन श्रद्धासिक्त परंपराओं को पोषण देना ही चाहिए। परिवार का हर घटक चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, थोड़ी-सी भी सावधानी बरते तो आशा की किरणों को झलकते देर नहीं लगेगी।

नारी जीवन का पतन यथार्थ में परावलंबन से हुआ। पुरुष कमाई करता है, इसलिए वह वरिष्ठ है और स्त्री उसकी आश्रिता। इस मान्यता ने नारी जाति का बहुत अहित किया है। स्त्री की भावनामूलक बनावट और कोमल काया के कारण किसी समय उपार्जन जैसा कठोर कार्य पुरुषों ने अपने कंधों पर उठाया था और गृह व्यवस्था नारी को सौंपी थी। पीछे मूल आदर्श तो तिरोहित हो गया और परंपरा ने नारी जीवन को लूला-लँगड़ा कर दिया। नारी को दासी मानने, उसे प्रताड़ित करने और दहेज जैसी विकृतियों की जड़ भी यहीं से फैली। पहले तो विधवा हो जाने या पति द्वारा परित्यक्त कर देने के बाद भी पिता-भाई अथवा परिवार का कोई समझदार व्यक्ति उन्हें पूरे सम्मान के साथ अपने साथ रखकर जीवन निर्वाह को कठिन होने से बचा लेता था, पर आज जब पारिवारिक परिवेश में स्वार्थपरायणता-संकीर्णता ने अड्डा जमा लिया है, तब स्त्रियों का स्वावलंबन की ओर झुकना बहुत आवश्यक हो गया है। जहाँ इससे नारी जीवन से आत्महीनता की ग्रंथियाँ टूटेंगी वहीं वे संकट के समय अपनी गृहस्थी का बोझ सँभालने के लिए परमुखापेक्षी नहीं बनेंगी।

नारीशक्ति का चतुर्मुखी विकास हो— श्रेष्ठ स्वाभिमानी संतति और सुखी परिवार के लिए नारी जीवन का यह चतुर्मुखी विकास आज की सर्वोपरि आवश्यकता है। इसे प्रत्येक प्रज्ञा परिजन, प्रत्येक भारतीय को गंभीरतापूर्वक अनुभव करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक कदम उठाने से किसी को भी हिचकिचाना नहीं चाहिए। इसमें किसी प्रकार की कोई भी धार्मिक मान्यता आड़े नहीं आएगी। जो लोग नारी को लांछित करते हैं, उन्हें धार्मिक अधिकारों से प्रतिबंधित ठहराते हैं, उन्हें सर्वप्रथम अपने प्राचीनकाल के ग्रंथों को जलाना होगा, ताकि उनके इस अधिकार का समर्थन करने वाले साक्ष्य शेष न रहें। पति की उदासीनता सहन न करने पर अपाला ने उच्चस्तरीय साधनाएँ संपन्न कीं। तभी वे मंत्रद्रष्टा ऋषि हो पाईं। रामवंश के यथार्थ इतिहास को वाल्मीकि ने अपनी रामायण में लिखा है। जब सीताजी का अपहरण हो गया और भगवान राम उन्हें खोजने चले तो उन्होंने लक्ष्मण से कहा,

इंग्लैंड गए एक भारतीय के पास बिस्तर-असवाब ज्यादा था। वह कुली को आवाज लगा रहे थे।

एक सज्जन ने उनकी कठिनाई को समझा और असवाब बग्घी पर लदवा दिया। उन सज्जन ने कुली की मजूरी पूछी, तो उनने अपना परिचय देते हुए कहा, वे वहाँ की बैंक के मैनेजर हैं। आपकी कठिनाई देखकर अपनी गाड़ी एक ओर खड़ी करके सहायता के लिए आए हैं। मजूरी आप से क्या वसूल की जा सकती है? इतना कहकर वे अपने काम पर चल दिए। भारतीय सज्जन ने ब्रिटिश समाज में दृढ़ता से जमे बैठे सुसंस्कारों की झलक एवं स्वावलंबन की महत्ता को उस दिन सही अर्थों में समझा।

"सायंकाल हो रहा है। सीताजी को जलाशय के किनारे संध्यावंदन बहुत प्रिय है। चलो उन्हें नदी किनारे ढूँढ़ें।" ये उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि नारी का आत्मिक स्तर पुरुष से कतई कम नहीं।

इस तथ्य की खोज हिंदू धर्म के प्राण महामना मदन मोहन मालवीय ने स्वयं कराई थी। उन्होंने विद्वानों की एक कमेटी नियुक्त की थी। जिसने यह निष्कर्ष दिया था कि स्त्रियों को धार्मिक अधिकार पुरुषों से कम नहीं। तभी से बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में कन्याओं को वेद पढ़ाए जाने लगे। इतना होने पर भी यदि नारी जीवन के अपावन, आश्रित होने की मान्यता पनपती रही, तो इस देश की महानता को फिर से विकसित कर सकना कभी भी संभव न होगा। जो हमें प्राचीनकाल से प्राप्त हुई थी।

ॐ शांति ॐ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

ध्यान क्यों करें? कैसे करें?

जून, १९७७ में गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में दिया उद्‌बोधन (पूर्वार्द्ध)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो, क्रिया और विचार इन दोनों बातों का समन्वय अगर आप कर डालें, तो चमत्कार पैदा हो जाएगा। बया नाम का एक पक्षी होता है। जब वह अपना घोंसला बनाता है, तो कैसी तबियत से बनाता है, कैसे मन से बनाता है कि छोटे-छोटे तिनकों को एक-एक चुनकर के लाता है। उन्हें गूँथकर ऐसा बढ़िया घोंसला बना देता है कि क्या मजाल है कि अंडा हवा के झोंके से तबाह हो जाए? क्या मजाल है कि कौआ उसमें झपट्टा मार दे? उसमें उसके बच्चे मौज के साथ बैठे देखते रहते हैं। कोई आदमी सड़क पर से जब निकलता है, तो उस घोंसले को देखता रह जाता है कि यह बया का घोंसला है। कितना शानदार घोंसला है। हर जगह से उसकी प्रशंसा होती है। बया स्वयं प्रसन्न रहती है और देखने वालों की तो तबियत बाग-बाग हो जाती है।



मित्रो, क्या विशेषता है बया में? कोई विशेषता नहीं है। बेटे, मन लगाकर कोई भी काम करो, तो शानदार होता है। मन लगाकर काम नहीं किया जाए, तो बेटे उसका सत्यानाश हो जाता है। एक पक्षी का नाम है- कबूतर। कबूतर बया की तुलना में चार-पाँच गुना बड़ा होता है। इतना बड़ा होता है, पर घोंसला कैसे बनाता है? बया का घोंसला जरा आप देखना और कबूतर का भी घोंसला देखना। वह बड़ी-बड़ी लकड़ी बीनकर ले आता है और एक इधर रख दी, एक उधर रख दी और एक किधर को रख लेता है और उसमें ही अपने अंडे देने लगता है। उस पर ही बैठा रहता है। हवा का झोंका आता है, बस घोंसला गिरता है नीचे और कबूतर गिरता है ऊपर। अंडे फूटकर अलग हो जाते हैं, बच्चे मरकर जहन्नुम चले जाते हैं। उसकी सारी-की-सारी व्यवस्था गड़बड़ा जाती है और देखने वाले कहते हैं कि यह कबूतर कैसा बेअकल है, कैसा बेवकूफ है।

काम में मन लगाइए

बेटे, मैं क्या कहता हूँ? यह कहता हूँ कि अपने सामान्य जीवन के सारे क्रियाकलाप, चाहे वे बहिरंग जीवन के हों या अंतरंग जीवन के, मामूली काम के लिए भी अगर आपने काम में तबियत नहीं लगाई, आपने मन नहीं लगाया, तब काम बड़ा फूहड़, कुरूप, बेसिलसिले का, बेहूदा, बेढंगा हो जाएगा। अगर किसी काम में मन लगा दिया जाए, तो उसमें एक चमत्कार दिखाई पड़ेगा, जादू दिखाई पड़ेगा। मन लगाकर किए हुए काम और बिना मन लगाए किए हुए कामों में जमीन-आसमान का फरक होता है। स्पष्ट दिखाई देता है कि यह मन लगाकर किया गया है या नहीं। यह मशीन हमारे सामने रखी है। इसमें दो तार हैं, एक निगेटिव कहलाता है और एक पॉज़िटिव कहलाता है। इन्हें ठंढे और गरम तार भी कहते हैं। दोनों मिल जाते हैं तो करंट चालू हो जाता है और अगर दोनों को अलग

कर देते हैं, तो एक तार बेकार सा हो जाता है, दूसरा भी बेकार पड़ा हुआ है, कुछ काम आता नहीं। शरीर को हम अलग कर दें और मन को हम अलग कर दें, दोनों का हम समन्वय न करें, तो हमारे जो भी काम होंगे बेसिलसिले के और बेहूदे होंगे।

मित्रो, एक काम है भजन। भजन के संबंध में भी यही बात है। बिना मन से किया हुआ भजन और मन से किए हुए भजन में जमीन-आसमान का फरक होता है। बिना मन से किया हुआ भजन ऐसा है, जिसमें केवल जबान की नोंक की लपालपी और हाथों की उँगलियों की नोंक की हेराफेरी की क्रिया भर होती रहती है। चावल यहाँ रख दिया नमस्कारं करोमि, जैसी क्रियाएँ, दीपक इधर का उधर किया, आरती उतार दी, यह कर दिया, वह कर दिया। हाथों की हेराफेरी, वस्तुओं की उलटा पलटी और जीभ की लपालपी, बस भजन हो गया। अच्छा तो हो गया अनुष्ठान, हो गई साधना? नहीं बेटे, कुछ नहीं हुआ। यह तो केवल शारीरिक क्रिया हुई है। शरीर की क्रियाओं का जो फल मिलना चाहिए बस वही मिलता है। इससे ज्यादा कुछ और फल नहीं मिल सकता।

मन क्यों भाग जाता है

मित्रो, अगर साधना का चमत्कार आपको देखने का मन हो और साधना से सिद्धि की जो बात बताई गई है, वह करना हो तो आपको पहला काम क्या करना पड़ेगा? आपको सबसे पहले अपने काम में मन लगाना पड़ेगा। कोई भी काम हो, जिसमें भजन भी शामिल है, मन लगाकर करना पड़ेगा। भजन के साथ में मन लगाना चाहिए। मन लगाने से क्या मतलब है? मन लगाने से मतलब यह है कि मन भागना नहीं चाहिए और उपासना में लगना चाहिए। महाराज जी, यही तो हमको शिकायत है। क्या शिकायत है? मन भाग जाता है, अच्छा तो आपको यह शिकायत है। चलिए हम बताते हैं, फिर मन भाग जाए तो आप हमसे कहना। अब क्या करें? बेटे, मन को किसी काम में लगाया जाए। मन की बनावट ऐसी है कि जब कोई काम नहीं होगा तो मन भाग जाएगा। जब मन के भागने की आप शिकायत करते हैं, तो मैं हमेशा उसका उत्तर यह देता हूँ कि शायद आपने मन को किसी काम में नहीं लगाया। मन को काम में नहीं लगाया जाएगा तो मन भागेगा ही। घोड़े को आप काम में लगा दीजिए ताँगे में लगा दीजिए, सवारी में चला दीजिए, कहीं भी लगा दीजिए तो घोड़ा काम में लगा रहेगा घोड़े को आप खोल दीजिए, उसके गले में से रस्सी खोल दीजिए, फिर देखिए घोड़ा भागेगा ही। फिर आप कहेंगे कि साहब हमारा घोड़ा भाग गया। बैल को आप खाली छोड़ दीजिए, वह भाग जाएगा।

मित्रो, उपासना के समय भी हम अक्सर अपने मन को खाली छोड़ देते हैं, छुट्टल छोड़ देते हैं। उसे कोई काम सौंपते नहीं, कोई जिम्मेदारी सौंपते नहीं, इसीलिए मन भाग जाता है। मन भागेगा नहीं तो क्या करेगा? नहीं साहब! मन भागना नहीं चाहिए। बेटे, मन भागेगा नहीं तो क्या करेगा? भागना तो उसकी आदत है। उसकी तो बनावट ही ऐसी है, उसकी संरचना ही ऐसी है, उसकी इलैक्ट्रॉनिक संरचना ही ऐसे ढंग से की गई है कि उसको भागना चाहिए। भागना तो उसका स्वाभाविक गुण है। अगर वह भागेगा नहीं तो आदमी या तो सिद्धपुरुष हो जाएगा, समाधि में चला जाएगा या फिर पागल हो जाएगा। दो में से एक काम हो जाएगा। मन को तो भागना ही चाहिए। भागना उसका स्वाभाविक गुण है इसलिए उसका कोई कसूर नहीं है। मन का भागना बंद कीजिए। नहीं बेटे, यह नहीं हो सकता।

मन का भागना बंद करने के क्या तरीके हैं? यह मैं कल आपको समझा रहा था कि उपासना में क्रिया के साथ साथ मन को भी लगाइए। मन कैसे लगाएँ? बेटे, मैं यही तो समझा रहा था। प्रत्येक क्रिया के साथ क्या संकेत जुड़े हुए हैं, क्या शिक्षण भरा हुआ है, उस पर गौर कीजिए। साथ ही यह भी गौर कीजिए कि किस काम के लिए यह किया जा रहा है। जिस काम के लिए भी किया जा रहा है, क्रियाएँ जो भी की जा रही हैं, उनका उद्देश्य क्या है? आम लोगों ने क्रियाओं को यह समझ रखा है कि कोई ऐसी बात नहीं है। कुछ लोगों का यह भी ख्याल है कि क्रियाओं को देखकर भगवान भी प्रसन्न हो जाते हैं। क्या कर रहे हैं? बच्चों जैसी उलटी पुलटी हरकतें करने हैं। मम्मी हम यह घर बना रहे हैं। हाँ, बहुत खूब बेटे, अच्छा है घर बनाओ। भगवान जी! हमारे बच्चे को गायत्री मंत्र आता है। कैसा गायत्री मंत्र आता है? "ऊँ भूं भूं भुवः"। अच्छा तो तू भी ऐसे ही भूं भूं कर लेता है। भगवान जी, वैसे तो समझते हैं कि आदमी जबान से क्या कया बकवास कर लेता है। अब चलिए मैं आपके मंत्रों को बकवाद कहता हूँ। जीभ की नोंक से आप क्या वक वक मचाते रहते हैं। उससे भगवान प्रसन्न नहीं होता है। तो क्या केवल हाथों की उलटा पुलटी और जीभ की नोंक की हेराफेरी से भगवान प्रसन्न नहीं होता है? हाँ बेटे, नहीं होता है। तो किससे प्रसन्न होता है? आपके मन से, हृदय से और भावनाओं से।

चेतना व चिंतन का मेल हो

मित्रो, आपका जो वास्तविक अस्तित्व है, जो हाथ नहीं आता है, वह पदार्थ नहीं है, चावल और धूपबत्ती नहीं है, जीभ की नोंक नहीं है। आपका जो वास्तविक अस्तित्व है, जिसके द्वारा भजन किया जाना चाहिए, वह है आपका चिंतन। चेतना चिंतन से ताल्लुक रखती है। चेतना का स्रोत है- चिंतन। चिंतन को कहाँ लगाएँ? सीधी-सी बात है- चिंतन कहाँ लग रहा है यह आप देखें। आप कहीं लग रहे हों, जीभ कहीं लग रही हो, वस्तुएँ कहीं भी रखी हों, माला कहीं भी चल रही हो, पर बेटे, आप यह बताइए कि आपका चिंतन कहाँ लग रहा है? गुरुजी! चिंतन तो भागता रहता है। तो बेटे, भजन कहाँ हो रहा है? चिंतन को लगाने का उद्देश्य यह है कि जिस काम के लिए जो क्रियाएँ कराई जा रही हैं, आप उस इशारे पर आ जाइए कि उस इशारे के साथ में आपको क्या चिंतन करना चाहिए?

बेटे, हम सबेरे आत्मध्यान कराते हैं। आत्मध्यान कराने के साथ-साथ सजेशन देते हैं, निर्देश देते हैं। इसका क्या मतलब है? निर्देश से मतलब है कि जिस समय हम जो बात कहें, वैसे ही आपका विचार चलना चाहिए। जो हम कहें वैसी कल्पना कीजिए। हमने कहा, सप्तऋषियों का तपस्थान, आप ध्यान कीजिए कि सात ऋषि बैठे हुए हैं। बड़ा घना जंगल है और सातों ऋषि समाधि लगाए हुए बैठे हुए हैं। यह पुनीत स्थान जहाँ उनके शरीर पेड़ों की सघन छाया में हैं। आप इस तरह की कल्पना कीजिए, मन स्थिर हो जाएगा। बेटे, आपका मन भाग जाए, तो हमसे कहना। हम जो बताते हैं उसमें आपको ध्यान लगाना चाहिए, फिर देखिए कैसे मन भाग जाएगा। सबेरे हम आपको जो सजेशन देते हैं, उसके हिसाब से आप अपने चिंतन को और अपने विचार करने की श्रेणी को उसी पर स्थापित कीजिए, केंद्रित कीजिए। हमने आपसे कहा- प्रात:काल का स्वर्णिम सूर्योदय। आप विचार कीजिए कि प्रात:काल का लाल रँगा सूरज, सबेरे निकलता हुआ बड़ा वाला सूरज, पूरब से निकला, थोड़ा निकला, अभी थोड़ा और बढ़ा. अभी और बढ़ा और पूरा सूरज निकल आया। क्या मतलब है? बेटे, हमने आपसे कहा कि अपने मन को हमारी कही हुई बात पर लगा दें, फिर आपका मन उस काम पर लग जाएगा, तो भागने का सवाल ही नहीं है। यदि काम पर नहीं लगा, तब तो भागेगा ही।

इसलिए क्या करना चाहिए? प्रत्येक क्रिया के लिए जो कर्मकांड बनाए गए हैं, वे श्रेष्ठ काम के लिए बनाए गए हैं। कर्मकांड करते समय आपका ध्यान इस क्रिया पर जाए, जो बोलकर तो नहीं बताई गई है, पर क्रिया के माध्यम से बता दी गई है। कल हमने आपको बताया था कि आचमन से हमारी वाणी का परिष्कार होता है। कल जब आप आचमन करें तो यह ध्यान करें, यह विचार करें कि हमारी वाणी का संशोधन हो रहा है। वाणी को हम धो रहे हैं, वाणी को हम साबुन लगा रहे हैं। वाणी को पत्थर पर पीट रहे हैं, वाणी की ढलाई कर रहे हैं। वाणी पर पानी डाल रहे हैं। जैसे बच्चा गंदा हो जाता है, टट्टी कर आता है, तो उसके ऊपर बाल्टी से पानी डालते हैं, उसे धोते हैं, नहलाते हैं, उसको साफ करते हैं। आप यह विचार कीजिए कि हमारी वाणी जो अभक्ष खाने की वजह से, अवांछनीय वार्त्तालाप करने की वजह से गंदी हो गई है, इसको हम धोते हैं और साफ करते हैं। जैसे धोबी, धोबीघाट पर कपड़े ले जाकर पत्थर पर रगड़ता है। आप कल्पना कीजिए कि अपनी जीभ को धोबी की तरह से हम घाट पर ले जाते हैं और पत्थर पर रगड़कर धोते हैं। पानी का जो हमने आचमन कर लिया, उसके सहारे हम अपनी जीभ को दे पिटाई-दे पिटाई, दे डंडा-दे डंडा और उसका सारा-का-सारा कचूमर निकाल देते हैं। फिर देखिए कि वह गंदी रहेगी कि साफ होगी? साफ होगी।

साधना ऐसे जीवंत होगी

गुरुजी! और क्या बताएँगे? बता तो रहे हैं। बेटे, प्रत्येक क्रिया के साथ में चिंतन दिया हुआ है। ऋषियों ने जितने भी कर्मकांड बनाए हैं, उनके साथ में चिंतन दिया है। चिंतन के साथ-साथ क्रिया को मिला देंगे, तो मन और क्रिया का समावेश हो जाएगा। यह दो चीजें शामिल हो जाएँगी- विचारणा और क्रिया तो चमत्कार हो जाएगा। विचारणा और क्रिया को मिला देने से हमारा शरीर और मन जिस तरीके से दोनों एक बन जाते हैं, वैसे ही आपकी साधना जीवंत हो जाएगी। प्रत्येक क्रिया के साथ हम पाँच उपासनाएँ बताते हैं। पाँच उपासनाओं का मोटा-मोटा स्वरूप हमने पत्रिकाओं में भी छाप दिया था और पिछले साल भी हमने स्वर्ण जयंती साधना भी सिखाई थी। गुरुजी! हम स्वर्ण जयंती साधना वर्ष की साधना करते हैं और भजन भी पैंतालीस मिनट करते हैं। भजन तो करता है बेटा, पर तू एक बात तो बता कि उस कर्मकांड के साथ-साथ जो विचार हैं, उनको भी करता है कि नहीं।

नहीं महाराज जी! मैं तो लगा रहता हूँ, बस माला पूरी कर लेता हूँ। माला पूरी कर लेता है तो तेरे लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। तेरे लिए बहुत आशीर्वाद, परंतु

बेटा जब माला करता है, तो उसके साथ-साथ विचारों को भी लाता है कि नहीं? महाराज जी, विचार तो मेरे भागते रहते हैं। तो बेटा, भगवान की उपासना तेरी अधूरी है। तेरी उपासना का जो परिणाम मिलना चाहिए था, उससे जिस वातावरण का परिशोधन होना चाहिए था, उस वातावरण का परिशोधन हुआ क्या? जिस उद्देश्य से हमने प्रेरणा दी थी, शक्ति दी थी और दीक्षा दी थी, शिक्षा दी थी। न हमारा उद्देश्य पूरा हुआ, न तेरा हुआ और न ही भगवान का। तीनों में से एक का भी उद्देश्य पूरा नहीं हुआ, इसलिए क्रिया के साथ-साथ में विचारणा का समावेश करने की शिक्षा मैं हमेशा देता रहा हूँ और देता रहूँगा।

मित्रो, कल मैंने आत्मशोधन की प्रक्रिया आपको बताई थी कि गायत्री पंचमुखी भी है। पाँच कोशों में उसके पाँच मुख हैं। गायत्री उपासना पाँच चरणों में बँटी हुई है। पहला कृत्य है—आत्मशोधन की क्रिया। आत्मसंशोधन की क्रिया जिसमें हम पाँच कृत्य कराते हैं। १. पवित्रीकरण कराते हैं, २. आचमन कराते हैं, ३. शिखा बंधन कराते हैं, ४. प्राणायाम कराते हैं, ५. न्यास कराते हैं। इन पाँच क्रियाओं का एक उद्देश्य है कि हम अपने पाँचों कोशों को, पाँचों तत्त्वों को, पाँचों प्राणों को शुद्ध बनाते हैं। उपासना में पहला काम है सफाई करना। हमारे दिमाग में एक बात आनी चाहिए कि हमको भगवान के चरणों में जाने के लिए नहा-धोकर जाना चाहिए। स्वच्छ और पवित्र होकर जाना चाहिए। हमारे जीवन की क्रियाएँ पवित्र होनी चाहिए। हमारा चिंतन पवित्र होना चाहिए। हमारे साधन पवित्र होने चाहिए और हमारे जीवन की गतिविधियाँ पवित्र होनी चाहिए। अगर हम पवित्रता का पहला उद्देश्य पूरा कर लेते हैं, तो समझना चाहिए कि पाँच मुख वाली गायत्री की हमारी उपासना सफल हुई।

सर्वप्रथम, जीवन का परिष्कार

गायत्री के पंचकोश जागरण करने की प्रक्रिया में गुरु जी आपने तो ब्रह्मचर्य की बात कही थी। बेटे, हम बताते हैं कि ब्रह्मचर्य तेरे लिए यहीं से शुरू होता है। औरों के लिए, बड़ों के लिए हम कुंडलिनी बता देंगे, पर तेरे लिए कुंडलिनी जगाना बेकार है। तेरे लिए तो यहीं से शुरू होता है। तू यह बता कि तूने अपने जीवन का परिष्कार कर लिया कि नहीं, तभी बेटे बात बनेगी अन्यथा नहीं? हमारे गुरु ने हमें बार-बार बुलाया है। बार-बार बुलाने की शृंखला उन्होंने उस समय से प्रारंभ की जिस समय कि हमारे चौबीस लक्ष के चौबीस गायत्री महापुरश्चरण पूरे हो गए। जब उन्होंने यह देख लिया कि इसने अपना मन, अपना शरीर और अपनी जिह्वा का संशोधन करके इस लायक बना लिया कि हमारी गोदी में आ सकता है, तब उन्होंने अपनी लंबी वाली भुजाएँ फैलाईं और कहा, अब तो तुझको मेरे पास आना चाहिए। मैंने कहा, पहले क्यों नहीं बुलाया था आपने? मुझे चौबीस साल हो गए, जब तो मैं जवान ही था। उन्होंने कहा, तब तक तू संशोधित नहीं हो सका था। मैंने देखा था कि तेरी सफाई में कमी थी, तेरी शुद्धता में कमी थी। तेरी शारीरिक और मानसिक शुद्धता का जो स्तर होना चाहिए, उसमें मैंने कमी पाई, इसलिए मैंने सोचा कि अभी और निखार लूँ, अभी और तेरे कपड़ों की धुलाई कर लूँ। अब तेरी चड्डी भी धुल गई, तेरा मन भी धुल गया, तेरा सब धुल गया, अब मेरा मन आता है कि तुझे गोदी में लूँ। अपने पिता से मैं लिपटता हुआ चला गया, उनका दूध पीता हुआ चला गया, उनकी शक्ति-सामर्थ्य को प्राप्त करता हुआ चला गया।

मित्रो, संशोधन का यह काम आवश्यक है, उपासना से भी ज्यादा, भजन से भी ज्यादा। कर्मकांड से भी ज्यादा आवश्यक है। अति आवश्यक है कि आप भी अपना आत्मसंशोधन कर लें, तो बात बने। लोहा जब तक कच्चा रहता है, तब तक उसकी कोई चीज नहीं बन सकती। हमने भिलाई और टाटानगर में कच्चा लोहा देखा। कच्चा लोहा वैगन में भरकर आता था। कच्चा लोहा कहाँ से आता है? साहब! यह जमीन में से खोद-खोदकर आता है। साहब! जरा लोहा दिखाना। यह ऐसा लोहा जैसे मिट्टी मिला हो। यह लोहा है। यह कैसा लोहा है? साहब! यही लोहा है। अरे बाबा! यह कैसा लोहा है, यह तो कुछ और ही है। नहीं बाबा! यही लोहा है मिट्टी मिला कच्चा लोहा। बेटे, कैसा लोहा था-मिट्टी थी, भारी-भारी पत्थर थे। तो अब इससे लोहा कैसे निकलेगा? देखिए अब तमाशा दिखाते हैं कि इसमें क्या-क्या होता है। कच्चा लोहा लिया और तुरंत लेने के बाद उसको भट्टी में डाल दिया, गरम किया, पकाया। पकाने के बाद में मिट्टी अलग होती चली गई और लोहा अलग होता चला गया। एक बार सफाई हो गई। दुबारा लोहे को फिर से भट्टी में डाल दिया, उसमें जो कचाई थी, कमजोरी थी, फिर उसमें से साफ हो गई। आगे भी फिर यही प्रक्रिया दोहराई गई। ऐसा होते-होते आखिर में सफाई की प्रक्रिया जब चलती चली जाती है, तो स्टेनलेस स्टील बनती जाती है। स्टेनलेस स्टील कैसी होती है? बेटे, ऐसी

होती है, चाँदी जैसी। लोहे में और चाँदी में फरक नहीं होता है ? नहीं साहब ! लोहा काला रहता है। नहीं साहब ! काला नहीं होता सफेद होता है। लोहा मैला होता है, जंग लग जाती है। नहीं साहब ! लोहे को जंग नहीं लगती। स्टेनलेस स्टील को देखिए, इसको जंग नहीं लगती है। तो क्या कच्चा लोहा स्टेनलेस लोहा हो सकता है ? हाँ हो सकता है। कब जब लोहे को परिशोधित करते हुए, संशोधित करते हुए चले जाएँ।

सबसे बड़ा योगाभ्यास

मित्रो, वास्तव में जीवन जीने की विधि भी यही थी। पर हाय रे भगवान, न जाने लोगों ने क्या कर दिया, लोगों ने क्या व्याख्या कर दी। उपासना को, साधना को लोगों ने जादू मान लिया। अध्यात्म को मनोकामना पूरा करने का जादू मान लिया। यह जादू नहीं है, यह जीवन जीने की कला है। जीवन को संशोधित करने की विधि है। आपका जीवन इतना बड़ा जीवन है कि इस पर हम देवताओं को निछावर करते हैं, भगवान को हम इस पर निछावर कर सकते हैं। भगवान से बड़ा है जीवन। वह साक्षात् भगवान है। इस जीवन को परिष्कृत करना अपने आप में सबसे बड़ा योगाभ्यास है। उसे साधना कहिए, उसे तप कहिए, उसे भजन कहिए- इन सबका उद्देश्य भगवान को रिझाना नहीं है, भगवान की खुशामद करना नहीं है, भगवान को फुसलाना नहीं है, भगवान को बहकाना नहीं है। भगवान के आगे तरह-तरह के जाल बिछाना नहीं है। भगवान की उपासना का उद्देश्य एक तो यह है कि हम अपने आपको परिशोधित करते चले जाएँ। अपने आपका परिशोधन करते हुए चले जाएँगे, तो फिर देखेंगे कि क्या कमाल होता है। देखें फिर क्या मजा आता है। देखिए आपके पास कैसे सब चमत्कार आते हैं। मैं आपसे यही कहने वाला था कि आप अपनी वाणी को संशोधित कर लीजिए, फिर आप अपनी जुबान से कहिए कि तेरा भला हो जाए, आशीर्वाद हो जाए और तेरा कल्याण हो जाए। फिर देखना क्या होता है और क्या नहीं होता है। कैसी-कैसी चीजें उड़ती हुई चली आती हैं।

आप अपनी आँखों को संशोधित कर लीजिए फिर देखिए, कैसे चमत्कार होता है। आँखों को संशोधित कैसे करें ? आँखों को संशोधित ऐसे करें जैसे गांधारी ने की थीं गांधारी ने कैसे किया था ? गांधारी ने आँखों को संशोधित करने के लिए अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली थी। पट्टी बाँधने का मतलब यह है कि दूसरों की, व्यक्तियों की, नर और नारियों की जो मान्यताएँ हैं, उससे आप प्रभावित न हों। गांधारी ने तो अपनी आँखों में पट्टी इसलिए बाँध ली थी कि उसका जो अंधा पति था, उससे उसकी शादी हुई थी, इसलिए उसने अपनी आँखों में पट्टी बाँध ली थी कि मेरा मर्द एक ही है, दूसरा कोई मर्द है ही नहीं। आँखों का संशोधन करने के पश्चात् न कोई जप किया, न तप किया और न कोई पूजा की, न कोई अनुष्ठान किया, न कोई ध्यान किया। गांधारी ने आँखों में जो पट्टी बाँधी थी, उसका मतलब आपको समझ लेना चाहिए। पट्टी बाँधने का मतलब यह नहीं है कि अपने आप से पट्टी बाँधें। क्यों साहब, सूरदास जी ने अपनी आँखें फोड़ ली थीं या फूट गई थीं और हम भी फोड़ लें तो क्या भगवान दिखाई पड़ेंगे ? बेटे, यह गलती तो मत कर लेना। आँखें फोड़ने से मतलब है कि हमारी जो कमीनी आँखें, दुष्ट आँखें हैं, जो नारी को, मातृशक्ति को विषय वासना के रूप में देखती हैं, तो उन्हें हम फोड़ दें अर्थात् बदल दें। फिर देखना आँखों का चमत्कार कैसे होता है।

सूचना

अंतःऊर्जा जागरण सत्र के लिए स्वीकृति प्राप्त साधक ध्यान दें। शांतिकुंज, हरिद्वार से स्वीकृति पत्र प्राप्त होते ही सहमति पत्र अवश्य भेज दें, अन्यथा आपका स्थान दूसरे को दे दिया जाएगा। साधना निर्देशिका का ठीक से अध्ययन एवं सभी साधनाओं का एक बार अच्छी तरह अभ्यास भी कर लें। अन्यथा साक्षात्कार में अयोग्य पाए जाने पर सत्र लाभ से वंचित रहना पड़ सकता है।

गुरु जी, सिद्धियों का दूसरा तरीका बताइए ? क्या तरीका बताएँ। कोई ऐसा मंत्र बताइए कि जिससे काली हमारे काबू में आ जाए, देवी हमारे काबू में आ जाए, फलानी हमारे काबू में आ जाए। धूर्त, देवी तेरे काबू में आ जाएगी, तो तेरा कचूमर निकाल देगी। कैसे ? वैसे ही, जैसे एक बार शुंभ ने अपने दूत से संदेश भेजा, कहा कि देवी तू हमारे काबू में आ जा। काबू से क्या मतलब है। तू हमारी बीबी बन जा। किससे कहने लगा था ? चंडी से कि हमारे कहने में चल, हमारे या हमारे भाई निशुंभ की सेवा में आ जा। देवी ने कहा, अच्छा आप हमें बीबी

बनाना चाहते हैं ? हाँ, आप हम पर हुकुम चलाना चाहते हैं ? हाँ, आप हमें गुलाम बनाना चाहते हैं ? देवी ने कहा, हम आपकी नौकरानी बन सकती हैं और गुलामी भी कर सकती हैं, पर हमने एक प्रतिज्ञा कर रखी है। आपको हमारी एक शर्त माननी पड़ेगी। बोले—क्या ?

यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥

मैं तुझे अपना पति बनाने को तैयार हूँ और मैं तेरी पत्नी बनने को तैयार हूँ, लेकिन शर्त तो पूरी कर। कैसे पूरी करूँ ? **'यो मां जयति संग्रामे'** जो मुझको संग्राम में जीतेगा। आ जा मुझसे लड़, इतना पराक्रम, इतना पौरुष, इतना साहस दिखा। जितना साहस मुझ में है, इतना ही पराक्रम-पौरुष दिखा और यह कार्य **'यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति'** संसार में जो मेरे समान बलवान होगा। जो मुझे संग्राम में पराजित कर देगा, हरा देगा, वही मेरा स्वामी होगा। मैं उसी की पत्नी बनूँगी, वरना नहीं बनूँगी। उसने कहा, मैं लड़ने को तैयार नहीं हूँ। तब देवी ने कहा, अब मैं तेरी अकल ठीक कर दूँगी।

मित्रो, देवी को आप क्या बनाना चाहते हैं ? देवी को औरत बनाना चाहते हैं, आप देवी के पति बनना चाहते हैं न। कौन बनना चाहता है ? पति बनना चाहता है या भक्त बनना चाहता है ? यह क्या कह रहा है गंदे मुँह से। बेटे, देवी हमारी माँ है। माँ हुकुम देती है और बच्चे को उसका पालन करना पड़ता है। पति का मतलब यह है कि पति हुकुम देता है अपनी बीबी को, खाना बना देना, थोड़ा काम कर हमारे पैर दबा आकर। यही कह रहे थे न कि देवी जी को हमारा हुकुम मानना पड़ेगा, हमारा कहना मानना पड़ेगा। सब पर हुकुम चलाते हैं, गुरु जी को हमारा हुकुम मानना पड़ेगा। देवता को, भगवान को हमारा हुकुम मानना पड़ेगा। क्यों ? हमने धूपबत्ती जला दी, आपके ऊपर हमने माला पहना दी। आप हुकुम चला रहे थे हमारे ऊपर ? हाँ साहब, हम तो हुकुम चलाएँगे आपके ऊपर, हम तो चेला हैं। बड़ा आया चेला।

अपने मन को भगवान के साथ जोड़ दें

बेटे, आपको क्या करना पड़ेगा ? आपको अपने मन को भगवान के साथ, देवता के साथ जोड़ देना पड़ेगा। कल हमने आपको बताया था कि परिशोधन की प्रक्रिया के साथ सारे-के-सारे विचार उसमें जुड़े हुए हैं। किसमें ? जो हम कर्मकांड कराते हैं उसके साथ। कर्मकांडों का जादू इतना ही है कि प्रत्येक कर्मकांड के साथ में शिक्षा भरी पड़ी है। वे सारी-की-सारी शिक्षाएँ आपके हृदयों में गूँजती रहें, दिमागों में चलती रहें। आपके चिंतन और विचारों की धारा वहीं बहती रहें, तो मैं समझूँगा कि आपने विचारों का और क्रिया का समन्वय कर दिया।

(क्रमशः)

▲

शरीर से रुग्ण और अति दुर्बल गोर्की, पर दुर्भाग्य; एक के बाद दूसरा आता गया। नाना-नानी के यहाँ पालन-पोषण हुआ। माता उसे इसी स्थिति में छोड़कर दूसरा विवाह करके अन्यत्र चली गई। मामा का दुर्व्यवहार बढ़ता चला, तो उसने १२ वर्ष की आयु से स्वावलंबी होने की बात सोची।

एक स्टीमर पर बरतन माँजने का ऐसा काम मिल गया, जिससे किसी प्रकार पेट भर जाता। दो वर्ष बाद उन्हें रसोई बनाने का काम मिल गया। साथियों में से कुछ कृपालुओं की सहायता से उन्हें वर्णमाला सीखने और पढ़ने-लिखने का अवसर मिला।

उन दिनों रूसी क्रांति की हवा चल रही थी। गोर्की ने निजी रूप से पढ़ाई जारी रखी और क्रांति में भाग लिया। टाल्स्टाय उनसे बहुत प्रभावित थे। लेखन कार्य आरंभ किया, तो उसमें भी वे ऊँची श्रेणी पर पहुँचे। आज लेखकों की दुनिया में गोर्की का नाम मूर्द्धन्य श्रेणी में गिना जाता है।

भाग्य ने जिसे पग-पग पर ठुकराया, परिस्थितियाँ जिसके सर्वथा प्रतिकूल रहीं, ऐसा व्यक्ति विश्वविख्यात बन गया। इससे उसके पुरुषार्थ को ही सराहा जा सकता है।

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

ध्यान क्यों करें? कैसे करें? - २

(गतांक से आगे)

मित्रो, पहले हमने आत्मशोधन की क्रिया बताई थी। अब गायत्री की पंचमुखी साधना का दूसरा वाला चरण बताता हूँ, जिसका नाम है, 'देव-पूजन'। देव-पूजन किसे कहते हैं? बेटे, इस बारे में तो हम बताते रहते हैं कि गायत्री माता का एक फोटो रख लेना। हाँ, वह तो मैंने रख लिया है। और बेटे, धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत चढ़ा दिया करना, चंदन लगा दिया करना। हाँ गुरुजी, वह तो मैं लगा देता हूँ। इसमें क्या रखा है? वह तो मैंने एक छोटी-सी डिबिया में रख लिया है और एक डिब्बी में धूपबत्ती भी रख ली है। हाँ बेटे, तूने यह बहुत अच्छा किया। महाराज जी, मैंने सेंट भी रखा हुआ है। यह तो और भी अच्छा किया। बेटे, नैवेद्य कितने पैसे का लाया था? गुरुजी, पच्चीस पैसे का लाया था। इससे दो महीने का काम चल जाता है। दो इलायची दाने रख देता हूँ। बेटे, तेरा नैवेद्य का काम तो बहुत बढ़िया है। यह तो बहुत दिन चल जाता होगा? हाँ महाराज जी, इसके अलावा और कमी हो तो मुझसे कहिए।

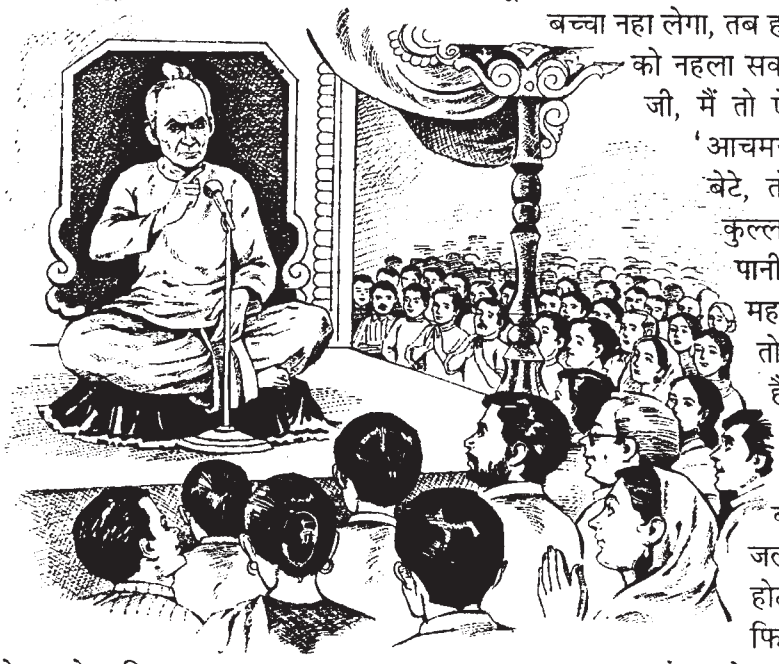

उपासना में मन को लगाइए

हाँ बेटे, तेरी उपासना में एक कमी है। तू यह सारी-की-सारी क्रियाएँ करने के साथ में उपासना में मन को क्यों नहीं लगाता। जब भी कोई क्रिया करे, तो उसमें अपने मन को लगा लिया कर। इन वस्तुओं के साथ में जो शिक्षण दिया हुआ है, उसे हृदयंगम करने से ही उपासना का प्रतिफल मिलता है। क्या शिक्षण दिया हुआ है? पंचोपचार में पाँच चीजें आती हैं। जब इसमें से एक चीज चढ़ाया करें, तब अपनी विचारणा को, विचारों को उन वस्तुओं के साथ उसी प्रकार से लगा लिया करें, जिसका शिक्षण उसका आधार बनाया गया है। क्या आधार बनाया गया है? सबसे पहले हम जिस देवता का पूजन करते हैं, जल चढ़ाते हैं और मंत्रोच्चार करते हैं- 'पाद्यं समर्पयामि:', 'अर्घ्यं समर्पयामि', 'आचमनं समर्पयामि:'। ये तीन चीजें हैं। तीन चम्मच जल से यह प्रक्रिया पूरी होती है। बेटे, तू यह तीन चम्मच से कराता है या तीन बालटी से? महाराज जी, मैं तो तीन चम्मच से कराता हूँ और कहता हूँ, 'स्नानं समर्पयामि।' अच्छा बता, तीन चम्मच से तू कैसे नहा लेगा? इस चम्मच से या तो तू नहा ले या अपने बच्चे को नहला ले। जब तेरा बच्चा नहा लेगा, तब हम जानेंगे कि भगवान को नहला सकता है। नहीं महाराज जी, मैं तो ऐसे ही कर देता हूँ, 'आचमनं समर्पयामि।' अच्छा बेटे, तो यह बता कि जब कुल्ला करता है तो कितना पानी खरच कर देता है? महाराज जी, एक लोटा तो खरच हो ही जाता है, हाथ-मुँह धोने और कुल्ला करने में। अच्छा तो अब तू ही बता कि एक चम्मच जल से भगवान जी का होठ भी गीला नहीं होगा, फिर आचमन क्या कराता होगा? भगवान से मखौल करता है, दिल्लगीबाजी करता है और कहता है कि एक चम्मच जल से भगवान जी को स्नान कराता हूँ। बेटे, भगवान का पूजन इस तरह से नहीं होता।

महाराज जी, आपने ही तो बताया था यह। बेटे, मैंने तो बहुत-सी बातें बताई थीं, वह तो याद नहीं रखीं, केवल क्रिया याद रखी। यह याद नहीं कि जल चढ़ाते समय क्या वृत्ति रहनी चाहिए। उस समय यह वृत्ति रहनी चाहिए कि हम अपने आपका समर्पण करें। देवता से माँगना मत, वरन् यह भाव व्यक्त करना कि हम आपको समर्पण करेंगे। आपको हम देंगे। जो देता है, वही देवता कहलाता है। देवताओं ने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भगवान को दिया है और आपको भी देवता की कृपा प्राप्त करने के लिए देने की वृत्ति सीखनी पड़ेगी। जब तक आपके अंदर देने की वृत्ति नहीं आएगी, कोई भी देवता आपके ऊपर कृपा नहीं कर सकता।

देने का भाव सदा मन में हो

मित्रो, देने की वृत्ति का अर्थ यह है कि हम जो जल चढ़ाते हैं, उसके पीछे भगवान को यह आश्वासन दिलाते हैं कि हमारी पसीने की बूँदें, हमारे श्रम की बूँदें, हमारी मेहनत, हमारा वक्त और हमारा समय आपके कामों के लिए लगा करेगा। जल चढ़ाते समय हम बार-बार विचार करते हैं कि हमारा श्रम अर्थात पसीने की बूँदें अर्थात मेहनत। मेहनत माने पसीने की बूँदें, जो जल का प्रतीक हैं, हमारी मशक्कत का प्रतीक हैं, हमारी मेहनत का प्रतीक हैं, अपने समय का हिस्सा हैं, ये समाज के लिए, देश के लिए, संस्कृति के लिए, धर्म के लिए अर्थात भगवान के लिए लगा करेगा। भगवान कोई व्यक्ति नहीं है, यह आप ध्यान रखना। भगवान के लिए हम देते हैं। कहाँ है भगवान? साहब, वह तो मंदिर में बैठा हुआ है। नहीं बेटे, जो मंदिर में बैठा हुआ है, वह तो कोई खिलौना है। फिर कहाँ है भगवान? मनुष्य की श्रेष्ठता के रूप में, ऊँचे समाज के रूप में भगवान है। भगवान ने जब अर्जुन को, यशोदा माता को अपना विराट् रूप दिखाया था, तो सारे समाज के रूप में दिखाया था। समाज ही भगवान का रूप है। समाज की सेवा के लिए, लोकहित के लिए, लोकमंगल के लिए तू जो पसीना बहाता है, श्रमदान करता है, वास्तव में यह जल चढ़ाना उसी का प्रतीक है।

ध्यान के लिए भगवान को रिश्तेदार बनाइए

भगवान निराकार है। निराकार भगवान श्रेष्ठ विचारणा के रूप में, आदर्शों के रूप में, सिद्धांतों के रूप में है। भगवान कोई व्यक्ति नहीं है। महाराज जी, हमने तो व्यक्ति बना रखा है। बेटे, हमने उसे ध्यान के लिए बना रखा है। ध्यान करने के लिए किसी-न-किसी चीज पर मन को एकाग्र करना पड़ता है, इसलिए ध्यान में एकाग्रता के लिए हम कोई-न-कोई शक्ल बना लेते हैं और केवल शक्ल ही नहीं बनाते, वरन् उससे कोई-न-कोई रिश्ता भी कायम कर लेते हैं, जबकि भगवान किसी का रिश्तेदार नहीं है। बिजली किसी की रिश्तेदार नहीं है। नहीं महाराज जी, भगवान हमारा रिश्तेदार है। बेटे, भगवान को हमें रिश्तेदार बनाना पड़ता है, ताकि मनुष्य का ध्यान उनमें लगा रहे। ध्यान की तीव्रता के लिए, मन की चंचलता को दूर करने के लिए, मन की वृत्ति को ध्यान में लगाए रखने के लिए हम किसी-न-किसी रूप की कल्पना करते हैं। कल्पना करने के पश्चात उसमें अपना मन लगाए रहते हैं। यह मन को एकाग्रचित्त करने का तरीका है।

मित्रो, असल में भगवान एक ही है। अगर दुनिया में इतने तरह के देवी-देवता होते, तो आपस में मार-काट फैल जाती, लड़ाई-झगड़ा होता, मुकदमेबाजी शुरू हो जाती, फिर फौजदारी खड़ी हो जाती। ये संतोषी माता, वह काली माता। काली माता कहतीं कि हमारे अच्छे चेले को संतोषी माता झटक ले गईं। अच्छा मैं उनके बाल उखाड़ूँगी। संतोषी माता का चेला, जो कल तक शुक्रवार के दिन खटाई-मिठाई नहीं खाता था, अब रात्रि में चंडी की पूजा करने लगा, तो संतोषी माता गाल फुला के बैठ गईं। संतोषी माता का चेला चंडी के यहाँ और चंडी माता का चेला संतोषी माता के यहाँ चला गया, तो वे आपस में लड़ मरेंगी। जिस तरह औरतों में लड़ाई होती है, चेलों में लड़ाई होती है, सबमें लड़ाई होती है, उसी तरह देवी-देवताओं में लड़ाई होती और सबके कचूमर निकल पड़ते। तो महाराज जी, यह क्या चक्कर है? बेटे, कोई चक्कर नहीं है। दुनिया में भगवान एक ही है। तो अनेक तरह के देवी-देवता क्या हैं? ये बेटे कल्पनाएँ हैं। कल्पना न होती, तो इतने तरह के फर्क कैसे हो जाते? अगर दुनिया में हजारों भगवान होंगे, तो मुश्किल आ जाएगी। भगवान एक है, अनेक भगवान नहीं हैं। फिर दुनिया में तरह-तरह की शक्लों वाले भगवान कैसे हो गए? बेटे, मुसलमानों ने अपना दाढी वाला बना लिया है, हमने अपना मोर मुकुट वाला बना लिया है। अमुक ने अपना अमुक तरह का बना लिया है, ये सब कल्पनाएँ हैं।

तो महाराज जी, असली भगवान क्या है? बेटे, उच्च एवं श्रेष्ठ विचारणा के समुच्चय को, उत्कृष्टता के समुच्चय को, सद्गुणों के समुच्चय को भगवान कहते हैं। बेटे, भगवान जब कभी आता है, तो श्रेष्ठ विचारों के रूप में आता है, आदर्श उत्कृष्टता के रूप में आता है। उत्कृष्ट चिंतन के रूप में आता है, शक्ल के रूप में नहीं आता। महाराज जी, हमने रात को हनुमान जी को देखा। तो देखा होगा, अच्छी बात है। बेटे, भगवान करे तुझे रोजाना दिखाई पड़ें। महाराज जी, हमें तो कल लक्ष्मी जी दिखाई पड़ीं। बेटे लक्ष्मी जी दिखाई पड़ीं तो तुझे कुछ रुपया-पत्ता भी दे गईं कि नहीं? नहीं महाराज जी, दे-दिवा तो कुछ नहीं गईं। बेटे, तूने ख्वाब देख लिया है, अन्यथा यदि लक्ष्मी जी तेरे घर आई होतीं, तो खाली हाथ क्यों चली गईं, कुछ तो दे जातीं। नहीं साहब, कुछ दिया तो नहीं है, वैसे ही शक्ल दिखाकर भाग गईं। नहीं बेटे, ये तेरे अपने जाल-जंजाल हैं, मैं इन पर विश्वास नहीं करता।

आदर्शों का समुच्चय भगवान

श्रेष्ठता के प्रति, आदर्शों के प्रति, जिसको मैं भगवान कहता हूँ, उस श्रेष्ठता का, आदर्शों का जिन्होंने पालन किया, वह भगवान के भक्त कहलाए और भगवान के अनुग्रह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के अधिकारी होते चले गए। देव-पूजन के साथ जुड़े हुए जो लोग श्रेष्ठता के विचार हैं, वही हमारे विचार होने चाहिए कि हम अपना श्रम, अपना पसीना अच्छे उद्देश्यों के लिए, श्रेष्ठ कामों के लिए निरंतर खरच किया करेंगे। आप जितनी देर तक जल चढ़ाया करें, आचमन चढ़ाया करें, पानी चढ़ाया करें, उतनी देर तक अपने विचारों को इस तरह घुमाते रहें कि हम अपना श्रम यानि पसीना लोकहित के लिए समर्पित करेंगे। जब अक्षत चढ़ाएँ, 'अक्षतं सम्पर्पयामि' तब क्या विचार करना चाहिए? महराज जी, अक्षत से क्या फायदा है? बेटे, अक्षत से आपके विचार से यह फायदा है कि गणेश जी को कोई खाना दे जाता है, कोई नहीं देता। तो जो वह चार-पाँच चावल तू उन पर फेंक देता है, तो गणेश जी खा जाते हैं, उनके चूहे खा जाते हैं। नहीं महाराज जी, चार-पाँच चावलों से क्या हो जाता है? बेटे, कुछ भी नहीं होता है।

महाराज जी, तो फिर हम चावल क्यों चढ़ाते हैं? चावल हम इसलिए चढ़ाते हैं कि अपने आपको हम शिक्षित करें कि देख भुलक्कड़, तुझे सब कुछ पाकर सब कुछ याद है। अपनी नौकरी और प्रमोशन याद है, अपने बेटे को वकील बनाना भी तुझे याद है, पर यह याद नहीं है कि इतने करोड़ों रुपये मूल्य का यह जो जीवन भगवान ने दिया है, उसका भी कुछ कर्ज चुकाना है। उसकी भी कुछ ब्याज देनी है। उसकी भी कुछ सेवा करनी है, इसलिए हम चावल लेकर रोजाना अक्षत चढ़ाते हैं और ये कहते हैं कि अपनी कमाई का एक अंश आपको निष्ठापूर्वक (अक्षत की तरह बिना टूटे) नियमित रूप से देते रहेंगे। आप हमारी जिंदगी के हिस्सेदार हैं। आप हमारे शेयर होल्डर हैं। ये हमारी जिंदगी की दुकान है। इसमें अकेले मनुष्य का ही हिस्सा नहीं है। इसमें कुछ भगवान का भी हिस्सा है। इसमें भगवान की भी कुछ पूँजी लगी हुई है। इसमें भगवान ने भी कुछ रकम लगाई है। भगवान की मशीनें इस फैक्टरी में काम कर रही हैं। इसमें सब कुछ आपका ही नहीं है। आपकी अपनी अकल है, पर बेटे, सारी-की-सारी मशीनें तो किराये की हैं। तुझे मालूम नहीं है क्या कि जिससे तू देख रहा है, जिसकी अकल तू ले रहा है, जो कंप्यूटर तेरे दिमाग में फिट किया हुआ है, यह तेरा नहीं है। यह किसी और का है। उसका भी कुछ शेयर है। क्या सारा माल तू ही हजम कर जाएगा कि उसको भी कुछ देगा? तो क्या महाराज जी, उसको भी कुछ देना पड़ेगा? हाँ बेटे, क्योंकि इसमें सारा धन उसी का लगा हुआ है। तू तो केवल उसकी फैक्टरी में काम करता है। तू तो काम करने वाला मुनीम है, मालमत्ता तो सारा उसी का है।

भगवान के लिए निकालिए अपना एक अंश

इसलिए मित्रो, जो अक्षत-चावल हम चढ़ाते हैं, उसके पीछे यह शिक्षण छिपा हुआ है कि हमारे मन में इस वृत्ति या भावना का उदय होना चाहिए कि हमारी कमाई का एक अंश ब्याज के रूप में, कर्ज चुकाने के रूप में अपने शेयर होल्डर का, अपने पार्टनर का हिस्सा-शेयर अपने हिस्से में से हमको निरंतर देना पड़ेगा, तो हम निरंतर देते रहेंगे। भगवान को हम अपना रिश्तेदार मानते हैं। चलिए आप भगवान को अपना रिश्तेदार तो क्या मानेंगे, अपना बेटा ही मान लें। साहब, हमारे चार बेटे हैं, तो पाँचवाँ बेटा हम भगवान को भी मान सकते हैं। नहीं महाराज जी, भगवान तो हमारा गुरु है। नहीं बेटे, गुरु तो मत मान, बेटा ही मान ले। अब तुझे क्या करना पड़ेगा? चार बेटों को खिलाता-पिलाता है। हाँ गुरुजी, उन्हें खिलाता-पिलाता हूँ, कपड़े पहनाता हूँ। तो बेटे, पाँचवें को भी पहना। पाँचवाँ कौन-सा है- भगवान। अच्छा बेटे, एक पर कितना खरच आता है? महाराज जी, किसी की पढ़ाई में ढाई सौ रुपये महीना खरच करता हूँ, किसी में सवा सौ रुपये खरच करता हूँ, किसी में पौने दो सौ रुपये खरच करता हूँ, किसी में चालीस रुपये खरच करता हूँ। बेटे, एक और को भी ले ले। नहीं महाराज जी, भगवान को तो मैं धूपबत्ती खिलाऊँगा। और बेटे को? बेटे को जलेबी खिलाऊँगा। अच्छा तो बेटे को भी धूपबत्ती खिला? नहीं साहब, अपने बेटों को जलेबी खिलाएगा और भगवान को धूपबत्ती खिलाएगा, बदमाश कहीं का।

मित्रो, क्या करना पड़ेगा? हमको वास्तविकता के धरातल पर उतरना पड़ेगा। हमको यथार्थता पर आना पड़ेगा। हमको यह मानकर चलना पड़ेगा कि भगवान हमारा कोई रिश्तेदार है। भगवान ने हमारे जीवन में जितनी ज्यादा सुविधाएँ और संपदाएँ दी हैं, उसके लिए हमको कुछ करना चाहिए। हमारा अक्षत, हमारे चावल, हमारा श्रम, हमारी कमाई, हमारा उपार्जन, जिसमें पैसा भी शामिल है, बुद्धि भी शामिल है, भाव भी शामिल है, प्रतिभा भी शामिल है, इसका एक हिस्सा लोकहित के लिए है। वह समाज के कल्याण के लिए, देश के लिए, धर्म और संस्कृति के लिए खरच होना चाहिए। जब आप अक्षत चढ़ाएँ, तो साथ-साथ में ये विचार, ये भाव भी करते जाएँ।

महाराज जी, ऐसा ध्यान बताइए कि जिससे मन एक जगह एकाग्रचित्त हो जाए। मन कहीं भागे नहीं। बेटे, ऐसा एकाग्र मन, जैसा तू चाहता है, कैसे हो सकता है? तूने अभी मनोविज्ञान पढ़ा नहीं है, न्यूरोलॉजी पढ़ी नहीं है, इसलिए तू बोलता रहता है कि मन एक बिंदु पर एकत्र हो जाए। बेटे, मन एक विंदु पर हो ही नहीं सकता। हम जो साकार उपासना बताते हैं, गायत्री माता की उपासना बताते

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं, उसमें गायत्री माता के एक हाथ में कमंडल, एक हाथ में पुस्तक, एक हंस, एक मोर मुकुट है। ये क्या चीज हैं ? यह क्या चक्कर है महाराज जी ? बेटे, चक्कर यह है कि मन को सीमाबद्ध करने के लिए उसे इतने बड़े दायरे में घुमाना पड़ेगा। कभी कमल को देख, कभी हंस को देख, कभी मुकुट को देख, कभी उनके होंठों को देख, कभी साड़ी को देख, कभी इसको देख। इतने ही दायरे में जब मन भागेगा, तो जो मन कभी भी घंटों में ध्यान से नहीं रुकता था, वह इतने ही दायरे में यहाँ-वहाँ भागता रहेगा। मन एक सीमा में भागता रहेगा, एक सीमा में घूमता रहेगा।

ऐसे आएगी तन्मयता-एकाग्रता

मित्रो, ध्यान में मन को एक सीमा में घुमाया जाता है। एक मिनट के लिए भी अगर मनुष्य का मन एकाग्र हो जाता है, तो मनुष्य समाधि में चला जाता है। बार-बार मन को एकाग्र करने की बात करता है कि हमारे मन को एकाग्र कर दीजिए। मनुष्य समझता नहीं कि मैं क्या कह रहा हूँ। अगर मन एक बिंदु पर एक मिनट के लिए भी इकट्ठा हो जाए, तो वह समाधि में चला जाएगा, बेहोश हो जाएगा, इसलिए हम कहते हैं कि एकाग्रता का मतलब होता है- एक धारा, एक दिशा। सबेरे जब हम आपको ध्यान कराते हैं एक धारा देकर, एक दिशा देकर कराते हैं। मन को एकाग्र होने का दावा नहीं करते, वरन् एक दिशा देते हैं। वैज्ञानिकों की एक दिशा होती है, एक धारा होती है। प्रयोग-परीक्षण करके वह सिद्ध कर देता है कि इसमें ये कैमीकल मिल जाएगा, तो ये हो सकता है। ये मिल जाएगा, तो अमुक हो सकता है। सारी-की-सारी इतनी शतरंज बिछी हुई हैं कि पास में से चूहा गया है, तो यह मालूम नहीं है, क्योंकि उसे अपने काम की जल्दी पड़ी है। वह उसके साथ एकाकार हो गया है, एकाग्र हो गया है।

महाराज जी, अभी तो आप कह रहे थे कि वह हजारों तरह के विचार करता है। हाँ बेटे, हजारों तरह के विचार करता है। उसे मैं एकाग्रता कहता हूँ। उसकी इच्छा एक है, दिशा एक है। अपने उद्देश्य से एक हो गया है, बस इतनी एकाग्रता हो सकती है। अंतर केवल इतना है कि आप जो विचार करते हैं, वह असंभव विचार करते हैं। मन कहीं भागने ही न पाए, एक विशेष अवस्था में लगा रहे, यह हो सकता है। बेटे, जब हम लेख लिखते हैं, तो एकाग्र हो जाते हैं। लोकमान्य तिलक के पैर का ऑपरेशन होने वाला था। डॉक्टरों ने उनसे कहा कि आपको बेहोश करना पड़ेगा। उस जमाने में बेहोशी का तरीका बहुत घटिया था। एक बार क्लोरोफार्म सुँघा दिया, तो महीने भर तक उल्टियाँ आती रहती थीं, सिर चकराता रहता था। बहुत शिकायतें रहती थीं। उन्होंने कहा कि महीने भर तो आपको दिक्कत रहेगी। तिलक ने कहा कि फिर तो महीने भर में मेरा काम बड़ा हर्ज होगा। आप ऐसा कीजिए कि बिना बेहोशी के ही ऑपरेशन कर दीजिए, मैं चिल्लाऊँगा नहीं।

डॉक्टर ने कहा, आप चिल्लाएँगे। उन्होंने कहा, बिलकुल नहीं, लाइए हम अपनी गीता की पुस्तक पढ़ना शुरू करते हैं। इसे पढ़ने में हम इतना तन्मय हो जाएँगे कि इतने समय में आप मुझे काटकर पटक देना। अच्छी बात है। तिलक ने गीता की पुस्तक मँगाई। उन्होंने अपनी टाँग लंबी कर दी और पढ़ने में तन्मय हो गए। ध्यान से सुनना, वे पुस्तक में से पढ़ने लगे, **''स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव। स्थितधी: किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्॥''** और वे समाधि में चले गए। डॉक्टर ने झट से पाँव का ऑपरेशन करके रुग्ण भाग को काटकर फेंक दिया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन हुआ कि नहीं हुआ। अरे हो तो गया। बहुत जल्दी ऑपरेशन कर दिया।

हो एक विषय पर गहरा चिंतन

बेटे, यह क्या बात है ? ध्यान का खेल है। ध्यान की बात यह है कि एक विषय पर, एक धारा पर, एक सब्जेक्ट पर आदमी इतनी गहराई से चिंतन करे कि बाकी बातों को, सबको भूल जाए, केवल ध्यान की बात रह जाए। जब हम लेख लिखते हैं, तब इतने एकाग्र हो जाते हैं कि हमें पता ही नहीं चलता कि कौन बैठा हुआ है और कौन चला गया। कौन आ गया और कौन क्या कर गया, कुछ पता ही नहीं चलता। बस हम अपने काम में लगे रहते हैं। उस समय हमारे मन की दिशा एक होती है और इतने तरह के विचार आते हैं, इतने रिफरेंस आते हैं कि अमुक विद्वान ने ये कहा, उसने ये कहा। हमारे हाथ लिखते चले जाते हैं और हमारे दिमाग की फिल्म इतनी तेजी से दौड़ रही होती है कि सिनेमावाली फिल्म तो एक कोने पर रखी रहेगी। हजारों किताबें हमारे दिमाग में मिनटों और सेकंडों में घूमती चली जाती हैं। इस तरह हमारे दिमाग की चाल तेज होती है। अगर आप लोग कभी हमारे दिमाग की चाल को देख लें, तो कहेंगे कि महाराज जी, ऐसी चाल तो हमने कभी देखी नहीं। बेटे, तूफान की चाल और हमारे दिमाग की चाल एक होती है, जो एकाग्र होती है।

महाराज जी, जब हम एकाग्र होते हैं, तो स्थिर नहीं होते। बेटे, एकाग्र होना अलग बात है और स्थिर होना अलग बात है। समझता तो है नहीं और चिल्लाता रहता है कि हमारे मन को स्थिर कर दीजिए। कैसे स्थिर कर दें, खा जा अफीम की गोली, फिर स्थिर कर देंगे। सनक में डूबा रहेगा और कहेगा कि महादेव जी दिखते हैं। ऐसे कोई स्थिर नहीं होता। मीरा जो थी, हमेशा कहती रहती थी, ''घायल की गति घायल जाणै, जो कोई घायल होय।'' हर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वक्त वह बेचैन मालूम पड़ती थी। रामकृष्ण परमहंस उछलते रहते थे। चैतन्य महाप्रभु जब चिंतन करते थे, तो उछलकर बेहोश हो जाते थे और कीर्तन करते थे। वे एकाग्रचित्त हो जाते थे। अरे, कैसे एकाग्र हो जाएँगे? एक विषय पर, एक धारा पर आदमी का दिमाग लगा रहे, तो वह एकाग्र हो जाता है, लेकिन एक तरह के विचारों पर बहुत देर तक आदमी का मन स्थिर नहीं रह सकता, इसलिए हम सबेरे भी आपको ध्यान कराते हैं, छोटे-छोटे पीसों में कराते हैं। अलग-अलग तरह के वैराइटीज में कराते हैं, ताकि आपको एक विचार के ऊपर, एक क्रियापद्धति पर ध्यान को लगाने का, सीखने का मौका मिले। आपको यही करना चाहिए।

मित्रो, उपासना का जब समय आए, तो आप अपनी उपासना के समय जो क्रिया-कृत्य करते हैं, तो उसके पीछे जो शिक्षण दिए गए हैं, उनके साथ अपने आपको मिलाइए। जब आप देवता को फूल चढ़ाते हैं, तो इस चक्कर में मत पड़िए कि साहब, ये चमेली का फूल है कि गेंदा का फूल है कि गुलाब का फूल है या बेला का फूल है। महादेव जी न आक का फूल खाते हैं, न गणेश जी चमेली का फूल खाते हैं और न विष्णु भगवान गुलाब का फूल खाते हैं। ये बेकार की बातें छोड़िए और सोचिए कि आदमी का जीवन फूल जैसा होना चाहिए। फूल जैसा कोमल जीवन होगा, तो भगवान के चरणों में भी स्थान मिल सकता है, गले में भी स्थान मिल सकता है, सिर में भी वे स्थान दे सकते हैं। हर जगह स्थान मिल सकता है। शर्त केवल यह है कि हम फूल जैसे जीवन के हों। हँसता हुआ जीवन, कोमल एवं फूल जैसा मुलायम जीवन, सुगंधित जीवन बनाने की हम कोशिश करें।

हर वस्तु अर्पण के साथ गुणों का चिंतन

इन विचारों के साथ जब आप फूल चढ़ाया करें, तो यही विचार करें कि हम अपना जीवन फूल जैसा बनाएँगे। हमारा जीवन फूल जैसा बनना चाहिए। फूल जैसा जीवन बनाना अपना उद्देश्य होना चाहिए। फूल चढ़ाता रहे और बेकार की बातें सोचता रहे कि गुलदस्ता बनाऊँ या माला बनाऊँ, ये करूँ या वो करूँ। इन बेकार की बातों में अपना समय खराब करता रहता है और यह नहीं सोचता कि हमको अपना जीवन फूल जैसा बनाना है।

मित्रो, हम जब दीपक चढ़ाते हैं, उस समय हमारा विचार होना चाहिए कि भगवान को दीपक दिखाने की जरूरत नहीं है। भगवान के पास तो दो दीपक जलते ही रहते हैं। दिन में सूरज जलता रहता है और रात में चंद्रमा जलता रहता है। आप भगवान के लिए दीपक नहीं जलाएँगे, तो भगवान का कोई हर्ज नहीं हो सकता। महाराज जी, फिर तो हम बार-बार दीपक जलाने में पैसा क्यों खरच करें? क्यों बार-बार दीपक जलाएँ? बेटे, उसका भी एक कारण है। एक ऐसा बेवकूफ आदमी है, जो आँखों से अंधा है, जिसको कुछ दिखाई नहीं पड़ता। उसके सामने दीपक दिखाओ तो कुछ तो दिखाई पड़े। कौन है वह बेवकूफ और अंधा आदमी? वह है तू और हम, जिनको अंधे कह सकते हैं। जिन्हें कुछ पता ही नहीं है, कुछ दिखता ही नहीं है, कुछ सूझता ही नहीं है। जिन्हें न अपना मरना दीखता है और न जीना दीखता है। बस एक ही चीज दिखती है—विलासिता, एक ही चीज दिखती है—तृष्णा, एक ही चीज दिखती है—वासना, एक ही चीज दिखती है—भोग, एक ही चीज दिखती है—लोभ। वह एक ही चीज देखता है और कुछ नहीं। उसकी आँखें खराब हैं। उसे मोतियाबिंद की शिकायत है। अत: अँधेरे में भटकने वालों को रोशनी की जरूरत है।

दीप प्रज्वलन का अर्थ रोशनी भरा जीवन

मित्रो, इसलिए हम भगवान के सामने दीपक जलाते हैं, ताकि भगवान के बहाने हम अपने आपको देख सकें कि हमारी जिंदगी का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जैसा कि दीपक का है। रोशनी, रोशनी माने जीवन। रोशनी कैसी, जैसे दीपक की, बिजली की। महाराज जी, दीपक की, बिजली की बत्ती तो मैं रोजाना ही जलाता रहता हूँ। नहीं बेटे, उससे हमारा मतलब नहीं है। रोशनी से हमारा मतलब, 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' से है। इससे है कि हमको अंधकार से प्रकाश की ओर लेकर चलिए। इसका मतलब ये नहीं है कि टार्च आ गया और उसे जलाते चलिए और आकर के हमको अँधेरे में से ले चलिए। हमारा मतलब इस चमक की रोशनी से नहीं है, वरन् रोशनी से हमारा मतलब है—ज्ञान। दीपक जब हम जलाते हैं, तो इसका मतलब यह है कि हमारा मस्तिष्क ज्ञान से भरा हुआ हो, विचारणा से भरा हुआ हो, प्रज्ञा से भरा हुआ हो, रोशनी से भरा हुआ हो। अगर हमारा मस्तिष्क इन सबसे भरा हुआ हो, तो हम क्या काम करें? बेटे, तब हम जलने की बात सोचें, जलने की बात सीखें, दूसरों के फायदे की बात सीखें, कुरबान होने की बात सीखें, समन्वय की बात सीखें, शरणागति की बात सीखें, विसर्जन की बात सीखें, विलय की बात सीखें। नहीं साहब, हम तो लेने की बात सीखेंगे। नहीं बेटे, लेने वालों की यह कंपनी नहीं है, यह देने वालों की है।

बेटे, तू कौन-सी कंपनी में दाखिल हो गया है? अरे महाराज जी, मैं तो भजन करने वालों में आ गया। इसमें क्यों आ गया? महाराज जी, इसमें इसलिए आ गया कि भजन करने वालों को बड़ा नफा होता है। अरे बेटे, तुझे किसी ने गलत बहका दिया है। भजन करने वालों को इसमें नफा नहीं होता और अगर होता भी है, तो उनको तो ऐसा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शाप लगा हुआ है कि वह स्वयं नहीं खा सकते हैं, केवल दूसरों को खिला सकते हैं। बाजीगर से एक बार हमने पूछा, क्यों भाई, एक बात बताओ कि अभी जो आपने आम के पेड़ से फल तोड़े और डिब्बे में से मिठाई निकाली और सबको खिलाया। क्या यह सच्ची मिठाई है। हाँ साहब, सच्ची मिठाई है। तब तो आप रोजाना मिठाई बनाते होंगे और अपने बाल-बच्चों को खिलाते होंगे। नहीं साहब, इसको हम नहीं खा सकते। किसी और को खिला सकते हैं। क्यों, आप भी खा लिया करो। नहीं साहब, हम स्वयं नहीं खा सकते, औरों को खिला सकते हैं।

भगवत्कृपा से जुड़ा एक शाप

मित्रो, भगवान की दया में, कृपा में एक शाप लगा हुआ है कि यदि आप उसे खाने की कोशिश करेंगे, तो वह आपके पास नहीं रह पाएगी। आप खिला सकते हैं, खा नहीं सकते। संत खा नहीं सकता। संतों ने जब खाना शुरू कर दिया, तो संत का संतपन उसी दिन खत्म हो गया। भगवान हमको दीजिए, भगवान हमको दीजिए। बेटे, भगवान देता तो है, पर उसकी कृपा पारे की तरह है। पारे को आप देख लीजिए और दिखा लीजिए, पर खाइए मत। भगवान की कृपा को भी खाना मत। संत खाते नहीं हैं, ऋषि कभी खाते नहीं, तपस्वी कभी खाते नहीं। अगर आप भगवान की कृपा को स्वयं खाना शुरू करेंगे, तो फिर आपकी देने की ताकत खत्म हो जाएगी। खा लीजिए, फिर देखिए आप किसी को कुछ दे नहीं सकते, किसी की सहायता नहीं कर सकते। आप चाहें कि खाने के बाद में हम अध्यात्म से किसी का फायदा कर दें, तो आप नहीं कर सकते। पैसा लेकर अनुष्ठान शुरू कीजिए, ठीक है, आपकी जीविका चल जाएगी। उसका प्रभाव होता होगा तो होगा, लेकिन आपकी वाणी के अंदर जो शक्ति है, वह नहीं रहेगी। फिर आप चाहें कि किसी का भला कर दें, तो नहीं कर सकते।

मित्रो, भगवान की कृपा खाई नहीं जा सकती। इस बारे में मैं लोगों को बताता रहता हूँ कि तुम्हें भगवान की कृपा से अगर फायदा कराना हो, तो इसकी अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा है कि तुम नौकरी कर लो। धंधा कर लो। नहीं साहब, उसमें कम फायदा होता है। तो बेटे, चोरी कर ले। चोरी करेगा तो तीन महीने की सजा हो जाएगी, लेकिन भगवान की कृपा से तेरा पिंड तो छूटेगा। बेटे, भगवान की कृपा से जो लिया हुआ है या प्राप्त हुआ है, वह सब परमार्थ के लिए होता है, लोकहित के लिए होता है। याद रखिए, भगवान की कृपा से सुख नहीं, शक्ति मिलती है। हर एक को शक्ति मिली है, सुख किसी को नहीं मिला है। यदि शक्ति की जरूरत हो, तो भगवान की कृपा के चक्कर में फँस और यदि तुझे सुख की जरूरत है, तो भगवान से दूर रहो। हाँ, भगवान से दूर रहने वालों में जितने भी तेरे संसाधन दिखाई पड़ते हैं, हर सांसारिक आदमी उस दृष्टि से गरीब दिखाई पड़ता है, कंगाल दिखाई पड़ता है।

खाना नहीं, खिलाना सीखो

महाराज जी, क्या भगवान की कृपा पाने वाले कंगाल नहीं होते। हाँ बेटे, भगवान जिस पर कृपा करते हैं, उसे कंगाल तो नहीं करते, परंतु यह बात जरूर है कि भगवान की कृपा पाने वाले इतने उदार हो जाते हैं कि वे खा नहीं सकते, खिला सकते हैं। वे खाते नहीं, खिलाते रहते हैं। ईश्वरचंद्र विद्यासागर को पाँच सौ रुपये महीने नौकरी में मिलते थे। जब वह पाँच सौ रुपये आते थे, तो उनको अपनी जिंदगी के वे दृश्य सामने आ खड़े होते थे, जब उन्हें बिजली के अभाव में, रोशनी के अभाव में सड़क के किनारे खड़े होकर पढ़ना पड़ता था। सड़क के किनारे लगे खंभों पर जो बिजली जलती है, उसके नीचे खड़े होकर किताब पढ़नी पड़ती थी। सारे विद्यार्थी, जो सड़क के किनारे खड़े होते थे, उनकी आँखों के आगे खड़े हो जाते थे। उन्हें अब पाँच सौ रुपये तनख्वाह मिलती है। जब पढ़ते थे, तब उनके पास चार आने महीने होते थे, जिसमें से मिट्टी का तेल खरीदकर उसकी बत्ती के प्रकाश का प्रबंध भी पूरा नहीं हो पाता था। आज उनकी आँखों के सामने इसी तरह के हजारों बच्चे आ खड़े होते और कहते कि हमारी मदद कीजिए।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने निश्चय कर लिया था कि पचास रुपये महीने में हम अपना गुजारा करेंगे और साढ़े चार सौ रुपया महीना उन लोगों के लिए सुरक्षित रखेंगे जिनको फीस की जरूरत है, जिनको किताबों की जरूरत है, जिनको दूसरी चीजों की जरूरत है। वे हजारों परेशानियाँ सहते रहे, पर अपना गुजारा पचास रुपये में ही करते रहे। महाराज जी, फिर तो वह गरीब ही रहे, अमीर नहीं बन पाए। हाँ बेटे, वह अमीर नहीं बन पाए। संत अमीर नहीं हो सकता। भगवान के भक्त के हिस्से में अमीरी नहीं आई है। वह अमीर बना तो सकता है, पर स्वयं अमीर नहीं बन सकता। गाँधी जी ने बादशाह तो ढेरों बनाए, किंतु स्वयं बादशाह नहीं बन सके। समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को तो बादशाह बनाया, पर स्वयं बादशाह नहीं बन सके। चाणक्य ने चंद्रगुप्त को बादशाह तो बनाया, पर स्वयं बादशाह नहीं बन सके। संत बादशाह नहीं बन सकता, इसलिए यदि संत बनना है, भगवान की कृपा, भगवान की दया प्राप्त करनी है, तो उसे बाँटना सीखिए, दूसरों को खिलाना सीखिए। स्वयं मत खाइए।

(अगले अंक में जारी)

◆

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

ध्यान क्यों करें? कैसे करें? - ३

(गतांक से आगे)

दीपक की तरह जलें, प्रेरणा दें

मैं आपको दीपक का उदाहरण देकर समझा रहा था कि दीपक आप जलाएँ। दीपक जलाने के साथ-साथ और दीपक जलाने के बाद आप यह ध्यान रखें कि भगवान की भक्ति का एक मूलभूत सिद्धांत यह भी है कि आदमी को जलना पड़ता है, गलना पड़ता है। यह भगवान का भक्त जो है, वह बरगद के पेड़ की तरह से बड़ा तो हो जाता है, यह हमने माना, लेकिन बरगद के पेड़ की तरह से बड़ा होने से पहले बीज को गलना पड़ता है। बड़ा होने से पहले आदमी को भी गलना तो पड़ेगा। महाराज जी! मैं तो वृक्ष की तरह से बड़ा हो जाऊँगा? हाँ बेटे, जरूर हो जाएगा, लेकिन गलना तो पड़ेगा। नहीं, मैं गलना तो नहीं चाहता। जो कुछ भी हो, मैं तो मालदार बनना चाहता हूँ; मोटा बनना चाहता हूँ। बेटा, मोटा तो तू नहीं बन सकता, तेरी औलाद बन सकती है।



बेटे, जो प्रेरणाएँ मैं आपको दे रहा हूँ, ये आपके मस्तिष्क में गूँजती रहें, गूँजती रहें। दीपक आप जलाते चले जाएँ और यह विचार करते चले जाएँ कि हमारी एक छटाँक जैसी हैसियत और औकात है। हमारे भीतर जो स्नेह चिकनाई लबालब भरी हुई है, उसके द्वारा हम अपने आपको जलाते हैं और जलकर रोशनी पैदा करते हैं, दिशाएँ देते हैं। रोशनी कैसे पैदा करते हैं? जैसे प्रकाश-स्तंभ बीच समुद्र में जलते रहते हैं और जल करके निकलने वाले राहगीरों को, चलने वाली नावों को रास्ता बताते रहते हैं। आप उधर से मत जाइए, इधर से जाइए। स्वयं रात में प्रकाशस्तंभ (लाइट हाउस) जलते रहते हैं।

सितारे ऊपर रात में जलते रहते हैं और हम निकलने वालों को रास्ता बताते रहते हैं—आप इधर से चले जाइए, आप उधर से चले जाइए। सितारे जी! आपको क्या फायदा है? हमको यह फायदा है कि आपको ठोकर नहीं लगे, आप अपने रास्ते पर चले जाएँ, इसीलिए हम रात भर जलते रहते हैं। कौन जलता रहता है? तारे जलते रहते हैं और छोटे बच्चे उनको दुआएँ देते रहते हैं। थैंक्यू। ट्विंकिल-ट्विंकिल लिटिल स्टार, हाऊ ह्वाई बंडर ह्वाट यू आर.....! आसमान पर चमकने वाले सितारे चमको चमको, तुम ऊपर चमकते रहो। तुम्हारी तरह हमें भी रास्ता मिलता रहे। आप पहले आसमान के सितारों की तरह जलो। गाँधी जी ने जब राजा हरिश्चंद्र का ड्रामा देखा, तो यह निश्चय किया कि हम भी इनके तरीके से सत्य पर चलेंगे। हम भी ऐसी शानदार जिंदगी जिएँगे।

बेटा, दीपक जलाने से मतलब यह है कि हम जलें और दूसरों को भी जलने के लिए प्रोत्साहित करें। हम अपनी जिंदगी में रोशनी पैदा करें, शानदार जिंदगी ही जिएँ और उतनी रोशनी दूसरों को भी दें; यही सिद्धांत बनाएँ। ये भाव दीपक जलाते समय होने चाहिए। नहीं साहब, दीपक जलाने से भगवान जी प्रसन्न हो जाते हैं। आप से हुए होंगे, मेरे खयाल से प्रसन्न नहीं हो सकते। नहीं महाराज जी, दीपक जलाने से भगवान जी बहुत प्रसन्न हो जाते हैं, पर असली गाय के घी से प्रसन्न होते हैं और नकली घी से प्रसन्न नहीं होते। अच्छा! पर मेरा ऐसा खयाल है कि हमारी जिंदगी दीपक की तरह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जलने वाली हो तो भगवान भी हमारे ऊपर प्रसन्न हो जाते हैं।

कब बरसेगा दैवी अनुग्रह

मित्रो, भगवान हमारे नजदीक हैं। भगवान का अनुग्रह हमारे पास है। जो फल भक्ति के लिखे हुए हैं, वे सब आपको मिलते चले जाएँगे। एकोएक फल मैं आपको निश्चित दिला सकता हूँ और इस बारे में मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ, इसकी गारंटी हमारे पास है। आप जिस देवता की कृपा की कहें, उसी देवता की कृपा करा दूँ, लेकिन शर्त यह है कि अपना जीवन गंदा नहीं हो। नहीं साहब, जीवन तो हमारा गंदा ही रहेगा। नहीं बेटे, जीवन गंदा रहेगा तो देवता भी कृपा नहीं करेंगे।

मित्रो, भगवान को जल से स्नान कराने से मतलब चेतना को स्नान कराने से है। नहीं महाराज जी, चेतना को तो मैं स्नान बाद में कराऊँगा, पहले पानी से अपने शरीर को नहलाऊँगा। बेटे, कैसे करा लेगा, बता तो सही, शरीर से क्या काम हो जाता है ? महाराज जी ! मैं तो ऐसे ही नहा लेता हूँ। नहा लेता है तो तू एक बात बता कि तेरी चमड़ी के खोल में क्या क्या भरा हुआ है ? मांस भरा हुआ पड़ा है। अच्छा, तो तू यह बता कि पूजा की कोठरी में मांस तो नहीं ले जाता ? नहीं महाराज जी, पूजा की कोठरी में मांस तो नहीं ले जाता। और हड्डी ? हड्डी भी नहीं ले जाता। मुँह से जब भजन करता है तो पहले तू कुल्ला कर लेता है न ? हाँ महाराज जी, कुल्ला कर लेता हूँ। मुँह में गंदी चीज तो नहीं रखता ? नहीं महाराज जी, नहीं रखता। ऐसा तो नहीं होता कि तेरे मुँह में मांस--वास भरा रहता हो और तू जप करता रहता हो ? नहीं महाराज जी, मुँह में मांस भरा रहेगा तो मैं जप कैसे करूँगा। ऐसा तो नहीं कि सूखी हड्डी मुँह में भरे रहता हो और राम नाम लेता हो। ऐसी गलती मत करना कहीं। यदि इस तरह जप किया तो भगवान जी नाराज हो जाएँगे। नहीं महाराज जी, ऐसा तो नहीं करता।

बाहर की नहीं, भीतर की सफाई

मित्रो, जहाँ कहीं भी शास्त्रों में स्नान का वर्णन है, वहाँ शरीर के धोने का सिद्धांत नहीं है। शरीर के धोने का मतलब इच्छाओं, भावनाओं, विचारणाओं की सफाई से है। जो केवल अपने शरीर को खुशबूदार बनाते रहते हैं और शरीर को कितनी ही बार धोते रहते हैं। सारे दिन कोई पाउडर लगाता रहता है, कोई सेंट लगाता रहता है, कोई क्रीम लगाता रहता है, कोई सुपर लक्स से नहाता है, कोई बढ़िया से बढ़िया साबुन से नहाता रहता है। नहाने के बारे में तो उन लोगों को देखो, जो अपने शरीर को तो धोते रहते हैं, परंतु भीतर से कैसे-कैसे धंधे करते हैं। किस किस तरह से पैसा कमाते रहते हैं, इसमें भिक्षा भी शामिल है। बेटे, अगर हम भीतर की भी सफाई रोज करें तो भगवान भी प्रसन्न होगा और अपना आपा भी। शरीर कम धोया, कोई बात नहीं। बेटे, तू समझता क्यों नहीं, स्नान करना एक सिद्धांत है कि हमारा मन और हमारी चेतना का परिष्कार होना चाहिए। देव- पूजन से भी हमारा मतलब यही है।

मित्रो, जप करने से क्या मतलब है ? जप करने से हमारा मतलब देव-पूजन से है। इसमें देव- पूजन के साथ आत्मशोधन की दो क्रियाएँ जुड़ी हुई हैं। यह दूसरा वाला चरण है जप का और तीसरा वाला चरण है ध्यान का। जप और ध्यान को हम मिला देते हैं। दोनों को मिला देने से एक प्रक्रिया बनती है, नहीं तो जप अधूरा रह जाएगा। आपका जप अधूरा है, अगर आप ध्यान नहीं कर रहे होंगे। जप करने पर लोगों की शिकायत होती है कि मन भागता रहता है। बेटे, मन न भागे, इसीलिए हम जप के साथ साथ में दो ध्यान भी बताते रहते हैं। अक्सर हम एक साकार ध्यान बताते रहते हैं और दूसरा निराकार ध्यान।

साकार ध्यान का स्वरूप

बेटे, साकार ध्यान यह है कि माँ गायत्री की कृपा हमारे ऊपर बरसती है, उसका अनुग्रह हमारे ऊपर बरसता है। गायत्री माता क्या है ? गायत्री माता वह है कि जिसमें हम जवान स्त्री को माता के रूप में देखना शुरू करते हैं। जो सद्बुद्धि की देवी है, जो सद्विवेक की देवी है। सद्विचारणाओं की देवी का नाम गायत्री है। गायत्री देवी है महाराज जी ! हाँ देवी है। तो आपको खूब सामान दे जाती है ? हाँ बेटे, पहले देवी कभी कभी आती थी, पर अब हमें यह खयाल आया कि देवी है भी कि नहीं, सो हमने अपने गुरु का ध्यान शुरू कर दिया है। गुरु का ध्यान ? हाँ बेटे, हम अपने गुरु का ध्यान करते हैं। गुरु को हमने देखा है। उनके बारे में हमको विश्वास है। गायत्री माता के बारे में तो हमको यह विश्वास हो गया है कि जो शक्ल हमने बना रखी है, यह शक्ल हमारी कल्पित है। यह कल्पना है ? हाँ, ये कल्पना है, सिद्धांतों की, आदर्शों की। यह आदर्श है। कौन-सा आदर्श ? जिसमें हम जवान औरत को जिस भावना से और दृष्टि से देखते हैं वह, हम माँ की तरह से देखते हैं। उस भावना का नाम ही गायत्री है।

मित्रो, कोई जवान औरत हमको दिखाई पड़े और आँखों में यह भाव आए कि यह हमारी माँ है, तो समझिए कि आपको गायत्री आ गई। जैसे शिवाजी की आँखों में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

एक जवान मुसलमान महिला को देखकर यह भाव आया कि काश! यह हमारी माँ होती तो अच्छा होता। अर्जुन भी एक बार देवलोक में गए। देवलोक में अर्जुन को क्या-क्या उपहार मिलने चाहिए थे? इसकी परीक्षा लेने के लिए उन्होंने क्या किया? उन्होंने यह किया कि उपहार पीछे देंगे, पहले देखें कि यह इस लायक भी है या नहीं। उन्होंने स्वर्ग की सबसे सुंदर एक महिला उर्वशी को उसके पास भेजा। उर्वशी जब उसके पास गई तो यह कहने लगी कि अर्जुन, देवताओं ने हमको तुम्हारे पास भेजा है। हम तुमसे प्रार्थना करने और यह कहने आई हैं कि तुम्हारे जैसा बच्चा हमको चाहिए। वह समझ गया कि इसका मतलब क्या है।

अर्जुन ने कहा—अच्छा, आपको मेरे जैसा बच्चा चाहिए, पर आप जिस तरीके से चाहती हैं, उस तरीके से बच्चा न हुआ, कन्या हो जाए तब? और फिर मेरे जैसा न होकर पंगु हो जाए, काना हो जाए तब? आप मेरे जैसा ही चाहती हैं न, तो मैं एक ही हूँ। भगवान ने जितने भी जानवर बनाए, सब एक ही बनाए, दूसरा नहीं बनाया। एक पेड़ भी एक जैसा ही बनाया, दूसरा वैसा पेड़ ही नहीं बनाया। एक पत्ता किसी पेड़ का जैसा है, दूसरा वैसा पत्ता दुनिया में नहीं बनाया। वह हर चीज अलग बनाता है, दूसरी तो बनाता ही नहीं है। मैं भी जैसा बनाया गया हूँ, मैं तो एक ही हूँ, दूसरा तो भगवान बनाने वाला नहीं है। इसलिए मेरे जैसा तो मैं एक ही हूँ और आपकी प्रार्थना मैं स्वीकार करता हूँ। आपके आदेश को मानता हूँ। अतः आज से मैं आपका बेटा होता हूँ। अच्छा आइए माताजी, यह टीका मस्तक पर लगाइए और फिर आज से मैं आपका बेटा हूँ और आप हमारी माँ हैं।

सिद्धांत जीवन में उतरें

यह क्या है? बेटे, यह एक बुद्धि है, एक विचारणा है, एक संकल्प है, एक सिद्धांत है। अगर ये सिद्धांत हमारे और आपके मन में आएँ तो आप गायत्री के निश्चित रूप से उपासक हैं। यह विवेक आपके भीतर है, तो आप गायत्री के उपासक हैं। हमने इसके शिक्षण के लिए कलेवर बनाकर रखा है—हंस, जिस पर गायत्री सवार रहती है। गायत्री हरेक पर सवार नहीं होती। क्यों महाराज जी? हमारे यहाँ तो वह है, भैंसा। उस पर बैठा लाएँ तो आ जाएगी? नहीं बेटे, उस पर नहीं आएगी। तो महाराज जी, हमारे पास घोड़ा है, घोड़े पर ले आएँ? नहीं बेटे, घोड़े पर भी नहीं आएगी। तो महाराज जी, हम गायत्री माता को बुलाने के लिए रिक्शा लेकर चले जाएँ? रिक्शे पर बिठाकर ले आएँ, रिक्शे पर तो आ ही जाएँगी। नहीं बेटे, रिक्शे पर भी नहीं आएँगी। गायत्री माता को लाना हो तो बेटे, हंस के सिवाय और किसी पर नहीं आ सकतीं। महाराज जी, हंस तो बेकार होता है, किसी और सवारी पर नहीं आ सकतीं? घोड़ा कहें तो घोड़ा ला दूँ, हाथी कहें तो हाथी ला दूँ? घोड़े-हाथी पर तो वे कतई नहीं बैठतीं। वे तो हंस पर ही बैठती हैं। हंस से क्या मतलब है? हंस से मतलब है वह व्यक्ति, जो धुला हुआ हो। जिसने अपने कपड़ों को धोकर साफ-सुथरा बनाया हो। हंस से मतलब है वह व्यक्ति, जिसको कि मोती खाने की आदत हो, जो कीड़े-मकोड़े नहीं खाता हो। हंस से मतलब है वह व्यक्ति जो दूध और पानी को अलग-अलग करना जानता हो। महाराज जी, ऐसा हंस कौन-सा होता है? कोई नहीं होता, बेटे, हम और आप हो सकते हैं।

दोस्तो! हंस एक अलंकार है। जैसा हंस हमने कल्पना कर रखा है, उसे दूध और पानी कहाँ से मिलेगा? दूध-पानी को वह कैसे अलग कर सकता है। यह तो अलंकार है। यह हंस जो कि गायत्री माता का वाहन है, ऐसा हमको भक्त बनना चाहिए अर्थात हमारा जीवन ऐसा बनना चाहिए, जैसा कि हंस का होता है। तभी गायत्री माता हमारे कंधे पर सवार होंगी, हमारी पीठ पर सवार होंगी, हमारे सिर पर सवार होंगी। हमारे ऊपर उनकी छत्रछाया बनी रहेगी। क्या मतलब है? बेटे, इसका मतलब यह है कि हमको ध्यान करना चाहिए। किसका? साकार गायत्री माता का। गायत्री माता हमको स्नेह देती हैं। भगवान को जब हम माता के भाव से मानते हैं तो क्या देते हैं भगवान हमको? स्नेह देते हैं, हमको करुणा देते हैं, हमको दयालुता देते हैं और हमको श्रद्धा देते हैं।

निराकार ध्यान ऐसे करें

मित्रो, दूसरा वाला ध्यान हम सविता का कराते हैं, जिसको हम निराकार ध्यान कहते हैं। वह हमारे अंदर शक्ति देता है। महाराज जी! हम सविता का शुरू में ध्यान करें? नहीं बेटे, शुरू में मत करना, पहले माता का ध्यान करना, बाद में सविता का ध्यान करना। सविता क्या देता है? सविता बेटे, सारा सामान देता है। क्या-क्या सामान देता है? पिता क्या देता है? पिता बेटे की पढ़ाई के लिए फीस देता है, अपनी कमाई का मकान देता है और तेरी औरत को जेवर बनाकर देता है। कहीं तेरी नौकरी के लिए सिफारिश के लिए जाता है। बेटे, बाप के पास माल है और अम्मा के पास माल नहीं है। तो अम्मा के पास क्या है? बेटे, उसके पास प्यार है, दुलार है। तुम्हें छाती से वही लगाए रहेगी,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दूध वही पिलाएगी। तू जब गंदगी कर लेगा तो धोएगी भी वही, प्यार भी वही देगी। और बाप ? बाप के पास टट्टी कर लेता है, तो कहता है, अजी ले जाओ जी इसे, इसकी टट्टी धोओ, हमारे कोट को भी धो देना और कपड़े भी धो देना। अरे तो आप धो देते ? नहीं साहब, यह हमारा काम नहीं है। बेटे, बाप कहता है कि अपने बच्चे को ले जाओ यहाँ से और इसकी सफाई करो और कुरता भी ले जाओ, देखो जी, यह सब गंदा कर दिया, दूसरा कुरता लाओ। बच्चे पर भी झल्ला रहा है, उसकी माँ पर भी झल्ला रहा है और खुद पर भी झल्ला रहा है।

कौन झल्ला रहा है ? बाप। बाप कौन है ? सविता— हमारा पिता। एक आँख प्यार की और एक आँख सुधार की। प्यार की आँख गायत्री माता के पास है और सुधार की आँख सविता के पास है। स्नेह, जिसकी हमको प्रारंभिक आवश्यकता है, गायत्री माता से मिलता है और शक्ति हमें सविता से मिलती है। दोनों की उपासनाओं की जरूरत है। ध्यान करते समय आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि अगर आप प्रारंभिक उपासक हों, तो आपको गायत्री माता का ध्यान करना चाहिए। ध्यान करना चाहिए कि सद्बुद्धिरूपी माता, सद्विवेक की माता, सद्ज्ञानरूपी माता, करुणारूपी माता, प्रेमरूपी माता अपना अमृत-सा दूध हमको पिला देती है। उस दूध को पीकर हमारी नसें और हमारी नाड़ियाँ शुद्ध-पवित्र होती हुई चली जाती हैं। हम स्नेह से भर रहे हैं, करुणा से भर रहे हैं, भावना से भर रहे हैं, कोमलता से भर रहे हैं। हमारा जो दुष्ट मन है, उसके अंदर कोमलता तो पैदा होनी ही चाहिए, सरसता तो पैदा होनी ही चाहिए, श्रद्धा तो पैदा होनी ही चाहिए।

मित्रो, हमारी प्रारंभिक आवश्यकता है सौम्यता की, करुणा की। अभी हमारा संबंध सब जगह से निष्ठुरता से भरा हुआ पड़ा है। जब इसमें दयालुता आ जाए, श्रद्धा आ जाए तो फिर हम यह कहने के अधिकारी हैं कि भगवान हमको शक्ति दीजिए। अगर शक्ति आपको आ गई। कब ? जब तक कि आप शुद्ध-पवित्र नहीं हुए, तो आपकी हानि हो जाएगी। आपका नुकसान हो जाएगा। दुर्वासा ऋषि ने अपने क्रोध का समापन नहीं किया था और उपासना करने लगे तो उनके क्रोध की वृद्धि हो गई। विश्वामित्र जब तक अपने आप को संशोधित करने की पूरी प्रक्रिया नहीं कर सके थे और तपस्या करने लगे। उस तप में, भजन में लगने का परिणाम यह हुआ कि उनकी कामवासना ज्यादा उद्दीप्त हो गई। उसके फलस्वरूप फिर क्या हुआ ? बेटे, उनके यहाँ अप्सरा से एक लड़की पैदा हुई थी, तुझे मालूम नहीं है। विश्वामित्र ऋषि के पास एक मेनका नामक अप्सरा आई थी। उसने चक्कर चलाकर विश्वामित्र से विवाह कर लिया था। महाराज जी, ऐसा हो सकता है ? हाँ बेटे, ऐसा हो सकता है, इसीलिए शक्ति को प्राप्त करने से पहले पवित्रता-संशोधन की जरूरत है। संशोधन आप प्राप्त कर लें तब, तब आपको सविता का ध्यान करना चाहिए।

शक्ति की साधना

सविता का ध्यान कराने के लिए हम आपको थोड़ी-सी बानगी बताते हैं, चाशनी बताते हैं, थोड़ी-सी जानकारी देते हैं। सविता का ध्यान कैसे कराया जाएगा, इसका सैंपुल हम बताते हैं। कैसे कराया जाएगा, कराइए तो साहब! बेटे, हम ब्रह्मवर्चस् की साधना कराएँगे। इसे कराने से पहले हम आपको प्रारंभिक प्रशिक्षण देते हैं। यह पी० एम० टी० का कोर्स है। कौन-सा ? यह जो अभी हम कराते हैं। अभी हम आपको प्रारंभिक शिक्षा इसलिए दे रहे हैं कि क्या आप अपना संशोधन कर सकते हैं ? क्या आपके लिए ऐसा संभव है ? क्या आप अपना चिंतन और अपने विचार बदल सकेंगे ? यदि हाँ, तो हम आपको शक्ति दिलाएँगे। ब्रह्मवर्चस् साधना में हम आपको शक्ति देने के लिए बुलाते हैं, पर आपके लिए शर्त यही है कि आप अपने वर्तमान जीवन का स्वयं ही संशोधन कर लें, क्योंकि तभी जो शक्ति आएगी, वह आप के जीवन के लिए लाभदायक हो सकती है। आपका भला कर सकती है अन्यथा यदि शक्ति आई, तो आपका पेट फट जाएगा। आप उस शक्ति को सहन नहीं कर सकेंगे।

मित्रो, शक्ति को प्राप्त कर लेना मुश्किल नहीं है, शक्ति को हजम करना, जब्ज करना मुश्किल है। घी में बेटे, बड़ी ताकत होती है। घी प्राप्त करना कोई मुश्किल नहीं है। पच्चीस रुपये यदि तेरे पास हों, तो मुझे दे, मैं तेरे लिए एक किलो घी लाकर दे दूँगा। फिर तो महाराज जी, मैं खा लूँ ? खा ले बेटे, तेरे चेहरे पर चमक आ जाएगी, तू मोटा हो जाएगा। अच्छा लाइए, एक किलो का डिब्बा है, मैं तो आज ही खा जाता हूँ। हजम नहीं होगा बेटे। हजम न होने से तुझे तेरा घी नुकसान करेगा, तेरे पैसे भी जाएँगे, तुझे दस्त हो जाएँगे और तुझे उल्टी भी हो जाएगी। शक्ति प्राप्त करना और भगवान का अनुग्रह प्राप्त करना मुश्किल नहीं है। नहीं महाराज जी, बड़ा मुश्किल है। नहीं बेटे, कोई मुश्किल नहीं है। मुश्किल है तो चल, मैं तेरे साथ आता हूँ। मेरा गुरु मेरी सहायता करता है। क्या सहायता करता है ?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सर्वश्रेष्ठ ध्यान : गुरु का ध्यान

मित्रो, सवेरे के वक्त जब मैं यहाँ आता हूँ तो उससे पहले अपने गुरु के सम्मुख बैठा रहता हूँ। हम दोनों के बीच ऐसे सूत्र स्थापित हो गए हैं कि शरीर तो उनका न जाने कहाँ रहता है और हमारा शरीर यहाँ रहता है, फिर भी हम आपस में बैठे हुए दो व्यक्तियों की तरह से बात करते रहते हैं। परामर्श करते रहते हैं, सलाह-मशविरा करते रहते हैं कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। हमको क्या दिक्कत आ जाती है और क्या परेशानी आ जाती है और उसका क्या हल हो सकता है? बहुत-सी बातों के लिए आपस में जैसे दो मित्र बैठकर बात कर लेते हैं, वैसे ही हम दोनों कर लेते हैं। तो महाराज जी, हमको भी यह लाभ मिल सकता है? बेटे, यह लाभ तो मैं तुझे दिला सकता हूँ, पर पहले तू अपना कर्त्तव्य पालन कर और न करे तो ना सही, मैं तो कर सकता हूँ।

मित्रो, प्रातःकाल चार से पाँच बजे का वक्त अपने बच्चों के लिए, परिजनों के लिए मेरा हमेशा के लिए सुरक्षित है। चार से पाँच बजे के वक्त में जब कभी आपको आवश्यकता पड़े, जरूरत पड़े, गुरुजी से कोई बात पूछनी है, परामर्श करना है या कोई सलाह लेनी है या कोई शक्ति की जरूरत है या कोई सहायता की जरूरत है, तो उस वक्त चुपचाप उठकर बैठ जाना। गुरुजी, स्नान कर लूँ? नहीं बेटे, कर सके तो कर ले, नहीं तो स्नान किए बिना ही बैठ जाना। बैठ करके यह ध्यान करना, जैसे मैं अपने गुरु का ध्यान करता हूँ। ध्यान करता हूँ कि मैं अपने गुरु की गोदी में बैठा हुआ हूँ। वे मेरे सिर पर हाथ फेरते जाते हैं, तो मुझे बड़ा मजा आता है। गायत्री माता के बारे में तो यह भी ध्यान आता है कि यह हमारी कल्पना की हुई एक मूर्ति है। ऐसा ध्यान आ जाता है, तब मेरा मन डाँवाडोल हो जाता है। अब ऐसा होने लगा है, पहले मेरे मन में ऐसा नहीं होता था। इसलिए अपने गुरु को, जिनको मैंने देखा है, जिनको जाना है, जिनके ऊपर मेरा विश्वास है, जिनको मैं भगवान मानता हूँ और मैं उन्हीं का दास हूँ, उनके बारे में ऐसा संदेह नहीं उत्पन्न होता है, संकल्प-विकल्प उत्पन्न नहीं होते। शक्ल भी किसी की मुझे नहीं बनानी पड़ती।

मित्रो, जिन गुरुजी को मैंने जाना है, देखा है, परखा है। जिनकी अपार कृपा का भार मेरे ऊपर है, जिनसे मैं लड़ाई भी लड़ सकता हूँ, तो उन्हें क्यों न मानूँ भगवान! जब मुझे कल्पना ही करनी पड़ी तो श्रीकृष्ण की कल्पना, शेषशायी भगवान की कल्पना की। लेकिन फिर देखा कि हमारे यहाँ जो श्रीकृष्ण का फोटो टँगा हुआ है, तो उसमें किसी का मुँह लंबा है, किसी की नाक चौड़ी है। क्यों साहब, श्रीकृष्ण भगवान की नाक लंबी थी या चौड़ी थी? नहीं बेटे, हमें नहीं मालूम। देखिए, आप ही बताइए कि चौड़ी नाक वाले कृष्ण हैं या ये हलकी नाक वाले कृष्ण हैं। बेटे, ये तो तसवीर बनाने वालों ने बनाए हैं। असली कृष्ण कैसे थे, नहीं मालूम। असली कृष्ण ऐसे भी हो सकते हैं, जैसा तू है। महाराज जी, वे तो बहुत ही खूबसूरत थे। शायद वे खूबसूरत भी हो सकते हैं और कुरूप भी हो सकते हैं। असली कृष्ण कैसे थे, हमें नहीं मालूम। यह फोटो हमने बनाया है। यदि हम ही फोटो बना सकते हैं तो हम अपने मन का क्यों न बना लें।

(समापन किश्त अगले अंक में)

❋

शंभूनाथ अपने पिता के इकलौते बेटे थे। उनने क्रांतिकारी दल में जाने की जब अपने पिता से आज्ञा माँगी तो उनने इतना ही कहा कि समझ-सोचकर कदम बढ़ाना। खतरों को पहले से ही ध्यान में रखो। उनके लायक हिम्मत हो, तो ही जाना। बीच में से लौटकर हँसी मत कराना। साथ ही उनने कहा, बाहर से पैसा लेने से पहले घर में जो कुछ है, उसे खत्म कर लो, ताकि कोई यह न कहे कि अपना बचाए फिरते हैं और दूसरों पर हाथ पसारते हैं।

घर में जो पूँजी थी, पिता ने वह खुशी-खुशी दे दी। जब बिलकुल खाली हाथ हो गए, तब पार्टी के काम के लिए दूसरे तरीकों से धन प्राप्त करने लगे।

शंभूनाथ पर कई मुकदमे चले। हाईकोर्ट ने उन्हें आजीवन कैद की सजा दी। जेल में जिन बंदियों से उनका संपर्क रहा, उन्हें भी क्रांतिकारी बनाने में वे लगे रहे।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

ध्यान क्यों करें? कैसे करें?

(चतुर्थ समापन किस्त)

मित्रो! हमने अपने मन का भगवान बना लिया है। हमारे मन का भगवान आपने हमारी पूजा की कोठरी में देखा होगा। माताजी जो ध्यान करती हैं, वह गायत्री माता का ध्यान करती हैं। हम जो ध्यान करते हैं—अपने गुरु का ध्यान करते हैं। चौबीस घंटे हमको एक ही दिखाई पड़ता है। हमारे आत्मोत्थान का श्रेय जब खुलता है, तो हमको वही दाढ़ी दिखाई पड़ती है, वही चमक दिखाई पड़ती है, बड़ी-बड़ी तेजस्वी आँखें दिखाई पड़ती हैं, लंबे वाले बाल दिखाई पड़ते हैं। हिमालय पर रहने वाला एक व्यक्ति दिखाई पड़ता है, जो न कभी खाता है, न कभी पीता है। हमेशा उसका सूक्ष्म शरीर ही काम करता रहता है। मैंने तो उसी को भगवान भी मान लिया है। गायत्री माता को भी वही मान लिया है। मेरे मन की एकाग्रता उन पर जम गई है।

ध्यान की सही विधि

मित्रो! एकाग्रता जमने की वजह से क्या होता रहता है? वे मेरे समीप ही दिखाई पड़ते रहते हैं। मुझे अब यह अनुभव नहीं होता कि हम अपनी कोठरी में अकेले रहते हैं या दो रहते हैं। मुझे यह लगता है कि हम दो रहते हैं और एक साथ में रहते हैं। अब मुझे बिलकुल ऐसा लगता है कि राम-लक्ष्मण कभी रहे होंगे, अर्जुन और कृष्ण कभी रहे होंगे। उसी तरह मैं अपने आप को यह अनुभव करता हूँ कि हम दो आदमी साथ-साथ रहते हैं, साथ-साथ चलते हैं और साथ-साथ खाते हैं। देवी काली के साथ जैसे रामकृष्ण परमहंस खाते थे, बेटे, अपने भगवान के साथ में हम भी ऐसे ही खाते रहते हैं। आपने हमें देखा ही कहाँ है! देखना है तो बेटे, हमारी आँख से देखना। तो क्या आप आँख से देखते हैं? हाँ बेटे, आँख से ही देखते हैं और देखते रहते हैं। आप भी ऐसा ध्यान कर सकते हैं।

यदि इस तरह का ध्यान आपकी समझ में न आता हो, मन न लगता हो, तो आप यह समझना कि गुरु के प्रति आपकी श्रद्धा और विश्वास नहीं है। हाँ, अगर सचमुच श्रद्धा और विश्वास नहीं है तो आप ध्यान मत करना। अगर आपके अंदर श्रद्धा-विश्वास है तो आप ऐसे भी ध्यान कर सकते हैं कि हम गुरुजी के पास बैठे हुए हैं, उनकी गोदी में बैठे हुए हैं। वे हमको प्यार करते हैं, हमको सलाह देते हैं। थोड़े दिन आप ऐसे ही ध्यान करना। थोड़े दिनों के बाद हमारे और आपके अंतरंग मिलने लगेंगे, तो फिर आप देखना, आदान-प्रदान का सिलसिला शुरू हो जाएगा। आपकी बातें हम तक आती हैं और हमारी बातें आप तक जाती हैं, यदि आप और हम वास्तव में मिलना शुरू कर दें तब। लेकिन अगर हमारी शक्लें ही मिलती रहेंगी, तो बात नहीं बनेगी। हमें भावना को भी मिलाना है, हृदय को भी मिलाना है और मस्तिष्क को भी मिलाना है। इस तरह अगर हम भीतर से मिले तो फिर देखना हमारा और आपका आदान-प्रदान अपने आप चालू हो जाएगा।

ध्यान बंद करने से क्या होगा?

साथियो! आप लोग कहते हैं कि संत का मिलना मुश्किल है, गुरु का मिलना मुश्किल है, भगवान का मिलना मुश्किल है। नहीं बेटे, यह कोई मुश्किल नहीं है। केवल ध्यान करना मुश्किल है। ध्यान कैसे करेंगे? अगर ध्यान न कर सके तो क्या हो जाएगा? देख बेटे, तुझे मैं थोड़े से नाम बताता हूँ, जो ध्यान न कर सके, लेकिन किसी तरह से भगवान की कृपा प्राप्त कर ली थी, पर उसको हजम करने की ताकत किसी ने नहीं प्राप्त की थी, इसलिए उनको नुकसान हो गया था। वे कौन-कौन व्यक्ति थे? बेटे, उनमें से एक का नाम रावण था। रावण ने बहुत तप किए थे और तप करने की वजह से शंकर जी को प्रसन्न कर लिया था और किसी तरह से उसने वरदान भी पा लिया था, आशीर्वाद भी पा लिया था। वरदान और आशीर्वाद पाने के पश्चात रावण को कुछ मिला? नहीं, वह घाटे में रहा और उसका नुकसान ही हुआ।

किसी को बुखार आता है, किसी की मृत्यु होती है, पर रावण की मृत्यु? रावण ने ऐसी भयंकर मृत्यु देखी, जैसी किसी और ने नहीं देखी। उसने अपनी औरतों को जलते देखा, अपने बच्चों को जलते देखा, नाती-पोतों को जलते देखा। ऐसा भयंकर दृश्य कहीं देखा है आपने? मरे हुए व्यक्तियों को तो देखा है कि मरने के बाद उन्हें जला

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दिया गया, पर जिंदा बेटों को, जिंदा बेटियों को, जिंदा पोतियों को, जिंदा पोतों को जलते हुए क्या किसी ने देखा है? नहीं, महाराज जी! अगर ऐसा दृश्य हम देखेंगे तो हमारा कलेजा फट जाएगा। हाँ बेटे, परंतु एक का कलेजा फटा है। किसका? रावण का। रावण अगर कोई तपस्वी न होता, वह कोई दुकानदार होता। बेटे, उसने हजामत बनाने की कोई दुकान खोल ली होती, चाय की दुकान खोल लेता, उसका 'रावण रेस्टोरेंट' होता, तो खूब मजे में लोग आते, चाय पीते। मजे में 'रावण टी स्टॉल', 'टी कॉर्नर', 'कॉफी कॉर्नर' चल रहा होता। वह अपना घर बना लेता और बैंक में हजार-दो हजार रुपये जमा कर लेता। अपने बाल-बच्चों को पुलिस में नौकरी करवा देता और इन्कमटैक्स में ऑफीसर बना देता। फिर न रावण की बीबी मरती, न बच्चे मरते, कोई भी नहीं मरता।

मित्रो! रावण ने भजन तो किया, लेकिन बेचारे को हजम करने की शक्ति न मिल सकी। वह तपता रहा और जैसे ही शक्ति आई कि बीबी लाऊँगा, पैसा लाऊँगा, मकान बनाऊँगा आदि मनसूबे पूरे करने लगा। उस अभागे से यह नहीं बन पड़ा कि हमारे पिता लोमश ऋषि, जैसे जीवन जीते थे, वैसे जिएँ। जिस भी काम में वह लग गया, उसका सफाया हो गया। वह कुछ नहीं कर पाया। कुंभकर्ण भी कुछ नहीं कर पाया। कुंभकर्ण ने अपनी वाणी को शुद्ध नहीं किया और अशुद्ध वाणी से ही जप करता रहा। जब सरस्वती सामने आकर खड़ी हो गईं और बोलीं कि वरदान माँग, तो उसने कहा कि छह महीने सोता रहूँ और एक दिन जगता रहूँ। क्यों क्या बात थी कि 'छह महीने जागूँ और एक दिन सोऊँ' का वरदान न माँग सका? अक्ल खराब थी उसकी। उसके मुँह से निकल गया कि 'छह महीने सोऊँ और एक दिन जागूँ।' वह छला गया। अगर वह नेपोलियन बोनापार्ट होता तो एक दिन भी न सोता। नेपोलियन एक दिन भी नहीं सोता था और जब सोने का वक्त आता तो घोड़े को पेड़ के नीचे खड़ा किया और झट से सो गया, आराम किया और फिर घोड़े को लेकर चल दिया। वह मजे से अपना काम कर लेता था। कुंभकर्ण से तो नेपोलियन अच्छा था। वह न भजन करता, न पूजा करता, दिन में भी काम करता और रात में भी काम करता। कुंभकर्ण का क्या हुआ? बेटे, उसकी मिट्टी पलीद हो गई। क्या फायदा कर लिया उसने? कुछ नहीं कर सका।

मित्रो! इसी तरह हिरण्याक्ष से लेकर हिरण्यकशिपु तक, कंस से लेकर जरासंध तक और मारीचि से लेकर सुबाहु तक, सब-के-सब तपस्वी थे और सब-के-सब भजन करने वाले थे, पूजा करने वाले थे। लेकिन वे अपना आत्मशोधन न कर सके। आत्मशोधन के अभाव में भगवान की कृपा तो मिली, यह तो मैं नहीं कहता कि कृपा नहीं मिलती, पर आदमी इससे फायदा नहीं उठा सकता, हाँ, इससे अपना नुकसान जरूर कर सकता है।

हमारी साधकों को गारंटी

इस शिविर में बुलाकर मैं आपको निमंत्रण देता हूँ कि आप ब्रह्मवर्चस की साधना में आने की तैयारी करें। जिस शक्ति की आप तलाश करते हैं, उसको कोई ऐसा देने वाला तो हो, जो आपको दे सके। बेटे, हम गारंटी देते हैं कि वह शक्ति हम आपको दिलाएँगे। महाराज जी! रामकृष्ण परमहंस जैसा गुरु हो और हम उसके पैर पड़ जाएँ, तो जिस तरह से विवेकानंद में उनकी सारी शक्ति आ गई थी, ऐसा ही गुरु हमको मिल जाए और हमको विवेकानंद बना दे, तो बहुत अच्छा हो। अच्छा बेटे, तेरे लिए तो हम कहीं से भी ऐसा गुरु ढूँढ़कर ला देंगे और वह तुझे शक्ति दे देगा, लेकिन पहले तुझे एक काम करना पड़ेगा, तुझे विवेकानंद बनना पड़ेगा। नहीं महाराज जी! पहले मैं अपना फोटो अखबार में छपाने को तैयार हूँ। अमेरिका के लिए मुझको हवाई जहाज का टिकट मिल जाएगा, मैं घूम भी आऊँगा और 'स्पीच' भी दे आऊँगा। नहीं बेटे, स्पीच देने की बात तो पीछे की है, पहले तुझे विवेकानंद बनना पड़ेगा।

मित्रो! कैसा विवेकानंद बनना पड़ेगा? अमेरिका में विवेकानंद जिसके यहाँ ठहरे थे, वहाँ एक महिला थी, जो उनसे मजाक करने लगी, दिल्लगी करने लगी। थोड़े दिन तक वह वैसे ही सेवा करने लगी और कहने लगी कि आपकी शिष्या हूँ, फलानी हूँ-ढिकानी हूँ। थोड़े दिन बाद उसने साधुजी के साथ कुछ दिल्लगीबाजी शुरू कर दी। अमेरिका में कुछ ऐसा रिवाज ही है। विवेकानंद के गुरु जी ने कहा, अहा....! तो ये बात है। उनने लाल-लाल आँखें तरेरीं और कहा कि ठहर जा, तुझे अभी बताता हूँ। क्या तुझे इसीलिए शक्ति दी है? रामकृष्ण परमहंस की आँखों ने वहाँ से देखा और कहा कि स्वयं के लिए, अपने लिए, विलासिता के लिए मेरी शक्ति से लोगों को प्रभावित और चमत्कृत करेगा? उसके द्वारा जो लोगों में श्रद्धा उत्पन्न होगी, तो तू उससे अपने लिए लाभ उठाएगा? अच्छा, ठहर, अभी तुझे बताता हूँ। यह दृश्य देख विवेकानंद वहीं अमेरिका में काँपने लगे। उन्होंने अपने आप को धुना और अपने आप को पीटा। केवल धुना और पीटा ही नहीं, वरन्

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपने मन को धोया। उन्होंने अपने मन को समझाया कि अरे मूर्ख! तू समझता ही नहीं कि तू क्या करने जा रहा था।

स्वयं को वैसा बनाओ तो

साथियो! विवेकानंद को उस समय और तो कुछ समझ में नहीं आया था, जब गुरु ने आँखें निकालीं। उन्होंने देखा कि सामने जोर का स्टोव जल रहा है। वे खाना अपने आप पकाते थे। उनका स्टोव के ऊपर रखा तवा जल रहा था। वे जलते हुए तवे के ऊपर बैठ गए। इससे उनके दोनों पुट्ठे जल गए। जब जल गए, तब उस पर से उठे। उन्होंने अपने मन से कहा कि अब तू समझा कि नहीं समझा? आग छूते हैं तो छाले पड़ते हैं कि नहीं पड़ते? हाँ साहब! पड़ते हैं। तो तू उसे छू रहा है, जो आग से भी प्रचंड है। इससे छाले नहीं पड़ेंगे क्या? विवेकानंद गुरु का संकेत समझ गए। इसके बाद महीने भर पड़े रहे, घर पर ही विश्राम करते रहे। एक महीने बाद उन्होंने अपना काम शुरू किया। एक बार वे बोले, महाराज जी! आप कुंडली जगा देंगे? रामकृष्ण परमहंस ने जगा दी। तो गुरुजी, आप भी हमारी कुंडली जगा देंगे? हाँ बेटे, हम जगा देंगे। इसके लिए तो हम व्याकुल हैं। जिस तरह गाय के थनों में दूध फटा पड़ता है और वह उसे अपने बछड़े को पिलाने के लिए व्याकुल रहती है, ठीक वही हाल हमारा है। गाय का दूध फटा पड़ता है तो साहब! हमको पिला दीजिए। बेटे, यही तो हम तलाश करते रहते हैं, लेकिन गाय तो अपने बच्चे को ही पिलाती है, कुत्ते के बच्चे को नहीं पिला सकती। गाय गाय के बच्चे को अपना दूध पिला सकती है, लेकिन कुत्ते के बच्चे को नहीं पिला सकती। अत: आप पहले गाय का बच्चा बनने की कोशिश करें।

साथियो! हमने इस ब्रह्मवर्चस शिविर में आपको इसलिए बुलाया कि आप जो कर्मकांड करते हैं, जो उपासना करते हैं, पूजा करते हैं, भजन करते हैं, हनुमान चालीसा पढ़ते हैं, जो भी पढ़ते हैं, उसमें एक काम तो यह करें कि उसमें अपने विचारों का समन्वय करें। जितने समय तक आपका जप चलता रहे, उतने समय तक प्रत्येक क्रिया के साथ-साथ, जप के साथ-साथ में जो भावनाएँ जुड़ी हुई हैं, विचारणाएँ जुड़ी हुई हैं, उसमें अपने मस्तिष्क को पूरी तरीके से लगाए रखें। दूसरा विचार उसमें न आने दें। दूसरे विचारों को रोकिए मत, उसकी दिशा बदल दीजिए, जप में लगा दीजिए। वह अपने आप रुक जाएगा।

एक महात्मा ने अपने एक शिष्य से कह दिया कि भजन करते समय तू बंदर का ध्यान मत करना। जैसे ही वह ध्यान करने बैठता, मन में यही विचार आने लगता कि बंदर आ जाएगा। परेशान शिष्य जब महात्मा जी के पास गया तो उन्होंने कहा कि हमने तुझे गलत बता दिया था, अब हम तुझे ठीक बताते हैं। अब से जब भी तू ध्यान किया करे तो गाय का ध्यान किया कर, 'गऊ माता बैठी है, गऊ माता खड़ी हुई है.....।' इस तरह जब तक तू गऊ माता का ध्यान करता रहेगा, तब तक बंदर नहीं आएगा। तो गुरुजी! मन को भागने से रोक दें। बेटे, मन भागने से नहीं रुकेगा। मन को नहीं भागने दूँगा, मन भाग जाएगा, तो रोक लूँगा, मन को पकड़ लूँगा। मन को मार डालूँगा। बेटे, ऐसा करेगा तो मन भागेगा ही। तो क्या करूँ? मन को एक काम में लगा दे। किस काम में लगाऊँ? बेटे, हमारे चिंतन के साथ में भावनाएँ जुड़ी हुई हैं। हवन में हम आपको भावना बताते हैं, जप में हम भावना बताते हैं, उपासना में हम भावना बताते हैं, देवपूजन में हम भावना बताते हैं। उसके साथ मन को जोड़ दे।

पहले हमारे विचारों को पढ़िए

मित्रो! आपने हमारी किताबें पढ़ी नहीं हैं, ध्यान से पढ़िए। आप तो वही छोटी-सी बात पूछते हैं कि लक्ष्मी कमाने के लिए 'श्री' बीज मंत्र तीन बार लगाने हैं या पाँच बार लगाने हैं। आप तो केवल यही पूछते हैं जिससे लक्ष्मी फटाफट चली आए और यह नहीं पूछते कि उपासना के साथ-साथ में जितने भी कर्मकांड हैं, उन कर्मकांडों के साथ में जो शिक्षाएँ भरी पड़ी हैं, प्रेरणाएँ भरी पड़ी हैं, दिशाएँ भरी पड़ी हैं, उनको बता दीजिए। बेटे, हमने किताबों में बेशक छापा है, हमने पैंतालीस मिनट की जो उपासना बताई थी, उसका एक विशेषांक निकाला था। उस विशेषांक में हरेक को बताया था कि जब आप जप किया करें, तो ये वाला जप किया करें। पूजा-उपासना के संबंध में अभी भी वह हमारी किताब है, उसे तो कोई खरीदता नहीं है और यह कहता है कि महाराज जी! वह किताब बताइए जिससे लक्ष्मी आने लगे। ठीक है बेटे, वह पच्चीस पैसे की आती है, खरीद ले जा। हाँ महाराज जी! वही चार-पाँच कापी खरीद ले जाऊँगा। खरीद ले जा बेटे, सबको लक्ष्मी आ जाएगी। उस विधि वाली किताब को तो लोग खरीद लेते हैं, पर उसे कोई नहीं खरीदता। कौन सी को? उपासना वाली को, जिसमें यह बताया गया है कि उपासना के समय कर्मकांडों के साथ-साथ किस तरह से हमारे विचारों का चिंतन चलना चाहिए।

चिंतन की आवश्यकता के बाद तीसरा जो चरण आता है, वह है हमारी भावनाओं का। भावना किसे कहते हैं? भावना उस उमंग को कहते हैं, जो क्रिया बिना चैन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं लेती, किए बिना चैन नहीं लेने देती। वे कल्पनाएँ जो आपके दिमाग में आती रहती हैं कि हम जप करेंगे, संत बनेंगे, महात्मा बनेंगे, ज्ञानी बनेंगे, ब्रह्मचारी बनेंगे और नित्य प्रार्थना करते हैं, 'हे प्रभु आनंददाता! ज्ञान हमको दीजिए। शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए॥' तो क्यों भाई! एकाध दुर्गुण छोड़ना तो नहीं है? नहीं महाराज जी! छोड़ने-छाड़ने का चक्कर नहीं है। मैं तो केवल गीत गाता रहता हूँ। अरे! तो गीत से क्या बनेगा अभागे।

मित्रो! क्या करना चाहिए? विचारों के साथ-साथ में हमारे अंदर भावना का समावेश होना चाहिए। भावना का अर्थ यह है कि इसके अंदर तड़पन पैदा हो, ऐसी उमंग पैदा हो कि हम इसे किए बिना रह नहीं सकें। आप जो भी क्रिया-कृत्य करें, कर्मकांड करें, उसके साथ चिंतन भी करें कि हम दीपक की तरह से जिएँगे, हम अपना आत्मशोधन करेंगे। जप करेंगे, नैवेद्य चढ़ाएँगे, इस तरह के जो भी कृत्य हों, इन क्रियाओं के साथ-साथ में विचारों का समन्वय हो। विचारों के समन्वय के पश्चात जब आपके विचार जमने लगें, तो आप यह कोशिश कीजिए कि इसके साथ में भाव अर्थात उमंगें भी उमगें। 'हम यही करेंगे, बस यही करेंगे' का संकल्प जाग्रत हो कि हम श्रेष्ठता से असीम श्रद्धा करेंगे। श्रेष्ठता से असीम श्रद्धा, जिसको हम असीम प्यार कहते हैं। इससे ज्यादा कोई प्यारी चीज नहीं है। हमको श्रेष्ठता से असीम और कोई प्यारा नहीं है। भगवान से ज्यादा और कोई प्यारा नहीं है हमको। अनुशासन से ज्यादा प्यारा और कोई नहीं है। हम सबको नाराज कर सकते हैं, पर इसको नहीं करेंगे।

उमंगें भीतर से जन्में

मित्रो! अगर ये उमंगें हमारे भीतर से पैदा हों, तो हमारे जीवन में क्रिया की विशिष्टता आ जाए। कर्मकांड के साथ में जुड़े हुए विचार, विचारों के साथ जुड़ी हुई भावनाएँ, भावनाओं से ओत-प्रोत, रसविभोर हमारा जीवन आनंद से सराबोर हो जाए, तो उसका परिणाम हमारे जीवन में संत के रूप में सामने आएगा। इस तरह फिर आप देखिए कि संत बनते हैं कि नहीं बनते? फिर देखिए कि आप ऋषि बनते हैं कि नहीं बनते? फिर देखिए कि आपको भगवान का अनुग्रह प्राप्त होता है कि नहीं? ये सभी चीजें आपको प्राप्त होती चली जाती हैं। शर्त यही है कि आप अपने आप को, अपने जीवन को, अपनी विचारणाओं को, अपने चिंतन को, अपने लक्ष्य को, अपने आदर्श को इस लायक बनाने की कोशिश करें, जैसे कि संत के होने चाहिए। जैसे कि उपासना करने वाले के होने चाहिए। अगर आप थोड़े-बहुत कदम उठाने के लिए तैयार हैं, तो यह आपका सौभाग्य है। लोग तो तलाश करते फिरते हैं कि कोई ऐसी शक्ति हमें मिले, जो इस विषय में पारंगत हो। बेटे, हम अपनी बात तो नहीं कहते, किंतु हमारे गुरु पारंगत हैं। आप भी कह सकते हैं कि वे पारंगत हैं। उनकी हम जमानत दे सकते हैं और कह सकते हैं कि आपकी सहायता हम कर सकते हैं।

महाराज जी! आप अपने गुरु जी के दर्शन करा दीजिए। अबकी बार गुरु जी, आप हिमालय पर चलें तो मुझे भी ले चलना। हाँ बेटे, ले चलेंगे, इसमें क्या दिक्कत है! तो फिर गुरु जी की कृपा मिलेगी? नहीं बेटे! कृपा क्यों नहीं मिल सकती? फिर क्या फायदा करेंगे? बेटे, तू पहले विचार कर ले, कृपा का वायदा मैं नहीं कर सकता। मैं तुझे ले चल सकता हूँ, दिखा भी लाऊँगा, पर दिखाने के साथ-साथ यों कहिए कि कोई वरदान-आशीर्वाद देंगे या नहीं, नहीं देंगे तुझे। क्यों? इसलिए नहीं देंगे कि तू वरदान को हजम नहीं कर सकता। वरदान को हजम करने के लायक तेरी स्थिति नहीं है। बेटे, अगर हम वरदान को हजम करने लायक स्थिति पैदा कर लें, तो घर बैठे अनुदान हमें मिल सकते हैं। हमारे गुरु का हम पर अनुग्रह है। वे हिमालय पर रहते हैं, जहाँ जाकर हम लेकर आते हैं, लेकिन आपको तो यहीं बैठे मिल सकता है। ब्रह्मवर्चस को आरण्यक हमने इसीलिए बनाया है कि वे व्यक्ति उपासना करने के लिए यहाँ आएँ, जिन्होंने सारी जिंदगी भर उपासना की है, पर प्राप्त कुछ नहीं हुआ, पर अब थोड़े समय में प्राप्त कर सकते हैं।

मित्रो! रामकृष्ण परमहंस ने जो जन्म-जन्मांतरों तक की उपासना की और प्राप्त किया, उसको विवेकानंद ने थोड़े दिनों में प्राप्त कर लिया। आप भी थोड़ी देर में प्राप्त कर सकते हैं, जो हमने मुद्दतों से पाया। गाय ने चौबीस घंटे घास खाकर के और उसको हजम करके जो दूध पेट में जमा किया है, उसको आप पाँच मिनट में पी सकते हैं। आपका सौभाग्य है। आप बच्चे हैं, दूध पी लीजिए। गाय ने उसे चौबीस घंटे में तैयार किया है। बेचारी दिन भर घूमती रही और घास खाती रही है, तब दूध जमा किया है उसने। आप उसे पी लीजिए, यह आपका सौभाग्य है। आप दूध पी सकते हैं, लेकिन आपको इतना तो करना ही पड़ेगा कि गाय का दूध पीने के लिए आपको गाय के बच्चे के समतुल्य होना पड़ेगा।

आप गाय के बच्चे के समतुल्य होते हैं कि नहीं, अगर होते हैं, तो विश्वास रखिए, आपको वह सब कुछ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मिलेगा, जो एक साधक को मिलना चाहिए। इस शिविर के साथ हमने ब्रह्मवर्चस की साधना को भी जोड़कर रखा है। इसमें कुंडलिनी-जागरण भी शामिल है, पंचकोशों का अनावरण भी शामिल है। इसमें भगवान का साक्षात्कार भी शामिल है। इसमें मनुष्य के भीतर विद्यमान आत्मतत्त्व का ज्ञान होना भी शामिल है। इसके द्वारा आपके समीपवर्ती वातावरण में स्वर्गीय परिस्थितियों का पैदा होना भी शामिल है। ये सारी-की-सारी विभूतियाँ, विशेषताएँ जो बताई गई थीं, वे सारी-की-सारी सिद्धियाँ आपका स्वागत करती हैं और आपको बुलाती हैं और आपसे प्रार्थना करती हैं कि आप चाहें तो हमें स्वीकार कर सकते हैं। आपको प्रार्थना करने की जरूरत नहीं है। देवता आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमको स्वीकार कीजिए, लेकिन आपको उसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। वह इस रूप में चुकानी पड़ेगी कि आप अपना जीवन परिष्कृत करें। श्रेष्ठ दृष्टिकोण, ऊँचा चिंतन, आदर्श जीवन का स्वरूप बनाएँ। अगर इतना आप बना लें, तो आपको वे सिद्धियाँ और वे चमत्कार, वे ऋद्धियाँ, जिनकी बावत ऋषियों ने बहुत सारे माहात्म्य बताए और वर्णन किए हैं और जिनके लिए आपको मैंने पहले दिन बताए थे और आज अंतिम दिन भी बताता हूँ कि वे सारी-की-सारी सिद्धियाँ और चमत्कार प्राचीनकाल के लोगों के तरीके से आज भी सुरक्षित हैं। लेकिन इसके साथ शर्त है, बिन शर्त नहीं मिलेगा।

बिना शर्त अनुदान नहीं

महाराज जी! बिना शर्त के दिलाइए। नहीं बेटे, बिना शर्त के नहीं मिलेगा। बिना शर्त के हमें कलेक्टर बना दीजिए। नहीं बेटे, बिना शर्त के नहीं बन सकता। कलेक्टर बनने से पहले तुझे ग्रेजुएट होना चाहिए। ग्रेजुएट होने के साथ-साथ में तुझे आई० सी० एस० पास करना चाहिए। तब फिर तुझे कलेक्टर बनवा दूँगा। नहीं महाराज जी! पहले ही बनवा दीजिए, चाहे जैसे भी हो। आप तो इंदिरा गाँधी को बहुत जानते हैं, मोरार जी देसाई आपके मिलने वालों में से हैं, आप हमको तो कलेक्टर बनवा ही दीजिए। अरे! कुछ पास भी है क्या? हाँ, पाँचवें दरजे तक पढ़ा हूँ। तो फिर कलेक्टर कैसे बनवा दूँ। अरे! आपकी तो जान-पहचान है। ऐसे ही तीर-तुक्का मारता है। अरे भाई, तुक्का मारा जाता है कहीं? नहीं साहब! भगवान जी के यहाँ ऐसे ही तुक्का मारो कि हमारा सब काम हो जाएगा। नहीं बेटे, ऐसा तो नहीं हो सकता।

मित्रो! इसके लिए हमको पात्रता का विकास करना चाहिए। पात्रता का विकास करने के लिए मेरे गुरु ने मुझ पर दबाव डाला, तब मैंने अपनी पात्रता का विकास किया। पात्रता का विकास जिस कदर होता चला गया, उसी कदर मुझे देवता का, भगवान का, ऋषियों का अनुग्रह मिलता चला गया। आपके लिए भी वही रास्ता है, जो मैंने आपको पहले दिन बताया था कि हमको गायत्री उपासना करते हुए जो चमत्कार और सिद्धियाँ मिलीं, उसके आधार पर रहस्य को क्यों छिपाया जाए? यह रहस्य बताकर मैं अपनी बात समाप्त करूँगा। आपको मैं फिर यह कहता हूँ कि उपासना से लाभ उठाने के लिए अटूट श्रद्धा का होना नितांत आवश्यक है। श्रद्धा अर्थात भगवान के आदेशों पर चलने के लिए विश्वास। जैसे कि मैंने आपको एक किसान का किस्सा बताया था कि किस तरह वह अन्य किसानों को तारता चला गया। भगवान पर उसका अटूट विश्वास था। भगवान पर विश्वास के आधार पर यदि आप श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए, आदर्शवादी जीवन जीने के लिए तैयार होते हैं, तो आप अपनी नाव उस पार तो ले जाएँगे ही, अन्य असंख्यों को भी तार देंगे, अपनी नाव पर बिठाकर ले जाएँगे।

तीन का त्रिवेणी संगम

साथियो! अगर आप ऐसा जीवन जी सकते हों तो हमारी राय है कि श्रद्धा एक, चरित्र दो और ऊँचा उद्देश्य तीन, इन तीनों की त्रिवेणी आप मिलाइए। आप तप कीजिए, किसी ऊँचे उद्देश्य के लिए। भगवान से माँगिए, किसी ऊँचे काम के लिए। देखिए फिर मिलता है कि नहीं मिलता? एक बच्चा जब अपने बाप से रुपये माँगता है कि पिताजी पाँच रुपये दे दीजिए। बाप कहता है क्यों? किसलिए? बच्चा कहता है कि सिनेमा देखने जाना है। पिताजी कहते हैं कि तू रोज-रोज पाँच रुपये ले जाता है और सब सिनेमा में खरच कर देता है। भूखों मरेगा और भीख माँगेगा। सौ गाली देता है। दूसरी ओर एक बेटा कहता है कि पिताजी, अमुक चीज मंदी हो गई है। मंदी चीज को खरीद लेने से उम्मीद है कि दो महीने के बाद हमको इसमें से मुनाफा हो जाएगा। हाँ बेटे, ठीक है, खरीद ले। पिता जी, पंद्रह हजार रुपये हों, तो हम माल खरीद लेंगे और बीस हजार रुपये में बेच देंगे। अच्छा बेटे, तो अब क्या करना चाहिए? पिताजी, पंद्रह हजार रुपये का इंतजाम करना चाहिए। अच्छा बेटा, देख अभी करता हूँ। देख तिजोरी में कितने रुपये हैं। नौ हजार हैं और देख ऐसा कर कि अपनी माँ के जेवर ले जा और छह हजार में गिरवी रख दे। कम पड़ेगा तो देख मैं अपने रिश्तेदार को चिट्ठी लिख दूँगा कि तुम मेरी जिम्मेदारी पर दो हजार रुपये दे दो। पंद्रह दिन के अंदर भेज दूँगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मित्रो! उसके लिए वह कर्ज माँगता है। अपनी औरत के जेवर बेच देता है। नौ हजार रुपये तिजोरी में रखे हैं, उन्हें निकालकर देता है। हजार रुपये छिपाकर रखे थे, वह भी दे देता है। सब खजाने खोल देता है बाप। क्यों देता है बाप उस बेटे को? इसलिए देता है कि वह किसी ऐसे काम के लिए खरच करना चाहता है कि जिससे बाप की इज्जत, बाप की शान बढ़े। जिस घर में वह रहता है, सबके लिए फायदा होता हो, इसलिए वह देता है। फिर बच्चे को पाँच रुपये देने से क्यों इनकार कर रहा था? इसलिए कि वह अपने लिए माँगता है, अय्याशी के लिए माँगता है, बेकार की बातों के लिए माँगता है। इसलिए बाप इनकार करता था। भगवान भी इसीलिए इनकार करता है अनुदान देने से कि आप अपने लिए माँगते हैं। आप ऊँचे उद्देश्य के लिए भजन कीजिए, चरित्रवान बनिए, श्रद्धा से अपना अंत:करण परिपूर्ण कीजिए। भजन की मात्रा कम हो या ज्यादा, इससे कुछ बनता नहीं है। आप थोड़ा भजन कर लें, वह भी काफी हो सकता है।

श्रद्धा ही है धुरी

मित्रो! आप एकाध घंटा भजन कर लें, तो भी पर्याप्त है। महात्मा गाँधी आधा घंटा भजन करते थे। बिनोवा आधा घंटे भजन करते थे। इन लोगों के थोड़े-थोड़े भजन होते थे। थोड़े भजन में भी चमत्कार हो सकते हैं। शर्त यह है कि आप उसमें खाद-पानी देने और निराई करने का क्रम निरंतर जारी रखें। इसका अर्थ यह होता है कि श्रद्धा का समावेश, चरित्रवान होना और ऊँचे उद्देश्य के लिए उपासनाएँ करना अपने लिए नहीं। अगर आप ये तीन काम कर सकते हों, तो ऋषियों की परंपरा से लेकर हमारी परंपरा तक, सब में एक ही बात चली आई है कि भगवान का अनुग्रह आपको मिलेगा, भगवान का प्यार आपको मिलेगा, अगर आपने लोभ और मोह पर अंकुश रखना सीख लिया। आपको यदि लोभ और मोह से ही प्यार है, तो फिर दोनों चीजें आपको नहीं मिल सकतीं। अगर आप एक चीज लेंगे, तो दूसरी आ जाएगी। प्रकाश की ओर चलेंगे, तो छाया पीछे आ जाएगी। छाया की ओर चलेंगे, तो प्रकाश भी नहीं रहेगा और छाया भी नहीं रहेगी।

मित्रो! हम प्रकाश की ओर चले, तो छाया हमारे साथ-साथ चली है। छाया को हजारों बार फेंका, हजारों बार धिक्कारा, टेढ़ी आँखें दिखाईं, फिर भी वह आ गई। इससे मना करो तो कहती है कि हम फिर भी आएँगे। अत: आप प्रकाश की ओर चलिए, छाया पीछे-पीछे आएगी। छाया की ओर चलेंगे, तो छाया भी आगे-आगे भागेगी। फिर आप प्रकाश को भी गँवा बैठेंगे। बेटे यही है सिद्धांत। जिसके आधार पर मैंने सारे जीवन में उन्हें दिमाग में उतारकर व्यवहार में लाता रहा। उसका परिणाम है, जो आज आप देखते हैं कि अपनी भी मैंने नाव पार लगा दी और अपनी नाव में बैठाकर असंख्यों को पार लगा दिया। आप भी अपनी नाव पार लगा सकते हैं और असंख्यों को उस पर बैठाकर पार लगा सकते हैं, लेकिन शर्त यही है कि आपका अध्यात्म सही हो। सही अध्यात्म कैसा होता है, इसी का परिचय मैंने आपको इस शिविर में दिया। मुझे आशा है कि आप इस पर विचार करेंगे और उसी के अनुरूप अपने जीवन को ढालने की कोशिश करेंगे। अगर आप ऐसा कर सके तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ और आश्वासन देता हूँ कि आपकी साधना वैसी ही सफल होकर रहेगी, आपका ध्यान निश्चित ही लगेगा, जैसा कि हमारे साथ हुआ। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांति: ॥

संत पुंडरीक को पता चला कि किसी कारण पाटलिपुत्र के दो श्रेष्ठियों में कुछ आपसी मनो-मालिन्य पैदा हो गया है। दोनों उनके शिष्य थे। लोगों ने कहा, "उन्हें समझाकर पुनः एकता स्थापित करा दें।" संत बोले, "समझाने से काम न चलेगा, उनमें सद्भाव पैदा करना पड़ेगा।"

संत ने किसी से कुछ न कहा, दोनों आते, उनके पास बैठे रहते। कभी-कभी संत दोनों को एक साथ काम बतला देते। दोनों करते। आश्रम की स्वच्छता में, आगंतुकों को भोजन कराने में, पूजन की व्यवस्था करने में वे ऐसी स्थिति पैदा करते कि दोनों श्रेष्ठियों को सहयोगपूर्वक काम करना पड़ता। गुरु के प्रति श्रद्धाभाव के कारण दोनों पूरे मनोयोग से कार्य करते। सहयोग लेते-देते, एकदूसरे के कार्य के प्रति सम्मान का भाव पैदा हुआ, सद्भाव बढ़ा और बिना किसी के कुछ कहे उनका मनोमालिन्य दूर हो गया।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमवंदनीया माताजी की अमृतवाणी

आत्मा की भूख : उपासना

(प्रस्तुत है वसंत पर्व १९८४ की पावन वेला में निस्सृत शक्तिस्वरूपा माताजी की अमृतवाणी। परमपूज्य गुरुदेव सूक्ष्मीकरण साधना में थे।)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

बेटियो, आत्मीय प्रज्ञा परिजनो! उपासना जीवन की बहुमूल्य निधि है। उस निधि से यदि दूर हट जाते हैं तो हम खोखले रह जाते हैं, निर्जीव हो जाते हैं। उपासना आत्मा की भूख है। आत्मा की भूख जब तक नहीं मिटती, तब तक आत्मा को तृप्ति नहीं होती। दिमाग की भूख बौद्धिक होती है और आत्मा की जो भूख होती है, वह उपासना होती है। उपासना माने भगवान के पास बैठना। समीपता। बड़े व्यक्ति के समीप बैठते हैं तो वही छाया हमारे ऊपर पड़ती है और हमारा भी उतना ही महत्त्व हो जाता है, जितना कि बड़े व्यक्ति का होता है। जिस तरह प्रधानमंत्री का सम्मान होता है और राष्ट्रपति का सम्मान होता है और जो उस समय उनके समीप होते हैं, उन्हें भी उतना ही सम्मान उस समय मिलता है, उससे कम नहीं मिलता। हमारा भगवान उससे भी ऊँची सत्ता है। भगवान हमारे राष्ट्रपति का भी राष्ट्रपति है, प्रधानमंत्री का भी प्रधानमंत्री है। भगवान से जब मनुष्य मिल जाता है तो वह भगवान का ही स्वरूप हो जाता है। उसमें कोई भी अंतर नहीं होता। जैसे कीट और भृंगी की समीपता। जब भृंगी अपनी भाषा में कीट को आवाज देता है तो कीट उसके पास दौड़ता हुआ चला जाता है और उसमें मिल जाता है।

निकटता का लाभ

बेटे, नाला पहले गंदा होता है और जब गंगा में मिल जाता है तो गंगा का स्वरूप हो जाता है। कौन? नाला। गंगा जब गोमुख से निकलती है तो उसका दायरा छोटा होता है। छोटा-सा मुँह होता है, जिसमें से गंगा प्रवाहित होती है। गंगा की विशालता—जैसे-जैसे गंगा प्रवाहित होती है, वह फैलती चली जाती है। अनेक नदी-नाले उसमें आते चले जाते हैं। वे सभी गंगा हो जाते हैं और विशाल गंगा समुद्र में जाकर विलीन हो जाती है। कौन? गंगा। वह गंगा जो एक छोटे-से गोमुख से निकल रही थी। तब उसका कोई अस्तित्व नहीं था, कोई वजूद नहीं था, पर जब वही गंगा विश्वमानव के लिए बहती गई, बहती गई और जाकर समुद्र में समा गई।

भगवान शंकर ने गंगा को अपने सिर पर जटाओं में धारण किया था। भगवान शंकर को गंगा बहुत प्यारी थी। भगवान को भक्त बहुत प्यारा होता है, प्राणों से भी ज्यादा, बशर्ते उसका जीवन समर्पित हो, तब। यदि जीवन समर्पित नहीं है तो वह भक्त कैसे हो सकता है! भक्त वह होता है, जैसे एक सेठ जी थे और एक ब्राह्मण। ब्राह्मण ने अपने कुछ रुपये उस सेठ के यहाँ जमा किए थे। एक दिन ब्राह्मण ने सेठ से कहा कि मेरे रुपये दे दीजिए, मेरी लड़की की शादी है। सेठ ने बहाना बनाया, कैसे रुपये? मेरे पास तुम्हारे कोई रुपये-पैसे नहीं हैं। गरीब ब्राह्मण बहुत दुखी हुआ। यह बात राजा तक पहुँची तो राजा ने कहा, ब्राह्मण देवता कल हमारी सवारी निकलने वाली है और आप फलाँ दुकान के सामने हमें मिल जाना।

जहाँ राजा ने बताया था, उसी स्थान पर ब्राह्मण देवता पहुँच गए। राजा की सवारी निकल रही थी। जैसे ही राजा ने उस ब्राह्मण को देखा तो अपने हाथी पर से उतरे और उनके पास आकर प्रणाम करके बोले, ''अरे गुरुदेव, आप नीचे नंगे पाँव! आइए-आइए'' और उन्होंने अपने समीप उनको बिठा लिया। जब उस सेठ ने ब्राह्मण को राजा के समीप बैठा देखा तो बहुत परेशान हुआ। कुछ आगे चलकर राजा ने ब्राह्मण से कहा, ''अब आप उतर जाइए, आपके भाग्य का होगा तो मिल जाएगा। मेरी भूमिका खत्म हो गई।'' दूसरे दिन वह सेठ आया और एक हजार रुपये जो उस सेठ के ऊपर ब्राह्मण के थे, उसने वे हजार रुपये तो दिए ही, ऊपर से हजार रुपये और भी दिए। क्यों दिए क्योंकि ब्राह्मण राजा के समीप था और राजा उन्हें 'गुरु' संबोधित कर रहा था।

समीप बैठकर देखें

जिस भगवान को हम अपना पिता कहते हैं, वह सर्वशक्तिमान है। उसके समीप जब हम बैठेंगे तो हम सा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विश्व के मालिक हो जाएँगे। भगवान ने हमें जो मानव शरीर रूप में जन्म दिया है तो न मालूम क्या-क्या तमन्नाएँ उसने रखी होंगी। भगवान के हाथ नहीं हैं, भगवान के पाँव नहीं हैं, भगवान की आँखें नहीं हैं। भगवान ने मनुष्य को शरीर दिया है और कहा है कि बेटे, तू इस दुनिया के संग्राम में जा और मेरे आँख नहीं हैं, तेरे आँख हैं। मैं कुछ कर नहीं सकता हूँ, तू कर सकता है। शक्ति मैं दूँगा तुझे, तू मेरा काम कर। लेकिन जब वह नाउम्मीद होता है तो पछताता है और व्यक्ति के हाथ तो कुछ लगता ही नहीं है।

बेटे, मैं कह रही थी कि भगवान की भक्ति के लिए— कि भगवान में भक्त अपने को मिला लेता है तो वह भगवान का ही स्वरूप हो जाता है। यही समर्पण है। जब तक समर्पण नहीं किया जाएगा, उसके हाथ कुछ लगने वाला नहीं है। जैसे पत्नी समर्पण कर देती है और पति के संपूर्ण वैभव की अधिकारिणी बन जाती है। जिस दिन से आती है अपने पति के घर, अपना सारा-का-सारा पिछला जीवन भूलती हुई चली जाती है। कल जो लड़की सूट-बूट पहने फिरती थी, बाल कटाए फिरती थी, कहना नहीं मानती थी, शादी के बाद दूसरे ही दिन से उसकी कायापलट हो गई। कैसे हो गई? यह हो गया उसके समर्पण से। पति के लिए वह समर्पित हो गई तो क्या हो गया, पति की जो भी संपत्ति थी, उसकी वह स्वामिनी हो गई। डॉक्टर की पत्नी डॉक्टरनी हो जाती है। कहिए, एम० बी० बी० एस० किया है क्या? नहीं एम० बी० बी० एस० तो नहीं किया है। तो फिर आप डॉक्टरनी कैसे हो गईं? हम डॉक्टर की पत्नी हैं, इसलिए डॉक्टरनी हो गईं। सेठ जी की पत्नी हैं, इसलिए सेठानी हो गईं और पंडित जी की पत्नी हैं, इसलिए पंडितानी हो गईं। कहिए, आपने ज्योतिष पढ़ी है क्या? ज्योतिष तो नहीं पढ़ी है, पर चूँकि हम पंडित की पत्नी हैं, इसलिए पंडितानी हैं।

समर्पण किया जाता है

हम उस परब्रह्म के पुत्र और पुत्रियाँ हैं। यदि हम उसके समीप हो जाएँ तो फिर हम वही हो जाएँगे, जैसा कि मैंने आपको अभी बताया है। पहले समर्पण किया जाता है, लिया नहीं जाता है। दो हाथों से दिया जाता है, हजार हाथों से मिलता है। गुरु जी ने कई बार उदाहरण दिया है कि भगवान ने हम से कहा, बेटे, कुछ माँगना है क्या? अपने बच्चों के लिए माँग ले, अपनी पत्नी के लिए माँग ले, तूने इतना तप किया है। वे बराबर इस बात को ठुकराते ही रहे। ठुकराना बड़ा शब्द होता है, लेकिन मुझे कहने दीजिए। उन्होंने कहा, भगवान मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे तो आपकी आज्ञा चाहिए। अपने गुरुदेव से भी उन्होंने कभी कुछ नहीं माँगा। उन्होंने कहा, गुरुदेव आपकी आज्ञा ही मेरे लिए सर्वोपरि है। आप माँगिए तो सही, आप बताइए तो सही, आपने मुझे सब कुछ दिया है। मेरे पास जो कुछ भी है, सब आपका है। मैं तो आपके लिए समर्पित हूँ।

उन्होंने कहा कि बेटे, तू मेरे लिए समर्पित है तो मैं बोल नहीं सकता, तेरे अंदर वाणी है, तेरे हाथ हैं, तेरी अक्ल है, तेरी आँखें हैं। मुझे चाहिए तेरी अक्ल और चाहिए तेरे हाथ और चाहिए तेरी आँखें। जिनके द्वारा मैं समाज में, राष्ट्र में और सारे विश्व में एक हलचल मनुष्य जाति के अंदर पैदा करना चाहता हूँ, यही मुझे चाहिए। उन्होंने कहा, गुरुदेव, 'तेरा तुझको सौंपता क्या लागत है मोर।' मुझे क्या आपत्ति है, गुरुदेव, सब कुछ आपका ही है। आपका ही है तो आप नहीं समझते क्या? मैं तो कहूँगी उनका लाखों गुना, करोड़ों गुना अनुदान बरसता रहा और अभी भी बरसता है। पत्नी के लिए माँगा होता, बच्चों के लिए माँगा होता, अपने लिए माँगा होता तो एक सीमित दायरा होता। सीमित होते तो जो आज इतना विशाल से विशालता की ओर बढ़े, वह विशालता नहीं होती।

जब मनु भगवान गंगा जी नहाने गए तो गंगा जी में एक मछली मिली। उन्होंने उस मछली को हाथ पर रख लिया और उसे दुलारने लगे। दुलारने लगे तो उसने कहा, भगवन्, मैं इस दायरे में नहीं रहूँगी, मुझको फैलने दीजिए। उन्होंने कहा, बेटी, तू मुझको बहुत प्यारी लगती है, तू चल कमंडल में बैठ जा। कमंडल में डाल दी मछली। मछली ने कहा, गुरुदेव, मेरा दम घुटता है, मैं इसमें नहीं रह सकती, तो उसको तालाब में डाल दिया। तालाब में भी उसने यही कहा, गुरुदेव, मैं नहीं रह सकती तो उन्होंने तालाब में से समुद्र में डाल दिया। मत्स्यावतार रूप होने के कारण समुद्र में वह बहुत विशाल हो गई। विशालता— भक्त की विशालता बढ़ती जाती है और उसका हृदय, हृदय एक सरोवर की तरह से, एक समुद्र की तरह से अथाह हो जाता है। पर्वत जैसा वह ऊँचा हो जाता है और समुद्र जैसी उसकी गहराई होती है और गंगा जैसी निर्मलता-स्वच्छता-पवित्रता होती है, उदारता होती है भक्त के अंदर।

बेटे, गाय की तरह से भगवान कहता है कि बच्चो आओ, मेरे बेटे आओ, मेरी बेटियो आओ, मेरे थन में अथाह दूध है, इसको पियो ताकि तुम बलवान हो जाओ। उपासनारूपी दूध को पियो, लेकिन वह अभागा बछड़ा ठुकराता चला जाता है और गाय रँभाती रहती है। गाय का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जो दूध है, वह इधर-उधर फैल जाता है और बछड़ा भूखा रह जाता है। बछड़ा माने है आत्मा-जीवात्मा और गाय, वह है हमारा भगवान। भगवान चिल्लाता रहता है और हमारे कानों में सुनाई नहीं पड़ता। हम हैं निर्जीव, हम हैं आँखों से अंधे और कानों से बहरे और जीभ से गूँगे। वे अंधे, गूँगे, अपंग हैं, जो कहते हैं कि रास्ता दिखाई ही नहीं पड़ता। वह रास्ता है हमारी उपासना।

उपासना का मर्म

अभी मैंने कहा था कि उपासना माने है भगवान की समीपता। भगवान की समीपता के लिए गाय और बछड़े का उदाहरण मैं अभी आपको सुना रही थी। दूसरा उदाहरण है पतंग और डोरी का। आप अपनी बागडोर को जरा उस भगवान के हाथों में सौंपकर तो देखिए। फिर देखिए कि पतंग कहाँ तक जाती है। पतंग का कोई वजूद नहीं है। पतंग में कोई शक्ति नहीं है। शक्ति है उस उड़ाने वाले की, उस चलाने वाले की। शक्ति पतंग की नहीं होती। शक्ति कठपुतली की नहीं है, उसके नाच की नहीं है, वह उस नचाने वाले की है, पर पहले कठपुतली अपना समर्पण तो करे। किसी के हाथ में अपने को सौंपे तो, फिर देखिए कमाल। क्या-क्या नाच नचाता है। कौन? वह जिसके हाथ में डोरी सौंपी गई है। वह तरह-तरह के नाच नचाता है। कभी राजा बना देता है, कभी रानी बना देता है, कभी क्या बना देता है, कभी क्या बना देता है। कौन बना देता है? जिसके हाथ में डोरी बँधी है। अपने जीवन की डोरी सौंपिए, उस भगवान के हाथों में और फिर पाइएगा अनेक गुना अनुदान।

बेटे, भगवान संकीर्ण नहीं है। मनुष्य संकीर्ण है, उसकी संकीर्णता नहीं जाती। भगवान का नाम ही उदारता है। वह उदारता बरतता है और अपने अनुदान की भक्त के ऊपर वर्षा करने लगता है। मीरा ने कहा था कि भगवान से शादी करूँगी, लेकिन यदि वह कल को धोखा दे जाए और कह दे कि हम तो तलाक देते हैं। अच्छा तो यह तलाक देगा। तब उन्होंने कहा कि मैं भगवान को नौकर रखूँगी। अरे नौकर भी दगा दे जाएगा तो फिर मैं क्या करूँगी? तब उसने कहा कि अच्छा अब उसे मैं खरीदकर लाती हूँ। मीरा ने भगवान को खरीद लिया। भगवान को क्या खरीदा जा सकता है? हाँ, भगवान को खरीदा जा सकता है, यदि भक्त में वे भावनाएँ हों, वे निष्ठाएँ हों और वह श्रद्धा का बीज हो तो मैं कहूँगी कि भगवान को खरीदा जा सकता है। गुरुजी ने अपने गुरुजी को खरीद लिया, भगवान को खरीद लिया। वह पायलट के तरीके से चलता है और बॉडीगार्ड के तरीके से उनके दायें और बायें चलता है। खरीद लिया न।

गिरधर लीनो मोल

भगवान को किस तरीके से खरीदा जा सकता है? उन्होंने मोल ले लिया, किसने? मीरा ने और द्रौपदी ने। जब आर्त्तनाद से भगवान को पुकारा तो भगवान दौड़ते हुए चले आए और भगवान पर जितना था, वे देते चले गए, देते चले गए और दु:शासन हारता ही गया। जिस समय जल के भीतर गज और ग्राह की लड़ाई हो रही थी तो जब 'जौ भर सूँड़ रही जल ऊपर तब हरि नाम पुकारा।' उसने हृदय से भगवान को पुकारा और भगवान गजराज के लिए दौड़ते हुए आ गए। उन्होंने सवारी की परवाह नहीं की, अपने गरुड़ को छोड़ करके आए। उन्होंने कहा कि मेरे भक्त के ऊपर आपत्ति आई है और मैं यहाँ सिंहासन पर बैठा हूँ। वे दौड़ते हुए चले आए गज की सहायता के लिए।

बेटे, विभीषण और सुग्रीव की कहानी मालूम है न आपको। जब वे भगवान की समीपता में आए और भगवान के सहयोगी, भगवान के मित्र बन गए। विभीषण को लंका का राज्य मिल गया। ऐसा हो सकता था क्या? जब रावण ने भगा दिया था तो उसके लिए संभव था क्या? संभव नहीं था, लेकिन भगवान की समीपता थी न, भगवान का वह काम कर रहा था न, भगवान का स्मरण कर रहा था न, तो भगवान ने कहा यही राजा बनेगा। सुग्रीव वानर था, लेकिन उसने भगवान की कितनी सहायता की। भगवान ने उसको राजा बनाया। किसको? सुग्रीव को।

जीतेंगे पांडव ही

अर्जुन का रथ भगवान कृष्ण ने स्वयं हाँका था। उसकी बागडोर कृष्ण ने सँभाली थी। अर्जुन जब हिम्मत हार रहा था तो भगवान कृष्ण ने कहा कि अर्जुन तू कायर मत बन, नपुंसक मत बन, तू उठ खड़ा हो कौरवों से लड़ाई के लिए। कौरव अर्थात जो दुर्गुण हमारे अंदर विराजमान रहते हैं और जो कौरवों के समान हैं। युद्ध हो रहा है। पांडव और कौरव आपस में लड़ाई कर रहे हैं हमारे अंदर। कौन जीतेगा? जीतेंगे पांडव, लेकिन पांडव में वह हिम्मत हो तो सही। हिम्मत होनी चाहिए और करनी चाहिए। किनको? भक्त को। कौरव कौन हैं? हमारे अंदर जो कषाय-कल्मष बैठे हैं, आलस्य और प्रमाद बैठे हुए हैं। जो हमको आगे नहीं बढ़ने देते हैं।

बेटे, हमारी श्रद्धा न मालूम कहाँ विलीन हो गई है। हमें फिर से उसी श्रद्धा को उभारना है। जैसे प्रह्लाद और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ध्रुव ने अपने माँ बाप को छोड़ दिया था और उस भगवान की गोदी को याद किया था, जिसने कि हमको जन्म दिया है। जिसकी कृपा से हम पृथ्वी पर आए हैं, वही हमारी गोदी है, वही हमारा पिता है। हम उसकी गोदी में ही बैठेंगे, उसकी गोदी में बैठने से उनको क्या फायदा हुआ? भगवान की गोदी में बैठे तो आज तक उनका नाम चला आ रहा है। कहते हैं ध्रुवतारा आकाश में चमकता है। ध्रुवतारे के रूप में ध्रुव का नाम विद्यमान है अभी तक और रहेगा लाखों वर्ष तक, करोड़ों वर्ष तक, क्योंकि वह परब्रह्म परमात्मा की गोदी में जाकर बैठ गया। उसने साधारण पिता की गोदी को ठुकरा दिया और असली पिता की गोदी में वह बैठा। उसका मन पवित्र था, *'कबिरा मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर। पीछे-पीछे हरि फिरत कहत कबीर-कबीर॥'*

जित देखूँ तित लाल

भगवान स्मरण करता है भक्त का। भगवान का स्मरण भक्त नहीं करता, पर कब करता है? जब वह भगवान का स्वरूप हो जाता है, *'लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल। लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल॥'* जब लाली को देखने गए तो स्वयं भी लाल हो गए। क्यों न हो जाएँगे हम उपासनारूपी लालिमा से लाल। उस भगवान की गोदी में जब हम बैठ जाएँगे और भगवान से जब हम लिपट जाएँगे तो हम क्यों न वैसे हो जाएँगे! मनुष्य अपनी संकीर्णता को छोड़ दे और भगवान की शरण में चला जाए तो फिर वैसा ही हो जाएगा, जैसा कि अभी मैंने कबीर के दोहे से बताया।

नारद और वाल्मीकि का यही हुआ था। नारद जी को मारने के लिए वाल्मीकि आए। वाल्मीकि ने कहा कि मैं तो आज मारूँगा ही, यह मेरा काम है। नारद जी ने कहा कि मारोगे तो सही, लेकिन एक बात अपने घर से पूछ करके आओ और हमको बताओ। क्या आपके इस पाप कार्य में आपके घर वाले भागीदार हैं क्या? घर में पूछने गए, पत्नी से पूछा, बेटे से पूछा, माँ से पूछा। सबका उत्तर एक ही था कि हमको तो उदरपोषण के लिए चाहिए, उदरपूर्ति के लिए चाहिए और हमें तो संपत्ति चाहिए। हमको क्या मतलब है कि आप कहाँ से लाते हैं। नैतिक कार्य से लाते हैं या अनैतिक कार्य से कमाते हैं। हमको सोचने-विचारने की कोई जरूरत नहीं है कि हम आपके इस कार्य में सहयोग दें अथवा न दें। हम क्यों देंगे? आपका फर्ज और कर्त्तव्य है हमारे लिए, लाइए। उन्होंने कहा कि मैं नरक में जाऊँगा तो आप लोग चलेंगे क्या? मैं सजा भुगतूँगा तो आप मेरे साथ सजा भुगतेंगे क्या? घर वालों ने कहा कि हम नहीं भुगतेंगे आपके साथ, आप ही जाइए। हमको तो चाहिए आपसे पैसा। जो आपका फर्ज और कर्त्तव्य कहता है, उसे आप पूरा करते रहें।

वाल्मीकि पहुँचे और नारद जी के चरणों में गिर पड़े और कहा, नारद आप तो भगवान के सच्चे भक्त हैं। आप दर-दर अलख जगाते फिरते हैं और मैं एक नरक का कीड़ा, नरक में ही रह जाऊँगा क्या? उन्होंने कहा, बस अब नहीं रहेगा। तूने अपने मन की मलीनता को निकाल दिया। तू धुल गया, तेरी जीवात्मा धुल गई, अब तक जो गर्त्त में समाई हुई थी। हीरा जब मिट्टी में पड़ा रहता है तो चमकता नहीं है, वह दब जाता है, पर जब उस हीरे को मिट्टी में से निकाल देते हैं तो हीरा चमक जाता है। उसका वास्तविक स्वरूप सामने आ जाता है। भक्त का स्वरूप उस दिन सामने आता है, जब वह अपनी अहंता को मिटा देता है। अहं को गला देता है और भगवान को समर्पण कर देता है। तब उसका सही स्वरूप सामने आता है।

अनुदान स्वतः मिलेंगे

बेटे, उपासना जितनी हम अपनी जीवात्मा की मलीनता को दूर करने के लिए करेंगे, उतनी ही हमारी जीवात्मा की सफाई होगी और उसी अनुपात से हमें अनुदान मिलता चलेगा। जैसे कि भेड़ के ऊपर ऊन जमी रहती है, उसे जितना काटते हैं, ऊन उतनी ही मिलती चली जाती है। इसी प्रकार भगवान का जो अनुदान है, वह स्वतः ही हमको मिलता चला जाएगा, माँगना नहीं पड़ेगा। मनुष्य भिखारी नहीं है, वह तो भगवान का बेटा है। वह तो स्वयं ही अधिकारी है भगवान की उस दौलत का। कौन-सी दौलत का? जो संसाररूपी दौलत उसने हमारे हाथ में सौंपी है। भगवान ने सब कुछ सौंप दिया है। लोग कहते हैं, 'सब सौंप दिया भगवान तुम्हारे हाथों में।' मैं कहूँगी कि भगवान ने सब सौंप दिया हमारे हाथों में। हम उसे उजाड़ें या उसको सँभाल करके रखें। सँभाल करके रखेंगे तो वह हमारी धरोहर है। हम उसके इस बगीचे को और भी खूबसूरत बनाएँगे और उसमें तरह-तरह के पौधे लगाएँगे, फूल लगाएँगे। भगवान ने हमको यह संसाररूपी बगीचा और मानवरूपी फुलवारी सौंपी है, उसकी सेवा के लिए हम उसी तरीके से प्रयत्नशील रहेंगे, जिस तरीके से रामकृष्ण परमहंस थे।

परमहंस का भगवान

रामकृष्ण परमहंस के पास एक पादरी गए। पादरी ने कहा कि कहीं भगवान है क्या, हमको दिखाओगे क्या?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उन्होंने कहा चलिए, अभी मैं भगवान के समीप ही जा रहा हूँ। मेरा भगवान से मिलने का समय हो गया है। पादरी ने आश्चर्य से कहा, भगवान से मिलने का समय हो गया है, आपका भगवान कहाँ है, कहीं दिखाई तो नहीं दे रहा है? क्या आपको दिखाई देता है? उन्होंने कहा कि तुम अभागे हो और मैं भाग्यशाली हूँ। मुझे भगवान हर समय दिखाई देता है। मेरी भुजाओं में दिखाई देता है, मेरी अक्ल में दिखाई देता है, मेरे पाँव में दिखाई देता है और भगवान मेरे रग-रग में समाया हुआ है। भगवान का तेज और ओजस् मेरे अंत:करण में इस तरीके से झिलमिलाता रहता है, जैसे रोशनी, जैसे बल्ब चमकता है। सूरज और चंद्रमा चमकते रहते हैं। इसी तरीके से मेरे हृदय में भगवान की रोशनी हर समय समाई रहती है। चलो मैं भगवान को दिखा करके लाता हूँ। वे एक कोढ़ी के पास गए, उन्होंने उसका मवाद साफ किया, मरहम-पट्टी की। उसको साफ-सुथरा किया और उसे खिलाया-पिलाया। इसके बाद रामकृष्ण परमहंस ने स्वयं अन्न ग्रहण किया। उन्होंने कहा कि यही है मेरा भगवान, यही मेरी उपासना है। पादरी ने कहा, मैं धन्य हो गया, आज मैंने भगवान को आपके ही रूप में पा लिया। अभी तक मैं अंधकार में था।

सच्ची उपासना

बेटे, अंधकार को मिटाइए और सच्ची उपासना कीजिए। हम नहीं जानते कि रामकृष्ण परमहंस ने कितनी उपासना की थी और हनुमान ने कितनी माला जपी थी, लेकिन जब तक रामायण रहेगी, भगवान राम का नाम रहेगा, तब तक हनुमान का नाम भी रहेगा, उनके कलेजे से चिपका रहेगा। साधारण वानर होते हुए भी हनुमान ने भगवान राम का काम किया था और उनने भाइयों से ज्यादा बेटे समान दरजा ले लिया था। कैसे ले लिया? अपनी अहंता को मिटा करके ले लिया था। जिस उपासना के बारे में अभी मैं कह रही थी, सच्चे अर्थों में जो उपासना की जाती है, वह इसी तरीके से की जाती है। उपासना का और ध्यान का सही स्वरूप आप समझ गए होंगे। आप सभी इसी ओर कदम बढ़ाएँगे, ऐसी मुझे आशा है।

॥ ॐ शांति: ॥

राजा परीक्षित को भागवत सुनाते हुए जब शुकदेव जी को छह दिन बीत गए और सर्प के काटने से मृत्यु होने का एक दिन रह गया, तब भी राजा का शोक और मृत्युभय दूर न हुआ। कातर भाव से अपने मरने की घड़ी निकट आती देखकर वह क्षुब्ध हो रहा था।

शुकदेव जी ने परीक्षित को एक कथा सुनाई, "राजन्, बहुत समय पहले की बात है। एक राजा किसी जंगल में शिकार खेलने गया। संयोगवश वह रास्ता भूलकर बड़े घने जंगल में जा निकला, रात्रि हो गई, वर्षा पड़ने लगी। सिंह-व्याघ्र बोलने लगे। राजा बहुत डरा और किसी प्रकार रात्रि बिताने के लिए विश्राम का स्थान ढूँढ़ने लगा। कुछ दूर पर उसे दीपक दिखाई दिया। वहाँ पहुँचकर उसने एक गंदे बीमार बहेलिये की झोंपड़ी देखी। वह चल-फिर नहीं सकता था, इसलिए झोंपड़ी में ही एक ओर उसने मल-मूत्र का स्थान बना रखा था। अपने खाने-पीने के लिए जानवरों का मांस उसने झोंपड़ी की छत पर लटका रखा था। झोंपड़ी गंदी, छोटी, अँधेरी और दुर्गंधयुक्त थी। पहले तो वह ठिठका, पर अन्य कोई आश्रय न देखकर बहेलिये से उसी में ठहर जाने की प्रार्थना करने लगा। बहेलिये ने उसे समझाया, 'राजन्, आप इस स्थान पर रह नहीं पाएँगे। पर एक दिन रह लेंगे तो इस गंध के आदी होकर छोड़ेंगे भी नहीं।' राजा बोले, 'यह तो आज भर की विवशता है। मैं सवेरे अवश्य चला जाऊँगा।' हुआ वही जो होना था। राजा ने सवेरे उस स्थान से जाने से मना कर दिया।"

यह कथा चल ही रही थी कि परीक्षित बोल पड़े, "वह कैसा मूर्ख राजा था!" शुकदेव बोले, "परीक्षित, वह मूर्ख तुम्हीं हो, जो मल-मूत्र की इस कोठरी को छोड़ने से डर रहे हो। अवधि पूरी हो जाने पर भी तुम झंझट फैला रहे हो।" परीक्षित का ज्ञान जाग पड़ा और वे बंधन-मुक्ति के लिए सहर्ष तैयार हो गए।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

मानव में देवत्व ऐसे उभरेगा

(कल्प साधना सत्र)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो! कल आपको जीवनमुक्ति के बारे में बता रहा था कि आप जीवनमुक्त होकर जिएँ। बंधनों से छूट जाएँ। बच्चा माँ के पेट में बँधा रहता है, बाहर आ जाता है तो कितना खुश! कैदी जेलखाने से छूट जाता है तो कितना खुश हो जाता है और पक्षी पिंजरे में से छूट जाता है, तब कितना खुश होता है! मुक्ति का आनंद ऋषियों ने बताया है कि यह आदमी की जिंदगी का सबसे बड़ा आनंद है। व्यक्ति यदि मुक्ति का स्वच्छंद जीवन जी सकता हो, स्वाधीनता का अनुभव कर सकता हो तो क्या कहने का! पूर्व में मैंने आपको लोभ-मोह और अहंकार के बारे में ये कहा था कि आपके सारे-के-सारे दुश्मन ये ही हैं, जिन को आपने छाती से लगा रखा है, जिनको मित्र बना रखा है, जिनके सहारे आपने जिंदगी गुजारने का फैसला कर रखा है। आप इन तीनों का तिरस्कार कीजिए, इनके चंगुल से छूट जाइए।

मित्रो! आज आपको एक नई बात बताते हैं कि आपको स्वर्ग का जीवन जीना चाहिए। आप निश्चित रूप से स्वर्ग का जीवन जी सकते हैं। स्वर्ग का जीवन जीने में आपको कोई दिक्कत नहीं है। मित्रो! स्वर्ग और नरक आपका बनाया हुआ है। स्वर्ग आप बना सकते और बिगाड़ भी सकते हैं। आपके एक हाथ में स्वर्ग है और एक हाथ में नरक है। आप चाहें तो स्वर्ग का द्वार खोल सकते हैं, सामने देख सकते हैं और मजा उड़ा सकते हैं। अगर आपकी इच्छा है कि नरक का जीवन जिएँगे तो आप इच्छा से या अनिच्छा से नरक का इस्तेमाल कीजिए और नरक में फँस जाइए। यह आपकी मरजी की बात है। भगवान ने हर आदमी को स्वाधीन बनाया है और इस योग्य बनाया है कि वह स्वर्ग और नरक में से जिस किसी को वरण करना चाहे तो खुशी से कर सकता है।

स्वर्ग का जीवन कैसे?

मित्रो! क्या करना चाहिए? आपको एक काम करना पड़ेगा। क्या? इस दुनिया में सबसे बड़ी दिक्कत यह पड़ती है कि आदमी अपनी बहुत सारी इच्छाएँ लिए हुए बैठा रहता है। अगर उसकी इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं तब वह दुखी होता है। आदमी को अपनी जिंदगी में साठ फीसदी दुःख इस बात का है कि उसने तरह-तरह की कल्पनाएँ कर रखी हैं। तरह-तरह की कामनाएँ कर रखी हैं। इन कल्पनाओं और कामनाओं के पूरा न होने पर वह हैरान होता है, दुखी होता है। आदमी को शारीरिक दुःख तो कभी-कभी होते हैं, परंतु मानसिक दुःख बहुत हैं। खाने-पीने को नहीं मिले तो शारीरिक दुःख, हारी-बीमारी हो जाए तो शारीरिक दुःख—बस, और क्या दुःख है, बताइए? कोई दुःख नहीं है। खाने-पीने की कमी है क्या? कुछ कमी नहीं है। अगर आदमी भले आदमी के तरीके से रहे तो बीमारी भी नहीं आएँ। बीमारी आएगी तो वैसे कदाचित् ही कभी आएगी, जिसमें आदमी बेचैन हो जाता है। कोई बवासीर हो गया, कोई खाँसी-जुकाम हो गया—ये सब तो चलते रहते हैं। ये सब इतने बड़े दुःख नहीं हैं।

आदमी का एक ही बड़ा दुःख है कि उसने बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ, बड़े-बड़े मनोरथ और बड़ी-बड़ी भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ बना रखी हैं और वे पूरी नहीं हो पातीं। क्या इनका पूरा होना जरूरी है? बिलकुल जरूरी नहीं है, क्योंकि ये दुनिया, ये परिस्थितियाँ केवल आपके लिए थोड़े ही बनी हैं! आप अनुकूल परिस्थितियों से ही तो मनोकामना पूरी कर सकेंगे। दूसरे आदमी सहयोग देंगे, तभी तो बात बनेगी। वातावरण आपके अनुकूल होगा, तभी तो बात बनेगी। वातावरण आपके अनुकूल बने, यह कोई गारंटी नहीं है। परिस्थितियाँ आपके अनुकूल बन जाएँ, कोई गारंटी नहीं है। फिर आपकी मनोकामना पूरी हो जाए, कोई जरूरी है? मनोकामना पूरी नहीं हो पाती, इसलिए आदमी आमतौर से दुखी रहते हैं।

इच्छाएँ पीछे रखिए

मित्रो! तब क्या करना चाहिए? आप स्वर्ग-सा जीवन जीने के लिए मनोकामना को पीछे हटा लीजिए और यह मत सोचिए कि क्या परिणाम मिलेगा। आप अपने मन को एक केंद्र पर केंद्रित कर लीजिए और फिर आप यह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सोचिए कि हमारे फर्ज और कर्त्तव्य जो हैं, उन्हें हम पूरा करते हैं कि नहीं करते हैं। आप फर्ज और कर्त्तव्यों को गौर कीजिए कि इनका पालन किया कि नहीं किया। अपनी खुशी को आप इसी पर केंद्रित कर लीजिए। अगर हमने अपने कर्त्तव्यों का पालन किया तो खुश! अपने बच्चों को सुसंस्कारित करने के लिए प्रयत्न किया तो खुश! हमको अपने माँ-बाप के प्रति जो कर्त्तव्य पूरा करना चाहिए था, वह पूरा किया तो खुश। आप खुशी क्यों नहीं ले सकते? आप अपनी मुट्ठी में खुशी क्यों नहीं रखते, दूसरों के हाथ में क्यों बेच देते हैं? आपका बेटा यदि सुपात्र बनेगा और आपका आज्ञाकारी बनेगा, तब आप खुश होंगे। न हुआ तब? तब तो आपने अपनी खुशी दूसरों के हाथ में गिरवी रख दी न? आपकी बीबी हँसी-खुशी से रहेगी और आपकी आज्ञा का पालन करेगी, आपकी मरजी से चलेगी तो आप खुश! और नहीं चली तब? तब आपने बेच दी न अपनी खुशी! नाराजगी में फिर रहे हैं न तब? परिस्थितियों के गुलाम मत होइए। अपनी मन:स्थिति पर केंद्रित हो जाइए। केंद्रित हो करके सारे संसार भर में सिर्फ एक खुशी का अपना केंद्र बना लीजिए कि हमको अपने फर्ज और कर्त्तव्य पालन करने हैं।

मित्रो! फर्ज और कर्त्तव्य पालन करने का अगर आपका मन होगा, मरजी होगी, तब फिर क्या होगा? फिर आपको मजा आ जाएगा। और क्या होगा? बहुत कुछ हो जाएगा। फिर आपको अपने फर्ज से कोई रोक नहीं सकता। आप अपने मित्रों के प्रति कर्त्तव्य को निभाएँ। इसमें कोई रोकता है क्या? मित्र आपके प्रति बदला चुकाएँगे कि नहीं, यह बात सोचेंगे तो गड़बड़ हो जाएगी। आप यह उम्मीद मत कीजिए कि आपके मित्र बदला चुकाएँगे। आप यह उम्मीद मत कीजिए कि बच्चे हमारा कहना मानेंगे। आप यह उम्मीद मत कीजिए कि हमारी स्त्री हमारे आज्ञानुसार चलेगी। आप यह उम्मीद मत कीजिए कि जैसे हमने ख्वाब सँजो रखे हैं, उसी तरीके से हमारे सपने पूरे हो जाएँगे। न, ऐसा मत कीजिए।

सच्चा कर्मयोग

तब क्या करें? आप सब ओर से अपने आप को समेटकर जो बात आपके हाथ में है, जो आपकी मुट्ठी में है, उस पर केंद्रित हो जाइए। परिस्थितियाँ आपके हाथ में नहीं हैं। दूसरे लोग आपके साथ में क्या सलूक करेंगे, इसकी कोई गारंटी नहीं है। अपनी खुशी को आप उन बातों में मत मयस्सर कीजिए, नहीं तो दुखी रहेंगे आप। सुखी होने का एक ही तरीका है कि हम अपने कर्त्तव्य और फर्ज कहाँ तक पूरा कर सकते हैं। ये हमने पूरे किए हैं कि नहीं। बस, इतने से ही बात खत्म हो गई। इसे ही 'कर्मयोग' कहते हैं।

अगर आप कर्मयोगी बन जाएँ और ड्यूटी एवं फर्ज को पर्याप्त मान लें और यह देखें कि हमने अपनी ड्यूटी ठीक तरीके से अंजाम दी, इसलिए हमको खुश होने का हक है, हमको संतोष करने का हक है। अगर आप यह बात मान लें तो आप देखेंगे कि आपने खुशी का केंद्रबिंदु बदल दिया और तब आपको चौबीसों घंटे मुस्कराते रहने का, हँसते रहने और प्रसन्न रहने का पूरा अवसर मिल जाएगा। आपको कर्मयोगी होना ही चाहिए। आपको अच्छी-से-अच्छी उम्मीदें करनी चाहिए और बुरी-से-बुरी बात के लिए तैयार रहना चाहिए। यह कोई जरूरी नहीं है कि जो आप चाहते हैं, वही हो जाएगा। अगर उलटा हो गया तब? उलटा भी होता रहता है। आपको मालूम नहीं है पंजाबियों का, पाकिस्तान से जब पंजाब का बँटवारा हुआ था तो वहाँ बेचारे कितने मालदार आदमी थे। एक सप्ताह के भीतर ही परिस्थितियाँ उलट गई थीं। किसी का बच्चा मर गया, किसी का धन छिन गया, किसी का क्या हो गया! वे भागकर इधर आ गए। फिर ये परिस्थितियाँ आपके लिए नहीं आ सकतीं क्या? आपके लिए भी हो सकती हैं।

हर स्थिति के लिए रहें तैयार

इसलिए मित्रो! आप अच्छी-से-अच्छी उम्मीद कीजिए। अपने भविष्य के लिए सुनहले सपने देखिए कि हमको अच्छा भविष्य बनाना है। लेकिन साथ-साथ में आप इसके लिए भी तैयार रहिए कि ठीक इसके उलटा हो जाए, तब क्या होगा? तब हम उसके लिए भी तैयार हैं। आप अपनी लड़की की शादी अच्छे-से-अच्छे घर में कीजिए। अच्छा घर भी ढूँढ़िए और यह उम्मीद कीजिए कि आपकी लड़की का गृहस्थ-जीवन अब अच्छा व्यतीत होगा। लेकिन इसके लिए भी तैयार रहिए कि आपने जिस लड़की की शादी की है, लड़का नकारा निकल गया तब? चोर निकल गया तब? दुष्ट निकल गया तब? तब उसके लिए भी तैयार रहिए। लड़की को भी पहले से इस बात के लिए आगाह रखिए कि यह भी हो सकता है कि उस घर में तुम्हारा सम्मान न हो। तुम्हारी जिंदगी आसानी से कट जाए, ऐसे सपने भी दिखाइए, लेकिन यह तैयारी भी रखिए कि ऐसा भी हो सकता है कि उसी घर की परिस्थितियाँ ऐसी विकट हो जाएँ, ऐसे दकियानूस लोग

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हों, ऐसे चोर-चांडाल हों कि सब हैरान कर डालें। अत: इसके लिए भी तैयार रहिए। मुकाबले के लिए तैयार रहिए। उस स्थिति में क्या करेंगे, यह भी कल्पना कीजिए। कहने का अर्थ यह है कि भविष्य के बारे में न केवल सुनहले सपने देखिए, वरन् बुरी-से-बुरी बात के लिए तैयार भी रहिए। आप अगर यह सब मान लेते हैं तो मैं आपको कर्मयोगी कहूँगा। तब आपको जीवन में मजा आ जाएगा। आपकी खुशी का यह हुआ प्वाइंट नंबर एक।

मित्रो! खुशी का एक और दूसरा वाला प्वाइंट है, जिसको हम स्वर्ग कहते हैं। कर्मयोगी को मैं स्वर्ग में निवास करने वाला कहता हूँ। जिसको अपने फर्ज की बात याद रहती है, मैं उसे स्वर्ग का निवासी देवता कहता हूँ। देवता का एक और लक्षण है। क्या लक्षण है? देवता अकेले नहीं खाते। वे मिल-बाँटकर खाते हैं। अगर आपके पास कोई चीज है तो आप मिल-बाँटकर खाइए। ज्ञान आपके पास है तो उसका फायदा औरों को मिलने दीजिए। आपके पास पैसा है तो मिल-बाँटकर खाइए। आपके पास स्वास्थ्य है तो दूसरों को लाभ पहुँचाइए। हर एक को फायदा उठाने दीजिए। अपनी संपदा को मिल-बाँटकर खाइए। दूसरों की मुसीबतों को बँटा लीजिए। देवता यही काम करते हैं। देवता देखे हैं न आपने? देवता के अंदर यही गुण होता है। देवता को हम पुकारते हैं कि हे भगवान! हमारी सहायता कीजिए। गणेश जी! हमको बुद्धि दीजिए। लक्ष्मी जी! हमको पैसा दीजिए। उनका स्वभाव है कि वे देते रहते हैं।

देते रहने का क्या मतलब है? देते रहने का मतलब यह है कि अगर उनके पास कोई चीज है तो वे लोगों को बाँटते रहते हैं और लोगों की मुसीबतों में हिस्सा बँटाते रहते हैं। हमको बुखार आ गया, हम बीमार हैं। हे हनुमान जी! हमारे बुखार को दूर कर दीजिए। करते हैं कि नहीं करते, यह बात अलग है, पर आपकी मान्यता तो यही है न कि वे आपके दुखों में हिस्सा बँटाएँगे। आपकी मुसीबतों को दूर करेंगे। आपकी कठिनाइयों को दूर कर देंगे। अगर उनके पास ज्ञान है, विद्या है, बुद्धि है तो वे आपको देंगे। देवता इन्हीं दो वजहों से तो देवता हैं कि वे आपकी मुसीबतों में हिस्सा बँटाते हैं और दूसरा उनके पास कोई वैभव है तो वे आसानी से बाँट देते हैं।

देवता बनिए

मित्रो! उस आदमी का नाम देवता है, जो अपनी सुविधाओं और संपदाओं को मिल-बाँटकर खाता है। मिल-बाँटकर खाने का मजा देखा है आपने? इक्कड़....., जो अकेला ही खाता रहता है, पाप खाता रहता है। अकेला ही संचय करता रहता है, वह आदमी पाप संचय करता रहता है। जो अकेले की खुशी चाहता है, वह आदमी पाप संचय करता है। इसीलिए हमारे यहाँ 'परिवार' की, 'लार्जर फैमिली' की प्रणाली है, जिसमें सब मिल-बाँटकर खाएँगे। मिल-जुलकर रहेंगे, हिल-मिलकर खाएँगे। कमाने वाला स्वयं थोड़े ही खाता है। सब मिल-बाँटकर खाते हैं। कोई बच्चा है, कोई बीमार है, कोई बुड्ढा है, किंतु सब हिल-मिलकर रहते और मिल-बाँटकर खाते हैं। यह पारिवारिक वृत्ति है, जिसमें 'वसुधैव कुटुंबकम्' की मान्यता जुड़ी हुई है।

'वसुधैव कुटुंबकम्' की मान्यता क्या है? 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की है। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' क्या है? एक ही है—आप दूसरों की मुसीबतों में हिस्सेदार हो जाइए और अपनी सुविधाओं को बाँट दीजिए—हो गया 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और हो गया 'वसुधैव कुटुंबकम्।' सारे सिद्धांतों का निर्वाह इसी तरीके से होता है। इसलिए आपकी कार्यपद्धति और आपके चिंतन में ये बातें जुड़ी रहनी चाहिए कि हम किस तरीके से मिल-बाँटकर खाएँगे और दूसरों की मुसीबतों में किस तरीके से हाथ बँटाएँगे। इसीलिए आपको अपना संकीर्ण 'स्व'—जो अभी आपने 'कूपमंडूक' के तरीके से सीमित कर रखा है, फिर आप उसको विशाल बना देंगे। आप सबके हो जाएँगे और सब आपके हो जाएँगे। तब आप देवता हो जाएँगे और आपको स्वर्ग में रहना आ जाएगा।

साथियो! अगर आप यह स्वर्ग नहीं खरीद सकते और आपने सीमा-बंधन बना रखा है—आप अपना ही खाना, अपना ही पहनना, अपना ही पैसा, अपना ही बेटा, अपना ही यश, अपना ही नाम चाहते रहेंगे तो आप बहुत छोटे आदमी, जलील आदमी रहेंगे और आपको, नरक में रहने वाले को जो यातनाएँ भुगतनी पड़ती हैं, मानसिक दृष्टि से वे सारी यातनाएँ भुगतनी पड़ेंगी। ठीक है कि शारीरिक दृष्टि से यह भी हो सकता है कि आप कुछ खाने-पीने का सामान इकट्ठा कर लें, कुछ पैसा इकट्ठा कर लें, लेकिन आप दुखी ही रहेंगे।

खिलाड़ी की जिंदगी

क्या करना चाहिए? तब आपको एक और काम करना चाहिए। कौन सा? आपको खिलाड़ी की जिंदगी जीनी चाहिए। आप खिलाड़ी की जिंदगी जिएँ। खिलाड़ी हारते भी रहते हैं, जीतते भी रहते हैं। वे टीम बनाकर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

खेलते हैं। हार गए तो क्या, जीत गए तो क्या! जिस तरह लोग ताश-पत्ता खेलते रहते हैं, बादशाह कट गया, बेगम कट गई, गुलाम कट गया—सब कट गए, परंतु खेलने वाले के चेहरे पर कोई शिकन ही नहीं। उसी तरह आप अपने चेहरे पर शिकन मत आने दें। चिंताओं की और मुसीबतों की कल्पनाएँ करके, संदेह करके, भविष्य की आशंकाएँ करके हर समय आपका दिल धड़कता रहता है। आप निश्चिंत रहिए, निर्द्वंद्व रहिए, हँसते रहिए, मुस्कराते रहिए। आप हँसते और मुस्कराते रहेंगे और निश्चिंत रहेंगे, तब आप एक खिलाड़ी के तरीके से जिंदगी जिएँगे, तब फिर मैं आपको देवता कहूँगा।

मित्रो! यह संसार एक नाटक है, आप इसके एक पात्र हैं। दुनिया में आपको एक नाटक अदा करना है। आप नाटक के तरीके से, एक नट के तरीके से तमाशा कीजिए। लोगों को मनोरंजन करने दीजिए, लेकिन आप निश्चिंत होकर राजा जनक के तरीके से अपनी मन:स्थिति को बनाए रखिए। फिर मैं आपको स्वर्ग में निवास करने वाला कहूँगा। भूत का चिंतन मत करिए। पिछली जो घटनाएँ हो गईं, तो ठीक है, आपने कुछ अच्छे काम कर लिए, पर बार-बार उनकी प्रशंसा करने की जरूरत क्या है? अगर किसी ने आपके साथ कोई बुराई कर ली या किसी ने दु:ख भुगत लिए तो बार-बार कहने की जरूरत क्या है? भूत सो भूत, गया सो गया। आप भूत पर विचार मत कीजिए। भूत से आप अनुभव तो इकट्ठा कर सकते हैं, लेकिन चिंता भविष्य की कीजिए कि हमको करना क्या है? अगर यह सोचते रहेंगे तो मजा आ जाएगा।

जवान आदमी बनिए

बुड्ढे आदमी भूतकाल का वर्णन करते हैं। बच्चे भविष्य की बात सोचते हैं, लेकिन जवान आदमी वर्तमान की बात सोचते रहते हैं। आपको वर्तमान याद करना चाहिए कि आज का दिन आप किस तरीके से बेहतरीन बना सकते हैं। अगर यह विचार आपके जी में आ जाए तो मैं आपसे यह कहूँगा कि आप स्वर्ग में निवास करने वाले आदमी हैं। भविष्य की क्यों अनावश्यक कल्पनाएँ आप करेंगे? योजनाएँ बना लीजिए, इसमें कोई हर्ज नहीं, लेकिन 'महत्त्वाकांक्षा' बात अलग है, योजना की बात अलग है। आपको एम० ए० करना है तो आप स्कीम बनाइए। नहीं साहब! एम० ए० नहीं हुए तो मर जाएँगे, नाक कट जाएगी, बात बिगड़ जाएगी। क्या बात बिगड़ जाएगी? दुनिया में ऐसे भी हैं, जो ज्यादा पढ़े नहीं हैं। आप मैट्रिक पास रहेंगे तो क्या आफत आ जाएगी? नहीं साहब! हमारा ये हो जाएगा, हमारा वह हो जाएगा। आप अगर ऐसे ही विचार करते रहेंगे तो मैं आपको नरकगामी कहूँगा।

मित्रो! स्वर्ग में रहने वाले अपने वर्तमान का ध्यान करते हैं, भविष्य की तैयारी करते हैं। भूतकाल को भूल जाते हैं और खिलाड़ी की तरह जिंदगी जीते हैं। आप अपने जीवन के तौर-तरीके में ऐसा मौलिक परिवर्तन करके जाइए यहाँ से। और क्या काम करें? आप एक और काम कीजिए कि लोगों की कमियों को, बुराइयों को हटाने की बात सोचें। मित्रो! यह दुनिया बड़ी खराब है और बड़ी जलील है। इसमें अच्छाई भी है और भगवान का रूप भी है। यह तो मैं नहीं कहता कि इसमें भगवान का रूप नहीं है। पर इसमें कमियाँ कम हैं क्या? बुराइयाँ कम हैं क्या? एक-से-एक दुष्ट और एक-से-एक बेईमान दुनिया में भरे पड़े हैं। तो फिर क्या करें? दुष्टों के प्रति द्वेष? नहीं बेटे, द्वेष करके आप ही जल जाएँगे। तो फिर ईर्ष्या? ईर्ष्या से भी आप जल जाएँगे। प्रतिशोध? प्रतिशोध से भी आप जल जाएँगे। इससे आप सामने वाले का जितना नुकसान करेंगे, उससे ज्यादा अपना नुकसान कर लेंगे। एक तो दूसरे आदमी ने आपको नुकसान पहुँचाया—नुकसान नंबर एक और एक आपने फिर नई बीमारी और शुरू कर ली। डाह की, ईर्ष्या की, प्रतिशोध की, घृणा की—इन सारी चीजों को आप बनाए रखेंगे तो फिर आप कैसे जिएँगे, बताइए न? तब फिर आप बाहर से भी पिसेंगे और भीतर से भी पिसेंगे। तो फिर आप मरेंगे कि नहीं? आप ऐसा मत कीजिए।

आप क्या करें? बुराइयों को बरदाश्त करें? नहीं, यह तो मैं नहीं कहता कि आप बुराइयों को बरदाश्त करें। आप बुराइयों से संघर्ष कीजिए, लेकिन संघर्ष करने का दूसरा तरीका है। कौन सा? वह तरीका है, जो डॉक्टर अख्तियार करता है। किसके लिए? मरीज के लिए। मरीज के रोगों को मार डालने के लिए वह हरचंद कोशिश करता है कि रोग बचने न पाए, विषाणु बचने न पाए। रक्त का प्रदूषण बचने न पाए, किंतु रोगी को नुकसान न होने पाए। आप रोगी को नुकसान पहुँचाए बिना उसकी बुराइयों को दूर करने के लिए बराबर जद्दोजहद कीजिए। जब आप किसी व्यक्ति विशेष को हानि पहुँचाने की बात सोचते हैं तो वह द्वेष हो जाता है और जब आप उसके दोषों को, दुर्गुणों को, कमियों को हटाने की बात सोचते हैं तब? तब फिर कोई दिक्कत नहीं पड़ती। आप ऐसा कीजिए न! ऐसा करेंगे, तब आप देखेंगे कि आप स्वर्ग में रहने वाले देवताओं की बिरादरी में शामिल हो गए।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपने पर निर्भर हों

साथियो! आपको एक और काम करना चाहिए, आपको आत्मनिर्भर होना चाहिए। आप अपने ऊपर डिपेंड कीजिए—अपने ऊपर निर्भर रहिए। क्या करें? बाहर के आदमियों से मत उम्मीदें कीजिए, मत विश्वास कीजिए और मत अविश्वास कीजिए। आप यह मानकर चलिए कि यह भी आदमी है। आदमी सो आदमी, अतः अपने ऊपर निर्भर रहिए। आप यह मानकर चलिए कि उन्नति करेंगे तो हमीं करेंगे। किसी आदमी से आप यह आशा लगाए बैठे हैं कि वह आपकी सहायता करेगा तो वह क्यों आपकी सहायता करेगा? 'आस बिरानी जो करै, जीवत ही मर जाए।' यह देहात की कहावत है। यह ठीक है कि वक्त मिल जाएगा तो सहायता मिल भी सकती है और नहीं भी मिल सकती है, पर जो भी आप कदम उठाएँ, अपने पैरों को मजबूत करके उठाएँ। उम्मीद यह करें कि यह काम हमको करना है और हम ही करेंगे। अगर आपका यह आत्मविश्वास है, तब? तब फिर आपको आत्मनिर्भर व्यक्ति कहा जाएगा और आपको देवता कहा जाएगा।

देवता आत्मविश्वासी होते हैं और आत्मनिर्भर होते हैं। वे किसी पर डिपेंड नहीं करते। सूरज किसी पर डिपेंड नहीं करता कि हमको कोई अर्घ चढ़ाएगा कि नहीं चढ़ाएगा। हवा किसी पर डिपेंड नहीं करती, किसी की अपेक्षा नहीं करती। चंद्रमा किसी की अपेक्षा नहीं करता। जमीन किसी की अपेक्षा नहीं करती। आप भी किसी की अपेक्षा मत कीजिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि आप सहयोगी जीवन न जिएँ। परस्पर मिलना-जुलना न करें, पर आप अगर यह उम्मीद बनाए रहेंगे कि अमुक आदमी यह करेगा तो फिर बड़ी मुश्किल हो जाएगी। जैसे आप परिस्थिति के बारे में यह अनुमान लगाए थे कि परिस्थिति हमारे अनुकूल हो जाएगी और नहीं हुई, तब? तब आप झल्लाते हैं, रोते और खीजते हैं। इसी तरह अगर किसी व्यक्ति ने आपके साथ में एहसान न किया हो, तब? बदला न चुकाया हो, तब? सहायता न की, तब? तब फिर आप झल्लाएँगे कि नहीं झल्लाएँगे? मत झल्लाइए, कोशिश कीजिए, शायद दूसरों का सहयोग मिल जाए। जिस सीमा तक सहयोग मिल जाए, उस सीमा तक ठीक है और अगर नहीं मिल पाता तो न सही। अगर आप यह मानकर चलेंगे तो आपकी खीझ, जो कि मनुष्य के जीवन का बहुत बड़ा दुःख है, बहुत बड़ा संकट है, उस खीझ से आप बच जाएँगे। आप खीझ से बचिए। खीझ से बचने में क्या दिक्कत है? आप अपना दृष्टिकोण बदल दीजिए न। अगर दृष्टिकोण बदल देते हैं तो मैं आपको स्वर्ग का रहने वाला कहूँगा।

दृष्टिकोण बदलिए

विधेयात्मक चिंतन क्या है? यह वह चिंतन है, जिससे कि आदमी देवता बन जाते हैं। हम क्या बनाएँगे, क्या बिगाड़ेंगे, यह विचार ही मत कीजिए। अमुक को क्या नुकसान पहुँचाएँगे, यह मत सोचिए। जो खराब आदमी है, उसको हम अच्छा बनाएँगे, सज्जन बनाएँगे, यह क्यों नहीं सोचते आप? यह आदमी खराब है, इसको हम मार डालेंगे, इसकी हत्या कर डालेंगे, यह क्यों सोचते हैं, यह मत सोचिए। आप अपना दृष्टिकोण बदलिए। आपको जो कुछ भी मिला हुआ है, वह कम नहीं है, बहुत मिला हुआ है। आपके प्रसन्न होने के लिए, हँसने और हँसाने के लिए—यह क्या कम है कि आपको इनसानी जिंदगी मिली हुई है। आप देखिए न, दूसरे जानवरों को देखिए, कीड़े-मकोड़ों को देखिए, पशु-पक्षियों को देखिए—ये कैसी घिनौनी और कैसी गई-बीती और कैसी छोटी जिंदगी व्यतीत करते हैं। फिर आप क्यों ऐसी जिंदगी जिएँगे?

मित्रो! भगवान ने तो आपको राजकुमार बनाया है न। आपको बुद्धि दी है न। आपको वाणी दी है न। आपको हाथ-पाँव दिए हैं न। आपकी शादी हो गई है न। आप तो घर में रहते हैं न। आपकी तो जीविका है और पहली तारीख को तनखाह मिल जाती है। आप रोटी खा लेते हैं न। लेकिन दूसरे जानवरों को देखिए। उन बेचारों की न कोई तनखाह है, न कोई नौकरी है, न कोई कपड़ा है, न कोई बोलने का ढंग है। इन सबकी तुलना में आपको कितना अधिक मिला हुआ है। आप उस पर खुशी नहीं मना सकते? आप प्रसन्न नहीं हो सकते? आपके चेहरे पर मुस्कराहट नहीं आ सकती कि जो हमारी वर्तमान परिस्थितियाँ हैं, उनमें हमको प्रसन्न रहने का हक है। आप तो हमेशा अभावों को सोचते रहते हैं। अभावों को सोचने का अर्थ है—नरक। अभावों को ध्यान में नहीं रखना चाहिए। उनको दूर नहीं करना चाहिए, यह तो मैं नहीं कहता हूँ। आप अगर अपने को हमेशा अभावग्रस्त, दरिद्र और कंगाल मानकर बैठे रहेंगे तो आप दरिद्र और कंगाल ही रह जाएँगे। आप अपने आप को मत दरिद्र मानिए और मत कंगाल मानिए।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दीजिए, दीजिए

मित्रो! आप यह मानकर चलिए कि आप देवता हैं। अगर आप देवता हो गए तो आप देने में समर्थ हैं। आपके पास देने को बहुत है। आपके पास अपने गुजारे के लिए भी बहुत है और देने के लिए भी बहुत है। नहीं साहब! हमारे पास पैसा बहुत कम है। तो पैसा कौन माँग रहा है आपसे? पैसा देकर आप आदमी का क्या भला करेंगे? आप दूसरों को प्यार दीजिए। लोगों की आत्माएँ किस कदर प्यार के बिना तड़पती रहती हैं। आप दूसरों को सम्मान दीजिए न। देखिए, सम्मान की कितनी प्यासी है दुनिया। आप लोगों को प्रोत्साहन दीजिए न। देखिए, आपका प्रोत्साहन पाकर छोटे-छोटे आदमी क्या से क्या बन सकते हैं! देने के लिए कुछ कम है क्या? आप अपना पसीना दे दीजिए, अपनी मेहनत दे दीजिए। आप लोगों के लिए सहानुभूति दे दीजिए। देने के लिए आपके पास कुछ भी कम नहीं है।

साथियो! आपके पास अगर देने की मनोवृत्ति हो तो आप कुछ भी दे सकते हैं। रोटी है तो उसमें से भी रोटी काटकर दे सकते हैं। ठीक है, आप अगर चार रोटी खाते हैं तो तीन रोटी खाइए, एक रोटी गरीबों के लिए बचा दीजिए। उनका हिस्सा बाँटकर दे दीजिए, फिर देखिए, वह एक रोटी, जो आपने अपनी रोटी में से बचत कर ली थी, आपके लिए कितना देवत्व लेकर के आती है। कितनी खुशी लेकर के आती है और कितनी शांति लेकर के आती है! आप कटौती कर लीजिए। कटौती करके आप दूसरों को देने की तैयारी कर लीजिए, आपको और अधिक जरूर मिल जाएगा। एक दिन उपवास कर लीजिए और उपवास करने के बाद में जो उस दिन का अनाज बच गया, उस दिन की जो दाल बच गई, उसको आप किसी ऐसे दुखियारे के घर पहुँचा दीजिए, जिसकी उसको जरूरत है। फिर आप देखेंगे कि किस कदर से आपको शांति मिलती है और किस तरीके से आप प्रसन्नता के नजदीक चले जाते हैं! देवता के यही गुण हैं।

रसो वै सः

मित्रो! देवता उदार होते हैं, देवता विशालहृदय होते हैं। देवता संकीर्ण नहीं होते। देवताओं के मन में हर समय देने की इच्छा बनी रहती है कि किसके लिए क्या दे पाएँ। प्यार देना सिखाता है। सेवा उसी का नाम है। इसका नाम प्यार है। भगवान का नाम प्यार है। **रसो वै सः** भगवान का नाम रस है। भगवान का नाम प्यार है। प्यार, आप अपने भीतर पैदा कीजिए न। जिस दिन आप अपने भीतर प्यार पैदा करेंगे, उस दिन आपके मन में ऐसी उमंग और एक ऐसी हिलोर उत्पन्न होगी कि हमको कैसे दूसरों की सहायता करनी चाहिए? कैसे हम दूसरों की मदद करें? जब आप दूसरों की सहायता करने के लिए आमादा होंगे तो आपको अपने में से कटौती करनी पड़ेगी। तब फिर आपको साधु और ब्राह्मण का जीवन जीना पड़ेगा।

साधु और ब्राह्मण किसे कहते हैं? किफायतदार को साधु-ब्राह्मण कहते हैं। मितव्ययी को, अपरिग्रही को एवं सर्वसंतोषी को साधु-ब्राह्मण कहते हैं। आप ब्राह्मण बनिए, साधु बनिए। आप भूदेव बनिए, पृथ्वी के देवताओं में अपने नाम को लगा लीजिए। आप संत बनिए। संतों को भी भगवान कहते हैं, देवता कहते हैं। संत किसे कहते हैं? परोपकारी को कहते हैं, लोकहित में लगे हुए आदमियों को कहते हैं। समाज के लिए विसर्जित और समर्पित लोगों को कहते हैं। सत्प्रवृत्तियों में अपने आप को खपा देने वालों को संत कहते हैं। आप संत और ब्राह्मण के रूप में अथवा दोनों के संयुक्त जीवनयापन करने के रूप में अगर जिएँ तो मजा आ जाएगा।

यहाँ से देवता बनकर जाइए

मित्रो! आप कैसे देवता हो सकते हैं? इसके लिए आपको संघर्ष करना पड़ेगा। मछली उलटी दिशा में चलती है। आप भी मछली के तरीके से उलटी दिशा में चलिए। जमाने का बहाव किधर है, इस पर आप ध्यान मत दीजिए। आप संकल्प और निश्चय कीजिए कि हम सिर्फ आदर्शों की तरफ चलेंगे, ऊँचाइयों की ओर चलेंगे। आप मस्ती से रहिए और दूसरों को मस्ती से रहने दीजिए। आप खुशी से रहिए और दूसरों को खुशी से रहने दीजिए। आप जिएँ और दूसरों को जीने दीजिए। मिल-जुलकर रहिए, मिल-बाँटकर खाइए। हँसते रहिए और हँसाते रहिए। अपने फर्ज और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक रहिए। अगर आप इतना कर सकते हों तो आप देख लेना, आप देवता हो जाएँगे और देवत्व का सारे का सारा उदय आपके इसी जीवन में हो जाएगा। जैसी कि हम अपेक्षा करते हैं। आप इस शिविर में आए हैं, बहुत अच्छा, पर आप यहाँ से देवता बन करके जाइए। अब देवता बनना और राक्षस बनना बिलकुल आपके हाथ की बात है। आप चाहें तो हम आपको देवता बना सकते हैं और आप देवता बन सकते हैं। उम्मीद यही है कि आप ऐसा ही करेंगे। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांति ॥

❋

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

अभिभावक हैं तो उत्तरदायित्व भी निभाइए

(परिवार निर्माण सत्र सितंबर १९८० में शांतिकुंज में दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! संतान उत्पन्न करने के साथ साथ अभिभावकों के ऊपर उनके निर्माण की भी जिम्मेदारी स्वभावतः चली आती है। संतान अपने गुण, कर्म, स्वभाव से कैसी हो, शरीर से कैसी हो, यह इस बात पर निर्भर करता है कि जन्मदाता माता और पिता की मनःस्थिति कैसी है? माता अर्थात जमीन। जमीन जिस तरह की होगी, पौधों का उसी तरह से बढ़ना और फलना-फूलना संभव होगा। पिता अर्थात बीज। बीज जिस किस्म का होगा, उसी किस्म का पौधा पैदा होगा। जमीन में गेहूँ का बीज बोया जाएगा तो गेहूँ का पौधा पैदा होगा। मक्का बोई जाएगी तो मक्का पैदा होगी। फूल बोया जाएगा तो फूल पैदा होगा। संतान कैसी होगी और क्या होगी? इसका नमूना देखना हो तो पिता को देखना चाहिए कि पिता के गुण, कर्म और स्वभाव, उसका स्वास्थ्य और उसका जीवन लक्ष्य क्या है?

मित्रो! जमीन के ऊपर ही पौधों का विकास टिका हुआ है। यदि बीज अच्छा हो और जमीन खराब हो तो ऐसी जमीन में, जहाँ खाद न हो, पानी न हो तो फिर उस निकम्मी जमीन में अच्छा पौधा पैदा नहीं हो सकता। अच्छी संतान उत्पन्न करने के लिए माता- पिता को पहले से ही अपनी तैयारी करनी चाहिए। अच्छी संतान की जिनको इच्छा है, उनको मात्र यही विचार नहीं करना चाहिए कि बच्चों को हम पढ़ाएँगे कहाँ? बच्चों को हम पढ़ाएँगे क्या? बच्चों के लिए हम करेंगे क्या? वरन् यह भी सोचना चाहिए कि बच्चों को हम क्या और कैसे संस्कार देंगे? बच्चों को जो करना है, जैसा भी उनको बनना है, वह सारी की सारी तैयारियाँ बालक पेट में नौ महीने के भीतर पचास फीसदी पूरी कर लेता है। शेष पचास फीसदी तैयारी पाँच वर्ष की उम्र के भीतर हो जाती है। सबसे संवेदनशील अवस्था पाँच वर्ष के पहले तक समाप्त हो जाती है। माता के पेट में जिस दिन से बच्चा आता है, उसी दिन से सीखना शुरू कर देता है और पाँच वर्ष का होते होते जब तक उसको बोलना आता है, समझना आता है, उस वक्त तक उसके संस्कारों के पड़ने वाली बात पूरी हो जाती है। बाकी तो सारे जीवनभर स्कूल कॉलेज में जाकर और जहाँ कहीं भी जाता है, अनुभव, ज्ञान इकट्ठा करके वह अपना भौतिक ज्ञान इकट्ठा करता है।

मित्रो! स्वभाव का निर्माण, चरित्र का निर्माण, क्रियाओं का निर्माण उस समय होता है, जबकि व्यक्ति का बाह्य मन जाग्रत नहीं होता और अचेतन मन पूर्णतया जाग्रत होता है। अचेतन मन की जाग्रत अवस्था पेट में आने से लेकर पाँच वर्ष तक की है और चेतन मन? चेतन मन का विकास पाँच वर्ष से लेकर शुरू होता है और वह जीवन के अंतिम समय तक चला जाता है।

अचेतन मन को ढालिए

मनुष्य का गुण, कर्म और स्वभाव, उसका व्यक्तित्व और उसका लक्ष्य, ये सारे-के-सारे मनुष्य के अचेतन मन से संबंधित हैं और चेतन मन में व्यवहारकुशलता, शिक्षा, बाह्यज्ञान, कला-कौशल आदि बातें बाह्य मस्तिष्क से संबंधित हैं। मनुष्य का व्यक्तित्व उसके अचेतन मन से जुड़ा है। चेतन मन के साथ उसकी जानकारियों एवं क्रियाकलापों का ही संबंध है। अचेतन मन जिन दिनों विकसित हो रहा होता है, उस समय शिक्षण करने के लिए कोई और उपाय नहीं है। बच्चा स्वयं उसका शिक्षण नहीं कर सकता। उस समय माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वे अपने बालकों को जैसा भी बनाना हो, उसका अचेतन मन जैसा भी ढालना हो, उसका भविष्य जैसा भी बनाना हो, उसके अनुरूप स्वयं की अपने आप में तैयारी करना सीखें।

मित्रो! बच्चा पेट में आए, उससे पहले ही माता पिता को यह प्रयत्न करना चाहिए कि स्वयं देखें कि उनका स्वयं का स्वभाव कैसा है? उनके कर्म कैसे हैं? उनके गुण कैसे हैं? उनके विचार कैसे हैं? उनके भाव कैसे हैं? इन सब बातों की तैयारी बच्चे का निर्माण करने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से पहले ही करनी चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण को एक अच्छी संतान पैदा करनी थी। रुक्मिणी ने कहा कि हमको एक अच्छी संतान की जरूरत है तो उन्होंने कहा कि इसके लिए पहले अपने आपको तैयार करना चाहिए। कैसे तैयार करना चाहिए ? इसके लिए रुक्मणी और श्रीकृष्ण दोनों के दोनों ही उस स्थान पर हिमालय में चले गए जिसको आजकल बदरीनारायण कहते हैं। रुक्मणी और श्रीकृष्ण बेर के फल खाकर हिमालय के उस पर्वत पर घोर तपस्या करने लगे। उसके बाद जब वे लौटकर आए तो उन्होंने एक संतान पैदा की। उसका नाम था-प्रद्युम्न। मित्रो! प्रद्युम्न शक्ल से, सूरत से, गुण से, कर्म से, स्वभाव से ठीक उसी तरह का था, जैसे कि श्रीकृष्ण भगवान थे। कई बार तो पहचानने वालों को भ्रम हो जाता था कि इनमें से श्रीकृष्ण कौन है और प्रद्युम्न कौन है ? इसका कारण सिर्फ यह था कि उन लोगों ने बच्चा पैदा करने से पूर्व अपनी तैयारी की थी।

तैयारी माता-पिता की होनी चाहिए

बच्चे को किस तरीके से बनाया जाए और क्या किया जाए ? इसके लिए अपनी मनोभूमि और अपने क्रियाकलाप, अपने स्वभाव, अपने आचरण माता पिता को बच्चे के जन्म से पहले ही तैयार करने चाहिए, ताकि जिस रज और वीर्य के द्वारा बच्चा बनने वाला है, उसके पेट में आने से पहले उस रज और वीर्य में सात्विकता का समावेश, अच्छाइयों का समावेश, श्रेष्ठता का समावेश होकर रहे। इसके बाद में बच्चे की अच्छी वाली पाठशाला आरंभ होती है, जिसके मुकाबले में पब्लिक स्कूलों की कोई कीमत नहीं, कॉलेजों की कोई कीमत नहीं है। ट्यूटरों की कोई कीमत नहीं है। वह सारे का सारा शिक्षण और उसके व्यक्तित्व के विकास का शिक्षण बच्चे के पेट में आने से लेकर जब तक वह बाहर आता है, बहुत कुछ पूरा हो चुका होता है। उस समय माता की मनोभूमि जैसी भी कुछ होगी, उसके हिसाब से वही स्वभाव और वही संस्कार बच्चे पर पड़ते चले जाएँगे।

मित्रो! उन दिनों गर्भवती की स्थिति नाजुक होती है, इसलिए उस समय उसको कोई मानसिक आघात नहीं लगना चाहिए और कोई प्रसंग ऐसा नहीं आना चाहिए जिससे उसके अंदर क्षोभ उत्पन्न हो, क्रोध उत्पन्न हो, ईर्ष्या और डाह के भाव उत्पन्न हों अथवा उसको दुष्कर्म करने का मौका मिले। उस समय उसकी प्रसन्नता को अक्षुण्ण रखा जाना चाहिए। घर के लोगों का, पति का काम है, परिवार के लोगों का काम है कि गर्भवती का स्वभाव और संस्कार बढ़िया बनाकर रखें। उसको हँसी-खुशी के वातावरण में रखा जाए और इस तरह की परिस्थितियों से उसको दूर रखा जाए जिसमें उसको भय पैदा होता हो, चिंता पैदा होती हो, रोष पैदा होता हो, क्लेश पैदा होता हो। इस तरह की मनोभूमि यदि माता की रखी गई है तो निस्संदेह बालक का व्यक्तित्व निखरता हुआ चला जाएगा।

महाभारत में एक कथा आती है कि अभिमन्यु जब अपनी माँ के पेट में था, तब उसको कुछ शिक्षा की जरूरत थी। उसके पिता अर्जुन ने चक्रव्यूह-भेदन की क्रिया अपनी धर्मपत्नी को सुनानी शुरू की और वह बालक, जो पेट के अंदर बैठा हुआ था, महाभारत की कथा के अनुसार वह सारी-की-सारी विधियों और चक्रव्यूह भेदने का विज्ञान सातवें सोपान तक सीखता हुआ चला गया। भेदन का अंतिम क्रम वह सुन नहीं पाया। जब वह पैदा हुआ, बड़ा हुआ तो उसे वह मौका भी नहीं मिला था कि यदि चक्रव्यूह की लड़ाई लड़नी पड़े तो कैसे लड़ना चाहिए, लेकिन जब चक्रव्यूह भेदने का समय आया तो उसने अपने पिता से माता के पेट में रहते हुए जो ज्ञान सीखा था, वह सारा-का-सारा ज्ञान अनायास ही जाग्रत हो गया और अनायास ही वह काम करने लगा जो बड़े बड़े शूरवीरों को नहीं आता था। चक्रव्यूह के छह चक्र उसने भेद डाले। सातवाँ चक्र किसी तरीके से छल-कपट के आड़े आ गया तो बेचारा मारा भी गया, लेकिन अभिमन्यु का शिक्षण माता-पिता ने उस समय किया था, जब वह माता के पेट में था।

अनिवार्य है संयम

साथियो! माता को संयम और ब्रह्मचर्य के वातावरण में रखा जाना चाहिए, अगर बच्चे को कामुक नहीं बनाना है तब। कई माता-पिता भूल जाते हैं और यह समझते हैं कि कोई बालक तो है नहीं, हम अकेले हैं। अकेले समय में तरह-तरह के अश्लील क्रियाकलाप आपस में करते रहते हैं। कई बार तो ऐसा भी होता है कि लोग वे बातें, जो गर्भवती के साथ नहीं की जानी चाहिए, करने लगते हैं। छोटा बच्चा, जो पेट में बैठा हुआ है, उन सारी प्रक्रियाओं को, सारी संवेदनाओं को ग्रहण करता हुआ चला जाता है और जब पैदा होता है तो उसमें कामुकता के सारे संस्कार पाए जाते हैं। कई बार ऐसा देखा गया है कि बहुत छोटे बच्चे, जिनको ठीक तरह से बोलना भी नहीं आता और दुनिया की जानकारी भी नहीं है, उन्हें काम क्रिया की ओर अग्रसर होते पाया गया है। इसका कारण सिर्फ यही

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है कि वे सारे-के-सारे क्रियाकलाप उसने माँ-बाप के बीच होते हुए अश्लील व्यवहार के रूप में उस समय सीख लिए, जब वह पेट में था।

वस्तुत: जब बच्चा पेट में होता है तो परिवार का सारा वातावरण ही उसका शिक्षण करता है। स्कूल में अध्यापक और प्रोफेसर कितने ही होते हैं, कोई कुछ पढ़ाता है, कोई कुछ पढ़ाता है, लेकिन असली-वास्तविक प्रोफेसर वे लोग होते हैं जिनके संपर्क में गर्भवती को रहना पड़ता है। घर के लोग जिस स्वभाव के होते हैं, जिस तरह के होते हैं, जिस आचरण के होते हैं, वही वास्तव में बच्चे के प्रोफेसर हैं। अच्छे बालक का निर्माण करने के लिए भगवान राम ने यह आवश्यक समझा कि अपनी धर्मपत्नी सीता जी को वहाँ भेज दिया जाए, जहाँ संस्कारवान वातावरण हो। लव-कुश जब पेट में थे, तब महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में उन्होंने सीता जी को भेज दिया, जहाँ साधना का वातावरण था, तपश्चर्या का वातावरण था, जहाँ ज्ञान का वातावरण था, जहाँ भक्ति का वातावरण था। उस सुसंस्कारित वातावरण में रहकर न केवल सीता का दु:ख और शोक समाप्त हो गया, वरन् जो पेट में रहने वाले बालक थे, उनका भी न जाने क्या-से-क्या हो गया।

बालकों का शिक्षण, बालकों का निर्माण वास्तव में ये सारी-की-सारी जिम्मेदारियाँ माता-पिता की हैं। जब तक बालक उत्पन्न नहीं हुआ है, उससे पहले पोषक आहार के रूप में वे चीजें माता को देनी चाहिए, जो सात्विक आहार के रूप में कही जा सकती हैं। माता के स्वास्थ्य की रक्षा करने का प्रयत्न उस समय करना चाहिए, जब वह गर्भवती है। भविष्य में बालक के स्वास्थ्य की गारंटी इस बात के ऊपर टिकी हुई है कि गर्भावस्था में माता ने क्या खाया? माता ने क्या पहना? किस वातावरण में रही और उसकी मन:स्थिति किस तरह की रही? इस तरह की व्यवस्था बनाना पिता का काम है।

जिम्मेदारी पिता की भी

मित्रो! बच्चे का निर्माण करना केवल माता का काम नहीं है, पिता की भी जिम्मेदारी है। परिस्थितियाँ माता किस तरह से बना सकती है? अगर घर में क्षोभ का वातावरण है तो उसका सुधार करना, उसकी व्यवस्था को बनाना पिता का काम है। अगर गर्भवती को उचित आहार प्राप्त नहीं होता है तो उसकी जिम्मेदारी उसके पिता की है। बेचारी गर्भवती स्त्री किस तरीके से क्या-क्या कर सकती है? घर के लोगों का स्वभाव अच्छा नहीं है, दूषित है, कलुषित है तो उस स्त्री को कहाँ रखा जाए या घरवालों को क्या कहा जाए? स्थिति को कैसे सुधारा जाए, यह सोचना गर्भवती का काम नहीं है, बल्कि उसके पति का काम है। बच्चे का निर्माण यहाँ से प्रारंभ होता है। बच्चे के बारे में ये बातें हर किसी को समझनी चाहिए।

कहा जाता है कि पिंडदान देने वाला न हो तो पिता नरक को चला जाता है। कर्मकांड में जहाँ तक पिंडदान का संबंध है, उसके बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता, लेकिन जहाँ तक बालक के क्रियाकलाप और पिंड का संबंध है, जहाँ तक उसके शरीररूपी पिंड का संबंध है, जहाँ तक उसके मनरूपी पिंड का संबंध है। अगर बालक का पिंड अर्थात शरीर, बालक का व्यक्तित्व पिंड सही है, ठीक है, अच्छा है तो पिता को स्वर्ग में जाना ही पड़ेगा। क्यों? क्योंकि समाज की सेवा के लिए उसने अपना एक प्रतिनिधि प्रस्तुत किया। उसने एक ऐसा सुयोग्य प्रतिनिधि प्रस्तुत किया जो समाज की सेवा के लिए और दुनिया में श्रेष्ठ काम करने के लिए, दुनिया में शांति पैदा करने के लिए अपना जीवन लगा सकने में समर्थ हुआ। क्या यह समाज की सेवा नहीं है? हाँ समाज की सेवा है, अगर अच्छा व्यक्ति अपने बालक के रूप में, अपनी संतान के रूप में अपना प्रतिनिधि बना करके समाज को दे। यह कार्य पिता का है, साथ में माता का भी।

इस तरीके से अगर किसी ने सुयोग्य संतान पैदा की है तो वह निस्संदेह स्वर्ग को जाएगा। उसने समाज की बड़ी सेवा की, एक श्रेष्ठ व्यक्ति समाज को दिया, लेकिन कोई व्यक्ति यदि काम-वासना से पीड़ित होकर और बच्चों का मोह एवं व्यामोह, जो कि आजकल समाज में फैला हुआ है, उसी तरीके से बिना सोचे-बिचारे बच्चे पैदा करने लगा और उसको संस्कारवान नहीं बना सका। पत्नी जिस समय गर्भवती थी, उसके लिए सुयोग्य व्यवस्था नहीं बना सका। अपनी मनोभूमि को ठीक नहीं कर सका, परिवार का वातावरण श्रेष्ठ नहीं बना सका। बच्चे का विकास करने के लिए, उसके विनोद के लिए जिन परिस्थितियों और वातावरण की आवश्यकता थी, वह नहीं दे सका। फलस्वरूप यदि बालक निकम्मा और दुष्ट हो गया, नीच और कुमार्गगामी हो गया, समाज में अनाचार पैदा करने वाला हो गया तो उस अनाचार पैदा करने वाले बालक को जिसने जन्म दिया है, ऐसा बनाने का दोष जिसके ऊपर है, उसको नरक में जाना चाहिए, क्योंकि समाज में उसने एक ऐसी विकृति पैदा की है, जो अगर वह न करता तो शायद दुनिया में ज्यादा शांति बनी रहती

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और सुव्यवस्था बनी रहती। इस मायने में बच्चे के द्वारा और संतान के द्वारा पिता नरक में जाता हो तो प्रकारांतर से यह बात आलंकारिक रूप से सही मानी जा सकती है, क्योंकि उसके जिम्मेदार माता और पिता हैं।

दायित्व दोनों का बराबर

मित्रो! न केवल पिता के बारे में यह पिंडदान की बात कही जानी चाहिए, वरन् माता के बारे में भी कही जानी चाहिए। माता को भी स्वर्ग और नरक इसी रूप में मिलता है कि उसने किस तरह की संतान उत्पन्न की और वह समाज के लिए उपयोगी साबित हुई या अनुपयोगी। किसी की अनुपयोगी संतान है तो समझना चाहिए कि इसके कुपात्र माता-पिता अपने बच्चे के निर्माण करने की जिम्मेदारी से परिचित नहीं थे और जो उन्हें करना चाहिए था, वह नहीं कर सके। काम-वासना को पाप इस रूप में माना गया है कि यदि उसके परिणामस्वरूप कुयोग्य, बीमार और अयोग्य संतानें उत्पन्न हों और वे जमीन पर भार बनकर रहें तो काम-वासना वस्तुतः नरक में ले जाने वाली है। परिष्कृत कामबीज स्वर्ग में ले जाने वाला भी है, यदि उसके फलस्वरूप इस तरह की संतानें हों, जैसे कि महात्मा गाँधी थे, विनोबा भावे जैसे थे, विवेकानंद जैसे थे, शंकराचार्य जैसे थे। ऐसे समर्थ व्यक्ति को जिन माता-पिता ने जन्म दिया, उनकी प्रशंसा ही की जाएगी।

माता-पिता मात्र दो का ही उत्तरदायित्व बच्चों के निर्माण में नहीं है, वरन् उस कुटुंब का उत्तरदायित्व भी है। मान लीजिए माता-पिता भले आदमी हैं, सज्जन हैं, श्रेष्ठ हैं, लेकिन माता-पिता के बीच में बालक अकेला तो रहता नहीं है। ऐसा तो कभी-कभी होता है और कहीं-कहीं होता है कि माता-पिता और उनका बालक के अतिरिक्त कोई कुटुंब का व्यक्ति न हो।

चाचा-ताऊ, भाई-भतीजे, बाबा-दादी न जाने कौन-कौन घर में रहते हैं। अपने देश में संयुक्त परिवार की प्रणाली है और एक ही घर में, एक ही खानदान में, एक ही कुटुंब में एक ही मकान के भीतर अनेक व्यक्ति रहते हैं। अनेक व्यक्तियों की छाप पड़ती है। मान लीजिए पिता बीड़ी-तंबाकू नहीं पीते और कोई बुरा काम नहीं करते, लेकिन उसी घर के दूसरे लोग गालियाँ बकते हैं, तंबाकू पीते हैं, मांस खाते हैं, लड़ाई-झगड़ा करते हैं, बुरे आचरण करते हैं तो गर्भ से निकलने के बाद केवल माता-पिता तक ही बालक सीमित नहीं रहेगा। गर्भ में जब तक है, तब तक तो यह बात कही जा सकती है कि उसके ऊपर बहुत सारा असर माता का होता है, थोड़ा असर पिता का रहता है।

सान्निध्य का, वातावरण का शिशु पर प्रभाव

मित्रो! पिता हर समय बालक के संपर्क में नहीं आता और बच्चा जब पैदा हो जाता है तो सारे-के-सारे कुटुंब का उस पर असर पड़ता है। जिसके द्वारा गोदी में खिलाया जाता है वह अगर कुसंस्कारवान है, दुराचारी है, अनाचारी है, अत्याचारी है और वह उसको खिलाता है तो बच्चों का अच्छा निर्माण नहीं हो सकता। कई व्यक्ति ऐसा करते हैं कि अपने बच्चे के पालन-पोषण के लिए नौकर रखते हैं। नौकर ही तमाम दिन उसे खिलाते हैं, नहलाते हैं, नौकर ही कपड़े धोते हैं, नौकर ही गोदी में लिए फिरते हैं। कई व्यक्ति अपनी धर्मपत्नियों को दूध नहीं पिलाने देते और

मंगोलियावासी चांगशेन नामक न्यायाधीश अफसर के पास उनका एक मित्र पहुँचा और अशर्फियों की थैली भेंट करते हुए बोला, आप मेरा काम कर दें। इस लेन-देन की बात आपके और मेरे अतिरिक्त कोई नहीं जानेगा।

चांगशेन कभी किसी से रिश्वत नहीं लेते थे। भले ही अपनी इस आदर्शवादिता के कारण उन्हें अभावग्रस्त जीवन जीना पड़ता था। उन्होंने अपने धनी मित्र को इस बात का उत्तर दिया, मित्र, ऐसा न कहो कि कोई नहीं देखता। कोई मनुष्य नहीं देखता तो क्या? सर्वव्यापी परमेश्वर तो सब कुछ देखता है, उसकी नजरों से मेरा यह अनैतिक कर्म कहाँ छिपा रहेगा। अनीति का उपार्जन महामानव को कभी स्वीकार्य नहीं होता।

धाय का दूध पिलाते हैं। जो धाय दूध पिलाती है और जो नौकर बच्चों को खिलाते हैं, उनका प्रभाव बच्चे पर पड़ना ही चाहिए, क्योंकि बच्चा बहुत संवेदनशील होता है।

पाँच वर्ष के भीतर बच्चे की संवेदना इतनी तीव्र होती है कि जहाँ कहीं भी, जिसके भी संपर्क में आएगा, उससे कुछ-न-कुछ प्रभाव ग्रहण किए बिना नहीं रह सकता। जब वह बड़ी उम्र का हो जाता है और उसकी अक्ल विकसित हो जाती है, तब तो वह काँट-छाँट करने लगता है कि किसका प्रभाव ग्रहण किया जाए, किसका न किया जाए, किसकी उपेक्षा की जाए, किसको प्रेम किया जाए, किसकी ओर आकर्षित हुआ जाए और किसकी ओर न हुआ जाए। पाँच वर्ष के बाद तो उसकी बहुत-सी चीजें विकसित हो जाती हैं, लेकिन बहुत छोटा बालक इस बात

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को नहीं कर पाता और जो भी कोई वातावरण उसके आस पास होता है, उससे प्रभावित हो जाता है। अगर गोदी में खिलाने वाले लोग कुसंस्कारी हैं, दुष्ट स्वभाव के हैं, बुरी वृत्तियों के हैं, जो धाय उनके लिए दूध पिलाने के लिए रखी गई है अथवा कुटुंबी लोग जो उनको खिलाते-पिलाते रहते हैं, साथ रखते हैं, वे अगर बुरे स्वभाव के हैं तो बच्चे का अच्छा निर्माण नहीं हो सकता।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए पहले भी कहा जा चुका है कि बच्चे पैदा करना बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, क्योंकि अगर हमने समाज को कुसंस्कारी बालक दिया है तो समाज की कुसेवा की है, बहुत बड़ी हानि की है। हमने अगर समाज के लिए एक अच्छी संतान और सुयोग्य संतान बना कर दी है तो समझना चाहिए कि भामाशाह ने राणाप्रताप को जैसे प्रचुर धन दिया था और समाज की बड़ी सेवा की थी, उसी तरीके से हम भी बड़ी सेवा कर रहे हैं।

बच्चों का निर्माण घर की पाठशाला में

मित्रो! बच्चों का निर्माण घर की पाठशाला में होता है। अत: घर को एक पाठशाला के तरीके से बनाया जाना चाहिए। बालक घर में जो क्रियाकलाप होते हुए देखेगा, उसी की छाप उस पर पड़ेगी। अगर घर में सफाई रखी जाती है तो बालक का स्वभाव छोटी उम्र से सफाई वाला हो जाएगा। घर के वातावरण में अगर गंदगी फैली हुई है तो बच्चा गंदा हो जाएगा। सही मायने में तो बात यह है कि बच्चा अपने पिता का पिता है और गुरु का गुरु है, क्योंकि उसको ठीक रखने के लिए लोगों को सतर्क रहना पड़ता है। जब कहीं घर में पुलिस आती है तो चोरी की चीजें अगर घर में रखी हैं तो हर आदमी उसे छिपा देता है। पुलिस आ गई और कहीं ऐसा न हो कि वह पकड़ में आ जाए, इसलिए उसे छिपा देते हैं। बच्चा एक तरह की पुलिस है। समझदार आदमी और जिम्मेदार आदमी अगर इस बात को अनुभव करते हैं कि यह हमसे कुछ सीखने वाला है तो कोई ऐसा क्रियाकलाप नहीं करते, जिसको बच्चा सीख जाए।

मित्रो! जब तक बच्चा बड़ा नहीं हो जाता, तब तक माता-पिता को अश्लील क्रियाएँ नहीं करनी चाहिए। उन्हें यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि यह तो छोटा सा बालक है, यह बेचारा क्या समझेगा? इसे दुनियादारी का ज्ञान ही कहाँ है? हम हँसते खेलते रहें और गंदी बातें करते रहें तो इस पर क्या असर पड़ने वाला है? यह समझना माता पिता की बहुत भारी भूल है। वास्तव में छोटा बच्चा इतना अधिक जानकार होता है, जितना बड़ा आदमी नहीं होता। बड़ा आदमी सो जाता है तो बेखबर हो जाता है, लेकिन बच्चा जिस समय सोया रहता है, उसका अचेतन मन बहुत तीव्र गति से काम करता रहता है और माता पिता क्या करते हैं, उसको बहुत बारीकी से, गौर से देखता रहता है। न केवल देखता रहता है, वरन् सीखता भी है। न केवल सीखता रहता है, वरन् अपने भीतर के चरित्र का निर्माण भी करता रहता है। घर की पाठशाला में ही, वास्तव में बच्चों का निर्माण किया जा सकता है।

(शेष अगले अंक में)

❊

धन लक्ष्मी वहीं विराजती हैं, जहाँ दुरुपयोग न होता हो, जहाँ सदैव पुरुषार्थ में निरत रहने वाले व्यक्ति बसते हों।

बलि अपने समय के धर्मात्मा राजा थे। उनके राज्य में सतयुग विराजता था।

सौभाग्य लक्ष्मी बहुत समय तो उस क्षेत्र में रहीं, पर पीछे अनमनी होकर किसी अन्य लोक को चली गईं।

इंद्र को असमंजस हुआ और इस स्थान-परिवर्तन का कारण पूछ ही बैठे।

सौभाग्य लक्ष्मी ने कहा, मैं उद्योगलक्ष्मी से भिन्न हूँ। मात्र पराक्रमियों के यहाँ ही उसकी तरह नहीं रहती। मेरे निवास में चार आधार अपेक्षित होते हैं-(१) परिश्रम में रस, (२) दूरदर्शी निर्धारण, (३) धैर्य और साहस तथा (४) उदार सहकार।

बलि के राज्य में जब तक ये चारों आधार बने रहे, तब तक वहाँ रहने में मुझे प्रसन्नता थी। पर अब, जब सुसंपन्नों द्वारा उन गुणों की उपेक्षा होने लगी तो मेरे लिए अन्यत्र चले जाने के अतिरिक्त और कोई चारा न था।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

अभिभावक हैं तो उत्तरदायित्व भी निभाइए

(परमपूज्य गुरुदेव के उद्‌बोधन के विगत अंक में प्रकाशित अंश का उत्तरार्द्ध)

मित्रो! यह ख्याल सही नहीं है कि अमुक जगह, अमुक कॉलेज, अमुक विद्यालय या अमुक स्कूल में भेज देंगे तो हमारे बच्चे योग्य बन जाएँगे और संस्कारवान बन जाएँगे। जब हम बच्चों को स्कूल-कॉलेजों में पढ़ने के लिए भेजते हैं, विद्यालय में भेजते हैं, उस समय तक उसकी वह उम्र समाप्त हो जाती है, जिसमें बच्चे का निर्माण किया जाना संभव है। छोटे बालक किसी स्कूल में नहीं लिए जा सकते और न माता-पिता के बिना रखे जा सकते हैं। माता-पिता को अपने बालकों से पूरा प्रेम करना चाहिए। जो माता-पिता आपस में प्रेम नहीं रख सकते, वे बच्चों को भी प्रेम नहीं कर सकते। माता पिता के बीच अनन्य प्रेम होना चाहिए और अनन्य निष्ठा होनी चाहिए। उन दोनों के बीच ऐसा कोई कारण नहीं होना चाहिए जिससे दोनों के बीच में अविश्वास और मनोमालिन्य पैदा हो। व्यभिचार एक ऐसी ही प्रक्रिया है। अगर पिता दुराचारी है, व्यभिचारी है तो माता के मन में अविश्वास बना रहेगा, संदेह बना रहेगा, मनोमालिन्य बना रहेगा। खाने-पीने की सुविधाओं के होते हुए भी यह मनोमालिन्य और अविश्वास सतत बना रहेगा और आगे जाकर यही उनके बच्चों पर प्रभाव डालेगा।

मित्रो! माता अपने बच्चे को दूध पिलाती है। इस दूध के साथ में केवल दूध ही नहीं जाता, प्रोटीन ही नहीं जाता, केवल स्टार्च ही नहीं जाता, केवल फैट ही नहीं जाता, वरन् माता के संस्कार भी जाते हैं। उन दिनों में माता के संस्कार और स्वभाव जैसा है, मन:स्थिति जैसी है, उसी तरह का प्राय: बालक बन जाता है।

ठीक इसी प्रकार माता का मन, माता का स्वभाव और माता की मन:स्थिति जैसी होती है, उसी के अनुरूप बच्चा पैदा होता है। अगर धर्मपत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। उसकी मन:स्थिति ऐसी नहीं है कि वह समर्थ और सुयोग्य बच्चा पैदा करने में समर्थ हो तो उसके ऊपर अत्याचार नहीं किया जाना चाहिए और उसकी गोदी में बच्चा नहीं धकेल दिया जाना चाहिए। अगर पिता ने उसकी गोदी में जबरदस्ती बच्चा धकेल दिया है और माता की मन:स्थिति ठीक नहीं है, उसकी शारीरिक स्थिति भी ठीक नहीं है तो वह अच्छा बच्चा कैसे पैदा करेगी? स्वस्थ बच्चा कैसे पैदा करेगी? अगर वह शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ बच्चा पैदा भी कर दे तो वह बच्चा मानसिक दृष्टि से स्वस्थ नहीं हो सकता। मानसिक दृष्टि से वह एक बीमार बच्चा ही पैदा होगा। उससे समाज का नुकसान ही होगा।

अतएव न केवल पाँच वर्ष तक, वरन् उससे आगे भी हर माता-पिता को यह ध्यान रखना चाहिए कि स्कूलों और कॉलेजों के ऊपर आज बहुत निर्भर नहीं रहा जा सकता। कोई जमाना था, जब बच्चे वहाँ रहा करते थे, जहाँ उनको शिक्षण के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान, व्यावहारिक कुशलता, जीवन जीने की कला और जीवन जीने की दिशाओं का बहुत सारा शिक्षण मिलता था। वे चौबीसों घंटे वहीं गुरुकुलों में रहा करते थे। उस जमाने में जो गुरु हुआ करते थे और गुरुमाताएँ होती थीं, वे उन्हें वैसा ही स्नेह, वैसा ही प्रेम प्रदान करते थे, जैसा कि माता पिता से मिलता है। उस वातावरण में यह संभव था कि स्कूलों में, गुरुकुलों में बच्चों को भेजने के बाद निश्चिंत हो जाया जाए कि वहाँ का संस्कारवान वातावरण है, सो वह मिलेगा ही।

मित्रो! आज तो सिर्फ थोड़े-से घंटों के लिए, दो-चार घंटे के लिए बच्चे स्कूल में पढ़ने जाते हैं। दो-चार घंटे के स्कूल में भी कोई नैतिक शिक्षण होता नहीं, चारित्रिक शिक्षण होता नहीं। व्यक्तित्व के निर्माण करने की कोई बात होती नहीं और न इस प्रकार की कोई व्यवस्था ही वहाँ पर होती है। केवल भूगोल, गणित, इतिहास वगैरह पढ़ा दिए जाते हैं। सो भी एक आदमी नहीं, इसके लिए ढेरों अध्यापक आते हैं। कोई गणित पढ़ा गया, कोई भूगोल पढ़ा गया, कोई इतिहास पढ़ा गया, कोई क्या पढ़ा गया, कोई क्या पढ़ा गया। पैंतालीस पैंतालीस मिनट का तमाशा दिखा करके नट और कठपुतलियों के तरीके से अध्यापक भाग जाते हैं।

साथियो! उनसे यह आशा करना व्यर्थ है कि ये हमारे बच्चे को कुछ सिखा सकते हैं और पढ़ा सकते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्कूल और कॉलेज में पढ़ने के बाद हमारा बच्चा सुयोग्य और सुसंस्कारी बन सकता है, यह सोचना मुनासिब नहीं है और यह ख्वाब, यह कल्पना ठीक नहीं है, क्योंकि चार-पाँच घंटे स्कूल में रहने के बाद, चौबीस घंटे में बाकी अठारह घंटे जो बच जाते हैं, उसमें से तो ज्यादातर वक्त बच्चा अपने घर के वातावरण में ही बिताता है। स्कूल में वह गणित, भूगोल पढ़ सकता है, लेकिन स्कूल में वह चरित्र कैसे पड़ेगा? घर के लोग जिस स्वभाव के होंगे, जिस नीयत के होंगे, जिस क्रियाकलाप के होंगे, बच्चा ठीक वैसा ही बन जाएगा।

इसलिए यह आवश्यक है कि अगर किसी को बच्चा उत्पन्न करना है तो बच्चे को उत्पन्न करने के साथ-साथ उसके निर्माण की जिम्मेदारी को भी समझना चाहिए। मात्र खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी को ही नहीं, कपड़ा पहनाने की जिम्मेदारी को ही नहीं, ब्याह शादी करने की जिम्मेदारी को जिम्मेदारी निभाना नहीं कहते। बच्चे को काम धंधे पर लगाने की जिम्मेदारी को जिम्मेदारी नहीं कहते। वास्तव में अस्सी फीसदी जिम्मेदारी माता-पिता के ऊपर यह है कि वे अपने बालकों को संस्कारवान बनाएँ, चरित्रवान बनाएँ, सुयोग्य एवं विकसित व्यक्तित्व का बनाएँ। यह कार्य कोई किताब खरीद देने से या उसको खुराक खिला देने से या किसी कॉलेज में भरती करा देने से नहीं हो सकता। इसके लिए सारे घर का वातावरण ठीक करना पड़ेगा। खास करके माता-पिता को तो अपनी मन:स्थिति को जरूर ही ठीक करना पड़ेगा।

अगर परिवार में संस्कार डालने की व्यवस्था नहीं है और वह संयुक्त परिवार के अंतर्गत चल रहा है तो परिवार को टुकड़ों में बाँटा जा सकता है और कुसंस्कारी लोगों से संस्कारवान लोगों को अलग रखा जा सकता है। देखने-सुनने में यह बात भद्दी मालूम पड़ती है कि एक ही संयुक्त परिवार के लोग कई हिस्सों में बँटें और कई तरीके से रहें, लेकिन बालकों को जहाँ कुसंस्कारी बनाने की संभावना हो, वहाँ संयुक्त परिवार को छोटे टुकड़ों में बाँट दिया जाए और उनके लिए वातावरण अलग से बना दिया जाए। मैं समझता हूँ कि यह कोई ज्यादा बुराई की बात नहीं है। संयुक्त परिवार वैसे भी ढीले होते चले जा रहे हैं। जिन लोगों के मन एक से नहीं हैं, जिन लोगों के स्वभाव एक से नहीं हैं, जिन लोगों के कर्म एक से नहीं हैं, प्रेम जिनके बीच नहीं है, विश्वास जिनमें नहीं है, उन्हें नारंगी की फाँक के तरीके से बाहर से जोड़कर किसी तरह से रखा जाए तो उससे क्या बनता है? क्या बिगड़ता है? इससे तो यह अच्छा है कि भले लोग कुसंस्कारी लोगों से अलग रहें और आपस में प्रेमभाव रखें, आपस में सहयोग का भाव रखें, एक दूसरे की सहायता करें, एक दूसरे को आगे बढ़ाएँ। इसमें कोई हर्ज की बात नहीं है।

जो भी हो मित्रो! बच्चों को छोटी उम्र से लेकर बड़ी उम्र तक इस तरह की परिस्थितियाँ मिलनी चाहिए, जिसको हम 'संस्कार' कहते हैं। खुराक आवश्यक नहीं है, संस्कार आवश्यक हैं। संस्कार के लिए सारे वातावरण को ही बदलना पड़ेगा। माता-पिता जब आपस में बैठा करें, बातचीत किया करें तो जिस समय तक बच्चा पाँच वर्ष का नहीं हो गया है, उस समय तक दोनों जब भी मिला करें, अश्लील बातें नहीं किया करें। लड़ाई-झगड़े की बात नहीं किया करें। अच्छा यह है कि दोनों मिल करके थोड़ी देर स्वाध्याय किया करें। पिता माता को ऐसी पुस्तकें पढ़कर सुनाया करे जैसी कि सुभद्रा को सुनाई गई थी,

> ***परमेश्वर का प्यार केवल सदाचारी और कर्त्तव्यपरायणों के लिए ही सुरक्षित है।***
>
> ***—परमपूज्य गुरुदेव***

जब अभिमन्यु पेट में था। पिता का यह भी काम है कि पत्नी को अच्छा साहित्य पढ़ने के लिए दे। जहाँ उसका निवास है, वहाँ गंदी तस्वीरें नहीं, एक-से एक अच्छे आदर्श महापुरुषों की तस्वीरें लगाकर रखे। जब कभी भी आँख ऊपर के लिए जाए तो अपनी धर्मपत्नी को उन श्रेष्ठ मनुष्यों का चरित्र और उनका स्वभाव देखने-समझने का ही मौका मिले। धर्मपत्नी को अच्छी पुस्तकें पढ़ने का मौका दिया जाए, अच्छे लोगों की संगति में बैठने का मौका दिया जाए। अच्छे व्याख्यान सुनने और प्रवचन करने की व्यवस्था बनाई जाए।

अगर ये सब बातें संभव नहीं हों तो कम-से-कम इतना तो किया ही जा सकता है कि अपने बच्चे का निर्माण करने के लिए पत्नी की मनोभूमि को बनाया जाए। पत्नी की मनोभूमि को बनाने के लिए बच्चे के पिता को चाहिए कि वह अपने समय में से थोड़ा-सा एक अंश निकाले और अपनी धर्मपत्नी को समझाए। अगर उसे स्वयं समझाना नहीं आता तो जिन लोगों को समझाना आता है, उनकी लिखी हुई पुस्तकें, ग्रंथ या कोई कहानी उसको सुनाया करें, समझाया करें। इतना तो हो ही सकता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है। अगर इतना भी कोई पिता नहीं कर सकता तो यह कैसे कहा जाएगा कि वह अपने बच्चे की जिम्मेदारी को अनुभव करता है।

मित्रो! घर के वातावरण में प्रेम की संभावनाएँ रहनी चाहिए। जिन बालकों को प्रेम नहीं मिलता, वे क्रूर हो जाते हैं, उजड्ड हो जाते हैं और गँवार हो जाते हैं। आदमी की खुराक रोटी नहीं है, आदमी की खुराक घी नहीं है, आदमी की खुराक प्यार है, मोहब्बत है। छोटा बच्चा जितनी अपेक्षा दूध की करता है, उससे सौ गुनी ज्यादा अपेक्षा वह इस बात की करता है कि उसको पिता का प्यार मिले, माता का प्यार मिले। माता-पिता को अपने बच्चे को पास भी रखना चाहिए। उनके साथ खेलना भी चाहिए। अक्सर पिता ऐसे पाए जाते हैं, जो इस बात का ख्याल नहीं करते कि हमको इन बच्चों के साथ में खेलना चाहिए। इनको खिलाना चाहिए, ताकि हमारे संस्कार और प्रेम का प्रभाव इनको अनुभव होता चला जाए। जो सारे दिन काम-धंधे में लगे रहते हैं। जब छूट करके घर आते हैं तो ताश खेलने में, रेडियो सुनने में और मित्रों से गप-शप लड़ाने में लग जाते हैं। कभी बेचारे बच्चों को यह अनुभव न हो सका कि हमारा पिता कौन है और पिता की मोहब्बत किसे कहते हैं? बस, अच्छा कपड़ा पहना दिया, अच्छी मिठाई खिला दी। अच्छे से समाज में बिठा दिया। ये भी कोई बात है क्या? यह तो शरीर की सेवा हुई।

बच्चों के शरीर की सेवा ही काफी नहीं है, मन की सेवा आवश्यक है। मन की खुराक किसी व्यक्ति की उसकी मोहब्बत होती है। मोहब्बत के द्वारा जिन माता पिता ने अथवा लोगों ने बच्चों का निर्माण किया है, वास्तव में उन्होंने अपने बालकों की बहुत बड़ी सेवा की है। जिन्होंने बच्चों को प्यार दिया नहीं, बच्चों को गोदी में खिलाया नहीं, बच्चों को कहानियाँ सुनाई नहीं, बच्चों को साथ लेकर टहलने गए नहीं और बच्चों के साथ में समय व्यतीत किया नहीं, उन्हें यह समझना चाहिए कि बच्चों के प्रति अपने फर्ज और कर्त्तव्य की जिम्मेदारी उन्होंने पूरी नहीं की।

मित्रो! बच्चों का निर्माण करने के लिए हमको उनके खेलकूद की व्यवस्था करनी चाहिए। उनके पढ़ने की व्यवस्था करनी चाहिए। अच्छे कपड़े की व्यवस्था करनी चाहिए। उनके लिए अच्छी खुराक की व्यवस्था करनी चाहिए। ये सब बातें आवश्यक हैं। हम रोज पढ़ते हैं और हमको बताई भी जाती हैं, लेकिन उससे भी हजार गुनी महत्त्वपूर्ण बात यह है, जिसकी ओर लोगों का ध्यान नहीं गया कि बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए वातावरण की जरूरत है। मन:स्थिति की जरूरत है। माता-पिता को संस्कारवान होने की जरूरत है। अगर इस ओर ध्यान दिया जाए तो मैं समझता हूँ कि यह शिक्षा इतनी बड़ी है कि हम भावी पीढ़ियों को इतनी अच्छी और सुसंस्कारवान बना सकते हैं, जो पिता के लिए भी संतोषदायक हो, माता के लिए भी आनंददायक हो। घर-परिवार के लोगों के लिए भी और हरेक के लिए विभूति और अच्छाई का कारण हो। समाज के लिए भला अनुदान दे सकने वाली हो।

नई पीढ़ियों का निर्माण करना और घर के वातावरण को अच्छा रखना और बुढ़ापे में अपना जीवन शांति से व्यतीत करना, इस बात के ऊपर टिका हुआ है कि हमने अपने बच्चों को संस्कारवान बनाया कि नहीं? बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए हमको यह प्रयत्न करना चाहिए कि बच्चों को जन्म लेने से पहले से लेकर के जब तक वह कम-से-कम पाँच वर्ष के नहीं हो जाते, उस वक्त तक बहुत अधिक ध्यान रखें। पाँच वर्ष के होने के पश्चात ही घर की परिस्थितियों को, बच्चों की संगति को, बच्चों के वातावरण को और बच्चों के साथियों पर गौर करें और यह देखें कि कहीं हमारा बच्चा कुमार्गगामी तो नहीं हो रहा है। इस तरह का ध्यान अगर रखा जा सके तो बच्चों के निर्माण की दिशा में बहुत महत्त्वपूर्ण कदम उठाया गया, यह माना जा सकता है। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांति ॥

❁

ज्ञान और धन दोनों में एक दिन अपनी श्रेष्ठता के प्रतिपादन पर झगड़ा उठ खड़ा हुआ। दोनों अपनी-अपनी महत्ता बताते और एक-दूसरे को छोटा सिद्ध करते थे। अंत में निर्णय के लिए वे दोनों आत्मा के पास पहुँचे।

आत्मा ने कहा, तुम दोनों कारण मात्र हो, इसलिए श्रेष्ठ बात ही तुममें क्या है? सदुपयोग किए जाने पर ही तुम्हारी श्रेष्ठता है, अन्यथा दुरुपयोग होने पर तो तुम दोनों ही घृणित बनकर रह जाते हो।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमवंदनीया माताजी की मातृवाणी

गुरु को वरण करके तो देखिए

(परमपूज्य गुरुदेव की सूक्ष्मीकरण की अवधि में गुरुपूर्णिमा २/७/८५ पर दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

हमारे आत्मीय परिजनो! आज का यह महान पर्व आत्मबोध का पर्व है, आत्मचिंतन का पर्व है। यह साधारण नहीं, असाधारण है। इसको गुरुपूर्णिमा का पर्व कहा गया है अर्थात उसका दिन जिसने कि सारी जिंदगी राह दिखाई। आज वही गुरुपर्व है। उसका चिंतन और आत्मचिंतन का, यह आज का पर्व है। यों तो यह व्यासपूर्णिमा भी है। व्यास जी ने अठारह पुराण लिखे थे। इस व्यासपूर्णिमा पर आपने उन्हीं व्यास जी का पूजन किया, लेकिन यह गुरुपूर्णिमा भी है। आज के महान पर्व पर हम उनका चिंतन करते हैं, जिन गुरुओं के अनुदानों से शिष्यों की झोली भर दी गई। उनको महान बना दिया गया। यह वही महापर्व है।

दोहरी भूमिका

आपको मैं आज की ही एक घटना सुनाती हूँ और यह कह सकती हूँ कि किस तरह अनायास ही वह अंजाम और वह जिम्मेदारी मुझे सौंप दी गई। आज सुबह से ही मैं गहन चिंतन में डूबती चली गई कि डबल जिम्मेदारी मुझे कैसे सौंप दी गई! सच मानना, बैठी तो मैं यहाँ हूँ, लेकिन मेरा चिंतन उस जिम्मेदारी की ओर है, जो मुझको सौंपी गई है, पर मुझसे कहा नहीं गया है। कहा किसी और से है, लेकिन वह परोक्ष रूप से मेरे ऊपर आ गई है, मेरे कंधों पर आ गई है। आज मैं इस चिंतन में डूब गई कि अभी तक तो मैं माँ ही थी। इतने दिन तक हर व्यक्ति से यही कहते थे कि आशीर्वाद लेना है तो माताजी के पास जाइए, यज्ञ भस्म ले जाइए। आशीर्वाद माँगना है तो माताजी के पास जाइए और काम करना है तो मेरे पास आइए, लेकिन आचार्य जी ने आज जो शब्द कहा है, मैं समझती हूँ, वह शायद पहली बार कहा है। उन्होंने मुझमें और अपने में कभी कोई भेद समझा ही नहीं था। उन्होंने हमेशा यही कहा है कि जो मैं हूँ, वही माताजी हैं और जो माताजी हैं, वही मैं हूँ। ऊपर हम दो ही जाते हैं—मैं जाती हूँ और एक लड़का जाता है। आज जब वह प्रणाम करने गया तो उन्होंने यह कहा कि प्रणव! गुरु तो नीचे बैठा है, तुम उसको प्रणाम करो। खैर, मैंने तो उस लड़के को हँसी में टाल दिया, लेकिन तभी से मैं उसी गहन चिंतन में ऐसी डूब गई हूँ कि अभी तक उसी में हूँ कि क्या मैं यह जिम्मेदारी निभा पाऊँगी।

बेटे! मुझे अंदर से विश्वास तो है कि उन्होंने जो भी निर्देश मुझे सौंपा है, मैंने उसे पूरा किया है और जी जान से पूरा किया है। इसे भी पूरा करूँगी मरते दम तक। मैं कभी यह नहीं कहलवा सकती कि गुरुजी ऐसे थे और माताजी ऐसी हैं। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, हम दोनों एक हैं और एक ही हैं। हम पूरा करके ही दिखाएँगे। बेटे, मेरी तो झोली अनायास ही भर गई, किससे ? जिम्मेदारियों से। इनका हम निर्वाह करेंगे। उन्होंने इतनी बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है तो इसलिए कि उसके लायक ये कंधे मजबूत भी हैं कि नहीं और नहीं हैं तो उनको मजबूत किया जाए और करना पड़ेगा। यह आवश्यक है।

गुरु के अनुदान

बेटे! आज मैं अपना हवाला दे रही थी। मेरे मन में यह बात रुकी नहीं सो मैंने अपना दिल हलका कर लिया। बेटे! यह जो पर्व है, इसमें अनायास ही अनुदान मिलता है और इतना मिलता है कि सँभाले नहीं सँभलता। मैं किन किनकी बात कहूँ आपसे। मैं रामकृष्ण परमहंस की बात कहना चाहती हूँ आपसे, जिन्होंने कि अपने विवेकानंद की झोली को भर दिया और वह निहाल हो गया। आया था नौकरी माँगने के लिए कि हमको नौकरी चाहिए, लेकिन यह क्या मिल गया! उनका नाम विवेकानंद तो पीछे पड़ा था, पहले वे नरेंद्र थे। रामकृष्ण परमहंस ने अपनी शक्ति को हस्तांतरित कर दिया, दे दिया और वह महान हो गया। जो कुछ नहीं जानता था, वह सब कुछ जानने लगा। गुरु की शक्ति को वह जान गया और उसे सब कुछ मिल गया। गुरु की शक्ति उसको मिल गई। देश में नहीं, विदेशों में, अमेरिका में शून्यवाद के ऊपर कोई बोल नहीं सकता था, वहाँ उसे बोलने के लिए कहा गया। उस धर्म महासभा में लोगों ने कहा कि हिंदुस्तान का यह लड़का क्या बोलेगा! उसका मजाक उड़ाने के लिए बस यों ही उससे कह दिया

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गया था कि शून्य पर बोलो, देखें आप में कितनी शक्ति है।

विवेकानंद ने अपने गुरु का स्मरण किया कि गुरुदेव, आज परीक्षा की घड़ी आ गई है, कहीं आपके बच्चे की इज्जत न चली जाए। पीछे से पीठ थपथपा दी गई और कहा गया कि बेटे! तू यह मत समझना कि हमारा गुरु इस दुनिया में नहीं है। हम तेरे पास हैं और तू बोलता चला जा। विवेकानंद ने कमाल कर दिया। उसको जहाँ पंद्रह मिनट या आधा घंटा बोलने को मिला था, वहाँ वह घंटों बोलता चला गया। तालियाँ बजती रहीं, लोग कहते रहे कि अभी और बोलिए। यह सब कहाँ से आ रहा था? यह उस गुरु की कृपा है और उसका अनुदान है। वह चाहे तो सब कुछ बना सकता है। वह किसी की भी झोली खाली नहीं जाने देता। चाहे दूसरों की पीड़ा स्वयं ही क्यों न झेलनी पड़े, वह हँसता हुआ स्वयं झेल जाता है।

कहते हैं कि रामकृष्ण परमहंस को अंतिम दिनों में गले का कैंसर हो गया था। आप जान सकते हैं कि उनको गले का कैंसर क्यों हुआ था? क्या इसलिए कि वे कोई संयम नहीं रखते थे? नहीं बेटे, ऐसी बात नहीं है। वे तो संत थे। उन्होंने दूसरों के दु:ख-कष्टों को, उस जहर को खुद पिया और अपने बच्चों को उससे निकाला अर्थात अपने शिष्यों की रक्षा की। बच्चों का, लड़कों का संबोधन जहाँ कहीं भी आएगा, वह शिष्यों के लिए आएगा। मुझसे शिष्य शब्द कहा नहीं जाता, इसलिए बार-बार मैं उस शिष्य शब्द को कहना नहीं चाहती हूँ। मेरे मुँह से बेटा, बच्चे और लड़का शब्द ही निकलता है। बच्चे एक-दो नहीं, असंख्य होते हैं, इसलिए अब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि गुरु की कितनी बड़ी जिम्मेदारी होती है।

गुरु की कृपा क्या होती है, चलिए मैं बताती हूँ। एक चाणक्य थे, जिनका कि एक बार किसी राजा ने अपमान कर दिया। उन्होंने सोचा कि क्या किया जाए? वैसे तो संत किसी से अपमान का बदला नहीं लेता है, लेकिन उन्होंने उसके सामने एक दासीपुत्र को लाकर खड़ा कर दिया। जो लड़का कुछ नहीं जानता था, उसको खड़ा कर दिया और उसके सिर पर हाथ रख दिया। उन्होंने कहा कि देख मैंने तुझे शक्ति दे दी है और अब मैं तुझे सम्राट बना दूँगा। उसने कहा कि मैं तो जमीन पर पड़ा हूँ, एक नाचीज सिपाही हूँ, सम्राट कैसे बन सकता हूँ! तो क्या तुझे मेरे ऊपर विश्वास नहीं है, मैं तुझे सम्राट बनाकर ही रहूँगा। और उन्होंने उसे सम्राट बना दिया।

बेटे! यह होती है गुरु की कृपा और ये होते हैं गुरु के अनुदान। आप तो केवल उस भौतिक चीज को ही देखना चाहते हैं और मैं उसी का हवाला भी दूँगी। अगर कहीं आप उन सूक्ष्म शक्तियों की ओर चले जाएँ, जिन शक्तियों को लेकर व्यक्ति भगवान हो जाता है, हिम्मत वाला हो जाता है और ऐसे-ऐसे कठिन कार्य करता है, जिनकी वह कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था। इसमें किसका हाथ है? यह गुरु का हाथ है और यह गुरु का अनुदान है, यह उनकी कृपा है, जो भौतिक चीजें भी देता है और आध्यात्मिक भी। वह भौतिक विपदाओं से भी निकालता है और अनायास ही वे उपलब्धियाँ भी उसको देता है, जिनको पाकर वह निहाल हो जाता है।

छत्रपति और समर्थ

शिवाजी को छत्रपति शिवाजी किसने बनाया था? समर्थ गुरु रामदास ने। उन्होंने उसे भवानी तलवार दे दी थी और तिलक लगाकर कहा था—जा बेटे, तू विजय पाएगा। उसने कहा कि मैं एक नाचीज, नन्हा-सा बालक, कद-काठी का छोटा, जिसके शरीर में जान नहीं, भला मैं कैसे विजय पा पाऊँगा! समर्थ गुरु रामदास ने कहा, बेटे, मैं परदे के पीछे रहूँगा और काम तू करेगा। श्रेय तू लेगा और कृपा मेरी चलेगी। मैं तेरी पीठ थपथपाऊँगा, तेरे पैरों में शक्ति दूँगा और चलेगा तू। चल, संग्राम में विजेता बन। हिम्मत वालों के तरीके से, दिलेरों के तरीके से आगे-आगे चल, बुजदिलों के तरीके से नहीं। अध्यात्म दिलेरों का है, कायरों का नहीं है, भगोड़ों का नहीं है। जो जरा-जरा सी दिक्कतों को देखकर अपने बढ़े हुए कदम पीछे हटा लेते हैं, वे कौन हैं? भगोड़े हैं। और जो पहाड़ों को चकनाचूर कर देते हैं, वे कौन होते हैं? वे दिलेर होते हैं, हिम्मत वाले होते हैं, साहसी होते हैं। जो साहसी होते हैं, वे ही अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं और जो साहसी नहीं होते हैं, बुजदिल होते हैं, जो कठिनाइयों से डर जाते हैं, वे लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते हैं।

जिन्हें कठिनाइयों ने घेर लिया है या वे स्वयं घिर गए हैं, फँस गए हैं, उनको कोई रास्ता नहीं दीखता। रास्ता दिखाने वाला अगर कहता भी है कि बेटे, इधर से चलिए, यह रास्ता है, लेकिन वह चलता नहीं है तो फिर गुरु किस प्रकार से देगा! बेटे, मिलेगा आपको भी। आज गुरुपर्व है। यहाँ से कोई भी खाली हाथ नहीं जाने वाला है। मैंने तो उसी दिन, जब आप लोग मिले थे, तभी कहा था कि यह वह दरवाजा है, जिससे कभी किसी की झोली आज तक खाली नहीं गई और यह वायदा है हमारा कि कभी खाली

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाएगी भी नहीं, चाहे आपकी झोली में एक नया पैसा ही क्यों न पड़ने वाला हो। हम अपना घर खाली कर देंगे, लेकिन आपकी झोली हम जरूर भरेंगे। हम फिर कमा लेंगे। अपने लिए हम माँगेंगे नहीं, लेकिन आपके लिए माँगेंगे और हमेशा आपकी झोली भरते रहेंगे। हमारा यह आपसे पूरा वायदा है।

एहसान नहीं, कर्त्तव्य

हमारे जितने परिजन यहाँ बैठे हुए हैं, उनमें से कितने ऐसे हैं, जो किन-किन कठिनाइयों में से, जिंदगी और मौत में से निकलकर आए हैं। क्या वे कह सकते हैं या सोच सकते हैं कि इसके पीछे किसका हाथ है? बेटे, उसी का हाथ है, जिसने आपकी उँगली पकड़ी है और आपने उनके चरण पकड़े हैं और आपने उनका पल्ला पकड़ा है और उन्हीं के हो गए हैं। चलिए, यह उनकी महानता है कि आज तक उन्होंने अपने मुँह से यह नहीं कहा कि मैंने फलाँ व्यक्ति की मदद की है। बेटे, यह उनकी उदारता है जो उनने नहीं कहा, लेकिन आज मैं कहती हूँ कि उनके यहाँ रहते हुए किन-किन संकटों में से लोगों को निकाला गया है, उनको उबारा गया है। वे गुरु हैं और आप बच्चे हैं, आपको मिलना ही चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि आपके ऊपर कोई एहसान किया गया है, नहीं बेटे, आपके ऊपर कोई एहसान नहीं किया गया है। हम इसको अपना फर्ज, अपना कर्त्तव्य और अपनी जिम्मेदारी समझते हैं और उसमें से आपको निकालने का प्रयास करते हैं और कई बार तो निकाल ही देते हैं। चलिए, मैं आपको एक घटना सुनाती हूँ।

अभी दो महीने हुए, यहाँ एक व्यक्ति आए और उन्होंने यह कहा कि माताजी! आप हमको नहीं जानतीं और हम आपको नहीं जानते। हाँ बेटे, कई बार लड़के आते हैं और कई-कई साल हो गए उनको आते, फिर भी मैं पूछ बैठती हूँ कि बेटा! तू कहाँ से आया है? तू क्या काम करता है? नाम से तो जानती हूँ, लेकिन कई बार चेहरा भूल जाता है। मैंने उससे कहा, हाँ बेटे, ऐसा ही है, तुम बताओ, क्या कहना चाहते हो? उन्होंने कहा कि देखिए, यह जो चेहरा आज दिखाई पड़ रहा है, यह गुरुजी का और आपका दिया हुआ है। बेटा! कैसे? जब हम तुमको नहीं जानते और तू हमको नहीं जानता तो फिर हमारा और गुरुजी का दिया हुआ कैसे हो सकता है! बता तो सही।

उन्होंने कहा कि माताजी, मेरी गाड़ी पर उग्रवादियों ने सत्तर गोलियाँ चलाईं, जिनसे मेरे तीन व्यक्ति मारे गए। उनमें मेरा बॉडीगार्ड भी था और चालक था तथा एक और व्यक्ति था, लेकिन मैं बच गया। उस समय मैं यही सोच रहा था कि गुरुजी से मुझे जुड़े हुए अभी थोड़े ही दिन हुए हैं और अभी मैंने उस पवित्र भूमि को आँखों से भी नहीं देखा। अब थोड़े दिन बाद ही उस पवित्र भूमि के दर्शन करने जाऊँगा, जहाँ से मुझे प्रेरणा मिली है। जहाँ से मुझे मार्गदर्शन मिला है और यह सब अनदेखे ही मिला है। उसको मैं प्रणाम करने जाना चाहता था। कहते हैं कि गुरुजी तो नहीं मिलते, तो क्या मुझे माँ भी जीवन में नहीं मिलेगी। बेटे, उसको एकाएक ऐसा महसूस हुआ, जैसे दोनों ओर उसके हम दोनों बैठे हैं और सिर पर हाथ रखे हैं।

मैंने कहा कि बेटे, यह तेरा विश्वास है। भगवान ने तुझे बचा लिया, हम तो क्या थे, हम औरों को क्यों न बचा लें जो इतनी जानें जा रही हैं। बेटे! तेरी जान बच गई, भगवान करे, तू दीर्घायु हो, लेकिन बेटे अब तू बच गया है तो ऐसा मत करना कि बीबी और बच्चों के लिए ही अपनी सारी जिंदगी खपा डाले। जिस गुरु ने वहाँ जाकर तुझे बचाया, इतना कष्ट उठाया, जहाँ गोलियों से तुझे भूना जा रहा था, तू मरने वाला था। तब भी तो तू अपने बीबी-बच्चों से अलग होता कि नहीं, तो आज से तू उस समाज का, उस मिशन का बेटा है और तू भाई है, अतः सेवा कर। हाँ माताजी! यही चाहता था। मैंने कहा कि वेदपाल सिंह, पहले तू यह तो बता कि क्या तू मंत्री बनना चाहता है या काँग्रेस का हरियाणा का उपाध्यक्ष या फिर तुझे मुख्यमंत्री की जगह दिला दूँ। मैंने हँसते-हँसते यों ही कह दिया। वह बोला—अरे, नहीं माताजी! मुझे नहीं चाहिए यह, और न ही यह कल्पना करके मैं आया हूँ। मैं तो केवल आशीर्वाद लेने आया हूँ। अपने देश के लिए, अपने राज्य के लिए मेरे विचार पवित्र बने रहें और अगर कोई कष्ट-कठिनाई भी आए तो मैं उसे हँसते-हँसते झेल लूँ, बस, यही आशीर्वाद लेने आया हूँ। थोड़े ही दिन से वह जुड़ा हुआ था। जिसने यहाँ देखा भी नहीं था, बेटे! उसे जीवनदान मिल गया।

अनुदान : गुरु का फर्ज

बेटे! अभी मैं अनुदानों की बात सुना रही थी, क्योंकि यह हमारा फर्ज है। एक लड़का और था पंजाब का। शायद पंजाब या चंडीगढ़ का कोई लड़का बैठा भी हो यहाँ पर, तो उसके ऊपर मुकदमे चल रहे थे। उसका ऐसा संगीन मुकदमा था कि शायद वह जेल में पहुँच जाता और जिंदगी भर उसका उससे पीछा नहीं छूटता, क्योंकि उसका 'बॉस' भी उसी चक्कर में फँसा हुआ था। एक रात को जब वह सोया तो उसे लगा कि मुझे दो बजे जगाया गया है और गुरुजी ने मुझे जगाया है कि चल बेटे, तू उठ, तेरा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मुकदमा है और तू सो रहा है। आज तुझे पूजा-प्रार्थना नहीं करनी है क्या? मैं उठ गया। रात देर से सोया था, अत: फिर से सो गया। फिर से सो गया तो ढाई बजे मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि मैं सोता हुआ ही बैठा दिया गया और जब मैंने आँखें खोलीं तो मुझे प्रत्यक्ष गुरुजी दिखाई पड़े। जब से मैंने दीक्षा ली है, तब से जब मैं किसी भी काम को जाता हूँ तब मैं आप दोनों को प्रणाम किए बगैर घर से कभी नहीं जाता। जब मैंने मुड़कर देखा तो वे कह रहे हैं कि यह बता कि यह तेरा जो मुकदमा चल रहा है तो ये जो सज्जन खड़े हैं, क्या इन्हीं की अदालत में है? मैंने निगाह उठाकर देखा तो मुझे महसूस हुआ कि क्रीम कलर की पगड़ी पहने जो एक और सज्जन खड़े हैं, उन्हीं के पास मेरा केस था। मैंने कहा कि हाँ गुरुदेव! इन्हीं के पास है। उन्होंने कहा, तो जा।

जब मेरी आँख खुल गई तो मुझे चैन नहीं पड़ा। नहा-धोकर मैं पूजा-प्रार्थना में बैठा तो मेरा मन नहीं लगा, तो मैं गाड़ी में चल दिया। रास्ते में मुझे एक व्यक्ति मिला जो वकील था। उसने कहा कि तुम्हारा मुकदमा चल रहा है और मैं तेरा वकील हूँ। मैंने कहा कि मैंने तो आपको वकील रखा ही नहीं है, मेरा तो वकील दूसरा है और मैं निश्चिंत हूँ। मुझे और कोई वकील नहीं चाहिए। जाने कौन है, चोर है, ठग है और चाहता क्या है? मैं यह सोच रहा था कि वह चला गया। जब वह अदालत में पहुँचा तो उसने कहा कि मैं हैरत में रह गया। पहले तो मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं स्वप्न देख रहा हूँ, क्योंकि गुरुजी ने मुझे उठाया है और स्वप्न में ही मुझे दिखाया है, लेकिन अब जो मैं देख रहा हूँ कि वही क्रीम कलर की पगड़ी पहने वह व्यक्ति जज की कुर्सी पर बैठा है, जिसे कि रात में गुरुजी ने दिखाया था। बेटे! मैं तो आपसे इतना ही कह रही हूँ, लेकिन पिछले दिन एक सज्जन और आए थे, जो उसी के कोई दोस्त थे। उन्होंने कहा कि माताजी! यही नहीं, जिस समय वह जजमेंट दे रहा था तो यह प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता था कि उसके सिर पर दो हाथ गुरुजी ने प्रत्यक्ष रखे हैं। दो हाथ प्रत्यक्ष दिखाई पड़ते थे, लेकिन चेहरा नहीं दीखता था। वह इतना जाहिल, जल्लाद और खूँख्वार जज था कि वह उसे क्यों जीतने देता, लेकिन उसने फटाफट फाइल को देखा और जैसे वह इसी के लिए उस दिन आया है, उस दिन उसने सिर्फ एक ही मुकदमा अपने हाथ में लिया था और उसमें हम विजयी हुए।

बेटे! उस मुकदमे में केवल वही नहीं जीत गया, वरन् उसका बॉस भी जीत गया। इसके बाद उसने जो खर्रा लिखा, रजिस्टर में से कोई चार पन्ने लिखे होंगे। पहले तो मैंने कोई एकाध लाइन पढ़कर उसे रद्दी की टोकरी में डालना चाहा कि तभी एक लाइन काम की दीख गई। मैंने कहा, इसे पढ़ना चाहिए। जज वाली बात को मैं जानती थी, इसलिए कहा कि यह बात ठीक है।

बेटे! मैं यह चमत्कार की बात नहीं बता रही हूँ, मैं तो यह कह रही हूँ कि ये अनुदान मिलते रहे हैं और मिलते रहेंगे। यह गुरुजी की सूक्ष्मीकरण साधना का प्रभाव है और फिर आप तो उनसे जुड़े हुए हैं, बँधे हुए हैं। यदि आपको अनुदान मिलता है तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है, मिलना ही चाहिए आपको और मिलेगा भी। इसके साथ-साथ जब बिना माँगे ही हमको मिल रहा है, बिना माँगे ही अनुदानों से हमारी झोली भरी जा रही है, फिर उसकी थोड़ी-सी कीमत हम चुका दें तो क्या हर्ज है! उसकी कीमत आप तो क्या, बेटे, कभी चुकाई ही नहीं जा सकती। गुरु की कीमत तो बेटे, कभी चुकाई नहीं जा सकती। और उन अनुदानों की, जो जाने और अनजाने हमको प्राप्त होते रहे हैं और हो रहे हैं, उनकी कीमत चुकाइए? नहीं बेटे, हजार जन्म में भी नहीं चुकाई जा सकती। हाँ, कुछ करने के लिए साहस किया जा सकता है। जो अनुदान मिले हैं, उन अनुदानों को यदि पेटी में रख दिया गया तो वे पेटी में बंद रखे रहेंगे। फिर वे किस काम आएँगे! जो अनुदान मिला है, जो जिम्मेदारी मिली है और जो रास्ता दरसाया गया है, उस पर चलना है। निरंतर आप उस रास्ते पर चलिए। अगर आप चलेंगे तो पाएँगे कि जितना आपको मिला है, उससे और चौगुना, आठ गुना, सौ गुना और लाखों गुना मिल सकता है, लेकिन आपने तो उसको खरच कर दिया है।

अनुदान लगें लोक-मंगल में

बेटे! अनुदान जिस उद्देश्य के लिए दिया गया था, आपने उसी उद्देश्य में किया या नहीं किया? अगर आपने उसमें नहीं किया है तो मैं समझती हूँ कि वह निरर्थक चला गया और यदि लोक-मंगल में लगाया है तो मैं कहती हूँ कि लाखों गुना और करोड़ों गुना मिलने वाला है। बेटे! अपने जीवन में यही हुआ। जो कुछ भी हम बने हैं, उस महान गुरु की सत्ता ने बनाया है। चारों वेदों से लेकर एक सौ आठ उपनिषदों तक, छहों दर्शनों से लेकर अठारह पुराणों तक और आप सबकी सेवा करने तक, आखिर किसने बनाया? गुरु ने बनाया। अपने को सौंप दिया और हम निहाल हो गए। इसी तरीके से यदि आप भी अपने को सौंप पाएँ तो आप और भी ज्यादा निहाल हो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकते हैं। होंगे तो अभी भी, यह हमारा वायदा है। इस साल जो भी यहाँ से जाएँगे, आप देख लेना, मैंने कभी कहा तो नहीं है, लेकिन आज मैं हिम्मत करके कह रही हूँ, बेटे, आप सालभर के भीतर देखना कि आपकी आर्थिक स्थिति क्या है ? आप तो भौतिक सफलताएँ चाहते हैं न, तो वे भी मिलेंगी, लेकिन हम उनको नाचीज समझते हैं। बेटे, हम जो भी आपको देना चाहते हैं, वह आध्यात्मिक शक्ति देना चाहते हैं। यही बात मैं कल अपने लड़कों से कह रही थी कि बेटे, यहाँ चार दिन के लिए आपको बुलाया गया है। अबकी बार विशेष अनुदान, विशेष शक्ति दी जा रही है और आपकी बैटरी चार्ज की जा रही है। आपको दिखाई नहीं पड़ रहा है, लेकिन बेटे आपकी बैटरी चार्ज की जा रही है, आपको शक्ति दी जा रही है। जो आपकी लंबी यात्रा को पूरी कराएगी। आपको लंबी यात्रा पूरी करनी है और सारे जीवन आपको उस पथ पर चलना है।

एक छलाँग भर लगानी है

बेटे! आज के दिन हमको चिंतन करना चाहिए कि जिसने सारी जिंदगी हमारे लिए खपा डाली, हमको दे डाली, उसके हाथ खाली हैं। उसके पास कुछ नहीं है, सब कुछ दे दिया। अपना खजाना खाली कर दिया। क्या आपने इन अनुदानों का मूल्यांकन किया? अगर किया जाना है तो एक ही रूप में किया जाना है कि आपको थोड़ी-सी हिम्मत करनी है। एक छलाँग लगानी है। जैसा कि मैंने कल आपसे निवेदन किया था कि इस साल बेटे आपको हीरा बनना है। हीरा कब बनता है ? जबकि वह कोयले की खदान से बाहर निकलता है और कारीगर के हाथ में पड़ जाता है। कारीगर उसको तराशता है, अनेक एंगिलों से उसको बनाता है, तब उसमें से चमक निकलती है। उसी का नाम हीरा है, जो करोड़ों रुपये का होता है और आपकी क्या कीमत है ? अभी आपकी कीमत एक कौड़ी भी नहीं है। आप अभी मरकर जाएँगे और मिट्टी में मिल जाएँगे। जानवर की खाल तब भी काम आती है, परंतु इनसान की किसी काम में नहीं आती। अभी आपकी हस्ती मिट्टी में मिल जाने वाली है, लेकिन आपने अगर अपने को हीरा बना लिया तो बेटे, ऐसी कोई हस्ती नहीं है जो आपको मिट्टी में मिला दे।

बेटे, हमने जो पथ आपको दिखाया है, अगर आप उस पर चलें तो फिर आप मिट्टी में नहीं मिलेंगे। हम आप के साथ हैं। फिर आपका मूल्य कौड़ी का नहीं है। आपके ऊपर तो फिर करोड़ों-करोड़ों रुपये निछावर करके फेंक देंगे, वह मूल्य है आपका। हीरे का यही तो मूल्य होता है। एक करोड़-दो करोड़—जितने में भी बिकता होगा, जो कुछ भी उसकी कीमत होती होगी। लेकिन इंसान की कीमत कभी आँकी नहीं गई। गांधी जी का जब देहावसान हुआ तो विदेशों में लोगों ने माँग की कि इनका जो सिर है, वह मिलना चाहिए। वे उस पर रिसर्च करना चाहते थे। ऐसे महामानव, संत और राष्ट्रपिता में खूबी क्या है ? हिंदुस्तान वालों ने कह दिया, चल, हम अपने पिता का सिर देंगे ? मूल्य लेंगे उसका ? हमको नहीं चाहिए उसकी कीमत, चाहे वह अरबों-खरबों रुपये की ही क्यों न हो।

अंतरंग से गुरु को स्वीकार करें

बेटे! इनसान की कीमत बहुत है, यदि उसको सही दिशा मिल जाए और वह सही दिशा में चलने लगे तो। आपको सही दिशा तो मिल गई है, पर उस पर चलना अब आपका काम है कि आप सही दिशा में चलेंगे या उलटी दिशा में चलेंगे। आपने उस दिशा को स्वीकार किया है कि नहीं किया है ? आपने अपने गुरु को जीभ से स्वीकार किया है या अंतरंग से स्वीकार किया है ? अंतरंग से किया है तो गुरु आपके साथ हैं और हर समय आपके साथ हैं, चाहे वे दिखाई नहीं पड़ते हों। दिखाई नहीं पड़ते हैं तो क्या हुआ, शक्ल ही तो दिखाई नहीं पड़ती है, लेकिन जो सारा-का-सारा विराट रूप है उनका, क्या वह आपको दिखाई नहीं पड़ता? आप इसमें झाँककर क्यों नहीं देखते ? क्यों नहीं अपनी माँ की छवि में अपने गुरु को देखते ? जब आपके सामने एक मौजूद है तो फिर आपने उसमें अपने गुरु को क्यों नहीं झाँका ? आप झाँकिए और उनको अपना काम करने दीजिए। आप बाध्य मत कीजिए। आप यह मत कहिए कि हम अनाथ हो गए हैं, हमको गुरुजी के दर्शन नहीं होते हैं। बेटे, आप अनाथ नहीं हो गए हैं। जब तक मैं बैठी हूँ, आप अनाथ नहीं हो सकते हैं। मैं वायदा करती हूँ कि आप कभी भी अनाथ नहीं हैं और न कभी अनाथ हो सकते हैं। फिर आपके मुख से यह निकल कैसे जाता है ?

बेटे! आपने गुरुजी के विराट रूप को क्यों नहीं देखा ? केवल शक्ल तक ही आप सीमित कैसे रह गए ? क्यों नहीं पहचाना उनके विराट स्वरूप को ? आपने उन्हें अंतरंग में क्यों नहीं बैठाया ? जिसने अंतरंग में बैठा लिया, बेटे, मैं कहूँगी कि वह हमारा लड़का महान है, चाहे वह किसी भी स्थिति में क्यों न हो। मैं उसको पैसे से नहीं तौलती, वरन् उसकी जीवात्मा से तौलती हूँ, क्योंकि जीवात्मा की दृष्टि से ही तो हम उनके गुरु बने हैं और ये मेरे बालक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बने। बेटे! मैंने उस रोज कहा था विदाई वाले दिन कि मैं अपने राम की सीता हूँ। चलिए, वे भगवान थे तो मैं एक संत की, ऋषि की पत्नी हूँ। फिर बेटे, तुम्हारे गुरुजी का नाम भी तो श्रीराम है तो फिर मैं कौन हुई, सीता हुई कि नहीं? रहने दे, नाम भगवती है तो क्या मतलब, आखिर पत्नी हूँ उनकी। एक मायने में तो मैं कहती हूँ कि सीता से भी ज्यादा हूँ। वह इस नाते कि सीता के दो बच्चे थे लव और कुश, लेकिन अहा... यह माँ तो कैसी धन्य है! इसका कलेजा तो अपने बच्चों को देखकर और ज्यादा फूल जाता है, जहाँ लाखों-करोड़ों की संख्या में बच्चे हैं। इसलिए बेटे! तो मैं कहती हूँ कि शायद इस मायने में सीता भी मुझसे छोटी पड़ती हों। शक्ति के मायने में मैं भगवान की बराबरी नहीं करती, उस मायने में मैं नहीं कहती, लेकिन उस शक्ति की बराबरी जरूर कर रही हूँ कि मैंने दो बच्चों को जन्म नहीं, हजारों-लाखों बच्चों को जन्म दिया है। पिता ने दिया है और माँ ने दिया है। पिता ने दिया है सिद्धांत से और माँ ने दिया है दुलार से।

सिद्धांत के साथ दुलार

बेटे! उन्होंने आपको सिद्धांत दिए हैं, प्रेरणा दी है तो दुलार मैंने भी दिया है। मेरा भी आपके ऊपर उतना ही अधिकार है, जितना कि आपकी सगी माँ का अधिकार है। आप न समझते हों तो मत समझिए। पर हम तो राम बादशाह हैं। स्वामी रामतीर्थ कहते थे कि ये सारा विश्व हमारा है और ये सारे बाग-बगीचे और जो बैंकें हैं, वे सब हमारी हैं। आपकी हैं, तो क्या आपकी जेब में पैसा है? हाँ है। अच्छा तो आपका बैंक कहाँ है? अरे बेटे! ये ख्वाबों की दुनिया है और जब ख्वाब करने ही हैं तो ऊँचे क्यों न किए जाएँ! ऊँचाई की ओर क्यों न देखा जाए! हमें ऊँचाई की ओर ही उठना चाहिए।

बेटे! मैं फिर उसी बात पर आती हूँ कि आज का यह महान पर्व है। आज यह आत्मचिंतन का पर्व है। अभी तक जितने अनुदान आपको मिले हैं और जो मिलने जा रहे हैं, आप उनका चिंतन कीजिए और उस चिंतन में डूब जाइए, सराबोर हो जाइए। आप गुरुजी में मिल जाइए और गुरुजी आप में। आप जब उनमें मिल जाएँगे तो आपको आत्मसाक्षात्कार हो जाएगा। आप जब उनको अपने में मिला लेंगे और उनमें आप मिल जाएँगे तो आपको अनुभव होगा कि गुरुजी हमारे हैं। बेटे! मुझको यह अनुभव होता है। जब मैं पहली बार यहाँ स्टेज पर आई थी तो बैठ नहीं पा रही थी। भीतर-ही-भीतर मेरी अजीब हालत हो रही थी और मुझे स्पष्ट अनुभव हो रहा था कि वे हमारे पास बैठे हैं। वे हमेशा इधर को बैठते थे और मैं उधर को बैठती थी। अभी भी देख लो, दो मसनद लगा रखे हैं। एक उनका लग रहा है और एक मेरा लग रहा है। दोनों के ही लगे हैं। गुरुजी हमेशा हमारे साथ हैं। बेटे, जब कभी मैं कहीं जाती थी तो रिक्शे में सबसे पहले वे मुझे ही बैठाते थे और कहते थे—पहले तुम बैठो, पीछे मैं बैठूँगा और उतरती भी पहले मैं ही थी। आज जब मैं गाड़ी से उतरी तो मुझे लगा कि वे मेरे पीछे उतर रहे हैं। उस समय की जो हालत थी, मैं आपको वर्णन नहीं कर सकती। यह पहला दिन था। यह देखकर बच्चे पानी लेकर भागे आए कि माताजी को क्या हो गया, क्या बात हो गई! बात कुछ नहीं हुई। मैंने अनुभव किया कि हर समय गुरुजी हमारे साथ हैं, पर उस समय वे दिखाई नहीं पड़े, मैं अकेली थी, ऐसा भी नहीं लगा, न मालूम भीतर ऐसा क्या लगा कि मैं भावनात्मक गहराई में डूबती चली गई।

बेटे! आपको उनकी शक्ल न दिखाई पड़ती हो तो क्या हुआ, वे आपके साथ हैं। यह गुरुपूर्णिमा का पर्व और यह संदेश उन्हीं का है। शब्द मेरे हैं, पर भावप्रेरणा उन्हीं की है। फिर आज उन्होंने कहलवा ही डाला कि दोनों एक हैं। हम दोनों एक ही हो गए। बेटे, आज अनेक शुभकामनाएँ हमारे सभी बच्चों को, जो हमारे यहाँ उपस्थित हैं और जो नहीं हैं, उन सभी के लिए भी हमारी दोनों की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ और आशीर्वाद।

॥ ॐ शांतिः ॥

✣

एक चित्रकार ने एक सुंदर बालक का चित्र बनाया। वह चित्र इतना पसंद आया कि उसकी लाखों प्रतियाँ बिक गईं। पंद्रह वर्ष बाद वह दुष्ट के भाव प्रकट करने वाला एक चित्र बनाना चाहता था। कारागार जाकर एक खूंखार कैदी से बोला, ''मैं तुम्हारा चित्र बनाना चाहता हूँ।'' कैदी ने पूछा, ''क्यों?'' चित्रकार ने अपना विचार बताते हुए उसे 'बालक' का चित्र दिखाया। कैदी उस चित्र को देखकर रोने लगा और बोला, ''यह चित्र मेरा ही है।'' चित्रकार हतप्रभ रह गया और बोला, ''यह कैसे हुआ?'' कैदी का उत्तर था, ''सांसारिक आकर्षणों में भटककर अपना जीवन लक्ष्य भूलने से।''

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

अध्यात्म साधना का मर्म-१

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

माध्यम नहीं, लक्ष्य समझना जरूरी

देवियो, भाइयो! विद्यार्थी बी.ए. पास करते हैं, एम.ए. पास करते हैं, पी-एचडी. करते हैं। किससे लिखते हैं? पार्कर की कलम से लिखते हैं। क्या कलम आवश्यक है? हाँ बहुत आवश्यक है, लेकिन अगर आपका यह ख्याल है कि कलम के माध्यम से आप तुलसीदास बन सकते हैं, कबीरदास बन सकते हैं और एम.ए. पास कर सकते हैं, पी-एचडी. पास कर सकते हैं तो आपका यह ख्याल एकांगी है और गलत है। जब दोनों का समन्वय होगा तो विश्वास रखिए कि जो लाभ आपको मिलना चाहिए वह जरूर मिलकर रहेगा। किसका समन्वय? कलम का समन्वय, हमारे ज्ञान और विद्या, अध्ययन का समन्वय। ज्ञान हमारे पास में हो, विद्या हमारे पास में हो, अध्ययन हमारे पास में हो और कलम हमारे पास बढ़िया से-बढ़िया हो तो आप क्या ख्याल करते हैं कि उससे आप वह सब पूरा कर सकते हैं? नहीं, पूरा नहीं कर सकते हैं।

इसी तरह अच्छी साइकिल हमारे पास हो तो हम ज्यादा अच्छा सफर कर सकते हैं, लेकिन साइकिल के साथ-साथ हमारी टाँगों में कूबत भी होनी चाहिए। टाँगों में बल नहीं है तो साइकिल चलेगी नहीं। सीढ़ी अच्छी होनी चाहिए, जीना अच्छा होना चाहिए ताकि उसके ऊपर चढ़कर हम छत तक जा पहुँचें, लेकिन जीना काफी नहीं है। टाँगों की ताकत भी आपके पास होनी चाहिए। टाँगों में ताकत नहीं होगी तो आपके पास जीना अच्छा बना हुआ है, सीढ़ियाँ अच्छी बनी हुई हैं तो भी आप छत तक नहीं पहुँच सकते।

मित्रो! माध्यमों की अपने आप में एक बड़ी उपयोगिता है और उनकी बड़ी आवश्यकता है। मूर्तियाँ किससे बनती हैं? छैनी-हथौड़े से बनती हैं। अच्छा, एक पत्थर का टुकड़ा हम आपको देंगे और छैनी हथौड़ा भी देंगे। आप एक मूर्ति बनाकर लाइए। एक हनुमान जी की मूर्ति बनाकर लाइए। अरे साहब! हमने तो पत्थर में छैनी मारी और वह तो टुकड़े टुकड़े हो गया। हनुमान जी नहीं बने? नहीं साहब, हनुमान जी नहीं बन सकते। तो आप छैनी की क्या करामात कह रहे थे? फिर आप हथौड़े की करामात क्या कह रहे थे? हथौड़े और छैनी की करामात है जरूर, हम इसे मानते हैं। जितनी भी मूर्तियाँ दुनिया में बनी हैं, वे सारी-की-सारी मूर्तियाँ छैनी और हथौड़े से ही बनी हैं, लेकिन छैनी और हथौड़े के साथ-साथ उस कलाकार और मूर्तिकार के मस्तिष्क और हाथों को भी सधा हुआ होना चाहिए। हाथ सधे हुए नहीं हैं, मस्तिष्क सधा हुआ नहीं है और छैनी हथौड़ी आपके पास है तो आप मूर्ति नहीं बना सकते।

चित्रकारों ने बढ़िया से-बढ़िया चित्र किस माध्यम से बनाए हैं? ब्रुश के माध्यम से। ब्रुश से क्या बनता है? तस्वीरें बनती हैं, पेंटिंग बनती हैं। अच्छा चलिए, हम आपको एक ब्रुश जैसा भी आप चाहें, मँगा सकते हैं और आप एक पेंटिंग बनाकर दिखाइए, एक तस्वीर बनाकर दिखाइए। नहीं साहब, हमसे नहीं बन सकती। हमने आपको ब्रुश दिया था। ब्रुश तो आपने अच्छा दिया था। ब्रुश सही भी था। बिलकुल सही तस्वीरें बनतीं, यह बात भी सही है। चूँकि हमारे पास खाली ब्रुश था, चित्रकला के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, इसलिए हम उसमें सफल न हो सके और चित्र नहीं बन सका।

क्रियायोग एवं भावयोग

आध्यात्मिकता के दो भाग, दो हिस्से हैं। एक हिस्सा वह है, जिसको 'क्रियायोग' कहते हैं और दूसरा हिस्सा वह है, जिसको हम 'भावयोग' कहते हैं। क्रियायोग के माध्यम से हमको भावयोग जाग्रत करना पड़ता है। असल में शक्ति इस शरीर में नहीं है, वस्तुओं में नहीं है। धूपबत्तियों में क्या ताकत हो सकती है? वह हवा को ठीक कर सकती है। दीपक में क्या ताकत हो सकती है? वह उजाला कर सकता है। हमारी जीवात्मा में क्या दीपक बल दे सकता है? नहीं, दीपक जीवात्मा में कोई बल नहीं दे सकता, क्योंकि वह वस्तु है, पदार्थ है, मैटर है, जड़ है। जड़ चीजें हमको फायदा दे सकती हैं, लेकिन चेतना को

कोई लाभ नहीं दे सकतीं। सूर्य नारायण को जो पानी हम चढ़ाते हैं तो क्या वह हमारी आत्मा को बल दे सकता है? नहीं बेटे, सूर्यनारायण को चढ़ाया हुआ पानी उस जमीन को तो गीली कर सकता है, जहाँ पर आपने पानी फैला दिया था। हमारी आत्मा को बल नहीं दे सकता और क्या सूर्यनारायण तक वह जल पहुँच सकता है? नहीं पहुँच सकता। देख लीजिए आपका चढ़ाया हुआ जल जमीन पर पड़ा हुआ है, सूर्यनारायण तो लाखों मील दूर है। कैसे पहुँच सकता है।

फिर आप क्या कह रहे थे? बेकार की बातें बताते हैं आप हमको। नहीं बेटे, हम बेकार की बातें नहीं बताते। हम तो ये बताते हैं कि क्रियायोग के माध्यम से भावयोग का जागरण करने का उद्देश्य पूरा होता है। एक मीडियम होता है और एक लक्ष्य होता है। एक 'ऐम' होता है। दोनों को अगर आप मिलाकर चलेंगे, तब तो कुछ बात बनेगी और अगर आप दोनों को मिलाकर नहीं चलेंगे तो वही होगा जो आज एकांगी क्रियायोग से हो रहा है। एकांगी 'क्रियायोग' आज बादलों की तरह से, आसमान की तरह से, रावण के चेहरे की तरीके से बढ़ता हुआ चला जा रहा है और प्राण उसमें से निकलता हुआ चला जा रहा है। इससे हर आदमी को शिकायत करनी पड़ती है कि हमारा अध्यात्म से कोई उद्देश्य पूरा नहीं होता और अध्यात्म से कोई लाभ नहीं होता और अध्यात्म से हमको भगवान नहीं मिलते और अध्यात्म से हमको शांति नहीं मिलती। अध्यात्म से हमें अमुक नहीं मिलता। बेटे, कुछ नहीं मिलेगा, क्योंकि तेरे पास क्रियायोग है। क्रियायोग का उद्देश्य भावयोग का समर्पण है, अगर यह बात आपकी समझ में आ जाए तो आपको कम से-कम रास्ता जरूर मिल जाएगा।

वास्तविकता को समझें

आप भजन करें तो आपकी मरजी, न करें तो आपकी मरजी, लेकिन मैं यह जरूर चाहता हूँ कि आपको वास्तविकता की जानकारी होनी ही चाहिए। अगर आपको वास्तविकता की जानकारी नहीं है तो आप उसी तरीके से अज्ञान में भटकने वाले लोग हैं, जैसे कि दूसरे लोग और तीसरे लोग अज्ञान में भटकते हैं। आपकी पूजा-उपासना भी अज्ञान में भटकने के अलावा और कुछ नहीं हो सकती है। अगर आपने यह ख्याल करके रखा है कि इस कर्मकांड के माध्यम से, क्रियायोग के माध्यम से आप लक्ष्य को पूरा कर सकते हैं तो यह लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता। लक्ष्य कैसे पूरा हो सकता है? लक्ष्य को पूरा कौन करता है? आत्मा को भगवान की शक्तियाँ कहाँ से मिलती हैं? आत्मा क्या होती है? इस पर विचार करना चाहिए। हमारी चेतना ही परमपिता परमात्मा की चेतना के साथ में मिल सकती है। चेतना के साथ चेतना मिल सकती है। जड़ के साथ जड़ मिल सकता है, आप यह ध्यान रखिए।

मित्रो! चेतना हमारी जीवात्मा है और वह विचारपरक है, भावपरक है, संवेदनापरक है और भगवान? भगवान भी विचारपरक है, भावनापरक है और संवेदनापरक है। दोनों की भावना और विचारणा जिस दिन मिलेगी, उस दिन आपको भगवान के मिलने का आनंद मिल जाएगा। आपको साक्षात्कार का आनंद मिल जाएगा। युगनिर्माण का साक्षात्कार मिल जाएगा। जब तक आप मैटर को मैटर से पकड़ने की कोशिश करेंगे, उस दिन तक अज्ञान में भटकने वाले लोगों में आपका नाम भी लिखा जा सकता है। अज्ञान में भटकने वाले लोग वह हैं, जो आँखों के द्वारा मिट्टी से बने हुए शरीरों को देखने के बारे में ख्वाब देखते रहते हैं कि भगवान जी का साक्षात्कार

हमें घर-घर पहुँचा दें

—परमपूज्य गुरुदेव

परमपूज्य गुरुदेव के मूर्तिमान स्वरूप वाङ्मय को घर-घर पहुँचाने के लिए निष्ठावान परिजनों की आवश्यकता है। जो भाई इस कार्य हेतु अपने को योग्य समझते हों, निम्नलिखित विवरण सहित अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा से संपर्क करें। समयदान की अवधि दो माह की रहेगी। टोलियाँ प्रत्येक माह की १ तथा १५ तारीख से निकलेंगी।

विवरण—नाम-पता, फोन नं. (एस. टी. डी. कोड सहित), शैक्षिक योग्यता, आयु, मिशन से कब जुड़े, मिशन संबंधी योग्यता, पद/व्यवसाय, कब से कब तक का समयदान आदि।

व्यवस्थापक
अखण्ड ज्योति संस्थान,
मथुरा

होना चाहिए। अच्छा साहब! कैसा भगवान जी का साक्षात्कार चाहते हैं। हम तो ऐसे रामचंद्र जी का साक्षात्कार चाहते हैं, जो तीर-कमान लेकर घूमते रहते हों। अच्छा तो शरीर किस चीज का बना हुआ होगा, जो आप देखना चाहते हो? साहब, शरीर तो आखिर शरीर ही है, जो मिट्टी-पानी का बनता है, तो आप मिट्टी-पानी के रामचंद्र जी को देखना चाहते हो? हाँ साहब, मिट्टी-पानी के रामचंद्र जी को देखना चाहते हैं।

और किसको देखना चाहते हो? तीर-कमान वाले को देखना चाहते हैं। तीर-कमान किसका बनता है? बाँस का बनता है। बाँस का तीर-कमान धारण करने वाले, मोर-मुकुट पहनने वाले और हाड़-मांस का शरीर धारण करने वाले भगवान को आप देखना चाहते हैं? आप उन्हें किससे देखना चाहते हैं? आँख से देखना चाहते हैं। आँखें किस चीज की बनी हुई हैं? चमड़े की बनी हुई हैं, मांस की बनी हुई हैं। तो आप मांस से मांस को देखना चाहते हैं? यही मतलब है न आपका? आप मैटेरियल से मैटेरियल को देखना चाहते हैं। प्रकृति से प्रकृति को देखना चाहते हैं। फिर तो आपको भौतिकवादी कहना चाहिए। यह अध्यात्मवाद नहीं हो सकता।

अध्यात्म का मर्म

अध्यात्मवाद क्या होता है? अध्यात्म उस चीज का नाम है, जिसमें वस्तुओं का प्रयोग तो करते हैं, समर्थ चीजों का प्रयोग तो करते हैं, मसलन पानी का प्रयोग, चावल का प्रयोग, अक्षत का प्रयोग, शक्कर का प्रयोग, घी का प्रयोग, धूप का प्रयोग, दीप का प्रयोग आदि वस्तुओं का प्रयोग करते हैं और साथ-ही-साथ कर्मकांडों का प्रयोग, क्रिया-कलापों का प्रयोग करते हैं। इसमें शरीर को हिला-डुलाकर काम करते हैं, जैसे माला घुमाना आदि। माला किससे घुमाते हैं, हाथ से घुमाते हैं। माला किसकी होती है? लकड़ी की बनी होती है। क्या-क्या चीजें होती हैं, जो हाथ से घुमाई जाती हैं? बेटे, यह सब मैटेरियल है। जो मैटेरियल या भौतिक चीजें हैं, उनके उपयोग का क्या उद्देश्य होना चाहिए? साहब! भौतिक से तो भौतिक चीजें ही मिलेंगी। हाँ बेटे, चरखा कातने से अठन्नी मिल सकती है। माला घुमाने से चवन्नी मिल सकती है। महाराज जी! भगवान की बात कहिए न। नहीं बेटे! भगवान से माला का क्या ताल्लुक हो सकता है? तो फिर आप किसलिए माला कराते हैं? माला इसलिए कराते हैं कि आपकी समझ में आ जाए कि किस तरीके से हम अपनी सारी अकल, सारी शक्ति इस बात में झोंकना चाहते हैं।

मित्रो! आप एक बात समझ लें कि जो भी क्रियायोग है, उसका मकसद केवल मनुष्य की भावना का विकास करना है, भावना का परिष्कार करना है। भावना का विकास और परिष्कार करने में, भावना का शोधन करने में, आपकी संवेदनाओं को जगाने में अगर हमारी क्रिया सफल होती है तो हमारी साधना भी सफल होती है। अगर हमारी भावना से वे दूर रहते हैं, भावना को छू नहीं पाते, केवल भौतिक क्रियाकलाप से भौतिक चीजों की कामना में हम डूबे रहते हैं तो यह खाली भौतिकवाद है। भौतिकवाद के लिए हम अलग हैं और अध्यात्मवाद के लिए अलग। भौतिकवाद कीमत के बदले में कीमत चुकाना चाहता है। आप आठ घंटे काम कीजिए, हम आपको छह रुपये चुका सकते हैं। आप चार घंटे काम कीजिए, हम आपको तीन रुपये दे सकते हैं। पदार्थ की क़ीमत पदार्थ है। आपने कितनी माला जपी, उसके बदले में हम आपको उतने पैसे दे सकते हैं। आप चार रुपये रोज कमाते हैं तो फिर एक घंटा और भजन कीजिए, हम आपको अठन्नी देंगे। आप अठन्नी ले जाइए। नहीं साहब! हम शांति चाहते हैं, सिद्धि चाहते हैं, मुक्ति चाहते हैं और भगवान का अनुग्रह चाहते हैं। बेटे, इसका ताल्लुक भावना से है।

कर्मकांड नहीं, भावना प्रधान

मित्रो! कर्मकांड, क्रियाकृत्य आवश्यक हैं और वांछनीय भी, लेकिन आफत तब आ जाती है जब आप कर्मकांडों को ही सब कुछ मान बैठते हैं और भावना के संशोधन और परिष्कार की जरूरत नहीं समझते। आपको भावना के संशोधन की जरूरत समझनी चाहिए और कर्मकांडों को माध्यम समझना चाहिए और उसी के अनुरूप उनका उपयोग करना चाहिए। इसके कितने ही उदाहरण मैंने आपको दिए हैं। उदाहरण के लिए, अच्छी चिट्ठी लिखने के लिए, अच्छा लेख लिखने के लिए आपको कलम की जरूरत है। मैंने किससे कहा कि कलम की जरूरत नहीं है। बिना कलम के हम चिट्ठी नहीं लिख सकते। हमारी कलम जब खराब हो जाएगी तो हम चिट्ठी नहीं लिख सकते। इसी तरह जब हमारी जबान में छाले हो जाएँगे तो हम व्याख्यान नहीं कर सकते। इन मीडियमों की, माध्यमों की हमको बेहद जरूरत है।

आपकी जीभ तो है, लेकिन उसके द्वारा आप ज्ञान का आनंद नहीं बता सकते, जो कि एक विकसित एवं परिष्कृत व्यक्तित्व के द्वारा होना चाहिए। तो गुरुजी, हमें भी व्याख्यान सिखा दीजिए, जैसा कि आप देते हैं। बेटे, याद कर ले और तू भी वैसा ही व्याख्यान किया कर।

महीने पंद्रह दिन में तुझे अभ्यास हो जाएगा। अगर किसी ने पकड़ लिया और कहा कि अमुक विषय पर बोलिए, तब? तब बेटे कह देना कि मैंने इतनी ही नकल की है। अब मैं कहाँ से बोल सकता हूँ। अरे महाराज, आप अपने जैसा विद्वान बना दीजिए। अरे बेटा, यह ज्ञान की साधना है, अक्षरों की नकल करने से नहीं हो सकता।

इसलिए कर्मकांडों की बावत आपको एक बात साफतौर से समझ लेनी चाहिए। कर्मकांड बेहद जरूरी और बेहद आवश्यक हैं। कर्मकांड की जमीन-आसमान जैसी आवश्यकता है, लेकिन कर्मकांड अधूरा और अपंग है। वह कब अधूरा और अपंग है? जब तक उसका हमारे भावना क्षेत्र पर प्रभाव न पड़े और उसका संशोधन न हो। भाव संवेदनाओं की जाग्रति न हो, भावनाओं में कोई हेर-फेर नहीं हुआ हो। भावना और चिंतन हमारा जहाँ का तहाँ बना रहा तो आप विश्वास रखना, आपको हमेशा शिकायत करनी पड़ेगी कि हमारी पूजा बेकार जा रही है। हमारा भजन बेकार जा रहा है। हमारी उपासना बेकार चली गई, हमारा अनुष्ठान बेकार चला गया। यही एक भूल है, जिसकी चट्टान से टक्कर खाकर बहुत सारे जहाज डूब गए। बहुत-सी नावें डूब गईं और लोगों के भजन डूब गए और संन्यास डूब गए। उपासनाएँ डूब गईं और सब कुछ डूब गया। लेकिन जिन्होंने टक्कर खाकर यह समझ लिया कि कर्मकांड काफी नहीं है, वे भवसागर से पार हो गए। कर्मकांड आवश्यक तो हैं, महत्त्वपूर्ण तो हैं, पर काफी नहीं हैं। वे एकांगी और अपूर्ण हैं।

साधना : एक समग्र उपचार

मित्रो! आप यह ध्यान रखें कि दोनों का उसी प्रकार घनिष्ठ संबंध है, जिस प्रकार शरीर और प्राण का है। शरीर और प्राण को मिला देने से ही व्यक्ति जीवंत कहलाते हैं। उसी तरीके से भाव संवेदनाओं के परिष्कार एवं विचारणाओं के परिष्कार के साथ-साथ में जप के, पूजा के और उपासना के क्रियाकृत्य, कर्मकांड जब मिल जाते हैं तो एक समूची बात बन जाती है। मित्रो! हम एक समूचे आदमी हैं। बोलते हैं, चलते हैं, लेकिन अगर प्राण शरीर में से निकल जाए तो हवा में घूमने वाला प्राण आपके किसी काम का नहीं हो सकता। फिर आप कहें कि गुरुजी! जरा व्याख्यान दीजिए। अरे बेटे, हम तो भूत हैं और भूत कैसे व्याख्यान दे सकते हैं? गुरुजी! हम तो आपके पैर छूना चाहते हैं। बेटे, हम तो हवा में घूम रहे हैं, हमारे पैर कैसे छू सकते हैं? अच्छा साहब! तो गुरुदीक्षा ही दे दीजिए। अरे भाई! हम मरने के लिए बैठे हैं, अब गुरुदीक्षा का समय चला गया। अब तू कैसे गुरुदीक्षा ले सकता है?

मित्रो! मरा हुआ शरीर बेकार है और मरा हुआ प्राण बेकार है। उसी तरह भाव संवेदना के बिना कर्मकांड-क्रियाकृत्य बेकार हैं। कर्मकांडों को जीवंत बनाने के लिए भाव संवेदनाओं को जगाने की बेहद आवश्यकता है। हम किसी भूखे-प्यासे, गरीब, दुखियारे के काम आएँ और उसकी सेवा-सहायता करें तो उससे हमारी भाव-संवेदना जाग्रत हो सकती है, परंतु भाव-संवेदना जगाने के लिए कर्मकांडों की आवश्यकता को भी समझें। नहीं साहब! हम तो बड़े दयालु हैं। अच्छा! आपके अंदर बहुत दया है तो क्या आप किसी के काम आ सकते हैं? नहीं साहब! हम किसी के काम नहीं आ सकते। हम किसी की सेवा-सहायता नहीं कर सकते। तब फिर आप दयालु कैसे? किस बात के? भाव-संवेदनाएँ भी अपूर्ण हैं, अगर वे क्रियाकांडों के साथ समन्वित नहीं हैं। दोनों का समन्वय जरूरी है।

भावनाओं को परिष्कृत करें

मित्रो! अगर हमको दयालु बनना है तो हमें लोगों की सेवा करनी चाहिए, सहायता करनी चाहिए। दुखी आदमी के काम आना चाहिए। उसके प्रति हमारी आँखों में आँसू होने चाहिए। हमारे हृदय में भावनाओं का विकास होना चाहिए, अगर हम अपने भीतर विशालता विकसित करना चाहते हैं। जब हमको ज्ञान इकट्ठा करना है तो किताबों की जरूरत पड़ेगी। ज्ञानवृद्धि के लिए पुस्तकों को पढ़ना आवश्यक है, लेकिन अगर हमको ज्ञान, बुद्धि नहीं बढ़ानी है, हमको नहीं पढ़ना है तो बहुत-सी पुस्तकें लाकर जमा कर लें, उससे कोई लाभ नहीं। देखिए गुरुजी! यह रामायण की किताब, यह भागवत् की किताब, ये वेदों की किताब, चारों वेद हमने आपके यहाँ से मँगाए थे। ये सब रखे हुए हैं। बेटा, बड़ी अच्छी बात है। कोई आएगा तो कह नहीं सकता कि तू वेदपाठी नहीं है। अच्छा बता, तूने इन्हें पढ़ा है क्या? अरे महाराज जी! पढ़ा-वढ़ा तो क्या, मँगाकर रख लिया है। इससे मेरे घर में बड़ा पुण्य हो जाएगा। नहीं बेटे, इससे क्या पुण्य हो सकता है? ठीक है, तूने हमारी किताब खरीदी। इससे आठ आने हमें मिल गए, तेरी प्रशंसा हो गई। तूने वेदों की पुस्तक मँगा ली, दोनों का उद्देश्य पूरा हो गया। तू अपने घर, हम अपने घर। महाराज जी! तो क्या वेदों का ज्ञान हमें नहीं मिलेगा? नहीं बेटे, कोई ज्ञान नहीं मिलेगा, क्योंकि वेदों को तूने पढ़ा तो है नहीं। *(क्रमशः)*

❊

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

अध्यात्म साधना का मर्म-२

(गतांक से आगे)

विगत अंक (अगस्त २००३) में आपने परमपूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से जाना कि क्रियायोग एवं भावयोग का अपना महत्त्व है। भजन तो सभी करते हैं, पर वास्तविकता को न समझ पाने के कारण व्यर्थ की मृगमरीचिका में उलझकर रह जाते हैं। अध्यात्म का मर्म बताते हुए गुरुवर कहते हैं कि जब तक भावना नहीं होगी, किसी कर्मकांड में प्राण नहीं होगा। भावनाएँ कैसे परिष्कृत हों, इसी तथ्य को इस अंक में पढ़ें।

साथियो! अध्यात्म के बारे में यदि आप भावनाओं को परिष्कृत करने की बात समझ जाएँ तो मैं समझ लूँगा कि पचास फीसदी मंजिल आपने पूरी कर ली और आपको आध्यात्मिकता का लाभ उठाने का मौका मिल गया। अगर आपको यह भारी मालूम पड़ता है, कठिन मालूम पड़ता है तो आप अपने पैर इसमें न डालिए। इसमें बड़ा झगड़ा है। साहब! हमें क्या पता था कि इसमें बड़ा झगड़ा है। हमने तो समझा था कि हनुमान चालीसा पढ़ने से हनुमान जी खुश हो जाते हैं, पर अब तो वे खुश नहीं होंगे। हाँ बेटे? पाँच पैसे का तूने हनुमान चालीसा खरीद लिया और तीन घंटे जप कर लिया, अब जो गलती हो गई सो हो गई, अब अपने पैर पीछे ले जा। सारी जिंदगी भर हनुमान चालीसा पढ़ने से तेरा कोई फायदा नहीं हो सकता। अगर हनुमान जी से फायदा उठाना चाहता है तो कर्मकांडों के साथ-साथ भावनाओं का समन्वय कर। जिस दिन यह बात तेरी समझ में आ जाएगी, बस समझना चाहिए कि रास्ता खुल गया। तेरे लिए द्वार खुल गया है।

गीता और रामायण का शिक्षण

मित्रो! अब तो आप समझ गए होंगे कि वास्तविकता क्या है? गीता और रामायण जिसका हम यहाँ से प्रचार करते हैं, उसका हम यहाँ पर विद्यालय बनाने वाले हैं। गीता और रामायण को हम नियमित रूप से पढ़ाएँगे और हमारा विश्वास है कि रामचरित और कृष्णचरित के माध्यम से हम व्यक्ति और समाज दोनों की समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे। व्यक्ति को कैसा होना चाहिए? व्यक्तिगत जीवन का परिष्कार कैसे होना चाहिए। यह हम रामायण के द्वारा लोगों को सिखा देंगे, यह हमें पूरा विश्वास है। रामायण में वे सारी-की-सारी चीजें विद्यमान हैं, जो व्यक्ति और परिवार दोनों को ठीक और समन्वित बना सकती हैं। इसलिए हम रामायण का उपयोग करेंगे, गीता, भागवत् तथा कृष्णचरित का उपयोग करेंगे।

भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और कृष्ण पूर्ण पुरुष हैं। सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करने के लिए मनुष्य की नीतियाँ क्या होनी चाहिए? दृष्टिकोण क्या होना चाहिए? समाज के साथ में अपनी डीलिंग करने के लिए, लोकव्यवहार के लिए, समाज की कुरीतियों का समाधान करने के लिए जो शिक्षाएँ हमें कृष्णचरित से मिलती हैं, रामचंद्र जी से नहीं मिलतीं। वे एकांगी हैं। पिताजी ने वनवास दे दिया। अरे साहब! पिताजी ने निकाल दिया तो चलो जंगल में। पिताजी गलती करते हैं तो करते हैं, हमको तो गलती नहीं करनी चाहिए। हम तो पिताजी की आज्ञा मानकर जाएँगे। उनका जीवन एकांगी है? किनका? राम का। ठीक है कि प्रजा के हित का ध्यान रखना चाहिए, प्रजा का कहना मानना चाहिए, लेकिन सीताजी के साथ क्यों अन्याय करना चाहिए? यह एकांगी जीवन है। एकांगी जीवन में राम ने मर्यादाओं का पालन किया।

पूर्णपुरुष श्रीकृष्ण

कृष्ण? कृष्ण को हम पूर्ण पुरुष कहते हैं। पूर्ण पुरुष क्यों? क्योंकि उनके जीवन में इन सारी बातों का समन्वय है। जहाँ उन्होंने त्याग की जरूरत समझी है, सेवा की जरूरत समझी है, दान देने की जरूरत समझी है, सबको दान देते चले गए हैं। उन्होंने निस्पृह योगी की तरह जीवन जिया और जहाँ उन्होंने जरूरत समझी है, वहाँ चालाक के साथ चालाकी, बेईमान के साथ बेईमानी और झूठ के साथ झूठ की भूमिका निभाई है। भगवान श्रीकृष्ण पूर्ण व्यक्ति हैं, पूर्ण पुरुष हैं।

मित्रो! दोनों ग्रंथों के माध्यम से अब हम समाज को नए रूप से उठाने के लिए तैयार हो गए हैं, प्रतिबद्ध हो गए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं। हम लोगों को रामचरित पढ़ाएँगे, जो उन्होंने अब तक पढ़ा ही नहीं। अब हम 'हरे रामा, हरे कृष्णा' का आंदोलन नए ढंग से चलाएँगे। हम लोगों को यह बताएँगे कि ताली बजाने से, खंजरी बजाने से, करताल बजाने से और उदक-फुदक मचाने से राम का नहीं हो सकता। 'हरे रामा हरे कृष्णा' के पीछे जो एक प्रेरणा है, जो एक दिशा है, जो भावना है, जो चेतना है, जो आग उसके पीछे जल रही है, उससे हमें गरम होना पड़ेगा। इसलिए हम रामचरित और कृष्णचरित के माध्यम से अब खड़े हुए हैं।

रामचरित और कृष्णचरित के बारे में जिन पुस्तकों का हमने चयन किया है, उनके बारे में मैं एक बार चुपचाप विचार करने लगा कि अरे भाई ये किसकी किताबें हैं, गीता लड़ाई-झगड़े की किताब है? धत् तेरे की! कहाँ एक ओर "द्यौ शांति अंतरिक्ष ॐ शांति .....की किताबें पढ़ने चले हो और अब दूसरी ओर लड़ाई-झगड़े की किताब लेकर चल दिए लोगों को पढ़ाने। अरे रामचंद्र के जीवन में सब लड़ाई-झगड़ा भरा पड़ा है। विश्वामित्र उनको अपने यहाँ ले गए और उन्होंने ताड़का को मारा, सुबाहु को मारा, मारीचि को मारा, खरदूषण को मारा, मेघनाद को मारा, कुंभकर्ण को मारा और रावण को मारा। मारकाट-मारकाट सब तरफ मारकाट मची हुई है। धत् तेरे की! ये कौन-सी किताब ले आए गुरुजी? आप तो पहले शांति की किताब ले आए थे, पर अब तो आप अशांति की किताब लाए हैं। शांतिकुंज में अशांति की किताब! बेटे, तो मैं क्या कर सकता हूँ! हमारे ऋषियों ने यही बताया था कि रामचंद्र जी का जीवन ऐसे पढ़ना चाहिए।

गीता का मर्म

मित्रो! जब श्रीकृष्ण भगवान की किताब पढ़ो तो यह पाया कि भई! यह क्या चक्कर है? ये सब क्या गड़बड़ हो गया है? अर्जुन बेचारा तो कह रहा था कि हम तो चाय की कैन्टीन चलाएँगे और गुजारा करेंगे और अपनी मौज किया करेंगे। हम तो होटल चलाएँगे और चनाचिरवा बेचेंगे और पच्चीस रुपये रोज कमाएँगे। बहुत से आदमी होटल चलाते हैं। हम भी अपने बच्चों का पालन कर लेंगे। आप हमें लड़ाई-झगड़े में क्यों फँसाते हैं? इस पर श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को खूब गालियाँ सुनाईं और कहा, 'तू क्लीव है, नपुंसक है, तू ऐसा है, तू वैसा है, हजार गालियाँ सुनाईं और हजार खुशामदें भी कीं। कहा मरने के बाद चारों ओर तेरा सुयश गूँजेगा। उन्होंने कहा—**"हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।"**

कैसी-कैसी चालाकियाँ, कैसी-कैसी बातें कीं कि तू जीता तो राजा बन जाएगा और मारा गया तो मोक्ष मिलेगा। कैसी-कैसी बातें बताईं और जब नहीं माना, तो कहने लगे कि तू कायर है, नपुंसक है, उल्लू है, बेवकूफ है। चल-लड़ाई कर, मर। जब अर्जुन का विवेक जगा, तब उसने कहा, **"करिष्ये वचनं तव"** जैसा आप कहेंगे, वैसा हम मानेंगे और करेंगे।

अरे बाबा! ये किसकी किताब है? बेटे ये लड़ाई की किताब है, झगड़े की किताब है, मार-काट की किताब है, हत्याखोरी की किताब है, खून बहाने की किताब है। तो महाराज जी। आप शांतिकुंज में खून-खराबे की किताब काहे को लिए फिरते हैं? बेटे, इस बात की जरूरत थी। फिर मैं इस बात पर विचार करने लगा कि क्या गीता की किताब मुझे पढ़नी चाहिए थी और लोगों को पढ़ानी या बतानी चाहिए थी?

हम तो क्षत्रिय हैं

क्या बात बतानी चाहिए थी? आप कौन हैं? हम तो साहब! यदुवंशी राजपूत हैं। तो आप में कोई ब्राह्मण भी है क्या? नहीं साहब! ब्राह्मण तो नहीं है। अच्छा तो कोई बनिया होगा, कोई पोरवाल होगा, अग्रवाल होगा, खंडेलवाल होगा आप में से कोई? नहीं साहब! हम कोई खंडेलवाल नहीं, हममें से कोई अग्रवाल नहीं। तो आप में से कोई पंडित जी हो सकते हैं, कोई गौड़, कान्यकुब्ज, सनाढ्य, सारस्वत तो होंगे ही। नहीं महाराज जी। हम यह भी नहीं हैं। हम तो क्षत्रिय हैं। राम और कृष्ण दोनों के दोनों, जिनका चरित्र हम आपको पढ़ाने वाले हैं, जिनकी शिक्षाएँ हम आपको देने वाले हैं और जिनके हम अनुयायी बनाने वाले हैं और आपको जिनका अनुचर बनाने वाले हैं, वे कौन हो सकते हैं? वे बहादुर हो सकते हैं। क्षत्रिय से मतलब हमारा जाति-बिरादरी से नहीं है। जाति-बिरादरी का मैं कायल नहीं हूँ। आप हमारे चौके में रोटी खाते हैं। मैंने कब पूछा आपसे कि आप बनिया हैं कि शूद्र हैं कि राजपूत, कौन हैं आप? आप इन्सान हैं और भगवान के भक्त हैं और गायत्री के उपासक हैं। इतना परिचय मेरे लिए काफी है।

मित्रो! गायत्री तपोभूमि में जब मैंने हजार कुंडीय यज्ञ किया था तो एक बार पंडों से झगड़ा हो गया। पंडों ने कहा कि इनके चेलों को भड़काना चाहिए और कहना चाहिए कि ये तो ब्राह्मण नहीं हैं। तो कौन हैं? बढ़ई हैं। बढ़ई कौन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

होता है ? वो जो लकड़ी का धंधा करता है। ये वही हैं और अब बामन बन गए हैं। लोगों ने मुझसे पूछा-क्यों साहब! आप तो बढ़ई हैं ? नहीं बेटा, तुझसे समझने में गलती हुई है। तो कौन हैं आप ? आपकी बिरादरी क्या है ?

हम तो धोबी और भंगी हैं

कोई मुझसे जब मेरी अच्छी बिरादरी जानना चाहता है तो हम कहते हैं कि धोबी हैं और जब खराब बिरादरी जानना चाहता है तो कहते हैं कि हम भंगी हैं। तो गुरुजी! आप धोबी और भंगी कैसे हैं ? बेटे, धोबी ऐसे हैं कि मैं कपड़े धोना चाहता हूँ और भंगी ऐसे हैं कि टट्टियाँ साफ करना चाहता हूँ। मेरा मकसद एक है- मैं झाड़ू लेकर अवतरित हुआ हूँ, बुहारी लेकर अवतरित हुआ हूँ। मन-मस्तिष्क के भीतर वाले और बाहर वाले हिस्से की सफाई के अतिरिक्त मेरे अवतरण का और कोई मकसद नहीं है। मैंने अपने आपकी सफाई एवं औरों की सफाई करने के लिए कसम खाई है। अपना कपड़ा धोने के लिए तथा दूसरों के कपड़े धोने के लिए मैंने कसम खाई है। इसलिए मुझे धोबी होना चाहिए। अच्छा तो आप ब्राह्मण हैं ? बेटे, मैं नहीं कह सकता, क्योंकि ब्राह्मण होने के नाम पर यदि तू मेरी पूजा करता हो तो मत कर। अगर तूने यह समझकर गुरु दीक्षा ली है कि मैं पंडित हूँ, ब्राह्मण हूँ, तो बेटे मैं इंकार करता हूँ और अपनी गुरुदीक्षा वापस लेता हूँ और तूने जो सवा रुपया गुरुदक्षिणा दी थी, वह भी तू वापस ले जा। इसलिए जन्म के आधार पर मैं बहस नहीं करता। मैं यह बात कर्म के आधार पर कहता हूँ। मनुष्य जाति के आधार पर नहीं, अपने कर्म के आधार पर ब्राह्मण--क्षत्रिय आदि बनता है। यही सनातन सत्य है।

अध्यात्म एक प्रकार का समर

मित्रो! कर्म के आधार पर प्रत्येक अध्यात्मवादी को क्षत्रिय होना चाहिए, क्योंकि, **''सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्''** अर्थात इस प्रकार के युद्ध को भाग्यवान क्षत्रिय ही लड़ते हैं। बेटे, अध्यात्म एक प्रकार की लड़ाई है। स्वामी नित्यानंद जी की बंगला की किताब है 'साधना समर'। 'साधना समर' को हमने पढ़ा, बड़े गजब की किताब है। मेरे ख्याल से हिंदी में इसका अनुवाद शायद नहीं हुआ है। उन्होंने इसमें दुर्गा का, चंडी का और गीता का मुंकाबला किया है। दुर्गा सप्तशती में सात सौ श्लोक हैं और गीता में भी सात सौ श्लोक हैं। दुर्गा सप्तशती में अठारह अध्याय हैं, गीता के भी अठारह अध्याय हैं। उन्होंने ज्यों-का-त्यों सारे-के-सारे दुर्गा पाठ को गीता से मिला दिया है और कहा है कि साधना वास्तव में समर है। समर मतलब लड़ाई, महाभारत। यह महाभारत है, यह लंकाकांड है। इसमें क्या करना पड़ता है ? अपने आप से लड़ाई करनी पड़ती है, अपने आपकी पिटाई करनी पड़ती है, अपने आप की धुलाई करनी पड़ती है और अपने आपकी सफाई करनी पड़ती है। अपने आप से सख्ती से पेश आना पड़ता है।

हम बाहर वालों के साथ जितनी भी नरमी कर सकते हैं, वह करें। दूसरों की सहायता कर सकते हैं। उन्हें क्षमा कर सकते हैं, दान दे सकते हैं, उदार हो सकते हैं, दूसरों को सुखी बनाने के लिए जितना भी, जो कुछ भी कर सकते हों, करें। लेकिन अपने साथ, अपने साथ हमको हर तरह से कड़क रहना चाहिए। अपनी शारीरिक वृत्तियों और मानसिक वृत्तियों के विरुद्ध हम जल्लाद के तरीके से, कसाई के तरीके से इस तरह से खड़े हो जाएँ कि हम तुमको पीटकर रहेंगे, तुमको मसल कर रहेंगे, तुमको कुचलकर रहेंगे। अपनी इंद्रियों के प्रति हमारी बगावत इस तरह की होनी चाहिए और अपनी मनःस्थिति के विरुद्ध बगावत इस स्तर की होनी चाहिए। हम अपनी मानसिक कमजोरियों को समझें, न केवल समझें, न केवल क्षमा माँगे, वरन् उनको उखाड़ फेंके। गुरुजी, क्षमा कर दीजिए। बेटे, क्षमा का यहाँ कोई लाभ नहीं, अँग्रेजों के जमाने में जब कांग्रेस का आंदोलन शुरू हुआ था, तब यह प्रचलन था कि माफी माँगिए, फिर छुट्टी पाइए। जब अँग्रेजों ने देखा कि ये तो माफी माँग कर छुट्टी ले जाते हैं, फिर दुबारा आ जाते हैं। उन्होंने कहा ऐसा ठीक नहीं है, जमानत लाइए पाँच हजार रुपये की। जो जमानत लाएगा, उसी को हम छोड़ेंगे, नहीं तो नहीं छोड़ेंगे। माफी ऐसे नहीं मिल सकती। फिर पाँच-पाँच हजार की जमानतें शुरू हुईं। जिनको जरूरी काम थे, उन्हें इस तरह की जमानत पर छोड़ देते थे। फिर पाँच हजार की इन्क्वायरी शुरू हुई। उन्हें सी. आई. डी. ने रिपोर्ट दी कि साहब, ये जमानत पर चले जाते हैं और पाँच हजार से ज्यादा का आपका नुकसान कर देते हैं। फिर उन्होंने जमानतें भी बंद कर दीं।

अपने साथ कड़ाई करिए

मित्रो! भगवान ने भी ऐसा किया है कि माफी देने का रोड-रास्ता बंद कर दिया है। किसी को माफी दीजिए गुरुजी! माफी कहाँ है यहाँ, दंड भोग। इसलिए क्या करना पड़ेगा ? अपने साथ में कड़ाई करने की जिस दिन आप कसम खाते हैं, जिस दिन आप प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपनी कमजोरियों के प्रति कड़क बनेंगे। अपनी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शारीरिक कमजोरियों के तईं और अपनी मानसिक कमजोरियों के तईं कड़क बनेंगे। बेटे, दोनों क्षेत्रों में इतनी कमजोरियाँ भरी पड़ी हैं कि इन्होंने हमारा भविष्य चौपट कर डाला, व्यक्तित्व का सत्यानाश कर दिया। अध्यात्म यहाँ से शुरू होता है। यहाँ से ही भगवान को मानने वाली बात शुरू होती है, भगवान का दर्शन शुरू होता है। अंगार के ऊपर चढ़ी हुई परत को जिस तरह हम साफ कर देते हैं और वह चमकने लगता है, उसी तरह हमारी आत्मा पर मलीनताओं की जो परत चढ़ी हुई हैं। मलीनताओं की इन परतों को हम धोते हुए चले जाएँ तो भीतर बैठे हुए भगवान का, आत्मा का साक्षात्कार हो सकता है।

मंत्र नहीं, मर्म से जानें

क्यों साहब लक्स साबुन से हम कपड़ा धोएँ कि हमाम से धोएँ या सर्फ से धोएँ। बेटे, मेरा दिमाग मत खा। तू चाहे तो सर्फ से धो सकता है, लक्स से-सम्राट से धो सकता है, हमाम से धो सकता है, नमक से, रीठा से धो सकता है। महाराज जी! क्या गायत्री मंत्र से मेरा उद्धार हो जाएगा? चंडी के मंत्र से उद्धार हो जाएगा या हनुमान जी के मंत्र से उद्धार होगा? बेटे, इसमें बस इतना फर्क है जितना कि सर्फ और सनलाइट में फर्क होता है और कोई खास बात नहीं है। हनुमान जी के मंत्र से भी साफ हो सकता है। तू हिंदू है या मुसलमान है तो भी साफ हो सकता है। बस तू ठीक तरीके से इस्तेमाल कर। गुरुजी! गायत्री मंत्र से मुक्ति मिल जाती है या 'राम रामाय नमः' से? बेटे, अब मैं इससे कहीं आगे चला गया हूँ। अब मैं यह बहस नहीं करता कि गायत्री मंत्र का जप करेंगे तो आपकी मुक्ति होगी और हनुमान जी का जप करेंगे, तो मुक्ति नहीं होगी। बेटे, सब भगवान के नाम हैं। साबुन में केवल लेबल का फर्क है, असल में उनका उद्देश्य एक है।

मित्रो! साधना का उद्देश्य एक है कि हमारी भीतर वाली मनःस्थिति की सफाई होनी चाहिए, जो हमारी शरीर की विकृतियों और मानसिक विकृतियों के लिए जिम्मेदार है। हमारी मानसिक और शारीरिक विकृतियाँ ही हैं, जिन्होंने हमारे और भगवान के बीच में एक दीवार खड़ी की है। अगर हम इस दीवार को नहीं हटा सकते, तो हमारे पड़ोस में बैठा हुआ भगवान हमें साक्षात्कार नहीं दे सकता। बेटे, भगवान में और और हम में दीवार का फर्क है, जिससे भगवान हमसे कितनी दूरी पर है? गुरुजी! भगवान तो लाखों-करोड़ों कि.मी. दूर रहता है? नहीं बेटे, करोड़ों कि.मी. दूर नहीं रहता। वह हमारे हृदय की धड़कन में रहता है, लपडप के रूप में हमारी साँसों में प्रवेश करता है। हमारी नसों में गंगा-जमुना की तरह से उसी का जीवन प्रवाहित होता है। हमारा प्राण भगवान है और हमारे रोम-रोम में समाया हुआ है। तो दूर कैसे हुआ? दूर ऐसे हो गया कि हमारे और भगवान के बीच में एक दीवार खड़ी हो गई। उस दीवार को गिराने के लिए जिस छैनी-हथौड़े का इस्तेमाल करना पड़ता है, उसका नाम है पूजा और पाठ।

(शेष अगले अंक में)

❖

महायाजक शाल्वनेक का अनायास ही आगमन हुआ। श्रेष्ठि उद्यन ने उनका समुचित स्वागत-सत्कार किया। दूसरे दिन ज्ञान-दीक्षा का क्रम चल पड़ा।

महायाजक ने अपनी अनेक संग्रहीत विद्याओं का परिचय देते हुए उद्यन से पूछा कि वे जिसमें भी रुचि रखते हों, उसके संबंध में पूछें और प्राप्त करें।

श्रेष्ठि ने पूछा, "क्या ऐसा संभव है, आपने जो-जो जाना है, उन सबके मूल आधार को ही मुझे प्रदान करने का अनुग्रह कर दिया जाए?"

महायाजक असमंजस में पड़े धीरे-धीरे सिर हिला रहे थे। उनकी कठिनाई दूर करने के लिए उद्यन ने घर में प्रयुक्त होने वाले अनेकों पात्र, उपकरण प्रस्तुत कर दिए और फिर पूछा, "देव! इन सबको क्या एक ही रथ में भरकर नहीं ले जाया जा सकता।" शाल्वनेक की आँखें खुल गईं। उन्होंने नव-चेतना अनुभव की और कहा, "ऐसा हो सकता है। एक ही आत्म-ज्ञान के समुद्र में ज्ञान की समस्त सरिताओं का समावेश हो सकता है। मैं अब उसी को उपलब्ध करूँगा और जब प्राप्त कर सकूँगा तो आपको ज्ञान-दीक्षा का साहस करूँगा।"

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.



पिछली कड़ी में श्लोक क्रमांक २६, २७, २८ की विस्तृत व्याख्या के साथ एक महावाक्य के रूप में २९वें अंतिम श्लोक की संक्षिप्त टिप्पणी दी गई थी। पाँचवाँ अध्याय इन चारों के माध्यम से पराकाष्ठा पर पहुँचा है। पहले तो यह कहा गया कि काम-क्रोध आदि विकारों से मुक्त, संयतचित्त वाले आत्मज्ञ योगीजन (यती) शरीर छोड़ने से पूर्व व बाद ब्रह्मनिर्वाण की स्थिति को प्राप्त होते हैं अर्थात परब्रह्म परमात्मा से साक्षात्कार कर पाते हैं। इसके बाद योगेश्वर श्रीकृष्ण ध्यानयोग की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। वे २७ वें व २८वें श्लोक में ध्यान का स्वरूप व उसकी महिमा बताते हैं। वे विधि भी बताते हैं कि बाह्य विषयों को कैसे मन से बाहर रखकर, चक्षुओं को भ्रूमध्य मार्ग में स्थित करें एवं प्राण-अपान को समभाव से स्थित रखकर, इच्छा-भय-क्रोध से रहित होकर मोक्ष को प्राप्त करें। अपने आपसे साक्षात्कार का सबसे श्रेष्ठ तरीका है ध्यान। तनाव से मुक्त हो बंधनमुक्ति का पथ प्रशस्त करता है ध्यान। इसके बाद श्रीकृष्ण कहते हैं कि जब ऐसा साधक मुझ श्रीकृष्णरूपी भगवान को सभी यज्ञों और तपों का भोक्ता, लोकों का महेश्वर तथा सभी प्राणियों का हितैषी, उनके प्रति दयालु, इस रूप में जान लेता है तो वह परमशांतिरूपी मुक्ति को प्राप्त होता है। यह महावाक्य है। इसी की विशद व्याख्या व पूरे अध्याय की एक समीक्षा इस समापन कड़ी में है।

महावाक्य एवं उसकी व्याख्या

श्री भगवान इस अंतिम श्लोक में जो कह रहे हैं वह भलीभाँति समझने योग्य है। दो पंक्तियों में मानो वेदव्यास ने श्रीकृष्ण के सारे प्रतिपादन को समाहित कर दिया है। कर्मयोग की महत्ता बताते-बताते भगवान सारी साधनाओं की सिद्धि का मर्म भी कह जाते हैं। वह मर्म है- ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को पहचानकर संपूर्ण समर्पण। भगवान को तत्त्व से जानना। अपने सभी यज्ञीय कर्मों एवं तप साधनादि कठोर संयम से पाले गए व्रतों का भोक्ता प्रभु को मानना, स्वयं को नहीं। ईश्वर को स्वार्थरहित, पक्षपात रहित एवं दयालु मानकर उसके प्रति पूरे निष्ठाभाव से समर्पण। वह सुहृद है, दयालु है, प्रेमी है, यह मानकर निष्काम भाव से अपने सभी कर्म एवं आत्मिक प्रगति के लिए किए गए साधना-उपचार करते चलना। कभी फल की कामना में जल्दबाजी न करना। यह गीता के योग की पराकाष्ठा है, जिसमें प्रभु इस **महावाक्य** के माध्यम से परमशांति की मानो कुंजी अर्जुन के माध्यम से हमें सौंप देते हैं।

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शांतिमृच्छति॥
-५/२९

यह जो अंतिम श्लोक है पाँचवें अध्याय का, सभी साधकों के लिए जो कर्म-संन्यासयोग जानना चाहते हैं, एक प्रकार से सूत्र रूप में की गई समग्र व्याख्या है। कर्मयोग में ज्ञान व भक्ति का स्थान-स्थान पर तालमेलपूर्वक समन्वय एवं जीवन को सर्वांगपूर्ण ढंग से जीने का विज्ञान गीता की विशेषता है। गीता जीवन प्रबंधन की पाठ्य पुस्तिका है एवं स्थान-स्थान पर योगत्रयी को जीवन में समाहित करने का संदेश देती रहती है। मानव की सबसे बड़ी इच्छा इस लोक में शांति पाने की है। वह परमात्म-तत्त्व को जाने बिना संभव नहीं। परमात्मा को कर्म से समझकर कर्मयोग का भलीभाँति संपादन कर तथा इस परमपिता परमात्मा को सर्वलोक महेश्वर मानकर सर्वतोभावेन समर्पण—यही वह राजमार्ग है, जिस पर चलकर मनुष्य को शांति मिल सकती है। तनावमुक्त जीवन, आत्मिक प्रगति का खुले वातायनों से भरा पथ इस प्रक्रिया से सुलभ हो जाता है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सर्वलोक महेश्वर को अर्पण

चूँकि परमात्मा ही सभी प्रकार के यज्ञों एवं तपों के भोक्ता हैं, इसलिए मुक्ति की कामना रखने वाले सभी साधकों को अपने सभी कर्मों को यज्ञ व तप रूप में करते हुए विराट पुरुष उस महेश्वर को उनके फल को अर्पित कर देना चाहिए। मुक्तपुरुष यदि बंधनों से मुक्त भी हो गया है तो भी उसे लोकसंग्रह हेतु (लोकशिक्षण हेतु) कर्म करते रहना चाहिए अर्थात भटकों को राह दिखाने, सन्मार्ग के पथ पर चलने का शिक्षण देते रहना चाहिए। छब्बीसवें श्लोक में भगवान ने एक शब्द का प्रयोग किया है-''**अभितो वर्तते**''। निर्वाण केवल अंदर ही नहीं, हमारे चारों ओर भी विद्यमान हो। हम उस ब्रह्मचैतन्य में निवास करें। यही बात इस अंतिम श्लोक में बताई है कि वही मुनि है, जिसने अपने अंदर, अपने चारों ओर निर्वाण लाभ प्राप्त कर लिया है, फिर भी वह जीवमात्र के कल्याण में सतत निरत रहता है। जो भगवान के साथ उन्हें तत्त्व से जानकर एक रूप हो गया, वह मनुष्य मात्र से दिव्य प्रेम कर सकता है। ईश्वर को दयालु, प्रेमी मानने के बाद व्यक्ति उस विराट पुरुष का ही एक अंग बन जाता है एवं एक प्रकार से उनके कर्म को तत्त्व से जानकर शांति की पराकाष्ठा को प्राप्त होता है।

अंतिम श्लोकरूपी महावाक्य- आखिरी वचन से जो हम कर्म समझ पाते हैं, वह हमारे जीवन के हर क्षण में उतर जाए तो हम एक सच्चे दिव्यकर्मी बन सकते हैं। ऐसे महामानव को कर्म करते हुए जो दिव्य शांति मिलती है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इस अंतिम श्लोक में जो ''सर्वलोकमहेश्वर'' शब्द आया है, उसे कई बार हम कर्म रूप में समझ नहीं पाते। इसे समझाते हुए श्री जयदयाल गोयंदका जी अपनी तत्त्वविवेचिनी टीका में लिखते हैं कि अपने-अपने ब्रह्मांड का नियंत्रण करने वाले जितने ईश्वर हैं, भगवान उन सभी के स्वामी और महान ईश्वर-परमेश्वर हैं। श्वेताश्वेतर उपनिषद का हवाला देते हुए वे कहते हैं, ''**तमीश्वराणां परमं महेश्वरम्**'' (उन ईश्वरों के भी परम महेश्वर को) पद इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इस रूप में भगवान को मानने वाला भक्त कभी भटकता नहीं। काम-क्रोधादि विकार उसके पास कभी फटकते नहीं। ऐसा भक्त शांत, निर्विकार एवं सदैव प्रभु के ध्यान में डूबा रहता है।

भगवान को अहैतुक प्रेमी मान लेना व यह विश्वास करना कि वे जो भी कुछ करते हैं, मेरे मंगल के लिए करते हैं, इस श्लोक की धुरी है। लोग इस तथ्य को समझ नहीं पाते इसीलिए दुखी बने रहते हैं व कभी शांति को प्राप्त नहीं होते। यदि सर्वशक्तिमान, सर्वनियंता व सर्वदर्शी परमात्मा हमें अपना सुहृद मानता है और हम भी इस तथ्य पर विश्वास कर उसे अपना सखा, प्रेमी, निःस्वार्थ भाव से साथ दे रहा सहयोगी मान लें तो हम अलौकिक आनंद प्राप्त करेंगे एवं अपूर्व शांति को हस्तगत करेंगे।

भगवान को तीन गुणों से पहचानें

ऊपर तीन बातें बताई गईं। भगवान को यज्ञों व तपों का भोक्ता मानना, समस्त लोकों का महेश्वर मानना तथा सभी प्राणियों का सुहृद मानना। यदि इन तीन में से साधक-योगी किसी एक पर भी अडिग रह दृढ़ विश्वास कर ले तो वह परमशांति को प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार एक दिव्यकर्मी वह ही है, जो इन तीनों के अर्थ को भलीभाँति समझकर किसी एक पर या तीनों पर दृढ़ विश्वास रख महापुरुषों के सत्संग, मनन, श्रेष्ठ पुस्तकों के स्वाध्याय द्वारा श्रेष्ठतम कर्म करते हुए अपनी जीवनयात्रा को आगे बढ़ाए। उसका इहलोक-परलोक दोनों ही सध जाएँगे।

परमपूज्य गुरुदेव ने अपने जीवनकाल के पूर्वार्द्ध में सबसे पहली पुस्तक लिखी-''मैं क्या हूँ''। वेदांत दर्शन पर आधारित यह पुस्तक एक आत्मनिवेदन रूप में यह बताती है कि हमारे अंदर विद्यमान आत्मसत्ता में कितनी शक्ति भरी पड़ी है। वह किस विराट सत्ता की अंशधारी है। बाद में पूज्यवर ने काफी पुस्तकें लिखीं, परंतु 'ईश्वर और उसकी अनुभूति' 'ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है' तथा 'आत्मज्ञान : जीवन की सर्वोपरि उपलब्धि' इस विषय पर सर्वोत्तम ग्रंथ हैं। इन पुस्तकों में वही व्याख्या है जो गीता के पाँचवें अध्याय के इस २९वें श्लोक में वर्णित है। ईश्वर को जान-समझ लिया तो फिर सारे क्लेशों, बंधनों से मुक्ति मिल जाती है। परमपूज्य गुरुदेव इस संबंध में ईसा एवं रामकृष्ण परमहंस से संबंधित उस घटना का उल्लेख करते थे, जिसमें कुष्ठग्रस्त रोगी की सेवा ईश्वर मानकर की गई थी। किसी भी प्रकार की जुगुप्सा नहीं, कोई और भाव नहीं। जीवमात्र में जब ईश्वर की झलक दिखाई देती है तो मनुष्य 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का भाव रख सेवाप्रधान जीवन जीने लगता है।

पूरे अध्याय का सारामृत

छठवें अध्याय की ओर बढ़ने से पूर्व इस अंतिम महत्त्वपूर्ण पाँचवें अध्याय के सारामृत को एक बार फिर ग्रहण करने का प्रयास करें, ताकि तेरह माह से चला आ रहा यह स्वाध्याय जड़ जमाकर हमारे अंतस् में बैठ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाए एवं हमारे कर्मों में उतरने लगे। इस अध्याय का शुभारंभ ही अर्जुन की जिज्ञासा से हुआ है। वह भ्रमित है। उसने चौथे अध्याय में कर्मयोग की महिमा जानी, किंतु बीच-बीच में श्रीकृष्ण के श्रीमुख से ज्ञानयोग (कर्म संन्यास) की बातें भी 'ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनै-वोपजुह्वति' (श्लोक २५ ब) तथा 'ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हवि.....' (श्लोक २४) के माध्यम से जानीं। श्रीकृष्ण से अर्जुन यह जानना चाहता है कि कौन-सा साधन श्रेष्ठ है—कर्मयोग अथवा ज्ञानयोग।

भगवान ने अर्जुन को यहाँ बताया है कि पूर्णतया कर्मफल का परित्याग कर वह कर्मयोगी, नित्य संन्यासी बने। गीता का उपदेश कर्म त्यागना नहीं है, न ही स्वधर्म त्यागना। कर्म त्याग करके संसार में रहना संभव नहीं है। मनुष्य दिव्यकर्मी बने, न किसी से द्वेष करे, न किसी वस्तु की आकांक्षा रखे। राग-द्वेषादि द्वंद्वों से मुक्त व्यक्ति संन्यासी के ही समान है, यह श्रीकृष्ण का प्रतिपादन है। आगे वे ज्ञानियों व नासमझों में अंतर बताते हैं। वे कहते हैं कि पंडितजन (ज्ञानी-अध्यात्म के कर्म को समझने वाले) जानते हैं कि कर्म-संन्यास एवं कर्मयोग दोनों ही मार्ग एक ही लक्ष्य पर ले जाते हैं- परमात्मा की ओर। उन्हें पृथक फल देने वाला नहीं मानना चाहिए। दोनों ही मार्ग पर चलकर मनुष्य परमात्मा के परमधाम तक पहुँचता है। आगे वे कहते हैं कि यदि कोई दिव्यकर्मी कर्म करते हुए जीवन व्यापार में सामान्यक्रम से जीते हुए अपने मन को अपने वश में रखता है, इंद्रियों पर नियंत्रण रखता है एवं अंत:करण को शुद्ध बनाए रखता है, सभी प्राणियों में परमात्मा की झाँकी देखता है तो वह कर्म करते हुए भी उसमें लिप्त नहीं होता। हर कर्मयोगी को ज्ञानयोग के इस मर्म को मन में बिठाकर भगवत्स्वरूप का ध्यान करना चाहिए। यहाँ प्रभु, जो योगेश्वर भी हैं एवं नीतिपुरुष भी, कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग के एक सम्यक् संतुलन को जीवन में उतारने का शिक्षण देते हैं। (श्लोक ६ व ७) जीवन जीने की कला के ये कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं।

आसक्ति को त्यागो

शिष्य अर्जुन के गुरु श्रीकृष्ण उसे बताते हैं कि उसे ऐसा कर्मयोगी बनना चाहिए जो काया, मन, बुद्धि एवं इंद्रियों से मात्र प्रभु अर्पित होकर कर्म करता है। वह समाज-समष्टि के हित हेतु जीवन जीता है एवं ये दिव्यकर्म मात्र अपनी अंत:शुद्धि हेतु करता है (श्लोक ११)। श्रीकृष्ण बार-बार एक बात पर ध्यान केंद्रित करने का निर्देश देते हैं-'संगंत्यक्त्वा' अर्थात आसक्तियों को छोड़कर कर्म करो। ऐसे आसक्तिरहित जीवन जीने वाले दिव्यकर्मी जैसे बालगंगाधर तिलक एवं हमारे गुरुदेव पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी। इस प्रकार से किए गए कर्मों की परिणति बताते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि इससे कर्मयोगी भगवत्-प्राप्तिरूपी शांति को प्राप्त होता है। सकाम कर्म करने वाला तो बंधनों में फँसता चला जाता है। (श्लोक १२)

आगे श्रीकृष्ण कर्मयोग से अर्जुन का ध्यान ज्ञानयोग की ओर आकर्षित करते हैं कि परमेश्वर तो कर्मफल संयोग से परे हैं, यह तो मानवी प्रकृति है, जो उससे कर्म करा रही है। यदि अज्ञान से ढके हुए ज्ञान के अमृतकण ग्रहण कर लिए जाएँ तो उस दुर्गति से बचा जा सकता है जो आज के आम आदमी की हो रही है। वह तो अज्ञान से मोहित हो, शिश्नोदरपरायण जीवन जी रहा है। परमात्मा का तत्त्वज्ञान उस अज्ञान को नष्ट कर देता है, जो सद्ज्ञानरूपी सूर्य पर बदली बनकर छाया हुआ है अथवा शीशे पर मैल की परत के रूप में विद्यमान है। (श्लोक १५,१६) अब श्रीकृष्ण भक्तियोग की सीढ़ी पर अर्जुन को चढ़ाते हैं व कहते हैं कि अपनी

हमें घर-घर पहुँचा दें

—परमपूज्य गुरुदेव

परमपूज्य गुरुदेव के मूर्तिमान स्वरूप वाङ्मय को घर-घर पहुँचाने के लिए निष्ठावान परिजनों की आवश्यकता है। जो भाई इस कार्य हेतु अपने को योग्य समझते हों, निम्नलिखित विवरण सहित अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा से संपर्क करें। समयदान की अवधि दो माह की रहेगी। टोलियाँ प्रत्येक माह की 1 तारीख से निकलेंगी।

विवरण—नाम-पता, फोन नं. (एस. टी. डी. कोड सहित), शैक्षिक योग्यता, आयु, मिशन से कब जुड़े, मिशन संबंधी योग्यता, पद/व्यवसाय, कब से कब तक का समयदान आदि।

व्यवस्थापक
अखण्ड ज्योति संस्थान,
मथुरा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मन-बुद्धि को वह परमात्मा में विलय कर दे, अपनी निष्ठा आदर्शों के समुच्चय परमात्मा में रखे तथा तत्परायण (उन्ही परब्रह्म परमात्मा में एकीभाव से स्थित) बनने की कोशिश करे। ऐसा करने पर वह परमगति को प्राप्त होगा, बार-बार वासनाओं के वशीभूत हो उसका पुनर्जन्म नहीं होगा। 'ज्ञान निर्धूत कल्मषा:' को उद्धृत कर वे कहते हैं कि ज्ञान द्वारा पापरहित होने पर योगी के हर कर्म दिव्यकर्म बन जाते हैं। (श्लोक १७)

ब्रह्मणि स्थित:

बड़ी विलक्षण है इस अध्याय के उनतीस श्लोकों की यात्रा। एक-एक श्लोक मानो एक अध्याय के समान है। तुरंत अगले श्लोक में योगेश्वर कह बैठते हैं कि जो योगी अपनी भाँति संपूर्ण भूतों में- जीवधारियों में, गौ, हाथी, कुत्ते अथवा चांडाल, ब्राह्मण में सभी को समभाव से देखता है, वही श्रेष्ठतम योगी है एवं सही मायने में ज्ञानी है (श्लोक १८)। आगे छठे अध्याय में हम ३२वें श्लोक में भी कुछ ऐसा ही प्रतिपादन सुनेंगे। समभाव में स्थित योगी ऐसे जीता है मानो उसने सारा संसार जीत लिया हो। वह सदैव ब्रह्म में स्थित होकर कर्म करता है। कौन-सा योगी ब्रह्म में स्थित हो सकता है, इसके लिए श्रीकृष्ण कुछ विशेषताएँ भी बताते हैं- जो प्रिय को प्राप्त कर हर्षित न हो, अप्रिय को प्राप्त होकर उद्विग्न न हो, सदैव स्थिर बुद्धि से बिना किसी संशय के जीवन जिए। सतत कर्म करता रहे एवं अपनी बुद्धि को प्रभु के श्री चरणों में नियोजित कर समर्पित भाव से जिए। (श्लोक १९,२०)

आगे श्रीकृष्ण अक्षय आनंद की प्राप्ति का सूत्र अर्जुन को बताते हैं। आदिकाल से मानव को इसी की तो तलाश रही है। दुर्भाग्यवश वह उसे इंद्रिय सुख में खोजता है। वहाँ से आसक्ति हटे, अंतर्मुखी हो वह ध्यानरूपी योग द्वारा सच्चिदानंदघन परब्रह्म परमात्मा से एकाकार होने का प्रयास करे तो ही उसे वह आनंद मिलेगा। बुद्धिमान विवेकी पुरुष इसी कारण बहिरंग के भोग को छोड़कर अंत: के ब्रह्म में रमण करता है। (श्लोक २१,२२) सच्चे सुख की, अनिर्वचनीय आनंद एवं अक्षय शांति की यही कुंजी है। शरीर हमारा भोगों में नष्ट हो-दु:ख के हेतु बने विषयों में लिप्त हो जर्जर बन जाए, उसके पूर्व ही हमारा विवेक जाग जाना चाहिए एवं हमें काम-क्रोध से उत्पन्न वेग को सहन करने हेतु स्वयं को समर्थ बना लेना चाहिए। काम और क्रोध परस्पर जुड़े हैं। दमित काम ही क्रोध के रूप में अभिव्यक्त होता है तथा क्रोध आदमी की सारी शक्ति को नष्ट कर डालता है। जो इन दोनों आवेगों को नियंत्रित कर ले, श्रीकृष्ण की दृष्टि में वही योगी है, वही सुखी है-(स युक्त: स सुखी नर:)(श्लोक २३)

शांत परब्रह्म बने हमारा इष्ट

तो फिर कर्मयोगी को, जो ज्ञानी भी है एवं तत्परायण एक भक्त भी, क्या करना चाहिए। उसे ब्रह्मनिर्वाण की प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए। आत्मा में ही रमण कर, आत्मज्ञान को प्राप्त कर, अपने सभी पापों व संशयों को नष्ट कर सर्वहितार्थाय कर्म करने वाला योगी शांत ब्रह्म को प्राप्त होता है। यह शांत परब्रह्म ही हम सबका इष्ट है। ऐसे व्यक्ति अपने अंदर व अपने आस-पास भी शांति का वातावरण बना देते हैं। ये युग प्रवर्तक होते हैं। युगनायक होते हैं एवं दूसरों के लिए जीते हैं। काम-क्रोधरूपी विकारों से ये मुक्त होते हैं तथा अपने चित्त पर, स्वभावजन्य आदतों पर इनका अपना नियंत्रण होता है। ऐसे व्यक्ति परब्रह्म परमात्मा की चेतना से आपूरित होते हैं, उनका साक्षात्कार कर चुके होते हैं। (श्लोक २४,२५) हर व्यक्ति के अंदर ऐसे दिव्ययोगी बनने की अनंत संभावनाएँ मौजूद हैं।

प्रतिपादन की पराकाष्ठा

अब अंतिम तीन श्लोकों में श्रीकृष्ण ऐसे दिव्य योगी बनने की प्रक्रिया की एक झलक दिखाकर अपने इस कर्म-संन्यास योग नामक प्रकरण वाले अध्याय का पटाक्षेप करते हैं। जैसे फिल्मों के ट्रेलर दिखाए जाते हैं, कंप्यूटर के पॉवर पाइंट द्वारा गहन विषय को सूत्र रूप में समझाने का प्रयास किया जाता है, ठीक उसी तरह सत्ताईसवें, अट्ठाइसवें श्लोक में ध्यान की विधि एवं मोक्षप्राप्ति (जीवनमुक्ति-बंधनमुक्ति) कैसे की जाए, इसकी एक झलक दिखा दी गई है। इसका विस्तार छठे अध्याय में है। परंतु पहले श्लोक में जिज्ञासा व्यक्त करने वाले अर्जुन की सभी जिज्ञासाओं का समाधान कर श्रीकृष्ण अपनी पराकाष्ठा पर उनतीसवें श्लोक में पहुँचते हैं, जहाँ वे अपने भक्त की परिभाषा बताते हैं- अपनी विशेषताएँ बताते हैं व भगवत्प्राप्ति से ही शांति मिलती है, यह समझाते हैं। इस श्लोक की व्याख्या-विस्तार से इस लेख के पूर्वार्द्ध में कर दी गई। हम ईश्वर को अपना हितैषी-सर्वलोक महेश्वर मानें एवं अपने सभी यज्ञीय कर्मों, तपों का फल उन्हें सौंप दें, इस महावाक्य के साथ ही इस अध्याय का समापन हो जाता है।

(अगले अंक से छठवाँ अध्याय)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

अध्यात्म साधना का मर्म-३

समापन किश्त (गतांक से आगे)

पहले थ्योरी समझें

पूजा और पाठ किस चीज़ का नाम है? दीवार को गिरा देने का, इसी ने हमारे और भगवान के बीच में लाखों किमी० की दूरी खड़ी कर दी है, जिससे भगवान हमको नहीं देख सकता और हम भगवान को नहीं देख सकते। हम इस दीवार को गिराना चाहते हैं। उपासना का वास्तव में यही मकसद है। छैनी और हथौड़े को जिस तरह से हम दीवार गिराने के लिए इस्तेमाल करते हैं, उसी तरीके से अपनी सफाई करने के लिए पूजा-पाठ के, भजन के कर्मकांड का, क्रियाकृत्य का उपयोग करते हैं। भजन उसी का उद्देश्य पूरा करता है। यह मैं आपको फिलॉसफी समझाना चाहता था। अगर आप अध्यात्म की फिलॉसफी समझ जाएँ, इस थ्योरी को समझ जाएँ तो आपको प्रेक्टिस से फायदा हो सकता है। नहीं साहब, हम तो प्रेक्टिस में इम्तिहान देंगे, थ्योरी में नहीं देंगे, किसका इम्तिहान देना चाहते हैं? हम तो साहब वाइवा देंगे और थ्योरी के परचे आएँगे तो? थ्योरी, थ्योरी के झगड़े में हम नहीं पड़ते, हम तो आपको सुना सकते हैं। हम फिजिक्स जानते हैं। देखिए ये हाइड्रोजन गैस बना दी। देखिए ये शीशी इसमें डाली और ये शीशी इसमें डाली, बस ये पानी बन गया। अच्छा अब आप हमको साइंस में एम.एससी. की उपाधि दीजिए। गैस क्या होती है? गैस, गैस क्या होती है, हमें नहीं मालूम। इस शीशी में से निकाला और इस शीशी में डाला, दोनों को मिलाया, पानी बन गया। अब आपको शिकायत क्या है इससे? नहीं साहब, आपको साइंस जाननी पड़ेगी, फिजिक्स पढ़नी पड़ेगी तब सारी बातें जानेंगे। नहीं साहब, जानेंगे नहीं।

बेटे, आपको जानना चाहिए और करना चाहिए। जानकारी और करना दोनों के समन्वय का नाम एक समग्र अध्यात्मवाद होता है। मैंने आपको अध्यात्म के बारे में इन थोड़े से शब्दों में समझाने की कोशिश की कि आप क्रिया-कृत्यों के साथ-साथ आत्म-संशोधन की प्रक्रिया को मिलाकर रखें तो हमारा उद्देश्य पूरा हो सकता है। बच्चों को यही करना पड़ता है। पूजा का हर काम बड़ा कठिन है। नहीं साहब! सरल बता दीजिए। सरल तो एक ही काम है और वह है मरना। मरने से सरल कोई काम नहीं है। जिंदगी, जिंदगी बड़ी कठिन है। जिंदगी के लिए आदमी को संघर्ष करना पड़ता है, लड़ना पड़ता है। प्रगति के लिए हर आदमी को लड़ना पड़ा, संघर्ष करना पड़ा। मरने के लिए क्या करना पड़ता है? मरने के लिए तो कुछ भी नहीं करना पड़ता। छत के ऊपर चढ़कर चले जाओ और गिरो, देखो अभी खेल खत्म। गंगाजी में चले जाओ, झट से डुबकी मारना, बहते हुए चले जाओगे। बेटे, मरना ही सरल है। पाप ही सरल है, पतन ही सरल है। अपने आपका विनाश ही सरल है। दियासलाई की एक तीली से अपने घर को आग लगा दीजिए। आपका घर जो पच्चीस हजार रुपये का था, एक घंटे में जलकर राख हो जाएगा। तमाशा देख लीजिए। आहा..... गुरुजी! देखिए हमारा कमाल, हमारा चमत्कार। क्या चमत्कार है? देखिए पच्चीस हजार रुपये का सामान था, हमारे घर में, हमने दियासलाई की एक तीली से जला दिया। कमाल है न। वाह भई वाह! बहादुर हो तो ऐसा, जो एक तीली से पच्चीस हजार रुपये जला दे।

कमाना कठिन गँवाना सरल

मित्रो! पच्चीस हजार रुपये कमाना कितना कठिन होता है, कितना जटिल होता है, आप सभी जानते हैं। इसी तरह जीवन को, व्यक्तित्व को बनाना, विकसित करना कितना कठिन, कितना जटिल है। यह उन लोगों से पूछिए जिन्होंने सारी जिंदगी मेहनत-मशक्कत की और आखिर के दिनों में पंद्रह हजार रुपये का मकान बना पाए। देखिए साहब, अब हम मर रहे हैं, लेकिन हमने इतना तो कर लिया कि अपने बाल-बच्चों के लिए एक मकान बनाकर छोड़े जा रहे हैं। निज का मकान तो है। पंद्रह हजार रुपये बेटा क्या है? पंद्रह हजार रुपये हमारी सारी जिंदगी की कीमत है। जिंदगी की कीमत किसे कहते हैं? अपने व्यक्तित्व को बनाना, अपने जीवन को बनाना, अपनी जीवात्मा को महात्मा, देवात्मा बनाना और परमात्मा बनाना, यह विकास कितना बड़ा हो सकता है? इसके लिए कितना संघर्ष करना चाहिए, कितनी मेहनत करनी चाहिए, कितना परिश्रम और कितना परिष्कार करना चाहिए।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अगर आपके मन में यह बात नहीं आई और आप यही कहते रहे कि सरल रास्ता बताइए, सस्ता रास्ता बताइए, तो मैं यह समझूँगा कि आप जिस चीज को बनाना चाहते हैं, असल में उसकी कीमत नहीं जानते। कीमत जानते होते तो आपने सरल रास्ता नहीं पूछा होता। आप इंग्लैंड जाना चाहते हैं? अच्छा साहब, इंग्लैंड जाने के लिए छह हजार रुपये लाइए, आपको हवाई जहाज का टिकिट दिलवाएँ। नहीं साहब, इतने पैसे तो नहीं खरच कर सकते। क्या करना चाहते हैं? सरल रास्ता बताइए इंग्लैंड जाने का। इंग्लैंड जाने का सरल रास्ता जानना चाहते हैं? कैसा सरल रास्ता बताऊँ बेटे? बस गुरुजी ज्यादा से ज्यादा मैं छह नए पैसे खरच कर सकता हूँ, पहुँचा दीजिए न। अच्छा ला छह नए पैसे। इंग्लैंड अभी चुटकी में पहुँचाता हूँ। ये देख हरिद्वार में बैठा था और पहुँच गया इंग्लैंड। देख ये लिखा हुआ है इंग्लैंड। अरे महाराज जी, यह तो आप चालाकी की बात कहते हैं। अच्छा बेटे, तू क्या कर रहा था? तू चालाकी नहीं कर रहा था। नहीं महाराज जी, भगवान तक पहुँचा दीजिए, मुफ्त में अपनी सिद्धि से पहुँचा दीजिए। यहाँ पहुँचा दीजिए, वहाँ पहुँचा दीजिए। पागल कहीं का, पहुँचा दें तुझे जहन्नुम में। तू कहीं नहीं जा सकता, जहाँ है वहीं बैठा रह।

कीमत चुकाइए

इसलिए मित्रो! ऊँचा उठने और श्रेष्ठ बनने के लिए जिस चीज की, जिस परिश्रम की जरूरत है, उसके लिए आप कमर कसकर खड़े हो जाइए। कीमत चुकाइए और सामान खरीदिए। पाँच हजार रुपये लाइए, हीरा खरीदिए। नहीं साहब, पाँच पैसे का हीरा खरीदूँगा। बेटे, पाँच पैसे का हीरा न किसी ने खरीदा है और न कहीं मिल सकता है। सस्ते में मुक्ति बेटे हो ही नहीं सकती। अगर तुम कठिन कीमत चुकाना चाहते हो तो सुख-शांति पा सकते हो। सुख और शांति पाने के लिए हमको कितनी मशक्कत करनी पड़ी है, आप इससे अंदाजा लगा लीजिए। सुख बड़ा होता है या शांति? पैसे वाला बड़ा होता है या ज्ञानवान? बनिया बड़ा होता है या पंडित? तू किसको प्रणाम करता है- बनिया को या पंडित को और किसके पैर छूता है? लालाजी के या पंडित जी के? पंडित जी के। क्यों? क्योंकि वह बड़ा होता है। ज्ञान बड़ा होता है और धन कमजोर होता है। इसलिए सुख की जो कीमत हो सकती है, शांति की कीमत उससे ज्यादा होनी चाहिए। सुख के लिए जो मेहनत, जो मशक्कत, जो कठिनाई उठानी पड़ती है, शांति के लिए उससे ज्यादा उठानी पड़ती है और उठानी भी चाहिए। आपको यदि यह सिद्धांत समझ में आ जाए तो मैं समझूँगा कि आपने कम-से-कम वास्तविकता की जमीन पर खड़ा होना तो सीख लिया। आप इस पर अपनी इमारत भी बना सकते हैं और जो चीज पाना चाहते हैं वह पा भी सकते हैं।

इतना बताने के बाद अब मैं आपको क्रियायोग की थोड़ी-सी जानकारी देना चाहूँगा। उपासना की सामान्य प्रक्रिया हम आपको पहले से बताते रहे हैं। उसमें सबसे पहला प्रयोग चाहे वह उपासना के पंचवर्षीय साधनाक्रम में शामिल हो, चाहे हवन में, चाहे अनुष्ठान में, पाँच कृत्य आपको अवश्य करने पड़ते हैं-यह आत्मशोधन की प्रक्रिया पाँच हैं-(१) पवित्रीकरण करना (२) आचमन करना (३) शिखाबंधन (४) प्राणायाम और (५) न्यास। इन चीजों के माध्यम से मैंने आपको एक दिशा दी है, एक संकेत दिया है। हमने यह नियम बनाया है कि आपको स्नान करना चाहिए, प्राणायाम करना चाहिए न्यास करना चाहिए। इन माध्यमों से आपको अपनी प्रत्येक इंद्रिय का परिशोधन करना चाहिए।

आत्मशोधन

मित्रो! हमारी हर चीज संशोधित और परिष्कृत होनी चाहिए, स्नान की हुई होनी चाहिए। न्यास में हम प्रत्येक इंद्रिय के परिशोधन की प्रक्रिया की ओर आपको इशारा करते हैं और कहते हैं कि इन सब इंद्रियों को आप सही कीजिए, इंद्रियों को ठीक कीजिए। न्यास में हम आपको आँख से पानी लगाने के लिए कहते हैं, मुँह से, वाणी से पानी लगाने के लिए कहते हैं। पहले आप इनको धोइए। मंत्र का जप करने से पहले जीभ को धोकर लाइए। तो महाराज जी! जीभ का संशोधन पानी से होता है? नहीं बेटे, पानी से नहीं होता। पानी से इशारा करते हैं जिह्वा के संशोधन का, इंद्रियों के संशोधन का। जिह्वा का स्नान कहीं पानी पीकर हो सकता है? नहीं, असल में हमारा इशारा जिह्वा के प्राण की ओर है, जिसका शोधन करने के लिए अपने आहार और विहार दोनों का संशोधन करना पड़ेगा।

मित्रो! हमारी वाणी दो हिस्सों में बाँटी गई है, एक को 'रसना' कहते हैं, जो खाने के काम आती है और दूसरी को 'वाणी' का भाग कहते हैं, जो बोलने के काम आती है। खाने के काम से मतलब यह है कि हमारा आहार शुद्ध और पवित्र होना चाहिए, ईमानदारी का कमाया हुआ होना चाहिए। गुरुजी! मैं तो अपने हाथ का बनाया हुआ खाता हूँ। नहीं बेटे, अपने हाथ से बनाता है कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पराये हाथ का खाता है, यह इतना जरूरी नहीं है। ठीक है सफाई का ध्यान होना चाहिए, गंदे आदमी के हाथ का बनाया हुआ नहीं खाना चाहिए, ताकि गंदगी आपके शरीर में न जाए, लेकिन असल में जहाँ तक आहार का संबंध है, जिह्वा के संशोधन का संबंध है, उसका उद्देश्य यह है कि हमारी कमाई अनीति की नहीं होनी चाहिए, अभक्ष्य की नहीं होनी चाहिए। आपने अनीति की कमाई नहीं खाई है, अभक्ष्य की कमाई नहीं खाई है, दूसरों को पीड़ा देकर आपने संग्रह नहीं किया है। दूसरों को कष्ट देकर, विश्वासघात करके आपने कोई धन का संग्रह नहीं किया है तो आपने चाहे अशोका होटल में बैठकर प्लेट में सफाई से खा लिया हो, चाहे पत्ते पर खा लिया हो, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है।

अपने श्रम की कमाई खाएँ

मित्रो! ईमानदारी का कमाया हुआ धान्य, परिश्रम से कमाया हुआ धान्य हराम का धान्य नहीं है। ध्यान रखें, हराम की कमाई को भी मैंने चोरी का माना है। जुए की कमाई, लॉटरी की कमाई, सट्टे की कमाई और बाप-दादाओं की दी हुई कमाई को भी मैंने चोरी का माना है। हमारे यहाँ प्राचीनकाल से ही श्राद्ध की परंपरा है। श्राद्ध का मतलब यह था कि जो कमाऊ बेटे होते थे, बाप-दादों की कमाई को श्राद्ध में दे देते थे, अच्छे काम में लगा देते थे, ताकि बाप की जीवात्मा, जिसने जिंदगी भर परिश्रम किया है, उसकी जीवात्मा को शांति मिले। हम तो अपने हाथ-पाँव से कमाकर खाएँगे। ईमानदार बेटे यही करते थे। ईमानदार बाप यही करते थे कि अपने बच्चों को स्वावलंबी बनाने के लिए उसे इस लायक बनाकर छोड़ा करते थे कि अपने हाथ-पाँव की मशक्कत से वे कमाएँ-खाएँ।

अपने हाथ की कमाई, पसीने की कमाई खा करके कोई आदमी बेईमान नहीं हो सकता,चोर नहीं हो सकता, दुराचारी नहीं हो सकता, व्यभिचारी नहीं हो सकता, कुमार्गगामी नहीं हो सकता। जो अपने हाथ से कमाएगा, उसे मालूम होगा कि खरच करना किसे कहते हैं। जो पसीना बहाकर कमाता है, वह पसीने से खरच करना भी जानता है। खरच करते समय उसको कसक आती है, दरद आता है, लेकिन जिसे हराम का पैसा मिला है, बाप-दादों का पैसा मिला है, वह जुआ खेलेगा, शराब पिएगा और बुरे से बुरा कर्म करेगा। कौन करेगा पाप? किसको पड़ेगा पाप? बाप को। क्यों पड़ेगा? मैं इसे कमीना कहूँगा, जिसने कमा-कमाकर किसी को दिया नहीं। बेटे को दूँगा, सब जमा करके रख गया है दुष्ट कहीं का। वह सब बच्चों का सत्यानाश करेगा। मित्रो! हराम की कमाई एक और बेईमानी की कमाई दो, दोनों में कोई खास फर्क नहीं है, थोड़ा-सा ही फर्क है। ईमानदारी और परिश्रमी व्यक्ति हराम की और बेईमानी की कमाई नहीं खाते।

वाणी का सुनियोजन करिए

मित्रो! आपकी जिह्वा इस लायक है कि इससे जो भी आप मंत्र बोलेंगे, सही होते हुए चले जाएँगे और सार्थक होते चले जाएँगे, अगर आपने जिह्वा का ठीक उपयोग किया है तब और आपने दूसरों को बिच्छू के से डंक चुभोए नहीं हैं, दूसरों का अपमान किया नहीं है। दूसरों को गिराने वाली सलाह दी नहीं है, दूसरों की हिम्मत तोड़ने वाली सलाह दी नहीं है। जो यह कहते हैं कि हम झूठ नहीं बोलते। अरे! झूठ तो नहीं बोलता, पर दूसरों का दिल तोड़ता है दुष्ट। हमें हर आदमी की हिम्मत बढ़ानी चाहिए और ऊँचा उठाना चाहिए। आप तो हर आदमी का 'मॉरल' गिरा रहे हैं, उसे 'डिमॉरलाइज' कर रहे हैं। आपने कभी ऐसा किया है कि किसी को ऊँचा उठाने की बात की है। आपने तो हमेशा अपनी स्त्री को गाली दी कि तू बड़ी पागल है, बेवकूफ है, जाहिल है। जब से घर में आई है सत्यानाश कर दिया है। जब से वह आपके घर आई, तब से हमेशा बेचारी की हिम्मत आप गिराते हुए चले गए। उसका थोड़ा-बहुत जो हौसला था, उसे आप गिराते हुए चले गए।

महाभारत में कर्ण और अर्जुन दोनों का जब मुकाबला हुआ तो कृष्ण भगवान ने शल्य को अपने साथ मिला लिया। उससे कहा कि तुम एक काम करते रहना, कर्ण की हिम्मत कम करते जाना। कर्ण जब लड़ने के लिए खड़ा हो तो कह देना कि अरे साहब! आप उनके सामने क्या हैं? कहाँ भगवान और अर्जुन और कहाँ आप सूत के बेटे, दासी के बेटे? भला आप क्या कर सकते हैं? देखिए अर्जुन सहित पाँचों पांडव संगठित हैं। वे मालिक हैं और आप नौकर हैं। आपका और उनका क्या मुकाबला? बेचारा कर्ण जब कभी आवेश में आता, तभी वह शल्य ऐसी फुलझड़ी छोड़ देता कि उसका खून ठंढा हो जाता। आपने भी हरेक का खून ठंढा किया है। आपने झूठ बोलने से भी ज्यादा जुर्म किया है। एक बार आप झूठ बोल सकते थे। आपके झूठ में इतनी खराबी नहीं थी, जितनी कि आपने हर आदमी को जिसमें आपके बीबी-बच्चे भी शामिल हों, आपने हरेक को नीचे गिराया। आपने किसी का उत्साह बढ़ाया, हिम्मत

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बढ़ाई? किसी की प्रशंसा की? नहीं, आपने जीभ से प्रशंसा नहीं की, हर वक्त निंदा की, इसकी निंदा की, उसकी निंदा की। आप निंदा ही करते रहे। मित्रो! हमारी जीभ लोगों का जी दुखाने वाली, टोंचने वाली नहीं होनी चाहिए। टोंचने वाली जीभ से जब भी हम बोलते हैं, कडुवे वचन बोलते हैं। क्या आप मीठे वचन कहकर वह काम नहीं करा सकते, जो आप कडुवे वचन बोलकर या गाली देकर कराना चाहते हैं, वह प्यार भरे शब्द, सहानुभूति भरे शब्द कहकर नहीं करा सकते? करा सकते हैं।

जिह्वा ही नहीं, हर इंद्रिय का सदुपयोग करें

मित्रो! ये जिह्वा का संकेत है, जो हम बार-बार पानी पीने के नाम पर, पवित्रीकरण के नाम पर, आचमन करने के नाम पर आपको सिखाते हैं और कहते हैं कि जीभ को धोइए, जीभ को साफ कीजिए। जिह्वा को आप ठीक कर लें तो आपका मंत्र सफल हो जाएगा। तब राम नाम भी सफल हो सकता है, गायत्री मंत्र भी सफल हो सकता है और जो भी आप चाहें सफल हो सकता है।

यह आत्मसंशोधन की प्रक्रिया है। जीभ का तो मैंने आपको एक उदाहरण दिया है। इसके लंबे में कहाँ तक जाऊँ कि आपको सारी-की-सारी इंद्रियों का वर्णन करूँ और उनके संशोधन की प्रक्रिया बताऊँ कि आप अमुक इंद्रिय का संशोधन कीजिए। आँखों का संशोधन कीजिए। आँखों में जो आपके शैतान बैठा रहता है, जो छाया के रूप में प्रत्येक लड़की को आपको वेश्या दिखाता है। स्कूल पढ़ने कौन जाती है वेश्या। ये कौन बैठी है वेश्या! सड़क पर कौन जाती है? गंगाजी पर कौन नहा रही है? सब वेश्या। अरे साहब! दुनिया में कोई सती, साध्वी, बेटी, माँ, बहन कोई है? नहीं साहब! दुनिया में कोई बहन नहीं होती, कोई बेटी नहीं होती। जितनी भी रेलगाड़ियों में चल रही हैं, जितनी भी गंगाजी में नहाती हैं, जो स्कूल जा रही हैं, ये सब वेश्या हैं। नहीं बेटे, ये वेश्या कैसे हो सकती हैं। तेरी भी तो कन्या होगी? तेरी भी तो लड़की स्कूल जा रही होगी। वह भी फिर वेश्या है क्या? नहीं साहब! हमारी लड़की तो वेश्या नहीं है। बाकी सब वेश्या हैं। ये कैसे हो सकता है? बेटे, यह तेरे आँखों का राक्षस, आँखों का शैतान, आँखों का पशु और आँखों का पिशाच तेरे दिल-दिमाग में छाया हुआ है। यही तुझे यह दृश्य दिखाता है। इसका संशोधन कर, फिर देख तुझे हर लड़की में, हर नारी में अपनी बेटी, अपनी बहन और अपनी माँ की छवि दिखाई देगी।

दृष्टि बदलें, अपने आपे को संशोधित करें

बेटे, इन आँखों से देखने की जिस चीज की जरूरत है, वह माइक्रोस्कोप तेरे पास होना चाहिए। क्या देखना चाहता है? गुरुजी। सब कुछ देखना चाहता हूँ। बेटे, इन आँखों से नहीं देखा जा सकता। इसको देखने के लिए माइक्रोस्कोप के बढ़िया वाले लेंस चाहिए। कौन से बढ़िया वाले लेंस **"दिव्यं ददामि ते चक्षुः"** तुझे अपनी आँखों में दिव्यचक्षु को फिट करना पड़ेगा। फिर देख कि तुझे भगवान दिखाई पड़ता है कि नहीं पड़ता। *"सियाराममय सब जग जानी"* की अनुभूति होती है कि नहीं। फिर जर्रे-जर्रे में भगवान, पत्ते-पत्ते में भगवान तुझे दिखाई पड़ सकता है,

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

संत शिवली को खलीफा ने कीमती कपड़े उपहार में दिए। साथ में नौकर भेजा जो सामान को घर तक पहुँचा आए।

नौकर ने वेशकीमती कपड़े गंदे कर दिए। फलतः वे फेंकने पड़े। खलीफा को नौकर की इस हरकत का पता चला तो उसे नौकरी से बरखास्त कर दिया।

जब इस प्रसंग की चर्चा सत्संग में हुई तो संत ने कहा—"ईश्वर हम सबको कीमती कपड़ों जैसा शरीर और साधन- संपदा देता है। अगर हम उस बहुमूल्य संपदा को यों ही मूर्खतावश गँवा दें तो फिर बदनामी और बर्खास्तगी के सिवाय और क्या मिलेगा?"

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

अगर तेरी आँखों के लेंस सही कर दिए जाएँ तब। अगर लेंस यही रहें तो बेटे, फिर तुझे पाप के अलावा, शैतान के अलावा, हर जगह चालाकी, बेईमानी, हर जगह धूर्तता और दुष्टता के अलावा कुछ भी नहीं दिखाई पड़ सकता।

मित्रो! अध्यात्म पर चलने के लिए आत्मसंशोधन की प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। पूजा-उपासना के सारे कर्मकांड, सारे-के-सारे क्रिया-कृत्य आत्मसंशोधन की प्रक्रिया की ओर इशारा करते हैं। मैंने आपको जो समझाना था, वह सूत्र बता दिया। हमारा अध्यात्म यहीं से शुरू होता है। इसलिए यह जप नहीं हो सकता, भजन नहीं हो सकता, कुछ नहीं हो सकता। केवल यहीं से अर्थात आत्म-संशोधन से हमारा अध्यात्म शुरू होता है। आत्मसंशोधन के बाद ही देवपूजन होता है। देवता बनकर ही देवता की पूजा की जाती है। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति ॐ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

समस्त सिद्धियों का आधार तप-१

गायत्री महामंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! लोहे को गलाए बिना हम उससे कीमती हथियार नहीं बना सकते, पुरजे नहीं बना सकते। आप इससे क्या बनाएँगे? साहब! हमारा मन पुरजे बनाने का है, तलवार बनाने का है, तरह-तरह के औजार बनाने का है। लोहे से कैसे बनाएँगे? पहले इसको गलाएँगे, तपाएँगे। जब तक इसे गलाएँगे-तपाएँगे नहीं, तब तक कोई हथियार नहीं बन सकता। सोना हमारे पास है और उससे हमें कई तरीके के जेवर बनाने हैं। क्या-क्या जेवर बनाने हैं? बहुत बढ़िया वाले जेवर बनाने हैं। तो सोने से यों ही बनाइए न? नहीं साहब! जब तक तपाएँगे नहीं, गलाएँगे नहीं, तब तक सोने से कोई जेवर नहीं बन सकता।

गलाई और ढलाई

मित्रो! ठीक इसी तरह इनसान को गलाए बिना, तपाए बिना कोई कीमती नसल नहीं बन सकती। बहादुर महापुरुषों के इतिहास जब हम पढ़ने लगते हैं तो हमको यह बात पता चलती है कि इनमें से हर व्यक्ति को तपना पड़ा है, गलना पड़ा है और ढलना पड़ा है। गरम होना पड़ा है। आप क्या चाहते हैं? साहब, हम तो चैन की जिंदगी जीना चाहते हैं और खुशहाली की जिंदगी जीना चाहते हैं, मौज करना चाहते हैं, मजे उड़ाना चाहते हैं। और क्या करना चाहते हैं आप? और हम आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलना चाहते हैं। खबरदार! बकवास बंद कीजिए। किस बात की? इस बात की कि आप आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलना चाहते हैं, भगवान के रास्ते पर चलना चाहते हैं। अपने शरीर में से शक्तियाँ उभारना चाहते हैं, सिद्धियाँ उभारना चाहते हैं। देवता को इस शरीर में अवतरित करना चाहते हैं। इस घिनौने जीवन में, जिसमें कि विलासिता कूट-कूटकर भरी हुई है, अय्याशी कूट-कूटकर भरी हुई है, खुदगरजी कूट-कूटकर भरी हुई है। इस शरीर में महानता किस तरह से पैदा कर पाएगा?

नहीं साहब! हम महानता पैदा कर सकते हैं। ग्यारह माला जप करेंगे। बंद कीजिए आप ग्यारह माला। नहीं साहब! ग्यारह माला जप करेंगे, हनुमान चालीसा का पाठ करेंगे, देवी का पाठ करेंगे। आपकी मरजी है, चाहे जो करें या न करें, लेकिन महानता का उद्देश्य, आध्यात्मिकता का एकमात्र उद्देश्य है कि आपको अपने आप को तपाना पड़ेगा, अपने बहिरंग जीवन को गरम करना पड़ेगा। तपाने और गरम करने की प्रक्रिया को मैं समझाता हुआ चला आ रहा हूँ आपको और यह बताता आ रहा हूँ कि आदमी को अपना उद्धार करने के लिए और दूसरों का उद्धार करने के लिए तपस्वी का जीवन जीने के अतिरिक्त कोई और रास्ता नहीं है। आध्यात्मिकता के लिए भी इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। विलासिता का जीवन जिएँगे, अय्याशी का जीवन जिएँगे और आध्यात्मिकता के लाभों को प्राप्त करेंगे-बेटे, ये बेकार के सपने देखना बंद कर। दोनों काम साथ-साथ नहीं हो सकते-**"दुइ कि एकसंग नहिं होहिं भुआलू। हसब ठठाइ फुलाउब गालू॥"** आप दोनों काम एक साथ किस तरह से करेंगे। जोर से हँसेंगे तो आप गाल नहीं फुला सकते और अगर गाल फुलाएँगे तो हँसने का उद्देश्य पूरा नहीं कर पाएँगे। हँसना और गाल फुलाना, दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते।

मित्रो! स्वार्थी और घिनौना जीवन, विलासी और निकम्मा जीवन जीते हुए आप आध्यात्मिकता की दिशा में नहीं बढ़ सकते। दोनों चीजें एक साथ नहीं हो सकतीं। हम पूरब को भी चलेंगे और पश्चिम को भी चलेंगे। पूरब और पश्चिम, दोनों दिशाओं की ओर आप एक साथ नहीं चल सकते हैं। अगर आप पूरब की ओर चलेंगे तो पश्चिम की ओर नहीं जा सकते और पश्चिम को चलेंगे तो पूरब को नहीं जा सकते। इसी तरह तृष्णाओं का, वासनाओं का जीवन जिएँगे तो आप आध्यात्मिक प्रगति की ओर नहीं बढ़ सकते। आध्यात्मिक प्रगति की ओर बढ़ेंगे तो आपको वासनाओं-तृष्णाओं से भरे जीवन पर अंकुश लगाना पड़ेगा। आप इन दोनों के फायदे उठाना चाहते हैं तो यह नहीं हो सकता। एक को मंजूर कर लीजिए और एक को मना कर दीजिए। "हमको यह करना है कि नहीं करना है", "इधर चलना है कि नहीं चलना है"-आप यह फैसला कर लें तो नफे में रहेंगे। दोनों तरफ चलेंगे तब? तब हम क्या कह सकते हैं।

दोहरा व्यक्तित्व न हो

बेटे, इस संबंध में हम कछुए का एक छोटा-सा किस्सा सुनाते हैं। दोनों तरफ चलने वाले एक साँप का और एक कछुए का किस्सा अखण्ड ज्योति में छपा है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

एक साँप के दो मुँह थे–एक आगे की तरफ और एक पीछे की तरफ। यह जापान का किस्सा है। उसका मालिक जब उसे दूध पिलाता था तो दोनों के बीच में रस्सी लगा देता था, ताकि दोनों साँप आपस में लड़ने न पाएँ। ये क्या करते थे? दोनों एकदूसरे को काटने की कोशिश करते थे और दूध छीनने का प्रयत्न करते थे। कछुआ भी ऐसे ही था। उसका एक मुँह पीछे की तरफ था और एक आगे की तरफ। पीछे वाला कछुआ पीछे की तरफ चलने की कोशिश करता था और आगे वाला कछुआ यह कोशिश करता था कि आगे की ओर चलना चाहिए। इस तरह सारा दिन खींच-तान करता रहता था। आधा इंच इधर चला, आधा इंच उधर चला–सारे दिन ऐसे ही चलता रहता था।

मित्रो! आपके भीतर भी अगर दो व्यक्तित्व बने रहेंगे तो आप एक में भी सफलता नहीं प्राप्त कर सकेंगे। अगर आप दुनिया में अय्याशी का, विलासिता का, तृष्णा का जीवन भी जीना चाहेंगे और आध्यात्मिकता की चालें भी चलना चाहेंगे तो आपकी हैसियत उस कछुए जैसी हो जाएगी, जैसे मैं अभी कह रहा था। एक फैसला कर लीजिए कि आपको कहाँ चलना है? एक रास्ता बंद कर दीजिए। अगर आपको आध्यात्मिकता की राह पर चलना है तो आप अपने भौतिक जीवन को तपस्वी बनाने के लिए नष्ट कीजिए।

तपस्वी जीवन बनाइए

भगवान बुद्ध अंतिम भगवान हैं, जो हमारे सबसे नजदीक आते हैं। भगवान के दस अवतार हुए हैं या बीस, इस बहस में मैं नहीं पड़ता। दस अवतारों का भी जिक्र आता है और चौबीस अवतारों का भी जिक्र आता है। दोनों ही अवतारों में अंतिम अवतार हमारे बुद्ध हुए। भगवान बुद्ध ने जनसाधारण का जैसा बढ़िया मार्गदर्शन किया है, मैं नहीं जानता कि इससे भी अच्छा कोई मार्गदर्शन किया गया हो।

कलाओं के इतिहास में–भगवान की कलाओं का जैसे-जैसे विकास हुआ है, उस क्रम में सबसे ज्यादा कलाएँ भगवान बुद्ध में हैं। परशुराम जी में तीन कलाएँ थीं। रामचंद्र जी की बारह कलाएँ पुराणों में मानी गई हैं। श्रीकृष्ण भगवान की सोलह कलाएँ मानी गई हैं। बुद्ध की कितनी कलाएँ मानेंगे, मुझे मालूम नहीं, लेकिन कलाओं के क्रम का यह इतिहास बढ़ता हुआ चला गया। मत्स्य, कच्छप से लेकर वामन, वाराह तक कलाओं का यह क्रम पुराण ग्रंथों में भरा हुआ पड़ा है। श्रीकृष्ण भगवान को हम सोलह कला का मानते हैं तो बुद्ध भगवान की भी इतनी तो होंगी ही। बीस कलाएँ तो उनकी माननी पड़ेंगी। पुराणों में कहीं लिखा जरूर होगा, पर मेरी निगाह में नहीं आया। उनकी जरूर ज्यादा कलाएँ रही होंगी। उन्होंने यह बताया था कि अपने आप को संपन्न और दूसरे आदमियों को समुन्नत बनाने के लिए अगर आदमी को कुछ करना चाहिए तो उसकी गतिविधियाँ क्या होनी चाहिए? इसके लिए भगवान बुद्ध के पास एक ही हथियार था–तपस्वियों का हथियार। तपस्वियों का हथियार प्राप्त करके बुद्ध स्वयं समर्थ बने थे।

मित्रो! मैं सोचता हूँ कि दुनिया में सबसे संपन्न आदमियों में भगवान बुद्ध का नाम होना चाहिए। इनसे और कोई मालदार है? नहीं, उनसे और अधिक कोई मालदार नहीं हो सकता। मालदारों में फोर्ड का नाम मैंने सुना है, निजाम हैदराबाद का सुना है और भी बेटा छप्पन आदमियों के नाम आते हैं, पर मैं जानता हूँ कि भगवान बुद्ध का नाम, केवल आज के जमाने में ही नहीं है, पहले भी उनसे अधिक मालदार कोई भी आदमी नहीं हो सकता। अंगकोरवाट कंबोडिया का एक शहर था, जो अब मात्र खंडहर है। यह इतना बड़ा खंडहर है, इतना शानदार खंडहर है कि लोग अभी भी यह कहते हैं कि दुनिया के इतिहास में इतनी बड़ी इमारत किसी ने नहीं बनाई। पुरातत्त्ववेत्ता, जो खंडहरों का इतिहास जानते हैं, वे भी मानते हैं कि दुनिया का सबसे बड़ा खंडहर कौन-सा हो सकता है? दुनिया पैसे पर जाती है, फिर भी लोग इस सबसे प्राचीन और सबसे बड़े खंडहर और इमारत को देखकर आते हैं। कंबोडिया का अंगकोरवाट भगवान बुद्ध की संपन्नता का स्मरण दिलाता है। यह एक विशाल बुद्ध विहार था।

बेटे और क्या बताऊँ आपको, सारे संसार में चले जाइए, अरब देशों में मक्का-मदीना के पास जो पुराने बौद्ध विहार बने हुए हैं, उनका इतिहास हमने अपनी 'भारतीय संस्कृति के विश्व को अजस्र अनुदान' में लिखा हुआ है। मक्का-मदीने में जहाँ हजरत मोहम्मद साहब की मीनार बनाई गई थी, वहाँ का बौद्ध विहार उससे भी ज्यादा ऊँचा था, ऊपर से दिखाई पड़ता था, अतः हुक्म दिया गया कि इसको तोड़ा जाए, गिराया जाए और यहाँ के विहार बंद किए जाएँ। सारे-के-सारे मुस्लिम देशों में और सारे-के-सारे अरब देशों में बुद्ध विहार फैले हुए पड़े थे।

बुद्ध का चमत्कार

मित्रो! बुद्ध विहार में कितनी सामर्थ्य थी–यह मैं इमारतों की बात कह रहा हूँ। तक्षशिला की बात कह रहा हूँ, नालंदा विश्वविद्यालय की बात कह रहा हूँ। हिंदुस्तान में श्रावस्ती की कह रहा हूँ अजंता और एलोरा के बुद्ध विहारों की बात कह रहा हूँ, रंगून के पगोड़ा की बात कह रहा हूँ, जो स्वर्णमंदिर के नाम से प्रचारित है। पगोड़ा में सात टन भारी सोने की बुद्ध की मूर्ति बनी हुई है। बेटे, मैं यह इमारतों की बात कहता हूँ। बुद्ध के ज्ञान की बात

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अभी मैं नहीं कहता, बुद्ध-साहित्य की बात नहीं कहता, केवल इमारतों की बात कहता हूँ। चाइना में जितने ज्यादा प्राचीनकाल के मंदिर दिखाई पड़ते हैं, जितना ज्यादा प्राचीनकाल का इतिहास है, सब बुद्ध का इतिहास है। आप सारे चीन में घूम आइए, कितना बड़ा देश है- हिंदुस्तान से कई गुना बड़ा है, लंबाई-चौड़ाई में और जनसंख्या की दृष्टि से भी। मंदिर हिंदुस्तान में भी हैं और मंदिर चीन में भी हैं, लेकिन चीन में किसके मंदिर हैं? वे सब बुद्ध के मंदिर हैं। बुद्ध की यह समर्थता बेटे, इमारतों के हिसाब से बता रहा हूँ और किसी हिसाब से नहीं बता रहा हूँ।

मित्रो! संपन्न बुद्ध ने क्या काम किया? मैं सोचता हूँ कि इतनी बड़ी क्रांति और किसी आदमी ने नहीं की। जिस समय में बुद्ध ने विचार-क्रांति की थी, उस समय और कोई नहीं कर सका। बुद्ध ने कहा, "बुद्धं शरणं गच्छामि"-बुद्ध की शरण जाओ। नाम तो उनका सिद्धार्थ था, पर लोगों ने उनका नाम बुद्ध दे दिया। बुद्ध माने बुद्धि के देवता, विचारों के देवता, क्रांति के देवता। उस जमाने में उनने जो गदर किया था, क्रांति की थी, आपका यह मिशन उसी का अनुगमन करता है। 'धर्मचक्र प्रवर्तन' उनका उद्देश्य था। 'विचार-क्रांति अभियान' हमारा उद्देश्य है। दोनों में पूर्ण संगति और तालमेल है। वह पूर्वार्द्ध था और ये उत्तरार्द्ध है। उन्होंने सारे एशिया में बहुत भारी परिवर्तन किया था और अब युग निर्माण योजना अंत में बहुत बढ़िया और शानदार क्रांति के लिए कटिबद्ध हुई है। धर्मचक्र प्रवर्तन और युग निर्माण क्रांति की संगति मिलाकर मैं एक लेखमाला बना रहा हूँ। अभी तीन-चार लेख लिख लिए हैं, चार-पाँच और लेख लिखने अभी बाकी हैं। इनको आप पढ़िए कि बुद्ध की क्रांति और आपकी आज की क्रांति में कितना साम्य है। दोनों ने किस तरीके से एक ही सिद्धांत का अनुकरण किया है। दोनों की कार्यपद्धति में कैसी एकरूपता है।

क्रांति का मूल : तप

भगवान बुद्ध ने अपने समय में समय के प्रवाह को बदलने के लिए प्रयत्न किया था। यह प्रयत्न उनने किसके माध्यम से किया था? प्रचारकों के द्वारा। उनके पास प्रचारकों की सेना रहती थी। तो क्या यह सेना पंडितों की थी या उपदेशकों की? नहीं भाई! तपस्वियों की थी। तपस्वियों की सामर्थ्य असीमित होती है। सामर्थ्य की दृष्टि से एक ही व्यक्ति संपन्न हो सकता है और उसका नाम है--तपस्वी। लेकिन संसार की दृष्टि में वही व्यक्ति बलवान हो सकता है, जिसके हाथ में या तो पैसा हो अथवा बंदूक। चीनी नेता माओ कहते थे, "क्रांति या ताकत बंदूक की नली में से निकलती है।" माओ की बात भी ठीक हो सकती है। क्या पता, ताकत बंदूक की नली से निकलती होगी? लेकिन जिसको हम आध्यात्मिक ताकत कहते हैं, उस आध्यात्मिकता की शक्ति को यदि आप स्वीकार करते हों तो मैं यह कहता हूँ कि यह ताकत एक ही जगह से निकलती है और उसका नाम है- तपश्चर्या। तपश्चर्या के अलावा वह कहीं से नहीं निकलती है और न निकल सकती है।

गुरुजी, और ये भजन-पूजन? बेटे, ये तो उसके शृंगार हैं। जिस तरह बंदूक की, तलवार की मूठ तरह-तरह की होती हैं, म्यान तरह-तरह के होते हैं। कोई मखमल के म्यान होते हैं, कोई मूठ किसी चीज की बनी होती है, कोई सोने की बनी होती है, किसी में हीरे के नग जुड़े हुए होते हैं। तरह-तरह के शृंगार होते हैं और उनके अनुसार तलवार की कीमत ज्यादा हो जाती है। हम जानते हैं कि किसी जमाने में बादशाह की तलवारें बहुत अच्छी और कीमती होती थीं। ये शृंगार के कारण थीं। इसी तरह मंत्र आपके शृंगार हैं, जप आपके शृंगार हैं, पूजा आपके शृंगार हैं, शक्ति के स्रोत नहीं हैं। अगर ये शक्ति के स्रोत रहे होते तो पंडितों के पास तो अब तक कब की ताकत आ गई होती। पंडित तो सारे देवी-देवताओं का पाठ करना जानते हैं। आप नहीं जानते, आपको देवी का, चंडी का पाठ करना नहीं आता, परंतु पंडित जी को आता है। पंडित जी श्लोक बोलना ठीक से जानते हैं, आपको नहीं आता। अगर इसके साथ तप भी जुड़ा होता तो, अब तक पंडित अमीर हो गए होते, करोड़पति हो गए होते। दुनिया के मालिक हो गए होते, अगर इनके कर्मकांडों में ताकत रही होती।

तप से उत्पन्न होती है विद्या

मित्रो! कर्मकांडों में ताकत नहीं है। ताकत वहाँ होती है, जहाँ पर अपने आप को तपाने के बाद में आदमी शक्ति का उदय करते हैं। हमने आपको शृंगी ऋषि का किस्सा बताया था और कितनों का किस्सा बताया था। ऋषियों के पास किसकी महत्ता थी, क्या महत्ता थी-बताइए? विद्वान थे, किताब पढ़े थे? नहीं पढ़े थे वहाँ तक जहाँ तक हम लोग पढ़े हैं। क्या वे लोग इतने ही ज्ञानी थे, जितने कि हम लोग विद्वान हैं? आज के पी-एच०डी० के ज्ञान का मुकाबला प्राचीनकाल के विद्वान से कैसे किया जाए? बेटे, प्राचीनकाल में एक-एक ऋषि एक-एक विषय में पारंगत होता था। विश्वामित्र जी ने एक विषय में पारंगतता हासिल की थी और वह थी-गायत्री। गायत्री में पी-एच०डी० थे विश्वामित्र जी। आज हम सारे-के-सारे तीस हजार वेद के मंत्रों का व्याख्यान कर सकते हैं। इस जमाने में शिक्षा ज्यादा है। उस जमाने में शिक्षा की वजह से 'एग्जाम'-परीक्षा नहीं होती थी, वरन् तपश्चर्या की वजह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से 'एग्जामिनेशन' होते थे। ऋषियों की महत्ता, ऋषियों की गरिमा, ऋषियों का गौरव इस बात पर टिका हुआ था कि उन्होंने अपने जीवन में तपश्चर्या को किस मात्रा में ग्रहण किया था।

साथियो! मैं आपसे यह निवेदन कर रहा था कि आपके जीवन में तपश्चर्या के लिए स्थान मिले। अगर आप स्वीकार करें कि हम तपस्वी जीवन जिएँगे, तब क्या हो जाएगा? तब आपका बहिरंग जीवन, जो पंचतत्त्वों का बना हुआ है, जो पदार्थों से संबंधित है, जो दुनिया से संबंधित है और उसे प्रभावित करता है, उसे प्रभावित करने के लिए आप तपश्चर्या के माध्यम से शिक्षित कर सकते हैं और श्रद्धालु बनने के बाद में अगर आप में सामर्थ्य है तो भगवान को भी अपनी सहायता करने के लिए मजबूर कर सकते हैं। 'मजबूर' शब्द? हाँ बेटे, इसके अलावा और कोई शब्द मेरे पास नहीं है।

आप भगवान से दया की बात करते हैं कि भगवान बड़े दयालु हैं, कृपालु हैं। नहीं बेटे, मेरा ऐसा विश्वास नहीं है कि भगवान दयालु हैं, कृपालु हैं। अगर भगवान दयालु हैं, कृपालु हैं तो मैं यह सोचता हूँ कि मय्यत में जाकर के मैं बैठूँ और सवेरे से शाम तक भगवान की दयालुता की पोल खोलता जाऊँ। मरघट में आप जाइए और भगवान की पोल खोलते जाइए—ये कौन मर गया? जवान आदमी मर गया। उसकी माँ बिलख रही है, उसके बच्चे बिलख रहे हैं, औरत बिलख रही है। यह कैसे हो गया? यह किसने मार डाला? भगवान ने। भगवान को आप गाली देंगे। आप अस्पताल होकर आइए और देखिए कि भगवान कितना दयालु है। वहाँ कितने आदमियों की आँखें फोड़ी जा रही हैं, कितनों के हाथ काटे जा रहे हैं, कितनों का क्या किया जा रहा है। ये कौन कर रहा है? भगवान कर रहा है। तो भगवान को गाली दें? नहीं, मैं गाली नहीं दे सकता, आप गाली दीजिए। तो फिर आप क्या कहेंगे? बेटे, इसे मैं केवल न्यायाधीश कह सकता हूँ।

कायदे-कानून वाला भगवान

गुरुजी! आप भगवान को न्यायाधीश क्यों कहते हैं? बेटे, मैं न्यायाधीश इसलिए कहता हूँ कि बिजली के तरीके से भगवान के कुछ कायदे और कानून हैं। बिजली के कायदे और कानून का हम पालन करते हैं तो वह पंखा चलाती है, बत्ती जलाती है, हमारा रेफ्रीजरेटर चलाती है, हर चीज चलाती है। भगवान भी बड़े दयालु हैं, बिजली के तरीके से। बिजली हमारी बहुत सेवा करती है। बिजली हमारे कमरे को गरम करती है। बिजली हमारे कमरे को ठंढा भी कर देती है। हमें टेलीविजन दिखा देती है। हमारा रेडियो चला देती है। बिजली हमारे कुएँ में से पानी निकाल कर लाती है। बिजली जितनी सेवा कर सकती है, उतनी दस नौकर भी नहीं कर सकते। बिजली रातभर हमारे ऊपर पंखा झलती है। बेटे, वह बड़ी दयालु है। इससे बड़ा दयालु और कौन हो सकता है। माता और नौकर भी रातभर पंखा नहीं झल सकते। नौकर को भी नींद आ जाती है, कभी हाथ धीमा चलाता है तो कभी तेज चलाता है, लेकिन बिजली आपका पंखा बिना रुके एक स्पीड से चलाती रहेगी। एक दिन चलवाइए, दो दिन चलवाइए, वह बिना थके चलाती रहेगी। इससे बड़ा दयालु और कोई हो सकता है क्या? नहीं बेटे, बिजली से बड़ा दयालु कोई नहीं हो सकता। इसलिए उसे दयालु कहने में हमें कोई आपत्ति नहीं है।

लेकिन मित्रो! आपको मालूम होना चाहिए कि बिजली बड़ी खौफनाक और खतरनाक भी है। अगर आप बिजली का गलत तरीके से इस्तेमाल करेंगे तो वह आपको मार डालेगी, आपके बच्चे को मार डालेगी, आपकी औरत को मार डालेगी। सब चीजें बरबाद हो जाएँगी। अरे साहब! आप तो दयालु हैं। नहीं भाईसाहब! हम दयालु नहीं हैं। तो आप क्या हैं? नियम हैं, मर्यादा हैं, कायदा हैं और कानून हैं। अगर यह बात आप मान लेंगे तो आगे चलेंगे। आप यदि यही मानते रहेंगे कि भगवान को फुसलाकर उल्लू सीधे किए जाते हैं तो आप झक मारते रहेंगे। आप फुसलाने के चक्कर में फँसे रहेंगे तो फुसलाइए। अच्छा आप भगवान को फुसलाकर क्या करेंगे? अपना उल्लू सीधा करेंगे। उल्लू सीधा करना किसे कहते हैं? जो हमारी उचित और अनुचित माँगों को पूरा कर दे, जो हम माँगें, वह लाकर दे दे, वह उल्लू है।

बेटे, ये विचार आप मन से निकाल दें। यदि यही विचार अपने मन में भरे रहेंगे तो आप आध्यात्मिकता से बहुत दूर बने रहेंगे। आध्यात्मिकता भी आपसे बहुत दूर रहेगी, क्योंकि आप आध्यात्मिकता के सिद्धांतों को नहीं जानते। आप भगवान के सिद्धांतों को नहीं जानते। भगवान को सहायता करने के लिए मकबूल किया जाता है। बिजली को मकबूल किया जाता है पंखा झलने के लिए। अपने आप बिजली पंखा नहीं चला देगी। पहले हमें बिजली का बटन दबाना पड़ता है। इसी तरह तपश्चर्या द्वारा भगवान को मकबूल करना पड़ता है। तपश्चर्या करना आपको स्वीकार न हो तो फिर आप यह उम्मीद मत रखिए कि भगवान दयालु हैं, देवता दयालु हैं, अमुक दयालु हैं, इसलिए दयालुता के वशीभूत होकर के आपकी सहायता करेंगे। बेटे, ऐसी सहायता आपको नहीं मिलेगी। आप लिख लीजिए, यदि इस तरह से सहायता मिल जाए तो हमसे कहना। (क्रमशः अगले अंक में)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

समस्त सिद्धियों का आधार तप-२

(गतांक से आगे)

आप ऐसा शोध मत करिए

मित्रो! अगर आप कल को यह कहेंगे कि भगवान बड़े दयालु थे, देवी बड़ी दयालु थीं और हमने अगरबत्ती जला दी, नारियल चढ़ा दिया तो देवी प्रसन्न हो गईं और हमारे पास रुपयों का बंडल लेकर आ गईं। अगर आपका यह खयाल सही है तो बेटे, हम भी यही करेंगे और लोगों से भी कहेंगे कि आपने एक बहुत बड़ा आविष्कार कर लिया। बहुत से लोगों ने भी आविष्कार किए हैं, किसी ने बिजली का आविष्कार किया है, किसी ने रेडियो का आविष्कार किया, किसी ने अमुक का आविष्कार किया। आपको भी मैं आविष्कारक मानूँगा, अगर आप यह साबित करेंगे कि भगवान को धूपबत्ती खिलाकर फुसलाया जा सकता है और फुसलाने के बाद में मनमरजी के काम निकाले जा सकते हैं। अगर आपका यह प्रयोग सफल हो जाए तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी कि आपने एक बड़ा भारी एवं क्रांतिकारी आविष्कार कर लिया।

मित्रो! तब मैं हर आदमी से यही कहूँगा कि आपको अपना व्यक्तित्व विकसित करने की कोई जरूरत नहीं है। किसी आदमी को पुरुषार्थ करने की जरूरत नहीं है। किसी आदमी को जीवन संशोधन करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इन महाशय जी ने नया आविष्कार करके यह दिखा दिया है कि धूपबत्ती से, देवी का पाठ करने से देवी-देवताओं को प्रसन्न किया जा सकता है और मनमरजी की मनोकामना पूरी कराई जा सकती है। फिर मैं सब लोगों से कहूँगा कि आप लोग गलत थे। इतनी मेहनत आपने बेकार कर डाली। आपने जो किताब पढ़ाई, गलत पढ़ाई। आपने पुरुषार्थ बेकार किया। आपको इन महाशय जी का कहना मानना चाहिए था और आपको हनुमान चालीसा पढ़ना चाहिए था, धूपबत्ती जलानी चाहिए थी और अपना उल्लू सीधा कर लेना चाहिए था। फिर मैं आज तक की हर परंपरा को बदल देने के लिए कहूँगा। हर आदमी जो सोचता है, गलत सोचता है और ये महाशय जी सही सोचते हैं। ये नए आविष्कारक हैं। बेटे, मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आप वास्तविकता के नजदीक आइए। अगर आप वास्तविकता के नजदीक नहीं आएँगे तो बेकार परेशान होंगे और अपना समय खराब करेंगे।

तप रहा है सफलताओं के मूल में

मित्रो! तपश्चर्या का महत्त्व आपको मैं बता चुका हूँ। भौतिक प्रगति की दिशा में आपका बढ़ने का वास्तव में मन हो तो आपको तपस्वी जीवन जीने की तैयारी करनी चाहिए। भगवान बुद्ध ने तपस्या की वजह से सारे-के-सारे विश्व में नई क्रांति की और उसकी काया पलट दी। उस गंदे जमाने को ठीक कर दिया था। वे कौन से आविष्कार थे, जो उन्होंने किए थे? वे थे उनके चीवरधारी भिक्षु, परिव्राजक। परिव्राजक कौन होते हैं—घुमक्कड़? नहीं बेटे! तो लोहे की गाड़ी वाले होते होंगे, जो गाड़ी लिए इस गाँव से उस गाँव घूमते-फिरते हैं? हाँ, ये भी परिव्राजक हैं, पर वो परिव्राजक अलग तरह के थे। भगवान बुद्ध ने सबसे पहला शिक्षण अपने परिव्राजकों को यह दिया था कि आपको तपश्चर्या करनी चाहिए। उनका हर शिष्य पहला शिक्षण तपश्चर्या का लेता था, देवी-देवता का पाठ करने का नहीं। तपश्चर्या का क्या पाठ करते थे वे? उनके हर परिव्राजक पर खान-पान के संबंध में, रहन-सहन के संबंध में, कपड़े पहनने के संबंध में, उपवास करने के संबंध में, सारे-के-सारे इतने कठोर नियम उन पर लागू होते थे कि वे अपने बुद्ध विहारों में तपस्वी जीवन जीने के बाद जब बाहर निकलते थे और जहाँ कहीं भी जाते थे, क्रांति करते हुए चले जाते थे।

हिंदुस्तान से निकलने के बाद में वे परिव्राजक समूची एशिया में छा गए। रेगिस्तानों को पार करते हुए, तिब्बत के पठार और चट्टानों को पार करते हुए वे चीन जा पहुँचे। चीन में भारत से गए कुमारजीव से लेकर अनेक विद्वान ऐसे हुए हैं, जिन्होंने बौद्ध धर्म को दूर-दूर तक फैलाया। अशोक से लेकर हर्षवर्धन तक ने जनता और शासन दोनों को एक बना दिया। बौद्ध धर्म को सबसे अधिक दूर-दूर तक फैलाने में इन्होंने अपनी सारी शक्ति झोंक दी थी। असल में आपको बौद्ध देश देखना हो तो आपको आज से तीस साल पहले के चाइना में जाना होगा। अब तो तीस साल से वहाँ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कम्युनिज्म आ गया है, पर तीस साल पहले वहाँ असली बौद्ध थे। चीन हिंदुस्तान से भी बड़ा है। तब वहाँ एक करोड़ आबादी थी। सारे-का-सारा हिस्सा तब बौद्ध धर्म में दीक्षित था। न केवल चाइना, वरन् मंचूरिया, मगोलिया, जापान, कोरिया आदि सारे देश एवं कंबोडिया से लेकर जावा, सुमात्रा तक, इंडोनेशिया से लेकर मलेशिया तक सारे-के-सारे द्वीप यहाँ से लेकर वहाँ तक पूरे में बौद्ध धर्म फैला हुआ था। न केवल पूरा एशिया, वरन् यूरोप के बहुत सारे हिस्सों व अन्य देशों में बौद्ध धर्म फैला हुआ था। अमेरिका में तो अभी पता नहीं चला है कि कभी वहाँ बौद्ध धर्म था। वहाँ तो मय सभ्यता का पता चला है, लेकिन इसके अतिरिक्त सारे एशिया एवं विश्व में बौद्ध धर्म छा गया था।

अक्षुण्ण कीर्ति मिलती है तपस्वी को

मित्रो! यह क्या बात थी? यह थी कीर्ति, जो व्यक्तित्व की चमक से पैदा होती है। यह धर्म-प्रचारकों का व्यक्तित्व ही है, जिन्होंने अपनी गरिमा को बढ़ाने के साथ-साथ में अपने धर्म अर्थात जिस मिशन को लेकर वे चले थे, उसे जादू के तरीके से और तूफान के तरीके से, आग के तरीके से आगे बढ़ाते चले गए। सफलता उनके चरण चूमती चली गई। सफलता उनके ही चरण चूमती है, जो तपश्चर्या के सिद्धांत पर विश्वास करते हैं। जो तपश्चर्या के सिद्धांत पर विश्वास नहीं करते, जिनको अपनी जबान पर काबू नहीं है, खाने पर काबू नहीं है, इंद्रियों पर काबू नहीं है, लोभ पर काबू नहीं है, मोह पर काबू नहीं है और ऊपर से कहते हैं कि हमको भगवान के दर्शन करा दीजिए, अमुक सिद्धि दिलवा दीजिए, वे परले सिरे के धूर्त हैं। जो हराम का पाना चाहते हैं, सफलता ऐसे आदमियों से बहुत दूर भागती है।

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? हमको अपना जीवन तपस्वी जीवन में ढालने के लिए तैयार करना होगा। यह कठिन चीज है, अतः ज्यादा कीमत चाहिए। यह न तो सस्ती चीज है और न सस्ते में मिल सकती है। इसके परिणाम बड़े मूल्यवान हैं। इसलिए मूल्यवान वस्तुओं का मूल्य चुकाने के लिए तैयार हो जाइए। आपके बचपन से मैं आपको यही सिखाता चला आया हूँ कि ब्रह्मवर्चस् का सिद्धांत क्या है? ब्रह्मवर्चस् अर्थात ब्रह्मतेजस् आप प्राप्त करना चाहते हैं तो आप तपस्वी बनिए। तैयारी कीजिए। धीरे-धीरे जैसे-जैसे ब्रह्मवर्चस् आपको बर्दाश्त होता जाएगा, वैसे-वैसे आपको अधिक तपस्वी बनाने के लिए हम प्रयत्न करेंगे। आपको हमने आरंभ से कराया है और आगे भी कराएँगे। क्या कराएँगे? दधीचि की हड्डियों में से जैसे आग निकलती थी, बिजली निकलती थी, वैसे ही आपकी आँखों में से आग, आँखों में से बिजली, आपकी वाणी में से बिजली, आपके चेहरे में से बिजली निकालेंगे। आपको तपा-तपाकर चलता-फिरता बिजलीघर बनाएँगे। तपाने से बन सकती है? हाँ बेटे, बन सकती है। आपको तपस्वी जीवन की शिक्षा दी जाएगी।

'योगा' नहीं योग

साथियो! अभी एक और हिस्सा रह गया था, उसको बताना चाहते हैं। उसका नाम है—'योग।' योग किसे कहते हैं? योग कहते हैं—परमात्मा से जुड़ने को। आज का 'योगा' अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग होता है। अगर योगा देखना है तो आप यूरोप में चले जाइए। मैं यूरोप घूमकर आया हूँ। मैंने जगह-जगह योगा देखा। हमने देखा कि वहाँ योगा कैसे होता है। यों मालूम पड़ता है कि वहाँ योगा का कोई ताऊ, भतीजा या चाचा, मामा होगा। योगा तो है नहीं, हाँ, कोई उसका रिश्तेदार होगा। आपको रात को वहाँ का योगा देखना हो तो उनका मेडिटेशन देखिए। यह बीसवीं शताब्दी का चमत्कार है। बीसवीं शताब्दी योगा पर कैसे हावी हो गई है, आप वहाँ जाकर देखिए कि शराब पिए धुत पड़े हुए लोग क्या कर रहे हैं? मेडिटेशन कर रहे हैं। भला मेडिटेशन ऐसा होता है कि आप नशा कीजिए, एकांत में रहिए, हिप्पी बनकर इकट्ठे होते चले जाइए और दुनिया भर की सब बदमाशी कीजिए और योगा करते चलिए। किसी जमाने में हमने बाजीगरों का खेल देखा था, जादूगरों का खेल भी देखा था, लेकिन इस जमाने में पढ़े-लिखे लोगों में नए किस्म की जादूगरी चालू हो गई है और इसका नाम हो गया है- 'योगा'। कुछ सेंटरों में समाधियाँ लगवाते हैं। वे कहते हैं—देखिए, हम अभी आपके सेंटरों में समाधि लगवा देते हैं। आपको कोई पुरुषार्थ करने की जरूरत नहीं है। देखिए, अभी हम आपके ऊपर जादू करते हैं और आपकी समाधि लगवाते हैं, आपका ध्यान लगवाते हैं, मेडिटेशन करवाते हैं।

मित्रो! सब जगह यही धूर्तता जहाँ-तहाँ सारे संसार में फैली हुई है। इस अनाचार को देखकर मालूम पड़ता था, मानो योग की जीवात्मा ही खत्म हो गई। यही ढकोसला सब जगह न खड़ा हो जाए, यह आशंका बनी रहती है। अब योगा में क्या होता है? आसन होता है। नाक में रस्सी डाल लेंगे, भीतर तक ले जाएँगे और फिर बाहर निकाल लेंगे। क्यों साहब! योगा तो भगवान से मिलने को कहते हैं। क्या इससे भी भगवान मिल जाएगा? हाँ साहब! अच्छा तो जब भगवान मिल जाए तो हमें भी दिखाना।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बेटे! योगा वह हो सकता है जिसमें हमारा मन, हमारा चिंतन आदर्शवादिता के साथ जोड़ा जाता है। यह थिंकिंग है, विचारणा है। क्रियायोग का जितना भी संबंध है, वह तपश्चर्या से है। कौन-सी? जो हम शरीर के द्वारा करते हैं। शरीर के सारे-के-सारे अंगों की जितनी भी क्रियाएँ हैं, वे सब तपश्चर्या में आती हैं। जप, यह भी उसी में आता है। यह शरीर की क्रिया है। प्राण भी शरीर में आता है, क्योंकि यह शरीर की क्रिया है। शरीर के द्वारा जो भी क्रिया की जाती है, वह योग में नहीं आती, तप में आती है। योग चीज अलग है।

चिंतन का परिष्कार है योग

योग किसे कहते हैं? बेटे, हमारा चिंतन, हमारी विचारणा—इसको परिष्कृत करना और हमारा क्रियापक्ष, इसका परिशोधन करना—इसका नाम योग है। चिंतन, चरित्र और व्यवहार को परिशोधित करने का नाम योग है। ये सारी-की-सारी क्रियाएँ हमारी विचारणा से संबंधित हैं। आपके लिए कोई योग शब्द का इस्तेमाल करे तो आप समझना कि इसका सारे-का-सारा दबाव, सारे-का-सारा शिक्षण, सारी-की-सारी गतिविधियाँ केवल हमारे चिंतन को परिष्कृत करने तक शायद सीमित हैं। अंतरंग को परिष्कृत करने तक सीमित हैं। योग में क्या आता है? ध्यान आता है। ध्यान की असंख्य प्रक्रियाएँ आती हैं। ध्यान की असंख्य प्रक्रियाओं में से प्रत्येक को हम कर्मयोग कह सकते हैं। आपने राजयोग का नाम सुना होगा। राजयोग के चार हिस्से शरीर से संबंधित हैं। ये हैं यम, नियम, आसन और प्राणायाम। ये चार शरीर की तपश्चर्या से संबंधित हैं कि शरीर को कैसे स्वस्थ रखना चाहिए। प्राणवायु को हमें कैसे ठीक रखना चाहिए। आहार और विहार के नियमों का हमको कैसे पालन करना चाहिए। ये चार पक्ष तपश्चर्या के हैं। इसको हम तप कह सकते हैं

योग के अन्य चार पक्ष कौन से हैं? प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। बेटे, ये हमारे चिंतन के ऊपर निर्भर हैं। हमारा चिंतन किधर चलना चाहिए? चिंतन को कहाँ लगाना चाहिए? अस्त-व्यस्त चिंतन की रोक-थाम हमें कैसे करनी चाहिए? चिंतन का परिष्कार हमको कैसे करना चाहिए? चिंतन को हमें कहाँ तक ले जाना चाहिए और अपने चिंतन को हमें भगवान में विलय कैसे कर देना चाहिए? ये सारी-की-सारी चिंतनपरक कसरत योग कहलाती है। यह योग आपको सीखना चाहिए। इस योग के सिद्धांत मैं आपको बताऊँगा। क्रिया तो वही है, जो आपको हम यहाँ कराते हैं। क्रियाओं को फिर किसी दिन बता दूँगा। सायंकाल को हम जो आपको ध्यान कराते हैं, उस ध्यान के पीछे योग के कौन-कौन से सिद्धांत जुड़े हुए हैं, यह हम किसी दिन आपको समझा देंगे। यहाँ जो क्रियाएँ हम आपको कराते हैं—व्यायाम से लेकर आसन कराने तक, जप कराने से लेकर तप कराने तक। उसमें से तप का अंश कौन-सा है और योग का कौन-सा तथा यहाँ के बताए हुए शिक्षण को आगे चलकर कैसे बढ़ाना पड़ेगा, यह सब हम आगे चलकर बताएँगे। अभी तो हम उसका मूलभाव समझा रहे हैं और यह बता रहे हैं कि ध्यान क्या है?

ध्यान के दो भाग

मित्रो! ध्यान को हम दो हिस्सों में बाँट देते हैं। एक हिस्सा वह है, जो हमारे चिंतन के बिखराव को रोकता है, विचलन को रोकता है। इसको हम क्या कहते हैं? इसका नाम है- एकाग्रता। एकाग्रता किसे कहते हैं? जिसे आप बार-बार कहते हैं कि हमारे मन का निग्रह कीजिए, वस्तुत: वह योग का पहला वाला हिस्सा है। हमारा मन जो चारों ओर भाग-दौड़ करता है, भगदड़ मचाता है, बेसिलसिले चलता है, व्यर्थ की बातों में चलता रहता है, इसको एक सिरे पर ले आना, एक क्रम में ले आना—इसका एकाग्रता वाला भाग है। मन का एक और भाग वह है, जिसे हम काम पर लगा देते हैं, किसी लक्ष्य पर लगा देते हैं। मन का यह दूसरा वाला हिस्सा है। बंदूक में क्या होता है? बंदूक में दो भाग होते हैं। एक काम यह होता है कि बारूद को और गोली को, दोनों चीजों को कारतूस में बंद करके छोटे से दायरे में कैद कर देते हैं। कैद न करें तो? कैद न करें तो बेटे, बारूद चारों तरफ फैल जाएगी और यदि उसे जला दें तो भक से जलकर खत्म हो जाएगी। बारूद के लिए यह पहला काम करना पड़ता है—एकाग्रता का। कारतूस में एकाग्रता अर्थात बंदूक की लंबी नली में कारतूस और बारूद को एकाग्र करके यह देखते हैं कि यह बहुत देर तक एकाग्रता की दिशा में चले।

अगर बंदूक की नली छोटी हो तब? तब मुश्किल पड़ जाएगी। लंबी नली की विशेषता यह है कि यह गोली को दूर तक फेंक सकती है। पिस्तौल दूर तक नहीं फेंक सकती। इसके लिए उसकी नली लंबी होनी चाहिए। लंबी नली में कारतूस बहुत दूर तक एकाग्र, एक दिशा में चला जाता है, इसलिए बहुत दूर तक फेंक सकती है। पिस्तौल ऐसा नहीं कर सकती। पिस्तौल सामने मार सकती है, लंबी दूरी तक गोली नहीं फेंक सकती। उसमें लंबे फेंक कर मारने की गुंजाइश नहीं है। नली लंबी है ही नहीं तो लंबे तक कैसे मार कर सकती है? अत: ध्यान का पहला

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वाला हिस्सा है—एकाग्रता, जिसको लोगों ने 'मेडिटेशन' नाम दिया हुआ है। यह पहला वाला हिस्सा है।

ध्यान योग का दूसरा वाला हिस्सा है—लक्ष्यवेध। अर्थात हमारा चिंतन किसी लक्ष्य विशेष में लगाया जाए। लक्ष्य विशेष से क्या मतलब है ? लक्ष्य विशेष का मतलब यह है कि बंदूक कहाँ चलाई जाएगी और कहाँ मारी जाएगी ? इसका निशाना कहाँ लगेगा ? कोई निशाना भी तो होना चाहिए। नहीं साहब ! निशाने की क्या आवश्यकता, हम तो यों ही हवा में चलाएँगे। तो निशाना नहीं लगाएगा, हवा में बारूद बेकार करता रहेगा ? मित्रो ! जब कहीं निशाना लगाते हैं, तब उसको कहते हैं—लक्ष्य। ध्यान के दो हिस्से हैं। एक तो हमारा लक्ष्य है कि इसको कहाँ लगाएँ। दूसरा है—निग्रह। यदि मन का निग्रह हम नहीं कर सकेंगे, मन का फैलाव और बिखराव निगृहीत नहीं कर सकेंगे तो हमारे भीतर मन:शक्ति का विकास नहीं हो सकेगा। हमारा मन सामर्थ्यवान नहीं बन सकेगा और सदैव कमजोर ही बना रहेगा।

एकाग्रता की परख

साथियो ! हमारा मस्तिष्क, हमारा चिंतन, जो हमेशा बिखराव में व्यस्त रहता है, उसको किसी उद्देश्यपूर्ण काम में व्यस्त होना चाहिए, तभी इसमें ताकत आती है और आदमी के खुद के भविष्य का निर्माण होता है। मुझे एक घटना याद आ गई। राजा द्रुपद की बेटी थी द्रौपदी, जो बहुत खूबसूरत और योग्य थी। उसके पिता ने निश्चय किया कि इस लड़की का ब्याह हम किसी ऐसे आदमी से करेंगे, जिसका भविष्य उज्ज्वल हो। कितने भविष्यवक्ता आए, पंडित आए। उन्होंने कहा कि हमें आपकी बात पर विश्वास नहीं है। पहले आप अपना भविष्य बताइए, तब हम आपकी भविष्यवाणी मानेंगे। आपको भविष्य में कब मरना है, बताइए ? हमें मालूम नहीं, तो फिर आप हमारा मरना कैसे बता सकते हैं ? उन्होंने भविष्य बताने वाले सब पंडित वापस कर दिए। तब समझदारों, विद्वानों ने कहा कि फिर यह बताइए कि किस आदमी का भविष्य अच्छा है ? इसका सबूत क्या है ?

गुरु द्रोणाचार्य ने एक बात बताई कि राजन् ! किस आदमी का भविष्य अच्छा है या बुरा है, यह जानने का एक ही तरीका है कि उस आदमी की अक्ल एक काम पर एकाग्र होती है या नहीं। जिस आदमी की अक्ल बंदर के तरीके से इस डाली से उस डाली पर उचक-मचक करती होगी। ऐसा करेंगे तो यह होगा, वह होगा, न कोई निश्चय है, न कोई संकल्प है, न कोई श्रद्धा है, न कोई इच्छा है, न कोई धारणा है। इसके यहाँ, उसके वहाँ, यहाँ सत्संग, वहाँ अमुक का सत्संग, यह भी शामिल, वह भी शामिल। सब एक- एक जायके खाता रहता है। ३२ चीजों का जायकेदार चूरन खाता रहता है। आज इसके यहाँ चलूँगा, कल उसके यहाँ चलूँगा। एक निश्चय नहीं है, जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है। जायके तो जीवन में बहुत मिल जाएँगे, पर ऐसी स्थिति में सफलता कहीं नहीं मिलेगी। द्रोणाचार्य ने कहा कि केवल वही आदमी सफल हो सकता है, जो दृढ़ निश्चय वाला हो और जिसका मन एकाग्र हो। एकाग्र मन वाले आदमी का भविष्य अच्छा है, सांसारिक दृष्टि से भी और आध्यात्मिक दृष्टि से भी।

एकाग्रता की परख करने के लिए लकड़ी की एक मछली मँगाई गई। उसे ऊँचाई पर रखे एक चक्र पर घुमाया गया। उसके नीचे तेल का कड़ाह रखा गया और यह कहा गया कि ऊपर की ओर कोई मत देखिए, केवल कड़ाह में देखकर ऊपर तीर चलाइए। मछली की आँख में जो कोई तीर मार देगा, उससे ही द्रौपदी का ब्याह किया जाएगा। बहुत से राजकुमार स्वयंवर में आए। द्रोणाचार्य ने कहा—भाई साहब ! तीर चलाने से पहले आप हमारे पास आइए और यह बताइए कि मछली का क्या-क्या आपको दिखाई पड़ता है। किसी ने कहा कि हमको मछली की मूँछ दिखाई पड़ती है, किसी ने कहा—हमको पूँछ दिखाई पड़ती है। इस तरह के लोगों को वे हटाते गए और जब अर्जुन की बारी आई तो उन्होंने पूछा, "बेटे ! तुझे क्या दिखाई पड़ता है ?" अर्जुन ने कहा, "हमें केवल मछली की आँख दिखाई पड़ती है।" "अच्छा बताओ, मछली की पलक, मछली का सिर आदि कुछ दिखाई पड़ता है ?" उसने कहा, "नहीं, केवल आँख की पुतली दिखाई पड़ती है।" राजा ने हुक्म दिया कि बस यही लड़का निशाना साध सकता है। स्वयंवर की तैयारी की गई। लड़की को तैयार किया। बाजे बजने लगे। अर्जुन ने अपना धनुष उठाया, प्रत्यंचा चढ़ाई और झट से तीर लक्ष्य पर छोड़ दिया। तीर ठीक आँख की पुतली में जा लगा। उसको वरमाला पहना दी गई।

मित्रो ! मैं क्या कह रहा हूँ एकाग्रता की बात, जिसका आपको ज्ञान नहीं है। एकाग्रता का न आपने अभी मूल्य समझा, न कभी महत्त्व समझा और न यह जाना कि एकाग्रता के सिद्धांत का परिपालन करने के लिए क्या करना चाहिए। आप तो हर चीज के लिए कहते हैं कि मम्मी ! यह चीज दिला। तो हम क्या करें ? तो गुरुजी, आप आशीर्वाद दे दीजिए। आशीर्वाद से नहीं बेटा ! तप से, एकाग्रता से जीवन में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ मिलती हैं। **(क्रमशः)**

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

यदि हो जाए ईश्वर के साथ साझेदारी

(मार्च१९८१ में शांतिकुंज परिसर में दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्!

देवियो, भाइयो! जमीन के भीतर बेशकीमती चीजें भरी पड़ी हैं। इसमें हीरा है, सोना है, कोयला है, लोहा है और न जाने क्या-क्या भरा पड़ा है। जमीन की खुदाई करने पर हम इसमें तेल देखते हैं और दूसरी कीमती चीजें देखते हैं, पर बाहर हम सारी जमीन पर तलाश करते चले जाते हैं तो सिवाय घास-पात के, कूड़े-कचरे के कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। हीरा कहीं दिखाई नहीं पड़ता, सोना जमीन पर कहीं फैला हुआ नहीं पाया जाता। हमें बेशकीमती चीजें पाने के लिए जमीन की गहरी खुदाई करनी पड़ती है। ठीक इसी तरह जब हमने अपने भीतर में, अपने गरेबान में मुँह डाला तो हमें बड़ी कीमती चीजें दिखाई पड़ीं। मैं चाहता हूँ कि आप लोगों को यहाँ बुलाकर अपनी वही मनःस्थिति आपके सामने दिल खोल करके दिखा पाता तो आप भी मेरी तरह धन्य हो जाते।

जीवन के दो कीमती हिस्से

मित्रो! मेरे फरिश्ते ने जिंदगी के दो कीमती हिस्से मुझे दिखाए—एक शुरुआत वाला और दूसरा आखिरी वाला हिस्सा। दोनों ही हिस्से इतने बेशकीमती थे कि इनके बराबर और कोई कीमती चीज किसी की जिंदगी में हो नहीं सकती है। जिंदगी का पहला वाला सिरा मेरे फरिश्ते ने मुझे दिखाया और मैंने देखा कि भगवान ने बेशकीमती नियामत मेरे हाथ में सौंप दी है। कितने बड़े हीरों का हार, जिसकी कोई कीमत नहीं हो सकती। और चीजों की बड़ी कीमत है, पर जिंदगी से बढ़कर और कोई नियामत दुनिया में हो ही नहीं सकती, जो भगवान इनसान को सुपुर्द करता है। मनुष्य की जिंदगी जो किसी और प्राणी को नहीं मिल सकी। मनुष्य की जिंदगी जिसके लिए देवता तरसते हैं और ये कहते हैं कि हमको मनुष्य की जिंदगी मिलनी चाहिए; क्योंकि इसमें कर्म का भी आनंद है। देवयोनि में कर्म का आनंद नहीं है। देवता भोगयोनि हैं और पशु भी भोगयोनि हैं, पर मनुष्य योनि में खट्टे-मीठे आनंद हैं। वह कर्म भी कर सकता है और भोग भी सकता है। ऐसा सुरदुर्लभ मनुष्य का जीवन जो किसी और प्राणी को नहीं मिला। चौरासी लाख योनियों में से किसी को नहीं मिला। इतना बेशकीमती जीवन मुझे भगवान ने दिया है। सिर ऊँचा हो गया, सीना तन गया। मनुष्य का जन्म इतना सामर्थ्यवान है कि आदमी अगर इसका सही तरीके से इस्तेमाल कर सके तो दूसरा भगवान बन सकता है। मैंने इसे बड़े गौर से देखा, घूर-घूर कर देखा, इसकी कीमत को देखा, नाप-तोल करके देखा और मेरे फरिश्ते ने मुझे दिखाया।

साथियो! इतनी बड़ी चीज पाकर इसका ठीक तरीके से इस्तेमाल करना भी एक बड़ी बात है। कोई बाप लाखों-करोड़ों रुपए की संपत्ति देकर जाए और उसके बेटे कपूत निकलें, सारी-की-सारी दौलत को जुआखोरी में और शराबबाजी में खरच कर डालें तो कोई क्या कर सकता है! उसमें बाप की क्या गलती हो सकती है! इतनी कीमती चीज है, अब इसका मुझे ठीक से इस्तेमाल करना होगा। मेरे गुरु ने मुझे बताया कि देख मानव जीवन कितना कीमती है, क्या तू इसे समझ पाया है? मैंने कहा, हाँ, यह बेशकीमती है। इससे बढ़िया और कोई दौलत प्राणी के लिए नहीं हो सकती, जितना इनसानी जीवन है। मैं धन्य हो गया, निहाल हो गया। मैंने जिंदगी का एक सिरा देखा, जो मेरे फरिश्ते ने मुझे दिखाया। कब? आज से पचपन वर्ष पहले, उन दिनों ये ही वसंत के दिन चल रहे थे।

मित्रो! मेरे फरिश्ते ने मुझे एक और जिंदगी का हिस्सा दिखाया। वह कौन-सा हिस्सा? वह आखिरी वाला हिस्सा। कौन-सा वाला? जिस दिन आदमी को मौत आती है। मौत को मैंने देखा। एक बार देखा, दो बार देखा, तीन बार देखा। तीन जन्मों का हाल जब मुझे दिखाया तो तीन बार अपने आप को मरते हुए देखा। मरते समय में आदमी को कितनी कसक, कितनी पीड़ा, कितना पश्चात्ताप, कितनी व्यथा, कितनी जलन, कितना हाहाकार उसके भीतर होता है। वे सारी-की-सारी घटनाएँ—न सिर्फ दृश्य मैंने देखा है, बल्कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मैंने जलते हुए अपना शरीर देखा और वह कसक, वे पीड़ाएँ भी देखीं जो मैंने गँवा दी थीं। जिंदगी मामूली कामों में खरच कर डाली, कसक का कोई ठिकाना न रहा। पश्चात्ताप का कोई ठिकाना न रहा, क्रंदन का कोई ठिकाना न रहा, हा-हाकार का कोई ठिकाना न रहा, चीत्कार का कोई ठिकाना न रहा। हा! मैंने कैसी भूल कर डाली। इस इनसानी जिंदगी को अच्छे काम में खरच कर सकता था, लेकिन मैंने इसको कीड़े-मकोड़ों के तरीके से खरच किया।

पेट-प्रजनन का जीवन

कीड़े और मकोड़े दो काम के लिए जिंदा रहते हैं—एक पेट पालते रहते हैं और दूसरे औलाद पैदा करते रहते हैं। दो के अलावा तीसरा कोई काम नहीं कर सकते। न इनमें अक्ल होती है, न हिम्मत होती है, न बुद्धि होती है, न समझ आती है, न परिस्थिति होती है, न साहस होता है। कुछ नहीं होता। दो काम करते रहते हैं। जब से पैदा होते हैं, पेट पालते हैं और औलाद पैदा करते हैं और मर जाते हैं। उसी तरीके से मेरा भी जन्म हुआ और मैं भी मरा। रो पड़ा कि अब जब यह जिंदगी खत्म होगी, तब मुझे कहाँ जाना पड़ेगा? किन योनियों में जाना पड़ेगा, न जाने कहाँ कहाँ जाना पड़ेगा? कितना कष्ट उठाना पड़ेगा। यह मैंने मौत के दिन देखा। मौत की घड़ी देखी, मैंने अपनी लाश चिता के ऊपर पड़ी हुई देखी। चीत्कार कर उठा कि हाय रे, अभागा मैं ! न जाने किन-किन समस्याओं को कीमती समस्या समझता था, अगर मुझे एक ही कीमती समस्या समझ में आ गई होती कि जिंदगी का ठीक-ठीक उपयोग करना, तो मजा आ जाता।

मित्रो! छोटी-छोटी समस्याएँ—मकान में छप्पर नहीं पड़ सका, मकान में टीन नहीं पड़ सकी, इस लड़की को वकील जमाई नहीं मिल सका, इस लड़के की बहू को इतना जेवर न मिल सका। ये छोटी-छोटी बच्चों की खिलवाड़ जैसी राई-रत्ती भर समस्याएँ हैं। जिनसे आदमी के लिए न कुछ नुकसान हो सकता है, न फायदा हो सकता है। इन राई-रत्ती समस्याओं को मैं पहाड़ के बराबर समझता रहा और उन्हीं में उलझा रहा। लेकिन वह समस्या, जिसके लिए कीमती जिंदगी दी गई थी, उसके बारे में विचार न कर सका। मैं रो पड़ा। ऐसे ही मैंने कई बार देखा, पिछले तीन जन्मों के अतिरिक्त। मेरे गुरु ने मुझे दिखाया और मुझे चौंका दिया। मैं चौंक पड़ा और मैंने उनके चरणों को पकड़कर कहा—बताइए, मुझे क्या करना चाहिए? उन्होंने कहा—एक ही काम करना चाहिए और वह यह है कि जिंदगी की कीमत समझनी चाहिए। जिंदगी का ठीक इस्तेमाल क्या हो सकता है, इसके बारे में गौर करना चाहिए। इतनी हिम्मत इकट्ठी करनी चाहिए, जिससे कि जिंदगी का श्रेष्ठतम उपयोग करना संभव हो सके। इतना ही करना चाहिए, और कुछ नहीं करना चाहिए। आज से पचपन साल पहले मेरे गुरुदेव ने मुझे बताया और मैं चौंक पड़ा और जाग गया।

प्रसुप्ति से जाग्रति

मैं चाहता था कि आप सब मित्रों को बुलाकर बताऊँ, ताकि आपको भी ऐसा ही मौका मिल जाए, कदाचित् आप भी चौंक पड़ें और आप भी जाग जाएँ। आप भी जिंदगी की कीमत को समझ पाएँ। जिंदगी जब हाथ से निकल जाती है, तब हमको किन-किन परिस्थितियों में रहना पड़ता है, इसके बारे में कदाचित् आपको भीतर से हूक पैदा हो जाए, कदाचित् आपके भीतर से जाग्रति उत्पन्न हो जाए, चेतना उत्पन्न हो जाए तो मजा आ जाए। आप भी मेरे तरीके से धन्य हो जाएँ। मैं चाहता था कि आपको भी उसी तरह का मौका मिले, जैसा कि मुझे धन्य बनने का मौका मिला। जिस तरह से मैं जाग पड़ा और समझ गया कि जिंदगी कीमती है और मैं उसका ठीक से उपयोग करूँगा। कीड़े-मकोड़ों की तरह, जानवरों की तरह नहीं जीऊँगा, वरन् आदमी के तरीके से जीऊँगा। जिस काम के लिए भगवान ने मुझे पैदा किया है, उसे पूरा करने का मैंने निश्चय कर लिया, संकल्प कर लिया कि जीऊँगा तो ऐसे ही जीऊँगा।

मित्रो! अब क्या करना चाहिए? क्या कदम बढ़ाना चाहिए? मैंने फिर अपने उसी फरिश्ते से दूसरा सवाल किया कि जब आपने मुझे जगा ही दिया है और यह बता दिया है कि जिंदगी का ठीक उपयोग करना चाहिए तो आप ही बताइए कि मुझे अब क्या करना होगा? उन्होंने मुझे दूसरी शिक्षा दी कि दुनिया में एक ही समझदारी है कि अकेला आदमी लंबी मंजिल नहीं पार कर सकता। लंबी मंजिल पार करने के लिए दो टाँगों की जरूरत होती है। दो पैरों पर चलकर ही हम लंबी मंजिल पूरी कर सकते हैं। दो हाथों से ही सारा काम चलता है। एक हाथ से काम कहाँ हो पाता है! एक टाँग से सफर कहाँ हो पाता है! जिंदगी की नाव पार करने के लिए दो सहयोगियों की जरूरत होती है। अतः तुम भी दूसरा सहयोगी तलाश करो।

मैंने कहा—गुरुदेव! इससे आपका क्या मतलब है? कहीं ब्याह-शादी करने से तो नहीं है? नहीं, ब्याह-शादी करने से मतलब नहीं है। जिस तरह नाव से नदी को पार

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करने के लिए दो हाथों की और दो पतवारों की जरूरत पड़ती है, उसी तरह आपको भी एक और सहायक ढूँढ़ लेना चाहिए। तो आप बताते क्यों नहीं कि मुझे कौन-सा सहायक ढूँढ़ लेना चाहिए? उन्होंने कहा कि भगवान को एक सहायक के रूप में ढूँढ़ लेना चाहिए। और दूसरा? दूसरा एक इनसान को। एक इनसान और एक भगवान, दोनों को आप साझी बना लीजिए, फिर देखिए, कैसा मजा आता है! फिर देखिए कि जिंदगी की नाव कैसे आगे चलती है! और फिर देखिए कि उन्नति का रास्ता कैसे खुलता है! मेरे गुरु ने, मेरे फरिश्ते ने मुझे यही रास्ता बताया।

साझेदारी का मर्म

मित्रो! फिर मैंने पूछा कि मुझे क्या करना होगा? उन्होंने कहा कि तुम्हें मालूम नहीं है कि जो दुकानदार होते हैं, व्यापारी होते हैं, वे क्या काम करते हैं? आप ही बताइए, मुझे तो मालूम नहीं है। उन्होंने कहा कि वे बैंक के साथ साझेदारी कर लेते हैं। कैपीटल बैंक का होता है, पचहत्तर प्रतिशत पैसा बैंक से आता है, पच्चीस प्रतिशत अपना होता है। गवर्नमेंट भी ऐसे ही लोन देती रहती है। जमीन अपनी खरीद लीजिए और लोन सरकार से ले लीजिए। कारखाना अपना लगा लीजिए, मशीनें अपनी लगा लीजिए, कैपीटल बैंक का इस्तेमाल कीजिए। बैंक बराबर देती रहती है। भगवान एक बैंक है। अगर हम इसकी साझेदारी अपनी जिंदगी में कर लें तो हमारे जीवन की तिजारत और हमारे जीवन का व्यापार ठीक तरीके से चल सकता है। अकेले चलाएँगे तब? बेटे, अकेले तो बहुत मुश्किल है।

अपनी भुजाओं की ताकत से, अपने पुरुषार्थ से, अपनी अक्ल से हम बहुत थोड़ी मंजिल पार कर सकते हैं, लेकिन अगर एक टाँग हमारी और एक टाँग भगवान की, इस तरह की साझेदारी हो जाए तो मजा आ जाए। भगवान से साझेदारी कैसे होगी, बताइए? साझेदारी के बारे में घर वालों ने और दूसरों ने मुझे जो बात बता रखी थी, वह तो एक मजाक जैसी मालूम पड़ी, दिल्लगी जैसी मालूम पड़ी कि प्रार्थना कीजिए, पूजा कीजिए, बस, साझेदारी खत्म। नहीं साहब! इस तरीके से साझेदारी नहीं हो सकती। साझेदारी की कुछ शर्तें होती हैं। बैंक पैसा देता है, लेकिन उसकी भी दो शर्तें होती हैं। एक शर्त यह है कि आपने जिस काम के लिए पैसा लिया हुआ है, उस काम में खरच कीजिए। आपने मशीनें खरीदने के लिए पैसा लिया है, आपको अपने कुएँ में ट्यूब वेल लगाना है, आपको ट्रैक्टर खरीदना है। यही लिखा है न आपने? नहीं साहब! अब ट्रैक्टर खरीदने से क्या फायदा! अब तो हम उसी पैसे से ब्याह-शादी करेंगे और तमाशा करेंगे। नहीं बेटे! यह गलत बात है। बैंक वाला नीलाम करा लेगा और जो कुछ पैसा दिया होगा, उसका रिफंड माँगेगा और फिर आपको तंग करेगा। आपको जिस काम के लिए पैसा मिला है, केवल उसी काम में खरच कीजिए, और किसी में मत कीजिए। यह बैंक की शर्त नंबर एक है।

बैंक क्या है? बैंक माने भगवान। भगवान का अनुग्रह। आपने जिस काम के लिए प्राप्त करने की कोशिश की है, उसे उसी काम में खरच कीजिए। यह भगवान का प्यार और अनुग्रह नंबर एक है। नंबर दो, ब्याज समेत उसे वापस कीजिए। मूलधन देने की कसम खाइए और यह कहिए कि हम आपका न केवल मूलधन देंगे, वरन् आपका धन ब्याज समेत वापस करेंगे। तभी बैंक आपको पैसा देना शुरू करेगा। नहीं साहब! हम तो यह नहीं कर सकते, आपका ब्याज भी वापस नहीं कर सकते और यह भी वायदा नहीं कर सकते कि जिस काम के लिए हमने माँगा है, उसी काम में खरच करेंगे। तो फिर आपको कर्ज नहीं मिल सकता। तो फिर बैंक आपके कारखाने में कोई शेयर नहीं दे सकती और कोई सहायता नहीं दे सकती। भगवान के बारे में भी यही बात है, जिसके बारे में मेरे गुरुदेव ने कहा था कि तुमको भगवान का प्यार पाना चाहिए और भगवान की शक्ति और सहायता का सक्रिय लाभ उठाना चाहिए।

कोई शॉर्टकट नहीं

इसके लिए क्या करना पड़ेगा? दूसरे लोग तो भगवान के साथ मखौल करते हैं, दिल्लगीबाजी करते हैं। दिल्लगी-बाजी क्या होती है? यह होती है, जैसे 'लाठी से थन छूना।' कोई एक दिल्लगीबाज था। उसने गाय का दूध पीने के लिए क्या किया? पोले बाँस की एक नलकी ली और गाय के थन से लगाई और हुक्के के तरीके से दूर से ही दूध पीने लगा। एक ने पूछा—महाशय जी! यह क्या कर रहे हैं आप? लाठी से गाय का दूध पी रहे हैं। नहीं साहब! लाठी से छूकर दूध नहीं पिया जा सकता। तो कैसे पिया जा सकता है? पहले आप गाय पालिए। उसे घास खिलाइए, चारा खिलाइए। तो क्या गाय को चारा भी खिलाना पड़ेगा, दाना भी खिलाना पड़ेगा, पानी भी पिलाना पड़ेगा, रखवाली भी करनी पड़ेगी और गाय को दुहना भी पड़ेगा? हाँ! नहीं साहब! अगर इतना झगड़ा है तो यह हम नहीं कर सकते। तो बेटे, गाय का दूध नसीब नहीं हो सकता। नहीं साहब!

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मैंने तो यह सुना था कि लाठी लीजिए और उसकी नलकी को थनों में लगा दीजिए और चूस जाइए। इसके अतिरिक्त आपको और कुछ नहीं करना, न घास देनी है, न चारा देना है, न पानी पिलाना है, कुछ नहीं करना है।

क्या मतलब है इसका? इसका मतलब है कि माला घुमाइए और दूध पी जाइए। माला माने लाठी। लाठी गाय के थन से लगाइए और चूसते चले जाइए, बस, हो जाइए मालामाल। हो जाइए धन्य। आपको तो यही बताया गया है कि ग्यारह माला जपिए और देवी को प्रसन्न कर लीजिए, हनुमान जी को प्रसन्न कर लीजिए, गणेश जी को प्रसन्न कर लीजिए, सबको प्रसन्न कर लीजिए। हनुमान चालीसा का पाठ करिए, चावल, धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ा दीजिए। यही तो आपको बताया गया है न? हाँ साहब ! अगर सारी दुनिया पागल है तो मैं भी पागल हूँ। हाँ बेटे, यह दुनिया सब पागल है। यह भगवान को अहमक समझती है। अहमक माने जड़मति, मूर्ख। अहमक माने वे आदमी जो केवल चापलूसी के आधार पर और छोटे-मोटे उपहार देने की कीमत के आधार पर जिस-तिस से फायदा उठाने का प्रयास करते हैं। लेकिन भगवान बड़े समझदार आदमी का नाम है। भगवान बड़े जिम्मेदार आदमी का नाम है। भगवान ने इतनी बड़ी दुनिया बनाई है, कायदे-कानून बनाए हैं, नियम और मर्यादाएँ बनाई हैं। यह नहीं हो सकता कि आप खुशामद के सहारे, चापलूसी के सहारे और छोटी-मोटी धूपबत्तियों का सहारा लेकर उसकी कृपा प्राप्त कर सकें।

भगवान की पूँजी में हिस्सेदारी

मित्रो! मैंने अपने गुरुदेव से कहा कि तो फिर आप ही बताइए कि मुझे क्या करना पड़ेगा? उन्होंने कहा कि भगवान को अपनी जिंदगी की तिजारत में हिस्सेदार बना लीजिए। मैंने भगवान को अपनी जिंदगी की तिजारत में हिस्सेदार बना लिया। कैसा हिस्सेदार? जैसे कि बैंक में वह आदमी हिस्सेदार हो जाता है, जो बैंक की पूँजी में अपना हिस्सा लगाता हुआ चला जाता है। मैंने भी भगवान के बैंक में अपनी पूँजी लगानी शुरू कर दी और भगवान ने भी अपनी पूँजी देना स्वीकार कर लिया। पहले ही दिन से भगवान की पूँजी मुझे मिलती हुई चली गई। जिस काम के लिए दरखास्त दी थी कि मुझे अमुक काम के लिए आपकी पूँजी की जरूरत है, उसी काम के लिए मैंने खरच किया। भगवान की कृपा, भगवान का अनुग्रह, भगवान का प्यार अपने लिए मैंने खरच नहीं किया। मुझे उसकी जरूरत क्या थी! पेट हमारा मुट्ठी भर का है। सो मुट्ठी भर अनाज से हम छह इंच के पेट को पूरा भर सकते हैं। इसमें भगवान की सहायता की हमें कतई आवश्यकता नहीं है, लेकिन अगर हमारी हवस बढ़ी हुई है तो उसको कोई पूरा नहीं कर सकता। रावण की हवस पूरी न हो सकी, कंस की पूरी न हो सकी, हिरण्यकशिपु की हवस पूरी न हो सकी। सिकंदर की हवस पूरी न हो सकी। अगर आपकी भी हवस बढ़ी हुई है तो फिर भगवान भी उसे पूरा नहीं कर सकते। अगर वह इस मिट्टी में स्वयं भी गिरे, तो भी आपकी हवस को पूरा नहीं कर सकता।

मित्रो! अपनी जरूरत के लिए आपको भगवान के सामने खुशामद करने और नाक रगड़ने की कोई भी जरूरत नहीं है। भगवान ने दो देवता पहले ही हमारे सुपुर्द कर दिए हैं और यह कहा है कि ये देवता ही सामान्य मनुष्य की जिंदगी की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। और वे देवता हैं हमारे दो हाथ। छह फीट लंबा हमारा शरीर है और छह इंच लंबा हमारा पेट है। हम घास खोद सकते हैं, रिक्शा चला सकते हैं और दूसरा काम कर सकते हैं और अपना पेट भरने के लिए दाने मुहैया करा सकते हैं। हमारी अक्ल इतनी है कि तन ढकने के लिए कपड़े और शरीर को जिंदा रखने के लिए छाया हम अपनी अक्ल के सहारे इकट्ठा कर सकते हैं। अनाज पैदा कर सकते हैं। इसके लिए भगवान से क्या कहना! नहीं साहब! भगवान से दौलत माँगेंगे और संपत्ति माँगेंगे। आप दौलत क्यों माँगेंगे और किस काम के लिए माँगेंगे? अरे साहब! हम मालदार बनना चाहते हैं, बड़े आदमी बनना चाहते हैं और अपनी हवस पूरी करना चाहते हैं।

नहीं बेटे! यह भगवान का काम नहीं है। यह दूसरों का काम है। इसका भगवान से कोई ताल्लुक नहीं है। नहीं साहब! हम तो लक्ष्मी जी की पूजा इसीलिए करते थे। नहीं

> ***उपनिषद् में एक कथा है। भगवान किसी पर प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "वर माँगो।"***
>
> ***भक्त ने कहा, "प्रभो! मैं क्या जानूँ और कौन-सा वर माँगूँ? मुझे इस बात का ज्ञान ही नहीं है कि मेरे लिए क्या योग्य है। तुम्हीं सब कुछ जानते हो। जो मेरे लिए उचित हो। वह तुम्हीं दे दो।"***
>
> ***और वह भक्त परीक्षा में पास हो गया।***

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बेटे, लक्ष्मी जी की पूजा इस काम के लिए करने की जरूरत नहीं है। इसके लिए दूसरा रास्ता है, तुम तो वह रास्ता ही भूल गए, भटक गए। साहब! हम तो बच्चे पैदा करने के लिए हनुमान जी को खुश कर रहे थे। नहीं बेटे, हनुमान जी की पूजा करने की जरूरत नहीं है। हनुमान जी कैसे आपको बच्चे देंगे, उनके खुद बच्चे नहीं हैं। तो फिर किसकी पूजा करूँ? रावण की कर, क्योंकि रावण के एक लाख पूत और सवा लाख नाती थे। हनुमान जी की पूजा से क्या लाभ जब उनके यहाँ बच्चे हैं ही नहीं! तो तुझे कहाँ से देंगे! पागल कहीं का, हनुमान जी की पूजा करेगा! साहब! हम तो शंकर जी की पूजा करते हैं। किसलिए करता है? इसलिए करता हूँ, ताकि धन मिल जाए। शंकर जी के पास धन था क्या? मकान था क्या? नहीं था। कपड़ा था क्या? नहीं था। नंग-धड़ंग मरघट में पड़े रहते थे। उनके अपने घर में तो लक्ष्मी है नहीं, तुझे और लक्ष्मी दे जाएँगे! गुरु जी! मैं तो इसीलिए भजन करता था। नहीं बेटे, इसके लिए भजन करने की जरूरत नहीं है।

मिला असली अध्यात्म

मित्रो, असली अध्यात्म, जिसको पाकर मैं निहाल हो गया, धन्य हो गया, उसका तरीका आपको समझा रहा था। उसकी साइंस और फिलॉसफी समझा रहा था, जो आज से पचपन वर्ष पहले मुझे सिखाई और समझाई गई थी। सारी जिंदगी मैं उसी पर चला और अपनी जिंदगी में भगवान को हिस्सेदार बना लिया। जो जिंदगी की दौलत है, उसमें से मैंने शरीर को भी अपना हिस्सा दिया और भगवान को भी हिस्सा दिया। कमाई में दोनों हिस्सेदार हैं। जो हम कमाते हैं, हमारे पास जो संपत्ति है—मसलन श्रम, बुद्धि, साधन, समय—ये भगवान की दी हुई संपदाएँ हैं। हम अपने जीवन की कमाई में इसे कमाते हैं। श्रम इस वक्त हमारे पास है। श्रम की ताकत हमारे पास है। पैसे की ताकत हमारे पास है। इसे हम दोनों में बाँट देंगे। शरीर को भी देंगे, क्योंकि यह हमारी सवारी है। यह हमारा घोड़ा है। घोड़े के लिए भी घास चाहिए। उसे घास नहीं देंगे तो हमको लंबा सफर तय करना है, घोड़ा जिएगा कैसे! शरीर को खुराक हम जरूर देंगे। कितनी खुराक देंगे? इसके बारे में भी तय करना पड़ा। यह कहा गया कि जिस देश के हम नागरिक हैं, जिस देश में हम रहते हैं, वहाँ औसत भारतीय स्तर का स्टैंडर्ड हमारा होना चाहिए। औसत भारतीय स्तर का हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

हिंदुस्तान अपने सामान्य नागरिक को क्या भोजन दे सकता है? क्या वस्त्र दे सकता है? उसे किस स्तर की जिंदगी जीनी पड़ सकती है? यही हमारा स्टैंडर्ड है। आप अमेरिका में जन्मे हैं तो आपका स्तर दूसरा हो सकता है। अमेरिकी नागरिक को खरच करने के लिए जो पैसा मिलता है, उसमें से आप खरच करें और उस स्टैंडर्ड का जीवन जिएँ। अगर आप यहाँ बढ़िया स्तर बनाते हैं, ऊँचा स्तर बनाते हैं तो यह एक गलत बात है। फिर यह आध्यात्मिक जीवन नहीं रह जाता। सामान्य स्तर का जीवनयापन करने के लिए जो खरच करने की जरूरत थी, हमने अपने शरीर के लिए खरच किया। अब रही कुटुंब की समस्या? कुटुंब

एक दिन एक गृहस्थ ने महात्मा रामानुज से प्रश्न किया कि महात्मन्! क्या ऐसा कोई मार्ग नहीं है कि यह संसार भी न छोड़ना पड़े और स्वर्ग भी पा लूँ।

रामानुज हँसे और बोले, "हाँ, है ऐसा मार्ग, तुम जो कुछ कमाओ, ईमानदारी से कमाओ और जो कुछ व्यय करो, सदा दूसरों की भलाई के लिए करो।"

गृहस्थ को संदेह हुआ। उसने पूछा, "मगर ऐसे कठिन मार्ग पर कौन चल सकता है?" रामानुज ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा, "जो नारकीय यातनाओं से बचना चाहता होगा और जिसे ईश्वरप्राप्ति की सच्ची लगन होगी।"

की समस्या का समाधान करने के लिए अपने कुटुंबियों को उनकी मनमरजी की दौलत उनके सुपुर्द कर देने से समस्या का हल नहीं हो सकता। विचार करना पड़ा कि जिनके कर्जे हमारे ऊपर चढ़ चुके हैं, वे भी इसमें हिस्सेदार हैं, जिनका कर्ज चुकाना अभी बाकी है। अभी हमको माँ का कर्ज चुकाना बाकी है, बाप का कर्ज चुकाना बाकी है। बाप की इतनी लंबी जिंदगी से हमने खाया है और अपनी माँ का हमने दूध पिया है। सबसे पहले हम इनका कर्ज चुकाएँगे, साहूकारी तब करेंगे। माता-पिता के बाद छोटे भाई-बहन का, छोटे बच्चों का भी कर्ज चुकाना है। छोटे भाई-बहनों को पढ़ाना पड़ेगा और उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने लायक बनाना पड़ेगा। हमें उनके लिए भी खरच करना है। नहीं साहब! हमारे घर में छोटा बच्चा है। मैं तो बेटे को ही दूँगा, और चार बेटे पैदा करूँगा और उन पर चार लाख

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

खरच करूँगा। बेईमान कहीं का, केवल बेटे को ही देगा, अन्यों को नहीं।

आँखें खुलीं, प्रकाश मिल गया

मित्रो! मेरी आँखें खोल दीं भगवान ने और यह कहा कि तू हमारी जिंदगी में हिस्सेदार है। तू हमारे लिए काम कर। मित्रो! मेरी आँखें वहीं से और उसी दिन से खुल गईं। आँखें खुल जाने का मतलब है—अध्यात्म का प्रकाश मिल जाना। जिस प्रकाश के लिए हम प्रार्थना करते हैं— **तमसो मा ज्योतिर्गमय** हे भगवान! आप प्रकाश दीजिए, जीवन में चमक पैदा कीजिए। चमक किसे कहते हैं? प्रकाश किसे कहते हैं? प्रकाश इसे कहते हैं, जो मैं आपसे निवेदन कर रहा था, जिससे कि मेरी आँखें खुल गईं। अँधेरे में भटकता हुआ प्राणी, अँधेरे में भटकता हुआ भूत और प्रेत प्रकाश पाकर निहाल हो जाता है। मित्रो! आज से पचपन वर्ष पहले मैं मनुष्य बन गया, देवता बन गया। पचपन वर्ष पहले की लंबी वाली मंजिल को एक-एक कदम पार करके बढ़ता हुआ चला आ रहा हूँ और यहाँ आ गया हूँ, जहाँ कि आपके सामने खड़ा हूँ।

अब क्या सवाल रह गया? अब बेटे, यह सवाल रह गया कि जिस अध्यात्म की प्रशंसा ऋषियों ने गाई, पुस्तकों में गाई गई, राम-नाम की महत्ता जो संसार ने गाई, गायत्री मंत्र की महत्ता, जिसके बारे में अथर्ववेद ने जाने क्या से क्या कह दिया। कई बार तो संदेह होता है और अविश्वास होता है कि ये बातें गलत हैं, ये बातें सही नहीं हैं, जो बताई गई हैं। जिस गायत्री मंत्र की महत्ता को मैं आपको सिखाता हूँ और सारी दुनिया को समझाता हूँ, उसके बारे में अथर्ववेद में क्या समझाया गया है? उसके बारे में यह बताया गया है—**"स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।"** ये सात चीजें याद करनी हैं। महाराज जी! हमको तो तीन साल हो गए, तीन माला रोज जप करते हैं, लेकिन हमें तो कोई चमत्कार नहीं दिखाई पड़ा। हाँ बेटे, न तीन साल में मिला है और अब तेरी जिंदगी के जो तीस साल बचे हैं, न उसमें कोई मिलने वाला है। काहे को शाप दे रहे हैं? बेटे, इसलिए दे रहा हूँ कि न तुझे गायत्री मंत्र के बारे में कोई जानकारी है और न गायत्री मंत्र में खाद और पानी कैसे लगाया जाता है, इसका तुझे ज्ञान है। बीज बोने का तुझे ज्ञान है। वृक्षारोपण हर साल होता है। मिनिस्टर लोग आते हैं और जगह-जगह पेड़ लगा देते हैं। रोज अखबारों में छपता है कि एक लाख पेड़ लगाए गए। खाद-पानी दिया नहीं, रखवाली हुई नहीं, सब पेड़ गाय ने खा लिए, जानवर चर गए। गायत्री मंत्र को भी आप खाद-पानी नहीं लगा सकते, केवल बीज बोकर के, माला घुमा करके उसमें चमत्कार देखना चाहते हैं, तो यह नहीं हो सकता। *(क्रमशः)*

□

नीशापुर के संत अहमद से कुछ शिष्य बोले, "महाराज, हमें ईश्वर के किसी सच्चे भक्त के बारे में बताइए।" संत ने कहा, "तो सुनो, बहराम मेरा पड़ोसी था। मुझसे उसकी मित्रता हो गई। वह मालदार व्यापारी था। एक दिन राह में डाकुओं ने उसके कारवाँ को लूट लिया। सुनकर मैं उसे ढाढस बँधाने गया। जब मैं उसके घर पहुँचा, बहराम ने सोचा—शायद दूसरों की तरह मैं भी भोजन के लिए आया हूँ। मैंने उससे कहा, "भाई कष्ट मत करो। मैं भोजन की आशा से नहीं, बल्कि तुम्हारे इस भारी नुकसान में तुम्हें ढाढस बँधाने आया हूँ।" इस पर बहराम बोला, "हाँ, यह सच है कि मुझे लाखों का नुकसान हुआ है। मगर कृपा है ईश्वर की कि उन्होंने मेरी शाश्वत संपत्ति को हाथ तक नहीं लगाया है। वह संपत्ति है—ईश्वर में मेरी आस्था। वही तो जीवन की सच्ची संपत्ति है।" संत बोले, "सत्पुरुषों की श्रेष्ठता उनकी आस्था के स्तर के आधार पर ही पनपती है। अनास्थावान न भक्त हो सकता है, न सज्जन।"

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

समस्त सिद्धियों का आधार तप-३

(समापन किस्त)

इस स्तंभ की कड़ी क्र. २ के अंतर्गत विगत दिसंबर, २००३ के अंक में अमृतवाणी में पूज्यवर ने भाँति-भाँति के उदाहरणों से समझाया था कि हर महापुरुष की सफलता के मूल में तप रहा है। बौद्ध धर्म का उदाहरण देकर उनने समझाया कि सारे विश्व में यह धर्म तपस्वी परिव्राजकों के माध्यम से फैला। इसके पश्चात पूज्यवर ने योग-ध्यान-एकाग्रता के विषय में हमें बताया। अब इस समापन किस्त में पढ़ें— तप एवं योग के और अधिक मार्मिक पक्षों के विषय में।

आशीर्वाद लूट नहीं है

महाराज जी! आप तप कीजिए और आशीर्वाद देकर हमारा फायदा करा दीजिए। बेटे, आशीर्वाद माने लूट नहीं है, जो तू समझता है—'राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट।' ऐसे किसी चीज की लूट नहीं पड़ रही है। आशीर्वाद की तो पड़ रही है? नहीं बेटे, आशीर्वाद की तो बिलकुल नहीं पड़ रही। आशीर्वाद की बहुत कीमत है। कीमत चुकाए बिना न आशीर्वाद मिलता है, न वरदान मिलता है, न सिद्धि मिलती है, न चमत्कार मिलता है और न मनोकामना पूरी होती है। हर आदमी को हर चीज की कीमत चुकानी पड़ी है। नहीं गुरुजी, हम तो बिना कीमत चुकाए ही पाएँगे। क्या करेंगे? लूट करेंगे। कैसे? 'राम नाम लड्डू, गोपाल नाम खीर। हरि का नाम मिश्री तो घोल-घोल पी।' हाँ बेटे, ये तो हो जाएगा। ये लूट अलग है। इसमें कोई एतराज नहीं है, लेकिन जो व्यक्ति कीमती चीज पाना चाहता है, उसे कीमत चुकानी पड़ेगी।

मित्रो! अभी मैं एकाग्रता की बात कह रहा था। एकाग्रता लाने का फैसला आप करते हैं तो मैं यह कहूँगा कि आप योग के मार्ग पर चल रहे हैं और योगी बनने की कोशिश कर रहे हैं। यह हुई नंबर एक की बात—एकाग्रता की बात। अब मैं नंबर दो—योग के दूसरे वाले लक्ष्य की बात बताता हूँ।

योग के दूसरे वाले भाग में शामिल होता है—ध्यान। वह क्या है? बेटे, इसका मंतव्य यह है कि भगवान के चिंतन का कोई लक्ष्य होना चाहिए। इसका नाम है—इष्ट। इष्टदेव का ध्यान करना चाहिए। कौन-सा इष्टदेव? जो भी आपने तय किया हो। महाराज जी! कौन-सा इष्टदेव बनाऊँ? जो भी आपका मन हो, बना लीजिए, लेकिन ध्यान पूरा कीजिए। इष्टदेव का आप ध्यान करेंगे तो क्या हो जाएगा? इष्ट माने लक्ष्य, इष्ट माने देवता। देवता पहला प्रतीक माना गया है। देवता किसी शक्ति के प्रतीक हैं, जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम राम। मर्यादा वाला व्यक्ति बनना है तो आपको अपना इष्टदेव राम को मानना चाहिए। आपको पूर्णपुरुष बनना है तो आपको अपना इष्टदेव कृष्ण को मानना चाहिए। अगर आपको रामभक्त बनना है तो आपको अपना इष्ट भक्त हनुमान को बनाना चाहिए।

इष्ट हमारे लक्ष्य-ध्येय के प्रतीक

मित्रो! हनुमान से लेकर प्रत्येक देवता एक-एक इष्ट के प्रतीक हैं, एक-एक लक्ष्य के प्रतीक हैं। आपके जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए? जो भी आपका लक्ष्य हो, चाहे उसे आप सिद्धांत मान लीजिए, चाहे उसकी शक्ल बना लीजिए। शक्ल बनाने से, चेहरा बना लेने से कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। शक्ल तो ध्यान की सुगमता के लिए बना दी गई है। इस बात से मैं बहुत सहमत हूँ कि देवताओं के बारे में जो इष्टदेव बना दिए गए थे, वे इसलिए बना दिए गए थे कि आदमी यह समझे कि हमको कहाँ पहुँचना है? हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमको किस प्रकार की गतिविधियाँ अपनानी चाहिए? लेकिन पीछे क्या कर दिया गया कि देवता, जो इष्ट के रूप में बनाए गए थे, उनके साथ में हमने सांसारिक मनुष्य के सिद्धांत को जोड़ दिया। इससे अध्यात्म में विसंगतियाँ पैदा हो गईं, विकृतियाँ पनपने लगीं। इष्टदेवता के साथ जहाँ मनुष्यों के तरीके से उनके साथ में इतिहास जोड़ दिए गए हैं, उनको इष्टदेव मानना हमारे लिए मुसीबत पैदा करता है।

उदाहरण के लिए, जब भगवान श्रीकृष्ण को अपना इष्ट देवता मान लेते हैं तो ठीक है। जहाँ तक गीता के योगेश्वर श्रीकृष्ण का संबंध है, इनको इष्टदेव मानने में कोई हर्ज नहीं है, लेकिन जहाँ उनके गृहस्थ जीवन की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बात आ जाती है, उसको मानने से हमारे ऊपर बुरा असर पड़ता है। कृष्ण जी का मनुष्य जीवन का इतिहास जानकर हम मुसीबत में फँस जाते हैं। कृष्ण जी के सोलह हजार एक सौ आठ रानियाँ थीं। एक औरत थी। उसका नाम था रुक्मिणी। रुक्मिणी के बाद थीं सोलह हजार एक सौ आठ रानियाँ। उनके कितने बाल-बच्चे थे। एक-एक औरत के अगर आठ-आठ बच्चे मान लिए जाएँ तो कितने हो गए—१६,१०८ × ८ = १,२८,८६४ अर्थात एक लाख से भी ज्यादा बाल-बच्चे हो गए श्रीकृष्ण भगवान के। तो फिर अब आपको क्या करना चाहिए—हम तो आपको फेमिली प्लानिंग की सलाह दे रहे हैं। नहीं साहब! अभी तो हमारे चार ही बच्चे हैं, श्रीकृष्ण के बराबर तो हो जाएँ, कम-से-कम आठ-नौ बच्चे तो हो जाएँ। न जाने और क्या-क्या इतिहास में भरा पड़ा है। श्रीकृष्ण इसकी बहन का अपहरण कर लाए, उसका अपहरण कर लाए। जाने क्या-क्या वबाल भर दिया है। इसलिए हम किसी ऐसे भगवान को अपना इष्टदेव नहीं मानेंगे, जो किसी व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है।

एक ही देवता—भगवान

मित्रो! हम भगवान को एक मानते हैं। भगवान एक है। अगर दुनिया में अनेक देवता रह गए तो आफत पैदा कर देंगे। इनमें आपस में लड़ाई हो जाएगी, मार-काट मचेगी, फौजदारी हो जाएगी। इलेक्शन में प्रतिद्वंद्वी तैयार हो जाएँगे। दुनिया में अनेक देवता नहीं रह सकते। दुनिया में एक ही देवता रह सकता है और उसका नाम है—भगवान। अब प्रश्न उठता है कि भगवान को हम अपना इष्ट कैसे बनाएँ? इसको बनाने का एक ही तरीका है कि आप जीवन में यह निश्चय कीजिए कि आपको क्या बनना है? ऊँचाई के रास्ते पर चलने के लिए आपको क्या बनना है? आपको लोकहित करना है या आपको भगवान का भक्त बनना है? भगवान का भक्त बनना हो तो आपको हनुमान जी को इष्टदेव बनाने में कोई हर्ज नहीं है। यदि आपको उदात्त बनना हो और मानवता के सिद्धांतों से ओत-प्रोत होना हो तो गायत्री से बढ़िया इष्ट और क्या हो सकता है?

बेटे! ये देवियाँ, देवियाँ नहीं हैं। ये भगवान की एक-एक कला हैं, एक-एक विशेषता हैं। अगर आपको सारी विशेषताओं को इकट्ठा करना हो तो आप सविता को अपना इष्ट मान सकते हैं। सविता में—सूर्य में बहुत सारी किरणें होती हैं, बहुत-सी विशेषताएँ होती हैं। भगवान की दयालुता का, भगवान की नियमितता का, विश्व-व्यापकता का—इन सारी-की-सारी विशेषताओं का सविता में समावेश है। इन विशेषताओं के समाविष्ट होने में आप एकमत हो सकते हैं। कोई इष्टदेवता आप बनाएँ, चाहे न बनाएँ, लेकिन अगर निराकार को मानने वाले हैं तो आपको देवता नहीं मिलेगा। अगर आप साकार को मानने वाले हैं तो देवता को बनाने के लिए बैठना नहीं पड़ता। मैं तो कहता हूँ कि आपका इष्टदेवता ऐसा होना चाहिए कि आपको अपने जीवन में पहुँचना कहाँ है, जो तदनुरूप आपके समग्र व्यक्तित्व को ढाल दे। इसके लिए आपका 'स्व' में ध्यान एकाग्र होना चाहिए। यह योग की स्थिति है।

योग में मन की एकाग्रता—एक और लक्ष्य का निर्धारण—दो, ये दो बातें प्रमुख हैं—लक्ष्य का निर्धारण करते हुए चिंतन को आगे बढ़ाते जाना और चिंतन को बढ़ाते जाने के लिए आवश्यक गतिविधियों का समावेश करते जाना। केवल चिंतन-ही-चिंतन करते रहेंगे तो गतिविधियाँ कहीं और चलेंगी और चिंतन कहीं और चलेगा। ऐसा नहीं हो सकता कि जहाँ चिंतन चलेगा, वहाँ गतिविधियाँ भी चलेंगी। आदमी के भीतर जब संस्कार पैदा होता है तो वह विचार और कर्म, दोनों के समन्वय से पैदा होता है। जीवन में जो स्थिरता आती है, वह विचार और कर्म, दोनों के समन्वय से आती है। अगर आप विचार करते रहें और उस तरह का कर्म न करें तो संस्कार नहीं मिलेगा। विचार तो बन जाएगा, पर आदमी के जीवन में जो धर्म स्थापित होता है, वह संस्कार से स्थापित होता है। टिकाऊपन संस्कार में है, विचार में नहीं है। विचार तो अभी आते हैं और अभी बदल जाते हैं। विचार से टिकाऊपन नहीं आएगा, वरन् संस्कार से आएगा।

एकाग्रता हेतु भिन्न प्रकार के ध्यान

साथियो! संस्कार उसे कहते हैं, जो विचार और कर्म, दोनों के समन्वय से बनता है। इसलिए हमें अपना योगाभ्यास अर्थात मानसिक स्तर अर्थात अपने चिंतन को ऊँचाई की ओर ले जाने के लिए क्या प्रयत्न करना चाहिए, संक्षेप में यह योग की परिभाषा है। योग को पूरा करने के लिए एक काम करना पड़ता है और उसका नाम है—ध्यान। ध्यान की अनेक क्रियाएँ हैं, जैसे हमारी पाँच ज्ञानेंद्रियाँ हैं, पाँच कर्मेंद्रियाँ हैं। पाँच तत्त्वों से हमारा शरीर बना हुआ है और योग की भी पाँच धाराएँ प्रख्यात हैं। पाँच ध्यान मुख्य हैं। इनमें से एक ध्यान तो वह है, जो हमारे शरीर में अग्नितत्त्व के रूप में स्थापित है। अग्नितत्त्व का प्रतीक हमारी ये आँखें हैं। उसमें जब हम प्रवेश करते हैं तो हमको शक्ल

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

का ध्यान करना पड़ता है। निराकार में जब आप जाएँगे तो प्रकाश का और साकार में जाएँगे तो किसी आकार का, देवी-देवता, मूर्ति, फल, फूल, किसी भी शक्ल का ध्यान करना पड़ेगा। शक्ल का ध्यान करना हमारी तन्मात्रा से संबंधित है। इनमें से रूप-तन्मात्रा का उद्देश्य है—हमारे नेत्र। इसी तरह अन्यान्य तन्मात्राओं का भी अपना-अपना स्वरूप और उद्देश्य है, जिनमें मन को एकाग्र किया जाता है।

मित्रो! मेरा उद्देश्य है—मन को एकाग्र करना। मन को एकाग्र करने के लिए मैं आपको बहुत से ध्यान बताऊँगा। मन को एकाग्र करके फिर क्या करना पड़ता है? उसे किसी दिशा में बढ़ा देना पड़ता है, जिससे कि हमको अभीष्ट परिणाम प्राप्त हो सके। ध्यानयोग का एक तरीका यह है कि हम किसी शक्ल की सहायता से अपने भीतर काम करने वाला जो अग्नितत्त्व है अर्थात हमारी जो नेत्र इंद्रिय है अर्थात उसका जो रूप तन्मात्रा है, उसका हम ध्यान करते हैं तो कोई शक्ल का ध्यान आता है। इसी तरह रस तन्मात्रा के बारे में है। यह सब मैं आगे चलकर आपको बताऊँगा। अभी हम आपको गायत्री के पाँच मुखों के रूप में पंचतत्त्वों की—पंचकोशों की उपासना सिखाते हैं। इन पाँच योगों से क्या ताल्लुक है, यह बताते हैं।

पाँच प्रकार के ध्यान

पहला ध्यान हमने अग्नितत्त्व का बताया है, जिसका माध्यम नेत्र हैं। दूसरा ध्यान है—नाद का। 'नादयोग' किसे कहते हैं? नादयोग के दो हिस्से हैं। एक हिस्सा वह है, जो गाने के माध्यम से—संगीत के माध्यम से करते हैं। जब हम गाना सुनकर कानों को बंद कर लेते हैं तो बाद में कई तरह की आवाजें सुनाई पड़ती हैं। कभी घंटे की आवाज, घड़ियाल की आवाज, कभी अमुक की आवाज, बादल गरजने की आवाज, पानी बरसने की आवाज, शंख बजने की आवाज सुनाई देती है। यह सब नादयोग का हिस्सा है। नादयोग का दूसरा हिस्सा वह है, जिसमें शब्द के साथ-साथ में हम लय हो जाते हैं। इसमें अखंड कीर्तन भी शामिल है, संगीत भी शामिल है, ओंकार की ध्वनि भी शामिल है।

नादयोग कानों के माध्यम से शब्दों को सुनने की एक प्रक्रिया है, जो कबीर-पंथ में सिखाई जाती है, और कई मतावलंबियों में सिखाई जाती है। नाथ संप्रदाय में सिखाई जाती है। वह तो मैं नहीं सिखाना चाहूँगा, लेकिन शब्द के माध्यम से अपने आप को लय कर देना, मन को—ध्यान को एकाग्र कर देना, यह भी एक तरीका है। इसके लिए ओंकार की ध्वनि सबसे श्रेष्ठ माध्यम है। अहमदाबाद में एक योगाश्रम है, जहाँ ओंकार की ध्वनि के साथ आदमी के मन को लय करना सिखाया जाता है। मन को लय करते-करते साधक वहाँ पहुँच जाते हैं, जहाँ पर हम अपने मन को ले जाना चाहते हैं। इसमें भगवान तक पहुँचने की वह समाधि-अवस्था भी आ सकती है, जो हर साधक का लक्ष्य है। अभी मैं आपको इसकी प्रक्रिया सिखाने की व्याख्या कर रहा हूँ, विधियाँ नहीं सिखा रहा, वरन् समझा रहा हूँ। इनमें पाँचों का समन्वय हो सकता है और पाँचों में से एक को लेकर भी आगे बढ़ सकते हैं। यह ध्यानयोग की बात मैं आपको बता रहा हूँ।

अगला योग हमारी नासिका से संबंधित है। तीसरी इंद्रिय है—नाक। नाक से हमें क्या करना पड़ता है? नाक से जब हम साँस अंदर खींचते हैं तो सामान्य प्राणायाम करना पड़ता है और प्राणायाम में ध्यान करना पड़ता है। प्राणायाम क्या है? एक ध्यान है। प्राणायाम में पाँच तत्त्वों में ध्यान-ही-ध्यान करते रहिए। जब हम साँस भीतर खींचते हैं तो ध्यान करते हैं कि साँस भीतर जा रही है, अब यह यहाँ तक पहुँच गई, इतनी देर तक रुकी रही, इतनी देर तक बाहर निकली—यह सब ध्यान का हिस्सा है। बाहर कितनी देर तक रुकी हुई है, यह सब ध्यान का हिस्सा है। जब हम प्राणायाम के माध्यम से ध्यान करते हैं तो साँस माध्यम बनती है। इससे मन का निग्रह करते हैं, मन को भागने से रोकते हैं, काबू में लाते हैं, मन को एक काम में लगा देते हैं। तब क्या हो जाता है—प्राणयोग होता है।

बिंदुयोग हो गया, प्राणयोग हो गया, नादयोग हो गया। अब अगला योग आता है, जो हमारी जीभ का है। जीभ का क्या है? बेटे, जीभ का जो ध्यान है, वह जप है। जप किससे होता है? शब्द से। और शब्द कहाँ से निकलता है? हमारी वाणी से निकलता है। इसे जपयोग कहते हैं। जप के भी दो भाग हैं—जिह्वा का एक भाग उच्चारण करता है तो दूसरा भाग स्वाद चखता है। जिह्वा का जो भाग स्वाद चखता है, उसके लिए दूसरा अभ्यास कराते हैं और उसका नाम है—'खेचरी मुद्रा'। इस तरह जीभ का उच्चारण वाला अभ्यास है—जपयोग एवं स्वाद वाला अभ्यास है—खेचरी मुद्रा। खेचरी मुद्रा वाले अभ्यास से रसानुभूति होती है। रस के माध्यम से हम ध्यान को एकाग्र करते हैं। मन के एकाग्र होने के पश्चात हमारे पास इतना बड़ा हथियार आ जाता है कि उसकी तुलना में और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कोई हथियार नहीं है। ये सारे-के-सारे पाँच ध्यान हैं, पाँच योग हैं, जो पाँचों इंद्रियों के माध्यम से हम आपको यहाँ सिखाते हैं। ये गायत्री की पंचकोषीय साधना से आसान हैं, जिनको हम सिखाते हैं।

मित्रो! हमने आपकी उपासना में इन्हें कैसे समन्वय किया हुआ है और समन्वय के साथ-साथ इसकी कैसे वृद्धि होनी चाहिए, यह सब आगे अच्छी तरह से समझाने की कोशिश करेंगे। अभी तो हम इसकी भूमिका बता रहे हैं, कल से मैं आपको बताऊँगा कि इन पाँचों योगों का सम्मिश्रण हमने किस तरह से किया हुआ है। गायत्री उपासना में ध्यान के द्वारा मन को एकाग्र करने के लिए जो पहला उसूल आता है, उसको हमने आपको पहले भी बताया है, उसे आप न भूले होंगे। ध्यान के लिए गीता में जो उपाय बताए गए हैं, यदि उन्हें आप अपनाएँ तो आपका ध्यान सार्थक हो जाए। गीता में अर्जुन पूछता है कि भगवान! यह मन तो हवा की तरह है, भाग जाता है, काबू में नहीं आता, रोकने से भी नहीं रुकता। इसको कैसे रोकें? तो उन्होंने जो उपाय बताए, उनके नाम हैं—वैराग्य और अभ्यास।

मन को काबू करने के उपाय

महाराज जी! वैराग्य क्या होता है? बेटे! वैराग्य यह होता है कि जिन चीजों में मन के भागने की बहुत आदत है, उन आदतों से उसको विरक्त कर दिया जाए। आपको हमने ध्यान का पहला लक्षण यह बताया था कि आप कृपा करके जब तक यहाँ हैं, अपने घर की आदतों से छुटकारा पा लीजिए, उन आदतों पर विचार करना छोड़ दीजिए। कई योगाभ्यासों में ऐसे भी नियम हैं कि अखबार पढ़ना बंद कर देते हैं। चिट्ठी-पत्री के लिए मना कर देते हैं और डालना ही है तो गुरुजी के नाम डालिए। कोई बहुत आवश्यक बात होगी तो वे हमें बता देंगे। इससे क्या फायदा होगा? बेटे, यहाँ जो आप ध्यानयोग के लिए आए थे, जो आध्यात्मिक लाभ उठाने के लिए आए थे, उससे आपका ध्यान बार-बार वहाँ जाएगा, बार-बार वहीं बना रहेगा। आपको अपने अंतरंग जीवन में प्रवेश करने का जो अभ्यास हम यहाँ लाना चाहते थे, इससे आपको उसमें सफलता कभी नहीं मिल सकती। हमने आपको उस दिन भी कहा था कि आप अपनी सांसारिक समस्याओं को लिखकर हमारे हवाले कर दें और फिर आप मिशन पर जाएँ। नहीं साहब! हमारी दुकान का बहुत नुकसान हो जाएगा। तो बेटे, फिर दो ही उपाय हैं—या तो तू दुकान पर चला जा या फिर नुकसान उठाना बरदाश्त कर या फिर हमारे ऊपर छोड़ दे। गुरुजी! हम महीने भर यहाँ रहेंगे तो हमारी दुकान का नुकसान होगा। हम सँभाल लेंगे और हमारे ऊपर विश्वास नहीं होता तो नौकर दें। नहीं महाराज जी, इन तीनों में से मैं कोई भी काम नहीं करूँगा। तो फिर क्या करेगा? चिंता करूँगा। बेटे, चिंता करेगा तो यहाँ से भी मारा जाएगा और वहाँ से भी मारा जाएगा।

वैराग्य एवं अभ्यास

मित्रो! मैंने आपसे यह कहा था कि जब तक आप यहाँ पर हैं, तब तक एक वैरागी के तरीके से रहें। मन का अभ्यास बार-बार यहाँ से भागने का है, अतः उसे रोकने का प्रयास करें, तभी आपको ध्यानयोग में सफलता मिलेगी। ध्यानयोग की सफलता का अर्थ यह है कि आपकी मानसिक शक्ति इतनी मजबूत होती चली जाएगी कि कुछ ही दिनों में आप इसका चमत्कार देखेंगे। 'हिप्नोटिज्म' में केवल एकाग्रता की शक्ति का उपयोग किया जाता है। योरोप आदि देशों में सम्मोहन के माध्यम से मानसिक शक्ति का प्रयोग किया गया है। इसमें केवल एकाग्रता की शक्ति का प्रयोग होता है। हिप्नोटिज्म क्या है? मैस्मेरिज्म क्या है? एक काला गोला लेते हैं और उसके मध्य सफेद बिंदु पर यह ध्यान करते हैं कि हम इस बिंदु के बीच में धँसते चले जा रहे हैं। हमारी ताकत धँसती चली जा रही है। दुनिया में एक ही बिंदु है, और दूसरी कोई चीज नहीं है। काले-सफेद बिंदु को पूरी एकाग्रता से देखते हैं। एकाग्रता से शक्ति आती है, तभी तो बेहोश करने से लेकर मैस्मेरिज्म तक बहुत तरह के लाभ मिलते हैं। नजर लगने में एकाग्रता की शक्ति काम करती है। आँख से देखकर किसी को अच्छा करने में एकाग्रता की शक्ति काम करती है। बहुत-सी चीजें हैं, जो एकाग्रता से संबंध रखती हैं। आँखों में से एकाग्रता की शक्ति बाहर भी निकलती रहती है।

अजगर की एक विशेषता होती है, वह अपनी आँखों की ताकत से सब चीजों को गिरा लेता है। वह पेड़ के नीचे बैठा रहता है और सिर ऊपर की ओर करके पेड़ पर बैठे हुए बंदर या पक्षी को एकटक देखता रहता है। बंदर या पक्षी नीचे गिरता है और उसे वह निगल जाता है। इसी तरह शिकारी लोग शेर का शिकार करने के लिए दूर जंगल में बकरा बाँध देते हैं। जब तक शेर की आवाज सुनाई देती है, गंध आती है, तब तक बकरा चिल्लाता है और जैसे ही शेर दिखाई देता है, ऐसे चुपचाप खड़ा हो जाता है, मानो हाथ जोड़कर कह रहा हो कि आप मुझे खा लीजिए। बंदरों के बारे में भी यही सुना है कि बंदर जहाँ होता है, वहीं-का-वहीं बैठा रहता है, न भागता है, न भाग सकता है और मारा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाता है। यह क्या चीज होती है? यह एकाग्रता की शक्ति है, जो हिप्नोटिज्म के नाम से, आँखों के प्रभाव के नाम से, प्रतिभा के नाम से जिस भी आदमी में पाई जाती है, वह सब एकाग्रता का चमत्कार है।

एकाग्रता के चमत्कार

मित्रो! एकाग्रता के चमत्कार, एकाग्रता की शक्ति के बारे में भला मैं आपको क्या बताऊँ ! ध्यान की एकाग्रता जिसमें आ जाती है, वह फर्स्ट डिवीजन में पास हो जाता है। यह ध्यान की एकाग्रता है। ध्यान की एकाग्रता कालिदास के पास थी, जो उनकी धरोहर थी। ध्यान की एकाग्रता विद्वानों के पास होती है। एकाग्रता से जब वे अपने मन को एक जगह इकट्ठा कर लेते हैं तो हजारों तरह के विचार चले आते हैं। साहित्यकारों से लेकर कलाकारों तक, जितने भी दुनिया में सफल हुए हैं, वे ध्यान की पहली वाली कला, जिसे हम एकाग्रता कहते हैं, पकड़े हुए हैं। यह मन:शक्ति को विकसित करने वाला पहला तरीका है, पहला चरण है।

सूक्ष्म में प्रवेश

साथियो! दूसरा चरण उससे बहुत ऊँचा है। वह हमारे सूक्ष्म जगत से संबंधित है, जिसमें देवी-देवताओं का भी निवास है, जिसमें हमारे भगवान का भी निवास है, जिसमें हमारे अंतरंग जीवन की क्षमताएँ भरी पड़ी हैं, जिन्हें हम सिद्धियाँ कहते हैं। ये सभी एकाग्रता की शक्ति से ही हस्तगत होती हैं। हमारे अंतरंग जीवन में खजाने भरे पड़े हैं। ध्यान के सहारे हम अपने भीतर प्रवेश करके उनको तलाश कर सकते हैं। जमीन में से पानी तलाश करने वाले एक स्वामी जी थे—माधवानंद जी। उन्होंने राजस्थान में जाकर बहुत जगह बताया था कि यहाँ गड्ढा खोदिए, पानी मिलेगा। पंडित नेहरू से वे मिले थे और उन्होंने उन्हें जल विभाग के हाथ सुपुर्द कर दिया था। कहा था कि स्वामी जी को ले जाइए और जहाँ ये पानी बताएँ, वहाँ पर ट्यूब-वेल लगाइए, जिससे राजस्थान में पानी मिल सकता है। उन्होंने बहुत से कुएँ बनवाए थे। उन्होंने जमीन में गड़ा हुआ धन बताया था, नमक बताया था, अमुक-अमुक चीजें अमुक-अमुक जगह होना बताया था।

मित्रो! यह क्या है? एकाग्रता की शक्ति है। जब यही शक्ति बाहरी जीवन में प्रयुक्त होती है तो टेलीस्कोप की तरह से देखने में समर्थ हो जाती है, लेकिन जब हमारे अंतरंग जीवन में प्रवेश करती है तो सारे-के-सारे सूक्ष्म जगत में विद्यमान रहस्यों को खोलकर रख देती है, जिसमें देवी-देवता भी शामिल हैं। चक्रों के रूप में देवता हमारे भीतर विद्यमान हैं। एक-से-एक बढ़िया चीजें हमारे भीतर विद्यमान हैं, जिनमें कुंडलिनी भी शामिल है। हमारे भीतर दो ध्रुव हैं—एक उत्तरी ध्रुव और एक दक्षिणी ध्रुव। उत्तरी ध्रुव हमारा मस्तिष्क है, जो शक्तियों का पुंज है। इसमें अनेक लोक-लोकांतर की चेतन शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। दक्षिणी ध्रुव हमारा मूलाधार चक्र है। एक हमारा सिर वाला सहस्रार चक्र उत्तरी ध्रुव है और मूलाधार दक्षिणी ध्रुव है। पृथ्वी को जो आंतरिक ताकत मिलती है, वह उसके दोनों ध्रुवों से मिलती है। इसी तरह हमारे भीतर विद्यमान दोनों ध्रुव शक्तिशाली जेनरेटर की तरह लगे हुए हैं। उनकी शक्ति के बारे में मैं क्या कह सकता हूँ, किंतु ये दोनों सोए हुए पड़े हैं। सोई हुई चीज को ठीक करने के लिए क्या बाहरी शक्ति काम कर सकती है? नहीं कर सकती। हमारे भीतर कोई चीज प्रवेश नहीं कर सकती।

हमारे भीतर एक ही चीज प्रवेश कर सकती है और वह है—ध्यान। अगर हम अपनी मन:शक्ति को ध्यान द्वारा एकाग्र करना सीख लें, ध्यान को एक ताकत बना लें तो सब कुछ हस्तगत हो सकता है। ध्यान को जहाँ कहीं भी, जिस स्थान पर भी हमने भेजा है, एक चमत्कार देखा है। ध्यान की शक्ति अगर हृदय पर लगा दी जाए और हृदय से कहा जाए कि भाईसाहब, आपको बंद होना है तो उसका धड़कना बंद हो जाता है और आदमी समाधि में चला जाता है। लोग ६-६ महीने समाधि में रह सकते हैं। बस, करना इतना होता है कि ध्यान की स्थिति में मन को कहते हैं कि भागना मत और मरना भी मत। ये दो काम मत करना। समाधि में मन चला भी जाता है।

योग से सिद्धि

समाधि का एक वर्णन आता है। पंजाब में एक महात्मा थे—संत हरिदास जी। उस जमाने में पंजाब के शासक महाराजा रणजीत सिंह थे। कोई एक रेजीडेंट आया और उनसे कहा कि मैंने सुना है, आपके यहाँ कोई योगी समाधि ले लेते हैं, मर जाते हैं और फिर जिंदा हो जाते हैं। हाँ साहब! बात तो ठीक है, हम आपको दिखा सकते हैं। उन्होंने महात्मा स्वामी हरिदास जी को बुलाया और कहा कि ये मेरठ से आए हैं, अँगरेज हैं और यह देखना चाहते हैं कि क्या मरा हुआ आदमी जिंदा हो सकता है? स्वामी जी ने कहा कि हम दिखा सकते हैं।

अँगरेज ने कहा कि अगर ये चालाकी करते हैं तो हम पकड़ लेंगे। ठीक है, आप चालाकी पकड़ लेना। निश्चित हुआ कि स्वामी हरिदास छह महीने के लिए समाधि लेंगे। जमीन में गड्ढा बना दिया गया। उसमें स्वामी जी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को बैठा दिया गया और ऊपर से बंद कर दिया गया। अँगरेज रेजीडेंट ने कहा कि इसे तो कोई भी खोल लेगा, हवा पहुँचा देगा, पानी पहुँचा देगा, भोजन पहुँचा देगा—चालाकी हो सकती है। उन्होंने दो इंतजाम किए। एक तो पहरा बैठा दिया और दूसरा उसी जगह पर उसी समय गेहूँ बो दिया, ताकि जब गड्ढा खोदा जाएगा तो गेहूँ पहले उखाड़े जाएँगे।

समाधि के ऊपर मिट्टी बिछाई गई और गेहूँ बो दिया गया। ठीक छह महीने बाद उनको खोला गया। खोलने के बाद में स्वामी जी अचेत पाए गए और जब ठीक टाइम आया तो उन्होंने एक लंबी साँस खींची और फिर जिंदा हो गए।

सब कुछ प्राप्त करना संभव

मित्रो! पुराने जमाने की बात मैं नहीं कहता हूँ। यह तो मैं अभी की बात कह रहा हूँ कि योग के द्वारा सब कुछ हो सकता है। इससे हम अपने शरीर पर नियंत्रण कर सकते हैं, हृदय को बंद कर सकते हैं, हृदय को चालू कर सकते हैं। अपने शरीर के नए-नए जीवकोषों को उलटा-पुलटा कर सकते हैं। हमारे जो हॉर्मोन्स गरम हैं, उन्हें ठंढा कर सकते हैं, ठंढे को गरम कर सकते हैं। ये किससे कर सकते हैं? यह सिद्धियों की बात कह रहे हैं, समझदारों की बात कह रहे हैं कि हमारे भीतर जितनी विशेषताएँ हैं, उन्हें अतींद्रिय विशेषता कहते हैं। इन अतींद्रिय विशेषताओं की क्षमता को जगा लेना ध्यानयोग के द्वारा संभव है।

यह तो हुई एक बात और दूसरी? दूसरी यह है कि ध्यानयोग के द्वारा वे विशेषताएँ प्राप्त करना भी संभव है, जिनको हम भगवान कहते हैं, ब्रह्मतत्त्व कहते हैं। ब्रह्मतत्त्व के साथ में हम अपने आप को मिला लें, जो सारे विश्व में छाया हुआ है, जिसके नियंत्रण में सारी सत्ता चलती है। जो विश्व का स्वामी है। जिसके अंतर्गत तमाम सारी चीजों की दिव्य धाराएँ बहती हैं, वह हमारी जीवात्मा का मूल लक्ष्य है। उस लक्ष्य को प्राप्ति और अप्राप्ति, दोनों कहते हैं। प्राप्ति वह है, जो विशुद्ध रूप से भगवान से संबंध रखती है और हमारी जीवात्मा को शांति-संतोष से लेकर के मुक्ति और मोक्ष तक प्रदान करती है। एक स्थिति यह है। दूसरी स्थिति वह है, जिसमें सिद्धियाँ रहती हैं, चमत्कार रहते हैं। हमारे पाँचों शरीरों—कोषों में विशेषताएँ भरी पड़ी हैं, छिपी पड़ी हैं। सौंदर्य हमारे शरीर में छिपा पड़ा है, बल हमारे शरीर में छिपा पड़ा है, श्रम करने की क्षमता हमारे शरीर में छिपी पड़ी है। ऐसी क्षमताओं वाला हमारा सूक्ष्मशरीर है, प्राणशरीर है। पाँचों कोष हैं, जिनकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, विलक्षणताएँ हैं, जिनको सिद्धियाँ और चमत्कार कहते हैं।

इनको प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ेगा? बेटे, इसके लिए हमारे पास एक ही हथियार है और उसका नाम है—ध्यानयोग। ध्यानयोग किसे कहते हैं? योग को। योग की व्याख्या कीजिए? योग की व्याख्या है—ध्यानयोग। ध्यानयोग के बहुत से तरीके हैं। इनमें से थोड़े-थोड़े तरीके हम आपको सिखाते हैं। आपको साधना की ज्यादा जानकारियाँ मैं बाद में दूँगा। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांतिः ॥

*

0-0-0-